वै
५०

सर्वदेवजोतिछेन्दुशेखा

* अथ *

चन्दनषष्ठीव्रतकथा

* भाषाटीकोपेता *

※ श्रीगणेशाय नमः ※

अथ चन्दनषष्ठीव्रतकथा भाषाटीकासमेता प्रारभ्यते ॥

※ श्रीसूत उवाच ※

निवृत्ते भारते युद्धे धर्मपुत्रो युधिष्ठिरः ॥ पितामहं महाप्राज्ञं पर्यपृच्छत संशयम् ॥ १ ॥

※ राजोवाच ※

षष्ठीव्रतं महापुण्यं स्त्रीणां नरकनाशनम् ॥ कथयस्व कृपां कृत्वा यथापूर्वं श्रुतं त्वया ॥ २ ॥

श्रीसूत जी बोले कि महाभारत का युद्ध समाप्त होने पर धर्मराज युधिष्ठिरने परम ज्ञानवान ~~बड़े बूढ़े दादा~~ भीष्मपितामह से पूछा ॥ १ ॥ राजा युधिष्ठिर ने कहा कि पुण्य कारी और बेचारी अबला स्त्रियों को नरकसे बचानेवाला, कृपा करके षण्ठीव्रतमाहात्म्य को कहिये.आपने जिस प्रकार पहिले सुना है

॥ २ ॥ तब भीष्म जी कहने लगे कि विष्णुके प्रिय नारदजी लोकों में भ्रमण करते एक समय ब्रह्मलोकमें पहुँचे और ब्रह्माजी से पूछने लगे ॥ ३ ॥ नारदजी बोले—हे ब्रह्मन् ! किस धर्मसे श्रेष्ठ कुलमें जन्म होता है ऐसा कोई फलदायक व्रत सुनाईये ॥ ४ ॥ प्रभो ! स्त्रियोंको नरकसे

भीष्म उवाच ॥

एकदा नारदो लोके पर्यटन्भगवत्प्रियः ॥ ब्रह्मलोकं गतस्तत्र पर्यपृच्छत्पितामहम् ॥ ३ ॥

नारद उवाच ॥

उत्तमस्य गृहे जन्म केन धर्मेण तद्वद ॥ व्रत महाफलं देव ब्रूहि मे चतुरानन ॥ ४ ॥
नरकान्तकरं स्त्रीणां सुखसौभाग्यकारकम् ॥ भुक्तिमुक्तिप्रदं पुण्यं कथयस्व मम प्रभो ॥ ५ ॥

ब्रह्मोवाच ।

द्वादशीं ये समर्चन्ति चन्दनषष्ठीमेव च ॥ न ते यमपुरं यान्ति वियोनौ न च पुत्रक ॥ ६ ॥

बचानेवाला सुख और सौभाग्यको देनेवाला, भुक्ति मुक्ति को देनेवाला पुण्यप्रद व्रत कहिये ॥ ५ ॥ ब्रह्मा जी कहने लगे कि हे पुत्र नारद ! द्वादशी और चन्दनषष्ठीका व्रत करनेवाले नर—नारी नरक और हीन योनिमें उत्पन्न नहीं होते ॥ ६ ॥ तब नारद जी कहने

लगे—हे स्वामिन् ! परम पवित्र पुण्य देनेवाला षष्ठीव्रत माहात्म्य विधिपूर्वक कहिये क्योंकि उसे सुननेकी मेरी प्रबल इच्छा है ॥ ७ ॥ नारद जी के श्रद्धालु वचन सुनकर ब्रह्मा जी कहने लगे कि परम उत्तम, स्त्रियोंके करनेयोग्य षष्ठी व्रत माहात्म्य मैं वर्णन करता हूँ । गंगा, सरस्वती, रेवा,

नारद उवाच ।

षष्ठीव्रत महापुण्यं कथयस्व यथातथम् ॥ तदहं श्रोतुमिच्छामि कथयस्व मम प्रभो ॥ ७ ॥

ब्रह्मोवाच ।

अहं तु कथयिष्यामि पवित्रं स्त्रीव्रतोत्तमम् ॥ गंगा सरस्वती रेवा पार्वती देवकन्यका ॥ ८ ॥
उर्वशी च तथेन्द्राणी अहल्या गौतमी तथा ॥ शाण्डिली रोहिणी लक्ष्मीस्तारा रम्भा तिलोत्तमा ॥ ९ ॥
अन्या यास्तु महासत्यः सर्वा विष्णुपुरे स्थिताः ॥ ताः शृण्वन्ति यथान्यायं श्रूयतां द्विजसत्तम ॥ १० ॥

पार्वती, देवकन्या ॥८॥ उर्वशी, इन्द्राणी, अहल्या, शाण्डिली, रोहिणी, लक्ष्मी, तारा, रंभा, तिलोत्तमा ॥ ९ ॥ और जो बड़ी बड़ी पतिव्रता स्त्रियाँ विष्णुलोक में स्थित हैं वे विधि पूर्वक जिस कथा को श्रवण करती है हे मुनिश्रेष्ठ ? उसे सुनो ॥१०॥ एक समय कैलास पर्वत पर बैठे हुए

शंकर जी सब स्त्रियों को कथा सुना रहे थे उनमें से पार्वती जी शङ्करजी से आदर पूर्वक पूछने लगी कि ॥ ११ ॥ स्त्रियाँ जिस व्रतके प्रभाव से सौभाग्यादि सर्व गुणसम्पन्न होकर मनोवाञ्छित सिद्धिको प्राप्त होती हैं, उसे सुनाइये ॥१२॥तब महादेवजी बोले स्त्रियोंके लिये उत्तम मैं विधि

पुरा शङ्करमासीनं कैलासे पर्वतोत्तमे ॥ सर्वासां शृण्वतीनां च गौरी पृच्छति सादरम् ॥ ११ ॥

पार्वत्युवाच ।

केन व्रतप्रभावेण सर्वसिद्धिमवाप्नुयुः ॥ स्त्रियः सर्वगुणोपेतास्तन्मे व्याख्यातुमर्हसि ॥ १२ ॥

महादेव उवाच ।

विधिवत्तं प्रवक्ष्यामि नारीणां च व्रतोत्तमम् ॥ मासे भाद्रपदे षष्ठी कृष्णपक्षे यदा भवेत् ॥ १३ ॥
व्रतं तदा हि कर्तव्यं नारीणां मुक्तिदं प्रिये ॥ मनः संयम्य यत्नेन शृणु त्वं वरवर्णिनि ॥ १४ ॥

पूर्वक कहता हूँ, भादों महीने कृष्णपक्ष की षष्ठी तिथिमें ॥ १३॥ हे प्रिये । स्त्रियों को उचित है कि मनको विषयोंसे रोकें। हे वरवर्णिनि । उस व्रतमाहात्म्यकी कथा सुन ॥ १४ ॥ हे महाभागे ! मालव प्रान्त चित्रकूट पर्वतमें वेद.शिक्षा, कल्प, व्याकरण आदि छः वेद वेदांगोंका जाननेवाला एक

ब्राह्मण रहता था ॥१५॥ उसके बगीचे में एक श्रीधर नामक ब्राह्मण ठहरा हुआ था, उस पवित्र तिथिमें हे सुन्दरि ! पितृप्रिय श्राद्ध उपस्थित हुआ ॥ १६ ॥ अषाढ़ मास पूर्णमासीके पाँचवें पक्षमें अर्थात् आश्विनकृष्णपक्ष में श्राद्ध तिथिकी मिति आगई । उस श्रीधर नामक ब्राह्मणने ब्राह्मणोंको निमन्त्रित किया और स्वयं भोजन बनाने लगा॥१७॥उनके निमन्त्रित महर्षि व्यास, बाल्मीकि,गर्ग,गौतम, पराशर और बड़े बड़े मुनि लोग आये॥१८॥

आसीन्मालवके देशे चित्रकूटे च पर्वते ॥ कश्चिद्विप्रो महाभागे वेदवेदांगपारगः ॥ १५ ॥
२५ श्रीधरस्तु द्विजस्तस्य आरामे च स्थितस्तदा ॥ तत्र पुण्यदिने भद्रे श्राद्धश्च पितृवत्सलः ॥ १६ ॥
आषाढ्याः पंचमे पक्षे श्राद्धं तत्र समागतम् ॥ विप्रा निमन्त्रितास्तेन स्वयं पाकमकारयत् ॥ १७ ॥
वै व्यासो मुनिर्महाश्रेष्ठस्तथा वाल्मीकिरेव ॥ पराशरो गौतमश्च गर्गोऽन्ये ये ऋषीश्वराः ॥ १८ ॥
रूपयौवनसंपन्ना तस्य भार्या पतिव्रता ॥ तामाह प्रश्रितां विप्रः श्रूयतां मे वचः प्रिये ॥ १९ ॥
मातापित्रोर्यदा श्राद्धे भोजयेद्द्विजसत्तमान् ॥ राजसूयाश्वमेधानां फलं प्राप्नोति शोभने ॥ २० ॥

उसकी स्त्री बड़ीं रूप, सुन्दरी, पतिव्रता तथा विनयसम्पन्न थी, उससे ब्राह्मण कहने लगा हे प्रिये ! सुन ॥ १९ ॥ हे सुन्दरि ! माता और पिता के श्राद्ध तिथि में ब्राह्मणोंको भोजन करानेसे राजसूय और अश्वमेध यज्ञका फल होता है ॥२०॥ यह धर्मचारिणो पतिव्रता स्वामीका ऐसा बचन सुन

सावधान होकर विधिपूर्वक रसोई बनाने लगी ॥ २१ ॥ पूरी, कचौरीं, शाक, खटाई, अचार, नानाप्रकार के रसभरे फल, गाय का दही, दूध, घी और भीं अनेक भाँति के पदार्थ उसने बनाये ॥२२॥ रसोई बनजाने पर निमन्त्रित भी आगये तब ब्राह्मण स्नान करके चरण धोकर

भतुर्वाक्यं ततः श्रुत्वा सावधाना पतिव्रता ॥ यथोक्तविधिना पाकमकरद्धर्मचारिणी ॥ २१ ॥
पक्वान्नव्यञ्जनादीनि फलानि रसवन्ति च ॥ दधि क्षीरं घृतं गव्यं भोजनानि बहून्यपि ॥ २२ ॥
यदा पाकः समुद्भूतो द्विजास्तर्हि समागमन् ॥ स्नानं कृत्वा स्पृशत्पादौ श्राद्धं कल्पयते तदा ॥ २३ ॥
कृत्वा रजस्वला देवी श्राद्धकाले बभूव सा ॥ लज्जया तच्च नैवोक्त स्त्रीधर्मंगोपित तया ॥ २४ ॥
तस्याः पाके च संभुक्ते तृप्ताः स्वस्था द्विजोत्तमा ॥ प्रणम्य तेन विप्रेण दानं दत्तं स्वशक्तितः ॥ २५ ॥
प्रदक्षिणां परिक्रम्य ब्राह्मणान्विससर्ज सः ॥ सा साध्वी कालधर्मेण पञ्चत्वं समुपागता ॥ २६ ॥

श्राद्ध करनेलगा ॥२३॥ रसोई बनजाने पर उसी समय दैवयोगसे ब्राह्मणी रजस्वला होगई उसने लज्जावश अपना रजोधर्म छिपा दिया ॥ २४ ॥ उसके छुए हुए पाकको भोजन कर ब्राह्मण तृप्त हो प्रसन्न हुए तब ब्राह्मणने यथाशक्ति नमस्कार करके ब्राह्मणों को दक्षिणादी ॥२५॥ फिर उनकी प्रदक्षिणा कर उनको विदा किया, कालान्तर में वह पतिव्रता मृत्यु को प्राप्त होगई ॥ २६ ॥ परन्तु ब्राह्मणों को अशुद्ध खिलाने से वही

सती होती हुई भो नरक में यमदण्ड से पीड़ित हुई पीछे चाण्डाल कुलमें उत्पन्न होकर उसे पूर्वजन्मका स्मरण हुआ ॥२७॥ रजोदोष छिपाने वाली स्त्री कुत्ता, कुत्ती, सुअरी, पुत्र पौत्रवाली, पिशाची, कम चाण्डाली होकर सातवीं योनि में मनुष्यजातिमें उत्पन्न होती है ॥ २८ ॥ उसी नगरीमें

भुक्तश्राद्धप्रभावेण पीडिता यमशासने ॥ चांडालस्य कुले देवी जाता जातिस्मरा शुभा ॥ २७ ॥
स्वानशूकरशुनी च शूकरी पुत्रपौत्रिणी ॥ पिशाची कर्मचाण्डाली सप्तम्यां मानुषी भवेत् ॥ २८ ॥
तत्रैव नगरे रम्ये तस्याः पुत्रो गुणोत्तमः ॥ वेदशास्त्रविनीतोऽपि षट्कर्मनिरतः सदा ॥ २९ ॥
तस्यैषा वैश्वदेवान्ते चाण्डाली समुपागता ॥ तण्डुलान्भोक्तुकामा हि तस्यागारमुपाविशत् ॥ ३१ ॥
अमर्षपूरिता विप्रो विवादं कुरुते तदा ॥ हे चाण्डालि दुराचारि शीघ्रं गच्छ ममालयात् ॥ ३१ ॥

उसका पूर्वजन्मका पुत्र भी रहता था, वह बड़ा गुणी वेदशास्त्रको जाननेवाला, नम्र पढ़ने पढ़ाने, दान देने दिलाने यज्ञ करने कराने आदि ब्राह्मण के ६ कर्मों में तत्पर था ॥ २९ ॥ उसके घर वैश्वदेव नामक यज्ञके अन्त में वह चाण्डाली उसके घरमें बलिके निमित्त रखे हुए चावलों को खाने आयी ॥ ३० ॥ तब क्रोधित ब्राह्मण उसे घुड़ककर कहने [illegible] कि अरे चाण्डालिनि ! मेरे घर से अभी चली जा ॥ ३१ ॥ क्योंकि तेरे

देखने मात्रसे अपवित्रता होती है चाण्डाल के दर्शन होनेपर जब तक सूर्य न देखे तब तक शुद्धि नहीं होती है ॥ ३२ ॥ चाण्डाल से छुजाने पर गंगास्नान करने से शुद्धि होती है। उसका बचन सुनकर रोती हुई वह ब्राह्मणके घरसे चली गई ॥३३॥जिस चाण्डालीके साथ संभाषण मात्रसे वस्त्र

ने

अशौचं तु भवेन्नित्यं मदीयदर्शनेन ते ॥ चाण्डालदर्शनं कृत्वा पुनः पश्यतु भास्करम् ॥ ३२ ॥
यदि स्पर्शो हि सञ्जातो गङ्गास्नानेन शुद्ध्यति ॥ एवं श्रुत्वा ततो वाक्यं विलपन्तो गृहाद्गता ॥३३॥
यस्याः संभाषणं कृत्वा सचैलं स्नानमाचरेत् ॥ स्वप्ने तस्य तदा माता रूपं साऽदर्शयत्सती ॥ ३४ ॥
जगर्ति किं भवान्पुत्र किंवा सुप्तोऽसि पुत्रक ॥ अहं च नरके घोरे दुःखार्त्ताऽस्मि हि बालक ॥ ३५ ॥
एतच्छ्रुत्वा ततो वाक्यं पुत्रः प्रोवाच सादरम् ॥ मातस्त्वं केन पापेन जाता चाण्डालके कुले ॥ ३६ ॥

सहित स्नान करना पड़ा था चाण्डाल योनिमें प्राप्त हुई उसकी माताने अपना स्वरूप उस ब्राह्मणको स्वप्नमें दिखाकर ॥ कहा कि, हे पुत्र! जागे हो कि सोये ? मैं भयानक नरक की पीड़ा से अत्यन्त दुखी हूँ ॥ ३५ ॥ यह सुनकर उसका वह पूर्वजन्म का पुत्र कहने लगा कि हे माता! किस पापसे तुम चाण्डाल कुल में उत्पन्न हुई हो ॥३६॥ मैं बड़े आश्चर्य में पड़ा हूँ कहिये इसका क्या रहस्य है, माता कहने लगी कि तुम्हारे पिताने

श्रद्धा भक्तिपूर्वक अपने पितरोंका श्राद्ध किया ॥ ३७ ॥ उसमें बाधा होगई क्योंकि मैं भोजन बनाकर चौके हीमें थी उसी समय मैं रजस्वला हो गई उस महापाप को मैंने गुप्त रखा हे बेटा ! उसी पापसे मुझे चाण्डाली होना पड़ा, बड़े भयंकर नरक में धर्मराज यमकी दुसह यातनाको सहन करना

पुत्र उवाच ।

एतन्मे वचनं ब्रूहि विस्मयो मम वर्त्तते ॥ युष्मत्पितामहश्राद्ध म करोतिपितृवत्सलः ॥ ३७ ॥

मातोवाच ।

तत्र विघ्नः समुत्पन्नो मयापापं प्रगोपितम्॥तस्यापापप्रभावेणवत्सासीद्गतिरीदृशी॥नरकेषुचघोरेषुसहित्वायमशासनम् ३८

पुत्र उवाच ।

कर्मणा केन मे मातर्मोक्षो भवति सुव्रते ॥ कथ्यतां ते महाभागे यथा यत्नं करोम्यहम् ॥ ३९ ॥

पड़ा ॥३८॥ उसके वचनको सुनकर उसका पुत्र कहने लगाकि हे माता ! अब तुम अपने मोक्ष का उपाय कहो मैं वही यत्न करूँगा ॥ ३९ ॥

उसकी माता कहने लगी कि हे पुत्र ! भाद्रपद महीने कृष्णपक्ष की षष्ठी तिथि सबतिथियों तथा तीर्थों में पवित्र हैं ॥ ४० ॥ हे पुत्र ! उस षष्ठी का व्रत करके ब्राह्मण के सन्मुख उसका पुण्य मुझे देनेसे तथा पुण्यप्रभावसे मैं उस चाण्डालयोनिसे मुक्त होजाऊँगी ॥४१॥ इस भांति स्वप्नमें माताको

मातोवाच ।

मासे भाद्रपदे षष्ठी कृष्णपक्षे च पुत्रक ॥ सा तिथिस्तु महापुण्या तीर्थेभ्यो मुनिसत्तम ॥ ४० ॥
तां कृत्वा वत्स तत्पुण्यं देहि मे विप्रसन्निधौ ॥ तस्य पुण्यप्रभावेण मम मोक्षो भविष्यति ॥ ४१ ॥
ईदृग्विधा तेन दृष्टा स्वमाता दुःखभागिनी ॥ तत्र पुत्रः प्रबुद्धोऽसौ स्वप्नवाक्यं समाचरत् ॥ ४२ ॥
तपोपवासैः कथितं षष्ठीचन्दनमुत्तमम् ॥ मुनीन्पृष्ट्वा ततः स्नातो ददौ पुण्यं त्रिवाचिकम् ॥ ४३ ॥

दुखी देख उसके, पुत्र नीद से उठा और अपनी माता के स्वप्न वाक्यकों स्मरण करता हुआ सोचने लगा कि तप और उपवासादिसे भी चन्दन षष्ठीका व्रत है यह विचार कर वह ब्राह्मण मुनियोंकी अनुज्ञा पाकर स्नानके बाद वाणी, मन, कायसे उच्चारण करता हुआ चन्दन षष्ठीके व्रतमाहात्म्यके फलको अपनी माता के लियें देने लगा ॥४३॥ उस पुण्य के प्रभाव से चाण्डालयोनिमें प्राप्त हुई उसकी माता स्वर्गको प्राप्त हुई सन्ध्यासमय और भी जो स्त्रियाँ

इस व्रतको करती हैं उनका भी नीच कुलमें जन्म नहीं होता ॥ ४४ ॥ नारदजी बोले कि हे ब्रह्मन् ! हलषष्ठी व्रतका विधान कहिए ? मैं आपसे पूछता हूँ कि हलषष्ठी व्रत का कौन मन्त्र और कौन नमस्कार है और किस देवताकी पूजा करनी चाहिए ॥ ४५ ॥ तब ब्रह्मा कहने लगे कि

तस्य पुण्यप्रभावेण माता तस्य दिवं गता ॥ या करिष्यति चाऽन्या स्त्री सा वियोनिं न पश्यति ॥ ४४ ॥

नारद उवाच ।

तत्र चास्य विधिं देव पृच्छामि त्वां पितामह ॥ को मन्त्रः को नमस्कारः कस्य पूजां करोम्यहम् ॥ ४५ ॥

ब्रह्मोवाच ।

आदित्यं पूजयेद्देवं चन्दनैः कुङ्कुमादिभिः ॥ कर्पूरैश्चैव पुष्पैश्च रक्तचन्दनमिश्रितैः ॥ ४६ ॥

केसर युक्त चन्दन, देशकालमें पैदा हुए पुष्प, फल, लाल चन्दन, धूप, ॥ ४६ ॥ दीप, पुष्टिकारक नैवेद्योंसे पूजा करनी चाहिये, सूर्योदयके समय अनार, नारियल आदि फलोंसे, युक्त अर्घदान देवे सदाचारी होकर दिनके आठवे भागमें सन्ध्याके पहले स्नान करे और इन्द्रियोंको अपने

वशमें रखे ॥ ४७ ॥ ४८ ॥ स्नानके लिये नदी, तालाब, बावड़ी, कूप जो कुछ मिले वहीं जाकर स्नान करे यदि इनकी भी अभाव हो तो घरही करे, बहुत स्त्रियाँ मिलकर अपने गुरु घर जावें ॥ ४९ ॥ ताँबेकी मूर्ति बनाकर अथवा लालरंगके काष्ठ पर अष्टदल कमल बनाकर वरुण आदि

धूपदीपफलैर्मूलैर्नैवेद्यैः पुष्टिवर्धनैः ॥ उदिते चार्घदानं च दद्याद्दाडिमकादिभिः ॥ ४७ ॥
नारिकेलैः सजम्बीरैर्यथालाभं प्रकल्पयेत् ॥ दिवसस्याष्टमे भागे स्नानं कृत्वा जितेन्द्रियः ॥ ४८ ॥
नद्यां तीर्थे तडागे वा वाप्यां कूपे गृहे तथा ॥ गुरुवेश्मनि गंतव्ये समूहे न च योषिताम् ॥ ४९ ॥
मूर्तिं ताम्रमयीं कृत्वा रक्तकाष्ठे लिखेत्तथा ॥ पद्ममष्टदलं कृत्वा वरुणादीन्प्रपूजयेत् ॥ ५० ॥
वरुणः सूर्यवेदाङ्गौ धाता इन्द्रस्तथा रविः ॥ गभस्तिरर्यमा स्कन्दः सविता च दिवाकरः ॥ ५१ ॥
इत्येते द्वादशादित्याः काश्यपेयाः प्रकीर्त्तिताः ॥ सकेशराणि पद्मानि करवीराणि युक्तितः ॥ ५२ ॥

देवताओं की पूजाकरे ॥ ५० ॥ वरुण, सूर्य, वेदाङ्ग, धाता, इन्द,रवि, गभस्ति, अर्यमा, स्कन्द,सविता, दिवाकर ॥५१॥ ये बारह आदित्य कश्यप मुनिसे उत्पन्न हैं, केसर सहित कमलके फूल, कनेरके फल ॥ ५२ ॥ लालचंदनसे युक्त कुश और सुगन्धितयुक्त जलसे तिल और चावल मिलाकर

ताँबेके पात्र में रख ॥ ५३ ॥ इन्द्रियों के स्वामीं सूर्य के मन्त्रोंसे पूजन करें, लालचन्दन से युक्त जल से सूर्य के बारह नामों से बारह अञ्जलि देवे ॥ ५४ ॥ ब्राह्मण को खाद्य, पेय, लेह्य, चोष्य, आदि पञ्चाङ्ग सीधा दे कर उसकी पूजा करें, इसके अनन्तर सूर्य नारायण का विसर्जन

रक्तचन्दनमिश्राणि कुशगन्धोदकेन च ॥ तिलतण्डुलमिश्राणि कृत्वा ताम्रस्य भाजने ॥ ५३ ॥
मंत्रैः पूज्य हृषीकेशमर्घ्यं दद्याद्दिवाकरम् ॥ रक्तचन्दनमिश्राणि द्वादशाञ्जलयस्तथा ॥ ५४ ॥
आमान्नं च प्रदातव्यं पञ्चांगं द्विजमेव च ॥ विप्रपूजा च कर्त्तव्या सूर्यपूजां विसर्ज्जयेत ॥ ५५ ॥
चन्द्रोदये कृते स्नाने एकवस्त्रेण वेष्टितम् ॥ श्वेतचदनक्षीरेण चन्द्रायार्घं प्रदापयेत ॥ ५६ ॥
क्षीरोदार्णवसम्भूत अत्रिगोत्र समुद्भव ॥ गृहाणार्घं शशांकेदं सोमराज नमोऽस्तु ते ॥ ५७ ॥

करे ॥ ५५ ॥ प्रातः चन्द्रोदय के समय स्नान करके एक वस्त्र से ढँके हुए अर्घ में सफेद चन्दन और दूध डाल कर चन्द्रमा को अर्घ देवे ॥५६॥ क्षीर समुद से निकले हुए अत्रिगोत्री हे शशलाञ्छन चन्द्रराज ! यह अर्घ स्वीकार कीजिये'क्षीरोदार्णव, इस मन्त्र से अर्घ देवे ॥ ५७ ॥ गेहूंके

आटेकी पूरी, रोटी आदि, गाय का दही, दूध, घी मिष्टान्न भोजन करे, खारा नमक न खावे ॥ ५८ ॥ तब द्वादशीके दिन उद्यापन करे, ब्राह्मणोंको जूता, वस्त्र और दक्षिणा दान दे कर भोजन करावे ॥ ५९ ॥ सीधा देनेयोग्य ब्राह्मणों को सीधा भी देवे और सूर्य की पूजा सिद्धिके लिये ब्राह्मण

भोजनं तत्र कुर्वीत गोमयस्य च चूर्णकैः ॥ दधि क्षीरं घृतं गव्यं मिष्टान्नं क्षीरवर्जितम् ॥ ५८ ॥
उद्यापनं ततः कुर्याद्द्वादश्यां च द्विजातये ॥ पादत्राणं च वस्त्रं च भोजनं दक्षिणासह ॥ ५९ ॥
आमान्नं च प्रदातव्यं संपूर्णं च यदा भवेत् ॥ विप्रवाक्यं तु गृह्णीयात्सूर्यपूजां विशेषतः ॥ ६० ॥
पठनाच्छ्रवणाद्राजञ्छतगोदानजं फलम् ॥ इह लोके सुखं याति परलोके तथा गतिः ॥ ६१ ॥

इति श्रीभविष्यपुराणे चन्दनषष्ठीव्रतकथा सम्पूर्णा ।

का वचन ले अर्थात् ब्राह्मण यह कह दे कि आपकी सूर्यकी पूजा परिपूर्ण होगी ॥ ६० ॥ जो मनुष्य इस कथा को पढ़ता और सुनता है उसे सौ गोदान का फल होता है, इसी व्रतके माहात्म्य के प्रभाव से लोक में सुख और परलोक में शुभ गति मिलती है ॥ ६१ ॥

इति श्रीभविष्यपुराणोक्तचन्दनषष्ठीव्रतकथायां पं० माधवप्रसादकृत-भाषाटीका समाप्ता ।

उर्वशी, इन्द्राणी, अहल्या, गौतमी,शांडिली, रोहिणी, लक्ष्मी, तारा, रंभा, तिलोत्तमा ॥ ९ ॥
और जो महासत्या आदि सब विष्णुपुरमें स्थित स्त्रियां हैं वे विधिपूर्वक कथा श्रवण करती

उर्वशी च तथैंद्राणी अहल्या गौतमी तथा ॥ शांडिली रोहिणी
लक्ष्मीस्तारा रंभा तिलोत्तमा ॥ ९ ॥ अन्या यास्तु महासत्यः सर्वा
विष्णुपुरे स्थिताः ॥ ताः शृण्यवंति यथान्यायं श्रूयतां द्विजसत्तम ॥१०॥
पुरा शंकरमासीनं कैलासे पर्वतोत्तमे ॥ सर्वासां शृण्वतीनां च गौरी
पृच्छति सादरम् ॥ ११ ॥

हैं हे श्रेष्ठ मुनि ! सुनो ॥ १० ॥ पहिले समयमें श्रेष्ठ कैलास पर्वतपर सब स्त्रियोंके सुनते
हुए आदरपूर्वक श्रीपार्वतीजी पूछने लगीं ॥ ११ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥

पार्वती बोलीं—स्त्री लोग किस व्रतके करनेसे सर्व गुणसम्पन्न होकर अभीष्ट सिद्धि पाती हैं, उसे कहिये ॥ १२ ॥ महादेव बोले—स्त्रियोंके लिये उत्तम व्रत विधिपूर्वक कहता हूँ, भादों

पार्वत्युवाच ॥ केन व्रतप्रभावेण सर्वसिद्धिमवाप्नुयुः ॥ स्त्रियः सर्वगुणोपेतास्तन्मे व्याख्यातुमर्हसि ॥१२॥ महादेव उवाच ॥ विधिवत्संप्रवक्ष्यामि नारीणां च व्रतोत्तमम् ॥ मासे भाद्रपदे षष्ठी कृष्णपक्षे यदा भवेत् ॥१३॥ व्रतं तदा हि कर्त्तव्यं नारीणां मुक्तिदं प्रिये ॥ मनः संयम्य यत्नेन शृणु त्वं वरवर्णिनि ॥ १४ ॥

महीनेके कृष्णपक्षमें षष्ठी तिथिमें ॥ १३ ॥ हे प्रिये ! उस दिन स्त्रियोंको चाहिये कि मनको विषयोंसे रोकें। हे उत्तमललने ! एक कथा सुनो ॥ १४ ॥ ॥ ॥

हे महाभाग्यवति ! मालवा प्रान्तके चित्रकूट पर्वतमें वेद और शिक्षा कल्प व्याकरण आदि छः वेदांगोंमें पारंगत एक ब्राह्मण रहता था ॥ १५ ॥ उसके बगीचेमें एक श्रीधर ब्राह्मण

आसीन्मालवके देशे चित्रकूटे च पर्वते ॥ कश्चिद्विप्रो महाभागे वेदवेदांगपारगः ॥ १५ ॥ श्रीधरस्तु द्विजस्तस्य आरामे च स्थितस्तदा ॥ तस्य पुण्यदिने भद्रे यागश्च पितृवत्सलः ॥ १६ ॥ आषाढ्याः पंचमे पक्षे श्राद्धं तत्र समागतम् ॥ विप्रा निमंत्रितास्तेन प्राज्ञः पाकमकारयत् ॥ १७ ॥

उस समय टिका हुआ था, उसके पवित्र तिथिमें हे सुन्दरि ! पितरोंको प्रिय यज्ञ (श्राद्ध) उपस्थित हुआ ॥ १६ ॥ आषाढी पूर्णमासीके पांचवें पक्षमें (आश्विन कृष्ण पक्षमें)

श्राद्ध आगया । उस श्रीधर ब्राह्मणने ब्राह्मणोंको निमन्त्रण दिया और वह पंडित रसोई बनाने लगा ॥ १७ ॥ उसके निमन्त्रित महर्षि व्यास, वाल्मीकि, गर्ग, गौतम, पराशर और बड़े बड़े दूसरे मुनिलोग आये ॥ १८ ॥ उसकी स्त्री बड़ी सुरूपा, मनोहरा, पतिव्रता

व्यासो मुनिर्महाश्रेष्ठस्तथा वाल्मीकिरेव च ॥ पराशरो गौतमश्च गर्गोऽन्ये
य ऋषीश्वराः ॥ १८ ॥ रूपयौवनसंपन्ना तस्य भार्या प्रतिव्रता ॥ तामाह
प्रश्रितां विप्रः श्रूयतां मे वचः प्रिये ॥ १९ ॥ मातापित्रोर्यदा श्राद्धे भोजये
द्द्विजसत्तमान् ॥ राजसूयाश्वमेधानां फलं प्राप्नोति शोभने ॥ २० ॥

और विनयवती थी, ब्राह्मण बोला हे प्रिये ! मेरा वचन सुनो ॥ १९ ॥ माता और पिताके श्राद्धके दिन श्रेष्ठ ब्राह्मणोंको भोजन करानेसे हे सुन्दरि ! राजसूय और अश्वमेध यज्ञका

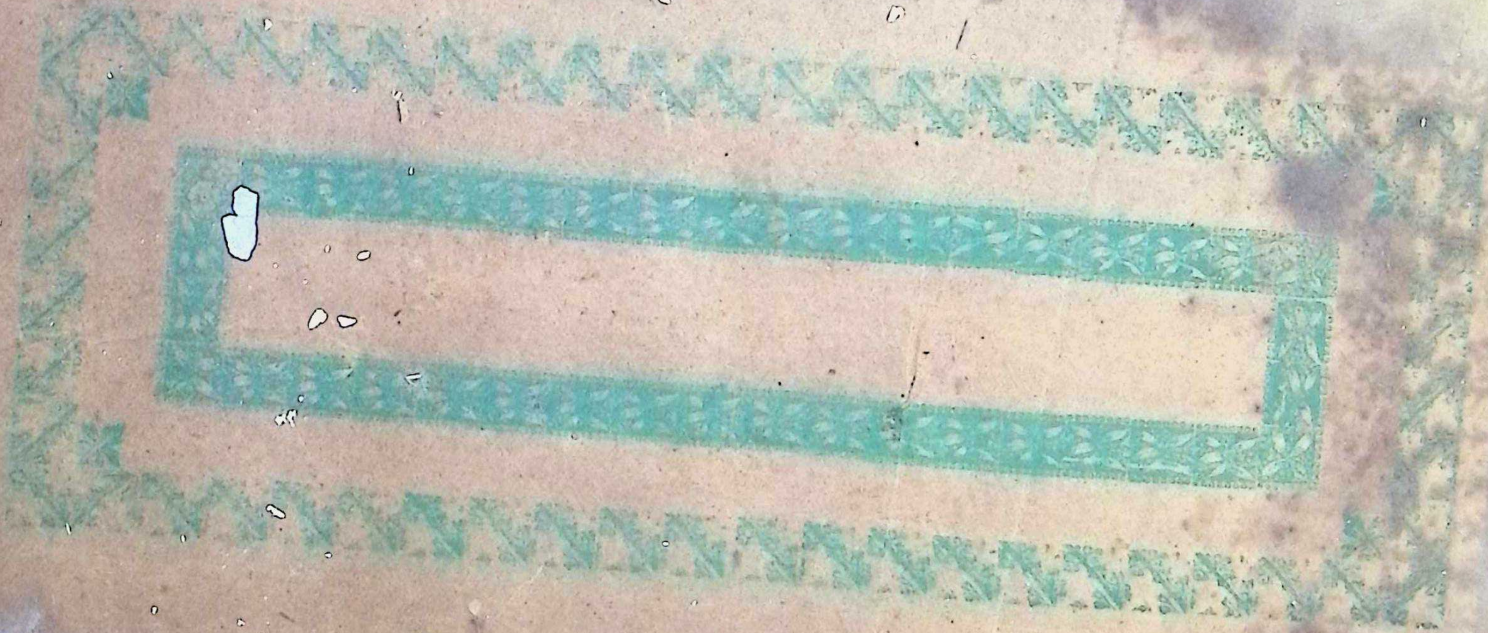

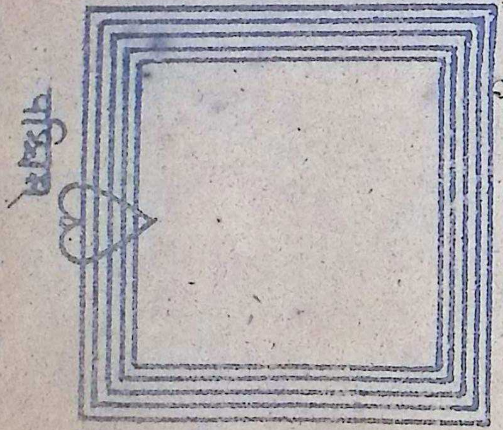

चतुष्कोणास्त्रम्

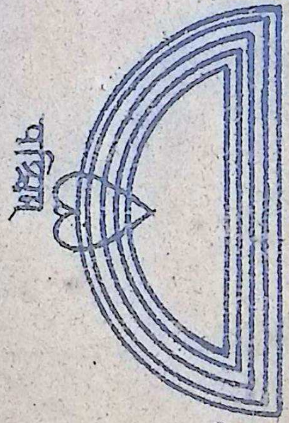

अर्धचन्द्र

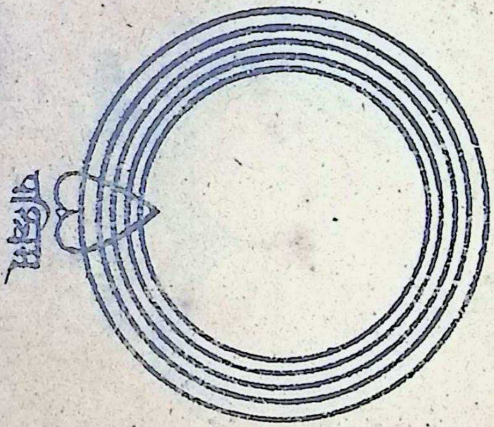

वृत्तकुंण्डम्

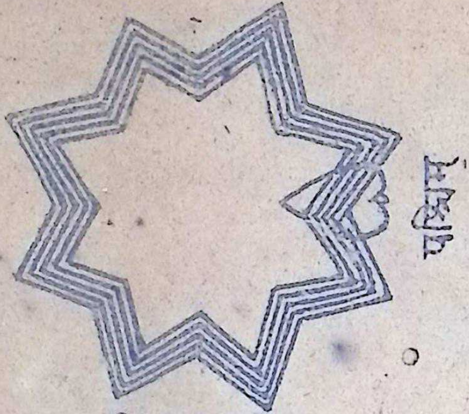

विषमत्र्यष्टास्त्रम्

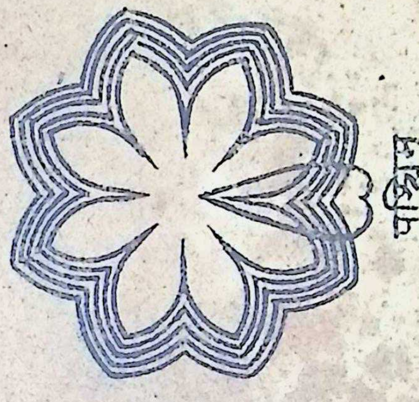

पद्मकुंण्डम्

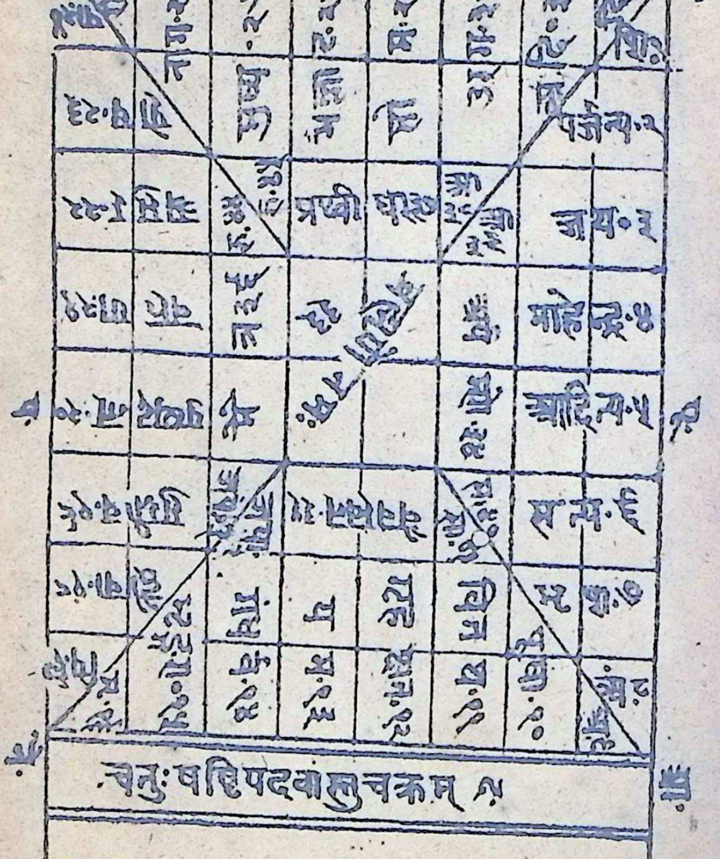
ब्रह्मणे नमः
पूषा.१०
वितथ.११
गृहक्षत.१२
यम.१३
गंधर्व.१४

चतुःषष्टिपदवास्तुचक्रम् ॥

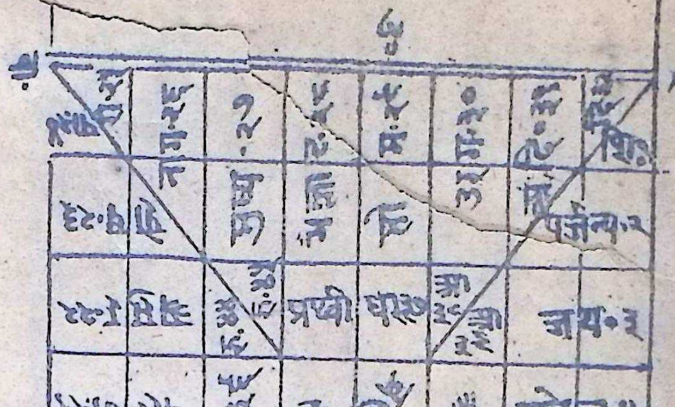
पर्जन्य·२
जय·३
माहेन्द्र·४
आदित्य·५
सत्य·६
पृथ्वीधर
ब्रह्मणे नमः

चतुःषष्टिपदवास्तुचक्रम् ५

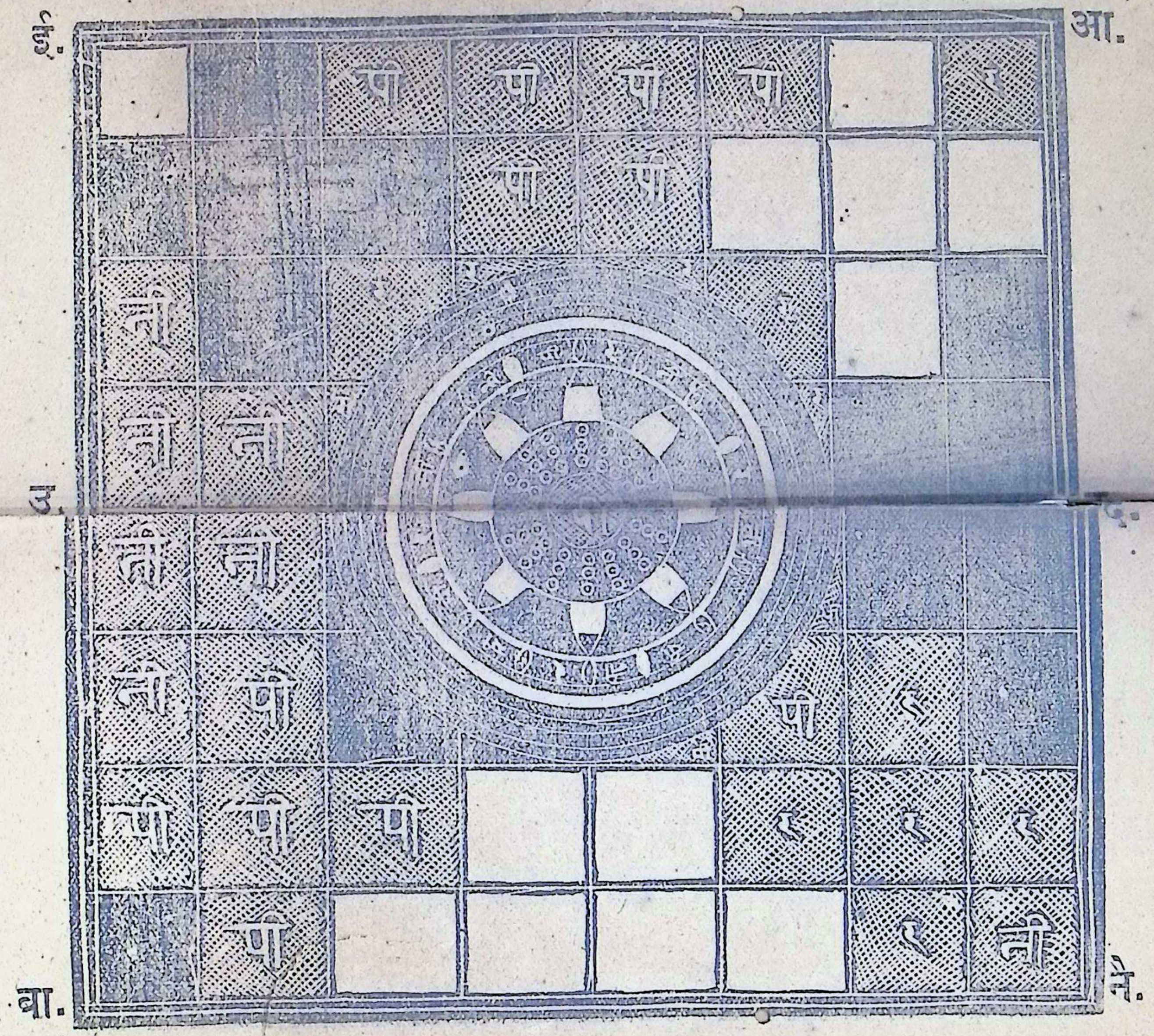
ई.
आ.
पी
पी
पी
पी
पी
पी
ती
ती
ती
ती
ती
ती
पी
पी
पी
पी
पी
पी
उ.
द.
वा.
नै.

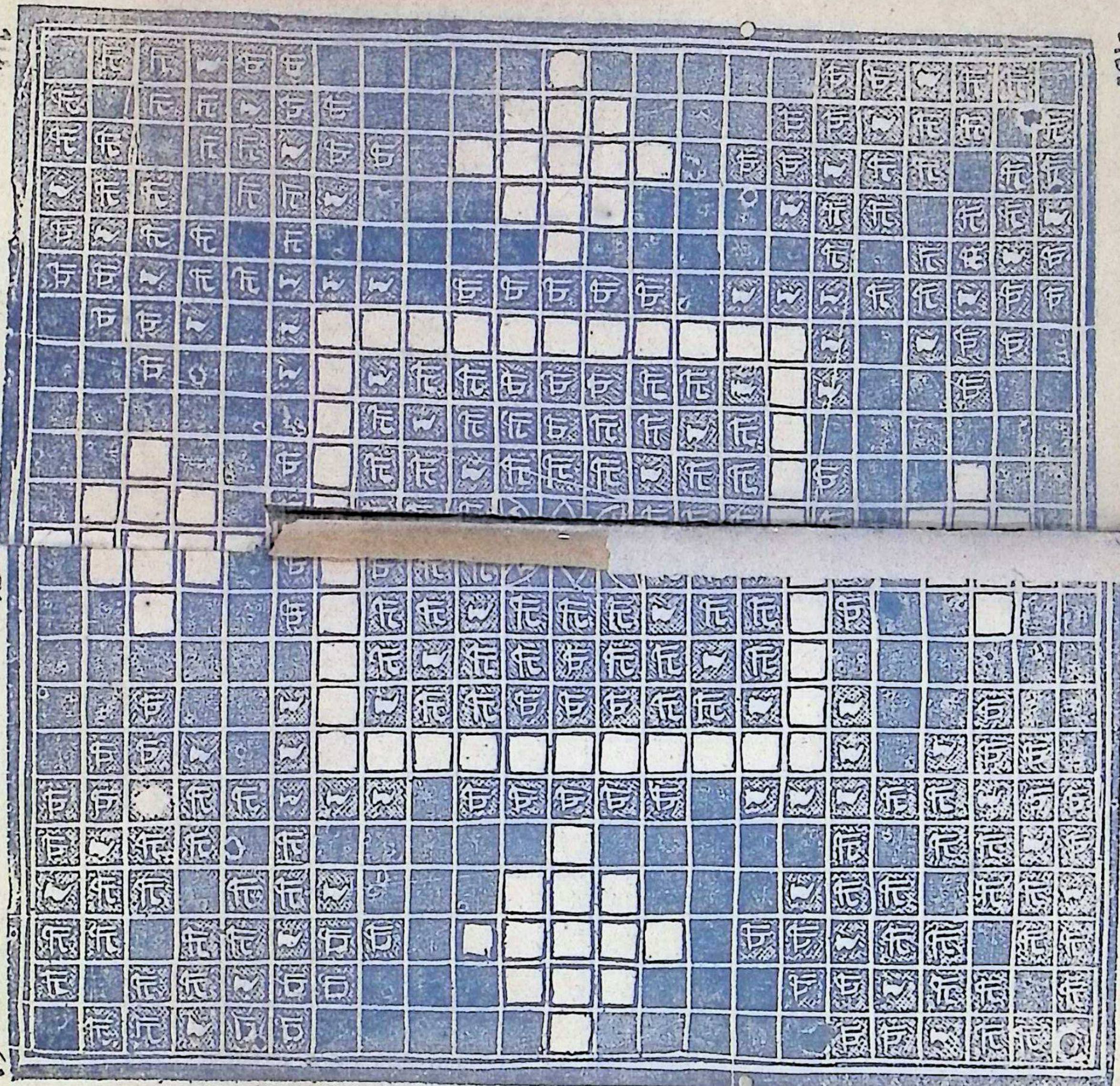
मं
पी
शा
बा.

❁ अथैतद्ग्रन्थविषयसूचीपत्राणि ❁

विषयाः	पृष्ठानि	पत्रांकाः	पंक्त्यंकाः
मङ्गलाचरणम्	१	०	१
सर्वदेवप्रतिष्ठाकर्मानुक्रम			
सूत्रम्	०	१	१
प्रतिष्ठाकालनिर्णयः	२	०	५
याग मण्डप विधिः	३	३	६
स्नानमण्डपम्	११	०	३
वैधस्नानविधिः	११	०	६
महासंकल्पः	०	११	३
सम्भाराः	०	१७	७
पञ्चपल्लवानि	१८	०	६
अथाष्टरत्नानि	१८	०	८
नवरत्नम्	१८	०	९
पञ्चगव्यप्रमाणम्	०	१८	४
पञ्चामृतम्	१९	०	८
उपधात्वष्टकम्	१९	०	९
कलशलक्षणम्	०	१९	५
सप्तधातवः	०	१९	७
अथाष्टमृदः	०	१९	८
दशौषध्यः	०	१९	९
सप्तधान्यम्	२०	०	१०

विषयाः	पृष्ठानि	पत्रांकाः	पंक्त्यंकाः
त्रिसूत्रीवेष्टनम्	१६८	०	६
नवग्रहस्थापनप्रकारः	०	१६८	[illegible]
नवग्रहपूजनप्रयोगः	१७०	०	६
नवग्रहचक्रम्	१७१	०	०
लक्षनवग्रहमखपूजनम्	०	१८६	६
अथकोटिनवग्रहमखपूजनम्	२०२	०	७
नवग्रहहवनप्रयोगः	०	२२०	७
ग्रहाणाम्बलिदानम्	२४०	०	३
एकलिङ्गतोभद्रचक्रोद्धारः	२४०	०	८
चतुर्लिंगतोभद्रचक्रोद्धारः	२४१	०	९
अष्टलिंगतोभद्रचक्रोद्धारः	२४२	०	२
द्वादशलिङ्गतोभद्रचक्रोद्धारः	०	२४२	६
द्वादशलिंगतोभद्रपूजनम्	०	२४३	०
द्वादशलिंगस्योपरि पुष्पाञ्जलिः	०	२६९	३
लिंगतोभद्रहवनप्रयोगः	२६७	०	९
यज्ञवास्तुचक्रोद्धारः	२७३	०	१
वास्तुपूजासंकल्पः	२७५	०	३
वास्तुहवनप्रयोगः	०	३०२	४
वास्तुबलिदानप्रयोगः	०	३०५	६
योगिनीचक्रोद्धारः	०	३०८	३

विषयाः	पृष्ठानि	पत्रांकाः	पंक्त्यंकाः
चतुःषष्टियोगिनीपूजनम्	०	३०८	९
योगिनीहवनप्रयोगः	३१३	०	२
योगिनीवलिदानम्	३१६	०	४
अथस्नानमण्डपप्रवेशः	०	३१६	१
भद्रपीठलक्षणम्	०	३१६	५
प्रथमवेदिकळशासादनम्	०	३१६	७
मध्यवेदिकळशासादनम्	३१८	३००	२
अथोत्तरवेदिकलशासादनम्	३१८	०	७
कर्मकुटीनिर्णयः	०	३२०	५
कर्मकुटीप्रयोगः	०	३२१	२
प्रथमवेदिस्नानविधिः	३२३	०	८

विषयाः	पृष्ठानिः	पत्रांकाः	पंक्त्यंकाः
द्वितीयवेदिस्नानविधिः	०	३२५	२
अथोत्तरवेदिस्नानविधिः	३२७	०	२
देवमुत्थाप्यरथारोपणम्	३३९	०	८
देवस्यशय्यायान्निवेशनम्	३४०	०	३
प्रधानहोमान्तेप्रतिमायान्यासाः	३४२	०	१
निद्रावाहनम्	०	३५१	५
अथमूर्तीशाः	३५३	०	५
शान्तिकपौष्टिकहवनम्	०	३५३	८
मूर्त्तिमूर्तिपलोकपालहवनम्	०	३४४	९

विषयाः	पृष्ठानि	पत्रांकाः	पंक्त्यंकाः
ततोव्याहृतिहोमः	३५७	०	३
प्रधानप्रतिमापिण्डिकायान्यासः	०	३५७	७
प्रासादाधिवासनम्	०	३५८	४
प्रासादोत्सर्गः	३६३	०	३
अथाऽचलप्रतिष्ठाकर्म	३६३	०	६
ब्रह्मशिळास्थापनम्	०	३६५	१
प्रासादाद्बहिरष्टौस्थण्डिळानि	०	३६७	७
पञ्चायतनानिवेशनानिर्णयः	०	३६८	४
पञ्चायतनस्थापनप्रयोगः	०	३६९	३

विषयाः	पृष्ठानि	पत्रांकाः	पंक्त्यंकाः
कुण्डेष्वंगहोमः	३७३	०	८
चण्डस्थापनम्	३७४	०	४
अथदेवनामकरणम्	३७६	०	२
नैमित्तिकदोषप्रायश्चित्तम्	३७६	०	५
आचार्यदक्षिणा	३७६	०	८
यज्ञयूपार्हणप्रयोगः	०	३७६	२
सर्वशान्त्यर्थहोमः	३७७	०	६
अथपूर्णाहुतिः	०	३७७	८
दिक्पाळेभ्योवलिदानम्	३८०	०	७
प्रणीताजळेनमार्जनम्	०	३८०	२
पूर्णपात्रदानम्	३८१	०	२

विषयाः	पृष्ठानि	पत्रांकाः	पंक्त्यंकाः
अथाभिषेकः	३८१	०	५
अथाचार्यपूजनम्	०	३८२	९
प्रार्थना	३८३	०	६
यजमानायाशिषः	०	३८३	९
अथाधिवासनकृत्यम्	३८४	०	७
भूयसीदक्षिणादानम	३८५	०	२
विष्णुचिन्तनम्	३८५	०	९
विसर्जनम्	०		
अथदेवचतुर्थीकर्मप्रयोगः	०	३८५	७
चण्डपूजनम्	३८९	०	८
अथचलप्रतिष्ठाप्रयोगः	३९१	०	२

विषयाः	पृष्ठानि	पत्रांकाः	पंक्त्यंकाः
अथजीर्णोद्धारः	३९६	०	७
अथवाप्यादिविधिः	४०८	०	९
वारुणमण्डलचक्रस्योद्धारः	४०९	०	४
वारुणमण्डलपूजाप्रयोगः	४१०	०	७
नागयष्ट्यारोपणम्	०	४२७	४
जलाशयस्यचतुर्थीकर्म	४३०	०	८
अथबाप्यादिशुद्धिः	०	४३२	३
अथारामेष्वेवविशेषः	४३२	०	३
हनुमत्प्रतिष्ठाप्रयोगः	०	४३३	३
अग्न्यायतनप्रकारः	४३७	०	६
शूद्राणांदेवस्थापनेविचारः	४३९	०	६

इस पुस्तक का सर्वाधिकार प्रकाशक ने स्वाधीन रक्खा है और रजिस्टरी करादी है।

श्रीगणेशायनमः ॥ अथ मंगलाचरणम् ॥ वामाङ्गाधिष्ठितोमस्सुरसरिदमलानन्दधारा
धरोयः ब्रह्मेन्द्रोपेन्द्रदेवास्सविनयमथयं मानसस्थंविदध्युः ॥ सोयंवालशशाङ्कभूषित
शिराःमन्मानसन्तामसं संशोध्याऽखिलकर्मकांडमधुनादेवः प्रकाशन्नयेत् ॥ १ ॥
नरेशमाधवप्रसादशासनेप्रजाःसदा ॥ सुधर्मकर्मतत्परामुदाऽवसन्सुखान्विताः ॥ २॥
किदारनाथमात्मजं धरासुरक्षणेक्षमम् ॥ नियुज्यशंभुसेवको गमत्तदीयसन्निधौ ॥३॥
जिलोन्नावप्रदेशस्थेतस्यराज्येसुशोभने ॥ मौरांवासन्निधिस्थेच बठुवाग्रामकेशुभे ॥४॥
वासोऽपूर्वमभवादिदानींलक्ष्मणेपुरे ॥ शिवदीनंस्वपितरं देवीदत्तंपितामहं ॥५॥नमस्क
रोमिसततंस्वाभीष्टार्थस्यसिद्धये ॥ ५ साम्बंशिवन्नमस्कृत्य ध्यात्वातच्चरणाम्बुज
म् ॥ ६ ॥ सर्वदेवप्रातिष्ठेन्दु शेखरंबिलिखाम्यहम् ॥ सीतारामप्रसिद्धाख्यः मणिरामा
पराभिधः विदुषामुपकाराय क्रियतेतेनसंग्रहः ॥ ७ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥

त्र्यपदमुत्तराफाल्गुन्युत्तराभाद्रपदयोरर्थवत् ॥ अथदेवतान्तरेणकालविशेषोरत्नावल्यां ॥ माघफाल्गुनबैशाख ज्येष्ठाषाढेषुपञ्चसु ॥ मासेषुशुक्लपक्षेषुलिङ्गस्थापनमुत्तमम् ॥ धर्मसिंधौ ॥ श्रावणेचनभस्येच लिङ्गस्थापनमुत्तमम् ॥ देव्यामाघेऽश्विनेमासेप्युत्तमंसर्वकामदं ॥ माधवीयेमयूखेच ॥ मातृभैरवबाराहनारासिंहत्रिविक्रमाः ॥ महिषासुरहंत्र्यश्च स्थाप्यावैदक्षिणायने ॥ क्वचिन्निषेधः ॥ आर्द्रादिकेस्वातिविरामकालेनक्षत्रवृन्देदशकोस्थितेर्के ॥ विवाहचौलव्रतबन्धदीक्षा सुरप्रतिष्ठादिनकार्यमेव ॥ पञ्चमीचद्वितीयाच तृतीयासप्तमीतथा ॥ दशमीपौर्णमासीच तथाश्रेष्ठात्रयोदशी ॥ आसुप्रतिष्ठाविधिवत्कृतावहुफलाभवेत् ॥ बुधोबृहस्पतिःशुक्रस्त्रयोप्येतेशुभग्रहाः ॥ एभिर्निरीक्षितंलग्नन्नक्षत्रञ्चप्रशस्यते ॥ शुभेलग्नेशुभस्थानेशुभेक्रूरविवर्जिते ॥

लग्नेऋक्षेप्रकुर्वीत प्रतिष्ठाबिधिमुत्तमम् ॥ अयनेविषुवेतद्वत् षडशीतिमुखेतथा ॥ एतेषुस्थापनङ्कार्यं विधिदृष्टेनकर्मणा ॥ मुहूर्तेस्थापनंकुर्यात् पुनर्ब्राह्मये विचक्षणः ॥ इतिराजकौस्तुभे ॥ प्रावृषिस्थापितंलिङ्गं भवेद्वरदयोगदमितिनिर्णयसिन्धौ ॥ श्रेष्ठोत्तरेप्रतिष्ठास्यादयनेमुक्तिमीहताम् ॥ दक्षिणेतुमुमुक्षूणांमलमासेनसाद्वयोरितिशैवसिद्धान्तशेखरोक्तेः ॥ आर्द्राप्रवेशात पूर्वमाषाढेपिभवति ॥ मुक्तिकामानान्तुदक्षिणायनेपि भवतीतिप्रतिष्ठाकालनिर्णयः ॥ अथयागमण्डपविधिमाह ॥ ततोयजमानः सुमुहूर्त्तेप्रातःकृत्यन्निर्वर्त्यशुद्धोभूत्वा आचार्यहस्तेपूजासम्भारान्समर्प्यसुवासिनीभिः सौभाग्यवतीभिःस्त्रीभिः गीतवाद्यमङ्गलशब्दैःसहप्रासादाग्रेप्राच्यामुदीच्यांवाप्रतीच्यान्नातिदूरेमण्डपभूमिमागत्यभूतादिनिवारणंकृत्वा ॥ तत्रमन्त्राः ॥ भूत

प्रेतपिशाचाद्याह्यपक्रामन्तुराक्षसाः ॥ स्थानादस्माद्व्रजन्त्वन्यत्स्वीकरोमिभुवन्त्विमां ॥ अपसर्पन्तुतेभूताये भूताभूमिसंस्थिताः ॥ येभूताविघ्नकर्तारस्तेनश्यन्तुशिवाज्ञया ॥ भूतानिराक्षसावापि येत्रतिष्ठन्तिकेचन ॥ तेसर्वेप्यपगच्छन्तु विष्णुयागङ्करोम्यहम् ॥ इतिमन्त्रान्पठित्वागौरसर्षपान्सर्वत्रविकिरेत् ॥ तत्रपूर्वंयथाविधिपुण्याहवाचनपूर्वकं गणपतिंसंपूज्यअनन्तरंकूष्मांडादीनाम्पूजनंकुर्यात् ॥ ततःप्रक्षालितपाणिपादःआसनेउपविश्य ॥ आचम्यप्राणायामंकृत्वावद्धशिखःसपत्नीकोगणेशन्ध्यायन्प्राङ्मुखउदङ्मुखोवाउपविश्य ॥ देशकालौसङ्कीर्त्य ॥ ममेहजन्मनिजन्मान्तरेवाकृतसमस्तपापक्षयार्थंश्रीपरमेश्वरप्रीत्यर्थममुकदेवप्रासादप्रतिष्ठायज्ञोपयोगिकरिष्यमाणमण्डपादीनां निर्विघ्नतासिद्ध्येपुण्याहवाचनं गणपतिपूजनमाचार्यादिवरणञ्चकरिष्ये ॥ ॐसुमुखश्चैकदंत

रच० इत्यादिस्मरणपूर्वकंयथाविधिगणपतिं सम्पूज्यआचार्यादिवरणंकुर्यात् ॥ तद्यथा ॥ आचार्यस्यपादप्रक्षालनं शिरसिकुंकुमादिनातिलकञ्चकृत्वाअक्षतपुष्पादिभिः सम्पूज्य ॥ गुरवेनमइतिनत्वादेशकालौसङ्कीर्त्य ॥ अमुकदेवताप्रासादप्रतिष्ठाप्रारम्भनिमित्तंतदङ्गत्वेनमण्डपंकर्तुं ममुकगोत्रममुकप्रवरममुकवेदशाखाध्यायिनममुकशर्माणं ब्राह्मणमाचार्यत्वेनत्वामहम्वृणे ॥ वृतोस्मीतिप्रतिवचनम् ॥ ॐव्रतेनदीक्षामाप्नोतीति मन्त्रम्पठेत् ॥ ॐव्रतेनदीक्षामाप्नोतिदीक्षयाप्नोतिदक्षिणाम् । दक्षिणाश्रद्धामाप्नोति श्रद्धयासत्यमाप्यते ॥ सं० अ० १९ मं० ३० ॥ इत्याचार्यंवृत्वा ॥ प्रार्थनांकुर्यात् ॥

आचार्यस्तुयथास्वर्गे शक्रादीनाम्बृहस्पतिः ॥ तथात्वंममयज्ञेस्मिन्नाचार्योभवसुव्रत ॥

इतिसंप्रार्थ्य ॥ ततः कूर्मानन्तपृथिव्यादीनांपूजनम् ॥ यथा ॥ ॐसुपर्णःपार्ज्जन्न्यऽआ

तिर्य्यङ्गहिसोदार्व्विदातेव्वायवेबृहस्पतयेव्वाचस्पतयेपैङ्गराजोलजऽआन्तरिक्ष; प्लवो मद्गुर्म्मत्स्यस्तेनदीपतयेद्यावापृथिवीयःकूर्म्मः ॥ सं० अ० २४ मं० ३४ ॥ इतिमन्त्रेण ॐभूर्भुवःस्वःकूर्मायनमः कूर्ममावाहयामि ॥ पूजयामि० ॥ ततः अनन्तम् ॥ ॐ येवामीरोचनेदिवोयेवासूर्यस्यरश्मिषु ॥ येषामप्सुसदस्कृतन्तेभ्यःसर्प्पेभ्योनमः ॥सं० अ०१३मं०८॥ इतिमंत्रेणपूजयेत् ॥ ओंभूर्भुवःस्वःअनन्तमावाहयामिपूजयामि ॥ ततः कूर्मपृष्ठोपरिस्थितां शुक्लवर्णाञ्चतुर्भुजांशङ्खचक्रपद्मशूलधरांसुप्रसन्नांपृथिवींध्यात्वा पुष्पाञ्जलिमादायावाहयेत् ॥ आगच्छसर्वकल्याणिवसुधेलोकधारिणि ॥ पृथिविब्रह्मदत्तासिकाश्यपेनाभिवन्दिता ॥ रत्नाकरेविष्णुनात्वंधृतावाराहरूपिणा ॥ आगच्छवरदेधात्रियज्ञेस्मिन्शुभदायिनि ॥ ओंस्योनापृथिवीतिमन्त्रेण०॥ ओं स्योनापृथिविनोभवानृक्ष

रानि॒वेश॑नी । यच्छा॑नः॒शर्म्म॑स॒प्रथाः॑ वा० सं० अ० ३६ मं० १३ ॥ ॐभूर्भुवःस्वः भूम्यैनमः ॥ भूमिमावाह्यपूजयेत् ॥ ततोभूम्यैआसनंसमर्प्पयामि ॥ भूम्यैपाद्यमर्घमाचमनंस्नानंपुनराचमनीयंचन्दनमक्षतंपुष्पन्धूपंदीपन्नैवेद्यंपुनराचमनीयं ताम्बूलंपूगफलंदक्षिणांसमर्पयामि ॥ एवंसंपूज्यसंस्तुत्यनमस्कुर्यात् ॥ शेषमूर्द्धनिस्थितांरम्यान्नानासुखप्रदायिनीम् ॥ विश्वधात्रींमहापुण्यां विश्वस्यजननींपरां ॥ यज्ञभागंप्रतीक्षस्व सुखार्थं प्रणमाम्यहम् ॥ तवोपरिकरिष्यामि मण्डपंशुभलक्षणम् ॥ क्षन्तव्यश्चत्वयादेवि सानुकूलामखेभव ॥ भूमेत्वंरत्नगर्भासि सप्तसागरसंस्थिता ॥ वीजानिविविधानीहप्ररोहन्तिसदात्वयि ॥ नानाकर्मसुकुशलेशेषस्यशिरसिस्थिता॥धरणीकाश्यपीक्षोणीरसाविश्वम्भराचभूः ॥ उद्धृतासिवराहेण कृष्णेनशतबाहुना ॥ दंष्ट्राग्रेलीलयादे

वियंज्ञार्थंप्रणमाम्यहम् ॥ मान्तर्भूमिञ्चगांमातःसर्वाधारहरिप्रिये ॥ भवेत्पशुप्रपुत्रेभ्यो योनोद्वेष्टिसउद्धृतः ॥ निर्विघ्नंममकर्मेदं यथास्यात्त्वन्तथाकुरु ॥ इतिसंप्रार्थ्यस्वाभीष्टमानांभूमिंस्वीकृत्य ॥ ततःपञ्चगव्येनहरितैःकुशैःभूमिंप्रोक्षयेत् ॥ ओंआपोहिष्ठेतित्रिभिः मंत्रैः ॥ ओंआपोहिष्ठामयोभुवस्तानऽऊर्ज्जेदधातन महेरणायचक्षसे सं० अ० ३६ मं० १४ ॥ योवःशिवतमोरसस्तस्यभाजयतेहनः उशतीरिवमातरः सं० अ० ३६ मं० १५ ओंतस्म्माऽअरङ्गमामवोयस्यक्षयायजिन्न्वथ आपोजनयथाचनः ॥ सं० अ० ३६ मं० १६ ॥ पृथिवींप्रोक्ष्य ॥ ततस्ताम्र पात्रेगन्धदूर्वाफलपुष्पयवयुतंजलंगृहीत्वा भूम्यैअर्घ्यन्दत्वाप्रार्थयेत् ॥ एवंभूशुद्धिञ्चविधाय ॥ तत्रप्रकारान्तरेणलघूपायेनदक्षिणोदीचीसाधनमाह॥तिथिपत्राद्गणिताद्वादिनमानमेतावदितिज्ञात्वाततोघटिकादिनाज्ञातेदिनार्द्धेम

ध्यान्हेसप्तांगुलशङ्कोर्यत्रच्छायाग्रंलगतितस्माच्छंकुमूलंयावन्नीयमानं सूत्रंदक्षिणोत्तरसूत्रमिति ॥ अथवासप्तांगुलंशङ्कोर्गणितागतमध्यान्हिकच्छायातुल्यातस्यैवच्छायायदास्यात्तदाग्राच्छंकुमूलेनीयमानं सूत्रन्दक्षिणोत्तरमितिअत्रयुक्तिः तस्मिन्समयेरविर्दक्षिणोत्तरवृत्तेभवतीतिततःपूर्ववत्पूर्वापरेसाध्ये ॥ एतद्दिक्साधनंविधाय॥कपिलपंचरात्रेमण्डपंप्रकृत्योक्तं ॥ उच्छ्रायोहस्तमानःस्यात्सुसमश्चसुशोभनः ॥ तेनाबिकल्पोज्ञेयः वास्तुशास्त्रे ॥ मण्डपान्तरमुत्सृज्यकर्त्तव्यंमण्डपान्तरामिति ॥ अथमण्डपप्रमाणंवसन्ततिलके ॥ दशहस्तोद्वादशहस्तोधममुण्डपः ॥ द्वादशहस्तश्चतुर्दशहस्तोमध्यमः ॥ षोडशाऽष्टादशकरउत्तमः ॥ तुलापुरुषदानेबिंशतिहस्तोप्युत्तमः ॥ मण्डपेआयामाविस्तारौ तुल्यावेवेतिव्याख्या ॥ अत्रविस्तारायामयोरंगुलादिकंक्षिप्त्वाल्यक्त्वावावृषायाःसिद्धय

र्शंयतितव्यं ॥उक्तम्बिश्वकर्मणा॥ वणिग्धर्मेषुवैश्येषुमण्डपोभोज्यवेश्मसु॥हयातुरंगशालायाङ्गोशालागोकुलेषुचेति॥पञ्चरात्रे॥ कनीयान्दशहस्तःस्यान्मध्यमोद्वादशोन्मितः॥ तथाषोडशभिर्हस्तैर्मण्डपःस्यादिहोत्तमः॥ तथा ॥ दशद्वादशहस्तौचाद्विद्विवृध्याततःक्रमात् ॥ लिङ्गपुराणे ॥ त्रिंशद्धस्तप्रमाणेन मण्डपंकूटमेववा॥ तथाऽष्टादशहस्तेनकलाहस्तेनवापुनरिति ॥ ननु ॥ द्वादशहस्तमण्डपस्यकथमधमत्वमितिउच्यते ॥ दशहस्तापेक्षयामध्यमत्वं । चतुर्दशहस्तापेक्षयाकनिष्ठत्वं ॥ यथैकस्यैवयजमानस्य कुत्रचित् गौणत्वं । कुत्रचिन्मुख्यत्वंतद्वत् द्वादशहस्तमण्डपेनवकुण्डीपक्षेपञ्चमेखलापक्षेच आचार्याद्युपवेशनन्नसंभवतीति ॥ अत्रसरत्न्यरत्निकहस्तपरिमितैः कुण्डैरेकमेखलापक्ष एवादरणीयः औचित्यादर्थात्परिमाणमिति ॥ कात्यायनोक्तेश्च ॥ उत्तमेपिमण्डपे

दशहस्तकुण्डनवकपञ्चमेखलादिपक्षस्यसमावेशोनस्यादिति ॥ मण्डपवृद्धिःकार्या ॥ यतोमन्त्रमुक्तावल्यां ॥ चतुर्विंशहस्तपर्यंतंमण्डपवृद्धिः ॥ वास्तुशास्त्रेतुपञ्चहस्तमारभ्य द्वात्रिंशद्धस्तपर्यन्तंवृद्धिः ॥ कर्मविशेषेउक्तासाचात्रविस्तरभयान्नलिख्यत इति ॥ अथ द्वारमानंवेदीमानञ्चाह ॥ दिङ्मध्येद्वारचतुष्टयंद्विहस्तंभवति ॥ तद्द्वारंमध्यमोत्तमयोर्मण्डपयोः चतुरष्टांगुलवृद्धिमत् ॥ मध्यममण्डपेचतुरंगुलावृद्धिः ॥ उत्तमेचाष्टांगुलावृद्धिःकार्या ॥ वेदीमानं ॥ मण्डपतृतीयांशेनमध्येकार्या ॥ मण्डपेनवकोष्ठकेकृतेसतिमध्यकोष्ठेकार्यासमाहस्तमात्रोच्छ्रिताकार्या ॥ अन्यत्रइष्टिकाभिः कार्येत्येतत् केवलसमत्वसाधनायेतिव्याख्या ॥ पञ्चरात्रे ॥ कनिष्ठेद्विकरन्द्वारञ्चतुरंगुलवृद्धितः ॥ मध्यमोत्तमयोरितिक्रियासारे ॥ त्रिभागंमण्डपंकृत्वामध्यभागस्तुवेदि

का ॥ हस्तमात्रन्तदुत्सेधंचतुरस्रंसमन्तत इति अथतुलापुरुषदानेविशेषमाह ॥ तुलापुरुषदानेऽधममध्यममण्डपयोः पञ्चहस्ता ॥ उत्तममण्डपेसप्तहस्ताभवति ॥ मण्डपस्येशानभागेग्रहवेदिकाहस्ताऽयामदैर्घ्योच्छ्रायात्रिवप्राभवतीतिव्याख्या ॥ मात्स्ये ॥ पञ्चहस्ताभवेद्वेदी सप्तहस्ताथवाभवेत् ॥ अत्रमध्यमाधमयोः पञ्चहस्तोत्तमेसप्तहस्तेतिनिबन्धकर्तृभिर्व्यवस्थापितं ॥ मण्डपस्येशानभागेग्रहवेदीकरोन्मितेति ॥ अथस्तंभनिवेशनम् ॥ समेतृतीयेंशेपूर्वापरंदक्षिणोत्तरंचापिसूत्रन्दद्यात् ॥ एवन्नवकोष्ठात्मकोमण्डपोभवति ॥ ततः तृतीयांशांतेष्वष्टसुचतुर्षुवहिः कोणेषुचसमान्शुभान्दृढान्यज्ञीयवृक्षोद्भवान् पञ्चहस्तप्रमाणान् द्वादशस्तम्भान्दद्याद्धारयेत् ॥ स्तंभवेद्याःकोणेषुअष्टहस्तप्रमाणान् चतुरःस्तंभान्सचूडान्तादृशानेवाग्नेयीदि

क्रः प्रादक्षिण्याद्द्याद्रोपयेत् ॥ स्तंभपञ्चमांशंभूमौनिखनेदेवंकृतेषोडशस्तंभस्थापनंस्यादितिव्याख्यापंचरात्रे ॥ शारदातिलकेपि ॥ षोडशस्तंभसंयुक्तश्चत्वारस्तेषुमध्यमाः ॥ अष्टहस्तसमुच्छ्राया इतिवेदसंख्याश्चूडासमन्वितास्तथेतिवाक्यात् ॥ चतुर्षुवेदिकोणगेषुस्तंभेषुचूडानियमः ॥ अन्येषुद्वादशसुकर्णाश्चूडावाकार्याः ॥ अन्यच्च ॥ स्तंभोच्छ्रायेशिलान्यासेसूत्रयोजनकीलके ॥ खननावटसंस्कारेप्रारंभोवह्निगोचरे ॥ इतिवास्तुशास्त्रे ॥ पञ्चमांशंन्यसेद्भूमौ सर्वसाधारणोविधिरिति ॥ अथस्तंभोपरिकाष्ठनिवेशनम् ॥ प्रथमंचतुर्षुस्तंभेषुवेदिकोणगेषुबलिकाख्यंकाष्ठचतुष्टयंप्रान्तेसच्छिद्रन्निधेयम् ॥ तत्रपूर्वापरंद्वयं दक्षिणोत्तरंद्वयंचचूडासुनिदध्यात् ॥ तिर्यङ्निहितस्यकाष्ठस्यबलिकेतिसञ्ज्ञा ॥ एवन्द्वादशस्वपिवाह्येषुस्तंभेषु कर्णेषुचूडासुवाबलि

काः काष्ठानिनिधेयानि ॥ ततोमध्यस्तंभचूडातःपूर्वापरमेकन्दक्षिणोत्तरमेकंकोणेचैक
ङ्काष्ठंसमतयास्थापयेदिति ॥ एवञ्चतुर्ष्वपिस्तंभेषुद्वादशकाष्ठानिभवन्ति ॥ ततो
मध्येमध्येचकाष्ठानिसकर्णानिदेयानीति ॥ अथमण्डपाच्छादनम् ॥ वेदिस्तंभोपरिशि
खराकारांरचनांकृत्वाएनंमण्डपन्द्वारवर्जितंऋजुवंशैःकटैश्छादयेत् ॥ षोडशापिस्तंभा
न्वस्त्रसमूहैर्दुकूलादिभिश्छादयेदिति ॥ अथतोरणान्याहवसन्ततिलकया ॥ पूर्वा
दिदिक्षुरचयेदपितोरणानिन्यग्रोधजन्तुफलपिप्पलवृक्षराजैः अश्वत्थजन्तुफलपर्कटि
भूरिपाद्भिर्वैषामभावतइमान्यथवैककेन ॥ पूर्वादिदिक्षुवटोदुंबराश्वत्थप्लक्षैस्तोरणानि
रचयेत् ॥ अथवाश्वत्थोदुंबरप्लक्षवटैरचयेत्तेषामभावे इमानितोरणानिएकेनैववृक्षे
णयथोपपन्नेनरचयेदिति ॥ अथतोरणमानन्निवेशनञ्च ॥ मण्डपान्मण्डपद्वाराद्बहिर्

स्तमात्रेतानितोरणानिपञ्चषट्सप्तहस्तैर्दीर्घाणिअधमादिकेषु ॥ अधममध्यमोत्तमेषु मण्डपेषुप्राहुः ॥ अथतेषांतोरणानामायांतरायामाद्विंहस्तः चरणवृद्ध्यासहस्यात् ॥ अधमेमण्डपोद्विंहस्ताआयातिःस्यात् ॥ मध्यमेषडंगुलानिद्वौहस्तौ ॥ उत्तमेसार्द्धहस्तद्वयम् ॥ इति ॥ अथ फलकादिनिवेशनम् ॥ स्तंभानांतोरणस्तंभानान्दशांगुलपरिणाहानामर्द्धेनतिर्यक्फलकंउपान्तयोःसच्छिद्रंस्यात् ॥ फलकन्नामतोरणस्तंभोपरितिर्यग्दीयमानङ्काष्ठंपट्टिकेत्यभिधीयते ॥ अल्पमण्डपतोरणेसार्द्धहस्तद्वयमितं ॥ मध्येहस्तत्रयपरिमितं ॥ उत्तमेचसार्द्धहस्तत्रयमितम् ॥ शैवयागेचतुःफलकमस्तके शूलाकृतयः ॥ नवैकादशत्रयोदशांगुलदीर्घाः स्वचतुर्थांशेनविस्तृताः ॥ तेनसपादद्वयपादोनत्रयसपादत्रयांगुलविस्तृताः स्वतोरणकाष्ठजाः कीलाश्चत्वारोभवंति ।

तेषाङ्कीलानांफलकस्यमध्यभागेनिवेशनम् ॥ द्वित्रिचतुरंगुलमिति ॥ अल्पमध्यमो
त्तमेषुस्यान्मण्डपेषु ॥ अथविष्णुयागेपुनरंगुलवृद्धिरिति ॥ अधमादिषुमण्डपेषु
दशांगुलद्वादशचतुर्दशांगुलदीर्घाःस्वचतुर्थांशेनविस्तृताःतेनसार्द्धद्वयंत्रिसार्द्धत्रयांगु
लायामाः निवेशनार्थमधोलघुकीलकेनसहिताः ॥ प्रागादिक्रमेणशंखचक्रगदापद्म
श्चिन्हिताःकीलाःस्वतोरणकाष्ठभवाःफलकमध्येनिधेयाः ॥तोरणस्तंभेष्वपिपञ्चमांशे
ननिखननमितिव्याख्याशारदातिलके॥पिङ्गलमते॥ शूलेनचिन्हिताःकार्याद्वारशाखा
स्तुमस्तके॥ शूलेनवांगुलैर्दैर्घ्यन्तुरीयांशेनविस्तृतिः ॥ ऋजुर्वैमध्यशृङ्गंस्यात्किञ्चि
द्वक्रन्तुपक्षयोः ॥ प्रथमन्तत्समाख्यातंद्व्यंगुलंरोपयेत्तथा ॥ शेषाणांद्व्यंगुलावृद्धि
र्वैशश्चांगुलवृद्धित इतिवास्तुशास्त्रे ॥ अथमण्डपवर्णनव्याजेनमण्डपालङ्करणा

निवदति ॥ चूतपल्लवमालाद्यवितानैरुपशोभितम् ॥ विचित्रवस्त्रसंछन्नंपट्टकूलविभूषितम् ॥ सफलैःकदलीस्तंभैःक्रमुकैर्नारिकेलजैः ॥ फलैर्नानाविधभोज्यैर्दर्पणैश्चामरैरपि ॥ भूषितंमण्डपंकुर्यात्तिलपुस्पसमुज्ज्वलमिति ॥ अन्यथाभावेदोषउक्तः ॥ पंचरात्रे ॥ अनुक्तसाधनैःक्लृप्तोयदिवाकुटिलाकृतिः॥मानाधिकोथवान्यूनोमण्डपःकर्तृनाशनः॥ इति । अथध्वजानिवेशनम् ॥ ध्वजान्द्विहस्तमितायामान् ॥ पञ्चहस्तदीर्घान्सुपीतारुणकृष्णनीलश्वेतासितश्वेतासितान्गैरिकादिलिखितदिक्पालवाहान्दशहस्तवंशमस्तकेयोजितान्हस्तद्वयनिखातान्ध्वजांस्तानपिपूर्वंतइतिवक्ष्यमाणत्वात्प्राच्यादिवाहयेद्वारयोदिति व्याख्याप्रतिष्ठासारसंग्रहे ॥ पीतरक्तादिवर्णाश्चपञ्चहस्ताध्वजाःस्मृताः ॥ द्विपञ्चहस्तैर्दण्डैस्तेवंशजैःसंयुतामता ॥ इतिक्रिया

सारे ॥ मातङ्गवस्तमहिषासिंहमत्स्यैणवाजिनः ॥ वृषभञ्चयथान्यायंध्वजमध्येक
माल्लिखेत् ॥ पंचमाशन्निखनेदिति ॥ अथपताकामानम् ॥ प्रतिकुण्डंपताकास्तु
प्रोक्ताःस्युःशास्त्रकोविदैः ॥ सप्तहस्ताःपताकाःस्युःसप्तमांशेनाविस्तृताः ॥ लोकपाला
नुवर्णेननवमीतुहिनप्रभा ॥ पाताकाश्चध्वजाश्चापिगन्धपुष्पसमन्विताः ॥ इतिपर
शुरामः ॥ एवंमण्डपंकृत्वा ॥ ततःमध्यवेदिपार्श्वेचतुर्विंशत्यंगुलान्तरेएकहस्तात्मक
चतुरस्रकुण्डकरणार्थंभित्तिकरणंतदर्थंसूत्रन्देयम् ॥ तस्यव्यवहारस्तुविस्तरभया
न्नोक्तः ॥ पंचकुण्डीपक्षेचचतुरस्रंपूर्वे ॥ अर्द्धचन्द्राभन्दक्षिणे ॥ वृत्तकुंडंपाश्चिमे ॥
पद्माभमष्टदलंवाउत्तरे ॥ पूर्वेशानयोर्मध्येचतुरस्रंवृत्तंवाहोमानुसारेणाऽऽचार्यकुण्डं
विधेयम् ॥ एककुण्डीपक्षेतु ॥ चतुरस्रंवृत्तकुण्डंपाश्चिमेवोत्तरेविधेयम् ॥ पूर्वदक्षिण

योःकुण्डेयोनिःउत्तराग्रा ॥ पश्चिमोत्तरयोरपिपूर्वाग्रा ॥ आचार्यकुण्डेपिपूर्वाग्रायोनिः ॥
इतियोनिव्यवहारः ॥ सर्वेषांकुण्डानांमध्येनाभिःकुण्डसदृशी ॥ पद्मनाभिंविवर्जयेत् ॥
हस्तमात्रकुण्डेचतुरंगुलविस्तारा ॥ अंगुलद्वयोच्चाभवति ॥ इतिकुण्डरचना ॥ अथ
यागमण्डपोत्तरेतदर्द्धेनतृतीयभागेनवाचतुरस्रञ्चतुर्द्वारं कदलीस्तंभान्वितंतृणादिना
च्छादितंस्नानमण्डपन्निर्मायतन्मध्येहस्तमितंचतुरंगुलोत्सेधंबेदिकात्रयंच कुर्यादिति
स्नानमण्डपप्रकारः ॥ अथवैधस्नानविधिः ततःनद्यादिकंगत्वापाणिपादंप्रक्षाल्याच
म्य ॥ ततः ॐउरुꣳहिराजेतिमन्त्रेणतोयमामंत्र्य ॥ ॐमाहि॑र्भू॒र्म्मापृदा॑कुःऽउ॒
रुꣳहिराजा॒वरु॑णश्च॒कार॒सूर्या॑य॒पन्था॒मन्वे॑त॒वाऽउ॑ ॥ अ॒पदे॒पादा॒प्रति॑धातवेकरु॒ताप॑व॒
क्ता॑हृद॒या॒विध॑श्चित् ॥ नमो॒वरु॑णाया॒भिष्ठि॑तो॒वरु॑णस्य॒पाशः॑ १ ॥ सं० अ० ८ मं०

२३ ॥ ॐसुमित्रियानऽआपऽओषधयःतन्तु ॥ इतिजलांजलिमादाय ॥ ॐदुर्मित्रियास्तस्मैसन्तुयोऽस्मान्द्वेष्टियञ्चऽवयन्द्विष्मः ॥ इतिद्वेष्टारंप्रतिनिषिंचेत् ॥ ततःउदकन्नमस्कृत्य ॥ संकल्पंकुर्यात् ॥ ॐस्वस्तिश्रीमत्समस्तजगदुत्पत्तिस्थितिप्रलयकारणस्यरक्षाशिक्षाविचक्षणस्यदुष्टदैत्यदहनदावानलस्यगृहीतमत्स्याद्यवतारस्यकर्तुमकर्तुमन्यथाकर्तुंसमर्थस्यअचिन्त्यापरिमितशक्त्याध्रियमाणस्यश्रीमद्भगवतोमहापुरुषस्यश्रीमदादिनारायणस्यमहारोमकूपमध्येपरिभ्रममाणानामनेककोटिब्रह्माण्डानामेकतमेऽव्यक्तमहदहङ्कारपृथिव्यप्तेजोवाय्वाकाशाद्यावरणैरावृतेऽस्मिन्महतिब्रह्मांडे आधारशक्तिकूर्मानन्ताद्यष्टदिग्गजोपरिप्रतिष्ठितस्यअतलवितलसुतलमहातलतलातलरसातलपाताललोकसप्तकस्योपरितलेभूर्लोकभुवर्लोकस्वर्लोकमहर्लोकजनलोक तपोलोकसत्य

लोकसप्तकस्यअधोभागेचक्रवाक्शैलमहामलयनगमध्यवर्त्तिमहाकालायमानमहाफणिराजराजशेषस्य सहस्रफणामणिमण्डितेऐरावतपुण्डरीकवामनकुमुदाञ्जनपुष्पदन्तसार्वभौमसुप्रतीकाष्ठदिग्दंतिशुंडादण्डोत्तंभिते अमरावतीभोगवतीजयवतीयशोवतीनामपुण्यपुरीप्रतिष्ठितेमहास्वर्णगिरिराजकटितटविलंबितेइंद्राग्नियमनैर्ऋत्यवरुणवायुकुवेरेशानपूर्वांदिदिक्प्रातिष्ठितेमानसोत्तरलोकालोकाचलयुतेलवणेक्षुसुरासार्पिः पयोदधिशुद्धोदकादिसप्तार्णवपरिवृते महासरोवराकारपञ्चाशत्कोटियोजनभूमण्डलविस्तृते महाचक्राकारमण्डलमाण्डितेजं बूद्वीपप्लक्षशाल्मलिकुशक्रौंचशाकपुष्करसप्तद्वीपपरिधिप्रतिष्ठितेभारतकिंपुरुषहरिवर्षेलावृतरम्यकहिरण्मयकुरुभद्राश्वकेतुमालेतिनवखंडमंडितेआर्यावर्त्तशुक्लचन्द्रप्रस्थसुवर्णप्रस्थरमणकपाञ्चजन्यमन्दिरसिंहललंकेतिनवावर्त्तपरि

धिपरिवृतेगन्धमादनसुमाल्यसुशृङ्गश्वेतनीलानिषधहेमकूटाहिमाचलेतिअष्टमर्य्यादागि
रिपरिवृते नवसहस्रयोजनधनुराकृतिकल्पितप्रजापतिक्षेत्रेदण्डकारण्यविन्ध्यारण्यैक्षवा
रण्यनैमिषारण्यवदरिकारण्यचंपकारण्यनहुषारण्यगुणारण्यद्वैतारण्यदेवदारुकारण्येति
दशारण्ययुतेगङ्गाकावेरी यमुनासरस्वतीमहानदीरेवा कौशिकीगोमतीगण्डकीगौतमी
महाचन्द्रभागाताम्रपर्णीवेणीतिपंचदशजलपरिप्लुतेपुष्कराद्यष्टषष्टितीर्थविलसितेअयो
ध्यामथुरामायाकाशीकांच्यवन्तिका गयाद्वारावतीत्यष्टमहामुक्तिपुरीमण्डितेलङ्कादेव
कन्याकांचीश्रीशैलपारिजातवत्सगुल्मावन्तीगर्ग्गराट्कुरुक्षेत्राहिमालयेति भूमध्यरेखा
लांपुरेदिग्भागेऐन्द्रकौशेरुताम्रपर्णगभस्तिनागसौम्यवारुणगन्धर्वकुमारिकेतिनवक्षेत्रा
णांकुमारिकानामप्रतिष्ठितस्थलेमलयमैनाकार्बुदविन्ध्यपारियात्रत्रिकूटऋषभसह्यऋ

ष्यमूकश्रीशैलविकटमहेन्द्रद्रोणपारिजातचित्ररैवतनीलेतिसप्तदशमहागिरितटमण्डिते श्रीशैलपश्चिमदिग्भागे कृष्णागोदावर्य्युत्तरदेशेवैद्यनाथ विश्वनाथजटाशङ्करनागेश्वर सोमनाथमहाकालभीमशङ्करमल्लिकार्ज्जुनोङ्कारेश्वरत्र्यंबकेश्वरसेतुबन्धेश्वरकेदारेश्वरेति द्वादशज्योतिर्लिङ्गानां मद्ध्येमहाकालेयाश्रयेशालंग्रामविश्वेश्वरादिसकलजगत्स्रष्टि परार्द्धेश्रीमद्भगवतः पद्मयोनेःप्रथमपरार्द्धेपञ्चाशदतीतवर्षेप्रथमपक्षेप्रथमदिवसेअहनि द्वितीययामतृतीयमुहूर्त्तेप्रथमप्राणकल्पेपार्थिवकल्पकूर्मकल्पानन्तकल्पब्रह्मकल्पवाराहकल्पप्रलयकल्पेति सप्तकल्पानांमद्ध्येश्वेतवाराहकल्पेस्वयंभुवस्वारोचिषउत्तमतामसरैवतचाक्षुषरौच्यवैवस्वतमन्वन्तरेअष्टाविंशतिमेकलियुगेकलेश्चप्रथमचरणेजंबूद्वीपे भारतखण्डे आर्य्यावर्तैकदेशेपुण्यक्षेत्रे अमुकविंशतिकायाममुकनाम्निसंवत्सरेअमुका

यनेअमुकर्तौअमुकमासेअमुकपक्षे अमुकतिथौअमुकवासरेअमुकक्षेत्रेअमुकयोगेअमुककरणेअमुकराशिस्थितेसूर्य्ये अमुकराशिस्थितेचन्द्रे यथास्थानेषुसर्वेषुग्रहेषुएवंगुणविशेषणविशिष्टायांपुण्यातिथौ अमुकगोत्रोऽमुकप्रवरोऽमुकशर्म्मासपुत्रः सपत्नीकः सपरिवारःममेहजन्मतः एतत्क्षणपर्य्यन्तंवाल्ययौवनवार्द्धकेषुसुगुप्तप्रकाशेषुचकामाकामकृताभ्यस्तोपपातकमहापातकमनोवाक्कायकर्म्मकृतब्राह्मणहननमद्यपानसुवर्णस्तेयद्रुमच्छेदनस्त्रीवालहननविषदानमन्त्रदुष्टजनहत्याभिध्यारणभ्रूणहत्याभिधारणसकलीकरणमलिनीकरणवृषलीकरणव्यक्क्यंतरापात्रीकरणजातिभ्रंशकरणप्रकीर्णकाभक्ष्यभक्षणापेयपानकरणालेह्यलेहनाचोष्यचोषणावाच्यवाचनास्पृश्यस्पर्शन देवब्राह्मणवृत्तिच्छेदनविद्याविक्रयविवाहभङ्गतडागादिसेतुभञ्जननिषिद्धाचरणपतितान्नगणिका

न्नगणकान्नपाणिकान्नसूतकान्नादिभक्षणभार्य्याविसर्जनमातापितृतिरस्कारात्मस्तुतिगुरुनिन्दाजातिनिन्दाब्राह्मणद्वेषत्रिरात्रिरजस्वलासम्भाषणकृतलुब्धचौरपाखण्डान्वितचाण्डालस्पर्शकुग्रामवासकुभोजनकूपशौचनिष्ठुरवाग् दुष्टमैथुनकामातुरस्त्रीवञ्चनदुष्टप्रतिग्रहसर्वेन्द्रियौघानिग्रहणजलपानागतगोनिषेधनिद्रितजीवपशुविस्रंसनभवनादिदहनगुरुद्रोहस्वामिद्रोहाविश्वासघातधर्म्मशास्त्रादिखण्डनस्वधर्मनिषेधपरधर्म्माङ्गीकृतिभगवद्धर्म्मानंगीकृतिनिरपराधाङ्गनात्यागपरोपतापपरोपघातपरपैशुन्यपररन्ध्रान्वेषणपरप्रीतिखण्डनस्वगोत्रजागमनस्ववाग्दत्तापहरणपरदत्तापहरणपरद्रोहकुबुद्धिप्रदानमार्गरोधनमार्गादिषुब्राह्मणभङ्गपरोदयासहनादिजन्यज्ञाताज्ञातपातकोपपातकानांनिरासार्थंसर्वदेवप्रतिष्ठाकर्म्माधिकारार्थंममदेहशुद्ध्यर्थंचपूर्वाङ्गतयावैधस्नानमहङ्करिष्ये॥

ॐइदंविष्णुर्विचक्रमेत्रेधानिदधेपदम् ॥ समूढमस्यपाꣳसुरेस्वाहा सं०अ०५मं०१५॥
इतिमृत्तिकयाङ्गानिसंस्पृश्यनाभिमात्रंजलंप्रविश्य ॐआपोऽअस्मान्मातरःशुन्धयन्तु
घृतेनंनोघृतप्प्वःपुनन्तु ॥ विश्वꣳहिरिप्रम्प्रवहन्तिदेवीरितिमन्त्रेणसूर्य्याभिमुखोनि
मज्जेत् ॥ ततःस्नात्वा॥ ॐउदिदाभ्यःशुचिरापूतऽएमि॥ दीक्षातपसोस्तनूरसितान्त्वां
शिवाꣳशग्माम्परिदधेभद्रम्वर्ण्णम्पुष्यन् सं०अ०४मं०२॥ इतिनिमज्ज्योन्मज्ज्याचम्य॥
ॐमानस्तोकेतनयेमानऽआयुषिमानोगोषुमानोऽअश्वेषुरीरिषः ॥ मानोऽवीरान्रुद्र
भामिनोवधीर्हविष्मन्तःसदमित्वाहवामहे सं० अ० १६ मं० १६ ॥ इतिमंत्रेणगोमये
नाङ्गानिविलिंपेत् ततः ॐइमम्मेवरुणश्रुधीहवमद्याचमृडय ॥ त्वामवस्युराचके ॥
१ ॥ सं० अ० २१ मं० १ ॥ ॐतत्वायामिब्रह्मणावन्दमानस्तदाशास्तेयजमानो

हविर्भिः ॥ अहेडमानोवरुणेहबोध्युरुशꣳसमानऽआयुःप्रमोषीः ॥ २ ॥ सं०
अ० २१ मं० २ ॐत्वन्नोऽअग्ग्नेव्वरुणस्यविद्वान्देवस्यहेडोऽअवयासिसीष्ठाः ॥
यजिष्ठोव्वह्नितमःशोशुचानोव्विश्वाद्वेषाꣳसिप्प्रमुमुग्ध्यस्मत्॥ ३॥सं० अ०२१मं०३॥
ॐसत्वन्नोऽअग्ग्नेवमोभवोतीनेदिष्ठोऽअस्याऽउषसोऽव्युष्टौ ॥ अवयक्ष्वनोवरुणꣳर
राणोऽव्वीहिमृडीकꣳसुहवोनऽएधि ॥ ४ ॥ सं० अ० २१ मं० ४॥ ॐमापोमौषधी
हिꣳसीर्धाम्म्नोधाम्म्नोराजँस्ततोवरुणनोमुञ्च ॥ यदाहुरघ्न्याऽइतिवरुणेतिशपा
महेततोवरुणनोमुञ्च ॥५॥ सं० अ० ६ मं० २२ ॥ ॐउदुत्तमम्व्वरुणपाशमस्म्मदवा
धमंव्विमध्यमꣳश्रथाय ॥ अथाव्वयमादित्यव्व्रतेत वानागसोऽअदितयेस्याम६॥
सं० अ० १२ मं० १२ ॥ ॐमुञ्चन्तुमाशपथ्यादथोवरुण्यादुत ॥ अथोयमस्य

पड्वीशात्सर्व्वस्म्माद्देवकिल्विषात् ॥७॥ सं० अ० १२मं०९०॥ ॐअवंभृथनिचुम्पुण
निचेरुरसिनिचुम्पुणः ॥ अवदेवैर्देवकृतमेनोयासिषमवमर्त्यैर्म्मर्त्यकृतम्पुरुराव्णोदे
वरिषस्पाहि ८॥ सं० अ० ३ मं० ४८॥ इत्यष्टभिर्मंत्रैर्हस्तेनप्रत्येकंशिरशिजलंक्षि
पेत् ॥ ततः आचम्य ॥ ॐकारव्याहृति गायत्रीभिरापोहिष्ठेतितिसृभिःजलेनमा
र्ज्जनंकुर्यात् ॥ तद्यथा ॥ ॐभूर्भुवःस्वः तत्सवितुर्वरेण्यम्भर्गोदेवस्यधीमहि ॥
धियोयोनः प्रचोदयात् ॥९॥ सं० अ० ३६ मं० ३ ॥ ॐआपोहिष्ठामयोभुवस्तान
ऽऊर्ज्जेदधातन ॥ महेरणायचक्षसे ॥१०॥ सं० अ० ३६मं०१४॥ ॐयोवःशिवत
मोरसस्तस्यभाजयतेहनः ॥ उशतीरिवमातरः ॥११॥ सं० अ० ३६ मं० १५॥
ॐतस्म्माऽअरंङ्गमामवोयस्यक्षयायजिन्वथ ॥ आपोजनयथाचनः ॥ १२ ॥ सं

अ० ३६ मं० १६ ॥ इतिमार्ज्जनम् ॥ ॐइदमापःप्रवहतावद्यञ्चम[illegible] मं०
यच्चाभिदुद्रोहानृतंयच्चशेपेऽअभीरुणम् ॥ आपोमातस्मादेनसःपवमानश्चमुञ्चतु
॥ १३ ॥ सं० अ० ६ मं० १७ ॥ ॐहविष्मतीरिमाऽआपोहविष्माँ२॥ऽआविवासति ॥
हविष्मान्देवोऽअध्वरोहविष्माँ२॥ऽअस्तुसूर्य्यः ॥ १४ ॥ सं० अ० ६ मं० २३ ॥
ॐदेवीरापोऽअपान्नपाद्योवऽऊर्म्मिर्हविष्यऽइन्द्रियावान्मदिन्तमः ॥ तन्देवेभ्योदेव
त्रादत्तशुक्रपेभ्योयेषाम्भागस्थस्स्वाहा ॥ १५ ॥ सं० अ० ६ मं० २७ ॥ ॐकार्षिर
सिसमुद्रस्यत्वाक्षित्याऽउन्नयामि ॥ समापोऽअद्भिरग्ग्मतसमोषधीभिरोषधीः ॥ १६ ॥
सं० अ० ६ मं० २८ ॥ ॐअपोदेवामधुमतीरगृभ्णन्नूर्ज्जस्वतीराजस्वश्चितानाः ॥
याभिर्म्मित्रावरुणावभ्यषिञ्चन्याभिरिन्द्रमनयन्नत्यरातीः ॥ १७ ॥ सं० अ० १०

मं० १ ॥ ॐ द्रुपदादिवमुमुचानःस्विन्नःस्नातोमलादिव ॥ पूतम्पवित्रेणेवाज्ज्यमापः
शुन्धन्तुमैनसः ॥ १८॥ सं०अ० २० मं० २० ॥ ॐ शन्नोदेवीरभिष्टयऽआपोभवन्तु
पीतये ॥ शंय्योरभिस्रवन्तुनः ॥ १९॥ सं० अ० ३६ मं० १२ ॥ ॐ अपाᳫंरस
मुद्वयसᳫं सूर्य्येसन्तᳫं समाहितम् ॥ अपाᳫंरसस्ययोरसस्तम्वोगृह्णाम्म्युत्तमम् ॥
२० ॥सं० अ० ९ मं० ३ ॥ ॐ अपोदेवीरुपसृजमधुमतीरयक्ष्मायप्रजाब्भ्यः ॥
तासामास्थानादुज्जिहतामोषधयःसुपिप्पलाः ॥ २१ ॥ सं०अ० ११ मं० ३८ ॥
ॐ पुनन्तुमापितरःसोम्म्यासःपुनन्तुमापितामहाःपुनन्तुप्रपितामहाः पवित्रेणशतायुषा ॥
पुनन्तुमापितामहाःपुनन्तुप्रपितामहाः पवित्रेणशतायुषाविश्वमायुर्व्यश्नवै ॥
२२ ॥ सं० अ० १९ मं ३७ ॥ ॐ अग्नऽआयूᳫंषिपवसऽआसुवोर्ज्जमिषञ्चनः ॥

आरेबाधस्स्वदुच्छुनाम् ॥ २३॥सं० अ० १९मं० ३८॥ ॐपुनन्तुमादेवजनाःपुनन्तु
मनसाधियः ॥ पुनन्तुव्विश्वाभूतानिजातवेदःपुनीहिमा ॥ २४ ॥ सं० अ० १९
मं० ३९ ॥ ॐपवित्रेणपुनीहिमाशुक्रेणदेवदीद्यत् ॥ अग्ग्नेक्रत्वाक्रतूँ१रनु ॥ २५ ॥
सं० अ० १९ मं० ४० ॥ ॐयत्तेपवित्रमर्च्चिष्यग्ग्नेव्विततमन्तरा ॥ ब्ब्रह्मतेनपु
नातुमा॥२६॥सं० अ०१९ मं०४१॥ ॐपवमानःसोऽअद्यनः पवित्रेणव्विचर्षणिः॥
यःपोतासपुनातुमा ॥ २७॥ सं०अ० १९ मं०४२॥ ॐउभाभ्यान्देवसवितःपवित्रेण
सवेनच ॥ माम्पुनीहिव्विश्वतः ॥ २८ ॥ सं० अ० १९ मं० ४३ ॥ ॐव्वैश्वदे
वीपुनतीदेव्यागाद्यस्यामि मावह्व्यस्तन्वोव्वीतपृष्ठाः ॥ तयामदन्तःसधमादेषु
व्वयꣳस्यामपतयोरयीणाम्॥ २९ ॥ सं० अ० १९ मं० ४४ ॥ ॐचित्पतिर्म्मापुना

तुव्वाक्पतिर्म्मापुनातुदेवोमासवितापुनात्वच्छिद्रेणपवित्रेणसूर्य्यस्यरश्मिभिः ॥ तस्यते
पवित्रपतेपवित्रपूतस्ययत्कामःपुनेतच्छकेयम् ॥ ३० ॥ सं० अ० ४ मं० ४ ॥
इतिप्रत्येकंमंत्रैःमार्ज्जयेत् ॥पुनरोङ्कारव्याहृतिगायत्रीभिःकुशत्रयेणमार्ज्जनंकुर्यात् ॥
ततः पूर्ववत्इमंमेवरुणइत्यष्टाभिर्मंत्रैः शिरसिजलंक्षिपेत् ॥ ततः ऋष्यादिकंस्मृत्वा ॥
जलमग्नोघमर्षणंद्रुपदांवात्रिरावर्तयेत् ॥ ॐ द्रुपदादिवमुमुचानःस्विन्नःस्नातोमला
दिव॥पूतम्पवित्रेणेवाज्ज्यमापःशुन्धन्तुमैनसः॥३१॥अ०२० मं० २० इतिमंत्रेण ॥ ततः
प्राणायामंविष्णुंवास्मरेत् ॥ ततः सन्ध्यांकुर्यात ॥ इतिस्नानविधिः ॥ अथसंभाराः ॥
अर्कादिग्रहसमिधांप्रत्येकमष्टशतंसंक्षेपपक्षे ॥ आज्यचर्वादि ॥ लोकपालादियागाय
पलाशादिसमिधाम्प्रत्येकमष्टसहस्रमष्टशतंवा ॥ पुष्पमालाः ॥ कुंकुमं ॥ कर्पूरः ॥

कस्तूरी ॥ चन्दनंगुग्गुलुधूपः ॥ दहनआरार्तिकंघण्टापादुकादर्प्पणं ॥ बलिसाम
ग्रीपायसभक्ष्यभोज्यनैवेद्यं ॥ होमार्थमाज्यतिलयवाक्षतफलादिकं ॥ प्रतिकुंडंविष्टरा
श्चत्वारः ॥ प्रतिकुण्डंस्रुक्स्रुवौ ॥ आसनानित्रिसूत्रीश्वेतपीतरक्तोर्णासूत्रं ॥ सर्वतो
भद्रादिरचनायैश्वेतरक्तपीतनीलकृष्णवर्णकाः ॥ रजांसिपञ्चवर्णानिमंडलार्थंहिकार
येत् शालितण्डुलजंशुक्लंरक्तंकौसुंभसेन्दुरम् हरितालोद्भवंपीतंकृष्णंदग्धयवोद्भवम् ॥
रजांसिपञ्चवर्णानिहरितंपीतकृष्णयुक् ॥ स्नपनकलशाः ॥ पंचपल्लवाः ॥ अश्व
त्थोदुंवरप्लक्षचूतन्यग्रोधपल्लवाः ॥ कदलीस्तंभाः ॥ पताकादश ॥ ध्वजाश्चदश
तेषांवेणुदण्डाः ॥अथाष्टरत्नानि॥ बज्रमौक्तिकवैदूर्यशङ्खस्फटिकपुष्परागेन्द्रनीलमहानी
ला इतिरत्नाष्टकम् ॥ अथनवरत्नम् ॥ मुक्तामाणिक्यवैदूर्यगोमेदावज्रविद्रुमौ ॥ पुष्प

रागंमरकतंनीलंचेतियथाक्रमात् ॥ अथपंचरत्नं ॥ सुवर्णंरजतंमुक्तालाजावर्त्तप्रवालकम् ॥ अन्यच्च ॥ कनकंकुलिशन्नीलम्पद्मरागञ्चमौक्तिकम् ॥ एतानिपञ्चरत्नानि रत्नशास्त्रविदोविदुः ॥ कुलिशंहीरकं ॥ पद्मरागंचूनी ॥ अभावेसर्वरत्नानां हेमंसर्वत्रयोजयेत् ॥ अथपञ्चगव्यप्रमाणंस्कांदे ॥ गोमूत्रंकृष्णवर्णायाः श्वेतायाश्चैव गोमयम् ॥ पयश्चताम्रवर्णायारक्तायागृह्यतेदधि ॥ कपिलायाघृतंग्राह्यंसर्वंकापिलमेववा ॥ मूत्रमेकपलंग्राह्यमंगुष्ठार्द्धन्तुगोमयं ॥ क्षीरंसप्तपलंग्राह्यंदधित्रिपलमुच्यते ॥ घृतमेकपलंग्राह्यंपलमेकंकुशोदकं ॥ गायत्र्यादायगोमूत्रंगन्धद्वारेतिगोमयम् ॥ आप्यायस्वेतिचक्षीरंदधिक्राव्णोतिवैदधि ॥ तेजोसिशुक्रमित्याज्यं देवस्यत्वेतिकुशोदकम् ॥ एभिस्तुपञ्चभिर्मंत्रैः पञ्चगव्यंप्रचक्षते ॥ मंत्राः ॥ ॐभूर्भुवःस्वरिति

गोमूत्रं ॥ ॐगन्धद्वारान्दुराधर्षान्नित्यपुष्टाङ्करीषिणीं ॥ ईश्वरींसर्वभूतानान्तामिहोप
ह्वयेश्रियम् ॥ इतिगोमयम्॥ॐआप्यायस्वसमेतुतेविश्वतःसोमवृष्ण्यम्॥ भवावा
जस्यसङ्गथे ॥ इतिक्षीरम् ॥ ॐदधिक्राव्णो ऽ अकारिषञ्जिष्णोरश्वस्यवाजि
नः ॥ सुरभिनोमुखाकरत्प्रणऽआयूꣳषितारिषत् ॥ इतिदधि ॥ ओंतेजोसिशुक्र
मस्यमृतमसिधामनामासिप्रियन्देवानामनाधृष्टन्देवयजनमसि ॥ इतिघृतम् ॥ ओं
देवस्यत्वासवितुःप्रसवेश्विनोर्वाहुभ्याम्पूष्णोहस्ताभ्याम्॥ इत्यर्द्धर्चेनकुशोदकम् ॥
पञ्चगव्यप्राशनमंत्रः ॥ यद्वदस्थिगतम्पापंदेहेतिष्ठतिमामके ॥ ब्रह्मकूर्चोपवासस्तु
दहत्वग्निरिवेन्धनम् ॥ अथपञ्चामृतम् ॥ पंचामृतंदधिक्षीरंसितामधुघृतन्नृप ॥
आज्यंक्षीरंमधुतथामधुरत्रयमुच्यते ॥ इतिमधुरत्रयम् ॥ हरितालकमनःशिला

भ्रककृष्णांजनमाक्षिककाशीसस्वर्णमाक्षिकगैरिकेत्युपधात्वष्टकम् ॥ मधुपर्कपात्रंसौ
वर्णंताम्रंवार्घपात्रं ॥ शक्त्यैकद्वित्रिमाषसुवर्णशलाकास्थापनीयकलशरत्नानि ॥ षोडश
द्वारकलशाः ॥ अष्टौलोकपालकलशाः ॥ वेदिकलशाश्चत्वारः ॥ वास्तुमण्डलकलशाः॥
कुण्डकलशाः ॥ निद्राकलशाः ॥ स्नपनकलशाः ॥ पंचचत्वारिंशत्कलशसंख्यया
शरावाणि॥धारासहस्रान्वितौकलशौ कलशलक्षणंविष्णुधर्मे हैमराजतताम्राश्चमृन्मया
लक्षणान्विताः ३०।३५ पञ्चाशाङ्गुलवैपुल्याउत्सेधेषोडशाङ्गुलाः १ द्वादशाङ्गुलमूलाःस्युर्मु
खमष्टाङ्गुलंभवेदिति ॥ ६ ॥ अथसप्तधातवः ॥ सुवर्णंरजतंताम्रमारकूटंतथैवच ॥
लोहंत्रपुतथासीसंधातवःसप्तकीर्त्तिताः ॥ आरकूटंपित्तलं ॥ त्रपुरांगा ॥ गजाश्व
स्थानवल्मीकसङ्गमनदीकूलद्वयवराहोत्खातराजद्वारमृदः ॥ कुष्टंमांसंहरिद्रेद्वेमुराशै

लेयचन्दनम् ॥ वचाचंपकमुस्तंचसर्वौषध्योदशस्मृताः॥अथसप्तधान्यम् ॥ यवगोधूमधान्यानितिलाःकङ्गुस्तथैवच श्यामाकंचीनकंचैवसप्तधान्यमुदाहृतं श्यामकचीनकयोरभावेमुद्गमाषयोर्ग्रहणम् ॥ इतिसप्तधान्यम् ॥ प्रतिमार्थंशय्यासोपस्करा ॥ श्वेतवस्त्रं ॥ चामरं । विचित्रवितानं । त्रयोदुकूलपट्टाः ऋत्विग्वरणसामग्री । शिल्पिवस्त्रयुगमित्यादिसंपादितसंभारो मूर्त्तिप्रतिष्ठादिनात्प्राक्सप्तमदिने पंचमदिनेत्रिदिनेद्विदिनेसद्योवाप्रतिष्ठांकुर्य्यादितिपद्धतिकारः ॥ अथसर्वप्रायश्चित्तविधिर्लिख्यते ॥ यथा चतुरस्त्रीनेकंवाऽध्यात्मविदंपर्षद्त्वेनोपवेश्य ॥ गोमयोपलिप्तायांभूमौशालग्राममूर्त्तिसंस्थाप्य ॥ तदातुरोगोमयेनगोमूत्रेणतीर्थोदकेनचशक्तौसत्यांकृतस्नानः ॥ शुद्धेवाससीपरिधाय ॥ बद्धशिखःकृततिलकःकुशोपग्रहः ॥ पूर्वाभिमुखउपविश्याचम्यप्रा

पानायम्य ॥ अद्येहेत्यादि० देशकालाद्युच्चार्यसकलपातकनिवृत्तिकामोविष्णुपूजन
पूर्वकदेहशुद्ध्यर्थंसर्वप्रायश्चित्तमहङ्करिष्यइतिसङ्कल्प्य ॥ सहस्रशीर्षेतिध्यानम् ॥
ॐसहस्रशीर्षापुरुषःसहस्राक्षःसहस्रपात् ॥ सभूमिꣳसर्व्वतस्पृत्त्वात्यतिष्ठद्दशाङ्गुल
म् । १ । इतिध्यानम् ॥ॐपुरुषऽएवेदꣳसर्व्वंय्यद्भूतंय्यच्चभाव्यम् ॥ उतामृतत्त्वस्ये
शानोयदन्नेनातिरोहति ॥ २ ॥ इत्यावाहनम् ॥ ॐएतावानस्यमहिमातोज्यायाँश्चपू
रुषः ॥ पादोस्यविश्वाभूतानित्रिपादस्यामृतन्दिवि ॥ ३ ॥ इत्यासनम् ॥ ॐत्रिपादूर्द्ध्व
ऽउदैत्पुरुषःपादोस्येहाभवत्पुनः ॥ ततोव्विष्वङ्व्यक्रामत्साशनानशनेऽअभि ॥ ४ ॥
इतिपाद्यम् ॥ ॐततोव्विराडजायतव्विराजोऽअधिपूरुषः ॥ सजातोऽअत्त्यरिच्च्यत
पश्चाद्भूमिमथोपुरः ॥ ५ ॥ इत्यर्घ्यम् ॐतस्माद्यज्ञात्सर्व्वहुतःसम्भृतम्पृषदाज्य

म् ॥ पशूँस्ताँश्चक्रेव्वायव्व्यानारण्याग्ग्राम्म्याश्चये ॥ ६ ॥ इत्याचमनीयम् ॥ ॐ तस्म्माद्यज्ञात्सर्व्वहुतऽऋचः सामानियज्ञिरे ॥ छन्दाꣳसियज्ञिरेतस्माद्यजुस्तस्मादजायत ॥ ७ ॥ इत्यस्नानीयम् ॥ ॐ तस्म्मादश्श्वाऽअजायन्तयेकेचोभयादतः ॥ गावोहयज्ञिरेतस्म्मात्तस्म्माज्जाताऽअजावयः ॥ ८ ॥ इतिवस्त्रम् ॥ ॐ तंय्यज्ञम्बर्हिषिप्प्रौक्षन्न्पुरुषञ्जातमग्ग्रतः ॥ तेनदेवाऽअयजन्तसाद्ध्याऽऋषयश्श्चये ॥ ९ ॥ इत्युपवीतम् ॥ ॐ यत्पुरुषम्व्यदधुःकतिधाव्व्यकल्पयन् ॥ मुखङ्किमस्यासीत्किम्बाहूकिमूरूपादाऽउच्च्येते ॥ १० ॥ इतिगन्धम् ॥ ब्राह्मणोस्यमुखमासीद्बाहूराजन्न्यःकृतः ॥ ऊरूतदस्ययद्वैश्यःपद्भ्याꣳशूद्रोऽअजायत ॥ ११ ॥ इतिधूपम् ॥ ॐ चंद्रमामनसोजातश्चक्षोःसूर्य्योऽअजायत ॥ श्रोत्राद्वायुश्च्चप्प्राणश्च्चमुखादग्ग्निरजा

यत ॥ इतिदीपम् ॥ १२ ॥ ॐनाभ्याऽआसीदन्तरिक्षꣳशीर्ष्णोद्यौःसमवर्त्तत । प
द्भ्याम्भूमिर्दिशःश्रोत्रात्तथालोकाँ २ ॥ ऽअकल्पयन् ॥१३॥ इति नैवेद्यम् ॥ ततोवि
राडित्याचमनीयम् ॥ ताम्बूलम् ॥ लवङ्गकर्पूरयुतंताम्बूलंसुरपूजितम् ॥ प्रीत्यागृहा
णदेवेशममसौख्यंविवर्द्धय ॥ इतिताम्बूलम् ॥ इदंफलंमयादेवस्थापितंपुरतस्तव ॥
तेनमेसफलावाप्तिर्भवेज्जन्मनिजन्मनि ॥ इतिऋतुफलम् ॥ ॐसप्तास्यासन्न्परिध
यस्त्रिःसप्तसमिधःकृताः ॥ देवायद्यज्ञंतन्न्वानाऽअबध्नन्न्पुरुषम्पशुम् ॥ १४ ॥ इतिप्र
दक्षिणा ॥ ॐयत्पुरुषेणहविषादेवायज्ञमतन्न्वत ॥ वसन्तोस्यासीदाज्ज्यङ्ग्रीष्मऽइ
ध्मःशरद्धविः ॥ १५ ॥ इतिनमस्कारः ॥ ॐयज्ञेनयज्ञमयजन्तदेवास्तानिधर्म्माणि
प्रथमान्न्यासन् ॥ तेहनाकम्महिमानःसचन्तयत्रपूर्वेसाध्याःसन्तिदेवाः ॥ १६ ॥

इतिदक्षिणाम् ॥ ततः कृतेनानेनपूजनेनश्रीविष्णुःप्रीणातु॥कृतस्याविष्णुपूजनविधेःसर्वंप
रिपूर्णंपरिपूर्णमस्तु॥ततःपर्षदम्प्रदक्षिणीकृत्यहृदयेनदूयमानोधरण्यासाष्टागप्रणमेत्॥त
तः ॥ किंतेकार्यंवदास्मभ्यंकिम्वामृगयसेद्विज॥तत्त्वतोब्रूहितत्सर्वंसत्यंहिगतिरात्मनः ॥
यदिचेद्वक्ष्यसेसत्यंनियतंप्राप्स्यसेशुभम्॥यद्यागतोस्यसत्येननत्वंशुद्ध्यसिकार्हिंचित् ॥
उत्तिष्ठभोहिकिङ्कार्यंविश्रब्धंब्रूहिमानव ॥ त्वमित्यादि ॥ किन्तेकार्यम्मामिथ्यावादीः ॥
सत्यमेववदेरित्यादिपृष्टे । पर्षदाग्रेगोवृषयोःप्रत्येकम्प्रत्याम्नायत्वेनयथाशक्तिस्वर्णरूप्य
योर्निष्कंतदर्द्धन्तदर्द्धंवानिधाय ॥ अद्येहेत्यादि० अमुकदेवप्रतिष्ठाकर्मनिमित्तकप्राय
श्चित्ताङ्गमिदङ्गोमिथुननिष्क्रयद्रव्यंसभ्यायाहंसंप्रददे ॥ ततः । अमुकगोत्रस्यममज
न्मप्रभृतिअद्यदिनंयावत् ज्ञाताज्ञातकामाकामसकृदसकृत्कायिकवाचिकमानसिकसांस

र्गिकस्पृष्टास्पृष्टभुक्ताभुक्तपीतापीतसकलपातकातिपातकोपपातकलघुपातकसङ्कलीकरणमलिनीकरणापात्रीकरण जातिभ्रंशकरणप्रकीर्णकपातकानान्निरासार्थमनुग्रहङ्कृत्वा प्रायश्चित्तमुपदिशंतुभवन्तः ॥ तत्रप्रार्थना ॥ सर्वेधर्म्मविवेक्तारोगोप्तारःसकलाद्विजाः ॥ ममदेहस्यसंशुद्धिंकुर्वंतुद्विजसत्तमाः ॥ मयाकृतंमहाघोरंज्ञातमज्ञातकिल्विषम् ॥ प्रसादःक्रियतांमह्यंशुभानुज्ञांप्रयच्छथ ॥ पूज्यैःकृतःपवित्रोहंभवेयंद्विजसत्तमैः ॥ एवंप्रार्थयेत् ॥ प्रार्थनानन्तरंमामनुगृह्णन्तुभवन्तइतिप्रणमेत् ततस्तेतमुत्थाप्यतस्ययथाशक्ति । उत्तममध्यमादिपक्षाँश्चविचार्यअस्मिन्पक्षे यथाशक्तइतिनिश्चित्यपुस्तकवाचनपूर्वकंकथयेयुरनुवादकस्याग्रेप्रत्याम्नायाँश्चकल्पयेयुः । अस्मिन्कालेप्रायश्चित्तीयचन्दनपुष्पादिभिःपुस्तकपूजांसभ्यानुवादकपूजांचविधायनिवन्धपूजात्वेनकिञ्चिद्यथाशक्तिद्रव्यान्निधा

यकृताञ्जलिपुटोनम्रस्तिष्ठेत्॥अनुवादकायचपापानुसारेणनिष्कृतिरूपांदक्षिणांदद्यात् ॥

ततोनुवादकः ॥ अमुकगोत्रस्याऽमुकशर्म्मणस्तवजन्मप्रभृतिएतत्क्षणपर्य्यन्तम्वाल्ययौवनवार्द्धकेषुसुगुप्तप्रकाशेषुचकामाकामकृताभ्यस्तोपपातकमहापातकमनोवाक्कायकर्म्मकृतब्राह्मणहननमद्यपानसुवर्णस्तेय द्रुमच्छेदनस्त्रीवालहननविषदानमंत्रदुष्टजनहत्याभिघारणभ्रूणहत्यादिसङ्कुलीकरणमलिनीकरणवृषलीकरण व्यक्तयन्तरापात्रीकरणजातिभ्रंशकरणप्रकीर्णकाभक्ष्यभक्षणापेयपानकरणालेह्यलेहनाचोष्यचोषणावाच्यवाचनास्पृश्यास्पर्शनदेवब्राह्मणवृत्तिच्छेदन विद्याविक्रयविवाहभङ्गतडागादिसेतुभंजननिषिद्धाचरणपतितान्नगणिकान्नगणकान्नपणिकान्नसूतकान्नादिभक्षण भार्य्याविसर्ज्जनमातापितृतिरस्कारात्मस्तुति गुरुनिन्दाब्राह्मणद्वेषत्रिरात्ररजस्वलासम्भाषणकृ

तलुब्धचौरपाखण्डान्वितचाण्डालस्पर्शकुग्रामवासकुभोजनकूपशौच निष्ठुरवाग्दुष्टमैथुनकामातुरस्त्रीवंचनदुष्टप्रतिग्रहसर्वेन्द्रियौघाभिग्रहणजलपानागतगोनिषेधनिद्रितजीवपशुविशसनभवनादिदहन गुरुद्रोहस्वामिद्रोहाविश्वासघातधर्म्मशास्त्रादिखण्डनस्वधर्म्मनिषेधपरधर्म्माङ्गीकृतिभागवतधर्म्मानङ्गीकृतिनिरपराधाङ्गनात्यागपरोपतापपरोपघातपरपैशुन्यपररन्ध्रान्वेषणपरप्रीतिखण्डनस्वगोत्रजागमनस्ववाग्दत्तापहरणपरदत्तापहरणपरद्रोहकुबुद्धिप्रदानमार्गरोधनमार्गादिषु ब्राह्मणभङ्गपरोदंयासहनादिजन्यज्ञाताज्ञातपातकोपपातकमहापातकक्षयोऽनेनपर्षदुपदिष्टेन अमुकदेवप्रतिष्ठाप्रायश्चित्तेनामुकप्रत्याम्नायद्वाराचीर्णेनप्राच्योदीच्याङ्गसहितेनभविष्यति ॥ तेनामुकशर्म्मात्वंकृतार्थोभविष्यसीत्युपदिशेत्त्रिः ॥ तत्रसर्वप्रायश्चित्तंशक्त्यनुसारेणषडब्दंत्र्यब्दंसार्द्धाब्दमन्यद्वाप

षदनुमतंप्रत्याम्नायश्च ॥ गायत्र्ययुतजपेद्वादशब्राह्मणभोजने ॥ तीर्थेयोजनयात्रायां ॥ एकगोदाने ॥ सुवर्णरूप्यनिष्कतदर्द्धतदर्द्धानांगोमूल्यानांशक्त्यादाने ॥ शुष्ककेशस्य द्वादशस्नानेषु ॥ द्विगुणद्वादशामान्नदानादौचैकः ॥ मध्यान्हेषड्विंशतिर्हविष्यान्नग्रासाः ॥ एकभक्तं ॥ सायंद्वाविंशतिग्रासाः ॥नक्तं॥ दिनेरात्रौवाअयाचितान्नभोजनम् । अयाचितं दिवारात्रौचभोजनमुपवासः ॥ एवंत्रिरावृत्तौद्वादशादिनसाध्यः ॥ एकःप्राजापत्यइति॥तत्राशक्तस्यामान्नंद्विगुणंद्रव्यंचतुर्ग्गुणमित्यादियोज्यम् ॥ निष्कश्चलोकशास्त्रयोरेकवाक्यतायांमाषाः ॥ ४० ॥ तदर्द्धं । २० । तदर्द्धं ॥ १०॥मुख्यंसुवर्णं । तदशक्तौरजतङ्ग्राह्यम् ॥ ततोनिवेदितप्रायश्चित्तं॥ भवदनुग्रहइत्यङ्गीकृत्यसन्मानपूर्वकंप्रणम्य ॥ पर्षदम्विसृजेत्॥ अस्मिन्नहनिशक्तेनोपवासःकार्यःइतरेणहविष्याशनम् ॥

ततःकस्याश्चिद्रिक्तायान्तिथौ ॥अथवातद्दिनेकृतमध्यान्हिकःसायान्हेगङ्गादौदेशकालौसं
कीर्त्य॥अमुकशर्म्मणोममजन्मप्रभृतिअद्यादिनं यावत्ज्ञाताज्ञातकामाकामसकृदसकृत्
कायिकवाचिकमानसिकसांसर्गिकस्पृष्टास्पृष्टभुक्ताभुक्तपीतापीतसकलपातकोपपातक
महापातकलघुपातकसंकलीकरणमलिनीकरणापात्रीकरणजातिभ्रंशकरप्रकीर्णकपातका
नान्निरासेनदेहशुध्यर्थं परमेश्वरप्रीत्यर्थंचअमुकप्रायश्चित्तममुकप्रत्याम्नायेनप्राच्योदी
च्याङ्गसहितंयथाशक्तिअहङ्करिष्ये ॥ इतिसङ्कल्प्य॥यानिकानिचपापानिब्रह्महत्यासमा
नि च ॥ केशानाश्रित्यतिष्ठन्तितस्मात्केशान्वपाम्यहम् ॥ इतिमंत्रेणशिखाकक्षोपस्थव
र्ज्जनखलोमानिवापयेत् ॥ ततःप्राङ्मुखोद्वादशाङ्गुलदन्तकाष्ठेन॥ आयुर्बलंयशोवर्च्चः
प्रजाःपशुवसूनिच ॥ ब्रह्मप्रज्ञाञ्चमेधाञ्चत्वन्नोधेहिवनस्पते ॥ इतिमंत्रेणदंतान्संशोध्य ॥

तूष्णींस्नात्वाचम्य ॥ भस्मादिनादशविधस्नानङ्कुर्यात् ॥ तत्रभस्मस्नानमेव ॥ अद्येहेत्यादि० ज्ञाताज्ञातसकलपातकक्षयार्थंभस्मस्नानङ्करिष्ये॥ तत्रमंत्राः॥ईशानायनमइतिशिरसि ॥ ॐईशानःसर्वविद्यानामीश्वरःसर्वभूतानाम्ब्रह्माधिपतिर्ब्रह्मणोधिपतिर्ब्रह्माशिवोमेअस्तुस्सदाशिवोम् ॥१॥ शिरसि ॥ तत्पुरुषायनमइतिमुखे ॥ ॐतत्पुरुषायविद्महेमहादेवायधीमहि ॥ तन्नोरुद्रःप्प्रचोदयात् ॥ २ ॥मुखे॥ अघोरायनमइतिहृदये ॥ ॐअघोरेभ्योथघोरेभ्योघोरघोरतरेभ्यः ॥ सर्वेभ्यःसर्वसर्वेभ्योनमस्तेऽअस्तुरुद्ररूपेभ्यः ३ ॥ इतिहृदये ॥ वामदेवायनमइतिगुह्ये ॥ ॐवामदेवायनमोज्येष्ठायनमःश्रेष्ठायनमोरुद्रायनमःकालायनमः कलविकरणायनमोवलविकरणाय नमोवलायनमोवलप्रमथनायनमः सर्वभूतदमनायनमोमनोन्मनायनमः ॥४॥ इतिगुह्ये ॥ सद्योजातायनमःइति

पादयोः ॥ ॐसद्योजातम्प्रपद्यामिसद्योजातायवैनमोनमः ।भवेभवेनातिभवेभवस्वमा
म्भवोद्भवायनमः॥ इतिपादयोः ॥ ५ ॥ प्रणवेनसर्वाङ्गे ॥ यद्वा॥ यथाग्निर्दहतेभस्म
तृणकाष्ठादिसञ्चयं ॥ तथामेदह्यतांपापङ्कुरुभस्मशुचेशुचिं ॥ नमस्तेरुद्रेतिभस्मस्ना
नं ॥ ॐनमस्तेरुद्रमन्न्यवऽउतोतऽइषवेनमः ॥ ब्बाहुब्भ्यामुततेनमः ॥ ६ ॥ सं०अ०
१६ म० १ इतिभस्मस्नानम् ॥ अथमृत्तिकास्नानम् ॥ सङ्कल्पःपूर्ववत् ॥ ॐबलि
त्थापर्वतानांखिन्द्रम्बिभर्षिपृथिवीप्रयाहि ॥भूमिम्प्रवत्वतिमन्हाजिनोषिमाहिनिइतिभूमिं
प्रार्थ्य ॥ ॐमावोरिषत्खनितायस्मैचाहङ्खनामिवः॥द्विपाच्चतुष्पादस्माकंसर्व्वमस्त्वना
तुरम् ॥ इतिखनित्वा॥ ॐस्योनापृथिविनोभवानृक्षरानिवेशनी ॥ यच्छानःशर्म्मसप्प्र
थाः ॥ इतिमृदमादाय ॥ ॐआपनेतपरायणेदूर्वारोहन्तुपुष्पिणीः॥ह्रदाश्चपुण्डरीकाणि

समुद्रस्यगृहाइमे ॥ इतिदूर्वामादाय ॥ गायत्र्याभ्युक्ष्यभूमौमृदन्निधाय ॥ कुशोदकेनाभ्युक्षेत् ॥ ततोदिक्षुमृदंक्षिपेत् ॥ ॐत्रातारमिन्द्रमवितारमिन्द्रꣳहवेहवेसुहवꣳशूरमिन्द्रम् ॥ ह्वयामिशक्रम्पुरुहूतमिन्द्रꣳस्वस्तिनोमघवाधात्विन्द्रः ॥ इतिपूर्वस्यां ॥ यमायमधुमत्तमंराज्ञेहव्यंजुहोतन । इदन्नमऋषिभ्यःपूर्वजेभ्यःपूर्वेभ्यःपथिकृद्भ्यः । इतिदक्षिणतः ॥ ॐतत्त्वायामिब्रह्मणावन्दमानस्तदाशास्तेयजमानेहविर्भिः ॥अहेडमानोवरुणेहबोध्युरुशꣳसमानऽआयुःप्रमोषीः ॥इतिपश्चिमतः ॥ ॐवयꣳसोमव्रतेतवमनस्तनूषुबिभ्रतः ॥ प्रजावन्तःसचेमहि ॥ इत्युत्तरतः ॥ ॐतत्सूर्यंरोदसीऽउभेदोषावस्तोरुपब्रुवे ॥ भोजेष्वस्माँऽअभ्युच्चरासद ॥ इत्युपरिष्टात् ॥ ततोअङ्गेषु ॥ ॐसहस्रशीर्षेतिशिरसि ॥ ॐअक्षिभ्यान्तेनासिकाभ्याङ्कर्णाभ्याञ्छुबुकादधि ॥ यक्ष्मंशीर्षण्य

मस्तिकाज्जिह्वायाविवृहामिते ॥ इतिमुखे॥ॐग्रीवाभ्यस्तऽउष्णिहाभ्यःकीकसाभ्योऽअ
नूक्यात् ॥ यक्ष्मन्दोषण्यमसाभ्यांवाहुभ्याम्विवृहामिते ॥ इतिहृदये ॥ ॐनामाना
भिन्नऽआददेचक्षुश्चित्सूर्येसचा कवेरपत्यमादुरे । इतिनाभौ ॥ ओंत्वामिन्द्रस्यजोष
समर्क्कम्विभर्षिवाह्वोः ॥ वज्रंशिशानऽओजसा ॥ इतिवाह्वोः ॥ ओंसोमानꣳस्वरं
णंकृणुहिब्रह्मणस्यते ॥ कक्षीवन्तंयऔशिजः ॥ इतिकक्षयोः ॥ ओंयःकुक्षिःसोमयात
मःसमुद्रऽइवजिन्वते॥उर्वीण्योनकाकुदः ॥ इतिकुक्ष्योः ॥ ओंव्वह्वीनाम्पिताबहुरस्यपुत्र
श्चिश्चाकृणोतिसमनावगत्य ॥ इषुधिःसङ्काःपृतनाश्चसर्वाःपृष्ठेनिनद्धोजयतिप्प्रसूतः ।
इतिपृष्ठे ॥ ओंऊरुभ्यांअष्ठीवद्भ्यांपार्ष्णिभ्याम्प्रपदाभ्याम् ॥ यक्ष्मंश्रोणिभ्याम्भासदा
द्भंससोविवृहामिते ॥ इत्यूर्वोः ॥ ओंमेहनाद्वलंकरणाल्लोमभ्यस्त्वेनस्वेभ्यः ॥

यक्ष्मसर्वस्मादात्मनस्तमिदम्विवृहामिते ॥ इतिजान्वोः ॥ उएतावानस्येतिपादयोः ॐयस्यविश्वानिहस्तयोःपञ्चक्षितीनाम्वसु ॥ स्पाशयस्ययोऽअस्मध्रुग्दिव्येवाशानिर्ज्जहि ॥ इतिहस्तयोः ॥ ॐअङ्गादङ्गाल्लोम्नोलोम्नोजातंपर्वणिपर्वणि ॥ यक्ष्मंसर्वस्मादात्मनस्तमिदंविवृहामिते ॥ अनेनमंत्रेणसहस्रशीर्षेतिसूक्तेनचसर्वाङ्गोद्वर्त्तनम् ॥ एतावत्यशक्तौ ॥ ॐअश्वक्रान्तेरथक्रान्तेविष्णुक्रान्तेवसुन्धरे ॥ शिरसाधारयिष्यामिमांरक्षस्वपदेपदे ॥ ॐउद्धृतासिवराहेणकृष्णेनशतबाहुना ॥ मृत्तिकेहरमेपापंयन्मयादुःकृतंकृतं ॥ ॐमृत्तिकेब्रह्मदत्तासिकाश्यपेनाभिमंत्रिता ॥ मृत्तिकेदेहिमेपुष्टिंत्वयिसर्वम्प्रतिष्ठितम् ॥ इतिमंत्रैरङ्गोद्वर्त्तनम् ॥ इदंविष्णुरितिमंत्रेणमृत्तिकास्नानम् ॥ ॐइदविष्णुर्विचक्रमेत्रेधानिदधेपदम् ॥ समूढमस्यपाꣳसुरेस्वाहा॥ इतिमृत्तिकास्नानम् ॥

अथगोमयस्नानम् ॥ सङ्कल्पः ॥ गोमयेलक्ष्मीर्वसतिपवित्रासर्वमङ्गला ॥ स्नाना
र्थंसंस्कृतंदेवपापंमेहरगोमय ॥ अग्रमग्रेचरन्तीनामोषधीनांरसम्बने ॥ तासा
मृषभपत्नीनांपवित्रङ्कायशोधनम् ॥ यन्मेरोगञ्चशोकञ्चतन्मेदहतुगोमयम् ॥ ॐगन्ध
द्वारान्दुराधर्षान्नित्यपुष्टाङ्करीषिणीम् ॥ ईश्वरींसर्वभूतानान्तामिहोपह्वयेश्रियम् ॥ १ ॥
मानस्तोकेतिवा ॥ ॐमान॑स्तो॒केतन॑ये॒मान॒आयु॑षि॒मानो॒गोषु॒मानो॒अश्वे॑षुरीरिषः ॥
मानो॑व्वी॒रान्रु॑द्रभा॒मिनो॑वधीर्ह॒विष्म॑न्तः॒सद॒मित्त्वा॑हवामहे ॥ २ ॥ इतिगोमय
स्नानम् अथपूर्वोक्तरीत्यापञ्चगव्यमेकीकृत्यस्नानंकुर्यात् ॥ गोमूत्रङ्गोमयंक्षीरन्दधि
सर्पिः कुशोदकम् ॥ सर्वपापविशुद्ध्यर्थंपञ्चगव्यम्पुनातुमाम् ॥ ॐसहस्र॑शीर्षा॒
पुरु॑षः सहस्राक्षः स॒हस्र॑पात् ॥ सभू॑मिꣳस॒र्व्वत॑स्पृ॒त्वात्य॑तिष्ठद्दशाङ्गु॒लम् इतिपञ्च

गव्यस्नानम् ॥ अथगोरजस्नानम् ॥ गवांखुरेणनिर्द्धूतंयद्रेणुगगनेगतं ॥ रजसानेनसंलेपोमहापातकनाशनः ॥ ॐउ॒दु॒त्यञ्जा॒तवे॑दसन्दे॒वम्ब॑हन्तिके॒तवः॑ ॥ दृ॒शेविश्वा॑य॒सूर्य्य॑म् ॥ इतिगोरजस्नानम् ॥ अथधान्यस्नानम् ॥ धान्यौषधंमनुष्याणाञ्जीवनंपरमंशुभम् ॥ तेनस्नानेनदेवेशममपापंव्यपोहतु ॥ ॐधा॒न्न्य॑मसिधिनु॒हिदे॒वान्प्रा॒णाय॑त्वोदा॒नाय॑त्वाव्या॒नाय॑त्वा ॥ दी॒र्घामनु॒प्रसि॑ति॒मायु॑षेधान्दे॒वोवः॑ सवि॒ताहिर॑ण्यपाणि॒ः प्रति॑गृभ्णा॒त्वच्छि॑द्रेणपा॒णिना॒चक्षु॑षेत्वाम॒हीना॒म्पयो॑सि ॥ इतिधान्यस्नानम् ॥ अथफलस्नानम् ॥ वनस्पतिरसोदिव्यःफलपुष्पवतांसदा ॥ तेनस्नानेनमेदेवफलंवृत्तमनन्तकम् ॥ याःफलिनीरितिफलस्नानम् ॥ ॐयाः फ॒लिनी॒र्य्याऽअफ॒लाऽअपु॒ष्पायाश्च॑पु॒ष्पिणीः ॥ बृह॒स्पति॑प्रसूता॒स्तानो॑मुञ्च॒न्त्वꣳह॑सः इतिफल

स्नानम् ॥ अथसर्वौषधीस्नानम् ॥ ओषधीःसर्ववृक्षाणांतृणगुल्मलतास्तुयाः ॥
दूर्वासर्षपसंयुक्ताःसर्वौषध्यःपुनन्तुमां ॥ ॐषधयःसमवेत्यौषधीस्नानम् ॥ ॐओष
धयःसमवदन्तसोमेनसहराज्ञा ॥ यस्मैकृणोतिब्राह्मणस्तꣳ राजन्पारयामासि ॥
इत्यौषधीस्नानम् ॥ अथकुशोदकस्नानम् ॥ कुशमूलेस्थितोब्रह्माकुशमध्येजनार्दनः ॥
कुशाग्रेशङ्करोदेवस्तेननश्यतुपातकम् ॥ देवस्यत्वेतिकुशोदकम् ॥. ॐदेवस्यं
त्वासवितुः प्प्रसवेऽश्विनोर्ब्बाहुभ्याम्पूष्णोहस्ताभ्याम् ॥ इतिकुशोदकस्नानम् ॥
अथहिरण्यस्नानम् ॥ ॐहिरण्यगर्भगर्भस्थंहेमवीजम्विभावसोः ॥ अनन्तपुण्य
फलदमतःशान्तिम्प्रयच्छमे ॥ आकृष्णेतिहिरण्यस्नानम् ॐआकृष्णेनरजसाव
र्त्तमानोनिवेशयन्नमृतम्मर्त्त्यञ्च ॥ हिरण्ययेनसवितारथेनादेवोयातिभुवनानि

पश्श्यन् इतिहिरण्यस्नानम् ॥ अथगङ्गास्नानम् ॥ ॐहिरण्यश्शृङ्गम्वरुणम्प्रपद्ये तीर्थम्मेदेहियाचितः ॥ यन्मयाभुक्तमसाधूनांपापेभ्यश्चप्रतिग्रहः ॥ यन्मे मनसावाचावैकर्म्मणादुष्कृतङ्कृतम् ॥ तन्नऽइन्द्रोवरुणोवृहस्पतिःसविताच पुनन्तुपुनःपुनः इत्थन्तेनवरुणंप्रार्त्थयेत ॥ ॐइमम्मेगङ्गेयमुनेसरस्वतिशतद्रुस्तोमंसचतापरुष्ण्या ॥ असिक्न्यामरुद्वृधेवितस्तयार्ज्जीकीयेशृणुह्याशुषोमया ॥ इदन्तेन्याभिरमसमानमद्भिर्याःकाश्चसिंधुंप्रवहन्तिनद्यः ॥ सर्प्पोजीर्णामिव त्वचञ्जहातिपापंसाशिरस्कोभ्युपेत्य ॥ गङ्गागङ्गेतियोब्रूयाद्योजनानांशतैरपि ॥ मुच्यतेसर्वपापेभ्योविष्णुलोकंसगच्छति ॥ विष्णुपादाब्जसम्भूतेगङ्गेत्रिपथगामिनि ॥ धर्म्मद्रवेतिविख्यातेपापंमेहरजाह्नवि॥ ततःॐसुमित्रियानऽआपऽओषधयःसन्तुदुर्म्मि

त्रियास्तस्मैसन्तुयोस्मान्द्वेष्टियञ्चवयन्द्विष्म’ ॥ ओंसमुद्रज्येष्ठाःसलिलस्यमध्या
त्पुनानायन्त्यनिविशमानाः ॥ इन्द्रोयावज्रीवृषभोररादताआपोदेवीरिहमामवन्तु ॥१॥
ओंयाऽआपोदिव्याऽउतवास्रवन्तिरवनित्रिमा ॥ उतवायाःस्वयञ्जाःशुचयःपाव
कास्ताःआपोदेवीरिहमामवन्तु ॥ २ ॥ ओंयासांराजावरुणोयातिमद्ध्येसत्यानृते
ऽ अवपश्यञ्जनानाम् ॥ मधुश्चुतःशुचयोयाः पावकास्तायातुराजावरुणोयासुसोमो
विश्वेदेवायसूर्यंमदन्तु ॥ वैश्वानरोयास्वग्निःप्रविष्टस्ताः आपोदेवीरिहमामवन्तु३ ॥
ओंएतोन्विन्द्रस्तवामशुद्धंशुद्धेनसाम्ना ॥ शुद्धैरुक्थैर्वावृध्वांसंशुद्धआशीर्वान्ममत्तु
ओंइन्द्रःशुद्धोनऽआगहिशुद्धःशुद्धाभिरूतिभिः ॥ शुद्धोरयिन्निधारयशुद्धोममद्धिसो
म्यः ॥ इन्द्रशुद्धोहिनोरयिंशुद्धोरत्नानिदाशुषे ॥ शुद्धोवृत्राणिजिघ्नसेशुद्धोवाजांशि

षासासि ॥ ३ ॥ तरत्समन्दीधावति ॥ धारासुतस्यान्धसः ॥ तरत्समंदीधावति ॥
उस्रावेवसूनांमर्त्यस्यदेव्यवसः ॥ तरत्समन्दीधावति ॥ ध्वस्रयोःपुरुषन्त्योरासह
स्राणिदद्महे ॥ तरत्समंदीधावति ॥ आययोस्त्रिशतंतनासहस्राणिचदद्महे ॥ तरत्स
मंदीधावति ॥ ४ ॥ यदन्तियच्चदूरकेइतिसूक्तम् ॥ आपोहिष्ठामयोभुवः इत्यृचा
मार्ज्जनङ्कुर्यात् ॥ इमम्मेगङ्गेइत्युदकमालोड्य ॥ ऋतञ्चसत्यञ्चाभीद्धादितिऋच
ञ्जपन्नघमर्षणङ्कुर्य्यात् ॥ ॐऋतञ्चसत्यञ्चाभीद्धात्तपसोद्ध्यजायतततोरात्र्यजाय
ततःसमुद्रोऽअर्णवःसमुद्रादर्णवादधिसम्बत्सरोऽअजायत ॥ अहोरात्राणिविदध
द्विश्वस्यमिषतोवशीसूर्य्याचन्द्रमसौधाता यथापूर्वमकल्पयद्दिवञ्चपृथिवीञ्चान्तरिक्ष
मथोस्वः ॥ इत्यघमर्षणम् ॥ ततःप्रवाहाभिमुखंत्रिबारंमज्जेत् ॥ गायत्र्यापिगङ्गा

स्नानम् ॥ स्त्रीशूद्राणाममंत्रकाणिस्नानानिपुराणमंत्राःपठनीयाः ॥ एवंदशविधस्नानं
कृत्वा ॥ पुनःशुद्धस्नानंविधिनाविधायस्नानाङ्गतर्प्पणंकुर्य्यात् ॥ तद्यथा ॐब्रह्माद
योदेवास्तान्देवाँस्तर्प्पयामि ॥ ॐभूर्दैवाँस्तर्प्पयामि ॥ ॐभुवर्द्दैवाँस्तर्प्पयामि ॥
ॐस्वर्द्दैवाँस्तर्प्पयामि ॥ ॐभू॰र्भुवःस्वर्दैवाँस्तर्प्पयामि ॥ ततोनिवीती ॐकृष्णद्वै
पायनादयोयेऋषयस्तान्ऋषींस्तर्प्पयामि ॥ ॐभूःऋषींस्तर्प्पयामि ॥ ॐभुवः
ऋषींस्तर्प्पयामि ॥ ॐस्वःऋषींस्तर्प्पयामि ॥ ॐभू॰र्भुवःस्वः ऋषींस्तर्प्पयामि ॥
ततःप्राचीनावीती ॐक॰व्यवाड़नलादयोयेपितरस्तान्पितॄँस्तर्प्पयामि ॥ ॐभूःपितॄँ
स्तर्प्पामि ॥ ॐभुवःपितॄँस्तर्प्पयामि ॥ ॐस्वःपितॄँस्तर्प्पयामि ॥ ॐभू॰र्भुवःस्वः
पितॄँस्तर्प्पयामि ॥ ॐअग्निदग्धाश्चयेजीवायेप्यदग्धाःकुलेमम ॥ भुमौदत्तेनतो

येनतृप्तायान्तुपराङ्गतिम् ॥ इतिजलाञ्जलिंतटेक्षिपेत् ॥ सव्यमेवंतर्प्पणङ्कृत्वा ॥ धौतेवाससीपरिधायतिलकंविधायकृताचमनः ॥ कुशोपग्रहः ॥ कृतप्राणायामः ॥ कृतमध्याह्निकः ॥ प्रायश्चित्ताङ्गंविष्णोः पूजनंषोडशोपचारैःकुर्य्यात् ॥ यथा ॥ विष्णो एतत्तेपाद्यं ॥ अर्घ्यमाचमनीयम् स्नानीयंवस्त्रंगन्धंपुष्पंधूपंदीपन्नैवेद्यमाचमनीयन्दक्षिणाच ॥ एवंविष्णुपूजनङ्कृत्वा ॥ वैष्णवश्राद्धङ्कुर्य्यात् ॥ यथा ॥ ॐइ॒दंविष्णु॒र्विचक्रमे त्रे॒धानिद॒धेप॒दम् ॥ समूढमस्यपाꣳसु॒रेइतिमन्त्रेणदिग्बन्धनम् ॥ वैष्णवश्राद्धोपहाराणांपवित्रतास्तु ॥ ततःअद्येहेत्यादि ॥ प्रायश्चित्ताङ्गंवैष्णवश्राद्धमहङ्करिष्ये ॥ विष्णवेइदमासनंइत्यादिपूर्वोक्तपूजाम्विधाय ॥ वैष्णवश्राद्धकृतस्यविष्णुपूजनविधेःपरिपूर्णतास्तु ॥ आचमनंविष्णुप्रीतयेत्रिभ्योधिकानयुग्मान्ब्राह्मणान्भोज

येत्॥आमान्नम्वादद्यात्॥सुप्रोक्षितादिकरणम्॥विष्णोःसुप्रोक्षितमस्त्वतितदग्रभूमिन्निषिञ्चेत् ॥ शिवाआपःसन्त्वितिकुशजलदानम् ॥ सौमनस्यमस्त्वतिपुष्पं ॥ ततोवैष्णवश्राद्धसाङ्गतासिद्ध्यर्थंदक्षिणांविष्णवेस्वाहा ॥ कृतस्यवैष्णवश्राद्धस्यपरिपूर्णतास्तु ॥ ततःप्रायश्चित्तधेनुदानम्ब्राह्मणवरणम् ॥ अद्येहेत्यादि०प्रायश्चित्तधेनुदानार्थंत्वामहंवृणेइतिवृत्वा ॥ अद्येहेत्यादि०सप्तजन्मोपार्ज्जितज्ञाताज्ञातकायिकवाचिकमानसिकपातकोपपातकमहापातकक्षयकामः इमांप्रायश्चित्तधेनुंरुद्रदैवताममुकगोत्रायामुकशर्म्मणेब्राह्मणायतुभ्यमहंसम्प्रददे ॥ प्रार्थनामंत्रः ॥ आजन्मोपार्ज्जितंपापंमनोवाक्कायकर्म्मभिः ॥ तत्सर्वन्नाशमायातुगोप्रदानेनकेशव ॥ तेनश्रीमहापापहाविष्णुःप्रीणातु ॥ प्रायश्चित्तकरोब्रह्माप्रायश्चित्तकरोहरिः ॥ प्राय

श्चित्तकरोरुद्रोगामेकाञ्चददाम्यहम् ॥ पूर्वजन्मसहस्राणिपूर्वजन्मशतानिच ॥ तत्सर्वन्नाशमायातुगामेकान्ददतोमम ॥ यालक्ष्मीःसर्वभूतानांयाचदेवेष्ववस्थिता ॥ सादेवीधेनुरूपेणममपापंव्यपोहतु ॥ ब्राह्मणस्यपठनं ॥ गृह्णामिदेवित्वांभक्त्या कुटुंवार्थैविशेषतः ॥ अतःपालयमान्नित्यंघोरात्पापप्रतिग्रहात् दानसांगतार्थंद्रव्यन्तुभ्यमहंसम्प्रददे ॥ अथवाद्रव्यद्वाराकुर्यात् ॥ अथस्थण्डिलेपञ्चभूसंस्कारान्कृत्वाग्निस्थापनं ॥ कुशकण्डिकाञ्चविधाय ॥ सङ्कल्पञ्चकुर्यात् ॥ अद्येहेत्यादि० आरब्धप्रायश्चित्ताङ्गंघृतेनव्याहृतिहोममहङ्करिष्ये ॥ आज्यसंस्कारःपर्युक्ष्यजुहुयात् ॥ ओंभूःस्वाहा ॥ इदमग्नये ॥ ओंभुवःस्वाहा ॥ इदंवायवे ॥ ओंस्वः स्वाहा ॥ इदꣳसूर्याय ॥ ओंभूर्भुवःस्वःस्वाहा ॥ इदंप्रजापतये ॥ पुनःप्रकीर्णक

पापक्षयार्थंयथाशक्त्यातिलहोमः ॥ अथहोमद्रव्यंब्राह्मणायदद्यात् ॥ व्याहृतिहोमसिद्ध्यर्थंमनःसंङ्कल्पितंघृतमग्निवायुसूर्यप्रीत्यर्थंब्राह्मणायाहंदास्ये ॥ तेनव्याहृतिहोमसिद्धिरस्तु ततउदीच्याङ्गंवैष्णवश्राद्धम् ॥ यथा ॥ अद्येहेत्यादि०आरब्धप्रायश्चित्तस्योदीच्याङ्गंबैष्णवश्राद्धमहङ्करिष्ये ॥ वैष्णवश्राद्धोपहाराणांपवित्रतास्तु ॥ इदम्विष्णुरितिमंत्रेणदिग्वन्धनम् ॥ वैष्णवश्राद्धेविष्णवेनमइदमासनंइत्यादिपूर्ववत्पूजांविधाय ॥ कृतस्यविष्णुपूजनविधेःपरिपूर्णतास्तुआचमनम् ॥ विष्णुप्रीतयेत्रिभ्योधिकानयुग्मान्ब्राह्मणान्भोजयेत् ॥ संङ्कल्पः ॥ वैष्णवश्राद्धेत्रिभ्योऽधिकानयुग्मान्ब्राह्मणान्भोजयिष्ये ॥ आमान्नम्वादद्यात् ॥ वैष्णवश्राद्धइदमामान्नंविष्णवेस्वाहा ॥ ततोविष्णोःसुप्रोक्षितमस्त्वतितदग्रभूमिन्निषिञ्चेत् ॥ शि

वाआपःसन्तुइतिसकुशजलदानम् ॥ सौमनस्यमस्त्वितिपुष्पं ॥ वैष्णवश्राद्धसांगतासिद्ध्यर्थंदक्षिणाबिष्णवेस्वाहा ॥ कृतस्यवैष्णवश्राद्धस्यपरिपूर्णतास्तु ॥ ततस्तुलसीदर्भाक्षतान्गृहीत्वा ॥ अद्येहेत्यादि ॰ ममजन्मप्रभृतिअद्यदिनंयावत्इत्यादिपूर्वोक्तानांपातकानांक्षयामेतावत्सख्याकान्प्राजापत्यान्रजतैकैकमुद्रोपकल्पितगोदानप्रत्याम्नायद्वाराअहमाचरिष्ये ॥ तेनपापहाश्रीमहाबिष्णुःप्रीयताम् ॥ कृतेनानेनामुकप्रायश्चित्तेनामुकगोत्रोऽमुकशर्म्मात्वन्निष्पापोभवइतिवारत्रयन्द्विजमुखात् श्रुत्वासभोपविष्टब्राह्मणानांपादाभिवन्दनङ्कृत्वा ॥ ममपापक्षयरूपममुकप्रायश्चित्तंपरिपूर्णमस्त्वितिपरिपूर्णतांप्रार्थयेत् ॥ अस्त्वितिब्राह्मणोब्रूयात् ॥ ततःप्रायश्चित्तस्यउदीच्याङ्गव्याहृतिहोममहङ्करिष्ये ॥ इतिसङ्कल्प्य ॥ पूर्ववन्महाव्याहृति

भिर्घृतेनातिलैश्चसप्तवारमाहुतिः ॥ २८ ॥ ततःकृतस्यामुकप्रायश्चित्तस्यसांगतासिद्ध्यर्थंपञ्चसंख्याकान्ब्राह्मणान्भोजयिष्ये ॥ ततोद्वितीयगोमिथुनदानम् ॥ अद्येहेत्यादि० कृतस्यामुकप्रायश्चित्तस्योदीच्याङ्गतयाविहितद्वितीयगोमिथुननिष्क्रयभूतंद्रव्यंब्राह्मणायाहंदास्ये ॥ ततोभक्षणार्थंपञ्चगव्यङ्कार्यम् ॥ पत्रपुटेगायत्र्यापलार्द्धंताम्रायागोमूत्रं ॥ गन्धद्वारेतिअङ्गुष्ठपर्वार्द्धपरिमितंश्वेतायागोमयम् ॥ आप्यायस्वेतिपलद्वयंकापिलायादुग्धम् ॥ दधिक्राव्णोइतिपलत्रयन्नीलायादधि ॥ ओंघृ॒तम्मि॑मिक्षेघृ॒तम॑स्य॒योनि॑र्घृ॒तेश्रि॒तोघृ॒तम्व॑स्य॒धाम॑ ॥ अ॒नु॒ष्व॒धमाव॑हमा॒द॑यस्व॒स्वाहा॑कृतम्वृषभवक्षिह॒व्यम् ॥ अ० १७ मं० ८८ इतिएकपलंकृष्णायाघृतम् ॥ आपोहिष्ठेतिपलमेकङ्कुशोदकम् ॥ प्रणवेनालोड्ययाज्ञियकाष्ठेनानि

म्र्मत्थ्यप्रणवेनाभिमन्त्र्य ॥ सप्तपत्रैर्हरितकुशैर्दशाहुतीर्जुहुयात् ॥ एभिर्मन्त्रैर्म्म
न्त्राश्च ॥ ओंइरावतीधेनुमतीहिभूतꣳसूयवसिनीमनवेदशस्या ॥ व्व्यस्कब्भ्ना
रोदशीबिष्णवेतेदाधर्त्थपृथिवीमभितोमयूखैः स्वाहा ॥ १ ॥ सं० अ० ५ मं० १६
ओंपृथिव्यैस्वाहाइदम्पृथिव्यै ॥ ओंइदम्विष्णुर्व्विचक्रमेत्रेधानिदधेपदम् ॥ समू
ढमस्यपाꣳसुरेस्वाहा ॥ २ सं० अ० ५ मं० १५ विष्णवेस्वाहा ॥ इदंविष्णवे ॥
ओंमानस्तोकेतनयेमानऽआयुषिमानोगोषुमानोऽअश्वेषुरीरिषः ॥ मानोब्बीरान्रु
द्द्रभामिनोबधीर्हविष्मन्तःसदमित्त्वाहवामहे ॥ ३ ॥ सं० अ० १६ मं०
१६ रुद्रायस्वाहा ॥ इदंरुद्राय ॥ ओंब्रह्मजज्ञानम्प्रथमम्पुरस्ताद्विसीमतःसुरु
चोव्वेनऽआवः ॥ सबुध्न्याऽउपमाऽअस्यविष्ठाःसतश्चयोनिमसतश्चव्विवः ॥ ४ ॥

अ० १३ । मं० ३ ब्रह्मणेस्वाहा ॥ इदम्ब्रह्मणे ॥ ओंअग्निन्दूतम्पुरोदधेहव्यवाहमुपब्रुवे ॥ देवाँ२॥ऽआसादयादिह ॥ ५ ॥ अ० २२ । मं० १७ अग्नयेस्वाहा ॥ इदमग्नये ॥ ओंचन्द्रमाऽअप्स्वन्तरासुपर्णोधावतेदिवि ॥ रयिम्पिशङ्गम्बहुलम्पुरुस्पृहꣳहरिरेतिकनिक्रदत् ॥ ६ ॥ सं० अ० ३३ मं ९० सोमायस्वाहा ॥ इदꣳसोमाय ॥ ओंतत्सवितुर्वरेण्यम्भर्ग्गोदेवस्यधीमहि ॥ धियोयोनःप्प्रचोदयात् ॥ ७ ॥ सं० अ० ३६ मं० ३ सूर्य्यायस्वाहा ॥ इदꣳसूर्य्याय ॥ प्रणवेनप्रजापतयेस्वाहा ॥ इदम्प्रजापतये ॥ ओंमन्तरिक्षायस्वाहा ॥ इदमन्तरिक्षाय ॥ ओंमग्नयेस्विष्टकृतेस्वाहा ॥ इदमग्नयेस्विष्टकृते ॥ इतिहुत्वाव्रतग्रहणमहङ्करिष्ये ॥ इतिद्विजान्पृष्ट्वातैःकुरुष्वेत्यनुज्ञातः ॥ प्रणवे

नसर्वंपिबेत् ॥ पञ्चगव्यप्राशनमंत्रः ॥ यद्यदस्थिगतंपापन्देहेतिष्ठतिमामके ॥ ब्रह्मकूर्चोपवासस्तुदहत्त्वग्निरिवेन्धनम् ॥ अशक्तौगोमूत्रादिस्वल्पंग्राह्यंसर्वस्यपेयत्वात् ॥ अस्मिन्नादिनेउपासः ॥ अशक्तस्यहविष्याशनम् ॥ घृतेमुखावलोकनम् ॥ सूर्यावेक्षणंवा ॥ एवम्प्रायश्चित्तङ्कृत्वाशक्तौसत्यांमष्टौमहादानानिदशदानान्यपिकुर्यात् ॥ यथा ॥ तिललोहंसुवर्णञ्चकार्प्पासंलवणन्तथा ॥ सप्तधान्यंक्षितिर्गावोमहादानानिचाष्टवै ॥ अथदशदानम् ॥ गोभूतिलहिरण्याज्यवासोधान्यगुडानिच ॥ रूप्यंलवणमित्याहुर्दशदानानिपण्डिताः ॥ इत्युक्तानि ॥ तत्रगोदानम् ॥ अद्येहेत्यादि०अमुकदेवप्रतिष्ठाङ्गतयादशदानान्तर्गतांगांरुद्रदैवतामुकगोत्रायामुकशर्मणेब्राह्मणायतुभ्यमहंसंप्रददे ॥ इतिसर्वत्रसङ्कल्पः ॥ गवामङ्गेषुति

छन्तिभुवनानिचतुर्द्दश ॥ यस्मात्तस्माच्छिवंमेस्यादिहलोकेपरत्रच ॥ अथभूमिः ॥ अद्येहेत्यादि० अमुकदेवप्रतिष्ठाङ्गतयासर्वपापक्षयपूर्विकामिमांभूमिंसस्योद्भवांसवृक्षपुष्पफलाद्युपेतांविष्णुदैवतांममुकगोत्रायामुकशर्म्मणेब्राह्मणायतुभ्यमहंसंप्रददे ॥ प्रार्थनामंत्रः ॥ सर्वेषामाश्रयाभूमिर्वराहेणसमुद्धृता ॥ अनन्तसस्यफलदाअतःशांतिंप्रयच्छमे ॥ अथतिलाः ॥ तिलास्तुद्रोणत्रयमितादेयाः ॥ पंचमणपारिमिताभवंति ॥ अद्येहेत्यादि० अमुकदेवप्रतिष्ठांगतयासर्वपापक्षयपूर्वकममुकगोत्रायामुकशर्म्मणेब्राह्मणायसुपूजितायकृष्णाजिनस्थंसुवर्णमधुसर्पिर्युतंवस्त्राच्छन्नंतिलद्रोणंसोमदैवतंतुभ्यमहंसंप्रददे ॥ दानप्रतिष्ठापिदेया ॥ महर्षेर्गोत्रसंभूताःकश्यपस्यतिलाःस्मृताः ॥ तस्मादेषांप्रदानेनममपापंव्यपोहतु ॥ ३ ॥ अथहिरण्यम् ॥

अद्येहेत्यादि० अमुकदेवप्रतिष्ठाङ्गतयाममसमस्तपापक्षयपूर्वकमेरुदानसमफलावाप्तयेदेयद्रव्यतृतीयशदक्षिणासहितमिदंसुवर्णमग्निदैवममुकगोत्रायाऽमुकशर्म्मणेब्राह्मणायतुभ्यमहंसंप्रददे ॥ दानप्रतिष्ठाञ्च ॥ हिरण्यगर्भगर्भस्थंहेमवीजंविभावसोः ॥ अनंतपुण्यफलदमतःशान्तिम्प्रयच्छमे ॥ ४ ॥ अथाज्यम् ॥ घृतन्तुप्रस्थितन्दद्यात् ॥ विंशतिसेटकमितंभवति ॥ अद्येहेत्यादि०अमुकदेवप्रतिष्ठाङ्गतयाममसमस्तपापक्षयपूर्वकमिदमाज्यं विष्णुदैवतममुकगोत्रायाऽमुकशर्म्मणेब्राह्मणायतुभ्यमहंसंप्रददेनममेति ॥ मंत्रस्तु ॥ कामधेनोःसमुद्भूतंसर्वक्रतुषुसंस्थितम् ॥ देवानामाज्यमाहारअतःशान्तिम्प्रयच्छमे ॥ दानप्रतिष्ठाञ्च ॥ इत्याज्यदानम् ॥ अथवस्त्रदानम् ॥ सूक्ष्मवस्त्रद्वयम्बहुमूल्यमष्टहस्तमितंदद्यात् ॥ अद्येहेत्यादि०

अमुकदेवप्रतिष्ठाङ्गतयासमस्तपापक्षयपूर्वकमिमेवस्त्रेबार्हस्पत्ये अमुकगोत्रायअमुकशर्म्मणेब्राह्मणायतुभ्यमहंसम्प्रददे ॥ मंत्रस्तु ॥ शीतवातोष्णसंत्राणंलज्जायारक्षणंपरम् ॥ देहालङ्करणंवस्त्रमतःशान्तिम्प्रयच्छमे ॥ दानप्रतिष्ठापिदेया ॥ इतिवस्त्रदानम् ॥ अथधान्यदानम् ॥ सार्द्धखारीद्वयंब्रीहयोदेयाः ॥ तच्चसार्द्धशतद्वयमणपरिमितंमणषट्कञ्चेति ॥ अद्येहेत्यादिअमुकदेवप्रतिष्ठाङ्गतयाअमुकगोत्रायशर्म्मणेब्राह्मणायइदममुकसंख्यंप्रजापतिदैवतंसमस्तपापक्षयपूर्वकैहिकामुष्मिकशिवलोकफलावाप्तिकामस्तुभ्यमहंसम्प्रददेनममेति ॥ मंत्रस्तु ॥ सर्वदेवमयन्धान्यंसर्वोत्पत्तिकरम्महत् ॥ प्राणिनाञ्जीवनोपायमतःशान्तिम्प्रयच्छमे ॥ दानप्रतिष्ठापिदेया ॥ इतिधान्यदानम् ॥ अथगुडदानम् ॥ गुडंपलषष्टिमितन्द

द्यात् ॥ अद्येहेत्यादि० अमुकदेवप्रतिष्ठाङ्गतयाममसमस्तपापक्षयपूर्वकगृहेलक्ष्म्याः स्थैर्यसिद्धिकामोअमुकगोत्रायामुकशर्म्मणेसुपूजितायेमंगुडंरसवर्यंसोमदैवतंसदक्षिणं तुभ्यमहंसम्प्रददेनममेति ॥ मंत्रस्तु ॥ गुडमिक्षुरसोद्भूतंमंत्राणांप्रणवोयथा ॥ दानेनानेनैतस्यचपरालक्ष्मीःस्थिरागृहे ॥ दानप्रतिष्ठापिदेया ॥ इतिगुडदानम् ॥ अथरजतदानम् ॥ पलत्रयमितंरौप्यन्दद्यात् ॥ अद्येहेत्यादि० अमुकदेवप्रतिष्ठाङ्गतयाममसमस्तपापक्षयपूर्वकशिवविष्णुपितृप्रीतिकामो अमुकगोत्रायामुकशर्म्मणेसुपूजितायइदंरजतंविष्णुदैवतंसदक्षिणंतुभ्यमहंसंप्रददेनममेति ॥ मंत्रस्तु ॥ प्रीतिर्यतः पितॄणांचविष्णुशङ्करयोःसदा ॥ शिवनेत्रोद्भवंरूप्यमतःशांतिंप्रयच्छमे ॥ दानप्रतिष्ठापिदेया ॥ इतिरजतदानम् ॥ अथलवणदानम् ॥ लवणंसार्द्धखारिकंदद्यात्॥

अमुकदेवप्रतिष्ठाङ्गतयासमस्तपापक्षयपूर्वकमिमेवस्त्रेबार्हस्पत्ये अमुकगोत्रायअमुक
शर्म्मणेब्राह्मणायतुभ्यमहंसम्प्रददे ॥ मंत्रस्तु ॥ शीतवातोष्णसंत्राणंलज्जायार
क्षणंपरम् ॥ देहालङ्करणंवस्त्रमतःशान्तिंम्प्रयच्छमे ॥ दानप्रतिष्ठापिदेया ॥
इतिवस्त्रदानम् ॥ अथधान्यदानम् ॥ सार्द्धखारीद्वयंव्रीहयोदेयाः ॥ तच्चसार्द्ध
शतद्वयमणपरिमितंमणषट्कञ्चेति ॥ अद्येहेत्यादिअमुकदेवप्रतिष्ठाङ्गतयाअमुक
गोत्रायशर्म्मणेब्राह्मणायइदममुकसंख्यंप्रजापतिदैवतंसमस्तपापक्षयपूर्वकैहिकामुष्मि
कशिवलोकफलावाप्तिकामस्तुभ्यमहंसम्प्रददेनममेति ॥ मंत्रस्तु ॥ सर्वदेवम
यन्धान्यंसर्वोत्पत्तिकरम्महत् ॥ प्राणिनाञ्जीवनोपायमतःशान्तिम्प्रयच्छमे ॥ दान
प्रतिष्ठापिदेया ॥ इतिधान्यदानम् ॥ अथगुडदानम् ॥ गुडंपलषष्टिमितन्द

द्यात् ॥ अद्येहेत्यादि० अमुकदेवप्रतिष्ठाङ्गतयाममसमस्तपापक्षयपूर्वकगृहेलक्ष्म्याः स्थैर्यसिद्धिकामोअमुकगोत्रायामुकशर्म्मणेसुपूजितायेमंगुडंरसवर्यंसोमदैवतंसदक्षिणं तुभ्यमहंसम्प्रददेनममेति ॥ मंत्रस्तु ॥ गुडमिक्षुरसोद्भूतंमंत्राणांप्रणवोयथा ॥ दानेनानेनैतस्यचपरालक्ष्मीःस्थिरागृहे ॥ दानप्रतिष्ठापिदेया ॥ इतिगुडदानम् ॥

अथरजतदानम् ॥ पलत्रयमितंरौप्यन्दद्यात् ॥ अद्येहेत्यादि० अमुकदेवप्रतिष्ठाङ्गतयाममसमस्तपापक्षयपूर्वकशिवाबिष्णुपितृप्रीतिकामो अमुकगोत्रायशर्म्मणेसुपूजितायइदंरजतंबिष्णुदैवतंसदक्षिणंतुभ्यमहंसंप्रददेनममेति ॥ मंत्रस्तु ॥ प्रीतिर्यतः पितृणांचाबिष्णुशङ्करयोःसदा ॥ शिवनेत्रोद्भवंरूप्यमतःशांतिंप्रयच्छमे ॥ दानप्रतिष्ठापिदेया ॥ इतिरजतदानम् ॥

अथलवणदानम् ॥ लवणंसार्द्धखारिकंदद्यात॥

अद्येहेत्यादि० अमुकदेवप्रतिष्ठाङ्गतयाममसमस्तपापक्षयपूर्वकशिवप्रीतिकामोअमुकगोत्रायशर्म्मणेसुपूजितायइदंलवणंसर्वरसोत्कृष्टंसोमदैवत्यंसदक्षिणन्तुभ्यमहंसम्प्रददेन ममेति ॥ मंत्रस्तु ॥ यस्मादन्नरसाः सर्वेनोत्कृष्टालवणंबिना ॥ शम्भोः प्रीतिकरंयस्मादतः शान्तिम्प्रयच्छमे ॥ दानप्रतिष्ठापिदेया ॥ इतिलवणदानम् ॥ इति दशमहादानानि ॥ ततः प्रार्थना ॥ मंत्रहीनंक्रियाहीनंभक्तिहीनंसुरेश्वर ॥ यन्मयाचरितन्देवपरिपूर्णंतदस्तुमे ॥ देवस्यत्वेत्यभिषेकः ॥ तिलककरणम् ॥ दक्षिणामंत्रपाठः ॥ इतिप्रायश्चित्तविधिः ॥ तत्रशिल्पिस्थानात्प्रासादप्रादक्षिण्येनदेवंतत्रानीयासनेनिधायाचान्तः प्राणानायम्यप्रतिज्ञासङ्कल्पङ्कुर्यात् ॥ तत्रमासपक्षाद्युल्लिख्यास्यांमूर्तौ लिंगेवादेवकलासान्निद्ध्यार्थंसर्वतोभद्रशिष्यादिवास्तुनवग्रह

लिङ्गतोभद्रयज्ञवास्तुगजाननादिचतुः षष्टियोगिनीमण्डलस्थापितदेवानांयेकेचिदन्येमण्डलस्थापितदेवास्तेषामावाहनपूजनमृत्विजादीनांप्रतिज्ञावरणमहङ्करिष्ये ॥ तदङ्गत्वेनगणपतिपूजनपूर्वकपुण्याहवाचनमातृकास्थापनवसोर्द्धारानांदीश्राद्धानिकारिष्ये ॥ अथगणपतिपूजनम् ॥ धृतकुङ्कुमस्यकेसरस्यवामङ्गलतिलकम् ॥ स्मार्त्तविधिनाद्विराचम्यप्राणानायम्यशान्तिपाठंपठित्वा ॥ त्रिमात्रम्प्रणवमुच्चार्य ॥ लक्ष्मीनारायणादिदेवान्प्रणमेत् ॥ अथशान्तिपाठमन्त्राः ॥ ॐआनोभद्राः क्रतवोयन्तु विश्वतोदब्धासोऽअपरीतासउद्भिदः ॥ देवानोयथासदमिद्वृधेऽअसन्नप्रायुवोरक्षितारोदिवेदिवे ॥ १ ॥ अ० २५ सं० मं० १४ देवानाम्भद्रासुमतिर्ऋजूयतान्देवानाꣳरातिरभिनोनिवर्त्तताम् ॥ देवानाꣳसख्यमुपसेदिमाव्वयन्देवानऽआयुःप्रतिरन्तुजी

अद्येहेत्यादि० अमुकदेवप्रतिष्ठाङ्गतयाममसमस्तपापक्षयपूर्वकशिवप्रीतिकामोअमुकगोत्रायशर्म्मणेसुपूजितायइदंलवणंसर्वरसोत्कृष्टंसोमदैवत्यंसदक्षिणन्तुभ्यमहंसम्प्रददेन ममेति ॥ मंत्रस्तु ॥ यस्मादन्नरसाः सर्वैर्नोत्कृष्टालवणंबिना ॥ शम्भोः प्रीतिकरंयस्मादतः शान्तिम्प्रयच्छमे ॥ दानप्रतिष्ठापिदेया ॥ इतिलवणदानम् ॥ इति दशमहादानानि ॥ ततः प्रार्थला ॥ मंत्रहीनंक्रियाहीनंभक्तिहीनंसुरेश्वर ॥ यन्मयाचरितन्देवपरिपूर्णंतदस्तुमे ॥ देवस्यत्वेत्यभिषेकः ॥ तिलककरणम् ॥ दक्षिणामंत्रपाठः ॥ इतिप्रायश्चित्तबिधिः ॥ तत्रशिल्पिस्थानात्प्रासादप्रादक्षिण्येनदेवंतत्रानीयासनेनिधायाचान्तः प्राणानायम्यप्रतिज्ञासङ्कल्पङ्कुर्यात् ॥ तत्रमासपक्षाद्युद्दिष्टस्यास्यांमूर्तौ लिंगेवादेवकलासान्निद्ध्यार्थंसर्वतोभद्रशिष्यादिवास्तुनवग्रह

लिङ्गतोभद्रयज्ञवास्तुगजाननादिचतुः षष्टियोगिनीमण्डलस्थापितदेवानांयेकेचिदन्येमण्डलस्थापितदेवास्तेषामावाहनपूजनमृत्विजादीनांप्रतिज्ञावरणमहङ्करिष्ये ॥ तदङ्गत्वेनगणपतिपूजनपूर्वकपुण्याहवाचनमातृकास्थापनवसोर्द्धारानांदीश्राद्धानिकारिष्ये ॥ अथगणपतिपूजनम् ॥ धृतकुङ्कुमस्यकेसरस्यवामङ्गलतिलकम् ॥ स्मार्त्तविधिनाद्विराचम्यप्राणानायम्यशान्तिपाठंपठित्वा ॥ त्रिमात्रम्प्रणवमुच्चार्य ॥ लक्ष्मीनारायणादिदेवान्प्रणमेत् ॥ अथशान्तिपाठमन्त्राः ॥ ॐआनोभ॒द्राः क्रत॑वोयन्तुवि॒श्वतो॑ऽदब्धासो॒ऽअप॑रीतासउ॒द्भिदः॑ । दे॒वानो॒यथा॒सद॒मिद्वृ॒धेऽअस॒न्नप्रा॑युवोरक्षि॒तारो॑दि॒वेदि॑वे ॥ १ ॥ अ० २५ सं० मं० १४ दे॒वानां॑भ॒द्रासु॑म॒तिऽर्ऋजूय॒तान्दे॒वानाꣳरा॒तिर॒भिनो॒निव॑र्त्तताम् ॥ दे॒वानाꣳस॒ख्यमुप॑सेदिमाव॒यन्दे॒वान॒ऽआयु॒ःप्रति॑रन्तुजी॒

वसे ॥ २ ॥ सं० अ० २५ मं० १५ तान्पूर्व्वंयानिविदाहूमहेव्वयम्भगम्मित्र
मदितिन्दक्षमस्रिधम् ॥ अर्य्यमणव्वरुणꣳसोमम्मश्विनासरस्वतीनःसुभगामयः
स्करत् ॥ ३ ॥ सं० अ० २५ मं० १६ तन्नोव्वातोमयोभुवातुभेषजन्तन्माता
पृथिवीतत्पिताद्यौः ॥ तद्ग्रावाणःसोमसुतोमयोभुवस्तदश्विनाशृणुतन्धिष्ण्यायुव
म् ॥ ४ ॥ सं० अ० २५ मं० १७ तमीशानञ्जगतस्तस्थुषस्पतिन्धियञ्जि
न्वमवसेहूमहेव्वयम् ॥ पूषानोयथावेदसामसद्वृधेरक्षितापायुरदब्धःस्वस्तये ॥ ५ ॥
सं० अ० २५ मं० १८ स्वस्तिनऽइन्द्रोव्वृद्धश्रवाःस्वस्तिनःपूषाव्विश्ववेदाः ॥
स्वस्तिनस्तार्क्ष्योऽअरिष्टनेमिः स्वस्तिनोबृहस्पतिर्द्दधातु ॥ ६ ॥ सं० अ० २५ मं०
१९ पृषदश्वामरुतःपृश्निमातरःशुभञ्जावानोव्विदथेषुजग्मयः ॥ अग्निजिह्वाम

नवः;सूरचक्षसोव्विश्श्वेनोदेवाऽअवसागमन्निह ॥ ७ ॥ सं० अ० २५ मं० २० भद्द्रङ्कर्णेभिः;शृणुयामदेवाभद्द्रम्पश्श्येमाक्षभिर्य्यजत्राः; ॥ स्थिरैरङ्गैस्तुष्टुवाꣳसस्तनूभिर्व्यसेमहिदेवहितय्यदायुः ॥ ८ ॥ सं० अ० २५ मं० २१ शतमिन्नुशरदोऽअंतिदेवायत्रानश्श्चक्क्राजरसन्तनूनाम् ॥ पुत्त्रासोयत्रपितरोभवन्तिमानोमद्ध्यारीरिषतायुर्ग्गन्तोः;॥ ९ ॥ सं० अ० २५ मं० २२ अदितिर्द्यौरदितिरन्तरिक्षमदितिर्म्मातासपितासपुत्त्रः ॥ व्विश्श्वेदेवाऽअदितिः;पञ्चजनाऽअदितिर्ज्जातमदितिर्ज्जनित्वम् ॥ १० ॥ सं० अ० २५ मं० २३ तम्पत्नीभिरनुगच्छेमदेवाः पुत्त्रैर्भ्रातृभिरुतवाहिरण्यैः; ॥ नाकङ्गृभ्णानाःसुकृतस्यलोकेतृतीयेपृष्ठेऽअधिरोचनेदिवः ॥ ११ ॥ सं० अ० १५ मं० ५० आयुष्यम्वर्च्चस्यꣳरायस्पोषमौद्भि

दम् ॥ इदꣳहिरण्यम्ब्बर्च्चस्स्वज्जैत्र्यायाब्बिशतादुमाम् ॥ १२ ॥ सं० अ०
स.प्र ३४ मं० ५० द्यौःशान्तिरन्तरिक्षꣳशान्ति÷पृथिवीशान्तिराप;शान्तिरोषधय;शा शे.
३९ ॥ न्ति÷ब्बनस्प्पतय;शान्तिर्ब्बिश्श्वेदेवाः ॥ शान्तिर्ब्ब्रह्मशान्ति;सर्ब्बꣳशान्ति;शा
न्तिरेवशाति;सामाशांतिरेधि ॥ १३ ॥ सं० अ० ३६ मं० १७ यतोयत;समीह
सेततोनोऽअभयंकुरु ॥ शन्न÷कुरुप्प्रजाब्भ्योभयन्न;पशुब्भ्य÷ ॥ १४ ॥ सं० अ०
३६ मं० २२ ॥ ॐ शांतिः शांतिः शांतिः ॥ ॐश्रीमन्महागणाधिपतयेनमः ॥ ॐ
लक्ष्मीनारायणाभ्यान्नमः ॥ ॐउमामहेश्वराभ्यान्नमः ॐवाणीहिरण्यगर्भाभ्यान्नमः ॥
ॐशचीपुरन्दराभ्यान्नमः ॥ ॐमातृपितृचरणकमलेभ्योनमः ॥ ॐकुलदेवताभ्यो ॥ ३९ ॥
नमः ॥ ॐइष्टदेवताभ्योनमः ॥ ॐग्रामदेवताभ्योनमः ॥ ॐस्थानदेवताभ्यो

नमः ॥ ॐवास्तुदेवताभ्योनमः ॥ ॐविश्वेश्वरादिसकलदेवताभ्योनमः ॥ ॐ
सर्वेभ्योदेवेभ्यःसर्वेभ्योब्राह्मणेभ्योनमोनमः ॥ ॐपुण्यंपुण्याहंदीर्घमायुरस्तु ॥ सुमु
खश्चैकदन्तश्चकपिलोगजकर्णकः ॥ लंबोदरश्चविकटोबिघ्ननाशोबिनायकः ॥ धूम्र
केतुर्गणाध्यक्षोभालचन्द्रोगजाननः ॥ द्वादशैतानिनामानियःपठेच्छृणुयादपि ॥ विद्या
रंभेबिवाहेचप्रवेशेनिर्गमेतथा ॥ सङ्ग्रामेसंकटेचैवविघ्नस्तस्यनजायते । वक्रतुण्ड
महाकायसूर्यकोटिसमप्रभ ॥ अविघ्नंकुरुमेदेवसर्वकार्येषुसर्वदा ॥ शुक्लांबरधरंदेवं
शशिवर्णञ्चतुर्भुजं ॥ प्रसन्नबदनंध्यायेत्सर्वविघ्नोपशान्तये ॥ अभीप्सितार्थ
सिद्ध्यर्थंपूजितोयःसुरासुरैः ॥ सर्वविघ्नहरस्तस्मैगणाधिपतयेनमः ॥ सर्वमङ्गल
मङ्गल्येशिवेसर्वार्थसाधिके ॥ शरण्येत्र्यम्बकेगौरिनारायणिनमोस्तुते ॥ सर्वदा

सर्वकार्येषुनास्तितेषाममङ्गलम् ॥ येषांहृदिस्थोभगवान्मङ्गलायतनोहरिः ॥ ८ ॥
लाभस्तेषाञ्जयस्तेषांकुतस्तेषांपराजयः ॥ येषामिन्दीवरश्यामोहृदयस्थोजनार्द्दनः ॥९॥
विनायकंगुरुंभानुंब्रह्मविष्णुमहेश्वरान् ॥ सरस्वतीम्प्रणम्यादौसर्वकार्यार्थसिद्धये ॥१०॥
तदेवलग्नंसुदिनन्तदेवताराबलञ्चन्द्रबलन्तदेव ॥ विद्याबलंदैवबलन्तदेवलक्ष्मीपते
तेंघ्रियुगंस्मरामि ॥ ११ ॥ यत्रयोगेश्वरःकृष्णोयत्रपार्थोधनुर्द्धरः ॥ तत्रश्रीर्वि
जयोभूतिर्ध्रुवानीतिर्म्मतिर्मम ॥ १२ ॥ सर्वेष्वारम्भकार्येषुत्रयस्त्रिभुवनेश्वराः ॥ देवा
दिशन्तुनःसिद्धिंब्रह्मेशानजनार्द्दनाः ॥ १३ ॥ तत्रादौकर्म्मार्थजलपूरितकलशार्च
नम् ॥ ॐतत्वायामिब्रह्मणाबन्दमानस्तदाशास्तेयजमानोहविर्भिः अहेडमानो
वरुणेहबोदूध्युरुशꣳ समानऽआयुःप्रमोषीः ॥ १ ॥ सं० अ० २१ मं० २

कलशेवरुणायनमःगन्धाक्षतपुष्पैःसंपूज्य ॥ ततोदक्षिणहस्तेनकलशमालभ्याभिमंत्रयेत् ॥ कलशस्यमुखेविष्णुःकण्ठेरुद्रःसमाश्रितः ॥ मूलेतस्यस्थितोब्रह्मामद्ध्येमातृगणाःस्मृताः ॥ कुक्षौतुसागराःसर्वेसप्तद्वीपावसुन्धरा ॥ ऋग्वेदोथयजुर्वेदःसामवेदोह्यथर्वणः ॥ अङ्गैश्चसहिताःसर्वेकलशन्तुसमाश्रिताः ॥ इत्यभिमन्त्र्य ॥ ततोगङ्गाद्यावाहनम् ॥ गङ्गेचयमुनेचैवगोदावरीसरस्वति ॥ नर्म्मदेसिन्धुकावेरिजलेस्मिन्‌सन्निधिङ्कुरु ॥ अस्मिन्कलशेसर्वाणितीर्थान्यावाहयामिपूजयामि ॥ नमस्करोमि ॥ कलशोदकेनपूजासम्भारान्सम्प्रोक्ष्य ॥ तत्रमंत्रः ॥ ॐअपवित्रःपवित्रोवासर्वावस्थाङ्गतोपिवा ॥ यःस्मरेत्पुण्डरीकाक्षंसबाह्याभ्यन्तरेशुचिः ॥ १ ॥ इतिमंत्रेणप्रोक्षयेत् ॥ दीपपूजनम् ॥ भोदीपत्वंब्रह्मरूपस्त्वन्धकारनिवारकः ॥ इमांमया

कृतांपूजांगृह्णंस्तेजःप्रवर्द्धय ॥ १ ॥ दीपायनमःगन्धाक्षतपुष्पैःसंपूज्यप्रार्थयेत् ॥
अथगणपतिकलशस्थापनम् ॥ ततःस्वाग्रेष्टदलेधान्यराशोरुपरिकलशंसंस्थाप्य ॥
तत्रदूर्वापञ्चरत्नादितत्तन्मंत्रैःक्षिप्त्वाधान्यपूर्णपात्रंकलशोपरिनिधाय ॥ तस्योपरिकुं
कुमस्वस्तिकयुतंनारिकेलंनिधाय ॥ महीद्यौरितिभूमिंस्पृष्ट्वा ॥ ॐमहीद्यौःपृथि
वीचनऽइमय्यज्ञम्मिमिक्षताम् ॥ पिपृतान्नोभरीमभिः ॥ १ ॥ सं० अ० ८ मं० ३२
ॐषधयःसमितियवान्क्षिप्त्वा ॥ ॐओषधयःसमंवदन्तसोमेनसहराज्ञा ॥ यस्मै
कृणोतिब्राह्मणस्तꣳराजन्पारयामसि ॥ २ ॥ सं० अ० १२ मं० ९६ ॥ इति
यवान्कलशाधस्तलेक्षिप्त्वा ॥ आजिघ्रेतिकलशंस्थापयेत् ॥ ॐआजिघ्रकलशं
म्मह्यात्वाविशन्त्विन्दवः पुनरूर्ज्जानिवर्त्तस्वसानः ॥ सहस्रन्धुक्ष्वोरुधारापयस्वतीपुन

म्मांव्विशलाद्द्रुयि॰ ॥ ३ ॥ सं० अ० ८ मं० ४२ बरुणस्योत्तम्भनमसीति जलंपूरयेत् ॥ ॐव्वरुणस्योत्तम्भनमसिव्वरुणस्यस्कम्भसर्ज्जनीस्त्थोव्वरुणस्यऽऋतसदन्न्यसिव्वरुणस्यऽऋतसदनमसिव्वरुणस्यऽऋतसदनमासीद सं० अ० ४ मं० ३६ ॥ इतिकुम्भेजलंक्षिपेत् ॥ ४ ॥ अꣳशुनातइतिगन्धंप्रक्षिपेत् ॥ ॐ त्वाꣳशुनातिऽअꣳशुःपृच्यताम्परुषापरुः ॥ गन्धस्तेसोममवतुमदायरसोऽअच्युतः ॥ ५ ॥ सं० अ० २० मं० २७ ॥ याऽओषधीरितिसर्व्वौषधीः ॥ ॐयाऽओषधीःपूर्व्वाजातादेवेभ्यस्त्रियुगम्पुरा ॥ मनैनुबभ्रूणामहꣳशतन्धामानिसप्तच ॥ ६ ॥ सं० अ० १२ मं० ७५ काण्डात्काण्डादितिदूर्वाः ॥ ॐकाण्डात्काण्डात्प्ररोहन्तीपरुषः परुषस्परि ॥ एवानोदूर्व्वेप्रतनुसहस्रेणशतेनच ॥ ७ ॥ सं० अ० १३ मं० २०

अश्वत्थैवेतिपञ्चपल्लवान् ॥ ॐअश्वत्थेवोनिषदनम्पर्णेवोव्वसतिष्कृता ॥ गोभा
जऽइत्किलासथयत्सनवथपूरुषम् ॥ ८ ॥ सं० अ० १२ मं० ७९ स्योनापृथिवीति
सप्तसृदः ॥ ॐस्योनापृथिविनोभवानृक्षरानिवेशनी ॥ यच्छानः शर्मसप्रथाः ॥ ९ ॥
सं० अ० ३६ मं० १३ गोमदूषुणेतिगोमयम् ॥ गायत्र्यागोमूत्रम् ॥ पयःपृथि
व्यामितिपयः ॥ दधिक्राव्णइतिदधि ॥ घृतमितिघृतं ॥ मधुवातेतिमधु ॥ अपा
ᳪरसेतिशर्कराम् ॥ इमम्मेगङ्गेतिगङ्गाजलम् ॥ पवित्रेस्थेतिपवित्रम् ॥ याःफलि
नीरितिफलम् ॥ परिवाजपतिरितिपञ्चरत्नम् ॥ ॐपरिवाजपतिः कविरग्निर्हव्या
न्यक्रमीत् ॥ दधद्रत्नानिदाशुषे ॥ १० ॥ सं० अ० ११ मं० २५ हिरण्यगर्भ
इतिहिरण्यम् ॥ ॐहिरण्यगर्भःसमवर्त्तताग्रेभूतस्यजातःपतिरेकऽआसीत् ॥ सदा

धारपृथिवीन्द्यामुतेमाङ्कस्मैदेवायंहविषांब्बिधेम ॥ ११ ॥ सं० अ० २३ मं० १
युवासुवासेतिवस्त्रम्॥ ॐयुवासुवासाःपरिवीतऽआगात्सऽउश्रेयान्भवतिजायमानः ॥
तन्धीरासःकवयऽउन्नयन्तिस्वाद्ध्योमनसादेवयन्तः ॥ १२ ॥ पूर्णादर्वीतिपूर्णपात्र
मुपरिन्न्यसेत्॥ ॐपूर्णादर्व्विपरांपतसुपूर्णापुनरापत ॥ ब्वष्णेवब्बिक्रीणावहाऽइषमूर्ज्ज
छंशतक्रतो ॥ १३ ॥ सं० अ० ३ मं० ४९ मनोजूतिरितिप्रतिष्ठाप्य ॥ ॐमनो
जूतिर्ज्जुषतामाज्ज्यस्यबृहस्प्पतिर्य्यज्ञमिमन्तनोत्त्वरिष्टंय्यज्ञछंसमिमन्दधातु॥ब्बिश्वे
देवासऽइहमादयन्तामों १प्रतिष्ठ ॥ सं० अ० २ मं० १३ एषवैप्रतिष्ठानामयज्ञोय
स्मैतेनयज्ञेनयजंतेनसर्व्वमेवप्रतिष्ठितम्भवतु ॥ गणपतयेनमःगणपतिमावाहयामि ॥
इतिकलशप्रतिष्ठा ॥ अथकलशोत्पतिःअथातःसम्प्रवक्ष्यामिकलशस्योद्भवोयथा ॥

उत्तरेहिमवत्पार्श्वेक्षीरोदोनामसागरः॥प्रारब्धंमन्थनन्तत्रदेवदानवपूर्वकैः॥दानवैर्बलि
मुख्यैश्चदेवैश्चेन्द्रपुरोगमैः मन्थानंमन्दरंकृत्वारज्जुंकृत्वातुवासुकिम् ॥ मूलेकूर्म्म
न्तुसंस्थाप्यविष्णुमाधारमुत्तमम् ॥ एकत्रदेवताःसर्वेएकतोबलिदानवाः॥मथ्य
मानेतदातस्मिन्क्षीरोदेनामसागरे ॥ उत्पन्नानिचरत्नानियानिवस्तूनिसर्वशः ॥
विमानंपुष्करन्तीर्थमुत्पन्नंहंसवाहनम् ॥ नागऐरावतश्चैवरम्भाद्यप्सरसस्तथा ॥
मणिकौस्तुभरत्नानिबालचन्द्रस्तथैवच ॥ नक्षत्राणिग्रहाःसर्वेकुण्डलानितथैवच ॥
गावःपुण्याःसमुद्भूतालक्ष्मीश्चवरवर्णिनी ॥ सुशीलासुभगाचैवगायत्रीचसरस्वती।
मृडानीमातरःसर्वाःसावित्रीसुरभीतथा ॥ उच्चैःश्रवाःसमुत्पन्नउत्पन्नममृतन्तथा ॥
एतान्संस्थाप्यचैकत्रपश्चाज्जातातुवारुणी ॥ भूमावमृतमीक्षन्तोदेवासुरगणास्तथा

ससृजुर्विश्वकर्माणःकलशङ्कामरूपिणम् ॥ कलाकलाभिर्देवानान्दानवानान्तथैवच ॥ निर्म्मितोयन्तदापूर्वैःकलशोमोक्षउच्यते ॥ तस्यमूलेस्थितोब्रह्मामद्ध्यदेशेजनार्द्दनः कण्ठदेशेस्थितोरुद्रःइन्द्रोग्निर्यमएवच ॥ आदित्यावसवोरुद्राःगणाःस्कन्दपुरोगमाः ॥ मातरःपितरश्चैवतथानन्दीगणाधिपः ॥ तस्यपार्श्वेस्थिताःसर्वेविषदन्ताभुजङ्गमाः ॥ वेदाःषडङ्गगायत्रीसावित्रीचसरस्वती ॥ कुक्षौचसागराःसप्तसप्तद्वीपावसुन्धरा ॥ अर्ज्जुनीगोमतीचैवचन्द्रभागासरस्वती ॥ कावेरीकृष्णवर्णाचगङ्गागोदावरीतथा ॥ सरयूश्चमहेन्द्रीचनर्म्मदाचमहानदी ॥ विन्ध्यपादसमुद्भूताःसर्वानद्योव्यवस्थिताः ॥ प्रभासंपुष्करन्तीर्थंनैमिषञ्चहिमालयम् ॥ वटेश्वरंविल्वमलंगङ्गासागरसङ्गमम्॥जलेश्वरमहातीर्थंतीर्थञ्चामरकण्टकम्॥केदारञ्चप्रयागञ्चत्रिवेणीकाशि

कातथा ॥ त्र्यम्बकञ्चकुरुक्षेत्रंसेतुबन्धस्तथैवच ॥ शालग्रामंसगोकर्णंरुद्रकुम्भम्पृ
थूदम् ॥ हरिश्चन्द्रम्परंगुह्यंमहाभैरवमेवच ॥ गयाचफल्गूतीर्थञ्चगुह्यङ्कनष्ठलं
तथा॥तानिसर्वाणिकुम्भेस्मिन्विशन्तुब्रह्मशासनात्॥सरितःसागराःसर्वेतीर्थानिजल
दानदाः ॥ पृथिव्यांयानितीर्थानिकलशेतानिनिक्षिपेत् ॥ अत्रशान्तिश्चपुष्टिश्च
गायत्रीतीर्थमुत्तमम्॥ऋग्वेदश्चयजुर्वेदःसामवेदस्तथैवच ॥ अथर्ववेदसंहिताःसर्वेते
क्षेमकारकाः ॥ आयान्तुकलशेह्यस्मिन्दुरितक्षयकारकाः ॥ कलशस्यमुखेविष्णुः
कण्ठेरुद्रःसमाश्रितः ॥ मूलेतस्यस्थितोब्रह्मामध्येमातृगणास्थिताः ॥ यत्फलङ्क
पिलादानेस्वर्णदानेनयत्फलम् ॥ तत्फलङ्कलशोत्पत्तिश्रवणाद्विन्दतेनरः ॥ कल
शोदकमंत्रेणयःकुर्य्यादभिषेचनम् ॥ सर्वान्कामानवाप्नोतिपुत्रपौत्रादिसंपदः ॥

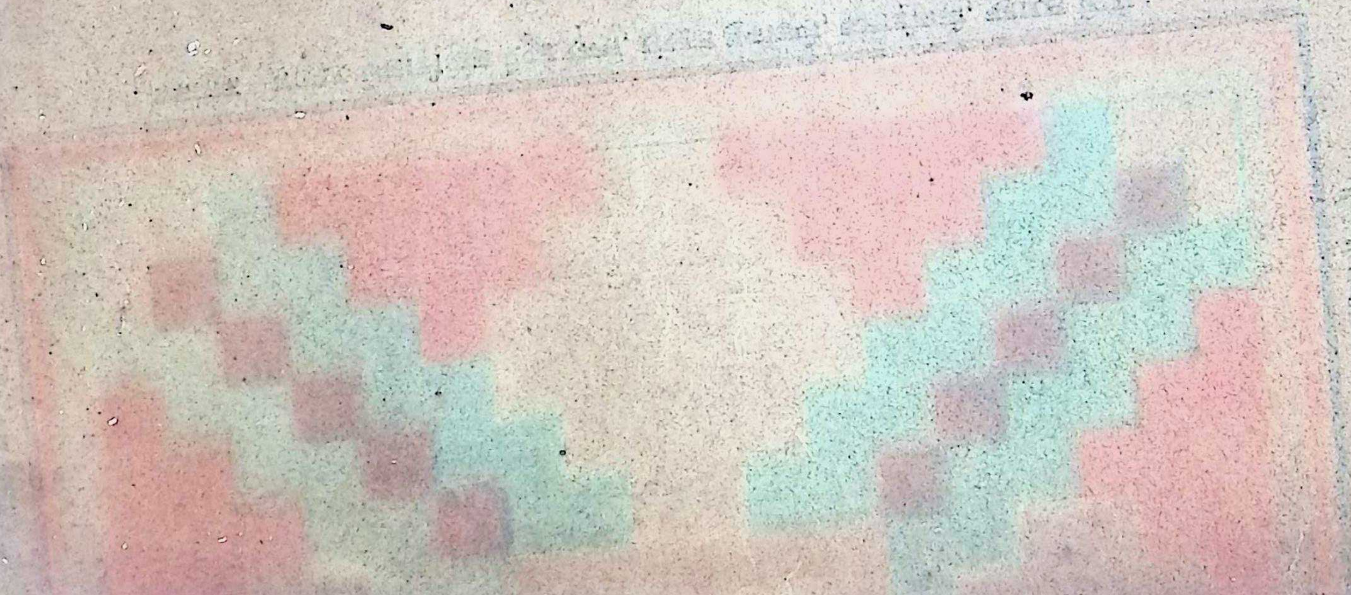

शी.

४४॥

ब्राह्मणोलभतेविद्यांपार्थिवोलभतेमहीं ॥ वैश्योपिलभतेचार्थंशूद्रःसुखमवाप्नुयात् ॥ वन्ध्याचलभतेगर्भम्पुत्रार्थीपुत्रमुत्तमम् ॥ पावमानेनमंत्रेणयःकुर्य्यादभिषेचनम् ॥ आयुरारोग्यमैश्वर्यंलभेत्कामन्तुपुष्कलम् ॥ आगच्छभगवन्कुम्भयज्ञेस्मिन्सन्निधौभव ॥ इतिकलशोत्पत्तिः ॥ ततःसंप्रार्थ्य ॥ देवदानवसंवादेमथ्यमानेमहोदधौ ॥ उत्पन्नोसितदाकुम्भविष्णुनाविधृतःस्वयम् ॥ त्वत्तोयेसर्वतीर्थानिदेवाःसर्वेत्वयिस्थिताः ॥ त्वयितिष्ठन्तिभूतानित्वयिप्राणाःप्रतिष्ठिताः ॥ आदित्यावसवोरुद्राविश्वेदेवाःसपैतृकाः ॥ त्वयितिष्ठन्तिसर्वेपिसर्वकामफलप्रदाः ॥ त्वत्प्रसादादिमंयज्ञङ्कर्तुमीहेजलोद्भव ॥ सान्निध्यंकुरुदेवेशप्रसन्नोभवसर्वदा ॥ इतिकलशंप्रार्थ्य ॥ ततःकलशेस्वस्तिकोपरिगणेशंसंपूज्य ॥ तत्रादौअमुकदेवप्रतिष्ठाङ्गत्वेनतान्निर्विघ्नतासिद्ध्यर्थंग

णेशाम्बिकयोःपूजनङ्करिष्येइतिसङ्कल्पः ॥ ततोध्यानम् ॥ श्वेताङ्गंश्वेतबस्त्रांसित
कुसुमगणैःपूजितंश्वेतगन्धैः क्षीराब्धौरत्नदीपैःसुरतरुबिमलेरत्नसिंहासनस्थं ॥
दोर्भिःपाशांकुशेष्टाभयधृतिबिषदंचन्द्रमौलिन्त्रिनेत्रंध्यायेशान्त्यर्थमीशङ्गणपतिममलं
श्रीसमेतम्प्रसन्नम्॥ १ ॥ॐभूर्भुवःस्वःसिद्धिबुद्धिसहितमहागणपतयेनमःध्यायामि ॥
हेहेरम्बत्वमेह्येहिअम्बिकात्र्यम्बकात्मज॥सिद्धिबुद्धिप्रदत्र्यक्षसर्वलोकार्थसिद्धिद॥१॥
नागास्यंनागहारंत्वाङ्गणराजचतुर्भुजम् ॥ भूषितंस्वायुधैर्दिव्यैःपाशांकुशपरश्वधैः
॥२॥आवाहयामिपूजार्थंरक्षार्थञ्चमहाक्रतोः॥इहागत्यगृहाणत्वंपूजांरक्षचमेक्रतुं ॥३॥
ॐगणानान्त्वागणपतिछंहवामहेप्प्रियाणान्त्वाप्प्रियपतिछंहवामहेनिधीनान्त्वानिधि
पतिछंहवामहेव्वसोमम ॥ आहमजानिगर्भधमात्वमजासिगर्भधम् ॥ १ ॥

सं० अ० २३ मं० १९ ॐभूर्भुवःस्वःसिद्धिबुद्धिसहितमहागणपतयेनमःगणपतिमावाहयामि ॥ रम्यंसुशोभनंदिव्यंसर्वसौख्यकरंशुभम् ॥ आसनञ्चमयादत्तंगृहाणपरमेश्वर ॥ २ ॥ ॐवर्ष्मोस्मिसमानानामुद्यतामिवसूर्यः ॥ इमन्तमभितिष्ठामियोमाकश्चाभिदासति ॥ २ ॥ ॐभूर्भुवःस्वःसिद्धिबुद्धिसहितमहागणपतयेनमःआसनंसमर्पयामि ॥ उष्णोदकन्निर्मलञ्चसर्वसौगन्ध्यसंयुतम् ॥ पादप्रक्षालनार्थायदत्तन्तेप्रतिगृह्यताम् ॥ ३ ॥ ॐए॒तावा॑नस्यमहि॒मातो॒ज्यायाँश्च॒पूरु॑षः॥ पादो॑स्य॒विश्वा॑भू॒तानि॑त्रि॒पाद॑स्या॒मृतं॑दि॒वि ॥ ४ सं० अ० ३१ मं० ३ ॐभूर्भुवः स्वःसि० महागणपतयेनमःपाद्यंसमर्पयामि ॥ ताम्रपात्रेस्थितन्तोयंगन्धपुष्पफलान्वितम् ॥ सहिरण्यंददाम्यर्घंगृहाणपरमेश्वर ॥ धाम॑न्ते॒विश्व॒म्भुव॑न॒मधि॑श्रि॒तम॒न्तः

समुद्रेहृद्यन्तरायुषि॥अपामनीकेसमिथेयऽआभृतस्तमश्याममधुमन्तन्तऽऊर्म्मिम् ॥
॥ ५ ॥ सं० अ० १७ मं० ९९ ॐभू० सि० म० अर्घंसमर्पयामि ॥ सर्वतीर्थ
समायुक्तंसुगन्धिनिर्म्मलञ्जलम् ॥ आचमनार्थंमयादत्तंगृहाणपरमेश्वर ॥ ॐइम
म्मेंव्वरुणश्श्रुधीहवमद्याचमृडय॥त्वामवस्युराचके ॥ ६ ॥ सं० अ० २१ मं० १
ॐभू०सि०म० आचमनंसमर्पयामि ॥ पञ्चामृतस्नानम् ॥ कामधेनुसमुद्भूतंसव
र्षाञ्जीवनम्परम् ॥ पावनंयज्ञहेतुश्चपयःस्नानार्थमर्पितम् ॥ ॐपयं÷पृथिव्व्या
म्पयऽओषधीषुपयोदिव्व्यन्तरिक्षेपयोधाः ॥ पयंस्वतीःप्रदिशं÷सन्तुमह्यम्॥ ७ ॥
सं० अ० १८ मं० ३६ ॐभू०सि०म०पयःस्नानंसमर्पयामि ॥ पयःस्नानान्तेशु
द्धोदकस्नानंसमर्पयामि ॥ पयसस्तुसमुद्भूतंमधुराम्लंशशिप्रभं ॥ दध्यानीतंमया

देवस्नानार्थंप्रतिगृह्यताम् ॥ ॐदधिक्राव्ण्णोऽअकारिषञ्जिष्ष्णोरश्वस्यव्वाजिनः ॥ सुरभिनोमुखाकरत्प्रणऽआयूंष्षितारिषत् ॥ ८ ॥ सं० अ० २३ मं० ३२ ॐभू०सि०म०दधिस्नानंसमर्पयामि ॥ ततःशुद्धोदकम् ॥ नवनीतसमुत्पन्नंसर्वसन्तोषकारकम् ॥ घृतन्तुभ्यम्प्रदास्यामिस्नानार्थंप्रतिगृह्यताम् ॥ ॐघृतम्मिमिक्षे घृतमस्ययोनिर्घृतेश्रितोघृतम्म्वस्यधाम ॥ अनुष्ष्वधमावहमादयस्वस्वाहाकृतम्व्वृषभव्वाक्षिहव्यम् ॥ ९ ॥ सं० अ० १७ मं० ८८ ॐभू०सि०म०घृतस्नानंसमर्पयामि ॥ घृ०शुद्धोदकम् ॥ तरुपुष्पसमुद्भूतंसुस्वादुमधुरंमधु ॥ तेजःपुष्टिकरन्दिव्यंस्नानार्थंप्रतिगृह्यताम् ॥ ॐमधुव्वाताऽऋतायतेमधुक्षरन्तिसिन्धवः ॥ माद्ध्वीर्न्नः सन्त्वोषधीः ॥ १० ॥ सं० अ० १३ मं० २७मधुनक्तमुतोषसोमधुमत्पार्थिवꣳ

रजः ॥ मधुद्यौरस्तुनःपिता ॥ ११ ॥ सं० अ० १३ मं० २८ ॐमधुमान्नोव्व
नस्पतिर्म्मधुमाँ ॥ २ ॥ ऽअस्तुसूर्य्यः । माद्ध्वीर्ग्गावोभवन्तुनः ॥ १२ ॥ सं०
अ० १३ मं० २९ ॐभू० सि० म० मधुस्नानंसमर्पयामि ॥ म० शुद्धोदकम् ॥ इक्षु
सारसमुद्भूताशर्करापुष्टिकारिका ॥ मलापहारिकादिव्यास्नानार्थंप्रतिगृह्यताम् ॥
ॐअपाꣳरसमुद्वयसꣳसूर्य्येसन्तꣳसमाहितम् ॥ अपाꣳरसस्ययोरसस्तम्वोगृह्णा
म्म्युत्तममुपयामगृहीतोसीन्द्रायत्वाजुष्टंगृह्णाम्म्येषतेयोनिरिन्द्रायत्वाजुष्टतमम् ॥ १४ ॥
सं० अ० ९ मं० ३ ॐभू० सि० म० शर्करास्नानंसमर्पयामि ॥ स्नानान्तेशुद्धोदकम् ॥
नानासुगन्धद्रव्यञ्चचन्दनंरजनीयुतम् ॥ उद्वर्त्तनंमयादत्तंगृहाणपरमेश्वर ॥ ॐग
न्धर्व्वस्त्वांविश्वावसुःपरिदधातुव्विश्वस्यारिष्ट्यैयजमानस्यपरिधिरस्यग्निरिडऽ

ईंडि॒त॰॥इत्यर्द्धचैन ॥ १५ ॥ भू॰सि॰म॰उद्वर्त्तनस्नानंसमर्पयामि ॥ उद्वर्त्तनस्नाना
न्तेशुद्धोदकम् ॥ कावेरीनर्म्मदावेणीतुङ्गभद्रासरस्वती ॥ गङ्गाचयमुनातोयंमया
स्नानार्थमर्पितम् ॐआपो॒हिष्ठाम॑यो॒भुव॒स्तान॑ऽऊ॒र्ज्जेद॑धातन ॥ म॒हेरणा॑य॒चक्ष॑से
॥ १६ ॥ ॐयोव॑÷शि॒वत॑मो॒रस॒स्तस्य॑भाजयते॒हन॑÷ ॥ उ॒श॒तीरि॑वमा॒तर॑÷ ॥ १७ ॥
सं॰ अ॰ ३६ मं॰ १५ तस्मा॒ऽअर॑ङ्गमामवो॒यस्य॒क्षया॑य॒जिन्व॑थ । । आपो॑ज॒नय
थाचन; ॥ १८ ॥ सं॰ अ॰ ३६ मं॰ १६ ॐभू॰सि॰म॰ शुद्धोदकस्नानमभिषेच
नंसमर्पयामि ॥ ॐशान्तिःशान्तिःसुशान्तिर्भवतु ॥ ॐभू॰ सि॰ म॰ स्नानान्ते
आचमनंसमर्पयामि ॥ सर्वभूषादिमेसौम्येलोकलज्जानिवारणे ॥ मयोपपादितेतु
भ्यंवाससीप्रतिगृह्यताम् ॥ ॐयुवासुवासाःपरिवीतऽआगात्सऽउश्रेयान्भवतिजायमा

नः ॥ तन्धीरासःकवयऽउन्नयन्तिस्वाध्योमनसादेवयन्तः ॥ १९ ॥ ॐभू०सि०
म० वस्त्रंसमर्पयामि ॥ नवभिस्तन्तुभिर्युक्तंत्रिगुणन्देवतामयम् ॥ उपवीतंमयादत्तं
गृहाणपरमेश्वर॥ॐयज्ञोपवीतंपरमंपवित्रंप्रजापतेर्यत्सहजम्पुरस्तात् ॥ आयुष्यम
ग्र्यम्प्रतिमुञ्च शुभ्रंयज्ञोपवीतंबलमस्तुतेजः ॥ २०॥ ॐभू०सि०म०यज्ञोपवीतंसम
र्पयामि ॥ आचमनम् ॥ श्रीखण्डचन्दनंदिव्यङ्केशरादिसमन्वितम् ॥ विलेपनंसुर
श्रेष्ठचन्दनम्प्रतिगृह्यताम् ॥ ॐअꣳशुनातेऽअꣳशुः पृच्यताम्परुषापरुः ॥ गन्ध
स्तेसोमंमवतुमदायरसोऽअच्युतः ॥ २१ ॥ सं० अ० २० म० २७ ॐभू०सि०म०
चन्दनंसमर्पयामि ॥ अक्षताँश्चसुरश्रेष्ठकुंकुमाक्तान्सुशोभितान् ॥ मयानिवेदितान्
भक्त्यागृहाणपरमेश्वर ॥ ॐअक्षन्नमीमदन्तह्यवप्रियाऽअधूषत॥ अस्तोषतस्वभान

वो॒ब्बिप्पृनविष्ठयाम॒तीयोजा॒न्न्विन्द्र॒तेहरी ॥ २२ ॥ सं० अ० ३ मं० ५१ ॐभू०सि०मं० अक्षतान्समर्पयामि ॥ सुमाल्यानिसुगन्धीनिमालत्यादीनिवैप्रभो ॥ मयाहृतानिपूजार्थंपुष्पाणिप्रतिगृह्यताम् ॥ ॐओषधीःप्प्रतिमोदद्ध्व॒म्पुष्पवतीःप्प्रसूवरीः ॥ अश्वाऽइवस॒जित्त्वरीर्ब्बी॒रुधः÷पारयि॒ष्ण्वः÷ ॥ २३ ॥ ॐ सं० अ० १२ मं० ७७ ॐ०भू०सि०म०पुष्पाणिसमर्पयामि ॥ दूर्वाङ्कुरान्सुहरितान्सम्भृतान्मङ्गलप्रदान् ॥ आनीताँस्तवपूजार्थंगृहाणगणनायक ॥ १ ॥ ॐकाण्डात्काण्डात्प्ररोहन्ती॒परुषःपरु॒षस्प्परि ॥ ए॒वानोदूर्ब्बे॒प्प्रतनुस॒हस्रेणश॒तेनच ॥ २४ ॥ सं० अ० १३ मं० २ ॐभू०सि०म०दूर्वाङ्कुरान्समर्पयामि ॥ हरिद्राकुंकुमञ्चैवसिन्दूरादिसमन्वितम् ॥ सौभाग्यद्रव्यसंयुक्तंगृहाणपरमेश्वर ॥ सुगन्धौषधिचूर्णञ्चनानापरिमलानिच ॥ नाना

सुगन्धितैलानिअतःशान्तिंप्रयच्छमे ॥ ॐअहिरिवभोगैःपर्य्येतिबाहुञ्ज्यायाहेतिम्परि
बाधमानः ॥ हस्तघ्नोब्विश्वाब्वयुनानिब्विद्वान्पुमान्पुमांछंसम्परिपातुब्विश्श्वतः
॥ २५ ॥ सं० अ० २९ मं० ५१ ॐभू०सि०म०नानापरिमलद्रव्याणिसमर्पयामि ॥
बनस्पतिरसोद्भूतोगन्धाढ्योगन्धउत्तमः ॥ आघ्रेयःसर्वदेवानान्धूपोयम्प्रतिगृह्यताम् ॥
ॐधूरसिधूर्व्वधूर्वन्तधूर्व्वतय्योस्म्मान्धूर्व्वतितन्धूर्व्वयम्बयन्धूर्वामः ॥ देवानामसिब्वह्नि
तमछंसस्नितमम्पप्रितमञ्जुष्टतमन्देवहूतमम् ॥ २६ ॥ सं० अ० १ मं० ८ ॐभू०
सि०म० धूपंसमर्पयामि ॥ आज्यंचवर्त्तिसंयुक्तंवन्हिनायोजितंमया ॥ दीपंगृहाणदेवे
शत्रैलोक्यतिमिरापहम् ॥ १ ॥ अग्निर्ज्ज्योतिर्ज्ज्योतिरग्निःस्वाहासूर्य्योज्ज्योति
र्ज्ज्योतिःसूर्य्यःस्वाहा ॥ अग्निर्व्वर्च्चोज्ज्योतिर्व्वर्च्चःस्वाहासूर्य्योव्वर्च्चोज्ज्योतिर्व्व

च्चंः स्वाहाज्ज्योतिःसूर्य्यःसूर्य्योज्ज्योतिःस्वाहा ॥२७॥सं०अ०३मं०९ॐभू०सि०म०दीपं दर्शयामि ॥ शर्कराघृतसंयुक्तंमधुरंस्वादुसंयुतं ॥ उपहारसमायुक्तंनैवेद्यम्प्रतिगृह्यताम् ॥ १ ॥ ॐयेदेवासोदिव्येकादशस्त्थपृथिव्व्यामद्ध्येकादशस्त्थ ॥ अप्सुक्षितोमहिनैकादशस्त्थतेदेवासोयज्ञमिमञ्जुषद्ध्वम् ॥ २८ ॥ सं० अ० ७ मं० १९ ॐ भू० सि० म० नैवेद्यंनिवेदयामि ॥ ॐभू०सि०म० पानीयंसमर्पयामि ॥ ॐभू०सि०म० उत्तरापोशनंसमर्पयामि ॥ ॐभू० सि० म० हस्तप्रक्षालनंसमर्पयामि ॥ ॐभू०सि० म० मुखप्रक्षालनंसमर्पयामि ॥ ॐभू० सि० म० चन्दनेनकरोद्वर्त्तनंसमर्पयामि ॥ इदंफलंमयादेवस्थापितम्पुरतस्तव ॥ तेनमेसफलावाप्तिर्भवेज्जन्मनिजन्मनि ॥ १ ॥ ॐयाःफलिनीर्य्याऽअफलाऽअपुष्पायाश्चपुष्पिणीः ॥ बृहस्प्पतिप्प्रसूतास्तानोमुञ्च

न्त्वꣳहंसः ॥ २९ ॥ सं० अ० १२ मं० ८९ ॐभू० सि० मं० फलंसमर्पयामि ॥
पूगीफलंमहद्दिव्यंनागवल्लीदलैर्युतं ॥ एलादिचूर्णसंयुक्तंताम्बूलम्प्रतिगृह्यताम् ॥
ॐयत्पुरुषेणहविषादेवायज्ञमतन्न्वत ॥ ब्बसन्तोस्यासीदाज्यङ्ग्रीष्मऽइध्मःशरद्धवि
॥ ३० ॥ सं० अ० ३१ मं० १४ ॥ भू० सि० मं० ताम्बूलंसमर्पयामि ॥ हिरण्यगर्भ
गर्भस्थंहेमबीजंविभावसोः ॥ अनन्तपुण्यफलदमतःशान्तिम्प्रयच्छमे ॥ ॐहिर
ण्यगर्भःसमवर्त्तताग्ग्रेभूतस्यजातःपतिरेकऽआसीत् ॥ सदाधारपृथिवीन्द्यामुतेमाङ्क
स्मैदेवायहविषाब्बिधेम ॥ ३१ ॥ सं० अ० २३ मं० १ ॐभू० सि० म० दक्षिणा
द्रव्यंसमर्पयामि ॥ कदलीगर्भसम्भूतंकर्पूरञ्चप्रदीपितम् ॥ आरार्त्तिकमहङ्कुर्वे
पश्यमेवरदोभव ॥ १ ॥ ॐइदꣳहविःप्रजननम्मेऽअस्तुदशवीरꣳसर्वगणꣳस्वस्त

ये ॥ आत्मसनिप्प्रजासनिपशुसनिलोकसन्न्यंभयसनि ॥ अग्निःप्प्रजाम्बहुलाम्मेंकरोत्त्वन्नम्पयोरेतोऽअस्मासुधत्त ॥ ३२ ॥ सं० अ० १९ मं० ४८ ॐभूर्भुवः स्वःसिद्धिबुद्धिसहितमहागणपतयेनमःकर्पूरनीराजनंसमर्पयामि ॥ नानासुगन्धपुष्पाणियथाकालोद्भवानिच ॥ पुष्पाञ्जलिर्म्मयादत्तोगृहाणपरमेश्वर ॥ ॐयज्ञेनयज्ञमयजन्तदेवास्तानिधर्म्माणिप्प्रथमान्न्यासन् ॥ तेहनाकम्महिमान÷सचन्तयत्रपूर्व्वेसाध्याःसन्तिदेवाः ॥ ३३ ॥ सं० अ० ३१ मं० १६ ॐभू० सि० म० पुष्पाञ्जलिंसमर्पयामि ॥ यानिकानिचपापानिज्ञाताज्ञातकृतानिच ॥ तानिसर्वाणिनश्यन्तिप्रदक्षिणपदेपदे ॥ १ ॥ ॐसप्तास्यासन्परिधयस्त्रिःसप्तसमिध÷कृताः ॥ देवायद्यज्ञन्तन्वानाऽअबध्नन्पुरुषम्पशुम् ॥ ३४ ॥ सं० अ० ३१ मं० १५ ॐभू० सि० म०

प्रदक्षिणांसमर्पयामि ॥ अथविशेषार्घः ॥ ताम्रपात्रेरक्तचन्दनपुष्पाक्षतानियोजयेत् ॥
रक्षरक्षगणाद्ध्यक्षरक्षत्रैलोक्यरक्षक ॥ भक्तानामभयङ्कर्त्तात्राताभवभवार्णवात् ॥ १ ॥
द्वैमातुरकृपासिन्धोषारामातुराग्रजप्रभो ॥ वरदत्वंवरन्देहिवाञ्छितंवाञ्छितार्थद ॥
अनेनसफलार्घेणफलदोस्तुसदामम ॥ ॐ भू॰ सि॰ म॰ विशेषार्घंसमर्पयामि ॥ प्रार्थना ॥ विघ्नेश्वरायवरदायसुरप्रियायलम्बोदरायसकलायजगद्धिताय ॥ नागाननायश्रुतियज्ञविभूषितायगौरीसुतायगणनाथनमोनमस्ते १ भक्तार्त्तिनाशनपरायगणेश्वरायसर्वेश्वरायशुभदायसुरेश्वराय ॥ विद्याधरायविकटायचवामनायभक्तप्रसन्नवरदायनमोनमस्ते ॥ २ ॥ नमस्तेब्रह्मरूपायविष्णुरूपायतेनमः ॥ नमस्तेरुद्ररूपायकरिरूपायतेनमः ॥ विश्वरूपस्वरूपायनमस्तेब्रह्मचारिणे ॥ भक्तप्रियायदेवायनमस्तु

भ्यम्बिनायक ॥ ४ ॥ लम्बोदरनमस्तुभ्यंसततंमोदकप्रिय। । निर्विघ्नङ्कुरुमेदेवसर्वकार्येषुसर्वदा ॥ ५ ॥ त्वाम्बिघ्नशत्रुदलनेतिचसुन्दरेतिभक्तप्रियेतिसुखदेतिवरप्रदेति ॥ विद्याप्रदेत्यघहरेतिचयेस्तुवन्तितेभ्योगणेशवरदोभवनित्यमेव ॥ ६ ॥ इतिगणपतिपूजनम् ॥ अथगौरीपूजनम् ॥ ॐगौरीर्मिममायसलिलानितच्छत्येकपदीद्विपदीसाचतुष्पदीमष्टापदीनवपदीवभूवुसीसहस्राक्षरापरमेव्योमन् ॥ ॐभूर्भुवःस्वःगौर्य्यैश्रियैनमःश्रियमावाहयामि ॥ गन्धादीनिसमर्पयामिश्रियैनमः ॥ अनेनगणेशाम्बिकेप्रीयेताम् ॥ कलशेवरुणायनमःवरुणमावाहयामि ॥ ॐव्वरुणस्योत्तम्भनमसिव्वरुणस्यस्कम्भसर्ज्जनीस्त्थोव्वरुणस्यऽऋतसदन्न्यसिव्वरुणस्यऽऋतसदनमसिव्वरुणस्यऽऋतसदनमासीद ॥ ३५ ॥ स० अ० ४ मं० ३६ इतिमंत्रेणवरुणङ्गंधादि

भिःसम्पूज्य ॥ अथपुण्याहवाचनम् ॥ व्यासः ॥ सम्पूज्यगन्धमाल्याद्यैर्ब्राह्मणान्स्व
स्तिवाचयेत् ॥ धर्म्मकर्म्मणिमाङ्गल्येसङ्ग्रामाद्भुतदर्शने ॥ यमः ॥ सोङ्कारंब्रा
ह्मणेकुर्यान्निरोङ्कारम्महीपतौ ॥ उपांशुचाप्यथोवैश्येस्वस्तिशूद्रेप्रकीर्त्तयेत् ॥ २ ॥ आ
चम्यप्राणानायम्यकर्त्तासुमुखश्चेत्यादिपठित्वा ॥ देशकालौसङ्कीर्त्य ॥ करिष्यमाणा
मुकदेवप्रतिष्ठाङ्गत्वेनविहितंस्वस्तिपुण्याहवाचनङ्करिष्ये ॥ ततःस्वाग्रेधान्यराशिद्वये
दानखण्डोक्तविधिनाकलशौसंस्थाप्य ॥ तत्रदूर्वापञ्चरत्नादितत्तन्मन्त्रैःक्षिप्त्वा ॥ धा
न्यपूर्णपात्रद्वयंकलशोपरिन्यसेत् ॥ उपरिकुङ्कुमस्वस्तिकयुतनारिकेलंनिधाय ॥
महीद्यौरितिभूमिंस्पृष्ट्वा ॥ ॐओषधयःसमितियवान्कलशाधस्तलेक्षिप्त्वा ॥
ओंआजिघ्रामितिकलशंस्थापयेत् ॥ ॐवरुणस्योत्तम्भनमितिजलम्पूरयेत् ॥ ॐअ

ꣳशुनातइतिगन्धम्प्रक्षिपेत् ॥ ॐयाऽओषधीरितिसर्वौषधीः ॥ ॐकाण्डात्काण्डादितिदूर्वाम् ॥ ॐअश्वत्थेवेतिपञ्चपल्लवान् ॥ ॐस्योनापृथिवीतिसप्तमृदः ॥ ॐयाः फलिनीरितिफलम् ॥ ॐपरिवाजपतिरितिपंचरत्नानि ॥ पयःपृथिव्येतिदुग्धं ॥ ॐदधिक्राव्णोतिदधि ॥ ॐगोमदूषुणेतिगोमयं ॥ ॐगायत्र्यागोमूत्रम् ॥ ॐघृतमिति घृतं ॥ ॐमधुव्वातेतिमधु । ॐअपाꣳरसेतिशर्कराम् ॥ ॐदेवस्यत्वेतिकुशोदकम् ॥ ॐइमंमेगङ्गेतिगङ्गाजलम् ॥ ॐहिरण्यगर्भेतिहिरण्यम् ॥ युवासुवासेतिवस्त्रम् ॥ पूर्णादर्वीतिपूर्णपात्रमुपरिन्यसेत् ॥ ॐतत्वायामीतिवरुणमावाह्य ॥ ॐभूर्भुवःस्वःअपाम्पतिंवरुणंसाङ्गंसपरिवारमावाहयामि ॥ मनोजूतिरितिप्रतिष्ठाप्य ॥ ॐमनोजूतिर्ज्जुषता॒माज्ज्यस्य॒बृह॒स्पतिर्य्य॒ज्ञमि॒मन्तनो॒त्वरिष्टंय्य॒ज्ञꣳसमि॒मन्दधातु ॥

ब्बिश्वेदेवासऽइहमादयन्तामो१म्प्रतिष्ठ ॥ सं० अ० २ मं० १३ एषवैप्रतिष्ठानामयज्ञो
यत्रैतेनयज्ञेनयजन्तेनसर्वमेवप्रतिष्ठितम्भवतु ॥ ॐभूर्भुवःस्वःअपाम्पतिवरुणायनमः
इतिमन्त्रेणषोडशोपचारैःसम्पूजयेत् ॥ ततोगङ्गाद्यावाहनम् ॥ सर्वेसमुद्राःसरित
स्तीर्थानिजलदानदाः ॥ आयान्तुममशान्त्यर्थंदुरितक्षयकारकाः ॥ ततःकलशाभि
मन्त्रणं ॥ कलशस्यमुखेविष्णुःकण्ठेरुद्रःसमाश्रितः ॥ मूलेतस्यस्थितोब्रह्मामध्येमातृग
णाःस्मृताः ॥ कुक्षौतुसागराःसप्तसप्तद्वीपावसुन्धरा ॥ ऋग्वेदोथयजुर्वेदःसामवेदोह्यथ
र्वणः ॥ अङ्गैश्चसहिताःसर्वेकलशन्तुसमाश्रिताः ॥ ३ ॥ प्रार्थना ॥ देवदानवस
म्बादेमथ्यमानेमहोदधौ ॥ उत्पन्नोऽसितदाकुम्भविधृतोविष्णुनास्वयम् ॥ १ ॥ त्वत्तो
येसर्वतीर्थानिदेवाःसर्वेत्वयिस्थिताः ॥ त्वयितिष्ठन्तिभूतानित्वयिप्राणाःप्रतिष्ठिताः ॥२॥

शिवःस्वयंत्वमेवासिविष्णुस्त्वञ्चप्रजापतिः ॥ आदित्यावसवोरुद्राविश्वेदेवाःसपैतृकाः॥ त्वयितिष्ठन्तिसर्वेंपियतःकामफलप्रदाः ॥ त्वत्प्रसादादिमंयज्ञङ्कर्त्तुमीहेजलोद्भव ॥ सान्निद्ध्यङ्कुरुमेदेवप्रसन्नोभवसर्वदा ॥ ५ ॥ नमोनमस्तेस्फटिकप्रभायसुश्वेतहाराय सुमङ्गलाय ॥ सुपाशहस्तायझषासनायजलाधिनाथायनमोनमस्ते ॥ ६ ॥ पाशपाणे नमस्तुभ्यंपद्मिनीजीवनायक ॥ पुण्याहवाचनंयावत्तावत्त्वंसन्निधौभव ॥ ७ ॥ इति प्रार्थना ॥ मातृदेवोभव ॥ आचार्य्यदेवोभव । पितृदेवोभव ॥ अतिथिदेवोभव ॥ इत्याशिषःप्रार्थयेत् ॥ एताःसत्याआशिषःसन्तु ॥ अथपुण्याहवाचनम् ॥ अवनीकृतजानुमण्डलःकमलमुकुलसदृशमञ्जलिंशिरस्याधायानन्तरंदक्षिणेनपाणिनास्वर्णपूर्णकलशन्धारयित्वा ॥ दीर्घानागानद्योगिरयस्त्रीणिविष्णुपदानिच ॥ ॐत्रीणिपदा

व्विचक्रमेव्विष्णुर्ग्गोपाऽअदाब्भ्यः ॥ अतोधर्म्माणिधारयन् ॥ १ ॥ सं॰ अ॰ ३४ मं॰ ४३ तेनायुःप्रमाणेनपुण्यम्पुण्याहंदीर्घमायुरस्त्वितिभवन्तोब्रुवन्तुयजमानः ॥ पुण्यम्पुण्याहंदीर्घमायुरस्त्वितिद्विजाः ॥ एवंसर्वत्रयजमानवचनोत्तरंब्राह्मणाःप्रतिवचनन्दद्युः ॥ ब्राह्मणानांहस्तेषुसुप्रोक्षितमस्तु ॥ अपांमद्ध्येस्थितादेवाःसर्वमप्सुप्रतिष्ठितम् ॥ ब्राह्मणानाङ्करेन्यस्ताःशिवाआपोभवन्तुते ॥ शिवाआपःसन्तु ॥ ॐसन्तुशिवाआपः ॥ लक्ष्मीर्वसतिपुष्पेषुलक्ष्मीर्वसतिपुष्करे ॥ सामेवसतुवैनित्यंसौमनस्यन्तथास्तुनः ॥ २ ॥ सौमनस्यमस्तु ॥ ॐअस्तुसौमनस्यं ॥ अक्षतञ्चास्तुमेपुण्यंदीर्घमायुर्यशोवलम् ॥ यद्यच्छ्रेयस्करन्लोकेतत्तदस्तुसदामम ॥ ३ ॥ अक्षतञ्चारिष्टञ्चास्तु ॥ ॐअस्त्वक्षतमरिष्टञ्च ॥ अत्रगन्धाःपान्त्वितियजमानः सुमङ्गल्यञ्चास्त्वितिविप्रइत्यपिकेचित्तत्र

मूलंमृग्यम् ॥ गन्धाःपान्तुसुमङ्गल्यञ्चास्तु ॥ एवंसर्वत्र ॥ अक्षताःपान्तुआयुष्यमस्त्वतिभ० ॥ ॐअक्षताःपान्तुआयुष्यमस्तु ॥ पुष्पाणिपान्तुसौश्रियमस्त्वतिभ० ॥ ॐपुष्पाणिपान्तुसौश्रियमस्तु ॥ ताम्बूलानिपान्तुऐश्वर्यमस्त्वतिभ०॥ॐताम्बूलानिपान्तुऐश्वर्यमस्तु ॥ दक्षिणाःपान्तुबहुधनमस्त्वतिभ०॥ ॐदक्षिणाःपान्तुबहुधनमस्तु ॥ पुनरर्घ्याःपान्तुस्वर्चितमस्त्वतिभ० ॥ पुनरर्चाःपान्तुस्वार्चितमस्तु ॥ यजमानआचार्यादीन्प्रणम्य ॥ श्रीर्यशोविद्याविनयोवित्तम्बहुपुत्रञ्चायुष्यञ्चास्त्वतिभवन्तोब्रुवन्तु ॥ इतिवदेत् ॥ तेचश्रीर्यशोविद्याविनयोवित्तंबहुपुत्रञ्चास्तुइत्युक्तादीर्घमायुः ॥ शान्तिः ॥ पुष्टिस्तुष्टिश्चास्त्वतियजमानंमूर्द्ध्निनिषिञ्चेयुः ॥ यङ्कृत्वा सर्ववेदयज्ञक्रियाकर्म्मारम्भाःशुभाःशोभनाःप्रवर्त्तन्ते ॥ तमहमोङ्कारमादिङ्कृत्वाऋ

ग्यजुसामाथर्वणाशीर्वचनंबहुऋषिमतंसमनुज्ञातंभवद्भिरनुज्ञातः पुण्यंपुण्याहंवाचयिष्ये ॥ वाच्यताम् ॥ ब्राह्मणानांहस्तेअक्षतान्दद्यात् ॥ ॐभद्रङ्कर्णेभिःशृणुयामदेवाभद्रम्पश्येमाक्षभिर्यजत्राः ॥ स्थिरैरङ्गैस्तुष्टुवाँसस्तनूभिर्व्यसेमदेवहितय्यदायुः १॥ ॐद्रविणोदाद्द्रविणशस्तुरस्यद्रविणोदाःसनरस्यप्रयंसत् ॥ द्रविणोदावीरवतीमिषन्नोद्रविणोदारासतेदीर्घमायुः ॥ २ ॥ सवितापश्चात्तात्सवितापुरस्तात्सवितोत्तरात्तात्सविताधरात्तात् ॥ ॐसवितानःसुवतुसर्वतातिंसवितानोरासतान्दीर्घमायुः ॥ ३ ॥ ॐनवोनवोभवतिजायमानोह्नाङ्केतुरुषसामेत्यग्रम् ॥ भागन्देवेभ्योविदधात्यायन्प्रचन्द्रमास्तिरतेदीर्घमायुः ॥ ४ ॥ ॐउच्चादिविदक्षिणावन्तोऽअस्थुर्य्येऽअश्वदाःसहतेसूर्येण ॥ हिरण्यदाऽअमृतत्वम्भजन्तेवासोदाःसोमप्रतिरन्तऽआयुः ॥ ५ ॥ इत्यृग्वेदः ॥ अथयजुः ॥ ॐद्रविणोदाःपिपीषतिजुहोतप्रचति

छत ॥ नेष्ट्रादृतुभिरिष्यत ॥ १ ॥ सं० अ० २६ मं० २२ ॐसवितात्वासवानां
छंसुवतामग्निर्गृहपतीनाꣳसोमोव्वनस्पतीनाम् ॥ बृहस्पतिर्व्वाचऽइन्द्रोज्ज्यैष्ठ्या
यरुद्र;पशुभ्योमित्रꣳसत्योव्वरुणोधर्म्मपतीनाम् ॥ २ ॥ सं० अ० ९ मं० ३९
ॐनतद्रक्षांꣳसिनपिशाचास्तरन्तिदेवानामोज÷प्रथमजꣳह्येतत् ॥ योबिभर्त्तिदा
क्षायणꣳहिरण्यꣳसदेवेषुकृणुतेदीर्ग्घमायु;समनुष्येषुकृणुतेदीर्ग्घमायु÷ ॥ ३ ॥
सं० अ० ३४ मं० ५१ ॐउच्चातेजातमन्धसोदिविसद्भूम्म्याददे ॥ उग्रꣳशर्म्म
महिश्रव÷ ॥ ४ ॥ सं० अ० २६ मं० १६ ॥ इतियजुर्वेदः ॥ अथसाम० ॥
ॐदेवोवोद्रविणोदाःपूर्णाम्बिवष्ट्वासिचम् उद्वासिञ्चध्वमुपवापृणध्वमादिद्वोदेवओह
ते १ सा० छं० अ० १ प्र० १६ मं० १ ॥ १ ॥ ॐदेवतावाचन्नयन्तꣳशोऽष्टौ

वसवएकादशरुद्राद्वादशादित्याप्रजापतिश्चवषट्कारश्चत्रयस्त्रिꣳशोसदेवेनयज्ञेनयज
तेयएवंवेद॥२॥ॐअद्यनोदेवसवितःप्रजावत्सावीःसौभगम् ॥ परादुष्वंप्न्यꣳसुव ३
सा० छ० अ० १ प्र० २ द० ५ मं० ७ चन्द्रमाआउवाशुवातारउवा ॥ सुपर्णोधा
उवावतेदिवि ॥ नमोहिराउवाप्यनायिमायाउवापदंबिन्दाउवातिविद्युताःवित्तंमाआ
उवास्यरोंदा २।३ सा ३।४।३ पिऊ २।३।४।५।इडा ३ उच्चाता ३ पिजातमधसाःदिवा
यिसा१ दूभू २ मिया २।३ ददायिउग्राँशर्म्मामह २।३ यिश्रवाउवा २।३ स्तोषे२।३।४।५
४ उपा ५ स्मैगा ३ या ३ त्यानराःपा ३ वामा ३ नाया २।३ आहुम्मायिदा ३ वाआ
मिदेवाइयारक्षताउवा ३ ४ ५ । ५ । इतिसामवेदः ॥ ३ ॥ अथर्व० ॥ ॐधातारातिः
सवितेदञ्जुषन्ताम्प्रजापतिर्निधिपतिर्नोअग्निः ॥ त्वष्टाविष्णुःप्रजयासंरराणोयजमा

नायद्रविणन्दधातु ॥ १ ॥ ॐयेनदेवंसवितारंपरिदेवाअधारयन् ॥ तेनेमंब्रह्मणस्पतेपरिराष्ट्रायधत्तन ॥ २ ॥ ॐकोअस्यानोदुहोवद्यवत्याउन्नेष्यतिक्षत्रियोवस्यइच्छन् ॥ कोयज्ञकामःकउपूर्त्तिकामःकोदेवेषुवनुतेदीर्ग्घमायुः ॥ ३ ॥ ॐउच्चैर्घोषोदुन्दुभिःसत्वनायन्वानस्पत्यःसम्भृतउस्रियाभिः ॥ वाचंक्षुरावानोदमयन्त्सपत्नान्सिंहइवजेष्यन्नभितस्तनीहि ॥ ४ ॥ इत्यथर्वणवेदः ॥ इत्येताःऋचःआशिषंब्रूयात् ॥ माविघ्नम्माचमेपापामासन्तुपारिपन्थिनः ॥. सौम्याभवन्तुसुखिनःसर्वेंलोकाःसुखाबहा ॥ इतिकर्त्तावदेत् ॥ विप्रास्तथेत्युत्का ॥ करोतुस्वस्तितेब्रह्मास्वस्तिवापिद्विजातयः॥सरीसृपाश्चयेश्रेष्ठास्तेभ्यस्वस्तिसर्वदा ॥ययातिनर्हुषश्चैवधुन्धुमारोभगीरथः ॥ तुभ्यंराजर्षयःसर्वेस्वस्तिकुर्वन्तुनित्यशः ॥ द्विपादेभ्यश्चतेस्वस्तिचतुष्पादेभ्य

एवच ॥ स्वस्त्यस्त्वपादकेभ्यश्चसर्वेभ्यःस्वस्तितेसदेतिवदेयुः॥ ततःब्रतनियमतपःस्वाध्यायक्रतुदयादमदानविशिष्टानांसर्वेषांब्राह्मणानांमनःसमाधीयताम् ॥ इतियजमानः॥ समाहितमनसःस्मः ॥ इतिद्विजाः ॥ प्रसीदन्तुभवन्तःइतियजमानोब्रूयात् ॥ प्रसन्नाःस्मइतिद्विजाब्रूयुः ॥ ततोकुम्भाज्जलङ्किञ्चित्किञ्चिदधःपात्रान्तरेपातयेत्यजमानोब्रूयात् ॥ ॐशान्तिरस्तु ॥ अस्त्वितिद्विजाःइतिप्रतिवचनंसर्वत्रदद्युः ॥ ॐपुष्टिरस्तु॥ॐतुष्टिरस्तु ॥ ओंवृद्धिरस्तु॥ॐअविघ्नमस्तु॥ॐआयुष्यमस्तु ॥ॐआरोग्यमस्तु॥ ॐशिवङ्कर्म्मास्तु ॥ ॐकर्म्मसमृद्धिरस्तु ॥ ॐवेदसमृद्धिरस्तु ॥ ॐशास्त्रसमृद्धिरस्तु ॐधनधान्यसमृद्धिरस्तु ॥ ओंपुत्रपौत्रसमृद्धिरस्तु ॥ ओंइष्टसंपदस्तु ॥ पात्राद्बहिः ॥ ओंअरिष्टनिरसनमस्तु ॥ ओंयत्पापंरोगमशुभमकल्याणन्तद्दूरेप्रतिहतमस्तु ॥

पुनःपात्रे ॥ ओंयच्छ्रेयस्तदस्तु ॥ ओंउत्तरेकर्म्मणिनिर्विघ्नमस्तु ॥ ओंउत्तरोत्तरमहरहरभिवृद्धिरस्तु ॥ ओंउत्तरोत्तराःक्रियाःशुभाःशोभनाःसंपद्यन्ताम् ॥ ओंतिथिकरणमुहूर्त्तनक्षत्रग्रहलग्नसंपदस्तु ॥ उदकस्पर्शः ॥ ओंतिथिकरणमुहूर्त्तनक्षत्रग्रहलग्नाधिदेवताःप्रीयन्ताम् ॥ ओंतिथिकरणेसमुहूर्त्तेसनक्षत्रेसग्रहेसाधिदेवतेप्रीयेताम् ॥ ओंदुर्गापाञ्चाल्यौप्रीयेताम् ॥ ओंअग्निपुरोगाविश्वेदेवाःप्रीयंताम् ॥ ओंइन्द्रपुरोगामरुद्गणाःप्रीयन्ताम् ॥ ओंमाहेश्वरीपुरोगाउमामातरःप्रीयन्ताम् ॥ ओंअरुधन्तीपुरोगाएकपत्न्यःप्रीयन्ताम् ॥ ओंविष्णुपुरोगाःसर्वेदेवाःप्रीयन्ताम् ॥ ओंब्रह्मचब्राह्मणाश्चप्रीयंताम् ॥ ओंश्रीसरस्वत्यौप्रीयेताम् ॥ ओंश्रद्धामेधेप्रीयेताम् ॥ ओंभगवतीकात्यायनीप्रीयताम् ॥ ओंभगवतीमाहेश्वरीप्रीयताम् ॥ ओंभगवतीऋद्धिकरी

प्रीयताम्॥ॐभगवतीसिद्धिकरीप्रीयताम्ओंभगवतीपुष्टिकरीप्रीयताम्॥ओंभगवतीतुष्टिकरीप्रीयताम्॥ओंभगवन्तौविघ्नविनायकौप्रीयेताम् ॥ ओंसर्वाःकुलदेवताःप्रीयन्ताम् ॥ ओंसर्वाग्रामदेवताःप्रीयंताम् ॥ वहिर्देशेजलंपातयेयुः ॥ ओंहताश्चब्रह्मद्विषः ॥ ओंहताश्चपरिपन्थिनः ॥ ओंहताश्चविघ्नकर्तारःशत्रवःपराभवंयान्तु ॥ ओंशाम्यन्तुघोराणि ॥ ओंशाम्यन्तुपापानि ॥ ओंशाम्यन्त्वीतयः ॥ इतिवहिर्देशे ॥ पुनःपात्रे ॥ ओंशुभानिवर्द्धन्ताम् ॥ ओंशिवाआपःसन्तु ॥ ओंशिवाऋतवःसन्तु ॥ ओंशिवाओषधयःसन्तु ॥ ओंशिवानद्यःसन्तु ॥ ओंशिवागिरयःसन्तु ॥ ओंशिवाअतिथयःसन्तु ॥ ओंशिवाअग्नयःसन्तु ॥ ओंशिवाआहुतयःसन्तु ॥ ओंअहोरात्रेशिवेस्याताम् ॥ ओंनिक॒ामेनिकामेन;प॒र्ज्जन्न्योवर्षतुफलंवत्त्योन॒ऽओष

षधःपच्च्यन्तांय्योगक्षेमोनःकल्पताम् ॥ सं० अ० २२ मं० २२ इत्यर्द्धर्चेन १ शुक्राङ्गारकबुधबृहस्पतिशनैश्चरराहुकेतुसोमसहिताआदित्यपुरोगाःसर्वेग्रहाःप्रीयन्ताम् ॥ ओंभगवान्नारायणःप्रीयताम् ॥ ओंभगवान्पर्ज्जन्यःप्रीयताम् ॥ ओंभगवान्स्वामीमहासेनःसपत्नीकःससुतःसपार्षदःसर्वावस्थागतःप्रीयताम् ॥ ओंपुण्याहकालान्वाचयिष्ये ॥ इतियजमानः ॥ ओंवाच्यतामितिप्रति वचनम् ॥ ब्राह्म्यपुण्यमहर्यच्चसृष्ट्युत्पादनकारकम् ॥ वेदवृक्षोद्भवन्नित्यन्तत्पुण्याहंब्रुवन्तुनः ॥ १ ॥ ओंभोब्राह्मणाःममसकुटुम्बस्यसपरिवारस्यगृहेअमुकदेवप्रतिष्ठाकर्म्मणः पुण्याहम्भवन्तोब्रुवन्तु ॥ ओंपुण्याहम् ॥३॥ एवंवचनंप्रतिवचनंचात्रिःपठित्वा ॥ ओंउद्गातेवसकुने सामगायसिब्रह्मपुत्रइवसवनेषुशंससि ॥ वृषेववाजीशिशुमतीरपीत्यासर्वतोनःशकुने

भद्रमावदविश्वतोनःशकुनेपुण्यमावद ॥ १ ॥ इत्यृक् ॥ ओंपुनन्तुमादेवजनाः
पुनन्तुमनंसाधियं÷ पुनन्तुब्बिश्श्वांभूतानिजातंवेदः;पुनीहिमां ॥ २ ॥ सं० अ० १९
मं० ३९ ॥ इतियजुः ॥ ओंपुनानःसोमधारयापोवसानोअर्षसि ॥ आरत्नधायोनि
मृतस्यसीदस्यूत्सोदेवोहिरण्ययः ॥ ३ ॥ इतिसाम ॥ सा० सं० छ० उ० प्र०
१ मं० ९ ओंपुनन्तुमादेवजनाःपुनन्तुमनवोधिया ॥ पुनन्तुविश्वाभूतानिपवमानःप
नातुमा ॥ इत्यथर्वा ॥ पृथिव्यामुद्धृतायान्तुयत्कल्याणंपुराकृतम् ॥ ऋषिभिस्सि
द्धगन्धर्वैस्तत्कल्याणंब्रुवन्तुनः ॥ २ ॥ भोब्राह्मणाममसकुटुम्बस्यसपरिवारस्यगृहे
अमुकदेवप्रतिष्ठाकर्म्मणःकल्याणंभवन्तोब्रुवन्तु ॥ कल्याणमितित्रिर्विप्राः ॥ ओं
अपाःसोममस्तमिन्द्रप्रयाहिकल्याणीर्जायासुरणङ्गृहेते ॥ यत्रारथस्यबृहतोनिधा

नंविमोचनंवाजिनोदक्षिणावत ॥ २ ॥ इत्यृक् ॥ ओंयथे॒माम्बाचंङ्कल्या॒णीमा॒
वदा॑नि॒जने॑भ्यः ॥ ब्र॒ह्म॒रा॒ज॒न्या॑भ्याᳫँशू॒द्राय॒चार्य्या॑य॒च॒स्वाय॒चार॑णायच ॥ प्रि॒योदे॒
वा॒ना॒न्दक्षि॑णायै॒दा॒तुरि॒हभूयास॒म॒यम्मे॒काम॒ः समृ॑द्ध्यता॒मुपमा॒दोनमतु ॥ २ ॥ सं० अ०
२६ मं० ॥ २ ॥ इतियजुः ॥ ओंकयानश्चित्रऽआभुवदूतीसदावृधःसखा ॥ कयाश
चिष्ठयावृता ॥ सा० छ० सं० अ० १ प्र० २द० ८ मं० ५ ॥ इतिसाम ॥ ओंविश्वजित्कल्याण्यै
मापरिदेहि ॥ कल्याणिद्विपाच्चसर्वन्नोरक्षचतुष्पाद्यनस्वं ॥ ४ ॥ इत्यथर्वणम् ॥ सागरस्यतुया
ऋद्धिर्म्महालक्ष्म्यादिभिःकृता ॥ सम्पूर्णापूर्णचन्द्रेयातांऋद्धिम्भोब्रुवन्तुनः ॥ ओंऋद्ध्य
ताम् ॥ ३ ॥ ओंऋद्ध्यामस्तोमसनुयामवाजमानोमन्त्रंसरथेहोपयातम् यशोनप
क्वंमधुगोष्वन्तराभूतांशोअश्विनोःकाममप्राः ॥ १ ॥ ऋक् ॥ ओंस॒त्रस्य॒ऽऋद्धिं

रस्यगंन्मज्ज्योतिरमृताँऽअभूम ॥ दिवम्पृथिव्याऽअद्ध्यारुहामाविदामदेवान्त्स्व
ज्ज्योतिः ॥ २ ॥ सं० अ० ८ मं० ५२ यजुः ॥ ओंतऽउत्तरस्यहविर्धानेस्यजप-
त्न्यायाङ्कूवर्य्याँशृङ्गसामाभिगायन्ति ॥ सत्रस्यर्द्धिरितिराद्ध्यमेवैतदभ्युत्तिष्ठन्त्यु
त्तरवेदेवेतिरावाःश्रोणावितरंनुक्ततरंयऽउत्तरस्यहविर्धनिस्यजघन्न्यायाङ्कूवर्य्यांस
गन्मज्ज्योतिरमृताअभूमेतिज्ज्योतिर्वाएतेभवन्त्यमृताभवन्तिये सत्रस्यमासतेदिवम्पृथि
व्या ऽअद्ध्यारुमेतिदिवम्बायान्तिस्वह्येतेज्योतिह्येवभवन्तितद्यदेवैतस्यसाम्नोरूपन्तदे
वैभवन्तियेसत्रमासते ॥ सत्रस्यर्ध्याग्नीध्रमुपतिष्ठन्तऋद्धावेवप्रतितिष्ठञ्चतुरक्षरंनिधन
भवन्तिचतुष्पदाःपशवःपशुष्वेवप्रतितिष्ठन्त्यातमितोर्निर्द्धनमुपपन्त्यायरेवसर्वमाप्नुव
न्ति ॥ ३ ॥ इतिसाम ॥ ओंऋधङ्मन्त्रोयोनिंयऽआवभूवामृतासुर्वर्द्धमानःसु

जन्मा ॥ अदब्धासुभ्राँजमानोहेवत्रितोधर्त्तादाधारत्रीणि ॥ ४ ॥ संहिता । काण्ड । ५ । अ । १ । म० । १ । इत्यथर्व ॥ स्वस्तिरस्तुयाविनाशाख्यापुण्यकल्याणवृद्धिदा ॥ विनायकप्रियानित्यन्ताञ्चस्वस्तिम्ब्रुवन्तुनः ॥ भोब्राह्मणाममसकुटुम्बस्यसपरिवारस्यगृहेअमुकदेवप्रतिष्ठाकर्म्मणःस्वस्तिभवन्तोब्रुवन्तु ॥ आयुष्मतेस्वस्ति ॥ ३ ॥ ॐस्वस्तिऋद्धिप्रपथेश्रेष्ठारेक्णस्वत्यभियावाममेति ॥ सानोअमासोअरणेनिपातुस्वावेशाभवतुदेवगोपा ॥ १ ॥ ॐस्वस्तिरेवहिप्रपथेश्रेष्ठारेक्णस्वतीधनवत्यभ्येतियावसूनिवननीयानिसानोमागृहेंसानिरमाणेसानिर्ग्गमनेयातुःस्वावेशाभवतुदेवीगोप्त्रीदेवान्गोपायत्वितिदेवाएनान्गोपायन्त्वितिवोषाव्याख्यातातस्याएषाभवति ॥ २ ॥ इत्यृक् ॥ ॐत्रात.र॒मिन्द्रंमवि॒तार॒मिंद्र॒ꣳ॒हवेहवेसु॒हव॒ꣳ॒शूर॒मिन्द्रम् ॥ ह्वयामिश॒क्रम्पु

रुहूतमिन्द्रꣳस्वस्तिनोमघवाधात्विन्द्रः ॥ २ ॥ सं० अ० २० मं० ५० इति
यजुः॥ॐत्रातारमिन्द्रमवितारमिन्द्रँहवेहवेसुहवँशूरमिन्द्रम्॥ हुवेनुशक्रम्पुरुहूतमिन्द्रमि
दंहविर्मघवावेत्विन्द्रः सा० छ० सं० अ० १ प्र० ४ द० ५ मं० २ ॥ १ ॥ ॐस्वस्तिन
ऽइन्द्रोवृद्धश्रवाइत्यपि ॥ इतिसाम ॥ ॐस्वस्तिमात्रउतपित्रेनोऽअस्तुस्वस्तिगो
भ्योजगतेपुरुषेभ्यः ॥ विश्वंसुभूतंसुविदत्रन्नोअस्तुज्योगेवदृशेमसूर्य्यम् ॥ इत्यथर्व ॥
समुद्रमथनाज्जाताजगदानन्दकारिका ॥ हरिप्रियाचमाङ्गल्यातांश्रियम्ब्रुवन्तुनः॥
भोब्राह्मणाममसकुटुम्बस्यसपरिवारस्यगृहेअमुकदेवप्रतिष्ठाकर्म्मणःश्रियम्भवन्तोब्रुव
न्तु ॥ ॐअस्तुश्रीः ॥ ३ ॥ ॐजातवेदसेसुनवामसोममरातीयतोनिदहातिवेदः ॥
सनःपर्षदतिदुर्गाणिविश्वानावेवसिन्धुन्दुरितात्यग्निः ॥ १ ॥ इत्यृक् ॥ ॐश्रीश्चतेति

यजुः ॥ २ ॥ ओंमदच्युत्सेतिसाम ॥ ३ ॥ ओंश्रियन्धातुर्म्मेधेहिश्रियामाआधिपतिङ्कृणु ॥ ईशामीशानोभगवानिन्द्रोमायशसङ्कृधि ॥ ४ ॥ इत्यथर्वा ॥ म्टकण्डुसूनोरायुष्यंध्रुवलोमशयोस्तथा ॥ आयुषातेनसंयुक्तोजीवत्वंशरदःशतम् ॥ शरदःशतञ्जीवन्तुभवंतः ॥ अथऋक् ॥ ओंशतञ्जीवशरदोवर्द्धमानःशतंहेमन्ताञ्छतमुपसन्तान्शतामिन्द्राग्नीसविताबृहस्पतिःशतायुषाहविषेमम्पुनर्दुः ॥ १ ॥ ओंशतञ्जीवशरदोवर्द्धमानइत्यपिनिगमोभवतिशतमितिशतन्दीर्ग्घमायुर्म्मरुतोमाम्बर्द्धयन्ति ॥ शतमेवशतमात्मानम्भवतिशतमितिशतन्दीर्ग्घमायुः ॥ २ ॥ इत्यृक् ॥ ओंश॒तमिन्नुश॒रदो॒ऽअन्तिदे॒वायत्रा॑नश्च॒क्क्राज॒रसं॑न्त॒नूनाम् ॥ पु॒त्रासो॒यत्रा॑पि॒तरो॒भवन्ति॒मानो॑म॒ध्यारीरिष॒तायु॒र्ग्गन्तोः ॥ १ ॥ सं० अ० २५ मं० २२ इतियजुः ॥

ओंहाउहाउहाउयसोहाउवर्च्चोंहाउइआस्मिन्ह्लायिअस्मिह्लाउवा २ तवेदिन्द्रावमवसुत्वम्पुष्यसिममक्ष्यमं ॥ सत्राविश्वस्यपरमराजसिनकिष्टागोषुबृष्ण्वतेहाउ ३ यशोहाउ ३ वर्च्चोंहाउआस्मिन्ह्लाउवा २ आयुर्विंश्वायुर्विश्वंबिस्वमायुरशीमहिप्रजान्त्वष्टराधिनिधेह्यस्मैशतञ्जीवेमशरदोवयन्ते २ ३ ४ ५ शतायुर्वैपुरूषःशतवीर्य्यस्तमुल्लिखेत्प्राणायत्वापानायत्वाव्यानायत्वेतिप्राणापानव्यानानेवतदास्वाबरुणन्धेतो ॥ ३ ॥ इतिसाम ॥ ओंआयुरस्मैधेहिजातवेदःप्रजान्त्वष्टराधिनिधेह्यस्मै ॥ रायस्पोषंसबितरासुवास्मैशतञ्जीवामिशरदस्तवायम् ॥ ४ ॥ इत्यथर्वा ॥ शिवगौरीबिवाहेयाया श्रीरामेनृपात्मजे ॥ धनदस्यगृहेयाश्रीरस्माकंसास्तुसद्मनि ॥ १ ॥ ओंअस्तुश्रीः ॥ ओंश्रियेजातःश्रियआनिरिपायाश्रियम्बयोजरित्रिभ्योदधाति ॥ श्रियम्बसानाअमृत

त्वमायन्भवातिसत्यासमिथामितद्रौ ॥ १ ॥ इत्यृक् ॥ ॐमनस;काममाकूतिंवाच?
सत्यमंशीय ॥ पशूनाछंरूपमन्नंस्यरसोयश;श्री?श्रंयताम्मयिस्वाहा ॥ १ ॥ सं०
अ० ३९ मं० ४ इतियजुः ॥ ॐभद्राइन्द्रस्यरातायायोअस्यकामाम्बिदधतःनराषा
१ ता २ यिम्नोदानायञ्चोदयात्मा २। ३ नादानायाचोदयात्वाश्रिये ३ उश्रायंती
यम्भवतिश्रीर्वैश्रायन्तायँश्रीर्नवममहःश्रीयमेवतच्छ्रियाम्प्रतिष्ठापयाति ॥ इतिसा
म ॥ ॐएहयातवरुणःसोमोअग्निर्बृहस्पतिर्बसुभिरेहयातु ॥ अस्यश्रियमुपसंयात
सर्वउग्यूस्यचेत्तुःसमनसः सजाताः ॥ ४ ॥ सं० । कां० । ६ । अ० । ७ । मं० ।
। १ । इत्यथर्व ॥ प्रजापतिर्लोकपालोधाताब्रह्माचदेवराट् ॥ भगवान्शाश्वतोनि
त्यंसनोरक्षतुसर्बतः ॥ १ ॥ भगवान्प्रजापतिःप्रीयताम् ॥ ॐप्रजापतेनत्वदेतान्न्य

न्न्योबिश्वाजातानिपरितावभूव ॥ यत्कामास्तेजुहुमस्तन्नोऽअस्तुवयंस्यामपतयोर
यीणाम् ॥ १ ॥ ॐप्रजापतेनहित्त्वदेतान्न्यन्न्यःसर्बाणिजातानितानिपरितावभूव ॥
यत्कामास्तेजुहुमस्तन्नोअस्तुवयँस्यांमपतयोरयीणामित्याशीरहिर्व्याख्यातस्यैषाभव
ति ॥ २ ॥ इतिऋक् ॥ ॐप्रजापते॒नत्वद्दे॒तान्न्य॒न्न्योब्बिश्श्वारू॒पाणि॒परि॒ताबभूव ॥
यत्कामास्तेजुहुमस्तन्नोऽअस्तुब्व॒यथ्थंस्याम॒पतयोर्यी॒णाम् सं० अ० २३ मं० ६५
ॐअथप्रतिपरेत्यगार्हपत्त्यमन्न्वारब्धेजुहोतिप्रजापतेनत्त्वदेतान्न्यन्न्योबिश्वारूपाणि
परितावभूव ॥ यत्कामास्तेजुहुमस्तन्नोऽअस्त्वयममुष्यापितेतितद्यःयःपुत्रस्तंपितर
ङ्करोतियःपितातम्पुत्रन्तदेतयोर्वीर्य्येव्यषजत्यसावस्यापितेतितद्यःपितम्पितरङ्करोतियः
पुत्रस्तम्पुत्रन्तदेतयोर्वीर्य्येब्यातिषज्ज्यपुनरेवधाययथायथङ्करोतियस्यामपतयोरयीणा

स्वाहेत्याशीरेवैषैतस्यकर्म्मणऽआशिषमेवैतदाशास्ते ॥ २ ॥ इतियजुः ॥ ओंहा उ ३ इमाः ३ प्रजाः ३ प्रजापतेहोयि २ प्रजापतेहा ३ १ उवा २ एहृदयं २ एहृदया ३ १ उच २ प्रजारूपमजीजने ३ इट्इडा २ ३ ४ ५ ३ पूर्वमुवैवतद्रूपमपरोणरूपेणानुवदतियत्पूर्वःरूपमपरेणरूपेणानुवदतितदतितदनुरूपस्यानुरूपत्वमनुरूपएनम्पुत्रोजायतेयएवम्वैस्तोस्त्रीयानुरूपौतृचेभवतःप्राणापानावरुध्यै ॥ इतिसाम ॥ ओं प्रजापतेराबृतोब्रह्मणाबर्म्मणाहङ्कश्यपस्यज्ज्योतिषावर्च्चसाच ॥ जरदष्टिःकृतवीर्य्योबिहायाःसहस्रायुःसुकृतश्चरेयम् ॥ ४ ॥ सं० । का० । १७ । अ० । १ । सू० । ३ । मं । ७ । इत्यथर्व ॥ आयुष्मतेस्वस्तिमतेयजमानायचाशिषे॥कृतास्त्वाचाशिषः सन्तुऋत्विग्भिर्वेदपारगैः ॥ १ ॥ देवेन्द्रस्ययथास्वस्तियथास्वस्तिगुरोर्गृहे ॥ एक

लिङ्ग्यथास्वस्तितथास्वस्तिसदामम ॥ २ ॥ आयुष्मतेस्वस्तिः ॥ ३ ॥ स्वस्तये
वाजिभिश्चप्रणेतःसंयन्महीरिषआसत्सिपूर्वाः ॥ रायोवन्तारोबृहतःस्यामास्मेऽअस्तुभ
गइन्द्रप्रजावान् ॥ १ ॥ इतिऋक् ॥ ओंआनोनि॒युद्भिः॑श॒तिनीभिरध्व॒रंसंहस्रि
णीभि॒रूपयाहि॒यज्ञम् ॥ वायोऽअ॒स्मिन्त्सवनेमादयस्वयूयम्पातस्व॒स्तिभि॒ःसदानः
॥ २ ॥ सं० अ० २७ मं० २८ ओंप्रति॒पन्थामपद्महिस्वस्ति॒गामने॒हसम् ॥
येन॒विश्वाःपरि॒द्विषोवृणक्तिवि॒न्दते॒वसु ॥ २ ॥ सं० अ० ४ मं० २९ इति
यजुः ॥ ओंत्यमूषुवाजिनान्देवजूतांसहोवानन्तोरुतारथानाम् ॥ अरिष्टनायि
मीम्पृतनायमाशुम्स्वस्तयाभिताक्ष्यैमिहाहुवायेमा ॥ १ ॥ ओंत्यमूषुवाजिसहस्र
कृत्वासहस्रकृत्वाप्रवर्तयन्येमानुषाः॥कामास्तानवाप्नोति ॥ इतिमास ॥ वेदःस्वस्ति

द्रुघणःस्वस्तिःपरशुर्वेदिःपरशुर्नःस्वस्ति ॥ हविष्कृतोयज्ञियायज्ञकामास्तेदेवासोयज्ञ
मिमञ्जुषन्ताम् ॥ १ ॥ इत्यथर्ववेदः ॥ सं० । का । ७ । मं० । अस्मिन्पुरायाह
वाचनेन्यूनातिरिक्तोयोबिधिःसउपविष्टब्राह्मणानाम्बचनात्श्रीमन्महागणपतिप्रसादा
त्परिपूर्णोऽस्त्वितिभवन्तोब्रुवन्तु ॥ अस्तुपरिपूर्णः ॥ अनेनपुरायाहवाचनेनप्रजा
पतिःप्रीयताम् ॥ ततोभिषेकः ॥ अभिषेकेपत्नीवामतउपबिशेत् ॥ कलशोदक
ङ्गृहीत्वाऽबिधुराश्चत्वारोब्राह्मणादूर्वाम्रपल्लवैर्यजमानमभिषिञ्चेयुः ॥ तत्रमंत्राः ॥
सं० अ० १८ मं० ३६ ॐपञ्चनद्य÷सरस्वतीमपियन्ति
ॐपयं÷पृथिव्याम् ॥ सं० अ० ३४
सस्रोतसः ॥ सरस्वतीतुपञ्चधासोदेशेभवत्सरित् । २ ॥ सं० अ० ३४
मं० ११ ॐवरुणस्योत्तम्भनम् ॥ ३ ॥ सं० अ० ४ मं० ६६ ॐपुनन्तुमादेवज

ना॑ ॥ ४ ॥ सं० अ० १९ मं० ३९ ओंदेवस्यत्वासवितुःप्रसवेऽश्विनोर्ब्बाहुभ्याम्पू
ष्णोहताब्भ्याम् ॥ सरस्वत्यैव्वाचोयन्तुर्य्यन्त्रियेदधामिबृहस्प्पतेष्ट्वासाम्म्राज्ज्ये
नाभिषिञ्चाम्म्यसौ ॥ ५ ॥ सं० अ० ९ मं० ३० ॐदेवस्स्यत्वासवितुःप्प्रसवे
ऽश्विनोर्ब्बाहुब्भ्याम्पूष्णोहस्ताब्भ्याम् ॥ सरस्स्वत्यैव्वाचोयन्तुर्य्यन्त्रेणाग्ग्नेःसा
म्म्राज्ज्येनाभिषिञ्चामि ॥ ६ ॥ सं० अ० १८ मं० ३७ ॐदेवस्स्यत्वासवितुः
प्प्रसवेऽश्विनोर्ब्बाहुभ्याम्पूष्णोहस्ताब्भ्याम् ॥ अश्विनोर्ब्भैषज्ज्येनतेजसेब्रह्मवर्च्च
सायाभिषिञ्चामिसरस्वत्यैभैषज्ज्येनव्वीर्य्यायान्नाद्यायाभिषिञ्चामीन्द्रस्स्येन्द्रियेणब्ब
लायश्रियैयशसेभिषिञ्चामि ॥ ७ ॥ सं० अ० २० मं० ३ ॥ ॐविश्वानिदेवस
वितर्दुरितानिपरासुव ॥ यद्भद्रन्तन्नऽआसुव ॥ ८ ॥ सं० अ० ३० मं० ३

ॐधामच्छदग्निरिन्द्रोब्रह्मादेवोबृहस्पतिः ॥ सचेतसोऽविश्वेदेवायज्ञम्प्रावन्तुनः शुभे ॥ ९ ॥ सं० अ० १८ मं० ७६ ॐत्वँय्यविष्ठदाशुषोन्नॄँः पाहिशृणुधीगिरः ॥ रक्षातोकमुतत्मना ॥ १० ॥ सं० अ० १३ मं० ५२ ॐअन्नपतेन्नस्यनोदेह्यनमीवस्यशुष्मिणः ॥ प्रप्प्रदातारन्तरिषऽऊर्ज्जन्नोधेहिद्विपदेचतुष्पदे ॥ ११ ॥ सं० अ० ११ मं० ८३ ॐद्यौःशान्तिः ॥ सं० अ० ३६ मं० १७ ॐयतोयतःसमीहसेततोनोऽअभयङ्कुरु ॥ शन्नःकुरुप्प्रजाभ्योभयन्नःपशुभ्यः ॥ १३ ॥ सं० अ० ३६ मं० २२ अथपौराणिकमंत्राः ॥ सुरास्त्वामभिषिञ्चन्तुब्रह्मविष्णुमहेश्वराः ॥ वासुदेवोजगन्नाथस्तथासङ्कर्षणोविभुः ॥ १ ॥ प्रद्युम्नश्चानिरुद्धश्चभवन्तुविभवायते ॥ आखण्डलोग्निर्भगवान्यमोवैनिर्ऋतिस्तथा ॥ २ ॥ वरुणःपवनश्चैवधनाध्यक्षस्त

थाशिवः ॥ ब्रह्मणासहिताःसर्वेदिक्पालाःपान्तुवःसदा ॥ ३ ॥ कीर्त्तिर्लक्ष्मीर्धृतिर्म्मे
धाश्रद्धापुष्टिःक्रियामतिः ॥ बुद्धिर्लज्जावपुःशान्तिर्म्मायानिद्राचभावना ॥ ४ ॥
एतास्त्वामभिषिञ्चन्तुक्षमाकान्तीतथैवच ॥ आदित्यश्चन्द्रमाभौमोबुधोजीवःसितोर्क
जः ॥ ५ ॥ ग्रहास्त्वामभिषिञ्चन्तुराहुःकेतुश्चपूजिताः ॥ देवदानवगन्धर्वायक्षरा
क्षसपन्नगाः ॥ ६ ॥ ऋषयोमनवोगावोदेवमातरएवच ॥ देवपत्न्योध्रुवोनागा
दैत्याश्चाप्सरसाङ्गणाः ॥ ७ ॥ अस्त्राणिसर्वशस्त्राणिराजानोवाहनानिच ॥ ओष
ध्यश्चापिरत्नानिकालस्यावयवाश्चये ॥ ८ ॥ सरितःसागराःशैलास्तीर्थानिजलदान
दाः ॥ एतेत्वामभिषिञ्चन्तुसर्वकामार्थसिद्धये ॥ ९ ॥ अमृताभिषेकोस्तु ॥ ॐ
शान्तिःशान्तिःशान्तिःसुशान्तिर्भवतु ॥ ततःपुत्रवतीभिर्वृद्धसुवासिनीभिर्नीराजनङ्का

यैम् ॥ ॐअनाधृष्टापरस्ताद॒ग्नेराधिपत्य॒ऽआयुर्म्मेदाः ॥ पुत्रवतीदक्षिण॒तऽइन्द्र॒स्याधिपत्येप्र॒जाम्मेदाः ॥ सुषदा॒पश्चा॒द्देवस्यसवि॒तुराधिपत्ये॒चक्षुर्म्मे॒दाऽआश्रुतिरुत्त॒रतो॒धातुराधिपत्येरा॒यस्पोषम्मेदाः ॥ ब्बिधृतिरु॒परिष्टा॒द्बृह॒स्पते॒राधिपत्य॒ऽओजोमे॒दाब्बिश्वाब्भ्योमा॒नाष्ट्राब्भ्यस्पा॒हि॒मनो॒॥सं०अ०३७मं०१२रश्मासि॥इतिमंत्रेण ॥ अथमातृकापूजनम् ॥ तत्रायङ्क्रमः ॥ अविघ्नोमण्डपश्चैवमातृणाम्पूजनंसकृत् ॥ वैश्वदेवम्बसोर्द्धारानान्दीश्राद्धमतःपरम् ॥ १ ॥ अविघ्नपूजनात्पूर्व्वंवैश्वदेवाम्बिधाय च ॥ ततोगोधूमादिधान्यपूरितेहरिद्रादिरञ्जितेमृन्मयेअविघ्नाख्येकलशेमोदादिषड्विनायकमातृणाम्प्रतिमाःकुङ्कुमेनलिखित्वावाहयेत् ॥ तद्यथा ॥ मोदश्चैवप्रमोदश्चसुमुखोदुर्म्मुखस्तथाअविघ्नोविघ्नकर्त्ताचषडेतेविघ्ननायकाः ॥ १ ॥ ॐमोदायनमः मोदमा

वाहयामि॥ओँप्रमोदायनमः प्रमोदमावाहयामि २ ॐसुमुखायनमः सुमुखमावाहयामि ३
ॐदुर्म्मुखायनमः दुर्म्मुखमावाहयामि॥४॥ॐअविघ्नायनमः अविघ्नमावाहयामि ॥ ५ ॥
ॐविघ्नकर्त्रेनमः विघ्नकर्त्तारमावाहयामि ॥ ६ ॥ ॐमनोजूतिरितिप्रतिष्ठाप्य॥ षोडशोप
चारैःसंपूजयेत् ॥ ॐभूर्भुवःस्वःमोदादिषड्विनायकाःसुप्रतिष्ठितावरदाभवन्तु ॥
ॐमोदादिषड्विनायकेभ्योनमइतिनाममंत्रेणावाहनादिपुष्पाञ्जलिपर्यन्तंपूजनङ्कार्यम्
अनयापूजयामोदादिषड्विनायकाःप्रीयन्ताम् ॥ ततोगौर्य्यादिमातरोवंशपात्रेपीत
पटंप्रसार्यतदुपरिकुङ्कुमादिनालिखित्वाक्षतपुञ्जेषुपूगफलेषुनिवेश्याः॥ तत्रायङ्क्रमः
गौरीपद्माशचीमेधासावित्रीविजयाजया ॥ देवसेनास्वधास्वाहामातरोलोकमातरः
॥ १ ॥ हृष्टिःपुष्टिस्तथातुष्टिरात्मनःकुलदेवता ॥ गणेशेनाधिकाह्येतावृद्धौपूज्याश्च

तुर्दश ॥ षोडशइत्यपिपाठः ॥ अथचतुर्दशपदसमाहारान्मातरोलोकमातरइतिसर्वासांविशेषणम् ॥ ॐगणेशायनमःगणेशमावाहयामि ॥ १ ॥ ॐगौर्य्यै नमःगौरीमावाहयामि ॥ २ ॥ ॐपद्मायैनमःपद्मामावा० ॥ ३ ॥ ॐशच्यैनमः शचीमावा० ॥ ४ ॥ ॐमेधायैनमःमेधामावा० ॥ ५ ॥ ॐसावित्र्यै नमःसावित्रीमा० ॥ ६ ॥ ॐविजयायैनमःविजयामावा० ॥ ७ ॥ ॐजयायै नमःजयामावा० ॥ ८ ॥ ॐदेवसेनायैनमःदेवसेनामावा० ॥ ॐस्वधायैनमः स्वधामावा० ॥ १० ॥ ॐस्वाहायैनमःस्वाहामावा० ॥ ११ ॥ षोडशमातृपूजनपक्षे ॥ ॐमातृभ्योनमःमातृरावा० ॥ १२ ॥ ॐलोकमातृभ्योनमःलोकमातृरावा० ॥ १३ ॥ ॐहृष्ठ्यैनमःहृष्टिमावा० ॥ १४ ॥ ॐपुष्ट्यैनमःपुष्टिमावा० ॥ १५ ॥

ॐतुष्ट्यैनमः तुष्टिमावा० ॥ १६ ॥ ॐकुलदेवतायैनमःकुलदेवतामावाहयामि ॥१७॥ ॐमनोजूतिरितिप्रतिष्ठाप्यषोडशोपचारेणसम्पूज्य ॥ अथजलमातरः ॥ मत्सीकूर्म्मीचवाराहीमाण्डुकीमकरीतथा ॥ ग्राहकीक्रौञ्चकीचैवसप्तैताजलमातरः ॥१॥ काँस्येवाताम्रपात्रेवाप्रभूतजलपूरणम् ॥ तत्रमत्स्यादीरावाह्यपूजयेज्जलमातृकाः ॥ २ ॥ ॐमत्स्यैनमःमत्सीमावा० ॥ १८ ॥ ॐकूर्म्यैनमःकूर्म्मीमावा० ॥ १९ ॥ ॐवाराह्यैनमःवाराहीमावा० ॥ २० ॥ ॐमाण्डुक्यैनमःमाण्डुकीमावा० ॥ २१ ॥ ॐमकर्य्यैनमःमकरीमावा० ॥ २२ ॐग्राहक्यैनमःग्राहकीमावा० ॥ २३ ॥ ॐक्रौंचक्यैनमःक्रौञ्चकीमावाहयामि ॥ २४ ॥ इत्यावाह्य ॥ अथस्थलमातरः ॥ ब्राह्मीमाहेश्वरीचैवकौमारीवैष्णवीतथा ॥ वाराहीचतथेन्द्राणीचामुण्डासप्तमातरः ॥ १ ॥

ॐब्राह्म्यैनमः।ब्राह्मीमावा० ॥ २५ ॥ ॐमाहेश्वर्य्यैनमःमाहेश्वरीमावा० ॥ २६ ।
ॐकौमार्य्यैनमःकौमारीमावा० ॥ २७ ॥ ॐवैष्णव्यैनमःवैष्णवीमावा० ॥ २८ ॥
ॐवाराह्यैनमःवाराहीमावा० ॥ २९ ॥ ॐइन्द्राण्यैनमःइन्द्राणीमावा० ॥ ३० ॥ ॐ
चामुण्डायैनमःचामुण्डामावा० ॥ ३१ ॥ इत्यावाह्य ॥ एताःगौर्य्यादिवच्छूप्पें ॥
अथद्वारमातरः ॥ जयन्तीमङ्गलाचैवपिङ्गलादक्षिणेगृहात् ॥ आनन्दवर्द्धिनीवासे
महाकालीचनिर्गमे ॥ १ ॥ गृहस्यदक्षिणेभागेतिस्रोलेख्यास्तुमातरः ॥ वामभागे
तथाद्वेचं जयन्त्यादिक्रमेणतु ॥ २ ॥ ॐजयन्त्यैनमःजयन्तीमावा० ॥ ३२ ॥
ॐमङ्गलायैनमःमङ्गलामावा० ॥ ३३ ॥ ॐपिङ्गलायैनमःपिङ्गलामावा० ॥ ३४ ॥
इतिद्वारदक्षिणे ॥ ॐआनन्दवर्द्धिन्यैनमःआनन्दवर्द्धिनीमावा० ॥ ३५ ॥ ॐ

महाकाल्यैनमःमहाकालीमावा० ॥ ३६ ॥ इतिवामे ॥ इत्यावाह्य ॥ ततोगौर्य्यादिवच्छूर्प्पेगृहमातरःस्थाप्याः ॥ कीर्त्तिर्लक्ष्मीर्धृतिर्म्मेधापुष्टिःश्रद्धाक्रियामतिः ॥ बुद्धिर्लज्जावपुःशान्तिस्तुष्टिःकान्तिस्तुमातरः ॥ १ ॥ ॐकीर्त्यैनमःकीर्तिमावा० ॥ ३७ ॥ ॐलक्ष्म्यैनमःलक्ष्मीमावा० ॥ ३८ ॥ ॐधृत्यैनमःधृतिमावा० ॥ ३९ ॥ ॐमेधायैनमःमेधामावा० ॥ ४० ॥ ॐपुष्ट्यैनमःपुष्टिमावाहयामि ॥ ४१ ॥ ॐश्रद्धायैनमःश्रद्धामावा० ॥ ४२ ॥ ॐक्रियायैनमःक्रियामावा० ॥ ४३ ॥ ॐमत्यैनमःमतिमावा० ॥ ४४ ॥ ॐबुद्ध्यैनमःबुद्धिमावाहयामि ॥ ४५ ॥ ॐलज्जावपुषेनमःलज्जावपुषमावा० ॥ ४६ ॥ ॐशान्त्यैनमःशान्तिमावा० ॥ ४७ ॥ ॐतुष्ट्यैनमःतुष्टिमावाहयामि ॥ ४८ ॥ ॐकान्त्यैनमः । कान्तिमावा० ॥४९॥

इत्यावाह्य ॥ अथघृतमातरः ॥ एताःकुड्येसूर्पेवाकुङ्कुमाक्तेनघृतेनदक्षिणोत्तराः
पूर्वाभिमुखालेख्याः ॥ श्रीर्लक्ष्मीर्धृतिर्मेधापुष्टिःश्रद्धासरस्वती ॥ माङ्गल्येसम्प्रपूज्यन्ते
सप्तैताघृतमातरः ॥ १ ॥ ॐश्रियैनमःश्रियमावा० ॥ ५० ॥ ओंलक्ष्म्यैनमः
लक्ष्मीमावा० ॥ ५१ ॥ ओंधृत्यैनमःधृतिमावा० ॥ ५२ ॥ ओंमेधायैनमःमे
धामावा० ॥ ५३ ॥ ॐपुष्ट्यैनमःपुष्टिमावा०॥५४॥ॐश्रद्धायैनमःश्रद्धामावा० ॥५५॥
ॐसरस्वत्यैनमःसरस्वतीमावाहयामि ॥ ५६ ॥ इत्यावाह्य ॥ एवंषड्विनायकादि
घृतमातृकान्तमातृणांस्थापनम् ॥ ॐमनोजूतिरितिप्रतिष्ठाप्य ॥ ॐसमख्येदेव्या
धियाइतिमन्त्रेणसर्वाःषोडशोपचारैःसम्पूजयेत् ॥ ॐसम॑ख्येदे॒व्याधि॒यासन्दक्षिण
णयो॒रुचक्षसा ॥ मा॒मऽआयु॒;प्रमो॑षी॒र्म्मोऽअ॒हन्तवं॑वी॒रम्विदेय॒तवं॑दे॒वि॒सन्दृशि॥१॥

सं० अ० ४ मं० २३ तत्रकुड्येआवाहितघृतमातॄणामुपरिनागवल्लीदलेनगुडयुक्तेन केवलेनवाघृतेनाभितोधाराम्वसोःपवित्रमितिमन्त्रेणपातयेत् ॥ साचप्रत्यगादि संस्थादक्षिणादिरुदक्संस्थावा ॥ ॐ॑वसो॑;प॒वित्र॑मसिश॒तधा॑र॒म्वसो॑;प॒वित्र॑मसिस॒हस्र॑धारम् ॥ दे॒वस्त्वा॑सवि॒तापु॑नातुव्वसो॑;प॒वित्रे॑णश॒तधा॑रेसु॒प्प्वा॒काम॑धुक्षः ॥ १ ॥ सं० अ० १ मं० ३ इतिसप्तपञ्चवसोर्द्धाराःकुर्यात् ॥ पञ्चधारापक्षेश्रद्धासरस्वत्यौ विहायान्यासांपूजनमितिज्ञेयम् ॥ यथा ॥ कुड्यलग्नावसोर्द्धारासप्तधाराघृतेनतु ॥ कारयेत्पञ्चधारावानातिन्यूनाःकदाचन ॥ १ ॥ अविघ्नपूजनादारभ्यायुष्यजपान्तं सर्वकर्मविवाहेउपनयनेचूडाकरणेकेशान्तेसीमन्तोन्नयनेदेवप्रतिष्ठार्चनेचकर्त्तव्यम् ॥ अन्यत्रतुगौर्यादिषोडशमातॄणांपूजनंवसोर्द्धारापूजनञ्चकृत्वा ऽऽभ्युदयिकश्राद्धङ्कुर्या

दितिवोद्धव्यम् ॥ अथायुष्यजपः ॥ ॐआयुष्यम्वर्च्चस्यम् ॥ १ ॥ सं० अ० ३४ मं० ५० ॐनतद्रक्षाꣳसिनपिशाचास्तरन्तिदेवानामोजः प्रथमजꣳह्येतत् ॥ योबिभर्त्तिदाक्षायणꣳ हिरण्यꣳसदेवेषुकृणुतेदीर्ग्घमायुꣳसमनुष्येषुकृणुतेदीर्ग्घमायुः ॥ २ ॥ अ० ३४ मं० ५१ ॐयदाबध्नन्दाक्षायणाहिरण्यꣳशतानीकायसुमनस्यमानाः ॥ तन्मऽआबध्नामिशतशारदायायुष्मान्जरदष्टिर्यथासम् ॥ ३ ॥ अ० ३४ मं० ५२ आयुष्याणिचशान्त्यर्थंजप्त्वातत्रसमाहितः ॥ षड्भ्यःपितृभ्यस्तदनुभक्त्याश्राद्धमुपक्रमेत् ॥ अथनान्दीश्राद्धम् ॥ तच्चपार्वणश्राद्धविधिनाकुर्यात् ॥ इयांस्तुविशेषः ॥ प्राङ्मुखोऽत्रोपवीतीस्यादुपचारःप्रदक्षिणः ॥ तिलकार्यंयवैःकुर्याद्युग्मान्विप्रान्निमंत्रयेत् ॥ तिलोसीतिपदस्थानेयवोसीतिपदम्बदेत् ॥

स्वधयेतिपदस्थानेपुष्ट्याशब्दम्वदेदिह ॥ पितृनितिपदात्पूर्वंवदेन्नान्दीमुखानिति ॥ स्वधानमःपदस्थानेवदेत्स्वाहानमःपदम् ॥ मधुवाताइतिस्थानेउपास्मैगायतानरः ॥ पञ्चर्चःश्रावयित्वाक्षन्नितिचश्रावयेदृचम् अमूलाऋजवोदर्भाःकर्त्तव्याइहकर्मणि ॥ सम्बन्धनामरूपाणिवर्ज्जनीयानिधीमता॥ द्विर्द्विर्गन्धादिदातव्यन्नियमेनात्रकर्मणि॥ आभ्युदयिकश्राद्धङ्कदाभवतीतिनियममाह ॥ विष्णुपुराणे ॥ कन्यापुत्रविवाहे पुप्रवेशेनववेश्मनः ॥ शुभकर्मणिबालानाञ्चूडाकर्म्मादिकेतथा ॥ सीमन्तोन्नयनेचैवपुत्रादिमुखदर्शने ॥ नान्दीमुखान्पितृनादौतर्पयेत्प्रयतोगृही ॥ पुत्रादिमुखदर्शनेपुत्रजन्मनीत्यर्थः ॥ यावालिः ॥ यज्ञोद्वाहप्रतिष्ठासुमेखलावन्धमोक्षयोः ॥ पुत्रजन्मवृषोत्सर्गेवृद्धिश्राद्धंसमाचरेत् ॥ मातृश्राद्धन्तुपूर्वान्हेमध्यान्हे

पैतृकन्तथा ॥ ततोमातामहानाञ्चबृद्धौश्राद्धत्रयंस्मृतमितिहेमाद्र्यादिनिबन्धेउक्तम् ॥ तथा ॥ अलाभेभिन्नकालानान्नान्दीश्राद्धत्रयम्बुधः ॥ पूर्वेद्युर्वैप्रकुर्वीतपूर्वान्हे मातृपूर्वकमितिबृद्धमनुबचनम् ॥ साङ्कल्पिकेचसमन्त्रकावाहनाद्यग्नौकरणपिण्डदानबिधिबिकराक्षय्यस्वधावाचनप्रश्नेत्येतत्सप्तकम्बर्ज्ज्यम् ॥ कृतेनान्दीमुखेमध्ये नकुर्याद्द्वितयम्पुनः ॥ राजाभिषेकेकुर्वीततथैवपुत्रजन्मनीति ॥ पूर्वाह्णेसूत्रम् ॥ एतदाभ्युदयिकंश्राद्धंपूर्वाह्णेभवतिनपराह्णे ॥ पुत्रजन्मादौतत्कालमेव ॥ अथसाङ्कल्पिकाभ्युदयिकश्राद्धप्रयोगः ॥ श्राद्धदेशमागत्याचम्य ॥ प्राङ्मुखउदङ्मुखोवोपविशेत् ॥ सव्येनसर्वङ्कर्मकर्त्तव्यम् ॥ ऋजवएवकुशाः ॥ तिलकार्येयवादातव्याः ॥ ओंअपवित्रःपवित्रोवासर्वावस्थाङ्गतोपिवा ॥ यःस्मरेत्पुण्डरीकाक्षं

सवाह्याभ्यन्तरःशुचिः ॥ ओंपुण्डरीकाक्षःपुनातु ॥ इतिश्राद्धद्रव्याणिसिञ्चेत्
कुशोदकेन ॥ ततःकुशयवजलान्यादाय ॥ ओंअद्यामुकगोत्राणांनान्दीमुखा
नांमातृपितामहीप्रपितामहीनांतथामुकगोत्राणांनान्दीमुखानांपितृपितामहप्रपिता
महानान्तथाऽमुकगोत्राणान्नान्दीमुखानांमातामहप्रमातामहबृद्धप्रमातामहानामम
मुकाऽमुकशर्मणांसपत्नीकानाममुकगोत्रस्याऽमुकदेवप्रतिष्ठाकर्मनिमित्तकसाङ्कल्पि
केनबिधिनाभ्युदयिकश्राद्धमहङ्करिष्ये ॥ इतिसङ्कल्पङ्कृत्वा ॥ ततोगायत्री
न्त्रिर्जपेत् ॥ सत्यवसुसञ्ज्ञकाबिश्वेदेवानान्दीमुखाइदम्वःपाद्यंपादावनेजनंपादप्र
क्षालनंबृद्धिः ॥ अमुकगोत्राःनान्दीमुखाःमातृपितामहीप्रतितामह्यइदंवःपा
द्यंपादावनेजनंपादप्रक्षालनम्बृद्धिः॥ अमुकगोत्राःनान्दीमुखापितृपितामहप्रपिताम

हाःइदम्बःपाद्यम्पादावनेजनंपादप्रक्षालनम्बृद्धिः ॥ द्वितीयगोत्रानान्दीमुखाःमातामहप्रमातामहबृद्धप्रमातामहाःसपत्नीकाइदम्बःपाद्यंपादावनेजलंपादप्रक्षालनंबृद्धिः ॥ सत्यबसुसञ्ज्ञकाबिश्वेदेवानान्दीमुखाइदमासनम्बोनमः ॥ नान्दीश्राद्धेक्षणःक्रियताम् यथाप्राप्नुवंतोभवन्तस्तथाप्राप्नवामः ॥ अर्चाःपान्तु ॥ गन्धाःपान्तु ॥ अक्षताःपान्तु ॥ पुष्पाणिपान्तु ॥ ० सत्यबसुसञ्ज्ञकाबिश्वेदेवानान्दीमुखाइदंवोगन्धाद्यर्चनंस्वाहासम्पद्यताम्बृद्धिः ॥ अमुकगोत्रानान्दीमुखाःमातृपितामहीप्रपितामह्यइदम्बोगन्धाद्यर्चनंस्वाहासम्पद्यलाम्बृद्धिः ॥ अमुकगोत्राःनान्दीमुखाःपितृपितामहप्रपितामहाःइदम्बोगन्धाद्यर्चनंस्वाहासम्पद्यताम्बृद्धिः ॥३॥ द्वितीयगोत्रानान्दीमुखामातामहप्रमातामहवृद्धप्रमातामहाः सपत्नीकाइदम्बोगन्धाद्यर्चनंस्वाहासम्पद्यताम्ब

द्धिः ॥ ४ ॥ सत्यबसुसञ्ज्ञकाबिश्वेदेवानान्दीमुखाएतद्वोयुग्मब्राह्मणभोजनपर्याप्तान्ननिष्क्रयीभूतंद्रव्यममृतरूपेणस्वाहासम्पद्यताम्बृद्धिः ॥ अमुकगोत्रानान्दीमुखामातृपितामहीप्रपितामह्यएतद्वोयुग्मब्राह्मणभोजनपर्याप्तान्ननिष्क्रयीभूतन्द्रव्यममृतरूपेणस्वाहासम्पद्यताम्वृद्धिः ॥ २ ॥ अमुकगोत्राःनान्दीमुखाःपितृपितामहप्रपितामहाएतद्वोयुग्मब्राह्मणभोजनपर्याप्तान्ननिष्क्रयीभूतन्द्रव्यममृतरूपेणस्वाहासम्पद्यताम्बृद्धिः॥३॥द्वितीयगोत्रानान्दीमुखामातामहप्रमातामहवृद्धप्रमातामहाःसपत्नीकाएतद्वोयुग्मब्राह्मणभोजनपर्याप्तान्ननिष्क्रयीभूतन्द्रव्यममृतरूपेणस्वाहासम्पद्यताम्वृद्धिः॥ क्षीरयवजलानिदद्यात् ॥ सत्यवसुसञ्ज्ञकाबिश्वेदेवानान्दीमुखाःप्रीयन्ताम् ॥ १ ॥ अमुकगोत्रानान्दीमुखामातृपितामहीप्रपितामह्यःप्रीयन्ताम्॥ २ ॥ अमुकगोत्राःनान्दी

मुखाःपितृपितामहप्रपितामहाःप्रीयन्ताम् ॥३॥ द्वितीयगोत्रानान्दीमुखामातामहप्रमातामहवृद्धप्रमातामहाःसपत्नीकाःप्रीयन्ताम् ॥४॥ ततउँगोत्रन्नोवर्द्धतान्दातारोनोऽभिवर्द्धताम्वेदाःसन्ततिरेवच ॥ श्रद्धाचनोमाव्यगमद्बहुदेयञ्चनोऽस्त्वितिअन्नञ्चनोबहुभवेदतिथींश्चलभेमहि ॥ याचितारश्चनःसन्तु ॥ माचयाचिष्मकञ्चनएताःसत्याआशिषःसन्तु ॥ इत्याशीःप्रार्थयेत् ॥ सत्यवसुसञ्ज्ञकानाम्बिश्वेषान्देवानांकृतैतदाभ्युदयिकश्राद्धप्रतिष्ठार्थमिदन्द्राक्षामलकयवमूलनिष्क्रयीभूतन्द्रव्यंयथानामगोत्रायब्राह्मणायदक्षिणान्दातुमहमुत्सृजे ॥ अमुकगोत्राणान्नान्दीमुखानांमातृपितामहीप्रपितामहीनाङ्कृतैतदाभ्युदयिकश्राद्धप्रतिष्ठार्थमिदन्द्राक्षामलकयवमूलनिष्क्रयीभूतन्द्रव्यंयथानामगोत्रायब्राह्मणायदातुमहमुत्सृजे ॥२॥ अमुकगोत्राणान्नान्दीमुखानाम्पितृपितामहप्र

पितामहानाङ्कृतैतदाभ्युदयिकश्राद्धप्रातिष्ठार्थमिदन्द्राक्षामलकयवमूलनिष्क्रयीभूतं द्रव्यंयथानामगोत्रायब्राह्मणायदक्षिणान्दातुमहमुत्सृजे ॥३॥ द्वितीयगोत्राणांनान्दीमुखानांमातामहप्रमातामहवृद्धप्रमातामहानांसपत्नीकानांकृतैतदाभ्युदयिकश्राद्धप्रातिष्ठार्थमिदन्द्राक्षामलकयवमूलनिष्क्रयीभूतन्द्रव्यंयथानामगोत्रायब्राह्मणायदक्षिणांदातुमहमुत्सृजे ॥ ४ ॥ ॐउपास्मैगायतानरः पवमानायेन्दवे ॥ अभिदेवा २ँ ॥ ऽइयक्षते ॥ १ ॥ अ० ३३ मं० ६२ इडामग्ग्नेपुरुदꣳसꣳसानिङ्गोःशश्वत्तमꣳहवमानायसाध ॥ स्यान्न÷सूनुस्तनयोब्बिजावाग्ग्नेसातेसुमतिर्भूत्वस्मे ॥ २ ॥ सं०अ० १२ मं० ५१ ॐब्बाजेवाजेवतब्बाजिनोनोधनेषुब्बिप्प्राऽअमृताऽऋतज्ञाः॥ अस्यमद्ध्व÷पिबतमादयद्ध्वन्तृप्तायातपथिभिर्द्देवयानैः ॥ ३ ॥ सं० अ० २१

मं० ११ इतिपितृविसर्जनम् ॥ ॐविश्वेदेवाःप्रीयन्ताम् ॥ इतिदेवविसर्ज्जनम् ॥ आस्मिन्नान्दीश्राद्धेन्यूनातिरिक्तोयोविधिःसउपविष्टब्राह्मणानाम्वचनात्परिपूर्णोऽस्तु॥ अस्तुपरिपूर्णः ॥ इतिनान्दीश्राद्धम् ॥ शुभार्थीप्रथमान्तेनवृद्धौसङ्कल्पमाचरेत ॥ नषष्ठ्यायदिवाकुर्यात्महान्दोषोभिजायते ॥ १ ॥ इतिनमंतव्यम् ॥ शाखान्तरत्वादतएवरुद्रधरेणापिप्रतिज्ञासङ्कल्पोदक्षिणासङ्कल्पश्चषष्ठ्योक्तः ॥ अनस्मद्दृष्टशब्दानामरूपाणामगोत्रिणाम् ॥ अनाम्नामतिलाद्यैश्चनान्दीश्राद्धञ्चसव्यवत् ॥ अथविशेषाभ्युदयिकश्राद्धप्रयोगः ॥ स्वागतम्वःसुस्वागतम् ॥ पादप्रक्षालनम् ॥ नमोस्त्वनन्तायसहस्रमूर्त्तयेसहस्रपादाक्षिशिरोरुवाहवे ॥ सहस्रनाम्नेपुरुषायशाश्वतेसहस्रकोटीयुगधारिणेनमः ॥ नमःकमलनाभायनमस्तेजलशायिने ॥ नमस्तेकेशवा

नन्तवासुदेवनमोस्तुते ॥ निमन्त्रणम् ॥ पूगफलङ्गृहीत्वा मात्रादित्रयपित्रादित्रयमातामहादित्रयश्राद्धसम्बन्धिनांसत्यवसुनाम्नांविश्वेषान्देवानामद्यकर्त्तव्येश्राद्धेतत्रभवन्तोमयानिमन्त्रिताः ॥ निमन्त्रिताःस्मइतिप्रतिवचनम् ॥ ॐअक्रोधनैःशौचपरैःसततम्ब्रह्मचारिभिः ॥ भवितव्यम्भवद्भिश्चमयाचश्राद्धकारिणा ॥ सर्वायासविनिर्मुक्तैःकामक्रोधाविवर्ज्जितैः ॥ भवितव्यम्भवद्भिश्चमयाचश्राद्धकर्म्मणि ॥ पादार्घदानम् ॥ देवपात्रम्परिपूर्णम्परिपूर्णमस्तु ॥ ॐसहस्रशीर्षेति पूजनम् ॥ मात्रादित्रयपित्रादित्रयमातामहादित्रयश्राद्धसम्बन्धिनःसत्यवसुनामानोविश्वेदेवाएषवःपादार्घोस्तु ॥ ततोमातृब्राह्मणाआगतम्बःसुस्वागतम् ॥ पादप्रक्षालनम् ॥ ॐयत्फलङ्कपिलादानेकार्तिक्याञ्ज्येष्ठपुष्करे ॥ तत्फलम्पाण्डव

श्रेष्ठविप्राणाम्पादशौचने ॥ विप्रपादोदकक्लिन्नायावत्तिष्ठतिमेदिनी ॥ तावत्पुष्करपात्रेषुपिवन्तिपितरोजलम् ॥ निमन्त्रणम् ॥ अमुकगोत्राणान्नान्दीमुखानांमातृपितामहीप्रपितामहीनामद्यकर्त्तव्येआभ्युदयिकश्राद्धेतत्रभवन्तोमयानिमन्त्रिताःनिमन्त्रिताःस्मइतिप्रतिवचनम् ॥ अक्रोधनैरित्यादिपठेत् ॥ पादार्घदानम् ॥ मातृपात्रं संपन्नंसुसम्पन्नमस्तु ॥ ॐयादिव्याऽआपःपयसासम्बभूवुर्यान्तरिक्षाऽउत्पार्थिवीर्याहिरण्यवर्णायज्ञियास्तानऽआपःशिवाःसछंस्योनाःसुहवाभवन्तु ॥ अमुकगोत्रानान्दीमुखामातृपितामहीप्रपितामह्यःएषवःपादार्घोस्तु ॥ ॐपितृब्राह्मणाआगतम्बः सुस्वागतम् ॥ पादप्रक्षालनम् ॥ यत्फलङ्कपिलादानेतिपूर्ववत् ॥ निमन्त्रणम् ॥ पूगफलङ्गृहीत्वा ॥ अमुकगोत्राणान्नान्दीमुखानांपितृपितामहप्रपितामहानामद्यक

र्त्तव्येआभ्युदयिकश्राद्धेतत्रभवन्तोमयानिमन्त्रिताःनिमन्त्रिताःस्मइतिप्रतिवचनम् ॥ अक्रोधनैरित्यादिपठेत् ॥ पादार्घदानम् पितृपात्रंसम्पन्नंसुसम्पन्नमस्तु । यादिव्येतिपूजनम् ॥ अमुकगोत्रानान्दीमुखापितृपितामहप्रपितामहाःएषवःपादार्घोस्तु ॥ मातामहब्राह्मणाआगतम्वःसुस्वागतम् ॥ पादप्रक्षालनम् ॥ यत्फलङ्कपिलादानेतिपूर्ववत् ॥ निमन्त्रणम्पूगफलङ्गृहीत्वा ॥ अमुकगोत्राणान्नान्दीमुखानांमातामहप्रमातामह बृद्धप्रमातामहानांसपत्नीकानामद्यकर्त्तव्यआभ्युदीयकश्राद्धेतत्रभवन्तोमयानिमन्त्रिताःनिमन्त्रिताःस्मइतिप्रतिवचनम् ॥ अक्रोधनैरित्यादिपठेत् ॥ पादार्घदानम् ॥ मातामहपात्रंसम्पन्नंसुसम्पन्नमस्तु ॥ ॐयादिव्येतिपूजनम् ॥ अमुकगोत्रानान्दीमुखामातामहप्रमातामहबृद्धप्रमातामहाःसपत्नीकाःएषवःपादार्घोस्तु ॥

आचमनम् ॥ इदमाचमनीयम्विश्वेभ्योदेवेभ्योनमः ॥ इदमाचमनीयम्मातृभ्यःपितृभ्योमातामहेभ्यःस्वाहा ॥ इदमासनमास्यतामिति ॥ श्राद्धदेशोपवेशनमितिदैवे ॥ मातृपितृमातामहब्राह्मणाइमानिआसनानिआस्यन्तामास्महइतिप्रतिवचनम् ॥ श्राद्धेदीपप्रज्वलनम् ॥ आत्मासनम् ॥ कर्म्मपात्रस्यासनम् ॥ आसनेपात्रंपात्रेपवित्रेस्थइतिपवित्रधारणम् ॥ ॐप॒वित्रेस्थोवैष्ण॒व्यौसवि॒तुर्वः÷प्र॒सवऽउत्पुना॒म्यच्छिद्रेणप॒वित्रेण॒सूर्यस्यर॒श्मिभिः÷ ॥ १ ॥ सं० अ० १ मं० १२ इतिमन्त्रेणपवित्रद्वयप्रक्षेपः ॥ ॐशन्नोदेवीरितिजलम् ॥ तिलोसीतिपदस्थानेयवोसीतिपदंवदेत ॥ यवोसिसोमदैवत्योगोसवोदेवनिर्मितः ॥ प्रयत्नमद्भिःप्रकृतःपुष्ट्यानान्दीमुखान्पितॄन्लोकान्प्रीणाहिनःस्वाहा ॥ ॐयवोसीतियवान् ॥ गन्धपुष्पञ्चतूष्णीम् ॥ कर्मपात्रं

परिपूर्णमस्तु ॥ प्राणायामङ्कृत्वा ॥ अभ्युक्षणङ्कुर्यात् ॥ ॐअपवित्रःपवित्रेति
मन्त्रेणपुण्डरीकाक्षस्मरणम् ॥ ॐदेवताभ्यःपितृभ्यश्चमहायोगिभ्यएवच ॥ नमः
स्वाहायैस्वधायैनित्यमेवनमोनमः ॥ इतित्रिर्जपेत् ॥ सप्तव्याधादशार्णेषुमृगाः
कालञ्जरेगिरौ ॥ चक्रवाकाःशरद्वीपेहंसाःसरसिमानसे ॥ तेपिजाताःकुरुक्षेत्रेब्रा
ह्मणावेदपारगाः ॥ प्रस्थितादीर्घमद्ध्वानंयूयंकिमवसीदथ ॥ पञ्चक्रोशङ्गयाक्षे
त्रङ्क्रोशमेकङ्गयाशिरः ॥ यत्रयत्रस्मरिष्यामिपितॄणान्दत्तमक्षयम् ॥ श्राद्धारम्भे
गयान्ध्यात्वाध्यात्वादेवङ्गदाधरम् ॥ स्वान्नान्दीमुखान्पितॄन्मनसाध्यात्वाततःश्राद्ध
समारभेत् ॥ दिग्बन्धनम् ॥ यवकुशेन ॥ अग्निष्वात्ताःपितृगणाःप्राचींरक्षन्तु
मेदिशं ॥ तथावर्हिषदःपान्तु ॥ याम्यांयेपितरस्थिताःपान्तु ॥ प्रतीचीमाज्यपास्त

हूत्पान्तु ॥ उदीचीमपिसोमपाःपान्तु ॥ ऊर्द्ध्वञ्चैवार्यमारक्षेत्कव्यवाडनलोप्यधःपातु॥ रक्षोभूतपिशाचेभ्यस्तथैवासुरदोषतः ॥ सर्वतश्चाधिपस्तेषांयमोरक्षाङ्करोतुमे ॥ यवारक्षन्तुअसुरान् ॥ दर्भारक्षन्तुराक्षसान् ॥ पंक्तिम्वैश्रोत्रियोरक्षेदातिथिःसर्वतोवतु ॥ असुराद्यच्चारणहेतोरुदकस्पर्शनम् ॥ त्वम्वनेभ्यस्त्वमोषधीभ्यस्त्वन्नृणान्नृपते जायतेशुचिः ॥१॥ इतिमन्त्रेणवामकटौनीवीवन्धनम्॥प्रतिज्ञाङ्कुर्यात्॥अद्येहेत्यादि देशकालौस्मृत्वा ॥ अमुकगोत्राणान्नान्दीमुखानांमातृपितामहीप्रपितामहीनाममुकगोत्राणान्नान्दीमुखानां पितृपितामहप्रपितामहानाममुकगोत्राणान्नान्दीमुखानांमातामहप्रमातामहवृद्धप्रमातामहानाममुकदेव प्रतिष्ठाङ्कतयासत्यवसुविश्वेदेवपूर्वकमाभ्युदयिकश्राद्धप्रतिज्ञामहङ्करिष्ये ॥ ॐकुरुष्व ॥ दृष्टिनिपातादेर्दोषात्श्राद्धोपहाराणांपवित्र

तास्तु ॥ ॐअपहताऽअसुरारक्षांᳬसिव्वेदिषदः ॥ इतिमन्त्रेणयवान्विकीर्य ॥ गायत्रींजपेत् ॥ अथकुशासनम् ॥ मात्रादित्रयपित्रादित्रयमातामहादित्रयश्राद्धसम्बन्धिनांसत्यवसुनाम्नाम्बिश्वेषान्देवानामिदङ्कुशासनमस्तु॥अमुकगोत्राणान्नान्दीसुखानांमातृपितामहीप्रपितामहीनामिमानिकुशासनानिसन्तु ॥ अमुकगोत्राणान्नान्दीमुखानांपितृपितामहप्रपितामहानामिमानिकुशासनानिसन्तु ॥ द्वितीयगोत्राणान्नान्दीमुखानांमातामहप्रमातामहवृद्धप्रमातामहानामिमानिकुशासनानिसन्तु ॥ अथावाहनम् ॥ यवानादाय ॥ मात्रादित्रयपित्रादित्रयमातामहादित्रयश्राद्धसम्बन्धिनः सत्यवसुनाम्नोविश्वान्देवानावाहयिष्ये ॥ ॐवाहय ॥ ॐव्विश्वेदेवासऽआगत श्शृणुतामऽइमंहवम् ॥ एदम्बर्हिर्निषीदत सं० अ० ७ मं० ३४ इत्यावाह

यवान्विकिरेत ॥ प्रार्थयेत् ॥ ॐव्विश्वेदेवा;शृणुतेमछंहवम्मेयेऽअन्तरिक्षेयऽउपद्यविष्ठ ॥ येऽअंग्निजिह्वाऽउतवायजंत्राऽआसद्यास्मिन्बर्हिषिमादयद्ध्वम् ॥ २ ॥ सं० अ० ३३ मं० ५३ आगच्छन्तुमहाभागाविश्वेदेवामहाबलाः ॥ येयत्रविहिताः श्राद्धेसावधानाभवन्तुते ॥ इतिप्रार्थयेत् ॥ यवपूगफलान्यादाय ॥ अमुकगोत्रा नान्दीमुखाःमातृपितामहीप्रपितामहीःआवाहयिष्ये ॥ ॐआवाहय ॥ अमुकगोत्रान् नान्दीमुखान्पितृपितामहप्रपितामहान्आवाहयिष्ये ॥ ॐआवाहय ॥ द्वितीय गोत्रान्नान्दीमुखान्मातामहप्रमातामहवृद्धप्रमातामहान्सपत्नीकान्आवाहयिष्ये ॥ ॐआवाहय ॥ ॐउशन्तस्त्वानिधीमह्युशन्तःसमिधीमहि ॥ उशन्नुशतऽआवह नान्दीमुखान्पितॄन्हविषेअत्तवे ॥ १ ॥ सं० अं० १९ मं० ७० ॐआयन्तुन;

पि॒तरं÷सो॒म्यासोऽग्निष्वा॒त्ताःप॒थिभि॑र्दे॒वयानैः ॥ अ॒स्मिन्न्य॒ज्ञेपुष्ट्यामद॒न्तोधि
ब्रुवन्तु॒तेवन्त्व॒स्मान् ॥ सं० अं० १९ मं० ५८ ततःपूर्वोक्तमन्त्रैःहस्तार्घपात्रपूर
णम् ॥ ॐपवित्रेस्थइतिपवित्रम् ॥ ॐशन्नोदेवीरितिजलम् ॥ ॐयवोसीतिय
वान् ॥ ॐयवोसिसोमदेवत्यइतितिलस्थानेयवान् ॥ गन्धादिकन्तूष्णीं ॥ देवपात्रं
सम्पन्नंसुसम्पन्नं ॥ मातृपितृमातामहपात्राणिपरिपूर्णानिसन्तु ॥ पवित्रेद्विजकरे
दत्वा ॥ ॐसहस्रशीर्षेतिपूजनम् ॥ मात्रादित्रयपित्रादित्रयमातामहादित्रयश्रा
द्धसम्बन्धिनःसत्यवसुनामानोविश्वेदेवाएषहस्तार्घोवोनमः ॥ अर्घेपुनःप्रत्यर्घमस्तु ॥
उदकस्पर्शनमितिसर्वत्र ॥ ॐयादिव्येतिसर्वत्रपूजनम् ॥ अमुकगोत्रेनान्दीमुखे
मातःएषहस्तार्घस्तेनमः॥अर्घे०॥अमुकगोत्रेनान्दीमुखेपितामहिएषहस्तार्घस्तेनमः॥

अर्घे० ॥ अमुकगोत्रेनान्दीमुखेप्रपितामाहिएषहस्तार्घस्तेनमः ॥ अर्घे० ॥ अमुकगोत्रनान्दीमुखपितःएषहस्तार्घस्तेनमः ॥ अर्घे० ॥ अमुकगोत्रनान्दीमुखपितामहएषहस्तार्घस्तेनमः ॥ अर्घे० ॥ अमुकगोत्रनान्दीमुखप्रपितामहएषहस्तार्घस्तेनमः ॥ अर्घे० ॥ द्वितीयगोत्रनान्दीमुखमातामहएषहस्तार्घस्तेनमः ॥ अर्घे० अमुकगोत्रनान्दीमुखप्रमातामहएषहस्तार्घस्तेनमः ॥ अर्घे० ॥ अमुकगोत्रनान्दीमुखवृद्धप्रमातामहएषहस्तार्घस्तेनमः ॥ अर्घे० ॥ ततःप्रथमेपात्रेसंस्रवान्समवनीय ॥ तज्जलम्बैश्वदैविकपात्रेनीत्वा ॥ तदेकंमातृपात्रंपँक्तिमूर्द्धन्यतोबामभागे नान्दीमुखेभ्यःमातृभ्यःस्थानमसीत्युक्त्वान्युब्जीकरणन्तदुपरिस्वधावाचनीयकुशत्रयनिधानम् ॥ अन्यानिपात्राणिअसञ्चरस्थलेनिधानम् ॥ गन्धादिदानम् ॥ ॐ

अद्य० मात्रादित्रयपित्रादित्रयमातामहादित्रयश्राद्धसंवन्धिनःसत्यवसुनामानोविश्वेदेवाएतान्यनुलेपनाक्षतपुष्पधूपदीपनैवेद्यताम्बूलयज्ञोपवीतवासांसिवोनमः ॥ ॐ अद्याऽमुकगोत्रानान्दीमुखामातृपितामहीप्रपितामह्यः अमुकगोत्रानान्दीमुखाःपितृपितामहप्रपितामहाः अमुकगोत्रानान्दीमुखाःमातामहप्रमातामहवृद्धप्रमातामहाः सपत्नीकाःआभ्युदयिकश्राद्धेएतान्यनुलेपनाक्षतपुष्पधूपदीपनैवेद्यताम्बूलयज्ञोपवीतवासांसिनवधाविभज्यताभ्यस्तेभ्यस्तेभ्योनमःस्वाहाकल्याणम्वृद्धिः ॥ आचम्य ॥ अर्चनविधेःसर्वपरिपूर्णपरिपूर्णमस्तु ॥ ॐअस्तुपरिपूर्णः ॥ पूर्ववैश्वदैविकपात्रघृतोदकेनस्वमूर्द्धाभिषेचनम् ॥ इदंहस्तप्रक्षालनोदकम्बिश्वेभ्योदेवेभ्योनमः ॥ इदं हस्तप्रक्षालनोदकंमातृभ्यःपितृभ्योमाताहेभ्योनमः ॥ पात्राणिनिधायभस्मनाजले

नवापात्रावलीर्वेष्टयित्वा ॥ ॐयथाचक्रायुधोविष्णुस्त्रैलोक्यम्परिरक्षति ॥ एवम्मण्डलमस्मैतत्सर्वभूतानिरक्षतु ॥ घृताक्तमन्नमादयप्रयच्छति ॥ ॐविश्वेदेवाब्राह्मणाःअग्नौकरणङ्करिष्ये ॥ ॐकुरुष्व ॥ मातृपितृमातामहब्राह्मणाअग्नौकरणङ्करिष्येॐकुरुष्व ॥ अग्नयेकव्यवाहनायस्वाहा ॥ इदमग्नयेकव्यवाहनाय ॥ सोमायपितृमतेस्वाहा ॥ इदꣳसोमायपितृमते ॥ तृतीयंतूष्णींइत्याहुतिञ्जुहुयात् ॥ अन्नपरिवेषणम् ॥ वामहस्तोपरिदक्षिणकरङ्कृत्वा ॥ दैवपात्रालम्भनङ्कृत्वा ॥ ॐपृथिवीतेपात्रंद्यौरपिधानंब्राह्मणस्यमुखेअमृतेअमृतञ्जुहोमिस्वाहा ॥ ॐइ॒दम्विष्णु॒र्विच॑क्रमे॒त्रे॒धानिद॑धेप॒दम् ॥ समू॑ढमस्यपाꣳसु॒रे सं० अ० ५ मं० १५ इत्यन्नेवगाह्यविष्णोहव्यꣳरक्षइदमन्नंइमाआपःइदमाज्यंइदमैक्षमैतत्सर्वंहविः ॥ उंओ

षंयधःसमंवदन्तसोमेनसहराज्ञां ॥ यस्मैकृणोतिब्राह्मणस्तछंराजन्पारयामसीतियवान्विकीर्य ॥ सं० अ० १२ मं० ९६ ॥ ॐअद्य०मात्रादित्रयपित्रादित्रयमातामहादित्रयश्राद्धसम्बन्धिनःसत्यवसुनामानोविश्वेदेवाइदमन्नङ्घृताद्युपस्करसहितमुपनीतमुपनेष्यमाणञ्चकुशवटब्राह्मणभोजनतृप्तिपर्याप्तम्वोनमः ॥ दक्षिणोपरिवामकरङ्कृत्वामातृपितृमातामहपात्रालंभनङ्कुर्यात् ॥ ओंपृथिवीतेपात्रमितिजप्त्वाअमृतञ्जुहोमिस्वाहा ॥ इदम्बिष्णुरित्यन्नेवगाह्य ॥ ओंबिष्णोकव्यछंरक्ष ॥ इदमन्नमिमाआपःइदमाज्यंइदमैक्षवमेतत्सर्वंकव्यम् ॥ ओंअपहताऽअसुरारक्षांछंसिवेदिषदः ॥ सं० अ० २ मं० २९ इत्यर्द्धर्चेनयवान्विकीर्य ॥ ओंअद्यामुकगोत्रानान्दीमुखामातृपितामहीप्रपितामह्यःअमुकगोत्रानान्दीमुखाःपितृपितामहप्रपितामहाःअमुक

गोत्रानान्दीमुखाःमातामहप्रमातामहवृद्धप्रमातामहाःसपत्नीकाःइदमन्नङ्घृताद्युपस्करसहितमुपनीतमुपनेष्यमाणञ्चकुशवटब्राह्मणभोजनपर्याप्तन्नवधाविभज्यवः स्वाहा नमःकल्याणम्वृद्धिः ॥ इदम्वःआपोशानदानामित्युभयत्र ॥ अमृतञ्जुषध्वं अमृतञ्जुषस्वेत्युभयत्र ॥ नमोदेवेभ्यइतिदेवपात्राग्रेप्रागग्राम्वारिधारांदद्यात् ॥ स्वाहामातृभ्यःपितृभ्यःमातामहेभ्यइति॥मात्रादिपात्राग्रेदक्षिणाग्राङ्घृतधारांदद्यात्॥ अत्रपितृमन्त्रजपोनास्ति ॥ नचास्मत्सुजपेदत्रकदाचित्पितृसंहितामितिछान्दोगपारिशिष्टात् ॥ अथविकिरासनंपूर्वेउत्तरेवा ॥ आमगर्भहतायेचपापकर्मरताश्चये ॥ तेषाङ्कुशासनंदत्तन्विकिरञ्चाभ्युदायिके ॥ विकिरपिण्डदानम् ॥ असोमपाश्चये जीवापूतभागाद्बहिःकृताः तेषामन्नंप्रदास्यामिविकिरञ्चाभ्युदायिकम् ॥ इतिमन्त्रा

भ्यांविकिराशनंविकिरदानमिच्छंति ॥ कुशत्यागःहस्तौपादौप्रक्षाल्याचम्य ॥ चुलु
कदानम् ॥ इदम्बःप्रत्यपोशानमित्युभयत्र ॥ मधुवाताइतित्र्यृचस्थानेउपास्मैगा
यतानरःपञ्चर्चःअक्षन्नमीमदन्तेत्येकांत्र्यृचंपठेत् ॥ तत्रमन्त्राः ॥ ॐउपास्मैगायता
नरःपवमानायेन्दवे ॥ अभिदेवाँ २ ॥ ऽ इयक्षते ॥ १ अ० ३३ मं० ६२
ॐयेत्वाहिहत्येमघवन्नवर्द्धन्येशाम्बरेहरिवोयेगविष्टौ ॥ येत्वानूनमनुमदन्तिविप्राः
पिवेन्दसोमछं सगणोमरुद्भिः ॥ २ ॥ सं० अ० ३३ मं० ६३ ॐजनिष्ठाऽउ
ग्रः सहसेतुरायमन्द्रऽओजिष्ठोबहुलाभिमानः ॥ अवर्द्धन्निन्द्रम्मरुतश्चिदत्रमाताय
द्वीरन्दधनद्धनिष्ठा ॥ वा० सं० ॥ अ० ३३ मं० ६४ ॐआतूनऽइन्द्रवृत्रहन्न
स्माकमर्द्धमागहि ॥ महान्महीभिरूतिभिः ॥ ४ ॥ वा० सं० अ० ३३ मं० ६५

ॐत्वमि॑न्द्रप्रतू॑र्तिष्व॒भिविश्वा॑ऽअसि॒स्पृध॑ः ॥ अ॒श॒स्ति॒हाज॑नि॒ताविश्व॒तूर॑सि॒त्वन्तू॒र्य॑तरुष्य॒तः । ५ । वा० सं० अ० ३३ मं० ६६ । ॐअक्ष॒न्नमी॑मदन्त॒ह्यव॑प्रि॒याऽअ॑धूषत ॥ अस्तो॑षत॒स्वभा॑नवो॒विप्रा॒नवि॑ष्ठयाम॒तीयोजा॒न्विन्द्र॑ते॒हरी॑ ॥ ६ ॥ वा० । सं० । अ० ३ ॥ मं० । ५१ । तृप्ताःस्थइत्यन्नसंपन्नमितिवदेत् ॥ पिण्डदानार्थंवेदिकाकरणम् ॥ वेदिकालेपनम् ॥ अयोध्यामथुरामायेत्यादिपठेत् ॥ अप॑हता॒ऽअसु॑रा॒रक्षा॑ꣳसिवेदि॒षद॑ः ॥ इतित्रिःरेखाकरणम् ॥ ॐयेरू॒पाणि॑प्रतिमु॒ञ्चमा॑ना॒ऽअसु॑रा॒ःसन्त॑ःस्व॒धया॒चर॑न्ति ॥ प॒रा॒पुरो॑नि॒पुरो॒येभर॑न्त्य॒ग्निष्टान्लो॒कात्प्रणु॑दा॒त्यस्मात् ॥ वा० । सं० । अ० । २ । मं० ३० इत्युल्मुकधारणम् ॥ अवनेजनम् ॥ अमुकगोत्रेलान्दीमुखेमातःपिण्डासनेअवलेनिक्ष्व ॥ अमुकगोत्रेनान्दी

मुखेपितामहिपिण्डासनेअवनेनिक्ष्व ॥ अमुकगोत्रेनान्दीमुखेप्रपितामहिपिण्डासनेअवनेनिक्ष्व ॥ अमुकगोत्रनान्दीमुखपितःपिण्डासनेअवनेनिक्ष्व ॥ अमुकगोत्रनान्दीमुखपितामहपिण्डासनेअंवनेनिक्ष्व ॥ अमुकगोत्रनान्दीमुखप्रपितामहपिण्डासनेअवनेनिक्ष्व ॥ अमुकगोत्रनान्दीमुखमातामहपिण्डासनेअवनेनिक्ष्व ॥ अमुकगोत्रनान्दीमुखप्रमातामहपिण्डासनेअवनेनिक्ष्व ॥ अमुकगोत्रनान्दीमुखवृद्धप्रमातामहपिण्डासनेअवनेनिक्ष्व ॥ कुशास्तरणम् ॥ पिण्डदानम् ॥ अमुकगोत्रेनान्दीमुखेमातःअक्षयतृप्तिहेतवेएतद्दधिवदराक्षतामिश्रमन्नन्तेस्वाहानमःकल्याणम्वृद्धिः ॥ अमुकगोत्रेनान्दीमुखेपितामहिअक्षयतृप्तिहेतवेएतद्दधिवदराक्षतामिश्रमन्नन्तेस्वाहानमःकल्याणम्वृद्धिः ॥ अमुकगोत्रेनान्दीमुखेप्रपितामहिअक्षयतृप्तिहेतवेएतद्दधिव

दराक्षतामिश्रमन्नन्तेस्वाहानमःकल्याणम्बृद्धिः ॥ अमुकगोत्रनान्दीमुखपितःअक्षयतृप्तिहेतवेएतद्दधिवदराक्षतामिश्रमन्नन्तेस्वाहानमःकल्याणम्बृद्धिः ॥ अमुकगोत्रनान्दीमुखापितामहअक्षयतृप्तिहेतवेएतद्दधिवदराक्षतामिश्रमन्नन्तेस्वाहानमः कल्याणम्बृद्धिः ॥ अमुकगोत्रनान्दीमुखप्रपितामहअक्षयतृप्तिहेतवेएतद्दधिवदराक्षतमिश्रमन्नन्तेस्वाहानमःकल्याणम्बृद्धिः॥अमुकगोत्रनान्दीमुखमातामहअक्षयतृप्तिहेतवेएतद्दधिवदराक्षतामिश्रमन्नन्तेस्वाहानमःकल्याणम्बृद्धिः। अमुकगोत्रनान्दीमुखप्रमातामहअक्षयतृप्तिहेतवेएतद्दधिवदराक्षतामिश्रमन्नन्तेस्वाहानमःकल्याणम्बृद्धिः।अमुकगोत्रनान्दीमुखबृद्धप्रमातामहअक्षयतृप्तिहेतवेएतद्दधिवदराक्षतामिश्रमन्नन्तेस्वाहानमः कल्याणम्बृद्धिः ॥ नीवींविसृज्य ॥ षडञ्जलिकरणम् ॥ ओंनमोव;पितरोरसायनमोव;

पितरःशोषायनमोवः;पितरोजीवायनमोवः; पितरःस्वधायैनमोवः;पितरोघोरायनमोवः; पितरोमन्न्यवेनमोवः;पितरःपितरोनमोवोगृहान्न÷पितरोदत्तसतोव÷पितरोदेष्मैतद्व÷पितरोवासऽआधत्त ॥ १ ॥ वा० । सं० । अ० । २ । मं० । ३२ ॥ इतिमन्त्रेणषडञ्जलिकरणम् ॥ ॐआधत्तपितरोगर्भङ्कुमारम्पुष्करस्रजम् सं० अ० २ मं०३३॥ इत्यर्द्धेनसूत्रदानम् ॥ ऊर्ज्जकरणम् ॥ ॐऊर्ज्जम्वहन्तीरमृतङ्घृतम्पय÷कीलालम्परिस्रुतम् ॥ स्वधास्थतर्प्पयतमेपितॄन् ॥ १ वाजसने० सं० अ० २ मं० ३४ इतिमन्त्रेणऊर्ज्जकरणम् ॥ देवताभ्यइतित्रिर्ज्जपेत् ॥ पिंडार्च्चा. ॥ अमुकगोत्राःनान्दीमुखाःमातृपितामहीप्रपितामह्यः अमुकगोत्राःनान्दीमुखाःपितृपितामहप्रपितामहाः अमुकगोत्राःनान्दीमुखाः मातामहप्रमातामहवृद्धप्रमातामहाः स

पत्नीकाःपिण्डार्चनाविधौएतान्यनुलेपनपुष्पाक्षतधूपदीपनैवेद्यताम्बूलपूगफलयज्ञोपवीतवासांसिनवधाविभज्यताभ्यस्तेभ्यस्तेभ्यःस्वाहानमःकल्याणम्वृद्धिः ॥ इदमाचमनीयंमातृभ्यःपितृभ्यःमातामहेभ्यःस्वाहा ॥ सर्वेषाम्वाग्विसर्गश्च ॥ कर्मपात्रोदकेनसुप्रोक्षितमस्तुइतितदग्रभूमिन्निषिञ्चेत् ॥ शिवाआपःसन्त्वितिकुशजलदानम् ॥ सौमनस्यमस्त्वितिपुष्पम् ॥ अक्षतञ्चारिष्टञ्चास्त्वितियवान् ॥ ततोमातृभ्योदद्यात् ॥ पिंडाग्रभूमिप्रोक्षणाभावोविशेषः ॥ ततःपूर्ववैश्वदैविकपात्रोदकेनस्वमूर्द्धाभिषेचनम्॥ अस्मत्कुलेदीर्घमायुरस्तुशान्तिरस्तुवृद्धिरस्तुयच्छ्रेयस्तदस्तुयत्पापरोगस्तत्प्रणश्यतुद्विपदेभ्यश्चतुष्पदेभ्यःशान्तिःश्रीर्भवतु ॥ ततोऽक्षयस्थानेनान्दीमुखाःमातरःपितरःमातामहाःसन्तुसन्तु॥ॐगोत्रन्नोवर्द्धतांदातारोनोभिवर्द्धन्तांवेदाःसंततिरेवचश्रद्धाच

नेनाऽव्यगमत्मागात्वहुदेयञ्चनोस्तुतथास्तु ॥ अन्नञ्चनोबहुभवेत्भवतु ॥ अतिथींश्चलभेमहिलभद्ध्वंयाचितारश्चनःसन्तुसन्तु ॥ मास्मयाचिष्मकञ्चनमायाचेथाःएताएवाशिषःसन्तु ॥ आयुष्मान्धनवान्पुत्रवान् ॥ तिलककरणम् ॥ यङ्कामङ्कामयतेसोस्मैकामःसमृद्ध्यते ॥ दीर्घायुत्वायवलायव्वर्च्चसेसुप्रजास्त्वाथसहसाऽअथोजीवशरदःशतम् ॥ ततःस्वधावाचनीयकुशानादायपॅङ्क्तिमद्ध्येनिःक्षिपेत् ॥ स्वधाम्वाचयिष्येइतिपृच्छति ॥ वाच्यतामितितैरुक्ते ॥ मातृभ्यःपितृभ्योमातामहेभ्यःस्वधोच्यतामस्तुस्वाहा ॥ उत्तानम्पात्रङ्कृत्वा ॥ आस्तृतकुशाग्राणिचालयेत् ॥ नान्दीमुखानांमातृणांपितृणांमातामहानांस्वर्गेवासः ॥ मात्रादित्रयपित्रादित्रयमातामहादित्रयश्राद्धसंवन्धिनांसत्यवसुनाम्नांविश्वेषान्देवानाङ्कृतैत

दाभ्युदैकश्राद्धप्रतिष्ठार्थमिदंद्राक्षामलकयवमूलनिष्कयीभूतन्द्रव्यंसुवर्णमग्निदैवतंयथानामगोत्रायब्राह्मणायदक्षिणान्दातुमहमुत्सृजे ॥ अमुकगोत्राणान्नान्दीमुखानांमातृपितामहीप्रपितामहीनाममुकगोत्राणान्नांदीमुखानां पितृपितामहप्रपितामहानाममुकगोत्राणांनान्दीमुखानांमातामहप्रमातामहवृद्धप्रमातामहानांसपत्नीकानांकृतैतदाभ्युदयिकश्राद्धप्रतिष्ठार्थमिदंद्राक्षामलकयवमूलनिष्कयीभूतंद्रव्यंरजतञ्चन्द्रदैवतंयथानामगोत्रेभ्योब्राह्मणेभ्योनवधाविभज्यदक्षिणान्दातुमहमुत्सृजे ॥ अस्याभ्युदयिकश्राद्धविधेर्न्यूनातिरिक्तंयत्कृतंतत्सुकृतमस्तु ॥ यन्नकृतन्तद्विष्णोःप्रसादाद्ब्राह्मणवचनात्सर्वम्विधेःपरिपूर्णंपरिपूर्णमस्तु ॥ शमीपत्रप्रमाणेनपिंडन्दद्याद्गयाशिरे ॥ उद्धरेत्सप्तगोत्राणिकुलमेकोत्तरंशतम् ॥ पिण्डानामुद्धरणं ॥ ॐअथनीवीमुद्गृह्य

नमस्करोतिपितृदेवत्यावैनीविस्तस्मान्नीविमुद्वृह्यनमस्करोतियज्ञोवैनमोयाज्ञियाना-
नेतत्करोतिषट्कृत्योनमस्करोतिषड्वाऽऋतवऽऋतवः पितरस्तस्मात्षट्कृत्योनम
स्करोतिगृहान्नःपितरोदत्तेतिगृहाणाछंहपितरऽईशतऽएषोऽएतस्याशीः कर्म्मणोथा
वजिग्घ्रातिप्रत्यवधायपिण्डान्सयजमानभागोग्नौसकृदाच्छिन्नानभ्यादधातिपुनरुल्मुक
मपिसृजतितद्होवाचकहोडःकौषीतकिः ॥ १ ॥ कां० प्र० ब्रा० मं०
राज्यलक्ष्मीम्बर्द्धयन्त्वितिराज्यलक्ष्मीङ्गृहीत्वा ॥ स्थानपूजा ॥ शङ्खचक्राभ्यान्नमः
ॐव्व॒स॒न्ताय॑क॒पिञ्ज॑ला॒नाल॑भतेग्ग्रीष्माय॑कल॒विङ्का॑न्व॒र्षाभ्य॑स्ति॒त्तिरी॑ञ्छ॒रदे॒वर्त्ति
काहे॒मन्ता॒यकक॑रा॒ञ्छिशि॑रा॒यव्विक॑करान्॥ १ ॥ वा० । सं० । अ० । २४ मं० । २०
इतिपठित्वावसन्तादिषट्ऋतुभ्योनमःयवान्क्षिपेत् ॥ हेमन्तायनमस्तुभ्यंशिशिरा

यनमोनमः ॥ वसन्तायनमस्तुभ्यङ्ग्रीष्मायचनमोनमः ॥ वर्षाभ्यश्चशरत्सञ्ज्ञाधर्तवेचनमोनमः ॥ माससम्बत्सरेभ्यश्चदिवसेभ्योनमोनमः ॥ पिण्डानुत्थाप्यवामस्कन्धेनिधाय ॥ आघ्रायपुनस्तथैववेद्यान्निदध्यात् ॥ विसर्जनम् ॥ मातृब्राह्मणाःपितृब्राह्मणाःमातामहब्राह्मणाःस्वस्तिभवन्तोब्रुवन्तु ॥ ॐस्वस्ति ॥ ॐवाजेवाजेवतव्वाजिनोनोधनेषुव्विप्राऽअमृताऽऋतज्ञा; ॥ अस्यमद्ध्वं÷पिबतमादयद्ध्वन्तृप्तायातपथिभिर्देवयानैः ॥ १ ॥ वा० । सं० । अ० । २१ । मं० । ११ ॥ ॐविश्वेदेवाःस्वस्तिभवन्तोब्रुवन्तु ॥ ॐस्वस्ति ॥ ॐदेवागातुव्विदोगातुम्व्वित्वागातुमित ॥ मनसस्पतऽइमन्देवयज्ञꣳस्वाहाव्वातेधा; ॥१॥ वा०।सं०।अ०।८मं०।२१॥ आमावाजस्येतिकर्मपात्रजलेनप्रदक्षिणीकरणम् ॥ ॐआमाव्वाजस्यप्रसवोजगम्म्या

देमेद्यावा॑पृथि॒वीव्वि॒श्वरू॑पे ॥ आमा॑गन्ताम्पि॒तरा॑म्मात॒रा॑चा॒मा॒सोमो॑ऽअमृत॒त्वेन॑ग
म्म्यात् ॥ १ ॥ वा० । सं० । अ० । ९ । मं० । २९ ॥ आचमनन्दीपन्निर्वाप्य ॥
देवताभ्यइतित्रिर्जप्त्वा ॥ सूर्याञ्जलिंदत्वा ॥ आशिषःप्रतिगृह्णीयात् ॥ प्रमादा
त्कुर्वताङ्कर्मप्रच्यवेताद्ध्वरेषुयत् ॥ स्मरणादेवतद्विष्णोःसम्पूर्णस्यादितिस्मृतिः ॥ १ ॥
यस्यस्मृत्याचनामोक्त्यातपोयज्ञक्रियादिषु ॥ न्यूनंसम्पूर्णतांयातुसद्योवन्देतमच्यु
तम् ॥ २ ॥ यःकश्चित्पितृरूपेणातिष्ठतेपरमेश्वरः ॥ सोयंश्राद्धप्रदानेनलभतान्तृ
प्तिमुत्तमाम् ॥ ३ ॥ यदसाङ्गङ्कृतङ्कर्मजानतावाप्यजानता ॥ साङ्गम्भवतुतत्स
र्वंहरेर्नामानुकीर्त्तनात ॥ ॐविष्णवेनमः ॥ इत्याभ्युदयिकश्राद्धप्रयोगः ॥ अथा
चार्यादीनाम्बरणमाह ॥ तदुक्तंमत्स्यपुराणे ॥ शुभास्तत्राष्टहोतारोद्वारपालास्तथाष्ट

वै ॥ अष्टौतुजापकाःकार्यावेदवेदाङ्गपारगाः ॥ हेमालङ्कारिणःकार्याद्विजावैपञ्चविंशतिः ॥ ऋत्विग्भ्योदेयमुक्तम् ॥ लिङ्गपुराणे ॥ वस्त्रयुग्मन्तथाप्पूरङ्केयूरङ्कर्णभूषणम् ॥ अंगुलीभूषणञ्चैवमणिवन्धस्यभूषणम् ॥ कण्ठस्याभरणंदेयम्प्रारम्भेधर्मकर्मणः ॥ पुरोहितायदत्त्वाथऋत्विग्भ्यश्चापिदापयेत् ॥ आपःपूर्यन्तेअस्मान्नितिअप्पूरञ्जलपात्रङ्कमण्डलुमित्यर्थः ॥ वसिष्ठः ॥ षोडशंब्राह्मणान्शुद्धान्दम्भानृतविवर्ज्जितान् ॥ तेषांमद्ध्येश्रेष्ठतममाचार्यन्तुप्रकल्पयेत् ॥ अथाचार्यवरणम् ॥ आचार्यस्यदक्षिणजानुंस्पृष्ट्वापठेदेवंसर्वत्रब्रह्मादिवरणेष्वपिवोद्धव्यम् ॥ आचार्यस्यसम्पूजादिकम्विधाय ॥ ॐअंद्येहेत्यादि० अमुकगोत्रोत्पन्नोऽमुकप्रवरान्वितोऽमुकशर्मायजमानोऽमुकगोत्रोत्पन्नममुकप्रवरान्वितंशुक्लयजुर्वेदान्तर्गतमाध्यन्दिनीय

शाषाध्यायिनममुकशर्म्माणंब्राह्मणमस्मिन्नमुकदेवप्रतिष्ठाकर्मणिहेमकुण्डलद्वयकेयूरद्वयकटकद्वयकण्ठाभरणांगुलीयकवस्त्रयुग्मरूपालङ्करणादिद्विगुणसुवर्णघटितमलङ्कारयुक्तंगुणवन्तंआचार्यत्वेनत्वामहम्वृणे ॥ वृतोस्मीतिप्रतिवचनम् ॥ प्रार्थना ॥ मन्त्रमूर्तिर्भवान्नाथसंसारोच्छेदकारकः ॥ देवपूजार्होयथास्यात्कुरुधर्मोद्धृतिञ्चनः ॥ संसारभयभीतेनअयंयज्ञःसुभक्तितः ॥ प्रारब्धस्त्वत्प्रसादेननिर्विघ्नंमेभवत्विति ॥१॥ आचार्यस्तुयथास्वर्गेशक्रादीनाम्बृहस्पतिः ॥ तथात्वंममयज्ञेऽस्मिन्नाचार्योभवसुव्रत ॥ ॐबृहस्पतेऽअतियदर्योऽअर्हाद्द्युमद्विभातिक्क्रतुमज्जनेषु ॥ यद्दीदयच्छवसऽऋतप्प्रजाततदस्मासुद्द्रविणन्धेहिचित्रम् ॥ सं० अ० २६ मं० ३ गृहीत्वातुकराङ्गुष्ठंयजमानःपठेदिदम् ॥ अस्मिन्नमुकदेवप्रतिष्ठाकर्मसाधनार्थंत्वमाचा

र्योभव ॥ ॐभवामीतितेनोक्ते ॥ अथब्रह्मवरणम् ॥ ब्रह्मणंनमःसम्पूजादिकंविधाय ॥ ॐअद्येहेत्यादि० अमुकगोत्रोत्पन्नोऽमुकप्रवरान्वितोऽमुकशर्मायजमानोऽमुकंगोत्रोत्पन्नममुकप्रवरान्वितंशुक्लयजुर्वेदान्तर्गतमाध्यन्दिनीयशाखाध्यायिनममुकशर्माणंब्राह्मणमस्मिन्नमुकदेवप्रतिष्ठाकर्म्मणिब्रह्मत्वेनत्वामहम्वृणे ॥ वृतोस्मीतिप्रतिवचनम् ॥ वद्धाञ्जलिःप्रार्थना ॥ यथाचतुर्मुखोब्रह्मासर्वलोकपितामहः ॥ तथात्वंममयज्ञेस्मिन्ब्रह्माभवद्विजोत्तम ॥ १ ॥ ॐब्रह्म॑ज॒ज्ञा॒नंप्र॑थ॒मम्पु॒रस्ता॒द्विसी॑म॒तःसु॒रुचो॑वे॒नऽआ॑वः ॥ सबु॒ध्न्या॑ऽउप॒माऽअ॑स्यवि॒ष्ठाःस॒तश्च॒योनि॒मस॑तश्च॒विवः॥१॥ वा०सं०।अ०।१३।मं०३॥ गृहीत्वातुकराङ्गुष्ठंयजमानःपठेदिदम् ॥ अस्मिन्नमुकदेवप्रतिष्ठाकर्मसाधनार्थंत्वंब्रह्माभव ॥ ॐभवामीतितेनोक्ते ॥ अथ

गाणपत्यवरणं ॥ सोपस्कराम्बरणसामग्रीमादाय ॥ ॐअद्येहेत्यादि० अस्मिन्नमुकदेवप्रतिष्ठाकर्मणिगाणपत्येनत्वामहम्वृणे ॥ गन्धादिभिःसम्पूज्यप्रार्थयेत् ॥ वाञ्छितार्थफलावाप्त्यैपूजितोसिसुरासुरैः ॥ निर्विघ्नङ्क्रतुसंसिद्ध्यैत्वामहङ्गणपम्वृणे ॥ ॐग॒णानान्त्वा० ॥ अथसदस्य० ॥ सोपस्कराम्वरणसामग्रीमादाय ॥ ॐअद्येहेत्यादि० अमुकगोत्रोत्पन्नोऽमुकप्रवरान्वितोऽमुकशर्मायजमानोऽमुकगोत्रोत्पन्नममुकप्रवरान्वितममुकवेदान्तर्गतममुकशाखाध्यायिनममुकशर्माणंब्राह्मणमस्मिन्नमुकदेवप्रतिष्ठाकर्मणिएभिर्वरणद्रव्यैःसदस्यत्वेनत्वामहम्वृणे॥वृतोस्मीतिप्रतिवचनम्॥ ततःसम्प्रार्थ्य ॥ कर्मणामुपदेष्टारंसर्वकर्मविदुत्तमम् ॥ कर्मिणंवेदतत्त्वज्ञंसदस्यंत्वामहंवृणे॥ॐसद॒ंस॒स्पति॒मद्भुतम्प्रि॒यमिन्द्रस्य॒काम्म्यम्॥स॒निम्मे॒धामयासिष॒ᳪंस्वाहा

||१|| वा० | सं० | अ० | ३२ | मं० | १३ ॥ ततोऽष्टौचतुरोवाऋत्विजोवृणुयात् ॥ प्राक्कुण्डेऋग्वेदिनौ ॥ याम्यकुण्डेयजुर्वेदिनौ ॥ सामगौप्रत्यक् ॥ अथर्वाणौउदक् ॥ ॐअद्येहेत्यादि० अस्मिन्नमुकदेवप्रतिष्ठाकर्मणिऋत्विक्त्वेनत्वामहंवृणे ॥ वृतोस्मीतिप्रतिवचनम् ॥ ततःप्रार्थना ॥ यज्ञादिकर्मकार्येषुऋत्विक्शाक्रमखेयथा ॥ तथायज्ञादिकार्येऽस्मिन्ऋत्विक्त्वंमेमखेभव ॥ १ ॥ ततःसूक्तजपार्थेऽष्टौचतुरोवाऋग्वेदादीन्वृणुयात् ॐअद्येहेत्यादि० अस्मिन्नमुकदेवप्रतिष्ठाकर्मणि सूक्तजपार्थंऋत्विक्त्वेनत्वामहंवृणे ॥ वृतोस्मीतिप्रतिवचनम् ॥ प्रार्थना ॥ ऋग्वेदःपद्मपत्राक्षोगायत्रःसोमदैवतः ॥ अत्रिगोत्रस्तुविप्रेन्द्रऋत्विक्त्वंमेमखेभव ॥ ॐअग्निमीडेपुरोहितंयज्ञस्यदेवमृत्विजम् ॥ होतारंरत्नधातमम् ॥ १ ॥ ॐअद्ये

हेत्यादि० अस्मिन्नमुकदेवप्रतिष्ठाकर्मणिदक्षिणद्वारसूक्तजपार्थंऋत्विक्त्वेनत्वामहम्वृणे ॥ वृतोस्मीतिप्रतिवचनम् ॥ ततःप्रार्थना ॥ कातराक्षोयजुर्वेदस्त्रैष्टुभोब्रह्मदैवतः ॥ भारद्वाजस्तुविप्रेन्द्रऋत्विक्त्वंमेमखेभव ॥ १ ॥ ॐइ॒षेत्वो॒र्जेत्वा॑वा॒यव॑स्थदे॒वोव॑ः सवि॒ताप्रार्प॑यतु॒श्रेष्ठ॑तमाय॒कर्म्म॑ण॒ऽआप्या॑यद्ध्वमघ्न्या॒ऽइन्द्रा॑यभा॒गम्प्र॒जाव॑ती॒रन॑मी॒वाऽअ॑य॒क्ष्मामाव॑स्ते॒नऽईश॑त॒माघश॑ꣳसोद्ध्रु॒वाऽअ॒स्मिन्गोप॑तौस्यातब॒ह्वीर्य्यज॑मानस्यप॒शून्पा॑हि ॥ वा० । सं० । अ० १ । मं० । १ । ॐअद्येहेत्यादि०अस्मिन्नमुकदेवप्रतिष्ठाकर्मणिपश्चिमद्वारसूक्तजपार्थंऋत्विक्त्वेनत्वामहम्वृणे ॥ वृतोस्मीतिप्रतिवचनम् ॥ ततःप्रार्थना ॥ सामवेदस्तुपिङ्गाक्षोजागतःशक्रदैवतः ॥ काश्यपेयस्तुविप्रेन्द्रऋत्विक्त्वंमेमखेभव ॥ १ ॥ ॐअग्नआयाहिवीतयेगृणानोहव्यदातये ॥

निहोतासत्सिवर्हिषि ॥ १ ॥ सा० । सं० । अ० । १ । मं० । १ । ॐअद्येहेत्यादि० अस्मिन्नमुकदेवप्रतिष्ठाकर्मणिउत्तरद्वारसूक्तजपार्थमृत्त्विक्त्वनत्वामहम्बृणे ॥ बृतोस्मीतिप्रतिवचनम् ॥ ततःप्रार्थना ॥ वृहन्नेत्रोथर्वबेदोनुष्टुभोरुद्रदैवतः ॥ वैखानसकुलोत्पन्नःऋत्विक्त्वंमेमखेभव ॥ १ ॥ ॐशन्नोदे॒वीर॒भिष्टय॒ऽआपोभवन्तु॒पीतये ॥ शंयोर॒भिस्स्रवन्तुनः ॥ १ ॥ सं० । अ० । १ । का० १ । मं० । १ ॥ इत्यथर्व ॥ ॐअद्येहेत्यादि० अस्मिन्ननमुकदेवप्रतिष्ठाकर्मणिरुद्रमंत्रजपार्थंत्वामहम्वृणे ॥ वृतोस्मीतिप्रतिवचनम् ॥ ततःप्रार्थना ॥ भगवन्मूर्तिसर्वज्ञसर्वधर्मभृतांवर ॥ विततेममयज्ञेस्मिन्जपार्थेत्वामहम्वृणे॥ऋत्विजोगन्धादिभिःसम्पूजयेत् ॥ यजमानर्त्विजःपरस्परंयज्ञकङ्कणम्बध्नीयुः ॥ तत्रमन्त्रः ॥ ॐबुतेनंदी॒क्षामांप्नोति

दीक्षयाप्प्नोतिदक्षिणाम् ॥ दक्षिणाश्श्रद्धामाप्प्नोतिश्श्रद्धयासत्यमाप्प्यते ॥ १ ॥ वा० । सं० । अ० । १९ । म० ।३०॥ ॐ एतावद्द्रूपय्यज्ञस्ययद्देवैर्ब्रह्मणाकृतम् ॥ तदेतत्सर्ब्बमाप्प्नोतियज्ञेसौत्रामणीसुते ॥ १ ॥ वा० । सं० । अ० । १९ । मं० । ३१ ॥

अथप्रार्थना ॥ ब्राह्मणाःसन्तुमेशस्ताःपापात्पान्तुसमाहिताः ॥ देवानाञ्चैवदातारः पातारःसर्वदेहिनाम् ॥ १ ॥ जपयज्ञैस्तथाहोमैर्दानैश्चविविधैःपुनः ॥ देवानाञ्च ऋषीणाञ्चतृप्प्त्यर्थंयाजकाःकृताः ॥ २ ॥ येषान्देहेस्थितावेदाःपावयन्तिजगत्त्रयम् ॥ रक्षन्तुसततन्तेमाञ्जपयज्ञैर्व्यवस्थिताः ॥ ३ ॥ ब्राह्मणाजङ्गमन्तीर्थंत्रिषु लोकेषुविश्रुतम् ॥ तेषांवाक्योदकेनैवशुद्ध्यन्तिमलिनाजनाः ॥ ४ ॥ पावनाःसर्ववर्णानांब्राह्मणाब्रह्मरूपिणः ॥ सर्बकर्मरतानित्यंवेदशास्त्रार्थकोविदाः ॥ ५ ॥

श्रोत्रियाःसत्यवाचश्चग्रहध्यानरताःसदा ॥ यद्वाक्यामृतसंसिक्ताऋद्धिंयान्तिनरद्रुमाः
॥ ६ ॥ अङ्गीकुर्वन्तुकर्मैतत्कल्पद्रुमसमाशिषः ॥ यथोक्तनियमैर्युक्तामन्त्रार्थेस्थि
रबुद्धयः ॥ ७ ॥ यत्कृपालोचनात्सर्वाऋद्धयोबृद्धिमाप्नुयुः ॥ अस्मिन्यज्ञे
मयापूज्याःसन्तुमेनियमान्विताः ॥ ८ ॥ अक्रोधनाःशौचपराःसततम्ब्रह्मचारिणः ॥
ग्रहध्यानरतानित्यंप्रसन्नमनसःसदा ॥ ९ ॥ अदुष्टभाषणाःसन्तुमासन्तुपरनिन्द
काः ॥ ममाधिनियमाह्येतेभवन्तुभवतामपि ॥ १० ॥ इतिसंप्रार्थ्यतान्ब्रूयाद्य
थावत्क्रियताम्बिधिः ॥ ऋत्विजश्चयथापूर्वंशक्रादीनांमखेभवन् ॥ ११ ॥ यूयन्त
थामेभवतऋत्विजोद्विजसत्तमाः ॥ अस्ययागस्यनिष्पत्तौभवन्तोभ्यर्थितामया ॥१२॥
सुप्रसन्नैःप्रकर्त्तव्यंशान्तिकंबिधिपूर्बकम् ॥ इत्याचार्यादिवरणम् ॥ अथमधुपर्कं

प्राशनविधिः ॥ मधुपर्कपात्रंसौवर्णंराजतंवा ॥ मधुपर्कमानीयतां ॥ किंलक्षणंम
धुपर्क्कम् ॥ शर्करादधिघृतमधुसंयुक्तमेतन्मधुपर्क्कमिति ॥ सर्वेप्याचार्यर्त्विजोमधु
पर्क्केणपूज्याः ॥ सम्पूज्यमधुपर्क्केणऋर्त्विजःकर्मकारयेत् ॥ अपूज्यात्कारयन्कर्म
किल्बिषेणैवयुज्यत इतिस्मृतेः ॥ ततःसङ्कल्पङ्कुर्यात् ॥ ओमद्यामुकदेवप्राति
ष्ठाकर्म्माधिकारार्थमाचार्यऋत्विग्द्वारपालानांमधुपर्क्केणार्चनङ्करिष्ये ॥ ततोयजमा
नःविष्टरमादायपठति ॥ ओंविष्टरोविष्टरोविष्टरःप्रतिगृह्यतामितियजमानः ॥ प्रति
गृह्णामीत्याचार्यादयः ॥ ओंबर्ष्मोस्मीत्याथर्वणऋषिःविष्टरोदेवतानुष्टुप्छन्दःविष्टरो
पवेशनेविनियोगः ॥ ओंवर्ष्मोस्मिसमानानामुद्यतामिवसूर्यः ॥ इमन्तमभितिष्ठा
मि ॥ योमाकश्चाभिदासति ॥ १ ॥ इतिमन्त्रेणसविष्टरआसनेउपविशति ॥

ततःपाद्यादीनिदद्यात् ॥ ओंब्राह्मणानांहस्तेषुसुप्रोक्षितमस्तु ॥ शिवाआपःसन्त्विति जलम् ॥ ओंअस्तुशिवाआपः ॥ सौमनस्यमस्त्वितिपुष्पम् ॥ ओंअस्तुसौमनस्यम् ॥ अक्षतञ्चारिष्टञ्चास्तु ॥ अस्त्वक्षतमरिष्टञ्च ॥ ओंगन्धाःपान्तुसुमङ्गल्यञ्चास्त्वितिभवन्तोब्रुवन्तु ॥ ओंगन्धाःपान्तुसुमङ्गल्यञ्चास्तु ॥ एवंसर्वत्र ॥ अक्षताःपान्तुआयुष्यमस्त्व० ॥ ओंअक्षताःपान्तुआयुष्यमस्तु ॥ पुष्पाणिपान्तुसौश्रियमस्त्वितिभवन्तोब्रुवन्तु ॥ ओंपुष्पाणिपान्तुसौश्रियमस्तु ॥ ताम्बूलानिपान्तुऐश्वर्यमस्त्व० ॥ ओंताम्बूलानिपान्तुऐश्वर्यमस्तु ॥ दक्षिणाःपान्तुबहुधनमस्त्विति भवन्तोब्रुवन्तु ॥ दक्षिणाःपान्तुबहुधनमस्तु ॥ पुनरर्चाःपान्तुस्वर्चितमस्त्वितिभवन्तोब्रुवन्तु ॥ पुनरर्चाःपान्तुस्वर्चितमस्तु ॥ यजमानआचार्यादीन्प्रणम्यमधुपर्कं

न्दद्यात् ॥ ओंमधुपर्क्कोंमधुपर्क्कोंमधुपर्क्कः प्रतिगृह्यताम्प्रतिगृह्णामि ॥ यजमानहस्तस्थितंमधुपर्क्कमालोकयति ॥ मित्रस्यत्वेतिबृहस्पतिर्ऋषिःमधुपर्क्कोदेवतायजुःमधुपर्क्कावेक्षणेविनियोगः ॥ ओंमित्रस्यत्त्वाचक्षुषाप्रतीक्षे ॥ ततोहस्ताभ्याम्प्रतिगृह्णामीति ॥ देवस्यत्वेतिबृहस्पतिराङ्गिरसऋषिःसवितादेवतायजुःमधुपर्क्कग्रहणेविनियोगः ॥ ओंदे॒वस्यंत्त्वासवि॒तुः प्प्रंस॒वे॒ऽश्विनोर्ब्बा॒हुब्भ्यांम्पूष्णोहस्तांब्भ्या॒माददेतिप्रतिगृह्णामि ॥ १ ॥ सं० अ० २२ मं० १ सव्येपाणौनिधायदक्षिणहस्तस्यानामिकयात्रिःमधुपर्क्कमालोडयति ॥ नमःस्यावेतिप्रजापतिर्ऋषिःसवितादेवतायजुःमधुपर्क्कावलोडनेबिनियोगः ॥ ओंनमःस्यावास्यायान्नशनेयत्तऽआविद्धन्तन्तेनिष्क्रन्तामीतिमन्त्रेणदक्षिणतःप्रक्षिपति ॥ पूर्वोक्तमन्त्रेणपश्चिमतःप्रक्षिपति ॥ ओंनमःस्यावास्यायान्नशने

यत्तऽआविद्धन्तन्तेनिष्क्रन्तामि ॥ इतिमन्त्रेणउत्तरतःप्रक्षिपति ॥ तूष्णीम्बारत्रयन्निरीक्षयति ॥ ततोनामिकाङ्गुष्ठाभ्यांमधुपर्क्कस्यैकंभागमादाय ॥ यन्मधुनइतिकुत्सऋषिःमधुपर्क्कोदेवताजगतीच्छन्दःमधुपर्क्कप्राशनेबिनियोगः ॥ ॐयन्मधुनोमधव्व्यंपरमच्छंरूपमन्नाद्यन्तेनाहम्मधुनोमधव्व्येनपरमेणरूपेणान्नाद्येन ॥ परमोमधव्व्योन्नादोशानि ॥ इतिमन्त्रेणत्रिःप्राश्नाति ॥ १ ॥ मधुमतीभिर्व्वाप्रत्यृचम्प्राशनम् मधुवाताइतिऋचःगौतमऋषिःबिश्वेदेवादेवतागायत्रीच्छन्दःमधुपर्क्कप्राशनेबिनियोगः ॥ ॐमधुव्वाताऽऋतायतेमधुक्षरन्तिसिन्धवः ॥ माद्ध्वीर्न्नः सन्त्वोषधीः ॥ १ ॥ सं० अ० १३ मं० २७ ॐमधुनक्तमुतोषसोमधुमत्पार्त्थिवरजः ॥ मधुद्यौरस्तुनःपिता ॥ २ ॥ सं० अ० १३ मं २८ ॐमधुमान्नो

व्वनस्पतिर्म्मधुमाँ ॥ २ ॥ ऽअस्तुसूर्यः ॥ माध्वीर्गावोभवन्तुनः ॥ ३ ॥ सं० अ० १३ मं० २९ ओंमधुमधुमधु ॥ पुनःवारद्वयंमन्त्रावृत्याप्राश्नाति ॥ अस्यचप्राशनस्यशेषप्रतिपत्तिरूपत्वादनामिकाङ्गुष्ठनियमः ॥ सोमतीर्थेनप्राशनमित्यपरे ॥ सोमतीर्थेनकरमध्येन ॥ प्राग्देशेयत्रजनानसञ्चरंतितत्रनिःक्षिपेत् ॥ ततःस्मार्त्तविधिनाचम्य ॥ पुनःआचार्यादीन्सम्पूज्यनमस्कुर्वीत ॥ त्वन्नोगुरुःपितामातात्वम्प्रभुस्त्वम्परायणः ॥ त्वत्प्रसादाच्चविप्रर्षेसर्वंमेस्यान्मनोगतमितिसम्प्रार्थ्य ॥ इतिमधुपर्कप्राशनप्रयोगः ॥ अथयागमण्डपप्रदक्षिणा ॥ यजमानःसपत्नीकःपुत्रपौत्रसमन्वितः ॥ द्वारेणपश्चिमेनैवप्रविशेन्नेतरेणतु ॥ १ ॥ होमद्रव्यन्तुपूर्वेणदानार्थंदक्षिणेनतु ॥ प्रतिष्ठार्थां

श्चसम्भरानुत्तरेणप्रवेशयेत् ॥ इतिरामकल्पोदाहृतबचनात् ॥ ततःकर्त्ताशुक्लमाल्यांबररत्नाभरणभूषितःकृतानुलेपनःसपत्नीकोयथायोग्यऋत्विक्सहितोभद्रङ्कर्णेभिरितिवेदघोषेणमहामण्डपम्प्रदक्षिणीकृत्यपाश्चिमद्वारेणप्रविशेत् ॥ तत्राऽचार्योवामहस्तेगौरसर्षपान्लाजामिश्रान्गृहीत्वादिग्रक्षणङ्कुर्यात् ॥ तत्रमन्त्राः ॥अपक्रामन्तुभूतानिपिशाचाःसर्बतोदिशम् ॥ सर्वेषामबिरोधेनब्रह्मकर्मसमारभे ॥ १ ॥ उँदेवाआयान्तुयातुधानाअपयान्तुबिष्णोदेवयजनंरक्षस्व ॥ २ ॥ अपसर्पन्तुतेभूतायेभूताभूमिसंस्थिताः ॥ येभूताबिघ्नकर्त्तारस्तेनश्यन्तुशिवाज्ञया ॥ ३ ॥ यदत्रसंस्थितम्भूतंस्थानमाश्रित्यसर्वतः ॥ स्थानंत्यक्त्वातुतत्सर्बंयत्रस्थंतत्रगच्छतु ॥४॥ भूतप्रेतपिशाचाद्याअपक्रामन्तुराक्षसाः ॥ स्थानादस्माद्व्रजंत्वन्यत्स्वीकरोमिभुव

न्त्विमाम् ॥ ५ ॥ भूतानिराक्षसावापियत्रतिष्ठन्तिकेचन ॥ तेसर्वेप्यपगच्छन्तुशान्तिकन्तुकरोम्यहम् ॥ ३ ॥ इतिमन्त्रैरीशानादिसर्वदिक्षुबिकिरेत्॥ततःपूर्वेशानयोर्मध्येगणपतिवेद्यांमङ्गलकलशंस्थापयेत् ॥ तदधःउत्तरस्यान्दिशिमातृकाःस्थापयेत् ॥ ततःपूर्वोक्तबिधिनापञ्चगव्यमेकीकृत्ययजमानाचार्यादयःप्राश्याचम्य ॥ तत्रमंत्रः ॥ यद्यदस्थिगतंपापंदेहेतिष्ठतिमामके ॥ ब्रह्मकूर्चोपवासस्तुदहत्वग्निरिवेन्धनम् ॥ १ ॥ इतिपञ्चगव्यप्राशनमन्त्रः ॥ अथाङ्कुरारोपणप्रयोगः ॥ उक्तप्रकारेणमण्डपरचनांसाङ्गामभिधायअङ्कुरार्पणनामकंकर्म्मान्तरंसर्वेषुशुभकर्म्मस्वभ्युदयातिशयार्थमुपादेयन्निरूपयति ॥ प्रागेवेत्यादिना ॥ प्रागेवदीक्षादिवसात्सप्तभिर्विधिवद्दिनैः ॥ सर्वमङ्गलसंपत्यैविद

ध्यादङ्कुरार्पणम् ॥ १ ॥ दीक्षादिनात्पूर्बतनदिनतोगणनयाप्राचीनेसप्तमेदिवसेअङ्कुरार्पणाख्यङ्कर्मकुर्यात् ॥ किमिदमङ्गान्तरवदकरणेप्रधानफलव्याघातकंनेत्याह ॥ सर्बसंपत्यैइति ॥ तथाचाकरणेनाङ्गवैकल्यं ॥ करणेत्वभ्युदयातिशयइतिभावः ॥ सप्तमेइतिवक्ष्यमाणपरपक्षाणामुपलक्षणम् ॥ यदुक्तंसिद्धांतशेखरे ॥ प्रतिष्ठायांचदीक्षायांस्नापनेचोत्सवेतथा ॥ संमोक्षणेचशान्त्यर्थंबिवाहेमौञ्जिबन्धने ॥ सर्बमङ्गलकार्येषुकर्त्तब्यमङ्कुरार्पणम् ॥ प्रतिष्ठादिवसात्पूर्बन्नवमेसप्तमेदिने ॥ पञ्चमेबातृतीयेबासद्योवाचाङ्कुरार्पणङ्कुर्यात्तत्रैबोह्यंमहाकापिलपञ्चरात्रबचनात् ॥ अङ्कुरार्पणञ्चेदं ॥ स्वानुष्ठानदिनात्पूर्बदिनेउपोष्यनान्दीश्राद्धपूर्बकमनुष्ठेयम् ॥ यदुक्तन्तन्त्रान्तरे ॥ गुरुर्बिशुद्धःप्रागेवदीक्षाहात्सप्तमेदिने ॥ सङ्क

ल्प्योपोष्यकर्त्तव्यमङ्कुरारोपणंशुभम् ॥ कुर्यान्नान्दीमुखःश्राद्धम्पूर्वंगुःस्वस्तिवाचनम् ॥ स्वगृह्योक्तप्रकारेणतदेतद्विदधीतवै ॥ इतिअङ्कुरारोपणङ्कुत्रस्थाने कार्यमित्याकांक्षायामाह ॥ मण्डपेत्यादि ॥ मण्डपस्योत्तरेभागेशालांपूर्वापरायताम् ॥ गूढाङ्कुर्यात्ततस्तस्यांमण्डलंरचयेत्सुधीः॥ २ ॥ पूर्वोक्तमण्डपस्योत्तरेभागेपूर्वापरायतान्दशहस्तमानेनदीर्घांपञ्चहस्तैर्विस्तृतांदीर्घचतुरस्राङ्गूढांपरितःकटादिनावेष्टितान्निर्वातप्रवरान्दक्षिणतोद्वारशालिनींशालाङ्कुर्यादित्यर्थः ॥ विंशत्यातुकरैः शालादशहस्तेनाविस्तृतेत्युक्तलक्षणलक्षितायाउत्तमशालायाःप्रकृतेनुपयोगान्मध्यमपक्षोत्राश्रितोस्ति ॥ पदार्थादर्शकारादयः ॥ अपरेतुउत्तमपक्षोहिसमर्थमात्राधिकारिकःसमर्थानांफलसम्बन्धस्ततएवभवतिनान्यथा ॥ तत्रासमर्थानांमध्यमपक्षात् ॥

तत्राप्यसमर्थानांमध्यमादेवेतिसर्वज्ञैरुपदिश्यते ॥ तथाचप्रयोजनाभावेपिसमर्थानाङ्कुतोपरपक्षात्फलाधिगमःस्यादितिनजानीमः ॥ यदिचमहतीशालामध्यमाशालेतिविभागोस्ति ॥ तदाप्रयोजनवद्ग्रहणमेवयुक्तिसहं ॥ यदितुयथाश्रुतेप्रतीयमानंशालायालक्षणमेवेदं ॥ तदापितावत्प्रमाणङ्कथन्त्यक्तुंशक्येतेतिमन्तव्यमितिवदन्ति ॥ तस्यांशालायांरचनप्रकारमेवाह ॥ पञ्चहस्तेत्यादिना ॥ पञ्चहस्तप्रमाणानिपञ्चसूत्राणिकारयेत् ॥ पूर्वापरायतान्येषामन्तरन्द्वादशाङ्गुलम् ॥ दक्षिणोत्तरसूत्राणितद्वदेकादशार्पयेत् ॥ पदानितत्रजायन्तेचत्वारिंशत्प्रमार्जयेत् ॥ शालायामध्यभागेपूर्वापरायतंपञ्चहस्तप्रमाणमेकंसूत्रन्दत्वा ॥ ततोद्वादशद्वादशाङ्गुलंप्रमाणमन्तस्थलंत्यक्त्वा॥सूत्रद्वयन्दक्षिणपार्श्वेदत्वा । ततः

उत्तरपार्श्वेपिद्वादशद्वादशाङ्गुलमन्तरालंपरित्यज्यसूत्रद्वयन्दद्यात् ॥ ततस्त

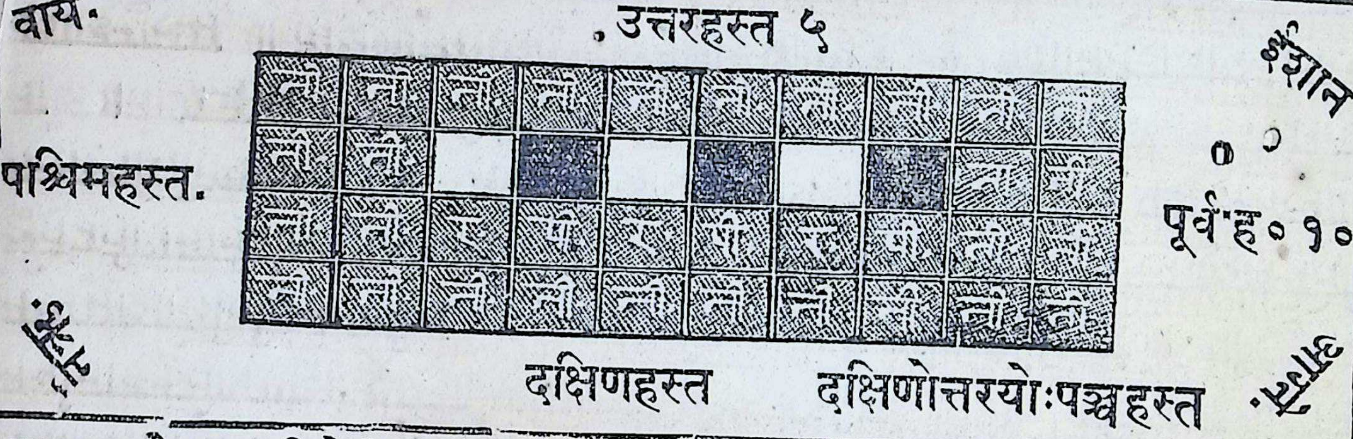
वाय.
उत्तरहस्त ५
ईशान
पश्चिमहस्त.
पूर्व ह० १०
नैर्ऋ.
दक्षिणहस्त
दक्षिणोत्तरयोःपञ्चहस्त
आग्नेय
नी
र
पी

पूर्वपश्चिमयोः१०हस्तमितंमंडपं

तपञ्चसूत्ररेखाव्यतिभेदिनीःप्रत्येकंद्वादशद्वादशाङ्गुलमन्तरालन्त्यक्त्वा॥ प्रत्येकंद्विद्वि

हस्तैरेकादशरेखाःकुर्यात् ॥ तेनचत्वारिंशत्पदानिभवन्तीत्यर्थः ॥ अन्तरेतिकर्तव्यतामाह ॥ प्रमार्जयेदिति ॥ पङ्क्याकारेणबीथीचतुष्टयंमार्जयेदित्यन्वयः ॥ वाह्यस्थाःइतिशेषः ॥ पङ्क्त्याबीथीश्चतस्रोतश्चतुष्कोभयपार्श्वयोः ॥ वीथ्यौद्वेचचतुष्कोष्टत्रयमत्रावशिष्यते ॥ पदानिरञ्जयेत्तानिश्वेतपीतारुणासितैः ॥ रजोभिःश्यामलेनाथवीथीरापूरयेत्सुधीः ॥ तथाच ॥ पूर्वतश्चतुष्कोष्ठामेकांवीथीं ॥ दक्षिणतोऽष्टकोष्ठां ॥ पश्चिमतश्चतुःकोष्ठामुत्तरतोऽष्टकोष्ठांमार्जयित्वा अन्तराविशिष्टंयच्चतुष्कत्रयन्तत्रापिमध्यमचतुष्कस्योभयतश्चतुर्थपञ्चमपदात्मकस्यपार्श्वयोःपूर्वपश्चिमभागद्वयेस्थितेयेद्विकोष्ठात्मकाबिथ्यौतेमार्ज्जयेत् ॥ तेनचतुष्कत्रयंमार्जितैकैकबीथीव्यवहितमवशिष्यतइत्यर्थः ॥ तानिपदानिश्वेतपीतारुणासितैरजो

भिरीशानपदमुपक्रम्यरञ्जयित्वा ॥ परितोमार्जितास्वीथींश्यामरजसारञ्जयेत् ॥
सीमारेखास्तुसर्बाःश्वेताएवकार्याः ॥ इतिहर्षदीपिकाकारः ॥ पदार्थादर्शकृतस्तु
मौलेनसुधीपदेनईशानादिक्रमोनात्रबिवक्षितः ॥ किन्तु ॥ वायब्याग्नेयनैर्ऋत्येशान
क्रमादेवश्वेतपीतारुणासितरजोभिःपूरणंकार्यमितिसूचितम् ॥ पीतारक्तासितासि
तंप्रतिपदंवह्न्यादिसर्बान्तकमित्याचार्यबचनसम्बादादितिप्राहुः ॥ श्यामलेनहरित
रजसा ॥ तत्रपात्राण्याह ॥ पात्राणित्रिबिधान्याहुरङ्कुरार्पणकर्माणि ॥
पालिकाःपञ्चमुख्यश्चसरावाश्चचतुष्क्रमात् ॥ प्रोक्ताःस्युःसर्बतन्त्रज्ञैर्हरिब्रह्माशि
वात्मकाः । पालिकास्थूलोच्चाः ॥ शरावाएवकिञ्चिन्न्यूनाः ॥ पञ्चमुखयुक्तास
रावाःपञ्चमुखीपदवाच्याः ॥ चतुष्क्रमादिति ॥ पालिकादित्रितयंप्रत्येकञ्चतुः

संख्यंस्यादित्यर्थः ॥ पालिकाविष्णुस्वरूपाः ॥ पञ्चमुख्यःशिवस्वरूपाः ॥ सरावाब्रह्मस्वरूपाः ॥ इतिवदताचार्येणतेषुतेषांपूजानुष्ठेयेतिध्वानितम् ॥ मूलेब्रह्मशिवयोःक्रमोनविवक्षितः ॥ प्रोक्तेष्वेतेषुपात्रेषुविष्णुशम्भुविधींल्लिखेदितिसारस्व

॥ पालिकास्वरूपम् ॥ ॥ पंचमुखीस्वरूपम् ॥ ॥ शरावस्वरूपम् ॥

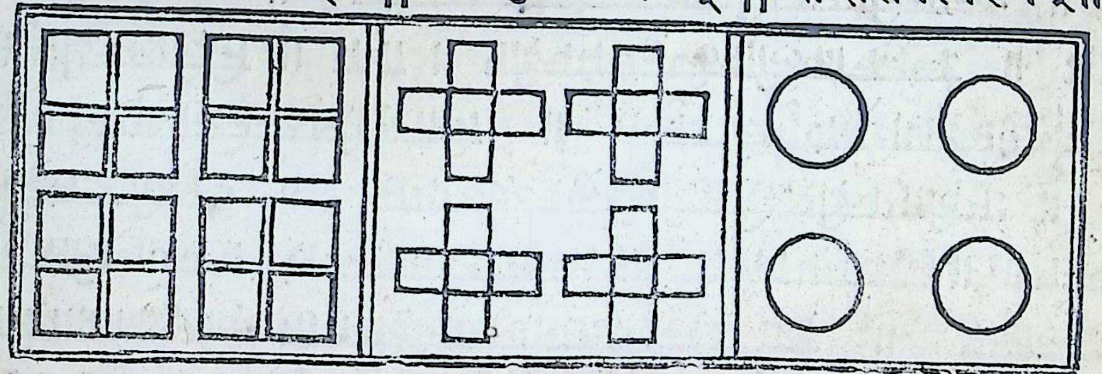

अस्त्रायफट्इतिमन्त्रेणसम्प्रोक्ष्यउोंनमोभूम्यैनमःइतिमन्त्रेणभूमिमावाहनादिपुरस्सरं
सम्पूज्य ॥ गन्धपुष्पादिभिःपूजितयाकुद्दाल्याभूमिङ्खात्वा ॥ उोंवामदेवायनमो
ज्येष्ठायनमःश्रेष्ठायनमोरुद्रायनमःकालायनमःकलविकरणायनमोबलविकरणायनमो
बलायनमोबलप्रमथनायनमःसर्बभूतदमनायनमोमनोन्मनायनमः ॥ १ ॥ इति
मन्त्रेणमृदमादाय ॥ कांस्यपात्रेस्थापयित्त्वा ॥ पुनःअस्त्रमन्त्रेणसंमार्ज्य ॥ बस्त्रे
णाच्छाद्य ॥ मण्डपनिकटेसमानीय ॥ प्रदक्षिणीकृत्य ॥ तत्रप्रवेशितायामृ
त्तिकासैवोपादेया ॥ अत्रप्रमाणंसिद्धान्तशेखरादितः ॥ प्रत्यबगन्तब्यं ॥
सुधावीजेनवमित्यमृतवीजेनतन्त्रवित् ॥ क्षालनप्रकारतः ॥ सचपूर्बञ्जलैः ।प्रक्षा
लनपूर्बकन्दुग्धैःप्रक्षालनमित्येवंरूपः ॥ बीजानितानिप्रक्षाल्यजलैःक्षीरेणचक्र

मादितिसारस्वततन्त्रोक्तेः ॥ मूलेनमन्त्रेणअभिमन्त्रणसंख्यायाअनुक्तत्वात् ॥ संख्यानुक्तौशतंसाष्टौसहस्रंबाजपेदितीतिकपिलपञ्चरात्रबचनस्यायंविषयः ॥ मृदङ्गःपटहोझञ्झामुखवाद्यञ्चशङ्खकम् ॥ इतिपञ्चघोषाः ॥ निर्वपेद्दैशिकःसम्यक् प्राङ्मुखोवाप्युदङ्मुखः ॥ शालिश्यामाढकीमुद्गास्तिलानिष्पावसर्षपाः ॥ कुलत्थकंगुमाषाश्चवीजान्यंकुरकर्म्मणीतिशारदोक्तेः ॥ १ ॥ निर्वपेदिति ॥ दशापिवक्ष्यमाणवीजान्येकीकृत्यरात्रौप्राङ्मुखउदङ्मुखोवामूलमन्त्रेणतेषुपात्रेषुनिर्वपेदित्यर्थः। यदुक्तंसिद्धान्तशेखरे ॥ बीजमुख्येनमन्त्रेणप्राङ्मुखोवाप्युदङ्मुखः ॥ वापयेत्सर्ववीजानिपालिकादिष्वनुक्रमात् ॥ वीजानामधिपःसोमस्तस्माद्रात्रौतुनिर्वपेदिति ॥ सारस्वतमतेपि ॥ वीजेभ्योदैवतेभ्यश्चसरात्रौकान्तिमान्यतः ॥

तस्माद्गुरुःसबीजानिनिशायामेवबापयेत् ॥ इतिवीजानिदर्शयेदिति ॥ शालीत्या
दिना ॥ शालयोर्हैमन्तिकधान्यानि ॥ श्यामाकाः ॥ सावाइतिभाषायांप्रसिद्धाः॥
आढकातूबरीअरहरीतिप्रसिद्धाः ॥ निष्पावा । बल्लाः । शिवाइत्यपरपर्य्यायाः ॥
निष्पावाराजमाषाइतिरामचन्द्राः ॥ निष्पावान्राजमाषाँश्चश्रौत्येदैवेबिवर्जयेदि
तिबचनान्नेदमुचितमितिपदार्थादर्शकृतः ॥ सारस्वतमतेप्रत्येकम्बीजेषुदेवता
पूजोक्ता ॥ स्कन्दम्प्रियङ्गौनिष्पावेवायुमग्निंकुलत्थके ॥ आढक्यान्निर्ऋतिंसोमंमुद्गे
वैवस्वतन्तिले ॥ प्रजापतिंशालिबीजेसर्षपेनन्तमर्चयेत् ॥ इन्द्रंश्यामेचवरु
णंमाषेभ्यर्चेन्नगात्मजेहृति ॥ अधिवासनदिनमारभ्यप्रत्यहंसोमस्यापिपूजनङ्कार्य
म् ॥ सोमंसम्पूजेन्नित्यमधिवासदिनावधि ॥ अधिवासदिनेप्राप्तेसोममुद्वासये

द्गुरुरितिअधिवासदिनपदंमुख्याधिवासभूतदीक्षाधिबासनदिनपरं ॥ अधिबासनदिनमारभ्येतिपालिकादिस्थापनदिनपरं । हरिद्राद्भिरिति ॥ समभ्युक्षणं मन्त्रपूर्बकाभ्युक्षणम् ॥ मन्त्रश्चप्रयोगसारे ॥ त्र्यम्बकायचशर्बायशङ्कराय शिवायच ॥ सर्बलोकप्रधानायशाश्वतायनमोनमः ॥ बिकीर्यानेनमन्त्रेणहरिद्राचूर्णमिश्रितम् ॥ तोयम्प्रबर्षयेत्तेषुसिञ्चेत्तोयैर्दिनंप्रतीति ॥ अनेनमन्त्रेणप्रबर्षयेदित्युत्तरेणान्वितम् ॥ बिकिरणमूलमन्त्रेणेति । मूलमेवस्पष्टमुक्तंपदार्थादर्शेत्वयमर्थो दैशिकपदेनोक्तइतिकथितंबस्त्रैर्नूतनैःप्रक्षालितैश्चेत्यार्थिकं ॥ त्रिबिधपात्राणांपालिकापञ्चमुखीशराबसञ्ज्ञकानांपात्राणांपूर्बादिदिक्षुरात्रौदैशिकंबलिंहरेदित्यन्वयः ॥ बलिमन्त्रमाह ॥ प्रणवादिनमोन्तञ्चचतुर्थ्यन्तञ्चसत्तम ॥

देवतायाःस्वकन्नाममूलमन्त्राःप्रकार्त्तितः ॥ १ ॥ पृणवाद्यैरित्यादिना ॥ आदौ प्रणवः ॥ ततोयद्यद्रात्रौबलिःक्रियते । तत्तत्प्रथमद्वितीयादिरात्रिस्वामिनामचतुर्थ्यन्तम्भूतेभ्यइत्यादिरूपन्ततोनमुःपदमित्यर्थः ॥ तथाच ॥ ओंभूतेभ्योनमः ओंपितृभ्योनमः ॥ इत्यादिमन्त्राःपर्य्यवसन्नाः ॥ हर्षदीपिकाकृतोप्ययमेवसंमतोर्थः ॥ पदार्थादर्शकृतस्तु ॥ ओंनमोभूतेभ्यः ॥ ओंनमःपितृभ्यइति ॥ मन्त्रानाह ॥ नमोन्तैर्नामभिरितिमूलविरुद्धञ्चेदमभिधानम् ॥ नामान्तएवनमःपदस्यततः प्रत्ययात्नचनमोन्तेयेषामितिबहुव्रीहिन्नवयमाश्रयामोयेनत्वदुक्तोर्थःप्रतीयेत ॥ परन्तुनमसोन्तैरितितत्पुरुषमेव ॥ तथाच ॥ नाम्नान्नमःपदान्तत्वकथनेकिन्तुर्वरितन्नाम्नाम्नादितोनमःपदप्रवेशप्रत्ययविधावितिवाच्यम् ॥ तथा

सति ॥ प्रणवनमआद्यैरितिप्रणवनमोन्तैरितिवाप्रणवान्तैरितिवाब्रूयान्नतुप्रणवाद्यैर्नमोन्तैरितिविभिन्नपर्यायप्रवेशमभिरचयेत् ॥ किञ्च ॥ तारादिहृदयान्तोयं मन्त्रोवस्वक्षरात्मकइतिदुर्गामन्त्रादिनानोद्धारवचनेषुभवतापि ॥ नमोन्तस्यैवव्याख्यातत्त्वादत्रभूतादिभिःकिमपराद्धन्नजानीमः ॥ नवातन्त्रान्तरवचनमादर्शितं ॥ येनतत्सम्बाद्यर्थमत्राप्यपूर्वार्थकरणंयुज्येतेतिप्रतीमः ॥ रात्रीशनामान्याह ॥ भूतानिपितरोयक्षानागाब्रह्माशिवोहरिः ॥ सप्तानामपिरात्रीणान्देवताःसमुदीरिताः॥१॥ भूतेत्यादि ॥ सप्तरात्रिषुभिन्नबलिद्रव्याण्याह ॥ भूतकूटन्तुभूतेभ्यःपितृभ्यः सलिलाक्षताः ॥ करम्भलाजायक्षेभ्यःश्रीफलंसान्नसक्तवः ॥ नागेभ्योब्रह्मणेपद्मबीजाढ्यारक्ताक्षताःस्मृताः ॥ शिवायान्नञ्चसापूपंहरयेस्याद्गुडौदनम् ॥ २ ॥

लाजातिलेत्यादिना ॥ सान्नाअन्नसहितालाजादयः ॥ तेनषड्द्रव्यैर्भूतवलिरि
तिपर्यवसितं ॥ अतएवैतत् ॥ षट्कस्यभूतकूटेतिनामयदुक्तं ॥ लाजातिलन
क्रजोदधिसक्त्वन्नानिभूतकूटाख्यामिति ॥ करम्भादधिसक्तवः ॥ सहजेननारि
केलोदकेनसहसंमिश्रितान्सक्तून्तण्डुलपिष्टञ्चसंयोज्यनागेभ्योवलिन्दद्यात ॥ सह
जजलालाभेनारिकेलान्तस्थङ्गोलकञ्जलेनसंङ्घृष्यतत्रसंयोजनङ्कार्यम् ॥ अक्षता
अविद्धतण्डुलाःएवपर्यवसितोर्थः ॥ एकैकपात्रस्थेनपूर्वदिशिपूर्वस्यांरात्रौभूते
भ्योवलिदानेनद्वादशवलिदानानिभवन्ति ॥ द्वितीयरात्रौपितृभ्योदक्षिणदिशिद्वादश
वलिदानानि ॥ तृतीयरात्रौयक्षेभ्योद्वादशवलयोनैर्ऋत्यादिशिदेयाइत्यादिस्व
यमूह्यं ॥ ततइन्द्रादिदशदिक्पालेभ्योपिप्रतिरात्रंवलिर्देयः ॥ अङ्कुरावेक्षणञ्च

गुरुव्यतिरिक्तेननानुष्ठेयम् ॥ प्ररूढान्यङ्कुराण्यन्योनवीक्षेतकदाचन ॥ आचार्य एवप्रविशेत्तच्छिष्योवातदाज्ञया ॥ बस्त्रैराच्छाद्ययत्नेनसगुप्तानिचकारयेदित्यादिवचनात् ॥ अन्योपिविशेषः ॥ सिद्धान्तशेखरे ॥ यजमानाभिवृद्ध्यर्थमङ्कुराणिपरीक्षयेत् ॥ सम्यगूर्ध्वंप्ररूढानिकोमलानिसितानिच ॥ धूम्रवर्णान्यपूर्णानितथातिर्यग्गतानिच ॥ श्यामलानिचकुब्जानिवर्जयेदशुभानितु ॥ अवृष्टिङ्कुरुतेकृष्णन्धूम्रामङ्कलहन्तथा ॥ अपूर्णञ्जननाशञ्चदुर्भिक्षंश्यामलाङ्कुरम् ॥ तिर्यग्गतेभवेद्व्याधिःकुब्जेशत्रुभयन्तथा ॥ अशुभेत्वङ्कुरेजातेशान्तिहोमंसमाचरेत् ॥ मूलमन्त्रेणजुहुयादष्टोत्तरसहस्रकम् ॥ अघोरास्त्रेणवास्त्रेणशतंवाथसहस्रकमिति ॥ एषामङ्कुराणांबिनियोगञ्चचतुर्दिक्षुस्थापनरूपमग्रेवक्ष्यतिमूलकारः ॥ इत्यंकुरार्पणबि

धिः ॥ अथमण्डपेपञ्चगव्यप्रोक्षणंमण्डपपूजाबिधिर्लिख्यते ॥ यथा ॥ सर्वतः पञ्चगव्येनप्रोक्षयेद्यागमण्डपम् ॥ आपोहिष्ठेत्यृचेनैवततःस्वस्त्ययनंपठेदिति ॥ ततःमण्डपान्तर्गतपूर्वोक्तकलशस्थापनबिधिनादिग्विदिक्षुकलशान्संस्थाप्यपूजयेत् ॥ बेदिकाग्नेयकोणेस्थूणांवसुदायैनमः बसुदामावाहयामीत्यालभ्यगन्धपुष्पादिनार्चयेत् ॥ १ ॥ ततः प्रादक्षिरायेनभद्रायैनमः ॥ भद्रामावाहयामीतिद्वितीयां ॥ २ ॥ अदित्यैनमः ॥ अदितिमावाहयामीतितृतीयां ॥ ३ ॥ नन्दायैनमः ॥ नन्दामावाहयामीतिचतुर्थीं ॥ ४ ॥ ततःमण्डपाग्नेयकोणे ॥ भूत्यैनमः । भूतिमावाहयामि ॥ १ ॥ इतिप्रथमा ॥ ततःप्रादक्षिरायेन । सरस्वत्यैनमः । सरस्वतीमावाहयामि ॥ २ ॥ पूर्बसन्ध्यायैनमः ॥ पूर्बसन्ध्यामावाहयामि ॥ ३ ॥

मध्यसन्ध्यायैनमः ॥ मध्यसन्ध्यामा० ॥ ४ ॥ पश्चिमसन्ध्यायैनमः ॥ पश्चिमसन्ध्यामा० ॥ ५ ॥ गायत्र्यैनमः । गायत्रीमा० । ६ ।सावित्र्यैनमः । सावित्रीमा० ॥ ७ ॥ बृहत्यैनमः । बृहतीमा० ॥ ८ ॥ अदित्यैनमः । अदितिमा० ॥ ९ ॥ बिनतायैनमः । बिनतामा० ॥ १० ॥ पौर्णमास्यैनमः ॥ पौर्णमासीमा० ॥ ११ ॥ सिनीवाल्यैनमः । सिनीवालीमावाहयामि ॥ १२ ॥ इति षोडशस्थूणाःस्पृष्ट्वापूजयेत ॥ नागमात्रेनमइतिनागमातरंवल्लिकाः ॥ सर्पेभ्योनमः । इतिसर्पान्शाखोद्वन्धनानिपूजयेत् ॥ ततःपश्चिमद्वारेणनिर्गत्यपूर्वस्यांदिशि मण्डपाद्वहिर्हस्तमात्रमाश्वत्थंसुदृढनामकंसुबर्णसदृशप्रभंमाल्यपर्बतसाहितंशङ्खाङ्कितन्तोरणं ॥ एह्येहिसुदृढतोरणैनंयज्ञंरक्षसर्बबिघ्नान्निबारय ॥ ओंअग्निमीलेत्या

वाह्य । ऋग्वेदाधिष्ठितायसुदृढतोरणायनमइतिगन्धादिनाप्रपूज्यचन्दनबस्त्रादिशोभितंकृत्वाराहुबृहस्पतीतत्रन्यसेत्पूजयेच्च ॥ अथत्रिशूलशृङ्गेषुप्रादक्षिण्येनेन्द्रन्धातारम्भगमित्यादित्यन्यासंकुर्यात् ॥ द्वारशाखयोःध्रुवायनमः । ध्रुवमावा० ॥ अध्वरायनमः । अध्वरमावाहयामि ॥ इतिबसुद्वयमर्चयेत् ॥ द्वारश्रियैनमः ॥ गणपतयेनमःउपरि । अधःवास्तुपुरुषायनमः ॥ ततःशाखामूलस्थयोर्धान्यराश्योरुपरिरत्नगर्भौप्रशान्ताशिशिरनामानौकलशौपूर्ववन्मन्त्रेणास्थाप्यपूजयेत् ॥ प्रतिकलशंमन्त्राबृत्तिः ॥ ऐरावतङ्कलशद्वयेविन्यस्यपूजयेत् ॥ कलशोपरिघृतेनतिलतैलेनवादीपोदेयः ॥ ततोद्वारदेशेकलशेइन्द्रमावाह्यसंपूज्यनमस्कृत्यपठेत् ॥ ऐह्येहिसर्बामरसिद्धसाध्यैरभिष्टुतोवज्रधरामरेश ॥ संवीज्यमानोप्सरसाङ्गणेनरक्षाध्वर

न्नोभगवन्नमस्ते ॥ ततःसाङ्गसपरिवारंसायुधंसशक्तिकमिन्द्रमावाह्य ॥ ओँत्रातारमिन्द्रमितिमन्त्रेणगन्धादिभिःसम्पूजयेन्नमस्कृत्य ॥ इन्द्रायाहिचित्रभानोइतिपीताम्पताकान्ध्वजञ्चालभ्य ॥ ओंइन्द्रायाहिचित्रभानोसु॒ताऽइ॒मेत्वा॒यवः ॥ अरावीभि॒स्तनांपूतासः ॥ इत्यालभ्य ॥ सं० अ० २० मं० ८७ त्रातारमिन्द्रेतिसम्पूज्यतोरणोपरिनिदध्यात्॥ इन्द्रायसाङ्गायसपरिवारायसायुधायसशक्तिकायएतद्घृतौदनवलिदानंसमर्पयामि ॥ अनेनवलिदानेनइन्द्रःप्रीयताम् । आचम्यनमस्कुर्यात् ॥ इन्द्रः सुरपतिःश्रेष्ठोवज्रहस्तोमहावलः ॥ शतयज्ञाधिपोदेवस्तस्मैनित्यन्नमोनमः ॥ ततऋग्वेदिनौद्वारपालौ ॥ ॐअग्निमीडेपुरोहितंयज्ञस्यदेवमृत्विजम् ॥ होतारंरत्नधातमम् ॥ इतिगन्धादिभिःसम्पूजयेत् ॥ प्रार्थना ॥ ऋग्वेदःपद्मपत्राक्षोगायत्रः

सोमदैवतः ॥ अत्रिगोत्रस्तुविप्रेन्द्रऋत्विक्त्वंमेमखेभवेतिध्यानम् ॥ तत्रश्रीसूक्तम्पावमानञ्चसोमसूक्तंसुमङ्गलम् ॥ पौरुषंरुद्रसूक्तञ्चवामदेव्यन्तथैवच ॥ इतिद्वारपालजपः ॥ अथाग्नेयेगत्वा ॥ पूर्ववदेकङ्कलशन्निधाय ॥ तत्रपुण्डरीकममृतङ्गणञ्चपूजयित्वा ॥ दीपोदेयः ॥ छागस्थंरक्तदक्षिणवामकरद्वयन्धृतशक्तिकमण्डलुयज्ञोपवीतिनमग्निन्ध्यात्वा ॥ ॐएह्येहिसर्वामरहव्यवाहमुनिप्रवीरैरभितोभिजुष्ट ॥ तेजोवतालोकगणेनसार्द्धंममाध्वरंपाहिकवेनमस्ते ॥ १ ॥ ततोअग्निंसाङ्गंसपरिवारंसायुधंसशक्तिकंकलशेआवाह्य ॥ अग्निङ्गन्धादिनाप्रपूज्य ॥ ॐअग्नआयाहिवीतयेगृणानोहव्यदातये ॥ निहोतासत्सिवर्हिषि ॥१॥ इतिरक्तध्वजपताकालम्भः ॥ ॐत्वन्नो॑ऽअग्ने॒ब्बरु॑णस्यब्बि॒द्वान्दे॒वस्य॒हेडो॒ऽअवं॑या

सिसीष्ठाः ॥ यजिष्ठोवह्नितमःशोशुचानोविश्वाद्वेषांसिप्रमुमुग्ध्यस्मत् ॥ १ ॥
सं० । अ० । २१ । मं० । ३ ॥ इतिपताकोच्छ्रयः ॥ ॐअग्निंदूतम्पुरोदधेहव्यवाह
मुपब्रुवे ॥ देवाँ २ ॥ ऽआसादयादिह ॥ १ ॥ सं० । अ० । २२ । मं० । १७ ॥
अग्नयेसाङ्गायसवाहनायसायुधायसशक्तिकायसपरिवारायनमएतद्घृतौदनबलिंसम
र्पये ॥ आचम्यनमस्कुर्यात् ॥ आग्नेयेपुरुषोरक्तःसर्वदेवमयोऽव्ययः ॥ धूम्रकेतु
रजोध्यक्षस्तस्मैनित्यन्नमोनमः ॥ १ ॥ याम्येगत्वा ॥ औदुम्बरंसुभद्राख्य
तोरणंभिन्नाञ्जनाभंविन्ध्यपर्वतसहितञ्चक्राङ्कितंतोरणं ॥ एह्येहिऔदुम्बरतोरणैनं
यज्ञंरक्षसर्वविघ्नान्निवारय ॥ इषेत्वेत्यावाह्ययजुर्वेदाधिष्ठितायसुदृढतोरणायनम
इतिगंधादिनासम्पूजयेत् ॥ ५ ॥ त्रिशूलशृङ्गेषुपूष्णेनमः ॥ पूषणमावाहयामि ॥

मित्रायनमः ॥ मित्रमावाहयामि ॥ वरुणायनमःवरुणमावाहयामि ॥ इत्यादित्यन्यासङ्कुर्य्यात्॥द्वारशाखयोःसोमायनमःसोममावाहयामि॥आपायनमः॥ आपमावाहयामिवसुद्वयमर्चयेत् ॥ द्वारश्रियैनमः । श्रियमा० ॥ उपरिगणपतयेनमःगणपतिमा० ॥ अधोवास्तुपुरुषायनमःवास्तुपुरुषमा० ॥ ततःशाखामूलस्थयोर्धान्यराश्योरुपरिपर्यन्याशोकनामानौकलशौपूर्ववन्मन्त्रेणप्रतिष्ठाप्यपूजयेत् ॥ ततोद्वारदेशेकलशेयममावाह्य ॥ महिषारूढन्धृतदण्डपाशदक्षिणवामकरद्वयंकृष्णाञ्जनचयोपममग्निसमलोचनंयमन्ध्यात्वा ॥ ॐएह्येहिवैवस्वतधर्मराजसर्वामरैरर्चितधर्ममूर्त्ते ॥ शुभाशुभानन्दशुचामधीशशिवायनःपाहिमखन्नमस्ते ॥ १ ॥ इतिध्यात्वा ॥ ॐयमायसोमेतिमन्त्रेणसम्पूज्यनमस्कृत्य ॥ ॐयमायसोमंसुनुतायमायजुहुता

हविः ॥ यमंहयज्ञोगच्छत्यग्निदूतोऽअरंकृतः ॥ १ ॥ इतिश्यामध्वजपताकालंभः ॥ ॐयमायमधुमत्तमंराज्ञेहव्यञ्जुहोतन ॥ इदन्नमऋषिभ्यःपूर्वजेभ्यःपूर्वेभ्यःपथिकृद्भ्यः ॥ १ ॥ इतितोरणोपरिनिधानम् ॥ यमायसाङ्गायसवाहनायसायुधायसशक्तिकायसपरिवारायएतन्माषभक्तबलिदानंसमर्प्प्य ॥ आचम्य ॥ दक्षिणेइषेत्त्वेतियजुर्वेदिनौद्वारपालौ ॥ ॐइ॒षेत्त्वो॒र्ज्जेत्त्वा॑व्वा॒यवंस्त्थदे॒वोवं॑÷सवि॒ताप्रा॑र्प्पयतु॒श्श्रेष्ठ॑तमा॒यकर्म्म॑ण॒ऽआप्प्या॑यद्ध्व॒मघ्न्या॒ऽइन्द्रा॑यभा॒गम्प्र॒जाव॑ती॒रन॑मी॒वाऽअ॑य॒क्ष्म्मामावस्ते॒नऽईशत॒माघश॑ꣳसोद्ध्रु॒वाऽअ॒स्मिन्न्गोप॑तौस्यातब॒ह्वीर्य्यज॑मानस्यप॒शून्पा॑हि ॥ १ ॥ सं० । अ० । १ । मं० १ ॥ इतिमन्त्रेणद्वारपालौपूजयेत् ॥ कातराक्षोयजुर्वेदस्त्रैष्टुभोविष्णुदैवतः ॥ काश्यपेयस्तुविप्रेन्द्रऋत्विक्त्वंमेमखेभवेतियजुर्वेदि

नौध्यात्वा ॥ तत्रआनोभद्द्रानुवाकश्च ॥ १०। आशुःशिशानकस्तथा। १७॥यद्देवाश्री
णिचपठेत् ॥ ३ ॥ ततोष्टौचपुनन्तुमां ॥ ८। अभिधाअसीतिसप्तैव । ७ ॥
दीर्घायुस्तेऋचंपठेत् ॥ आप्यायस्वषट् ॥ ६ ॥ नमोस्तुसर्प्पेभ्यः ॥ १ ॥ आकृ
ष्णेन ॥ १ ॥ नमःशम्भवेत्येकं ॥ १ ॥ सोमंराजानमेकया ॥ १ ॥ अन्न
पते ॥ महाँ २ ॥ ऽइन्द्र ॥ ऋचम्बाचंसमग्रम्पठेत् ।२४। तत्रमन्त्राः ॥ ॐआनो
भ॒द्राः। बा०। स०। अ०। २५। म०। १४। ॐदे॒वानाम्भ॒द्रा। मं०।१५। तान्पूर्वयानि॒
विदां। मं०। १६। ॐतन्नो॒ब्वातो। मं०। १७। ॐतमीशानम्। मं०। १८। ॐस्व॒
स्तिन॒ऽइन्द्रं÷मं०। १९। ॐपृषंदश्वाम॒रुतं÷मं०। २०। ॐभ॒द्रङ्कर्णेभिः। मं०।२१
ॐश॒तमिन्नुश॒रदो॒ऽअन्ति। मं०।२२।ॐअदिति॒र्द्यौः। मं०। २३। इत्यनुवाकः ॥ ॐआ॒

शुःशिशा॑नः । वा० । सं० । अ० । १७. मं० । ३३ । ॐस॒ङ्क्रन्द॑नेनानिमि॒षेण॑ ॥ मं० । ३४ ।
सऽइषु॑हस्तै॒ः ॥ मं० । ३५ । ॐबृह॑स्पते॒परि॑० । मं० । ३६ । ॐब॒ल॒वि॒ज्ञा॒यस्थवि॑
रः । मं० । ३७ ॥ ॐगो॒त्र॒भिदं॑ङ्गो॒विदं॑म्० । मं० । ३८ । ॐअ॒भिगो॒त्राणि॑० ।
३९ । ॐइन्द्र॑ऽआसाम्० । मं० । ४० । ॐइन्द्र॑स्य॒वृष्णो॑÷ । मं० । ४१ । ॐउद्ध॑र्ष
य । मं० । ४२ । ॐअ॒स्माक॒मिन्द्र॑÷ । सं० । ४३ । ॐअ॒मीषां॑ञ्चि॒त्तम्० । ४४ ।
ॐअव॑सृष्टा॒परा॑० । मं० । ४५ । ॐप्रेता॒० । मं० । ४६ । ॐअ॒सौया० । मं० । ४७ ।
ॐयत्र॑बा॒णाः । मं० । ४८ । ॐमर्म्मा॑णिते० । मं० । ४९ । इत्यनुवाकः । ॐयद्देवा
देव॒हेड॑नम् । वा० । सं० । अ० । २० । मं० १४ । ॐयदि॒दिवा॑० । मं० । १५ ।
ॐयदि॒जाग्र॑त० । मं० । १६ । ततोष्टौचपुनन्तुमा ॥ ॐपु॒नन्तु॑मापि॒तर॑÷सो॒म्यास॑÷

वा० ॥ सं० । अ० । १९ । मं० । ३७ ॥ ॐअग्न॒ऽआयू॑ꣳषि० । मं० । ३८ । ॐ
पुनन्तु॑मादेवज॒नाः० ॥ मं० ॥ ३९ ॥ ॐप॒वित्रे॑णपुनीहिमा० । मं । ४० । ॐयत्ते॑प॒वि
त्रं० । मं० ॥ ४१ ॥ ॐपव॑मान॒ः सः ॥ मं० ॥ ४२ ॥ ॐउ॒भाभ्या॑न्देव० । मं० ॥ ४३ ॥
ॐवै॒श्व॒दे॒वीपु॑न॒ती० मं० ॥ ४४ ॥ अभिधाअसीति । ७ । ॐअ॒भि॒धाऽअ॑सि॒भुव॑नम
सि॒य॒न्तासि॑ध॒र्त्ता ॥ सत्वम॒ग्निम्वैश्वान॒रꣳसप्र॑थसङ्गच्छ॒स्स्वहा॑कृतः ॥ १ ॥ वा० । सं० ।
अ० । २२ । मं० । ३ ॐ स्व॒गात्वा॑दे॒वेभ्य॑÷प्प्र॒जाप॑तये॒ब्रह्म॒न्नश्वं॑भ॒न्त्स्यामि॑दे॒वे
भ्य॑÷प्प्र॒जाप॑तये॒तेन॑राध्यासम् ॥ तम्ब॑धानदे॒वेभ्य॑÷प्प्र॒जाप॑तये॒तेन॑राध्नुहि ॥ २ ॥
सं० । अ० । २२ । मं० । ४ ॥ ॐप्र॒जाप॑तयेत्वा॒जुष्ट॒म्प्रोक्षा॑मीन्द्रा॒ग्निभ्या॑न्त्वा॒जुष्ट॒म्प्रोक्षा
मिव्वा॒यवे॑त्वा॒जुष्ट॒म्प्रोक्षा॑मि॒विश्वे॑भ्यस्त्वादे॒वेभ्यो॒जुष्ट॒म्प्रोक्षा॑मि॒सर्वे॑भ्यस्त्वादे॒वे

ब्भ्यो॒जु॒ष्ट॒म्प्रोक्षा॑मि ॥ योऽअर्व्व॑न्त॒ञ्जिघा॑छंसति॒तम॒ब्भ्यमीति॒ब्बरु॑णः। प॒रोम॒र्त्तः॑
प॒रःश्वा ॥ ३ । सं०।अ०।२२।मं० । ५ ॥ ॐअ॒ग्नये॒स्वाहा॒सोमा॑य॒स्वाहा॒पाम्मोदा॑य॒
स्स्वाहा॑सवि॒त्रेस्वाहा॒व्वा॒य॒वे॒स्वाहा॒ब्बिष्ण॑वे॒स्वाहेन्द्रा॑य॒स्स्वाहा॒बृह॒स्प्पत॑ये॒स्वाहा॑मि॒त्राय॒
स्वाहा॒ब्बरु॑णाय॒स्वाहा॑ ॥४॥ सं० । अ०।२२।मं०६॥ॐहि॒ङ्काराय॒स्वाहा॒हिङ्कृ॑ताय॒स्वा
हा॒क्रन्द॑ते॒स्वाहा॑वक्र॒न्दाय॒स्वाहा॒प्प्रोथ॑ते॒स्वाहा॑प्प्रप्प्रोथाय॒स्वाहा॑ग॒न्धाय॒स्वाहा॑ग्घ्र॒ताय॒
स्वाहा॒निवि॑ष्टाय॒स्वाहोप॑विष्टाय॒स्वाहा॒सन्दि॑ताय॒स्वाहा॒ब्बल्ग॑ते॒स्वाहासी॑नाय॒स्वाहा॒श
या॑नाय॒स्वाहा॒स्वप॑ते॒स्वाहा॒जाग्र॑ते॒स्वाहा॒कूज॑ते॒स्वाहा॒प्प्रबु॑द्धाय॒स्वाहा॑ब्बि॒जृम्भ॑माणाय॒
स्वाहा॒ब्बिचृ॑त्ताय॒स्वाहा॒सछंहा॑नाय॒स्वाहोप॑स्त्थिताय॒स्वाहाय॑नाय॒स्वाहा॒प्प्राय॑णाय॒स्वा
हा॑ ॥५॥ स० । अ० । २२ । मं० । ७ । ॐय॒ते॒स्वाहा॒धाव॑ते॒स्वाहोद्द्र॒वाय॒स्वाहोद्

हुतायस्वाहा शूकारायस्वाहाशूकृतायस्वाहानिषण्णायस्वाहोत्थितायस्वाहाजवायस्वा
हाब्बलायस्वाहाब्बिवर्त्तमानायस्वाहाब्बिवृत्तायस्वाहा बिधून्वानायस्वाहाब्बिधूताय
स्वाहाशुश्रूषमाणायस्वाहाश्शृण्वतेस्वाहेक्षमाणायस्वाहेक्षितायस्वाहाब्बीक्षितायस्वहा
निमेषायस्वाहायदत्तितस्मैस्वाहायत्पिबतितस्मैस्वाहायन्मूत्रङ्करोतितस्मैस्वाहा
कुर्वतेस्वाहाकृतायस्वाहा॥६॥सं० । अ० । २२ । मं० । ८ ॥ तत्सवितु॰ । ७ । सं० ।
अ० । २२ । मं० । ९ । इतिसप्त ॥ ॐदीर्घायुस्तऽओषधेखनितायस्मैचत्वाखनाम्य
हम् ॥ अथोत्वन्दीर्घायुर्भूत्वाशतवल्शाब्बिरोहतात् ॥ १ ॥ वा० । सं० अ० । १२ ।
मं० ॥ १०० ॥ आप्यायस्वषट् । ६ । ॐआप्यायस्वसमेतुतेब्बिश्श्वतः सोमब्बृष्ण्य
म् ॥ भवाब्बाजस्यसङ्गथे ॥ १ ॥ वा० । सं । अ० १२ । मं० ॥ ११२ ॥ ॐसन्तेप

यं।छंसिसमुंयन्तुब्वाजा,सम्वृष्ण्यान्न्यभिमातिषाहं÷ ॥ आप्प्यायमानोऽअमृतांय
सोमद्दिविश्श्रवां छं स्युत्तमानिंधिष्ष्व ॥ २ ॥ सं० अ० । १२ । मं० ११३ ॥ ॐ
आप्प्यं।यस्वमदिन्तमसोमब्विश्श्वेंभिरछंशुभिं÷॥भवांनःसप्प्रथंस्तम,सखांब्वृधे॥३॥
सं० । अ० । १२ । मं० । ११४ । ॐआतेंब्वत्सोमनोंयमत्परमाच्चित्सधस्त्थांत् ॥
अग्नेत्त्वाङ्कांमयागिरा॥ ४ ॥ सं० । अ० । १२ । मं० । ११५॥ तुब्भ्यन्ताऽअंङ्गिरस्त
मब्बिश्श्वां÷सुक्षितय;पृथक् ॥ अग्नेकामांययेमिरे॥ ५॥ सं०।अ० १२।मं०।११६ ॥
ॐअग्निःप्पियेषुधामंसुकामोंभूतस्यभव्व्यंस्य ॥ सम्म्राडेकोंब्बिरांजति॥ ६ ॥ सं०।
अ० १२ । मं० । ११७ ॥ इतिषट् ॥ ॐनमोंस्तुसर्प्पेब्भ्यः ॥ १ ॥ वा० । सं० ।
अ० । १३ । मं० । ६ ॥ ॐआकृष्णे न० १ । वा० । सं० । अ० । ३३ । मं० । ४३

ॐनमः शम्भवायच० ॥ १ ॥ वा० । सं० । १६ । मं० । ४१ ॥ ॐसोमꣳराजानम्० वा० । सं० । अ० । ९ । मं० । २६ ॥ ॐअन्नपतेन्नस्य० । १ । वा० सं । ११ । मं० ८३ ॥ ॐमहा ँ २ ॥ ऽ इन्द्रोबज्रं० । वा० । सं० । अ० । २६ ॥ मं० । १० ॥ ॐ ऋचम्बाचंसमग्रंपठेत् ॥ वा० । सं० । अ० । ३६ । एकत्र ॥ ८२ ॥ ततःनैर्ऋत्ये नैर्ऋत्यान्दिशिपूर्ववदेकङ्कलशन्निधाय ॥ कुमुददिग्गजन्दुर्ज्जयञ्चपूजायित्वादीपोदेयः तत्रनिर्ऋतिन्ध्यात्वा ॥ नरारूढंमहाकायङ्खङ्गहस्तंमहाबलम् ॥ नीलंराक्षसवेष्टितं पीताभरणभूषितम् ॥ ॐएह्येहिरक्षोगणनायकस्त्वंविशालवेतालपिशाचसङ्घैः ॥ ममा ध्वरंपाहिपिशाचनाथलोकेश्वरस्त्वम्भगवन्नमस्ते ॥ १ ॥ ॐअसुन्वेतिमन्त्रेण निर्ऋतिंसाङ्गंसपरिवारंसायुधसशक्तिकङ्कलशेआवाह्य ॥ निर्ऋतिङ्गन्धादिनासम्पूज्य

ॐमोषूणः परापरानिर्ऋतिर्दुर्हणावधी ॥ यदाष्टतृष्णयासह ॥ इतिकृष्णध्वजपताकालम्भः ॥ ॐएषतेनिऽर्ऋतेभागस्तञ्जुषस्वस्वाहाग्निनेत्रेभ्योदेवेभ्यःपुरःसद्भ्यःस्वाहायमनेत्रेभ्योदेवेभ्योदक्षिणासद्भ्यःस्वाहाविश्वेदेवनेत्रेभ्योदेवेभ्यःपश्चात्सद्भ्यःस्वाहामित्रावरुणनेत्रेभ्योवामरुन्नेत्रेभ्योवादेवेभ्यऽउत्तरासद्भ्यःस्वाहासोमनेत्रेभ्योदेवेभ्यऽउपरिसद्भ्योदुवस्वद्भ्यःस्वाहा ॥ १ ॥ वा० । सं० । अ० । ९ । मं० । ३५ ॥ इतिध्वजपताकोच्छ्रयणम् ॥ निर्ऋतयेसाङ्गायसवाहनायसायुधायसशक्तिकायसपरिवारायएतत्कृष्णव्रीह्यन्नङ्घृतसहितम्बलिदानंसमर्प्य ॥ आचम्यपश्चिमेगत्वा ॥ प्लाक्षंसुभीमाख्यंसिन्दूरप्रभङ्गन्धमादनपर्वतसहितङ्गदाङ्कितन्तोरणम् ॥ एह्येहिसुभीमतोरणैनंयज्ञंरक्षसर्वविघ्नान्निवारय ॥ अग्नआयाहीत्यावा

ह्य ॥ सामवेदाधिष्ठितायसुभीमतोरणायनमः गन्धादिनाप्रपूज्यचन्दनादिशोभि
तङ्कृत्वाशुक्लंबुधञ्चतन्नन्यस्यपूजयेत् ॥ अथत्रिशूलश्रृङ्गेषु ॥ अर्यम्णेनमःअर्य
मणमावाहयामि ॥ अंशवेनमःअंशुमावाहयामि ॥ विवस्वतेनमःविवस्वन्तमा
वा० ॥ इत्यादित्यन्यासः ॥ द्वारशाखयोःअनिलायनमःअनिलमा० ॥ अनलाय
नमःअनलमावाहयामि ॥ इतिवसुद्वयमावाह्यपूजयेत् ॥ ततःद्वारश्रियैनमः ॥
उपरिगणपतयेनमः ॥ अधोवास्तुपुरुषायनमः ॥ ततःशाखामूलयोर्धान्यपुञ्जयोः ॥
सञ्जीवनायनमः ॥ सञ्जीवनमावा० ॥ अमृतायनमः । अमृतमावाहयामि ॥
इतिकुम्भौप्रतिष्ठाप्यपूजयेत् ॥ द्वारदेशेकलशेवरुणमावाह्य ॥ मकरस्थम्पाशहस्तं
शुक्लवर्णङ्किरीटधारिणन्ध्यात्वा ॥ ओंएह्योहियादोगणवारिधीनाङ्गणेनपर्जन्यसहाप्स

रोभिः ॥ विद्याधरेन्द्रामरगीयमानपाहित्वमस्मान्भगवन्नमस्ते ॥ १ ॥ उइमम्म
वरुणेतिवरुणंसाङ्गंसपरिवारंसवाहनंसायुधंसशक्तिकंसम्पूज्य ॥ ओंतत्त्वांयामिब्रह्मणा
व्वन्दमानस्तदाशास्तेयजमानोहविर्भिः ॥ अहेडमानोवरुणेहबोध्युरुशꣳसमानऽआ
युःप्प्रमोषीः । १ ॥ वा० । सं० । अ० । २१ । मं० । २ । इतिमन्त्रेणश्वेतध्वजपताका
लम्भः ॥ ओंउदुत्तमम्वरुणपाशमस्मदवाधमम्विमध्यमꣳश्रथाय ॥ अथाव्वयमा
दित्यव्व्रतेतवानागसोऽअदितयेस्याम । १ ॥ वा० । सं० । अ । १२ । मं । १२ ।
इतितोरणोपरिनिधानम् । वरुणायसाङ्गायसवाहनायसायुधायसशक्तिकायएतन्नवनी
तोदनवलिदानंसमर्प्य ॥ तत्रसामवेदिनौद्वौद्वारपालौ ॥ ओंअग्नआयाहिवीतय
गृणानोहव्यदातये ॥ निहोतासत्सिवर्हिषि ॥ १ ॥ सा०। सं० । अ० । १ ।

सं० । १ ॥ इतिगन्धादिभिःसम्पूजयेत् ॥ सामवेदस्तुपिङ्गाक्षोजागतःशक्रदैवतः ॥ भरद्वाजस्तुविप्रेन्द्रऋत्विक्त्वंमेमखेभवेतिध्यानम् ॥ तत्रजपः ॥ ॐइन्द्रायसामगायत ॥ अहमस्मिन्प्रथमजाऋतस्य ॥ सेतूँस्तरा ॥ स्वादिष्ठया ॥ गायन्तित्वागायत्रिणः ॥ कस्यनूनङ्कतमस्यामृतानामित्यादिजपः ॥ अथवायव्येगत्वा ॥ पूर्ववदेकङ्कलशन्निधायपुष्पदन्तन्दिग्गजंसिद्ध्यर्थञ्चसम्पूज्यदीपोदेयः ॥ ततःमृगाधिरूढंधूम्रवर्णञ्चित्राम्बरधरंयुवानंवरध्वजधरदक्षिणवामहस्तद्वयम्वायुन्ध्यात्वा ॥ ॐएह्येहियज्ञेममरक्षणायमृगाधिरूढ़ःसहसिद्धसङ्घैः ॥ प्राणाधिपःकालकवेसहायगृहाणपूजाम्भगवन्नमस्ते ॥ ततःसाङ्गंसपरिवारंसायुधंसवाहनंसशक्तिकम्वायुन्ध्यात्वावाह्य ॐआनो॑नि॒युद्भिः॑श॒तिनी॑भिरद्ध्व॒रꣳस॑ह॒स्रिणी॑भि॒रुप॑याहिय॒ज्ञम् ॥ वायोऽअ॒

स्मिन्त्सर्वनेमादयस्वयूयम्पातस्स्वस्तिभि,सदान; । १ ॥ वा० । सं० अ० । २७ । मं० । २८ ॥ इतिगन्धादिभिःसम्पूज्य ॥ ॐवायोशतंहरीणांयुवस्वपोष्याणाम् ॥ उतवातेसहस्रिणोरथऽआयातुपाजसा ॥ इतिधूम्रध्वजपताकालम्भः ॥ ॐ तवंब्वायवृतस्प्पतेत्त्वष्टुर्ज्जामातरद्भुत ॥ अवाछंस्यावृणीमहे ॥ १ ॥ वा० । सं । अ० ॥ २७ ॥ मं० ॥ ३४ ॥ इतिपताकोच्छ्रयणम् ॥ नमस्कुर्यात् ॥ अनाकाशेमहौजाश्चयश्चादृष्टिगतोदिवि ॥ तस्मैपूज्यायजगतोवायवेहन्नमामिते । १ ॥ वायवेसाङ्गायसवाहनायसायुधायसशक्तिकायसपरिवारायेतिएतद्यवौदनबलिदानंसमर्प्य ॥ आचम्य । उत्तरेगत्वा ॥ वटंसुप्रभाख्यंशुद्धस्फटिकप्रभंहिमवत्पर्वतसहितं पद्माङ्कितन्तोरणम् ॥ ॐएह्येहिन्यग्रोधतोरणैनंयज्ञंरक्षसर्वविघ्नान्निवारय ॥ शन्नो

देवीत्यावाह्य ॥ अथर्ववेदाधिष्ठितायन्यग्रोधतोरणायनमः ॥ इतिगन्धादिनाप्रपूज्य ॥ चन्दनादिशोभितङ्कृत्वा ॥ सोमकेतुशर्नीस्तत्रन्यस्यपूजयेत् ॥ त्रिशूलश्रृङ्गेषु ॥ त्वष्ट्रेनमःत्वष्टारमावा० ॥ सवित्रेनमःसवितारमावा० ॥ विष्णवेनमःविष्णुमावाहयामि ॥ इत्यादित्यन्यासः ॥ द्वारशाषयोःप्रत्यूषायनमः । प्रत्यूषमा० ॥ प्रभासायनमः । प्रभासमा० ॥ इतिवसुद्वयंपूजयेत् ॥ शाखामूलयोर्धान्यराश्योरुपारि धनदायनमः । धनदमावा० ॥ श्रीपदायनमः । श्रीपदमावा० ॥ इतिकलशौप्रतिष्ठाप्यपूजयेत् ॥ तत्रसार्वभौमादिग्गजञ्चन्यस्यप्रपूज्यर्दापोदेयः ॥ तत्रद्वारदेशेकलशेसोममावाह्य ॥ नरयुतविमानस्थंकुण्डलहारकेयूररुचिराम्बरगदाधरदक्षिणवामभुजद्वयंमुकुटिनंमहोदरंमहाकायंहरितवर्णङ्कुवेरन्ध्यात्वा ॥ ॐएह्येहियज्ञेश्वर

यज्ञरक्षाम्बिधत्स्वचनक्षत्रगणेनसार्द्धम् ॥ सर्वौषधीभिःपितृभिःसहैवगृहाणपूजाम्भगवन्नमस्ते ॥ साङ्गंसवाहनंसायुधंसशक्तिकंसपरिवारंसोमङ्कलशेआवाह्य ॥ आप्यायस्वेतिगन्धादिभिःसम्पूज्य ॥ नमस्कृत्यपठेत् ॥ सर्वनक्षत्रमध्येतुसोमोराजाव्यवस्थितः ॥ तस्मैसोमायदेवायनक्षत्रपतयेनमः ॥ १ ॥ इतिनमस्कृत्य ॥ ॐसोमोधेनुꣳसोमोऽअर्व्वन्तमाशुꣳसोमोव्वीरङ्कर्म्मण्यन्ददाति ॥ सादन्यम्विदथ्यꣳसभेयम्पितृश्रवणय्योददांसदस्मै । १ । बा० । सं० । अ० । ३४ । मं० । २१ । इति सुवर्णध्वजपताकालम्भः ॥ ॐव्वयꣳसोमंव्व्रतेतवमनस्तनूषुबिभ्रतः ॥ प्रजावन्तः सचेमहि । १ । बा० । सं० । अ० । ३ । मं० । ५६ ॥ इतितोरणोपरिनिधानम् ॥ सोमायसाङ्गायसवाहनायसायुधायसशक्तिकायसपरिवारायेतिएतस्मैयज्ञवौदनवलिंदा

नंसमर्प्य ॥ आचम्य ॥ तत्रअथर्ववेदिनौद्वौद्वारपालौपूजयेत् ॥ ॐशन्नोदेवीरभिष्टयऽ
ऽआपोभवन्तुपीतये ॥ शंय्योरभिस्रवन्तुनः ॥ इत्यथर्ववेदम्पूजयेत् ॥ सुवर्ण
नयनोथर्वानुष्टुप्छन्दः पुरन्दरः ॥ वेदोवैतानगोत्रस्तुऋत्विक्त्वम्मेमखेभवेतिध्यानम् ॥
अथर्वाङ्गिरसंञ्चैवअथर्वशिरसन्तथा ॥ शान्त्यध्यायम्पठेत् ॥ अथैशान्याङ्गत्वा ॥
पूर्ववत्कलशन्निधायतत्रसुप्रतीकन्दिग्गजंमङ्गलञ्चतत्रन्यसेत् ॥ सम्पूज्यदीपोदेयः ॥
ततोवृषारूढंदक्षिणवामहस्तयोर्वरत्रिशूलधरन्त्रिनेत्रंशुक्लवर्णमीशानन्ध्यात्वा ॥ एह्ये
हिविश्वेश्वरविश्वनाथकपालखट्वाङ्गधरेणसार्द्धम् ॥ लोकेनयज्ञेश्वरयज्ञासिद्ध्यैगृहाण
पूजांभगवन्नमस्ते ॥ ॐईशावास्यमिदꣳसर्वंय्यत्किञ्चजगत्याञ्जगत् ॥ तेनत्त्यक्तेनभु
ञ्जीथामागृधः कस्यस्विद्धनम् ॥ १ ॥ वा० । सं० । अ० ॥ ४० ॥ मं० ॥ १ ॥

इतिसम्पूज्य ॥ ॐनम॑ः शम्भ॒वाय॑चमयो॒भवाय॑च॒नम॑ः शङ्क॒राय॑चमयस्क॒राय॑च॒
नम॑ः शि॒वाय॑चशि॒वत॑रायच ॥ १ ॥ वा० । सं० । अ० । १६ । मं० ।
४१ ॥ इतिरक्तध्वजपताकालम्भः ॥ ॐतमीशा॑न॒ञ्जग॑तस्त॒स्थुष॒स्पतिं॑न्धि
यञ्जि॒न्न्वम॑वसेहूमहे॒व्वयम् ॥ पूषा॒नो॒यथा॒वेद॑सा॒मस॑द्वृ॒धेर॑क्षि॒ता॒पा॒युर॑दब्धः
स्व॒स्तये॑ । १ ॥ इतिपताकोच्छ्रयः ॥ ईशानायसाङ्गायसवाहनायसायुधा
यसशक्तिकायसपरिवारायएतद्ध्वेधुगौद्नबलिदानंसमर्प्य ॥ नमस्कृत्यपठेत् ॥ स
र्वाधिपोमहादेवईशानःशङ्करईश्वरः ॥ शूलपाणिर्विरूपाक्षस्तस्मैनित्यन्नमोनमः ॥१॥
ततःपूर्वेशानयोर्मध्येउदूर्ध्वमुद्दिश्यपूर्ववत्कलशन्निधाय ॥ तत्रब्रह्माणम्पूजयेत् ॥
तद्यथा ॥ अक्षसूत्रकुशमुष्टिधरोदूर्ध्वाधोदक्षिणकरद्वयंस्रुवकमण्डलुधरोदूर्ध्वाधोवाम

करद्वयञ्चतुर्मुखंश्मश्रुलंजटिलंलंबोदरंरक्तवर्णंब्रह्माणन्ध्यायेत् ॥ ॐएह्येहिसर्वाधि
पतेसुरेन्द्रलोकेनसार्द्धंपितृदेवताभिः ॥ सर्वस्यधातास्यमितप्रभावोविशाद्ध्वरन्नः
सततंशिवाय ॥ १ ॥ ब्रह्माणंसाङ्गंसवाहनंसपरिवारंसायुधंसशक्तिकमावाह्य ॥
ॐआब्ब्रह्मन्ब्ब्राह्मणोम्ब्रह्मवर्च्चसीजायतामाराष्ट्रेराजन्न्यः शूरऽइषव्व्योतिव्व्याधी
महारथोजायतादोग्ध्रीधेनुर्ब्बोढानड्वानाशुः सप्तिः पुरन्धिर्य्योषाजिष्णूरथेष्ठाः सभेयोयु
वास्ययजमानस्यव्वीरोजायतान्निकामेनिकामेनः पर्ज्जन्न्योव्वर्षतुफलवत्योनऽओ
षधयः पच्यन्तांय्योगक्षेमोनः कल्प्पताम् ॥ १ ॥ वा० । सं० । अ० । २२ ॥
मं ॥ २२ ॥ इतिगन्धादिनाप्रपूज्य ॥ ॐयद्देवादेवहेडनन्देवासश्चकृमाव्वयम् ॥
अग्निर्म्मातस्मादेनसोव्विश्वान्मुञ्चत्त्वंहसः । १ । वा० । सं० । अ० । २० । मं०

१४ । इतिरक्तध्वजपताकालम्भः ॥ ॐब्रह्म॑जज्ञा॒नम्प्र॑थ॒मम्पु॒रस्ता॒द्विसी॑म॒तः सु॒रुचो॑ब्वे॒नऽआ॑वः ॥ सबु॒ध्न्याऽउप॒माऽअ॑स्यब्वि॒ष्ठाः स॒तश्च॒योनि॒मस॑तश्च॒ब्विव॑ः ॥ १ ॥ वा । सं० । अ० । १३ । मं० । ३ । इत्युच्छ्रायः ॥ ॐसनो॑भुवनस्यपतेप्प्रजाप॒ते यस्यं॑तऽउ॒परि॑गृ॒हायस्यं॑ब्वे॒ह ॥ अ॒स्मैब्रह्म॑णे॒स्मै॑क्ष॒त्राय॒महि॒शर्म्म॑यच्छ॒स्वाहा॑ । १ । वा० । सं० । अ० १८ । ४४ । ब्रह्मणेसाङ्गायसवाहनायसायुधायसशक्तिकायसपरिवारायएतत्पायसबलिदानंसमर्प्याचम्यनमस्कुर्यात ॥ पद्मयोनिश्चतुर्मूर्तिर्वेदवासाः पितामहः ॥ यज्ञाध्यक्षश्चतुर्वक्रस्तस्मैनित्यन्नमोनमः ।१। निर्ऋतिवरुणयोर्मध्येपूर्ववत्कलशंन्निधाय । ततःअधः । अनन्तशयनासीनंफणासप्तकमण्डितम् ॥ पद्मशङ्खधरमूर्द्ध्वाधोदक्षिणकरद्वयंनीलवर्णमनन्तन्ध्यात्वा । एह्येहिपातालधरामरेन्द्रनागाङ्ग

नाकिन्नरगीयमान ॥ रक्षोरगेन्द्रामरलोकसङ्घैरनन्तरक्षाध्वरमस्मदीयम् ॥ साङ्गंसवाहनंसायुधंसशक्तिकंसपरिवारमनन्तमावाह्य ॥ ॐआयङ्गौःपृश्निरक्रमीदसदन्मातरम्पुरः ॥ पितरञ्चप्प्रयन्त्स्व÷ । १ । वा० । सं० । अ० । ३ । मं० । ६ । इति गन्धादिभिःप्रपूज्य ॥ ॐनमोस्तुसर्प्पेभ्योयेकेचपृथिवीमनु ॥ येअन्तरिक्षेयेदिवितेभ्य÷सर्प्पेभ्योनम÷ ॥ १ ॥ वा० । सं० । अ० । १३ । मं० । ६ । इतिमेघवर्णध्वजपताकालम्भः ॥ ॐतद्विष्णोः;परमम्पदꣳ सदापश्यन्तिसूरय÷ ॥ दिवीवचक्षुराततम् ॥ १ ॥ वा० । अ० । ६ । मं० । ५ । इत्युच्छ्रायः ॥ ॐविष्णोर्नुकम्वीर्य्याणिप्प्रवोचय्यः;पार्थिवानिव्विममेरजाꣳसि ॥ योऽअस्कभायदुत्तरꣳसधस्थंव्विचक्रमाणस्त्रेधोरुगायोव्विष्णवेत्वा ॥ १ ॥ वा० । सं० । अ० । ५ ।

मं० ॥ १० ॥ अनन्तायसाङ्गायसवाहनायसायुधायसशक्तिकायसपरिवारायएतत्पासबलिदानंसमर्प्पयनमस्कुर्य्यात् ॥ योसावनन्तरूपेणब्रह्माण्डंसचराचरम् ॥ पुष्पवद्धधतेमूर्द्धिन्नतस्मैनित्त्यन्नमोनमः ॥ १ ॥ ततःप्राच्याङ्गत्वा ॥ गणानान्त्वेतिमन्त्रेणगणेशायनमः ॥ गणेशंसंपूज्य ॥ ॐनमोस्तुरुद्द्रेब्भ्योयेदिवियेषाम्वर्षमिषवः तेब्भ्योदशप्राचीर्द्दशदक्षिणादशप्प्रतीचीर्दशोदीचीर्द्दशोर्द्ध्वा ॥ तेब्भ्योनमोऽअस्तुतेनोवन्तुतेनोमृडयन्तुतेयन्द्विष्मोयश्चनोद्वेष्टितमेषाञ्जम्भेदध्मः ॥ १ ॥ वा० । सं० । अ० । १६ । ६४ ॥ ॐनमोस्तुरुद्द्रेब्भ्योयेन्तरिक्षेयेषाम्वातऽइषवः ॥ तेब्भ्योदशप्प्राचीर्द्दशदक्षिणादशप्प्रतीचीर्दशोदीचीर्दशोर्द्ध्वाः ॥ तेब्भ्योनमोऽअस्तुतेनोवन्तुतेनोमृडयन्तुतेयन्द्विष्मोयश्चनोद्वेष्टितमेषाञ्जम्भेदध्मः॥ वा०।सं०।अ०।१६।मं०

६५ ॥ ॐनमोस्तुरुद्रेभ्योयेपृथिव्यामिति ॥ सं० । अ० । १६ । मं० । ६६ । मन्त्रान्पठित्वामण्डपाद्वहिर्दिग्विदिक्षुरुद्रान्संस्थाप्यवलिन्दत्वा । येकेचित्त्विहलोकेषुआगतावलिकांक्षिणः ॥ तेभ्योवलिंप्रयच्छामिनमस्कृत्यपुनःपुनरितीशान्यांसर्वेभ्योभूतेभ्योनमइतिवलिन्दत्वाऽऽचामेत् । ततःमण्डपमध्येचामरकिङ्किणीयुतःषोडशहस्तदण्डोवादशहस्तदीर्घस्त्रिहस्तविस्तारएकहस्तविस्तारोवापञ्चवर्णविचित्रोमहाध्वजइन्द्रस्यवृहस्पती०त्युच्छ्रायेत् । तत्रब्रह्मजज्ञानमितिब्रह्माणंपूजयेदितिमण्डपपूजा ॥ अथधान्याधिवासविधिमाहपञ्चरात्रे ॥ पूर्वोक्तमण्डपस्योत्तरेभागेपूर्वापरायतांसप्तहस्तमानेनदीर्घांपञ्चहस्तैर्विस्तृतान्दीर्घचतुरस्रांगूढाञ्चतुस्तम्भसहितामुपरितःकटादिनावेष्टितान्निर्वातप्रावारान्दक्षिणतोद्वारशालिनींशालांकुर्य्यात् ॥ अथप्रयोगः ॥ आच

म्यप्राणायामंकृत्वा ॥ सुमुखश्चेत्यादिपठित्वा ॥ अद्येहेत्यादि० अमुकगोत्रोऽमुकशर्मासप्रासादामुकमूर्त्तेंस्थिरप्रतिष्ठाकर्म्मांङ्गत्वेनधान्याधिवासाख्यङ्कर्म्माहङ्करिष्ये ॥ कदलीस्तम्भचतुष्टयान्तर्भूतमण्डलङ्गोमयेनोपलिप्य ॥ पञ्चगव्येनप्रोक्ष्य ॥ स्वस्त्ययनङ्कृत्वा ॥ तार्क्ष्येतिमन्त्रेणअस्त्रमन्त्रेणसंरक्ष्य ॥ ॐस्वस्त्ययनन्तार्क्ष्यमरिष्टनेमिम्महद्भूतम्बायसन्देवतानाम् ॥ असुरघ्नमिन्द्रसखंसमत्सुबृहद्यशोनावमिवारुहेमा ॥ अहोमुचमाङ्गिरसङ्गयञ्चस्वस्त्याञ्चयम्मनसाचतार्क्ष्यम्प्रयतपाणिःशरणम्प्रपद्येस्वस्तिसम्बाधेष्वभयन्नोऽअस्तु ॥ १ ॥ ऋक् ॥ इतितार्क्ष्यमन्त्रः ॐअस्त्रायफट् । इत्यस्त्रमन्त्रः ॥ ततःघृतेनहरिद्राचूर्णेंनत्र्यम्बकमितिप्रतिसरन्त्रिवारमभिमृश्यवासुकिन्ध्यात्वा ॥ तद्यथा ॥ ॐएह्येहिपातालधरामरेन्द्रनागाङ्ग

नाकिन्नरगीयमान ॥ यक्षोनगेन्द्रामरलोकसङ्घैरनन्तरक्षाध्वरमस्मदीयम् ॥ इत्यावाह्य ॥ पन्नगाधिपतिर्देवोवासुकिःश्वेतविग्रहः ॥ पातालेनित्त्यंवसातिवासुकयेनमोनमः ॥ ॐनमोस्तुसर्प्पेभ्योयेकेचंपृथिवीमनुं ॥ येऽअन्तरिंक्षेयेदिवितेभ्यं÷ सर्प्पेभ्योनमं÷ ॥ १ ॥ वा। सं०। अ०। १३। मं० ॥ ६ ॥ इतिसम्पूज्य ॥ आचार्य्यादिसर्वेषान्दक्षिणहस्तेवृहत्साम्नारक्षाकङ्कणंवध्नीयात् ॥ ॐवृहत्सामक्षत्रभृद्वृद्धवृषिणयन्त्रिष्टुभोयः ॥ सुमितमुग्रवीरंइन्द्रस्तोमेनपञ्चदशेनमध्यमिदम्बातेनरक्षा ॥ १ ॥ ऋक् ॥ ततोमण्डलेऽष्टद्रोणमितन्धान्यपुञ्जङ्कृत्वाधिकम्वा ॥ ततआचार्य्योदेवपूजापात्राणित्रीणिपाद्यार्घाचमनीयानिगङ्गाजलैः कदलीस्तम्भगोमयतिन्तिणीसहितानिद्वात्रिंशद्वारम्भगनामस्मरणपूर्वकंशुद्धोदकैःसंशोध्य ॥ धान्यस्य

पूर्वादितःचतुःकुम्भान्संस्थाप्य ॥ तेषुसुगन्धिजलंपञ्चरत्नपञ्चपल्लवानिप्रक्षिप्य ॥ कुशदूर्वाक्षततिलचन्दनगौरसर्षपाहिरण्यकूर्चतुलसीविल्वपत्रपुष्पपूगफलनारिकेराणि निःक्षिप्य ॥ नववाससाच्छाद्य ॥ अस्त्रायफट्इतिसंरक्ष्यधेनुमुद्राम्प्रदर्श्य ॥ मूलेननमश्शिवायेतिप्रत्येकंशतवारमभिमन्त्र्य ॥ ततःॐआपोहिष्ठामयोभुवस्तानऽऊर्जेदधातन ॥ महेरणायचक्षसे ॥ १ ॥ वा० । सं० । अ० । ३६ । मं० । १४ इतिपूर्वकुम्भे ॥ ॐहिरण्यवर्णाःशुचयःपावकायासुवर्च्चाः ॥ इन्द्रोयावज्रीवृषभोररादताआपोदेवीरिहमामवन्तु ॥ १ ॥ इत्यृक् मन्त्रेणदक्षिणकुम्भे ॥ ॐपवमानःसोऽअद्यनःपवित्रेणव्विचर्षणिः ॥ यःपोतासपुनातुमा ॥ १ ॥ वा० । सं० । अ० । १९ । मं० । ४२ । इतिपश्चिमकुम्भे ॥ ॐव्विष्णोर्नुकम्ब्वीर्य्याणि

प्र॒वो॑चय्यः;पार्थि॑वानिब्बिम॒मेरजा॑ꣳसि ॥ योऽअस्क॑भाय॒दुत्त॑रꣳस॒धस्थ॑म्बिचक्र॒मा॒णस्त्रे॒धोरु॑गा॒योब्बिष्ण॑वेत्वा ॥ १ ॥ वा० । सं । अ० । ५ मं० । १८ ॥ ॐतद्विष्णोः;प॒र॒मम्प॒दꣳसदा॑पश्यन्तिसू॒रयः॑; ॥ दि॒वी॑व॒चक्षु॒रात॑तम् ॥ २ ॥ वा० । सं । अ० । ६ । मं० । ५ । इतिद्वाभ्यामुत्तरे ॥ कुम्भानभिमन्त्रयेत् ॥ ततोधान्योपरि पीठेदेवन्निवेश्य ॥ दर्भेणवाससाच्छाद्यावेष्ट्य ॥ तदग्रेतण्डुलैःपद्मंविलिख्य ॥ तेषुपूर्वेपलैकङ्गोमूत्रम् ॥ १ ॥ दक्षिणेअंगुष्ठार्द्धंगोमयम् ॥ २ ॥ पश्चिमेसप्तपलंक्षीरम् ॥ ३ ॥ उत्तरेत्रिपलन्दधि ॥ ४ ॥ मध्येपलमेकमाज्यम् ॥ ईशानेपलमेकंकुशोदकम् ॥ ६ ॥ एवंसंस्थाप्यपुण्याहजलैःसंप्रोक्ष्य ॥ गोमूत्रेविष्णुं ॥ इदम्बिष्णुरित्यावाह्यपूजयेत् ॥ १ ॥ गोमयेब्रह्मजज्ञानमितिब्रह्माणम् ॥ २ ॥ क्षीरे

कुम्भेअच्युतन्तद्विष्णोरीरिति ॥ ३ ॥ दधिकुम्भेन्नात्परिस्रुतेतिशुक्रम् ॥ ४ ॥ विष्णोःकर्म्माणीतिघृतकुम्भेकृष्णं ॥ ५ ॥ कुशोदकुम्भेसावित्र्यासवितारम् ॥ ६ ॥ आवाह्यदक्षिणान्तमभ्यर्च्य ॥ ततःपूर्वस्थापितपाद्यार्घाचमनीयानिमूलेनसमर्प्य ॥ ततःपात्रान्तरेणकिञ्चिद्गोमूत्रन्नीत्वादेवगायत्र्यादेवंस्नापयेत् ॥ ॐतत्पुरुषायविद्महे महादेवायधीमहि ॥ तन्नोरुद्रःप्रचोदयात् ॥ १ ॥ एवङ्गन्धद्वारेतिगोमयोदकेन ॥ २ ॥ आप्यायस्वेतिक्षीरकुम्भेन ॥ ३ ॥ दधिक्राब्णइतिदधिकुम्भोदकेन ॥ ४ ॥ तेजोसिशुक्रमसीतिघृतेन ॥ ५ ॥ देवस्यत्वेतिकुशोदकेनसंस्नाप्य ॥ ६ ॥ देवम्प्रणवेनाभिमन्त्र्यस्नापयेत् ॥ तदनन्तरम्पञ्चामृतेन ॥ आप्यायस्वेतिपयसा ॥ दधिक्राब्णइतिदध्ना ॥ तेजोसीतिघृतेन ॥ मधुब्वातेतिमधुना । अपाथं

रसेतिशर्क्करयास्नापयेत् ॥ ततःपूर्वस्थापितचतुःकलशोदकेनविष्णोर्नुकमितिस्नापयेत् ॥ नववाससावेष्ट्यपुण्याहजलैर्मूलेनप्रोक्ष्य ॥ चतुर्द्दिक्षुगोघृतज्वलितदीपान्संस्थाप्य ॥ वामेवारिपात्रंस्थापयेत् ॥ तुलसीविल्वपत्रपुष्पाणिप्रक्षिप्याभिमन्त्र्यसंरक्ष्य ॥ धेनुमुद्रयामृतीकृत्यवलिन्दद्यात् ॥ पूर्वस्यान्दिशियेदेवाःपार्षदप्रवरास्थिताः ॥ तेमेवलिम्प्रगृह्णंतुदेवंरक्षन्तुसर्वदा ॥ १ ॥ दक्षिणे ॥ विनायकाःक्षेत्रपालाःयेचान्येवलिकाङ्क्षिणः ॥ तेगृह्णन्तुमयादत्तंवलिंसर्वेदिशिस्थिताः ॥ २ ॥ पश्चिमे ॥ पूषायाःपार्षदाःसर्वेवारुण्यान्दिशिसंस्थिताः ॥ तेगृह्णन्तुमयादत्तंवलिन्देवसुखेवहिः ३ ॥ उत्तरे ॥ चाण्डालाकुमुदाद्याश्चयेभूताश्चोत्तरेस्थिताः ॥ आगच्छन्तुचतेसर्वेवलिम्भक्षन्तुचोत्तरे ॥ ४ ॥ हस्तौपादौप्रक्षाल्याचम्य ॥ प्राणानायम्य । ब्राह्मणेभ्यो

दक्षिणान्दत्वाऽऽशिषोगृहीत्वा ॥ शुद्धोध्यायेद्ब्रह्मसनातनम् ॥ प्रहरेप्रहरेअर्घाद्युपचारैरभ्यर्च्य ॥ आचार्यायधेनूर्दत्त्वा ॥ ६ ॥ रात्रौनृत्यगीतवादित्रवेदघोषैरात्रिङ्गमयेत् ॥ इतिधान्याधिवासविधिः ॥ अथयागप्रकाशिकोक्तरीत्यासर्वतोभद्रादिचक्रस्थापनप्रकारः ॥ यागमण्डपस्यचतुष्कोणेष्वीशानमारभ्यापक्केष्टकादिभिर्हस्तमात्रोन्नतांहस्तमात्रविस्तृताञ्चतुरस्रांवेदींविरच्यतत्रेशानकोणेग्रहवेदीम्आग्नेयकोणेसर्वतोभद्रंनैर्ऋत्येवास्तुचक्रम्वायव्येलिङ्गतोभद्रं ॥ यद्वा ॥ महावेद्यांमध्येप्रधानदेवतास्थापनार्थंतत्रैवसर्वतोभद्रमीशानकोणेसूर्य्यादिग्रहान् ॥ आग्नेयकोणेलिङ्गतोभद्रंनैर्ऋत्येवास्तुचक्रंवायव्यकोणेयोगिनीचक्रमितिक्रमेणज्ञेयम्। तथाचबौधायनसूत्रोक्तरीत्याआग्नेयेहस्तमात्राम्वेदिङ्कृत्वासर्वतो भद्रन्नैर्ऋत्येवास्तुमण्डलम्वायव्येयोगिनीम

ण्डलमीशान्यान्नवग्रहमण्डलंप्रधानम्मध्येकृत्वा । इतिबौधायनक्रमः ॥ अथगुरुर्म
हावेद्यांसर्वतोभद्रदेवतादानमयूखोक्तसामान्यप्रयोगोक्ताआवाह्यसम्पूज्य ॥ अथसर्वतो
भद्रचक्रस्योद्धारमाह ॥ विलिखेत्सर्वतोभद्रम्बेदिकोपरिसंस्थितम् ॥ तिर्यगूर्ध्वग
तारेखाःकुर्य्यादिकोनविंशतिम् १ ॥ खण्डेन्दुस्त्रिपदाःकोणेशृङ्खलाःपञ्चकोष्ठकाः॥
एकादशपदावल्लीभद्रन्तुनवभिःपदैः ॥ २ ॥ चतुर्विंशत्पदावापीविंशद्भिःपरिधिः
पदैः ॥ मध्येषोडशभिःकोष्ठैःपद्ममष्टदलंलिखेत् ॥ ३ ॥ सितेन्दुःशृङ्खलाकृष्णा
वल्लीनीलेनपूरिता ॥ भद्रोरुणःसितावाप्यःपरिधिःपीतवर्णका ॥ ४ ॥ वाह्या
न्तरदलैःश्वेतैःकर्णिकापीतवर्णका ॥ खण्डेन्दुःशृङ्खलावापीबल्लीभद्रन्तुपञ्चकम् ॥ ५ ॥
परिध्यावेष्टितंसर्ववाह्येसत्वरजस्तमैः ॥ सर्वतन्त्रसमुद्दिष्टंसर्वतोभद्रमण्डलम् ॥ ६ ॥

॥ सर्वतोभद्रचक्रम् ॥

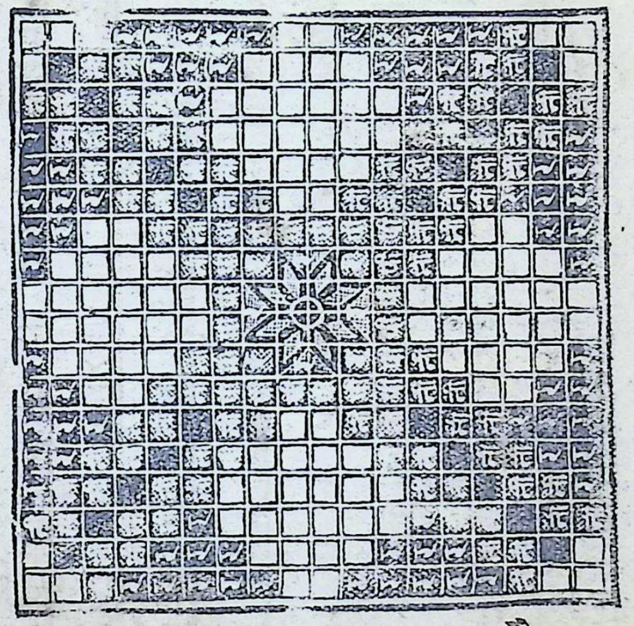
॥ ई० ॥
॥ पू० ॥
॥ मा० ॥
॥ वा० ॥
॥ प० ॥
॥ नै० ॥

॥ अथसर्वतोभद्रचक्रस्योद्धारणम् ॥

ततोपूजनक्रमः ॥ आग्नेयेगणपञ्चैवईशान्यामम्बिकांयजेत् ॥ इतिसांप्रदायिकाः ॥
मध्येब्रह्माष्टासुदिक्षुदेवाःसोमादयःस्मृताः ॥ ७ ॥ वायुसोमद्वयोर्मध्येवसूनष्टौतु
कारयेत् ॥ सोमेशानयोर्मध्येरुद्राएकादशामताः ॥ ८ ॥ ईशानेन्द्रयोर्मध्येआ
दित्यान्द्वादशाँल्लिखेत् ॥ इन्द्राग्न्योर्मध्यदेशेतुअश्विनौपूजयेत्ततः ॥ आग्नेययमयो
र्मध्येविश्वेदेवाःसपैतृकाः ॥ ९ ॥ याम्यनैर्ऋत्ययोर्मध्यंऋषीन्सप्तप्रपूजयेत् ॥
नैर्ऋत्यपश्चिमयोर्मध्येनागभूतांश्चकारयेत् ॥ १० ॥ वायुपश्चिमयोर्मध्येगन्धर्वा
प्सरसःकुरु ॥ ब्रह्मसोमद्वयोर्मध्येरुद्रान्देवान्प्रपूजयेत् ॥ ११ ॥ स्कन्दन्नन्दी
श्वरंशूलंमहादेवम्प्रपूजयेत् ॥ ब्रह्मेशानयोर्मध्येश्रियाविष्णुस्तथैवच ॥ १२ ॥
ब्रह्मेन्द्रयोस्तथामध्येमरुतांसप्तकोगणः ॥ ब्रह्माग्निमध्येचतथास्वधाञ्चैवप्रपूजयेत्

॥ १३ ॥ ब्रह्मयाम्यद्वयोर्मध्येमृत्युरोगौतथैवच ॥ ब्रह्मनैर्ऋत्ययोर्मध्येवसुविघ्नौतु
पूजयेत् ॥ १४ ॥ ब्रह्मबरुणयोर्मध्येअपांस्थानम्बिधीयते ॥ ब्रह्मवायुद्वयोर्मध्येमरुतां
सप्तकोगणः ॥ १५ ॥ ब्रह्मणःपादमूलेतुमेदिनीन्तत्रपूजयेत् ॥ कावेरीनर्मदा
चैवयमुनाचसरस्वती ॥ १६ ॥ गङ्गाकृष्णातथागोदापूज्यामध्येससागराः ॥
आदित्यश्चन्द्रमाभौमोबुधजीवासितार्कजाः ॥ सर्वेग्रहास्तुसम्पूज्याराहुकेतूक्रमेणच
॥ १७ ॥ ब्राह्मीमाहेश्वरीचैवकौमारीवैष्णवीतथा ॥ वाराहीचैवमाहेन्द्रीचामुण्डा
सप्तमातरः ॥ १८ ॥ दुर्गापूज्याततोवाह्येवज्रादीन्यायुधानिच ॥ गन्धपुष्पादि
भिःपूज्याधूपदीपैश्चसर्वतः ॥ १९ ॥ नैवेद्यताम्बूलसुतैर्द्रव्यवासःसमन्वितैः
सर्वत्रभद्रंयस्मात्स्यात्सर्वतोभद्रमीदृशम् ॥ इतिसर्वतोभद्रमण्डलप्रकारः ॥ अथसर्व

तोभद्रमण्डलस्थापितदेवतानाम्पूजनम् ॥ ॐमद्येहेत्यादि०सप्रासादविष्णुमूर्त्तेस्थिरप्रतिष्ठायागभूतसर्वतोभद्रदेवतास्थापनपूजनमहङ्करिष्ये ॥ गणानान्त्वेतिमन्त्रेण आग्नेय्याङ्गणपंन्यसेत् ॥ अथध्यानम् ॥ ॐएह्येहिविघ्नाधिपतेसुरेन्द्रब्रह्मादिदेवैरपिवन्द्यपाद ॥ गजास्यविघ्नालयविश्वमूर्त्तेगृहाणपूजाम्भगवन्नमस्ते ॥ इतिध्यात्वा १॥ गणानान्त्वेतिमन्त्रस्यप्रजापति ऋषिरनुष्टुप्छन्दोगणपतिर्देवतागणपतिस्थापनेपूजने

ऋक्	यजुः वा०सं०अ०२३मं०१९	सामसं.छं.अ.१प्र.२द.८मं.३	अथर्व
गणानान्त्वागणपतिं हवामहेकविं	॥ गणानान्त्वागणपतिम् ॥	आतूनइन्द्र०॥	गणरत्वोपगायंतुमा ॥

विनियोगः ॥ ॐग॒णानान्त्वाग॒णपतिꣳहवामहेप्प्रियाणान्त्वाप्प्रियपतिꣳहवामहे

निधीनान्त्वानिधिपतिꣳहवामहेव्वसोमम ॥ आहमजानिगर्ब्भधमात्वमजासिगर्ब्भधम् ॥ १ ॥ गणपतयेनमः ॥ गणपतिमावाहयामि ॥ श्रीश्चतेतिमन्त्रेणईशान्यामम्बिकांन्यसेत् ॥ ध्यानम् ॥ एह्येहिदुर्गेदुरितौघनाशिनिप्रचण्डदैत्यौघतनुप्रहारिणि ॥ शिवेमहेशार्द्धशरीरधारिणिस्थिराभवत्वंममयज्ञकर्मणि ॥ इतिध्यात्वा ॥

ऋक	यजुःवा०सं०अ०३१मं०२२	साम०छं०सं०अ०१प्र०८द०३मं०१	अथर्वण
जातवेदसे० ॥	श्रीश्चतेलक्ष्मीश्चपत्न्या०	स्वादोरित्थाविषुवता०	यामालक्ष्मीपतया०

श्रीश्चतेतिमन्त्रस्यनारायणऋषिस्त्रिष्टुप्छन्दः दुर्गादेवतादुर्गास्थापनेपूजनेविनियोगः ॥ ॐश्रीश्चतेलक्ष्मीश्चपत्न्यावहोरात्रेपार्श्वेनक्षत्राणिरूपमश्विनौव्यात्तम् ॥

इषणन्निषाणामुम्मंऽइषाणसर्व्वलोकम्मंऽइषाण ॥ २ ॥ श्रियैनमः । श्रियमा०॥ मध्य
स्थानेस्थितोब्रह्मा आब्रह्मन्निति पूजयेत् ॥ ॐएह्येहिसर्वाधिपतेसुरेन्द्रलोकेनसार्धंपितृ
देवताभिः ॥ सर्वस्यधातास्यमितप्रभावोविशत्त्वमन्तःसततंशिवाय ॥ १ ॥ आब्रह्मन्नि
तिमन्त्रस्यप्रजापतिर्ऋषिर्यजुश्छन्दःप्रजापतिर्देवताब्रह्मस्थापनेपूजनेविनियोगः ॥
ॐआब्ब्रह्मन्ब्ब्राह्मणोब्ब्रह्मवर्च्चसीजायतामाराष्ट्रेराजन्न्यः । शूरऽइषव्व्योतिव्व्या

ऋक	यजु० वा०सं.०अ०२२ मंत्र २२	साम०छं.सं.अ.१प्र.४द.३मं.९	अथर्वण
ब्रह्मजज्ञानम्	आब्रह्मन्ब्राह्मणो.	ब्रह्मजज्ञानम्प्रथमम्पुरस्ता.	ब्रह्मजज्ञानम्प्रथमंपु.॥

धीमहारथोजायतान्दोग्ध्रीधेनुर्व्वोढानड्वानाशुःसप्तिः पुरन्धिर्य्योषाजिष्ण्णूरथेष्ठाः ॥

सभेयोयुवास्ययजमानस्यव्वीरोजायतान्निकामेनिकामेनः;पर्ज्जन्न्योव्वर्षतुफलवत्यो नऽओषधयः;पच्यन्तांय्योगक्षेमोनः÷कल्पताम् ॥ १ ॥ ब्रह्मणेनमःब्रह्माणमावा० ॥ १ ॥ सोमंचैवोत्तरेभागेवयछंसोमेतिपूजयेत् ॥ एह्येहियज्ञेश्वरयज्ञरक्षांविधत्स्वनक्षत्रगणेनसार्द्धम् ॥ सर्बौषधीभिःपितृभिःसहैवगृहाणपूजाम्भगवन्नमस्ते ॥ २ ॥ इतिध्यात्वा ॥ वयछंसोमेतिवसुक्रऋषिर्गायत्रीच्छन्दःसोमोदेवतासोमस्थापनेपूजनेविनियोगः ॥ ॐव्वयछंसोमव्व्रतेतवमनस्तनूषुबिभ्रत; ॥ प्रजावन्त; सचेमहि ॥ सोमायनमःसोममावा० ॥ २ ॥ ईशान्यान्दिशि

ऋक	यजु०वा०सं०अ०३मं०५६ ॥	साम.सं.छं.अ.१प्र.५द.२मं.६	अथर्वण
आप्यायस्वसमेतुतेविश्वतः।	व्वयॅंसोमव्रतेतवमनः ॥	। चन्द्रमाऽअप्स्वन्तरासु० ।	यऽउत्तरतोजुहति

तमीशानमितिमन्त्रेणेशम्पूजयेत् । एह्येहियज्ञेश्वरनस्त्रिशूलकपालखट्वाङ्गवरेणसार्द्धम् ॥ लोकेनयज्ञेश्वरयज्ञसिद्ध्यैगृहाणपूजाम्भगवन्नमस्ते ॥ ३ ॥ इतिध्यात्वा ॥ तमीशानमितिमन्त्रस्यगौतमऋषिस्त्रिष्टुप्छन्दः ईशोदेवताईशस्थापनेपूजनेविनियोगः ॥ ओंतमीशानञ्जगतस्तस्थुषस्पतिन्धियजिन्वमवसेहूमहेवयम् ॥ पूषानोयथावेदसामसद्वृधेरक्षितापायुरदब्ध;स्वस्तये । ३॥ ओंभूर्भुवःस्वःईशानायनमःईशानमावा० ॥ ३ ॥ पूर्वस्यान्दिशित्रातारमितिमन्त्रेणदेवेन्द्रंपूजयेत् ॥ एह्येहिसर्वामरसिद्धसाध्यैरभिष्टुतोवज्रधरामरेशसम्वीज्यमानोप्सरसाङ्गणेनरक्षाध्वरन्नोभगवन्नमस्ते ॥

ऋक० ॥	यजु०।सं.।अ०।२५।मं०।१८	।साम.।छं.सं.अ१प्र.३द.५मं०१	अथर्वण० ॥
तमीशानञ्जगतस्तस्थु०	तमीशानञ्जगतस्तस्थुष	अभित्त्वशूरनोनुमो.	धातादधातुर्नोरयिमीशा.

४ ॥ त्रातारमितिमन्त्रस्यगर्गऋषिस्त्रिष्टुप्छन्दःइन्द्रोदेवताइन्द्रस्थापनेपूजनेविनियोगः ॥ ओंत्रातारमिन्द्रमवितारमिन्द्रꣳहवेहवेसुहवꣳशूरमिन्द्रम् ॥ ह्वयामिशक्रम्पुरुहूतमिन्द्रꣳस्वस्तिनोमघवाधात्विन्द्रः ॥ ४ ॥ भूर्भुवःस्वःइन्द्रायनमःइन्द्रमावा० ॥ ४ ॥ आग्नेये ॥ त्वन्नोअग्नेइतिमन्त्रेणअग्निम्पूजयेत् ॥ एह्येहिसर्वामरहव्यवाहमुनिप्रवीरैरभितोभिजुष्ट ॥ तेजोवतालोकगणेनसार्द्धंममाध्वरम्पाहिनमोनमस्ते ॥५॥ इतिध्यात्वा ॥ त्वन्नोअग्नेइतिमन्त्रस्यहिरण्यस्तूपऋषिस्त्रिष्टुप्छन्दोऽग्निर्देवताअग्निस्थापनेपूजनेविनियोगःओंत्वन्नोअग्नेवरुणस्यविद्वान्देवस्यहेडोऽअवयासिसीष्ठाः ॥

ऋक० ॥	यजु०वा०सं०अ.२०मं.५०	साम.छं.सं.अ.१प्र.४.द.५मं२	अथर्वण ॥
ओंइन्द्रायेन्दोमरुत्वते.	ओंत्रातारमिन्द्रम्.	ओंत्रातारमिन्द्रमविता०	ओंइन्द्रत्वावृषभंवयंसु०

ऋक० ॥	यजु०।वा.सं.अ.२१मं.४	साम०।सं.छ.अ.१प्र.१द१.मं२	॥ अथर्वण ॥
ॐअग्निन्दूतम्वृणीमहे०	ॐत्वन्नोऽअग्नेवरुणस्य०	॥ ॐअग्निन्दूतम्वृणीमहे ॥	ॐअग्नेर्म्मन्वेप्रथमस्य० ॥

यजिष्ठोव्वह्नितमः शोशुचानोव्विश्वाद्वेषांछसिप्प्रमुमुग्ध्यस्मत ॥ ५ ॥ भूर्भु०
अग्नयेनमः अग्निमावा० ॥ ५ ॥ याम्यांसुगन्नुपन्थेतिमन्त्रेणधर्मराजम्प्रपूजयेत्
॥ एह्येहिवैवस्वतधर्मराजसर्वामरैरर्च्चितधर्ममूर्ते ॥ शुभाशुभानन्दशुचामधीश
शिवायनःपाहिमखन्नमस्ते ॥ ६ ॥ सुगन्नुपन्थेतिप्रजापतिर्ऋषिस्त्रिष्टुप्छन्दोयमो
देवतायमस्थापनेपूजनेविनियोगः ॥ ॐसुगन्नुपन्थाम्प्रादिशन्नवेहिज्ज्योतिष्मध्येह्य

ऋक० ॥	। यजु० ॥	साम०छं.सं.अ.१प्र४द.३मं.८	॥ अथर्वण ॥
ॐयमायसोमसुनुता०	ॐसुगन्नुपन्थाम्प्रादिशन्न.	ॐनाकेसुपर्णमुतयत्० ॥	ॐयमोमृत्युरघमारो नि०

जरन्नऽआयुः ॥ अपैतुमृत्युरमृतन्नऽआगाद्वैवस्वतोनोऽअभयङ्कृणोतु ।६ ॥
उँभूर्भु०यमायनमःयममावा० ॥ ६ ॥ असुन्वेतिमन्त्रेणनैर्ऋत्येनिर्ऋतिंसम्पूज्य ॥
एह्येहिरक्षोगणनायकस्त्वाम्विशालवेतालपिशाचसङ्घैः ममाद्ध्वरम्पाहिपिशाचनाथ
लोकेश्वरस्त्वम्भगवन्नमस्ते ॥ ७ ॥ इतिध्यात्वा ॥ असुन्वेतिमन्त्रस्यप्रजापतिर्ऋषिस्त्रिष्टुप्छन्दोनिर्ऋतिर्देवतानिर्ऋतिस्थापनेपूजनेविनियोगः ॥ उँअसुन्वन्तमयजमानमिच्छस्स्तेनस्येत्यामन्न्विंहितस्करस्य ॥ अन्न्यमस्म्मदिच्छसातःइत्या
नमोदेविनिर्ऋतेतुब्भ्यंमस्तु ॥ उँभूर्भुवःस्वःनिर्ऋतयेनमःनिर्ऋतिमावा० ॥ ७ ॥

ऋक्० ॥	।यजु०।वा।सं.अ.।१२।मं.६२॥	साम०छं.सं.अ.१प्र.५द.१मं६	अथर्वण ॥
उँमोषुणःपरापरेति० ॥	। उँअसुन्वतमयजमान० ॥	। उँवित्थाहिनिर्ऋतीनां० ॥	उँअभितान्निर्ऋतिर्ध

प्रतीच्यान्दिशि तत्वायामीतिमन्त्रेणवरुणम्पूजयेत् ॥ एह्येहियादोगणवारिधीश
गणेनमेघाप्सरसांतहैव ॥ ॰विद्याधरेन्द्रामरगीयमानपाहित्वमस्मान्भगवन्नम
स्ते ॥ ८ ॥ इतिध्यात्त्वा ॥ तत्वायामीतिमन्त्रस्यशुनःशेपऋषिस्त्रिष्टुप्छन्दोवरुणो

ऋक॰ ॥	यजु॰।वा॰।सं॰।अ॰।२१।मं॰।२।	साम॰छन्दो॰उ॰सं॰प्र॰६मं॰११	अथर्वण ॥
ॐइमम्मेवरुण॰ ॥	ॐतत्वायामिब्रह्मणा॰ ॥	ॐअभित्रिपृष्ठंवृषणं॰	ॐयेपक्षाज्जुइतिजा॰ ॥

देवतावरुणस्थापनेपूजनेविनियोगः ॥ ॐतत्त्वायामिब्ब्रह्मणाब्वन्दमानस्तदाशा
स्तेयजमानोहविर्भिः ॥ अहेडमानोब्वरुणेहबोध्युरुशꣳसमानऽआयुःप्प्रमो
षीः ॥ ॐभूर्भु॰वरुणायनमःवरुणमा॰ ॥ ८ ॥ आनोनियुद्भिरितिमन्त्रेणवायव्यां
वायुमर्च्चयेत् ॥ एह्येहियक्षेत्त्वमभीक्षणायमृगाधिरूढःसहसिद्धसङ्घैः ॥ प्राण

धिपःकालकवेस्सहायगृहाणपूजाम्भगवन्ननमस्ते ॥ इतिध्यात्वा ॥ आनोंनि

ऋक॰	यजु॰वा.सं.अ.२७मंत्र२८	सा.छं.सं.अ.१प्र.२द.६मं.१०	अथर्वण ॥
ओंवाताऽअवातुभेषजम्	ओंआनोनियुभिःशतिनी॰	॥ ओंवातअवातुभेषजम् ॥	ओंवायोःसवितुर्विदथा.

युद्भिरितिमन्त्रस्यप्रजापतिर्ऋषिस्त्रिष्टुप्छन्दोवायुर्देवतावायुस्थापनेपूजनेविनियोगः॥ ॐआनोंनियुद्भिःशतिनीभिरध्वरꣳसहस्रिणीभिरुपयाहियज्ञम् ॥ वायोऽअस्मिन्त्सवनेमादयस्वयूयम्पातस्वस्तिभिःसदानः ॥ ॐभूर्भु॰वायवेनमः वायुमावा॰ ॥ १ ॥ वायुसोमद्वयोर्मध्येवसूनष्टौतुपूजयेत् ॥ ध्रुवोध्वरश्चसोमश्चआपश्चैवानिलोनलः ॥ प्रत्यूषश्चप्रभासश्चवसवोऽष्टौप्रकीर्तिताः ॥ एह्येहिवसवीशमहानिधीशरत्नाकरःसूर्य्यसमानतेजाः ॥ धनस्वरूपोममयाज्ञियान्त्वङ्गृहा

णपूजाम्भगवन्ननमस्ते ॥ इतिध्यात्वा ॥ वसोःपवित्रमन्त्रेणध्रुवादींश्चप्रपूजयेत् ॥ वसोःपवित्रमितिमन्त्रस्यगौतमऋषिर्जगतीच्छन्दःवसवोदेवतावसुस्थापनेपूजनेविनि

ऋक्. ॥	यजु०।वा।सं।अ।१।मं।३।	साम.छं.सं.अ.१प्र.३द.८मं.९	। अथर्वण ॥
ओंध्रुवाद्यौरध्रुवापृथिवी.	ओंवासो;पवित्रमसिशतधा.	। ओंआयंतइवसूर्यम् ।	ओंवसोरिन्द्रम्वसुप.

योगः ॥ ॐवसोःपवित्रमसिशतधारम्बसोःपवित्रमसिसहस्रधारम् ॥ देवस्त्वा सवितापुनातुवसोःपवित्रेणशतधारेणसुप्वाकामधुक्षः ॥ ॐभूर्भु०वसुभ्योनमः वसूनावा० ॥ १० ॥ सोमेशानयोर्मध्येरुद्राएकादशस्मृताः ॥ अजेकपादहिर्बुध्न्योविरूपाक्षोथरैवतः ॥ हरश्चबहुरूपश्चत्र्यम्बकश्चसुरेश्वरः ॥ सावित्रश्चजजयन्तश्चपिनाकीरुद्रएवच ॥ नमस्तेरुद्रमंत्रेणरुद्रांश्चैवप्रपूजयेत् ॥ एह्येहिलो

केश्वरनस्त्रिशूलकपालखट्वाङ्गधरेणसार्द्धम् ॥ लोकेनयज्ञेश्वरयज्ञसिध्यैगृहाणपूजाम्भगवन्नमस्ते ॥ इतिध्यात्वा ॥ नमस्तेरुद्रेतिमंत्रस्यपरमेष्ठीऋषिर्गायत्रीच्छन्दोरुद्रोदेवतारुद्रस्थापनेपूजनेविनियोगः ॥ ॐनमस्तेरुद्रम॒न्यव॑ऽउतोत॒ऽइष॑वे॒

ऋक्० ॥	यजु।मा.सं.अ.१६मंत्र१	साम.सं.छं.अ.१प्र.१द.७मं.७	अथर्वण
ओंनमःशर्वायचपशुपतयेच	ओंनमस्तेरुद्रमन्यव०	ओंआपोराजानमध्व० ॥	।ओंरुद्रजलाषभेषज०

नम॑÷ ॥ ब्बाहुब्भ्या॑मु॒तते॒नम॑÷ ॥ ॐभूर्भु०रुद्रेभ्योनमःरुद्रानावा० ॥ ११ ॥

ईशानेन्द्रयोर्मध्येआदित्यान्द्वादशांल्लिखेत् । धातामित्रोर्यमारुद्रोवरुणःसूर्यएवच ॥
भगोविवस्वान्पूषाचसवितादशमस्तथा ॥ एकादशस्तथात्वष्टाविष्णुर्द्वादशउच्यते ॥
एह्येहिपद्मासनपद्मपाणेसुरक्तसिन्दूरसमानवर्ण ॥ सप्ताश्वरक्ताम्बरसूर्यशीघ्रम्पूजा

ङ्ग्रहीतुंमखमस्मदीयम् ॥ इतिध्यात्वाअदितिर्द्यौरितिमन्त्रस्यप्रजापतिर्ऋषिस्त्रि

ऋक्० ॥	यजु० वा·सं·अ·२५मं·२१	साम·सं·छं·अ·१प्र·३द.६मं४	अथर्वण. ॥
ओंआदित्प्रत्नस्यरेतसो·	ओंअदितिर्द्यौरदितिरन्तरि	ओंवरामहोअसिसूर्य. ॥	ओंआदित्यारुद्रावसवो

ष्टुप्छन्दःसूर्योदेवतासूर्यस्थापनेपूजनेविनियोगः ॥ ॐअदितिर्द्यौरदितिरन्तरिक्षमदितिर्म्मातासपितासपुत्रः ॥ ब्विश्श्वेदेवाऽअदितिः;पञ्चजनाऽअदितिर्ज्जातमदितिर्ज्जनित्वम् ॥ आदित्येभ्योनमःआदित्यानावाहयामि ॥ १२ ॥ इन्द्राग्नेययोर्मध्येअश्विनातेजसाश्विनौ ॥ तयोरोषधयःकार्यादिव्यदक्षिणहस्तयोः ॥ इतिध्यात्वा ॥ अश्विनातेजसेतिमन्त्रस्यपरमेष्ठीऋषिरनुष्टुप्छन्दःअश्विनौदेवते अश्विनोःस्थाप

ऋक्० ॥ ॐअश्विनावर्त्तिरस्मदा० । यजु० । वा. सं. अ. २० मंत्र ८० ।
ॐअश्विनातेजसाचक्षु÷० । साम० । छं. अ. १ प्र. १ द. २ मं. ७ ॥ ॐअश्वंनत्वा
वारव० ॥ अथर्वण० ॥ ॐसङ्क्षेन्नयाथोअश्वि० ॥

नेघूजनेविनियोगः ॥ ॐअश्विनातेजसाचक्षु÷प्प्राणेनसरस्वतीब्बीर्य्यम् । ब्बाचेन्द्रोबलेनेन्द्रं यदधुरिन्द्रियम् ॥ॐभूर्भु०अश्विभ्यान्नमःअश्विनावावाहयामि १३
आग्नेययमयोर्मध्येविश्वेदेवाःसपैतृकाः ॥ क्रतुदक्षौसत्यवसूकालकामौध्रुवलोचनौ
पुरूरवमार्द्रवसौविश्वेदेवाइमेदश ॥ अग्निष्वात्ताःसोमपाश्चवर्हिषदःसुकालिनः ॥
एकश्शृङ्गोसुधश्चैवद्वितीयस्सोमपास्तथा ॥ विश्वेदेवाआयन्तुनश्चोतिद्वाभ्यान्तौप्रपू

जयेत् ॥ एह्येहिसर्वामरसिद्धसाध्यैरभिष्टुतोवज्रधरामरेश ॥ संवीज्यमानोप्सरसा ङ्गणेनरक्षाद्ध्वरन्नोभगवन्ननमस्ते ॥ इतिध्यात्वा ॥ विश्वेदेवासऽआगतश्शृणुताम

ऋक्० ॥ ॐविश्वेदेवास्शृणु० ॥ यजु० । वा. सं. अ. ७ मं. ३४ ॥ ॐविश्वेदेवासऽ आगंत० ॥ साम० । अर. सं. अ. १ द. ३ मं. ९ ॥ ॐविश्वेदेवाममा० ॥ अथर्वण० ॥ ॐविश्वेदेवावसवोर० ॥ ❁ ❁ ❁ ❁

ऽइमꣳहवम् ॥ एदम्बर्हिर्न्निषीदत ॥ उपयामगृहीतोसिब्बिश्वेभ्यस्त्वादेवेभ्यंऽएषतेयोनिर्व्विश्वेभ्यस्त्वादेवेभ्यः ॥ १४ ॥ भूर्भुवःस्वःविश्वेभ्योदेवेभ्यो नमःविश्वान्देवानावा० ॥ तत्रैव ॥ आयन्तुनइतिविवस्वानृषिर्बृहतीच्छन्दः

पितरोदेवतापितृस्थापनेपूजनोविनियोगः ॥ ॐआयन्तुनःपितरःसोम्म्यासोग्नि

ऋक्० ॥ ॐउदीरतामवरऽउ० ॥ यजु० ॥ वा० सं. अ. १९ मं. ५८ ।
ॐआयन्तुनःपितरःसो० ॥ ॥ साम० ॥ छं. सं. अ. १. प्र. ४ द. ५ मं ९
ॐआत्वालखायःसख्यः ॥ अथर्वण० ॥ ॐपितरःपरेतेमावन्तु ॥ ❁ ❁ ❁

ष्वात्ताःपथिभिर्देवयानैः ॥ अस्मिन्यज्ञेस्वधयामदन्तोधिब्रुवन्तुतेवन्त्वस्मान्
पितृभ्योनमःपितृन्आवाहयामि ॥ १५ ॥ यमनैर्ऋत्ययोर्मध्येऋषीन्सप्तप्रपूजयेत् ॥
गौतमोत्रिर्भरद्वाजोविश्वामित्रोथकश्यपः ॥ जमदग्निर्वसिष्ठश्चसप्तैतेऋषयःस्मृताः॥
एह्येहियक्षोगणनायकस्त्वंविशालवेतालपिशाचसङ्घैः ॥ ममाध्वरंपाहिशिवाधिनाथ

लङ्केश्वरस्त्वंभगवन्नमस्ते ॥ इतिध्यात्वा ॥ सप्तऋषयइतिमन्त्रस्यगौतम ऋषिर्जगतीच्छन्दःसप्तऋषयोदेवताः सप्तऋषिस्थापनेपूजनेविनियोगः ॥ ॐस

ऋक० ॥ ॐसप्तऋषयःप्राति० ॥ यजु० । वा. सं. अ. ३४ मं.५५॥ ॐसप्तऋषय; प्रातिंहि० ॥ साम० । छां. उ. सं. प्र. १ मं. १० ॥ ॐऋषिर्विप्र० ॥ अथर्वण० ॥ ॐसप्तऋषीनभ्यावर्त्ते० ॥

✻ ✻ ✻ ✻ ✻

प्तऽऋषयः, प्प्रातिंहिताः, शरीरेसप्तरक्षन्तिसदमप्प्रमादम् ॥ सप्तापः स्वपतोलोकमीयुस्तत्रजाग्गृतोऽअस्वप्नजौसत्रसदौचदेवौ ॥ ॐभूर्भु०सप्तऋषिभ्योनमःसप्तऋषीनावाहयामि ॥ १६ ॥ नैर्ऋत्यवरुणयोर्मध्येनागभूतानिपूजयेत् ॥ अन

न्तोवासुकिःशेषःकर्कोटस्तक्षकस्तथा ॥ पद्मकश्चमहापद्मःशङ्खःकम्बलएवच ॥
पिशाचोगुह्यकःसिद्धोभूतोमीदेवयोनयः ॥ भूतायत्वेतिमन्त्रस्यपराशरऋषिर्विरा

ऋक्० ॥ ॐयेभूताःप्रचरन्ति० ॥ यजु०वा.सं.अ. १ मंत्र॥११॥ॐभूता यत्वानारा
तये० ॥ साम० ॥ ॐयाँसन्धांसन्ध० ॥ अथर्वण० ॥ ॐभूतोभूतेषुपयआद० ॥

ट्छन्दःनारायणोदेवताभूतस्थापनेपूजनेविनियोगः ॥ ॐभूताय॑त्त्वा॒नारा॑तये॒स्स्व॑रभि॒
विख्यैस्व॒न्दृछंहन्ता॒न्दुर्य्याः ॥ पृथि॒व्या॒मु॒र्व्व॒न्तरि॑क्ष॒मन्न्वे॑मिपृथि॒व्यास्त्वा॒नाभौ॑सा
द॒याम्म्यदि॑त्त्याऽउ॒पस्थे॒ऽग्ग्ने॑ह॒व्यछंर॑क्षा॥ॐभूर्भुवःस्वःभूतेभ्योनमःभूतानावा० १७॥
तत्रैव ॥ अक्षसूत्रधराःसर्पाःकाण्डिकाःपुच्छसंयुताः ॥ एकभोगास्त्रिभोगावासर्पाः

कार्याश्चभीषणाः ॥ इतिध्यात्वा ॥ नमोस्तुसर्प्पेभ्यइतिमन्त्रस्यप्रजापति

ऋक्० ॥ ॐआयङ्गौःपृश्निरक्र० ॥ यजु०।वा.।सं.।अ.।१३।मंत्र।७॥
ॐनमोस्तुसर्प्पेभ्योयेकेच० ॥ साम० ॥ ॐयःप्रतीच्यान्दिस्सर्पराज० ॥अथर्वण ॥
ॐसर्पानुसर्पपुनर्वो० ॥

* * *

ऋषिरनुष्टुप्छन्दःसर्प्पोदेवतासर्प्पस्थापनेपूजनेविनियोगः ॥ ॐनमोस्तुस॒र्प्पे
भ्यो॒येकेचपृथि॒वीमनु ॥ येऽअ॒न्तरिक्षे॒येदि॒वितेभ्यं÷स॒र्प्पेभ्यो॒नमं÷ॐभूर्भुवः
स्वःसर्प्पेभ्योनमःसर्प्पानावाहयामि ॥ वायुवरुणयोर्मध्येगन्धर्वाप्सरसस्तथा ॥
विश्वावसुश्चगन्धर्वोहाहाहूहूस्तथैवच ॥ घृताचीमेनकारम्भाउर्वशीचतिलोत्तमा ॥

सुकेशीमञ्जुघोषाद्याःकथ्यन्तेप्सरसोवुधैः ॥ अयम्पुरोहरिकेशोगन्धर्वस्त्वेतिमन्त्रतः ॥ गन्धर्वस्त्वेतितौपुज्यौसर्वकामार्थसिद्धये ॥ आवाहयेहंसुरदेवसेव्याःस्वरूपतेजोमुखपद्मभासाः ॥ सर्वामरेशाःपरिपूर्णकामाःपूजाङ्ग्रहीतुंममयज्ञभूमौ ॥ इतिध्यात्वा ॥ अयम्पुरोहरिकेशइतिमन्त्रस्यपरमेष्ठीऋषिःककुप्छन्दोप्सरसोदेवता

ऋक्० ॥ ॐअप्सरसाङ्गन्धर्वाणाम्० ॥ यजु । वा. । सं. । अ. । १५ । मं. । १५ ।
ॐअयम्पुरोहरिकेशसूर्य० । साम० । छंदो. उ. सं. अ. ११ मं. ८ ॥
ॐसहरय्यानिवर्त्तस्वाग्ग्ने० । अथर्वण० । ॐदिव्योगन्धर्वोभुवन० ॥ ❀ ❀

अप्सरसःस्थापनेपूजनेविनियोगः ॐअ॒यम्पु॒रोह॑रिकेश॒;सूर्यरश्मि॒स्तस्यरथगृत्सश्चर॒

थौजाश्चसेनानीग्ग्रामण्यौ ॥ पुञ्जिकस्थलाचक्रतुस्थलाचाप्सरसौदङ्क्ष्णवः पशवोहेतिःपौरुषेयोव्वधःप्प्रहेतिस्तेभ्योनमोऽअस्तुतेनोवन्तुतेनोमृडयन्तुतेयन्द्विष्मोयश्चनोद्वेष्टितमेषाञ्जम्भेदध्मः॥ॐभूर्भु० अप्सरोभ्योनमःअप्सरसआवा० १६।

तत्रैवगन्धर्वान्प्रपूजयेत् ॥ गन्धर्वस्त्वेतिमन्त्रस्यगोतमऋषिर्द्विपदाविराट्छन्दःगन्धर्वोदेवतागन्धर्वस्थापनेपूजनेविनियोगः ॐगन्धर्व्वस्त्वाव्विश्वावसुःपरिदधातु

ऋक्० । ॐसोमोदद्गन्धर्वाय० ॥ यजु० । वा, । सं. । अ. । २ । मंत्र. ३ ।
ॐगन्धर्वस्त्वाविश्वा० ॥ साम० । छंदो. उ. सं. प्र. ११ मं. १३ ॥ ॐऊ
र्ध्वोगन्धर्वोअधिनाके ॥ अथर्वण० । ॐदिव्योगन्धर्वोभुवनस्य० ॥

ब्बिश्श्व॒स्यारि॑ष्ट्यैयज॑मानस्यपरि॒धिर॑स्य॒ग्निरि॒डऽईडि॒तः ॥ इन्द्र॑स्यबा॒हुर॑सि॒दाक्षि॑णोब्बिश्श्व॒स्यारि॑ष्ट्यैयज॑मानस्यपरि॒धिर॑स्या॒ग्निरि॒डऽईडि॒तः ॥ मि॒त्रावरु॑णौत्वोत्तर॒तः परि॑धत्तान्ध्रु॒वेण॒धर्म्म॑णाब्बिश्श्व॒स्यारि॑ष्ट्यैयज॑मानस्यपरि॒धिर॑स्य॒ग्निरि॒डईडि॒तः ॥ गन्धर्वेभ्योनमः ॥ गन्धर्वानावाहयामि ॥ २० ॥ ब्रह्मोत्तरयोर्मध्येअवरुद्रेति शङ्करम् ॥ स्कन्दन्नन्दीश्वरंशूलंमहादेवञ्चपूजयेत् ॥ भास्वत्कर्पूरगौराङ्गिरिवरतनयाप्राणनाथंमहेशं नानाभोगीन्द्रभूषङ्कलितशशिकलंपञ्चवक्त्रन्त्रिनेत्रं ॥ शक्तिं शूलङ्कपालंसुललितडमरुंवीजपूरञ्चसर्प्पान् । खट्वाङ्गञ्चारुपद्माभयवरदयुतन्धारयन्तम्भजेहम् ॥ इतिध्यात्वा ॥ अवरुद्रेतिमन्त्रस्यपरमेष्ठीऋषिःककुप्छन्दःरुद्रोदेवतारुद्रस्थापनेपूजनेविनियोगः ॥ ॐअव॑रु॒द्रम॑दीम॒ह्यव॑दे॒वन्त्र्यम्बकम् ॥ यथां

ऋक्० । ॐअभित्वादेवसवित० ॥ यजु० । वा. । सं. । अ. । ३ मंत्र । ५८ ॥
ॐअवरुद्रमदीमह्यवदेवम् ॥ साम । सं. छं. अ. १ प्र. १ द. ७ मं. ७
ॐआवोराजानमध्व० ॥ अथर्वण० । ॐयोअग्नौरुद्रोयोअ० ॥ ❀ ❀

नोऽब्भ्यंसस्करद्यथानः श्रेयंसस्करद्यथानोऽव्ययवसाययात् ॥ रुद्रोभ्योनमःरुद्राना वाहयामि ॥ २१ ॥ ब्रह्मेशानयोर्मध्येश्रियाविष्णुस्तथैवच ॥ सदसस्पतीतिमन्त्रेण विष्णोरराटेतिमन्त्रतः ॥ लक्ष्मीःपूज्यासदाभक्त्याविष्णुःपूज्यस्तथैवच ॥ एह्येहिदुर्गे दुरितौघनाशिनिप्रचण्डदैत्यौघतनुप्रहारिणि ॥ शिवेमहेशार्द्धशरीरधारिणिस्थिराभवत्वंममयज्ञकर्माणि ॥ इतिध्यात्वा ॥ सदसस्पतीतिमन्त्रस्यनारायणऋषिरु

षिणक्छन्दोलक्ष्मीर्देवतालक्ष्मीस्थापनेपूजनोविनियोगः ॥ ॐसदंसस्पातिमद्भुंत
म्प्प्रयमिक्रुक्० । ॐश्रियेजातःश्रिय० ॥ यजु० । वा. । सं. । अ. । ३२ मं.।१३॥
ॐसदसस्पातिमद्भुतम्० ॥ साम० । छं०. सं. अ. १ प्र. २ द. ८ मं. ७ ॥
ॐसदसस्पातिमद्भुतम्० ॥ अथर्वण० । ॐगौरिन्मिमायसलि० ॥ ❁
न्द्रस्यकाम्म्यंम् ॥ सनिम्मेधामंयासिषछंस्वाहां ॥ ॐभूर्भु०लक्ष्म्यैनमःलक्ष्मीमावा०॥
२२ ॥ तत्रैवविष्णुम्पूजयेत् ॥ विष्णोरराटमितिमन्त्रस्यप्रजापतिर्ऋषिरनुष्टुप्छंदः
विष्णुर्देवताविष्णुस्थापनेपूजनेविनियोगः ॥ ॐविष्णोरराटमसिविष्णोःश्नप्त्रेस्थो
विष्णोःस्यूरसिविष्णोर्ध्रुवोसि ॥ वैष्णवमसिविष्णवेत्वा ॥ ॐभूर्भु०स्वः
[illegible]

ऋुक्० । ॐविष्णानुकम्बायाणि० ॥ यजु० । वा. । स, । अ. । ५ । मंत्र । २१ ।
विष्णोरराटमासि० ॥ साम० । छं. सं. अ. १ प्र. ३ द. ३ मं ९ ॥ ॐइदम्विष्णु
र्विचक्रमे० ॥ अथर्वण० ॥ ॐविष्णोर्नुकम्प्रवोचं० ॥ ✽ ✽

त्यनुवाक्मन्त्रषट्कस्यषड्रश्मीन्परिपूजयेत् ॥ एह्येहियज्ञेत्वमभीक्षणायमृगाधिरूठःसहसिद्धसङ्घैः ॥ प्राणाधिपःकालकवेःसहायगृहाणपूजाम्भगवन्नमस्ते ॥ शुक्रज्योतिश्चेत्यनुवाङ्मन्त्रषट्कस्यपराशरऋषिर्विराट्छन्दःमरुतोदेवतामरुतांस्थापने पूजनेविनियोगः ॥ ॐशुक्रज्ज्योतिश्चचित्रज्ज्योतिश्चसत्यज्ज्योतिश्चज्ज्योतिष्माँश्च ॥ शुक्रश्चऽऋतपाश्चात्यंहाः ॥ १ ॥ ईदृङ्चान्यादृङ्चसदृङ्च

ऋक्० । ॐआनोनियुद्भिःशतिनी० ॥ यजु० । वा. । सं. । अ. । १७ मं. । ८. ८१ । ८२ । ८३ । ८४ । ८५ ॥ ॐशुक्रज्योतिश्चेत्यनुवाक् ॥ साम० । छं. सं. अ १ प्र. २ द. ९ मं० १० ॥ ॐवातआवातुभेषजम्० ॥ अथर्वण । ॐयेऽअन्तारिक्षेजुह्वति० ॥

* * *

प्प्रतिसदृङ्च ॥ मि॒तश्च॒सम्मि॑तश्च॒सभ॑राः ॥ २ ॥ ऋतश्च॑स॒त्यश्च॑ध्रु॒वश्च॑ ध॒रुणश्च ॥ ध॒र्त्ता च॑वि॒ध॒र्त्ता च॑विधा॒रयः ॥ ३ ॥ ऋ॒त॒जिच्च॑स॒त्या॒जिच्च॑से॒न॒जिच्च॑सु॒षेणश्च ॥ अन्ति॑मित्रश्च॒दूरेऽअ॑मित्रश्च॒ग॒णः ॥ ४ ॥ ई॒दृक्षा॑सऽए॒ता॒दृक्षा॑ सऽऊ॒षुणः॑स॒दृक्षा॑स॒प्प्रति॑सदृक्षास॒ऽएतन ॥ मि॒तास॑श्च॒सम्मि॑तासोनोऽअ॒द्यसभ॑रः

सोमरुतोयज्ञेअस्मिन् ॥ ५ ॥ स्वतवाँश्चप्रघासीचंसान्तपनश्चंगृहमेधीचं ॥ क्रीडीचंशाकीचोज्जेषी ॥ ६ ॥ ॐभूर्भुवःस्वःमरुद्भ्योनमःमरुत आवाह० ॥ २४ ॥ पुनःतत्रैवमरुतंपूजयेत् ॥ स्वैर्दक्षैरितिमन्त्रस्यप्रजापतिऋषिर्विराट्छन्दःमरुतोदेवतामरुतांस्थापनेपूजनेविनियोगः ॥ ॐस्वैर्दक्षैर्दक्षपितेहसीददेवानांछंसुम्नेमहतेर

ऋक् ॥ ॐसोमोदद्गन्धर्वाय ॥ यजु० । वा. । सं. । अ. । १४ । मं. । ३ ॥ ॐस्वैर्दक्षैर्दक्षपितेह० ॥ साम० छं. सं. अ. १ प्र. ५ द. ९ मं. ८ ॥ पवस्वदक्षसाधनो ॥ अथर्वण ॥ ॐअन्तरिक्षाजुह्वाति० ॥ ✻ ✻ ✻ ✻

णाय॥ पितेवैधिसूनवऽआसुशेवास्वावेशातन्वासँविशस्वाऽश्विनाध्वर्यूसादयता

मि॒हत्वां ॥ ॐभूर्भु०मरुद्भ्योनमःमरुतःआवाहयामि ॥ २५ ॥ ब्रह्माग्नेय योर्मध्येअग्नेवाजजिदितिस्वधाम् ॥ पितॄणामपिदिव्यानांवाणीजिह्वातुल्यंस्थिता ॥ वाग्धेनुस्तत्स्वरूपातांस्वधामावाहयाम्यहम् ॥ इतिध्यात्वा ॥ अग्नेवाजजिदितिमन्त्रस्य मधुच्छन्दऋषिर्बृहतीच्छन्दःवैश्वानरोदेवतास्वधास्थापनेपूजनेविनियोगः ॥ ॐअग्ने

ऋक् । ॐउदीरतांसूनृताः० ॥ यजु० । वा. । सं. । अ. । २ । मं० ७ ॥ ॐअग्नेवाजजिद्वाजन्त्वा ॥ साम० छं. सं. अ. १ प्र. ६ द. ४ मं. ८ ॥ ॐकनिक्रंति हरिरासृज्य ॥ अथर्वण० । ॐउतप्रह्वामतिदिवाजय० ॥ * * *

ब्वाजजि॒द्वाजंत्वासरि॒ष्यंतम्बाजजि॒तꣳसम्मार्ज्मि ॥ नमो॒देवेभ्यः॒स्व॒धापि॒तृ

ब्न्यं÷सुयमेमेभूयास्तम् ॐभूर्भु०स्वधायैनमःस्वधामावा० ॥ २६ ॥ ब्रह्मयम योर्मध्येमृत्युरोगौचपूजयेत् ॥ अन्यवापोर्द्धमासानाककुभछंरूपमितिमन्त्रतः ॥ अत्रध्याननास्ति ॥ अन्यवापोऽर्द्धमासानामितिमन्त्रस्यसङ्कुसुकऋषिर्जगतीच्छ

ऋक् । ॐपरम्मृत्योऽअनुपरेहिपं० ॥ यजु० । वा । सं० अ. । २४ मं. ३७ । ॐअन्न्यवापोर्द्धमासाना०॥साम०।ॐअपैतुमृत्युर०॥अथर्वण०।ॐअयस्मयेद्रुपदे०॥

दः मृत्युर्देवतामृत्युस्स्थापनेपूजनेविनियोगः ॥ ॐअन्न्यवापोर्द्धमासानाम्मृश्योंमयूर÷ ॥ सुपर्णस्त्तेगन्धर्व्वाणांमपामुद्रोमसाङ्कश्यपोरोहित्कुंडृणाचीगोलात्तिंकात्तेप्प्सरसाम्मृत्यवेंसितः ॥ ॐभूर्भु०मृत्यवेनमःमृत्युमावा० ॥ २७ ॥ तत्रैवककुभमिति

मन्त्रेणरोगमपिपूजयेत् ॥ ककुभमितिमन्त्रस्यप्रजापतिर्ऋषिर्यजुश्छन्दःरोगोदेवतारो

ऋक् । ॐऋषभम्मासमानानाम्० ॥ यजु० । वा. । सं. । अ. । ८ । मंत्र । ४९ ।
ॐककुभंरूपम्वृषभस्य० । साम० । छं. दो. सं. उ. प्र. ११ उ. मं. ७॥ॐविरक्षो
विधोजहि० ॥ अथर्वण । शीर्षक्तिंशीषामयम्० ॥ ✻ ✻ ✻

गस्थापनेपूजनेविनियोगः ॥ ॐककुभंरूपंवृषभस्यरोचतेबृहच्छुक्रःशुक्र
स्यपुरोगाःसोमःसोमस्यपुरोगाः ॥ यत्तेसोमादाभ्यन्नामजागृवितस्म्मैत्वागृह्णामि
तस्म्मैतेसोमसोमायस्वाहा ॥ ॐभूर्भु०रोगायनमःरोगमावा० ॥ २८ ॥ ब्रह्मनैर्ऋ
त्ययोर्मध्येवसुविघ्नौतुपूजयेत ॥ गणानान्त्वेतिमन्त्रेणपूज्यावेतौपृथक्पृथक् ॥
ऐह्येहिविघ्नाधिपतेसुरेन्द्रब्रह्मादिदेवैरपिवन्द्यपाद ॥ गजास्यविघ्नालयविश्वमूर्तेग्र

हाणपूजांभगवन्नमस्ते ॥ इतिध्यात्वा गणानान्त्वेतिमन्त्रस्यप्रजापतिर्ऋषिरनुप्छन्दःगणपतिर्देवतागणपतिस्थापनेपूजनोविनियोगः ॥ ॐगणानान्त्वागणपतिꣳहवामहेप्प्रियाणान्त्वाप्प्रियपतिꣳहवामहेनिधीनान्त्वानिधिपतिꣳहवामहेव्वसोमम । आहमंजानिगर्ब्भधमात्त्वमंजासिगर्ब्भधम् । ॐभूर्भु०गणपतयेनमःगणपतिमावा० ॥ २९ ॥ ब्रह्मवरुणयोर्मध्येअपांस्थानंविधीयते ॥ अपोअद्येतिमन्त्रेणअपश्चैवप्रपूजयेत ॥ कालःकरालवदनोनित्यमप्यातिभीषणः ॥ पाशहस्तोदण्डधरः

ऋक् । ॐगणानांत्वागणपतिंहवा० ॥ यजु० । वा. । सं. । अ. । २३ । मन्त्र । १९ ॐगणानान्त्वागणप० ॥ साम० । छं. सं अ. १ प्र. २ द. ८ मं. ३ ॥ ॐआतून इन्द्रक्षुमन्तम्० ॥ अथर्वण० । ॐनिर्लक्ष्म्यंललाम्या० ॥ ❀ ❀ ❀

सर्वदृश्चिकरोमवान् ॥ इतिध्यात्वा ॥ अपोअद्येतिमन्त्रस्यहिरण्यस्तूपाङ्गिरसऋषिस्त्रिष्टुपछन्दःआपोदेवताअपांस्थापनेपूजनेविनियोगः ॥ ॐअपोऽअद्यान्वचारिऋक्। ॐशन्नोदेवीरभिष्टयआ० ॥ यजु०।वा.।सं.।अ०। २०।मंत्र।२२॥ ॐअपोऽअद्यान्वचारि०। साम०। अर. सं. अ. १ द. ३ मं. ६ ॥ ॐसमन्यायन्तु० ॥ अथर्वण० ॥ ॐआपइद्वावुभेषजी० ॥

* * *

षꣳरसेनसमंसृक्ष्महि ॥ पयस्वानग्नऽआगमन्तम्मासꣳसृजवर्च्चसाप्रजयांचधनेनच ॥ ॐभूर्भुवःअद्भ्योनमःअपआ ॥ ३० ॥ ब्रह्मवायुद्वयोर्मध्येमरुतांसप्तकोगणः ॥ समीरमारुतमरुज्जगत्प्राणसमीरणाः ॥ इमेचसप्तमरुतोमातरिश्वातथानिलः ॥ बृहदिन्द्रायमन्त्रेणपूज्यास्त्वेतेहिवायवः ॥ एह्येहियज्ञेत्वमभीक्षणायमृगा

धिरूढःसहसिद्धसङ्घैः ॥ प्राणधिपःकालकवेःसहायगृहाणपूजाम्भगवन्नमस्ते ॥
इतिध्यात्वा ॥ वृहदिन्द्रायेतिमन्त्रस्यपरमेष्ठीऋषिर्वृहतीच्छन्दोमरुतोदेवतामरुत्
स्थापनेपूजनेविनियोगः ❀ ॥ ओंम्बृहदिन्द्रायगायतमरुतोव्बृत्रहन्तमम् ❀ ॥

ऋक्० । ओंइन्द्रायाहिचित्रभानो० ॥ यजु० । वा. । सं. । अ. । २० । मंत्र । ३० ॥
ओंवृहदिन्द्रायगायतम. । साम० । छं. सं. अ. १ प्र. ३ द. ७ मं. ६ ॥

येनज्ज्योतिरजनयन्नृतावृधोदेवन्देवायजागृवि ❀ ॥ ❀ ओंभूर्भु०मारुतायनमः
मारुतमावा० ❀ ॥ ❀ ३१ ❀ ॥ ब्रह्मणःपादमूलेतुमेदिनीन्तत्रपूजयेत ॥
ओंवृहदिन्द्रायगायतम. ॥ अथर्वण० । ओंमरुतांमन्वेअधिमेन्तु. ॥ ❀ ❀ ❀
महीद्यौरितिमन्त्रेणपृथ्वीपूज्याप्रयत्नतः ॥ एह्येहिपातालधरामरेशनागाङ्गनाकिन्नर

गीयमान ॥ रक्षोमरेन्द्रामरलोकसङ्घैरनन्तरक्षाद्ध्वरमस्मदीयम् ॥ इतिध्यात्वा ॥ महीद्यौरितिमन्त्रस्यमेधातिथिर्ऋषिर्गायत्रीच्छन्दःपृथिवीदेवतापृथिवीस्थापनेपूजने ऋक्० । ओंस्योनापृथिविनोभवा० ॥ यजु० । वा. । सं । अ. । ८ मंत्र । ३२ ॥ ओंमहीद्यौःपृथिवीचंन० ॥ साम० । ओंस्योनापृथिविनोभ० । अथर्वण० । ओंभूमेमातर्निधेहिमा० ॥

* * * * * *

विनियोगः ॥ ओंमहीद्यौःपृथिवीचंनऽइमय्यज्ञम्मिमभिक्षताम् ॥ पिपृतान्नोभरीमभिः ओंभूर्भु०पृथिव्यैनमःपृथिवीमावाह० ॥ ३२ ॥ नदीभ्यइतिमन्त्रेणनदीपूज्योत्तरेततः ॥ गङ्गाचयमुनाचैवसरयूश्चसरस्वती ॥ कौशीवेत्रवतीगोदातापीरेवा पयोष्णिका ॥ कृष्णाभीमरथीतुङ्गभद्राक्षुद्रनदीतथा ॥ नदीभ्यइतिमन्त्रेणपूज्या

श्चोत्तरतस्त्वमूः ॥ एह्येहिगङ्गेदुरितौघनाशिनिवृषाधिरूढेम्बुदकुम्भहस्ते ॥ श्रीविष्णुपादाब्जसमुद्भवेत्वम्पूजाङ्ग्रहीतुम्विमलेनमस्ते ॥ इतिध्यात्वा ॥ नदीभ्यइतिमन्त्रस्यपरमेष्ठीऋषिर्यजुश्छन्दःनद्योदेवतानदीस्थापनेपूजनेविनियोगः ॥ ओंनदी

ऋक्० । ओंइमम्मेगङ्गेयमुनेसर० ॥ यजु० । वा. । सं. । अ. । ३० । मन्त्र । ८ । ओंनदीभ्य÷पौञ्जिष्ट० ॥ साम० । सं. छ. अ. १ प्र. २ द. ५ मं ९. ॥ ओंउपह्वरेगिरीणाम् ॥ अथर्वण० ॥ ओंहिमवतःप्रस्रवन्तिसि० । ✿ ✿ ✿

ब्भ्य÷पौञ्जिष्टमृक्षीकाब्भ्योनैषादम्पुरुषब्व्याघ्रायंदुर्म्मर्दङ्गन्धर्ब्बाप्प्सरोब्भ्योब्व्रात्यम्प्रयुगब्भ्यऽउन्मत्तछंसर्प्पदेवजनेब्भ्योप्प्रातिपदमयेब्भ्यः । कितवमीर्य्यतायाऽअकिंतवम्पिशाचेब्भ्योविदलकारीय्यातुधानेब्भ्यःकण्टकीकारीम् ॥ ओंभूर्भु०नदीब्भ्यो

नमःनदीरावा० ॥ ३३ ॥ लवणेक्षुसुरासर्प्पिर्दधिक्षीरसजीवनाः ॥ समुद्रोसिन भस्वान्मन्त्रेणानेनचोत्तरे ॥ सप्तसागराःपूज्या ॥ एह्येहियादोगणवारिधीनाङ्गणे नमेघाप्सरसांसहैव ॥ विद्याधरेन्द्रामरगायमानपाहित्वमस्मान्भगवन्नमस्ते ॥ इतिध्यात्वा ॥ समुद्रोसीतिमन्त्रस्यप्रजापतिर्ऋषिर्यजुश्छन्दःवरुणोदेवतासमुद्रस्थापनेपूजनेविनियोगः॥ओंस॒मु॒द्रोऽसि॒नभंस्वाना॒र्द्रदानुःश॒म्भूर्म्मयो॒भूर॒भिमांब्बाहि॒स्स्वाहां

ऋक्० ओंसमुद्रादूर्म्मिर्म्मधुमाँ० । यजु० । वा. । सं. । अ. । १८ । मंत्र । ४५ ॥ ओंसमुद्रोसिनभस्वाना० ॥ साम० । छ. सं. अ. १ प्र. ५ द. ५ मं. ३ ॥ ओंपवस्व सोममहान् समुद्रः ॥ अथर्वण० ओंसमुद्रानदीभिरुदकाम० ॥

* * *

मा॒रु॒तोऽसि॒म॒रुतांङ्गुणः ॥ श॒म्भूर्मयो॒भूर॒भिमांब्बाहि॒स्स्वाहांव॒स्यूरंसि॒दुवंस्वाञ्छ

म्भूर्म्मयोभूरभिमांब्बाह्निस्वाहां ॥ ओंभूर्भु०सप्तसमुद्रेभ्योनमः सप्तसमुद्रानावा० ३४
आदित्यश्चन्द्रमाभौमोबुधजीवसिताऽर्कजाः ॥ सर्वेग्रहास्तुसंपूज्याराहुकेतूक्रमेणच ॥
अग्निन्दूतमित्यादिमन्त्रैस्तान्परिपूजयेत् ॥ ओंएह्येहिपद्मासनपद्मपाणेसुरक्तसिन्दूर
समानवर्ण ॥ सप्ताश्वरक्ताम्बरसूर्यशीघ्रंपूजाङ्ग्रहीतुम्मखमस्मदीयम् ॥ इतिध्या
त्वा ॥ अग्निन्दूतमितिमन्त्रस्यमेधातिथिर्ऋषिर्गायत्रीच्छन्दः सवितादेवतासावित्

ऋक्० । ओंअग्निन्दूतम्वृणीमहे ॥ यजु० । वा. । सं । अ. । २२ । मं. । १७ ॥
ओंअग्निदूतम्पुरोदधे० ॥ साम० । छं. सं, अ. १ प्र. १ द. १ मं. ३ ॥ ओंअग्नि
न्दूतम्वृणीमहे ॥ अथर्वण० । ओंआदित्यनावमारुक्षः ॥ ❀ ❀ ❀ ❀

स्थापनेपूजनेविनियोगः ॥ ओंअग्निन्दूतम्पुरोदधेहव्यवाहमुपब्रुवे ॥ देवाँ २ ॥

ऽआसादयादिह ॥ ओंभूर्भु० आदित्यायनमः । आदित्यमावाहयामि ॥ ३५ ॥
अप्स्वग्नेइतिमन्त्रेणचन्द्रञ्चपरिपूजयेत् ॥ एह्येहियज्ञेश्वरयज्ञरक्षाम्बिधत्स्वनक्षत्रग
णेनसार्द्धम् ॥ सर्वौषधीभिःपितृभिस्सहैवगृहाणपूजाम्भगवन्नमस्ते ॥ इतिध्यात्वा ॥
अप्स्वग्नेइतिमन्त्रस्यवामदेवऋषिर्गायत्रीच्छन्दःसोमोदेवतासोमस्थापनेपूजनेविनि
योगः ॥ ओंअ॒प्स्व॑ग्ने॒सधि॒ष्ठव॒सौष॑धी॒रनु॑रुध्यसे । गर्भे॒सञ्जा॑यसे॒पुनः॑ ॥ ओंभूर्भुवःस्वः
ऋक् ॥ ओंआप्यायस्वसमेतुते० ॥ यजु० । वा. सं. अ. १२ । मंत्र । ३६ ।
ओंअप्स्वग्नेसधिष्ठवसौ० ॥ साम० सं. छं. अ. १ प्र. १ दशात. ३ मं ३ ॥ ओंअ
ग्ने गृ ३ न हा २७अध्याय. अथर्वण० ॥ ओंसोमारुद्राविवृहतंविषू ॥ * * *
सोमायनमः ॥ सोममावा० ॥ ३६ ॥ स्योनापृथिवीतिमन्त्रेणभौमञ्चपरिपूजयेत् ॥

धरणीगर्भसम्भूतंलोहिताङ्गंसुवर्चसम् ॥ कुमारङ्क्रूरकर्माणम्भौममावाहयाम्यहम् ॥
इतिध्यात्वा ॥ स्योनापृथिवीतिमन्त्रस्यदध्यङ्ङाथर्वणऋषिर्गायत्रीच्छन्दःअङ्गारकोदे
वताअङ्गारकस्थापनेपूजनेविनियोगः ॥ ओंस्योनापृथिविनोभवानृक्षरानिवेशनी ॥
ऋक् ॥ ओंस्योनापृथिविनोभ० ॥ यजु० । वा. सं० अ. । ३६ । मंत्र । १३ ।
स्योनापृथिविनोभव० । साम० ॥ ओंस्योनापृथिविनोभव० ॥ अथर्वण० । ओंत्व
यामन्योसरथमारुजे ॥

❀ ❀ ❀ ❀ ❀ ❀

यच्छान्;शर्म्मंसप्रथा; ॥ ओंभुर्भु० भौमायनमः ॥ भौममावाह० ॥ इदम्वि
ष्णुरितिमन्त्रेणवुधञ्चपरिपूजयेत् । वुधम्वुधिप्प्रदातारंसोमवंशविवर्धनम् ॥ यज
मानहितार्थायवुधमावाहयाम्यहम् ॥ इतिध्यात्वा ॥ इदम्विष्णुरितिमन्त्रस्यमेधा

ऋक्० ॥ ॐपरोमात्रया० ॥ यजु० । वा. । सं. । अ. । ५ । मं. । १५ ॥ ॐइदम्विष्णुर्विचक्र ॥ साम० छं. सं. अ. १ प्र. ३ द. ३ मं. ९ ॥ ॐइदम्विष्णुर्विचक्रमे० अथर्वण० ॥ ॐयद्राजानाविभजन्तइष्टा ॥

* * * *

तिथिर्ऋषिर्गायत्रीच्छन्दः वुधोदेवताबुधस्थापनेपूजनेविनियोगः ॥ ॐइदम्विष्णुचंक्रमेत्रेधानिदधेपदम् ॥ समूढमस्यपांसुरेस्वाहा ॥ ॐभूर्भुवःस्वःवुधायनमः वुधमावा० ॥ महाँइन्द्रइतिमन्त्रेणगुरुञ्चपरिपूजयेत् ॥ बुद्धिश्श्रेष्ठाङ्गिरःपुत्रंदेवानांचपुरोहितम् ॥ शक्रस्यमन्त्रिणन्देवङ्गुरुमावाहयाम्यहम् ॥ इतिध्यात्वा ॥ महाँइन्द्रइतिमन्त्रस्याहिरण्यगर्भऋषिर्गायत्रीच्छन्दोवृहस्पतिर्देवतावृहस्पतिस्थापनेपूजने

ऋक्. ॥ ॐइन्द्रायेन्दोमरुत्वते. ॥ यजु. वा. सं. अ. । २६ । म. । १० ॥ ॐमहाँ

२॥ऽइन्द्रोवज्रंह॰ ॥ साम॰ छं. सं. अ. १ प्र. ४ द. १० मं॰ ७ ॥ ओंएतोन्विन्द्रस्त
वामा॰ ॥ अथर्वण॰ ॥ ओंवृहस्पतिर्नःपरिपातुपश्चा ॥

* * *

विनियोगः ॥ ओंमहाँ२॥ऽइन्द्रोब्बज्र्रहस्त;षोडशीशर्म्मयच्छतु ॥ हन्तुपाप्मान्
योस्मान्द्वेष्टि ॥ उपयामगृहीतोसिमहेन्द्रायंत्त्वैषतेयोनिर्म्महेन्द्रायंत्त्वा ॥ ओंभूर्भुः॰
वृहस्पतयेनमः ॥ वृहस्पतिमावा॰ ॥ ३९ ॥ शुक्रज्योतिश्चमन्त्रेभार्गवंपरिपूजयेत् ॥
प्रविश्यजठरेशम्भोनिःसृतःपुनरेवयः ॥ तंसुरारिगुरुम्भक्त्याशुक्रमावाहयान्यहम् ॥
शुक्रज्योतिश्चेतिमन्त्रस्यवामदेवऋषिरुष्णिक्छन्दः शुक्रोदेवताशुक्रस्थापनेपूजने
ऋक् ॥ ओंशुक्रन्तेऽअन्यद्यजतन्ते॰ ॥ यजु॰ । वा. । सं । अ. । १७ । मं. । ८० ॥
ओंशुक्रज्योतिश्चचित्र॰ ॥ साम॰ सं. छं. अ. १ द. ८ मं. ३ ॥ ओंशुक्रन्तेअन्यद्यजत

न्ते० ॥ अथर्वण ॥ ॐशुक्रोसिभ्राजोसिस्वर० ॥

विनियोगः ॥ ॐशुक्रज्ज्योतिश्च्चित्रज्ज्योतिश्चसत्त्यज्ज्योतिश्चज्ज्योतिष्माँश्च॥
शुक्रश्चऽऋतपाश्चात्त्यंहाः; ॥ ॐभूर्भु० शुक्रायनमः ॥ शुक्रमावा० ४० ॥
प्रजापतेइतिमन्त्रेणशनिश्चरंपरिपूजयेत् ॥ धर्म्मराजानुजन्देवम्भिन्नाञ्जनसमप्रभम् ॥
छायामार्त्तण्डसम्भूतंशनिमावाहयाम्यहम् ॥ इतिध्यात्वा ॥ प्रजापतेइतिमन्त्रस्य

ऋक्० । ॐप्रजापतेनत्त्वदेताम् ॥ यजु० । वा. सं. । अ. । २३ । मं. । ६५ ।
ॐप्रजापतेनत्वदेतान्यन्यो० ॥ साम० ॥ ॐप्रजापतेनत्वादेतान्य० ॥ अथर्वण० ॥
ॐसहस्रवाहुःपुरुषःसह. ॥

हिरण्यगर्भऋषिस्त्रिष्टुप्छन्दः शनैश्चरोदेवताशनैश्चरस्थापनेपूजनेविनियोगः ॥

ॐप्रजापते॒नत्त्वदे॒तान्न्य॒न्न्योव्विश्श्वारू॒पाणि॒परि॒ताबभूव ॥ यत्कामास्तेजुहु॒मस्तन्नोऽअस्तुव्व॒यꣳस्याम॒पतयोर॒यीणाम् ॥ ॐभूर्भु०शनैश्चरायनमः ॥ शनैश्चरमावाहयामि ॥ ४१ ॥ आयङ्गौरितिमन्त्रेणराहुञ्चपरिपूजयेत् ॥ चक्रेण०छिन्नमूर्द्धानम्विष्णुनाचनिरीक्षितम् ॥ सैंहिकेयंमहाकायंराहुमावाहयाम्यहम् ॥ इतिध्यात्वा ॥ अयङ्गौरितिमन्त्रस्यसर्पराज्ञीऋषिर्गायत्रीच्छन्दो राहुर्देवताराहुस्थापनेपूजनेविनियोगः ॥ ॐअयङ्गौःपृश्निरक्र॒मी॒दस॑दन्मा॒तरम्पु॒रः ॥ पितरञ्चप्र॒यन्त्स्वः ॐभूर्भु०

ऋक्० ॥ ॐआयङ्गौःपृश्निरक्र० ॥ यजुः० । वा. सं. अ. । ३ । मंत्र । ६ ॥ ॐआयङ्गौःपृश्निरक्रमी० ॥ साम० । अर. सं. अ. १ द. ४ मं. ४ ॥ ॐआयङ्गौःपृश्निरक्र० ॥ अथर्वण० ॥ ॐराहूराजानन्स्सरति० ॥

❀ ❀ ❀

राहवेनमः ॥ राहुमावाहयामि ॥ ४२ ॥ ब्रह्मजज्ञानमितिमन्त्रेणकेतुञ्चपरिपूजयेत ॥ अञ्जनाभंमहारौद्रम्बहुरूपमहाग्रहम् ॥ महाकायञ्चशिखिनङ्केतुमावाहयाम्यहम् ॥ इतिध्या० ॥ ब्रह्मजज्ञानमितिमन्त्रस्यप्रजापतिर्ऋषिस्त्रिष्टुप्छन्दःकेतुर्देवताकेतुस्थापनेपूजनेविनियोगः ॥ ओंब्रह्मजज्ञानम्प्रथमम्पुरस्ताद्विसीमतःसुरुचोव्वेनऽआवः ॥

ऋक्० ॥ ओंब्रह्मजज्ञानम्प्रथमम् ॥ यजु । वा. । सं. । अ. । १३ मं. ३ । ओंब्रह्मजज्ञानम्प्रथमम्. ॥ साम. सं. छं: अ. १ प्र. ४ द. ३ मं. ९ ओंब्रह्मजज्ञानम्प्रथमम्. ॥ अथर्वण० ॥ यस्तेपृथुस्तनयित्नुर्यो० ॥

* * * *

सबुध्न्याऽउपमाऽअस्याव्विष्ठाःसतश्चयोनिमसतश्चव्विवः ॥ ओंभूर्भु०केतवे नमः केतुमावाहयामि ॥ ४३ ॥ समख्यइतिमन्त्रेणपूजयेत्सप्तमातृकाः ॥ ब्राह्मी

माहेश्वरीचैवकौमारीवैष्णवीतथा ॥ वाराहीचैवमाहेन्द्रीचामुण्डासप्तमातरः ॥
समख्यइतिमन्त्रस्यवामदेवऋषिःपँक्तिश्छन्दोमातरोदेवतामातृस्थापनेपूजनेविनियो

ऋक्० ॥ ओंश्रियएवैनन्तच्छ्रूया० ॥ यजु० । वा. । सं. । अ. । ४ मं. । २३ ॥
ओंसमख्येदेव्याधिया० ॥ साम० । छं. उ. सं. प्र. २ उ. रार्द्ध. मं. १४ ॥ ओंअभि
ब्रह्मीरनूषत. ॥ अथर्वण० ॥ ओंयोवःशिवतमोरसस्त० ॥ ❀ ❀

गः ॥ ओंसमख्येदेव्व्याधियासन्दाक्षिणयोरुचक्षसा ॥ मामऽआयुःप्प्रमोषीर्म्मोऽअह
न्तवव्वीरम्विदेयतवदेविसन्दृशि ॥ मातृभ्योनमः ॥ मातृःआवाहयामि ॥ ४४ ॥
दुर्गापूज्याततोवाह्येवज्रादीन्यायुधानिच । वज्रंशक्तिश्चदण्डञ्चखड्गंपाशाङ्कुशौतथा ॥
गदान्त्रिशूलञ्चशङ्खञ्चपद्मञ्चैतेक्रमाद्दश ॥ ओंदुर्गायैनमः ॥ इतिमध्ये ॥ १ ॥ ओंव

ज्रायनमः ॥ २ ॥ ॐशक्तयेनमः ॥ ३ ॥ ॐदण्डायनमः ॥ ४ ॥ ॐखड्गायनमः ॥ ५ ॥ ॐपाशायनमः ॥ ६ ॥ ॐअङ्कुशायनमः ॥ ७ ॥ ॐगदायैनमः ॥ ८ ॥ ॐत्रिशूलायनमः ॥ ९ ॥ ॐचक्रायनमः ॥ १० ॥ ॐपद्मायनमः ॥ ११ ॥ ततोगन्धाक्षतपुष्पधूपदीपनैवेद्यताम्बूलपूगीफलदक्षिणायज्ञोपवीतवासांसिसमर्प्य ॥ कृतैतदमुकदेवप्रतिष्ठाङ्गभूतेस्मिन्कर्म्मणियथासम्पादितसामग्र्याकृतेनानेनपूजनेनसर्वतोभद्रमण्डलस्थापितदेवाःसुप्रीतावरदाःसन्तु । आयुःकर्तारः । क्षेमकर्त्तारः । शुभकर्त्तारः । कल्याणकर्त्तारोभवन्तु ॥ ततःसर्वतोभद्रेकर्णिकायुक्तमष्टदलङ्कुर्यात् ॥ तन्मध्येताम्रमयङ्कलशंस्थापयेत् ॥ महीद्यौरितिमन्त्रेणस्थापनविधिनासुदृढन्नवमव्रणङ्कलशंस्थापयेत् ॥ पञ्चरत्नस

वौंषध्यादितत्तन्मन्त्रेणनिःक्षिप्यताम्रमयेणपात्रेणापिधायतत्पात्रंमाषैःपरिपूर्य ॥ ॐमनोजूतिर्ज्जुषतामाज्ज्यंस्यबृहस्पतिर्य्यज्ञमिमन्तनोत्त्वरिष्टय्यज्ञछंसमिमन्दधातु ॥ विश्वेदेवासऽइहमादयन्तामों १ प्रतिष्ठा ॥ १ ॥ वा. । सं. । अ. । २ । मं. १२ ॥ इति मन्त्रेणप्रतिष्ठाप्यसम्पूज्य ॥ ततःसमुद्रस्यत्वावकयाग्नेइत्यादिएकादशमन्त्रैर्लक्ष्मीनारायणप्रतिमामग्न्युत्तारणपूर्वककलशोपरिसंस्थाप्य ॥ वस्त्रेणाच्छाद्य॥ पुनःसम्पूज्य मन्त्रायथा ॥ वा. । सं. । अ. १७ । मं. ४ । इत्यारभ्य ॥ ओसमुद्रस्यत्वा १ ॥ ॐहिमस्यंत्त्वा ॥ २ ॥ ॐउपज्मन्नुपवेतसे ॥ ३ ॥ ॐअपामिदम् ॥ ४ ॥ ॐअग्नेपावक ॥५॥ ॐसनः पावक॥ ॐपावकयाय? ॥ ७ ॥ ॐनमस्तेहरसे॥८॥ॐनृषदेवेट ॥ ९ ॥ ॐयेदेवादेवानाम् ॥ १० ॥ ॐयेदेवादेवेष्वाधि ॥ ११ ॥

इत्यन्तम् ॥ ततः सर्वतोभद्रवेदीम्प्रदक्षिणीकृत्यफलन्तत्रनियोजयेत् ॥ आवाहयाम्यहन्देवींसुभद्रांनामवेदिकाम् ॥ अस्मिन्यज्ञेमहामातर्निर्विघ्नङ्कुरुमेसदा ॥ पुत्रान्देहिधनन्देहिसर्वकामांश्चदेहिमे ॥ ततोवेद्यावेदिरितिपठेत् ॥ ॐव्वेद्या॒व्वेदि॒; समांप्प्यतेब॒र्हिषांव॒र्हिरिन्द्रियम् ॥ यूपेन॒यूपंऽआप्प्यते॒प्प्रणींतोऽअग्निर॒ग्निनां ॥ १ ॥ वा. । सं. । अ. । १९ । मं. । १७ ॥ ॐइयम्ब्बेदि॒;प॒रोऽअन्तं÷पृथि॒ब्ब्याऽअ॒यँय्य॒ज्ञोभुवंनस्य॒नाभिं÷ ॥ अ॒यꣳसोमो॒वृष्णो॒ऽअश्श्वंस्य॒रेतोंम्ब्रह्मायम्ब्बाचःपंर॒मंब्व्योम ॥ २ ॥ वा. । सं । अ. । २४ । मं. । ६२ । इतिसर्वतोभद्रपूजाविधिः ॥ अथतन्मण्डलस्थदेवानांनाममन्त्रेणावाहनम्पूजनञ्चोच्यते ॥ तथाहिआग्नेयेगणपतयेनमः ॥ गणपतिमावा० ॥ १ ॥ ईशानेश्रियैनमः ॥ श्रियमावा० ॥ २ ॥ मध्येब्रह्मणे

नमः ॥ ब्रह्माणमावा. ॥ ३ ॥ उत्तरेसोमायनमः ॥ सोममावा० ॥ ४ ॥ ईशाने ईशानायनमः ॥ ईशानमा. ॥ ५ ॥ पूर्वेइन्द्रायनमः ॥ इन्द्रमा. ॥ ६ ॥ आग्नेये । अग्नयेनमः ॥ अग्निमावा० ॥ ७ ॥ दक्षिणेयमायनमः ॥ यममा. ॥ ८ ॥ नैर्ऋत्येनिर्ऋतयेनमः ॥ निर्ऋतिमावा०॥ पश्चिमेवरुणायनमः । वरुणमावा. ॥१०॥ वायव्येवायवेनमः । वायुमावा. ॥ ११ ॥ वायुसोममध्येअष्टवसुभ्योनमः । अष्टवसूनावा. ॥१२॥ सोमेशानयोर्मध्येएकादशरुद्रेभ्योनमः । एकादशरुद्रानावा. ॥१३॥ ईशानेन्द्रमध्येद्वादशादित्येभ्योनमः । द्वादशादित्यानावा. ॥ १४ ॥ इन्द्राग्निमध्येअश्विभ्यान्नमः । अश्विनौआवा. ॥ १५ ॥ अग्नियमयोर्मध्येविश्वेभ्योदेवेभ्यो नमः । विश्वान्देवानावा. ॥ १६ ॥ तत्रैवपितृभ्योनमः । पितृनावा. ॥ १७॥

यमनिर्ऋतिमध्येसप्तऋषिभ्योनमः । सप्तऋषीनावा. ॥ १८ ॥ निर्ऋतिवरुणयोर्मध्ये । भूतेभ्योनमः । भूतानावा. ॥ १९ ॥ तत्रैवसर्पेभ्योनमः । सर्पाना.वा० ॥ २० ॥ वायुवरुणयोर्मध्येअप्सरोभ्योनमः ॥ अप्सरसआवा. ॥ २१ ॥ तत्रैव गन्धर्वेभ्योनमः । गन्धर्वानावा. ॥ २२ ॥ ब्रह्मोत्तरयोर्मध्येरुद्रेभ्योनमः ॥ रुद्रानावा. ॥ २३ ॥ ब्रह्मेशानयोर्मध्ये श्रियैनमः । श्रियमावा. ॥ २४ ॥ तत्रैव विष्णवेनमः ॥ विष्णुमावा. ॥ २५ ॥ ब्रह्मेन्द्रयोर्मध्येमरुद्भ्योनमः ॥ मरुतः आवा. ॥ २६ ॥ पुनःतत्रैवमरुद्भ्योनमः । मरुतःआवा॥ब्रह्माग्नेययोर्मध्येस्वधायैनमः । स्वधामावा. ॥ २८ ॥ ब्रह्मयमयोर्मध्येमृत्यवेन० मृत्युमावा. ॥ २९ ॥ तत्रैवरोगायनमः । रोगमावा. ॥ ३० ॥ ब्रह्मनैर्ऋत्ययोर्मध्येगणपतयेनमः ॥ गणपतयेनमःगणप

तिमावा०॥ ३१ ॥ ब्रह्मवरुणयोर्मध्येआपायनमः॥ आपमावाह० ॥३२॥ ब्रह्मवायुद्वयोर्मध्येमरुद्भ्योनमः। मरुतःआवा० ॥ ३३ ॥ ब्रह्मणःपादमूलेकर्णिकायांपृथिव्यैनमः॥ पृथ्वीमावा०॥३४॥उत्तरेगङ्गादिनंदीभ्योनमःनदीःआवा० ॥३५॥ तत्रैवसप्तसमुद्रेभ्योनमः। सप्तसमुद्रानावा०। ३६॥ॐआदित्यायनमः। आदि त्यमावा० ॥ ३७ ॥ सोमायनमः सोममावा० ॥३८॥भौमायनमःभौममा०॥३९॥बुधायनमः बुधमावा० ॥४०॥ बृहस्पतयेनमः ॥ बृहस्पतिमावा० ॥ ४१ ॥ शुक्रायनमः शुक्रमावा०॥ ४२ ॥ शनैश्चरायनमः शनैश्चरमावा० ॥ ४३ ॥ राहवेनमः॥ राहुमावा० ॥ ४४ ॥ केतवेनमः केतुमावा० ॥ ४५ ॥ मातृभ्योनमः ॥ मातॄःआवा० ॥ ४६ ॥ वाह्यपारिधौसोमादिसन्निधौक्रमेणायुधानामावाहनम्। मध्येदुर्गायैनमः॥ दुर्गामा०॥ १ ॥

वज्रायनमः । वज्रमा० । शक्तयेनमः । शक्तिमा० ॥३॥ दण्डायनमः । दण्डमा० ४ ॥ खड्गायनमः । खड्गमा०॥५॥ पाशायनमः । पाशमा० ॥ ६ ।' अङ्कुशायनमः। अङ्कुशमा०॥७॥ गदायैनमः । गदामा० ॥ ८ ॥ त्रिशूलायनमः॥ त्रिशूलमा० ॥ ९ ॥ चक्रायनमः । चक्रमा॥१०॥ पद्मायनमः ॥ पद्ममा० ॥११॥ मनोजूतिरितिप्रतिष्ठाप्य॥ षोडशोपचारेणसम्पूज्यनमस्कुर्यात् ॥ इतिनाममन्त्रेणपूजनम् ॥ ततःस्वस्वकुण्डअग्निं स्थापयेत् ॥ तत्राग्निनामानि ॥ शुभोग्रहविधौह्यग्निर्लक्षहोमेप्रकीर्त्तितः ॥ कोटिहोमे शिवांवह्निःसर्वकामप्रदायकः ॥ इतिदेवीपुराणे ॥ क्वचित्तु ॥ लक्षहोमेतुवह्निःस्यात्कोटिहोमेहुताशनइतिमनुः ॥ वैवाहिकेग्नौकुर्वीतगार्ह्यंकर्मयथाविधि ॥ शुभंपात्रन्तुकाँस्यंस्यात्तेनाग्निम्प्रणयेद्बुधः ॥ तस्याभावेशरावेणनवेनाभिमुखञ्चतमितिततः

परिसमुह्य ॥ कुशाःपरिसमूहायसप्तशाखाःप्रकीर्त्तिताः ॥ नपञ्चशाखाःकर्त्तव्याः कृतेषुनिष्फलाःक्रियाः ॥ रेखाःप्रोक्ताश्चयास्तिस्रःकर्त्तव्याआदिमध्यगाः ॥ न्यूनाः किञ्चिन्नकर्त्तव्याइत्येतत्परिभाषितम् ॥ कृमिकीटपतङ्गाद्याक्रमन्तिवसुधातले ॥ तेभ्योहिरक्षणार्थायसमूहनमितिस्मृतम् ॥ शान्तिकेसप्तशाखाभिःकुर्यात्परिसमूहनम् ॥ वैश्वदेवेसकृद्दर्भैरन्यत्राचत्रिभिर्भवेत् ॥ प्राचींकुर्य्याद्बुधःकृष्णान्नीलामैन्द्रींविनिर्दिशेत् ॥ पीतवर्णांचसौम्यास्याद्रेखाणाम्वर्णलक्षणम् ॥ गणशान्तौविवाहेच वृषोत्सर्गव्रतेष्वपि ॥ कुर्य्याद्विदलदर्भैश्चविधिंपरिसमूहनम् ॥ ग्रहीतव्यास्त्रयोदर्भाः कनिष्ठाङ्गुष्ठमध्यतः ॥ दक्षिणेचोत्तरेकुर्याद्विधिरेषसमूहने ॥ यत्रप्रसूयतेनारीम्रियतेयत्रमानुषः ॥ चाण्डालाध्युषिताभूमिरमेध्यापरिकीर्त्तिता ॥ श्वशूकरखरो

ष्ट्रादिसंस्पृष्टान्दूषितान्त्यजेत् ॥ विरामूत्रतुषकेशास्थिभस्मादिमलिनाम्भुवम् ॥ परिसमूहनञ्चपञ्चगव्यादिकुशोदकैः ॥ मार्जयेत्प्रोक्षयेद्भूमिंपरिसमूहनंस्मृतम् ॥ १ ॥

॥ उपलिप्य ॥ बिष्णुपादसमाक्रान्तावराहेणोद्धृतामही ॥ अतःपृथ्वीसदापूताकिमर्थमुपलेपनम् ॥ पुरेन्द्रस्यहिवज्रेणहतोबृत्रोमहासुरः ॥ व्याप्ताचमेदसातस्यमेदिनीत्यभिधीयते ॥ उल्लिख्य ॥ प्रथमाब्राह्मणीचैवद्वितीयाक्षत्रिया स्मृता ॥ तृतीयाबैश्यजाप्रोक्ताएतारेखाःप्रकीर्त्तिताः ॥ मधुकैटभदैत्याभ्याम्बिष्णुनाक्राम्यतापुरा ॥ मेरुकैलाससञ्छिन्नातदर्थमुपलिप्यते ॥ गोमयेलक्ष्मीर्वसतिपवित्रासर्बमङ्गला ॥ यज्ञार्थेसंस्कृताभूमिस्तदर्थमुपलिप्यते ॥ बन्ध्यादुष्टाचहीनाङ्गीमृतवत्सातुराचया ॥ एवम्बिधाश्चयागावोनतद्गोमयमाहरेत् ॥ उप

लिप्य ॥ कीलकाविविधाःसन्तिअस्थिकण्टकमेवच ॥ तेषामुद्धरणार्थायउल्लेखः
क्रियतेबुधैः ॥ तिस्रोरेखाःखादिरेणस्फेनकार्य्यास्तथाबुधैः ॥ स्थण्डिलोल्लेख
नङ्कुर्यात्स्रुवेणचक्कुशेनवा ॥ ननखेननकाष्ठेनअंगुल्यामृरामयेनच ॥ उल्ले
खनञ्च कर्त्तव्यंकर्म्मसिद्धिसुसिद्धिदम् ॥ जातीफलेनपुष्पेणपत्रेणान्यफेलनवा ॥
उल्लेखनञ्चकर्त्तव्यङ्कर्मसिद्धिसुसिद्धिदम् ॥ उद्धृत्य ॥ येभ्रमन्तिपतङ्गाद्याआका
शपथगामिनः ॥ तेषाम्प्रहरणार्थायउधृत्येत्यभिधीयते ॥ अभ्युक्ष्य ॥ आपो
देवगणाःसर्वाआपःपितृगणाःस्मृताः ॥ ताभिरभ्युक्षणम्प्रोक्तमृषिभिस्तत्त्ववादिभिः ॥
खननात्पूरणाद्दाहादभिषिच्योपलेपनात् ॥ आक्रमात्क्षालनाद्वापिभूमिःशुध्य
तिसप्तभिः ॥ आनयनम्बरस्त्रीभिरग्नेर्ब्रह्मभिरेवच ॥ पात्रद्वयेशुभेकाँस्येनिर्धूमंशुभमुत्त

मम् इति ॥ अमृतस्यक्षयंदृष्ट्वाब्रह्माद्यैःसर्वदैवतैः ॥ तदासंस्थापितोबाह्निःशमीगर्भेहुताशनः ॥ स्वाहाकारेवषट्कारेहोमेतुहविषायुते ॥ देवतापितृहेतोश्चअग्निःसाधारणोमतः ॥ शमीगर्भेन्यकाष्ठेचपाषाणेजलवासिनि ॥ अग्निस्तृतीयईशानउपसमाधानतोग्निना ॥ अथाग्निस्थापनप्रयोगः ॥ परिसमूहेतिकश्यपऋषिःभूर्देवतागायत्रीच्छन्दःपरिसमूहनेविनियोगः ॥ उपलिप्येतिबासिष्ठऋषिगौर्देवतात्रिष्टुप्छन्दःभूलेपनेबिनियोगः ॥ उल्लेखेतिप्रजापतिर्ऋषिःपृथ्वीर्देवताअनुष्टुप्छन्दःउल्लेखनेविनियोगः ॥ अभ्युक्षणेतिगौतमऋषिरापोदेवताःपँक्तिश्छन्दःअभ्युक्षणेविनियोगः ॥ अग्निमुपसमाधायेतिअत्रिऋषिःकालाग्निरुद्रादेवतागायत्रीच्छन्दःअग्न्युपसमाधानेविनियोगः ॥ ततःदेशकालौसङ्कीर्त्य ॥ सप्रासादविष्णुमूर्त्तेस्थिरप्राति

ष्ठाख्यकर्मसाधनार्थमग्निस्थापनङ्करिष्ये ॥ अग्न्यायतनंसंमृज्य ॥ कुशोदकेनपञ्चगव्येनप्रोक्ष्य ॥ ततोयथापरिमितेतुषकेशशर्करादिरहितेकुण्डेकुशैःपरिसमुह्यतान्कुशानैशान्याम्परित्यज्यगोमयोदकेनोपलिप्यस्फेनस्रुबमूलेनवाप्रागग्रप्रादेशमात्रमुत्तरोत्तरक्रमेणात्रिरुल्लिख्य ॥ उल्लेखनक्रमेणैवानामिकाङ्गुष्ठाभ्यांमृदमुद्धृत्यजलेनाभ्युक्ष्य ॥ ततःकांस्यपात्रस्थंवह्निंद्वितीयकास्यपात्रेणापिहितम्प्रत्यङ्मुखमुपसमाधायाग्निंप्रातिष्ठाप्यसम्मृज्य ॥ ओँइ॒दंविष्णु॒र्विचंक्रमेत्रे॒धानिदंधेप॒दम् ॥ समूढमस्यपांसु॒रेस्वाहा ॥ १ ॥ वा० । सं० । अ० । ५ । मं० । १५ । इतिमन्त्रेणोपरिमेखलायांश्वेतबर्णालङ्कृतायांबिष्णवेनमइतिबिष्णुमावाह्यपुजयेत् ॥ मध्यमेखलायांरक्तबर्णालङ्कृतायांब्रह्मजज्ञानमितिमन्त्रेणब्राह्मणमावाह्यपूजयेत् ॥ अधो

मेखलायाङ्कृष्णवर्णालङ्कृतायांअवरुद्रेतिमन्त्रेणरुद्रमावाह्यपूजयेत् ॥ योन्यां रक्तवर्णालङ्कृतायांगौरीर्मिमायेतिमन्त्रेणावाह्यपूजयेत् ॥ ततःपञ्चकुण्डीनवकुण्डी पक्षेचसर्वेपिहोतारस्तमेवाग्निंस्वस्वकुण्डेप्रणयेयुः ॥ इत्यग्निस्थापनप्रयोगः ॥ अथ जलाधिवासविधिमाहपञ्चरात्रे ॥ पूर्वोक्तधान्याधिवासरीत्यामण्डपान्निर्म्माय ॥ प्रतिज्ञाङ्कुर्यात् ॥ अद्येहेत्यादि० ॥ अमुकगोत्रोऽमुकशर्म्मासप्रासादविष्णुमूर्ते स्थिरप्रतिष्ठाङ्गत्वेनजलाधिवासकर्म्माहङ्करिष्ये ॥ ॐघृतम्मिमिक्षेघृतमंस्ययोनिर्घृते श्रितोघृतम्म्वंस्यधामं ॥ अनुष्ष्वधमावंहमादयंस्वस्वाहांकृतम्ब्वृषभव्वाक्षिहव्व्यम् ॥ १ ॥ वा. । सं । अ. । १७।मं०।८८। इतिमन्त्रेणदेवस्यसर्वाङ्गंलेपयित्वा ॥ ततः पालाशोदुम्बराश्वत्थपत्रकुशास्तरे ॥ अर्चामाह ॥ वस्त्रेणावेष्ट ॥ कदलीस्तम्भान्तरा

लेजलभाजनेतीर्थम्प्रकल्प्यप्रतिमाबहुत्वेसतिपूर्वोक्तमण्डपमध्येत्रिहस्तामितंसुदृढङ्कु
ण्डन्निर्म्मायतीर्थदेशन्नयेत् ॥ देवंस्वास्तिसूक्तमुदीरयेत् ॥ स्वस्तिनऽइन्द्रइति ॥
तत्रतीर्थेक्षीरार्णवन्ध्यायेत्मध्येअनन्तमर्च्चयेत् ॥ अस्मिन्प्राक्शिरसन्देवंस्वापयेत् ॥
प्रतिष्ठोसीतिमन्त्रेणाशिवानःसन्तमेनचेति ॥ मनोजूतिरितिप्रतिष्ठाप्य ॥ सम्पूज्य ॥
ततोदिक्षुविदिक्षुचेन्द्रादीन्रक्षार्थंपूजयेत्सुधीः ॥तत्प्रकारः। ॐइन्द्र॒म्विश्श्वा॑ऽअवीवृध
न्त्समु॒द्रव्यं॑चस॒ङ्गिर॑ः ॥ र॒थीत॑मछं र॒थीना॒म्वाजा॑ना॒ꣳसत्प॑ति॒म्पति॑म् ॥ १ ॥
वा । सं. । अ. । १५ । मं. । ६१ । इतिमन्त्रेणप्राच्यामिन्द्रम् ॥ आग्नेय्याम्
अग्निन्दूतमित्यग्निम् ॥ २ ॥ दक्षिणेयमायत्वोतियमम् ॥ ३ ॥ नैर्ऋत्याम्असु
न्वेतिनिर्ऋतिं ॥ ४ ॥ पश्चिमेतत्वायामीतिवरुणम् ॥ ५ ॥ वायव्याम् ॥

ओंतव॑ब्बायबृतस्प्पते॒त्त्वष्टु॑र्ज्जामातरद्भुत ॥ अवा॒ꣳस्यावृ॑णीमहे ॥ वा.। सं.। अ.। २७ मं. ॥ ३४ ॥ इतिवायुम् ॥ उदीच्याम् ॥ ओंसोमोधे॒नुꣳसोमो॒ऽअर्ब्बन्तमा॒शुꣳसोमोब्बी॒रङ्कर्म्म॒ण्यन्ददाति ॥ सा॒द॒न्न्यम्विद॒त्थ्यꣳस॒भेय॑म्पितृश्श्रव॑णं॒य्योददा॑शदस्म्मै ॥ १ ॥ वा.। सं.। अ.। ३४। मं.। २१। इतिसोमम्। ७। ईशान्यान्तमीशानामितिईशानमावाह्य ॥ ८ ॥ षोडशोपचारैःपूजयेत् ॥ ततःकरणीयंपञ्चरात्रे ॥ ध्यात्वानिर्बाणदीपैश्चरात्रिशेषन्नयेत्सुधीः ॥ सन्ततदीपैरित्यर्थः ॥ एवंन्तांरात्रिंवेदपारायणादिनानयेत् ॥ इदञ्चाधिवासनंसद्यः कालमपिभवति ॥ तच्चोक्तंमात्स्ये ॥ त्रिरात्रमेकरात्रम्वापञ्चरात्रमथापिवा ॥ सप्तरात्रमथोकुर्य्यात्क्वचित्सद्योधिवासनमिति ॥ नवबाससाकुशैश्चाच्छाद्यदेवंस्वाप

येत् ॥ इतिपञ्चरात्रजलाधिबासबिधिः ॥ मात्स्येतु शुचिवाहव्येतिभूप्रोक्षणम् ॥ ततःजलपात्रेदेवंसंस्थाप्य ॥ पञ्चामृतेनपृथक्पृथक्संस्नाप्य ॥ ॐआप्यायस्वेतिक्षीरेण ॥ १ ॥ अ. १२. मं. ११४ ॐदधिक्राब्णइतिदध्ना ॥ २ ॥ अ.२३मं.३२ ॐतेजोसीतिघृतेन ॥ ३॥ अ.१मं.३१ ॐमधुवातेतिमधुना ॥४॥अ.१३ मं. २७ ॐआयङ्गौरितिशर्करया ॥ ५ इतिसंस्नाप्य ॥ आपोहिष्ठेतितिसृभिः ॥ ॐआपोहिष्ठा ॥ १ ॥ सं. अ. ३६ मं. १४ ॐयोवः॑शिवतमो ॥ २ ॥ अ. ३६ मं.१५ ॐतस्मा ऽअरङ्गमामवः ॥ ३ ॥ अ. ३६ मं.१६ ॐहिरण्यबर्णाइत्यादिचतसृभिः ॥ ४ ॥ पवमानःसुबर्चेनइतिअनुवाकेनव्याहृतिभिश्चाभिषिञ्चेत् ॥ ॐहिरण्यबर्णाः शुचयःपावकायासुजातः ॥ कश्यपस्येयाश्चियाश्चिद्रःअग्निंयागर्भंदधिरेबिरूपा

स्तानआयासःस्योनाभवन्तु ॥ १ ॥ ॐयासांराजाबरुणोयातिमध्येसत्यानृते ॥ अश्वञ्जनानांमधुश्श्च्युतःशुचयोयाःपावकास्तानऽआपःसंस्योनाभवन्तु ॥ २ ॥ ॐवासान्देवाविकृरावन्तिभक्षंवाःअन्तरिक्षेबहुधाभवन्तु ॥ ३ ॥ ॐशिवेनमाचक्षुषायस्यतापःशिवपातन्वोपस्पृशतत्वञ्चेति ॥ सर्बामग्निंसुवदोहुवोमपिवर्च्चोबलमोजोनिधत्त ॥ ४ ॥ ॐयाःपावमानीतिब्याहृतिभिश्च ॥ ॐभूः ॥ ॐभुवः ॥ ॐस्वः ॥ ॐमहः ॥ ॐजनः ॥ ॐतपः ॥ ॐसत्यं ॥ ततःपुष्पफलयवाक्षतदूर्वांकुशान्गृहीत्वापादपीठेनमस्तेरुद्रमन्यवेइतिनिःक्षिप्यालिङ्गंस्थापयित्वा ❀ ॥ रक्षोहणंवाजिनमितिरक्षाम्वध्वा ॥ ॐरक्षोहणंवाजिनमाजिघर्मिमित्रप्रतिष्ठसुपयासिशर्म्म ॥ शिश्यनोऽअग्निःक्रतुभिःसामिद्धःसनोदिवासरिषस्पातुनक्तम् ॥ ततः

षोडशोपचारेणसम्पूज्यवाससाकुशैश्चाच्छाद्य ॥ अवतेहेड ॥ उदुत्यामितिजलेऽधिवासयेत् ॥ भवतेहेडोबरुणनमोनमोरवयज्ञेभिरीमहीहमिह ॥ इतिजलाधिबासबिधिः ॥ ततोगुरुःप्रासादान्तरीशान्यान्नैर्ऋत्याम्वाहस्तमितांवेदिङ्कृत्वाचतुःषष्टिपदेवास्तुपीठेसामान्यप्रयोगोक्ताःशिष्यादिदेवताआवाह्यसम्पूज्यताभ्योबलिन्दत्वा ॥ ततःचतुःषष्टिवास्तुचक्रस्योद्धारमाह ॥ तदुक्तम्प्रपञ्चसारे ॥ चतुःषष्ठिपदम्बास्तुदेवानाम्परमंहितम् ॥ एकाशीतिपदंबास्तुगृहाणान्तुप्रकीर्तितम् ॥ कृत्वावनिंसमतलांचतुरस्रसंख्यामष्टाष्टकोष्टकपदाञ्चसकोणसूत्राम् ॥ तस्याञ्चतुष्पदसमन्वितमध्यकोष्ठेब्रह्मातुसाधकवरेणसमर्चनीयः ॥ १ ॥ अन्यच्चचतुषष्टिपदेवास्तौ देवाःशिष्यादयस्तथा कोणेतेषांप्रकर्त्तब्यास्तिर्यक्कोष्टगतास्त्रयः चतुर्बिंशत्कोणगाह्य

र्द्धपदाश्चैवसंस्थिताः॥विंशतिर्द्विपदाश्चैवचतुःषष्टिपदेस्मृताः मध्येचतुष्पदोब्रह्माशेषास्त्वेकपदाःस्मृताःअष्टौसार्द्धपदाह्येतादेवताःपरिकीर्त्तिताः।इतिविश्वंभरशास्त्रेअथोद्धारः ॥ प्रासादनिर्ऋतिभागेहस्तमात्राम्बेदीञ्चकृत्वा ॥ मध्यकोष्टचतुष्टयमेकीकृत्य ॥ प्रतिकोणन्त्रिषुत्रिषुपदेषुसूत्रञ्चदद्यात् ॥ तथाचतुर्विंशत्यर्द्धपदानिसंपद्यन्ते ॥ तत्रईशानकोणपदादारभ्यप्रदक्षिणक्रमेणशिष्यादिपञ्चचत्वारिंशद्देवताःस्वस्वपदेषुप्रणवव्याहृतिभिःतत्तन्नाम्नावाह्यप्रतिष्ठाप्यपाद्याचमनादिभिःपूजयेत् ॥ तत्रनामानि ॥ शिखीचैवतुपर्ज्जन्योजयोमाहेन्द्रएवच ॥ आदित्यश्चैवसत्यश्चभृशश्चैवान्तरिक्षकः॥ एतेपूर्वेसमाख्यातादक्षिणेकथयाम्यहम् ॥ अग्निःपूषाचवितथोगृहक्षतयमौतथा ॥ गन्धर्वोभृङ्गराजश्चमृगश्चैवयथाक्रमम् ॥ दक्षिणेकथिताह्येतेवारुण्याङ्कथयाम्यहम्॥

पितृद्वौवारिकाश्चैवसुग्रीवश्चयथाक्रमम् ॥ पुष्पदन्तश्चवरुणाअसुरःशेषएवच ॥ पापयक्ष्माचविख्यातोवारुण्याम्परिकीर्त्तिताः ॥ उत्तरेचप्रवक्ष्यामिदेवताःमुनिसत्तम॥ रोगोनागस्तथामुख्योभल्लाटःसोमंएवच ॥ उरगस्त्वादितिःप्रोक्तादितिश्चैवनसंशयः ॥ वाह्यवारुणकेह्येतेदेवताःपरिकीर्त्तिताः ॥ मध्येब्रह्मासमाख्यातःसर्वलोकपितामहः ॥अर्यमादेवतापूर्वेविवस्वाँश्चैवदक्षिणे ॥ मैत्रस्तुपश्चिमेज्ञेयोउत्तरेपृथिवीधरः ॥ अपश्चैवापवत्संचईशान्यांचप्रपूजयेत् ॥ सबितासावित्रआग्नेय्याङ्गयोजयांश्चनैर्ऋते ॥ रुद्रश्चरुद्रदासश्चवायव्याम्परिकीर्त्तितौ ॥ ततःमण्डलवाह्ये ॥ ईशानेचरकीदेवीआग्नेय्यान्तुविदारिका ॥ पूतनानैर्ऋत्येपूज्यावायव्याम्पापराक्षसी ॥ स्कन्दश्चैवार्चयेत्पूर्वेदक्षिणेऽर्यमणन्तथा ॥ जृम्भकःपश्चिमेपूज्य

उत्तरेपिलपिच्छिका ॥ हेमन्तंपूर्वपीठेतुआग्नेयान्त्रिपुरान्तकम् ॥ दक्षिणेअग्निवेतालमग्निजिह्वान्तुनैर्ऋते ॥ कालन्तुपश्चिमेभागेवायव्येतुकरालिनम् ॥ उत्तरेह्येकपादन्तुईशानेभीमरूपिणम् ॥ ज्वालामुखञ्चपातालेआकाशेगन्धमर्दनम् ॥ एतान्सम्पूज्ययत्नेनक्षेत्रपालमतःपरम् ॥ इतिशिष्यादिवास्तूद्धारः ॥ अथपूजाविधिर्लिख्यते ॥ देशकालादिसङ्कीर्त्यप्रारिप्सितस्यसप्रासादविष्णुमूर्त्तेःस्थिरप्रतिष्ठाकर्मणःसाङ्गतासिद्ध्यर्थंसकलाभीष्टमनोरथानांपुत्रपौत्रादिसन्ततिस्थिरलक्ष्मीकारोग्यकामःचतुःषष्टिवास्तुपूजाङ्करिष्यइतिसङ्कल्प्य ॥ ततःवास्तुमण्डलचतुःकोणेषुशङ्कुचतुष्टयमीशानादिदक्षिणक्रमेणरोपयेत् ॥ तत्रमन्त्रः ॥ विशन्तुभूतलेनागालोकपालाश्चसर्वतः ॥ मण्डपेत्रावतिष्ठन्तुआयुर्बलकराःसदा ॥ अनेनमन्त्रेणसर्वत्रशङ्कुरो

पणम् ॥ ततःआग्नेयादिकोणेषुशङ्कूनाम्पार्श्वेरोपणक्रमेणवलिदानम् ॥ अग्निभ्यो
प्यथसर्प्पेभ्योयेचान्येतान्समाश्रिताः ॥ तेभ्योवलिम्प्रदास्यामिपुण्यमोदनमुत्तमम् १
नैर्ऋत्ये ॥ नैर्ऋत्याधिपतिश्चैवनैर्ऋत्यांयेचराक्षसाः ॥ तेभ्योवलिंप्रयच्छामि
पुण्यमोदनमुत्तमम् ॥ २ ॥ वायव्ये ॥ वायव्याधिपतिश्चैववायव्यांयेचराक्षसाः॥
तेभ्योवलिंप्र० ॥ ३ ॥ ईशानाधिपतिश्चैवईशान्यांयेचराक्षसाः ॥ तेभ्योवलि
म्प्रयच्छामिपुण्यमोदनमुत्तमम् ॥ ४ ॥ इतिक्रमेणचतुष्कोणेषुवलिन्दद्यात् ॥
ततःवेद्यामुपरिकनकशलाकयानवरेखाःप्रागायताःउदक्संस्थाःकुर्यात् ॥ नामानि ॥
लक्ष्मीर्यशोवतीकान्तासुप्रियाविमलाश्रिया ॥ सुभगासुमतीडाचक्रमादेतैश्चनाम
भिः ॥ १ ॥ यथा ॥ ॐलक्ष्म्यैनमः ॥ १ ॥ ॐयशोवत्यैनमः ॥ २ ॥

ॐकान्तायैनमः ॥ ३ ॥ ॐसुप्रियायैनमः ॥ ४ ॥ ॐविमलायैनमः ॥ ५ ॥ ॐश्रियायैनमः ॥ ६ ॥ ॐसुभगायैनमः ॥ ७ ॥ ॐसुमत्यैनमः ॥ ८ ॥ ॐइडायैनमः ॥ ९ ॥ ततः । उदगग्राःप्राक्संस्थानवरेखाःकृत्वा ॥ नामानितु ॥ धान्याप्राणाविशालाचस्थिराभद्राजयानिशा ॥ विरजाविभवाएतैर्नामभिश्चैवतत्क्रमात् ॥ २ ॥ ॐधान्यायैनमः ॥ १ ॥ ॐप्राणायैनमः ॥ २ ॥ ॐविशालायैनमः ॥ ३ ॥ ॐस्थिरायैनमः ॥ ४ ॥ ॐभद्रायैनमः ॥ ५ ॥ ॐजयायैनमः ॥ ६ ॥ ॐनिशायैनमः ॥ ७ ॥ ॐविरजायैनमः ॥ ८ ॥ ॐभवायैनमः॥९॥ इतिरेखाःकृत्वा ॥ चतुःषष्टितमंमण्डलम्भवति ॥ तन्मध्यगंपदचतुष्टयमेकीकृत्य तत्कोणचतुष्टयाद्बहिःकोणचतुष्टयेरेखाभिःपदान्युत्कृत्यशिष्यादीन्स्थापयेत् ॥ मण्ड

लमध्येवास्तुपुरुषमावाहयेत् ॥ पूजयेच्च ॥ एह्येहिभगवन्वास्तोयज्ञेऽस्मिन्सर्वासिद्वयेजानुनीकूर्पराशङ्कपिशाचान्नाहुतोपिहि ॥ १ ॥ वास्तुपुरुषंपञ्चोपचारैःपूजयेत् ॥ ततःईशानपदद्दक्षिणार्द्धेशिखिनं ॥ ॐभूर्भुवःस्वःशिखिनेनमः ॥ शिखिनमावाहयामि ॥ १ ॥ एवंसर्वत्र ॥ तद्दक्षिणसार्द्धपदे ॥ ॐभूर्भु०पर्ज्जन्यायनमः ॥ पर्ज्जन्यमावा० ॥२॥ तद्दक्षिणपदद्वये ॥ ॐभूर्भु०जयन्तायनमः ॥ जयन्तमावा० ३ तद्दक्षिणपदद्वये ॥ ॐभूर्भु०माहेन्द्रायनमः ॥ माहेन्द्रमावा० ॥ ४ ॥ तद्दक्षिणपदद्वये ॥ ॐभूर्भु०आदित्यायनमः ॥ आदित्यमावा० ॥ ६ ॥ तद्दक्षिणसार्द्धपदे ॥ ॐभूर्भु०भृशायनमः ॥ भृशमावा० ॥ तद्दक्षिणाग्नेयपदार्द्धे ॥ ॐभूर्भु०अन्तरिक्षायनमः ॥ अन्तरिक्षमावा० ॥८ ॥ तत्पश्चिमार्द्धे ॥ ॐभूर्भु०अग्नयेनमः ॥ अग्नि

मावा० ॥ ९ ॥ तत्पश्चिमसार्द्धपदे ॥ ॐभूर्भु०पूष्णेनमः ॥ पूषणमावा० ॥ १० ॥
तत्पश्चिमपदद्वये ॥ ॐभूभु०वितथायनमः ॥ वितथमावाहयामि ॥ तदग्रतः
पदद्वये ॥ ॐभूर्भु०गृहक्षतायनमः ॥ गृहक्षतमावा० ॥ १२ ॥ तदग्रतःपद
द्वये ॥ ॐभूभु०यमायनमः ॥ यममावा० ॥ १३ ॥ तदग्रतःपदद्वये ॥ ॐभूर्भु०
गन्धर्वायनमः ॥ गन्धर्वमावा० ॥ १४ ॥ तत्पश्चिमसार्द्धपदे ॥ ॐभूभु०
भृङ्गराजायनमः ॥ भृङ्गराजमावा० ॥ १५ ॥ तत्पश्चिमनैर्ऋत्यपदार्द्धे ॥
ॐभूर्भु०मृगायनमः ॥ मृगमावा० ॥ १६ ॥ तदुत्तरार्द्धे ॥ ॐभूर्भुवःस्वः
पितृभ्योनमः ॥ पितॄनावा० ॥ १७ ॥ तदुत्तरसार्द्धपदे ॥ ॐभूभु०दौवारिका
यनमः ॥ दौवारिकमावा० ॥ १८ ॥ तदुत्तरपदद्वये ॥ ॐभूर्भु०सुग्रीवायनमः॥

सुग्रीवमावा० ॥ १९ ॥ तदुत्तरपदद्वये ॥ ॐभूर्भु०पुष्पदन्तायनमः ॥ पुष्पदन्तमावा० ॥ २० ॥ तदुत्तरपदद्वये ॥ ॐभूर्भु०वरुणायनमः ॥ वरुणमावा०॥२१॥ तदुत्तरपदद्वये ॥ ॐभूर्भु०असुरायनमः ॥ असुरमावा० ॥ २२ ॥ तदुत्तरसार्द्धपदे । ॐभूर्भु०शेषायनमः ॥ शेषमावा० ॥ २३ ॥ तदुत्तरवायव्यपदार्द्धे ॥ ॐभूर्भु०पापयक्ष्मणेनमः ॥ पापयक्ष्माणमावा० ॥ २४ ॥ तत्प्राक्पदार्द्धे ॥ ॐभूर्भु०रोगायनमः ॥ रोगमावा० ॥ २५ ॥ तत्प्राक्सार्द्धपदे ॥ ॐभूर्भु०नागायनमः ॥ नागमावा० ॥ २६ ॥ तत्प्राक्पदद्वये ॥ ॐभूर्भु०मुख्यायनमः मुख्यमावा० ॥ २७ ॥ तत्प्राक्पदद्वये ॥ ॐभूर्भु० ॥ भल्लाटायनमः ॥ भल्लाटमावाहयामि ॥ २८ ॥ तत्प्राक्पदद्वये ॥ ॐभुर्भु०सोमायनमः ॥ सोममावा०॥२९॥

तत्प्राक्पदद्वये ॥ ॐभूर्भुवःस्वः उरगायनमः ॥ उरगमावा० ॥ ३० ॥ तत्प्राक्
सार्द्धपदे ॥ ॐभूर्भु० अदितयेनमः अदितिमावाहयामि ॥ ३१ ॥ तत्प्रागर्द्धपदे ॥
ॐभूर्भु०दितयेनमः ॥ दितिमावा० ॥ ३२ ॥ मध्यमपदचतुष्के ॥ ॐभूर्भु०
स्वःब्रह्मणेनमः ॥ ब्रह्माणमावा०॥३३॥ब्रह्मणःपूर्वेपदद्वये ॥ ॐभूर्भु०॥अर्यम्णेनमः ॥
अर्यमणमावा० ॥ ३४ ॥ ब्रह्मणोदक्षिणेपदद्वये ॥ ॐभूर्भु०वैवस्वतायनमः ॥
वैवस्वतमावा० ॥ ३५ ॥ ब्रह्मणःपश्चिमेपदद्वये ॥ ॐभूर्भु०मैत्रायनमः ॥ मैत्र
मावा० ॥ ३६ ॥ ब्रह्मोत्तरेपदद्वये ॥ ॐभूर्भु० पृथ्वीधरायनमः ॥ पृथ्वीधर
मावा० ॥ ३८ ॥ ईशानपददक्षिणार्द्धे ॥ ॐभूर्भु०आपवत्सायनमः ॥ आप
वत्समावा. ॥ ३९ ॥ तद्दक्षिणेआग्नेयपदार्द्धे ॥ ॐभूर्भु०सवित्रेनमः ॥ सावितार

मावा० ॥ ४० ॥ आग्नेयपदपश्चिमार्द्धे ॥ ॐभूर्भु०सावित्रायनमः ॥ सावित्रमावा० ॥ ४१ ॥ तत्पश्चिमेनैर्ऋत्यपदार्द्धे ॥ ॐभूर्भु०जयायनमः । जयमावा० ॥४२॥ तदुत्तरार्द्धे ॥ ॐभूर्भु०जयन्तायनमः ॥ जयन्तमा० ॥ ४३ ॥ ॐभूर्भु०रुद्रायनमः रुद्रमावाहयामि ॥ ४४ ॥ ॐभूर्भु०रुद्रदासायनमःरुद्रदासमावाहयामि ॥ ४५ ॥ ततो मण्डलाद्बहिः ॥ ईशानादिषु ॥ ॐभूर्भु०स्वःचरक्यैनमः । चरकीमावा० ॥ ४६ ॥ आग्नेये ॥ ॐभूर्भु०विदार्य्यैनमः॥ विदारीमावा० ॥ ४७ ॥ नैर्ऋत्ये ॥ ॐभूर्भु० पूतनायैनमः ॥ पूतनामावा० ॥ ४८ ॥ वायव्ये ॥ ॐभूर्भु०पापराक्षस्यैनमः ॥ पापराक्षसीमा० ॥ ४९ ॥ ततःपूर्वे ॥ ॐभूर्भु०स्कन्दायनमः ॥ स्कन्दमावा० ॥५०॥ दक्षिणे ॥ ॐभूर्भु०अर्यम्णेनमः ॥ अर्यमणमावा० ॥ ५१ ॥ पश्चिमे ॥ ॐभूर्भु०

जृम्भकायनमः ॥ जृम्भकमावा० ॥ ५२ ॥ उत्तरे ॥ ओंभूर्भु०पिलिपिच्छायनमः ॥ पिलिपिच्छमावा० ॥ ५३ ॥ ततःपूर्वादिक्रमेण ॥ ओंभूर्भु०हेमन्तायनमः ॥ हेमन्तमावा० ॥ ५४ ॥ आग्नेये ॥ ओंभूर्भु०त्रिपुरान्तकायनमः ॥ त्रिपुरान्तकमावा०५५ दक्षिणे॥ओंभूर्भु०अग्निवेतालायनमः॥अग्निवेतालमावा०॥५६॥नैर्ऋत्ये ॥ ओंभूर्भु० अग्निजिह्वायैनमः ॥ अग्निजिह्वामावा. ॥५७॥ पश्चिमे ॥ ओंभूर्भु०कालायनमः ॥ कालमावा० ॥ ५८ ॥ वायव्ये ॥ ओंभूर्भु०करालिनेनमः ॥ करालिनमावा० ॥५९॥ उत्तरे ॥ ओंभूर्भु०एकपदेनमः ॥ एकपादमावा० ॥ ६० ॥ ईशाने ॥ ओंभूर्भु०भीमरूपायनमःभीमरूपमावा० ॥६१॥ पाताले ॥ ओंभूर्भु०ज्वालामुखायनमः ॥ ज्वालामुखमावा० ॥ ६२ ॥ आकाशे ॥ ओंभूर्भु०गन्धमर्दनायनमः ॥ गन्धमर्दनमा

वाहयामि. ॥ इत्यावाह्य ॥ ततोपाद्यार्घ्याऽचमनीयगन्धाक्षतपुष्पधूपदीपनैवेद्यताम्बूलपूगफलदक्षिणायज्ञोपवीतवासांसिसमर्प्य ॥ वेद्यामुपरिताम्रमयंकलशंसंस्थाप्य ॥ महीद्यौरित्यादिमन्त्रेणस्थापनविधिनासुदृढन्नवमव्रणङ्कलशंस्थापयेत् ॥ पञ्चरत्नसर्वौषध्यादितत्तन्मन्त्रेणनिःक्षिप्य ॥ ताम्रमयेणपात्रेणपिधाय ॥ तत्पात्रंतण्डुलैःपरिपूर्य ॥ मनोजूतिरितिमन्त्रेणप्रतिष्ठाप्यसम्पूज्य ॥ ततः । पूर्वोक्तसमुद्रस्यत्त्वावकयाग्नइत्यादिएकादशमन्त्रैर्वास्तुप्रतिमामग्नुत्तारणपूर्वकङ्कलशोपरिसंस्थाप्य ॥ पट्टवस्त्रेणाच्छाद्य ॥ पुनःसम्पूज्य ॥ नमस्कुर्यात् ॥ कृतैतदऽमुकदेवप्रतिष्ठाङ्गभूतेऽस्मिन्कर्मणियथासम्पादितसामग्र्याकृतेनानेनपूजनेनवास्तुपुरुषमण्डलदेवाःसुप्रीतावरदाः सन्तु ॥ आयुःकर्त्तारः ॥ क्षेमकर्त्तारः ॥ शुभकर्तारः ॥ कल्याणकर्त्तारोभवन्तु ॥

इतिशिष्यादिवास्तुपूजाप्रयोगः ॥ अथकुशकण्डिकाप्रयोगः ॥ ॐब्रह्मासनमास्तीर्य ॥ सू० ॥ तस्याऽग्नेर्दक्षिणस्यांदिशिब्रह्मणेआसनम् ॥ वारणादियज्ञीयदारुनिर्मितं पीठमास्तीर्य ॥ कुशैःस्तृत्त्वा ॥ तत्रवरणाभरणाभ्यांपूर्वसंपादितकर्मसुतत्वज्ञम् ब्राह्मणंतदभावेपञ्चाशत्कुशनिर्मितमग्नेरुत्तरतःप्राङ्मुखमासीनंस्वयमुदङ्मुखमासीनोऽनुलेपनपुष्पमाल्यवस्त्रालङ्कारादिभिःसंपूज्यामुककर्माहङ्करिष्ये ॥ तत्रमेत्वममुकगोत्राऽमुकप्रवराऽमुकशर्म्मन्ब्राह्मणब्रह्माभवेतिवृत्वा ॥ भवामीत्युक्तवन्तमुपवेश्य । प्रणीय ॥ सू० ॥ अपइतिशेषः ॥ तद्यथा ॥ अग्नेरुत्तरतःप्रागग्रकुशैरासनद्वयङ्कल्पयित्वा ॥ वारणन्द्वाशाङ्गुलदीर्घञ्चतुरङ्गुलविस्तारञ्चतुरङ्गुलखातञ्चमसं सव्यहस्तेकृत्वा ॥ दक्षिणहस्तोद्धृतपात्रस्थोदकेनपूरयित्वा ॥ पश्चिमासनेनिधा

याऽलभ्यपूर्वासनेस्थापयित्वा ॥ परिस्तीर्य ॥ सू० ॥ वर्हिर्मुष्टिमादायईशानादिप्रागग्नैर्वर्हिर्भिरुदक्संस्थमग्नेःपरिस्तरणङ्कृत्वा ॥ अर्थवदासाद्य ॥ सू० ॥ यावद्भिःपदार्थैरर्थःप्रयोजनन्तावतः पदार्थान्द्वन्द्वप्राक्संस्थान्उदगग्रान्अग्नेरुत्तरतःपश्चाद्वाआसाद्य ॥ पवित्रच्छेदनानित्रीणिकुशतरुणानि ॥पवित्रेसाग्रेअनन्तर्गर्भेद्वेकुशतरुणे ॥ प्रोक्षणीपात्रंवारणम् ॥ द्वादशाङ्गुलदीर्घंकरतलसम्मितखातम्पद्मपत्राकृतिकमलमुकुलाकृतिवा॥आज्यस्थालीतैजसीमृण्मयावाद्वादशाङ्गुलविशालाप्रादेशोच्चा॥तथैवचरुस्थाली॥संमार्गकुशास्त्रयः ॥ उपयमनकुशास्त्रिप्रभृतयः ॥ समिधस्तिस्रःपालाश्यःप्रादेशमात्र्यः॥स्रुवःखादिरोहस्तमात्रःअङ्गुष्ठपर्वमात्रखातपरिणाहवर्तुलपुष्कलः ॥ आज्यङ्गव्यं ॥ चरुश्चेद्व्रीहितंडुलाः ॥ षट्पञ्चाशदधिकमुष्टिशत

द्वयपरिमितंपरार्द्धंवहुभोक्तृपुरुषाहारपरिमितमवरार्द्धन्तण्डुलाद्यन्नपूर्णपात्रंदक्षिणावरोवा ॥ यथाशक्तिहिरण्यादिद्रव्यं ॥ पवित्रेकृत्वा ॥ सू० ॥ प्रथमन्त्रिभिःकुशतरुणैरग्रतःप्रादेशमात्रंविहायद्वेकुशतरुणेप्रच्छिद्य ॥ प्रोक्षणीःसंस्कृत्य ॥ सू० ॥ प्रोक्षणीपात्रंप्रणीतासन्निधौनिधाय ॥ तत्रपात्रान्तरेणहस्तेनवाप्रणीतोदकमासिच्य ॥ पवित्राभ्यामुत्पूय ॥ पवित्रेप्रोक्षणीषुनिधाय ॥ दक्षिणहस्तेनप्रोक्षणीपात्रमुत्थाप्य ॥ सव्येकृत्वा ॥ तदुदकन्दक्षिणेनोच्चाल्य ॥ प्रणीतोदकेनप्रोक्ष्य ॥ अर्थवत्प्रोक्ष्य ॥ सू० ॥ अर्थवन्तिप्रयोजनवन्ति ॥ आज्यस्थाल्यादीनिपूर्णपात्रपर्यन्तानिप्रोक्षणीभिरद्भिरासादनक्रमेणैकैकसःप्रोक्ष्य ॥ असञ्चरेप्रणीताग्न्योरन्तरालेप्रोक्षणीपात्रन्निधाय ॥ निरूप्याज्यम् ॥ सू० ॥ आसादितमाज्यं ॥ आज्यस्थाल्यांपश्चादग्नेर्निहितायां

प्रक्षिप्य ॥ चरुश्चेच्चरुस्थाल्यांप्रणीतोदकमासिच्य ॥ आसादिताँस्तण्डुलान्प्राक्षिप्य ॥ अधिश्रित्य ॥ सू० ॥ तत्राज्यंब्रह्माधिश्रपयति ॥ तदुत्तरतःस्वयञ्चरुम्मेवंयुगपदग्नावारोप्य ॥ पर्यग्निकुर्य्यात् ॥ सू० ॥ ज्वलदुल्मुकंप्रदक्षिणंआज्यचर्वोः समन्ताद्भ्रामयेत् ॥ ईषच्छृतेचरौस्रुवंप्रतप्य ॥ सू० ॥ दक्षिणेनस्रुवमादायप्राञ्चमधोमुखमग्नौतापयित्वा ॥ सव्येपाणौकृत्वा ॥ दक्षिणेनसंमार्गाग्रैर्मूलतोग्रपर्यन्तं ॥ सम्मृज्य ❀ ❀ ॥ सू० ॥ ❀ ❀ मूलैरंग्रमारभ्यअधस्तान्मूलपर्यन्तं अभ्युक्ष्य ॥ सू० प्रणीतोदकेनाभिषिच्यपुनःप्रतप्यनिदध्यात् ॥ ❀ सू० ❀ ॥ पुनःपूर्वत्प्रतप्यदक्षिणतोनिदध्यात् ॥ आज्यमुद्वास्य ॥ सू० ॥ आज्यमुत्थाप्यचरोःपूर्वेणनीत्वा ॥ अग्नेरुत्तरतःस्थापयित्वा ॥ चरुमुत्थाप्यआज्यस्यपश्चिमतोनीत्वा ॥

आज्यस्योत्तरतःस्थापयित्वा ॥ आज्यमग्नेःपश्चादानीय ॥ चरुञ्चानीय ॥ आज्यस्योत्तरतोनिधाय ॥ एवन्त्रिचतुरादीन्यन्यान्यपिहवींष्युद्वासयेदधिश्रितानांपूर्वेणोद्वासितानांपश्चिमतोहविषउद्वास्यानयनमितियाज्ञिकसम्प्रदायात् ॥ उत्पूय ॥ सू० पूर्वपवित्राभ्यां ॥ अवेक्ष्य ॥ सू० ॥ अवलोक्याज्यम् ॥ तस्मादपद्रव्यनिरसनं ॥ प्रोक्षणीश्चपूर्ववत् ॥ सू० ॥ पवित्राभ्यामुत्पूयपूर्ववत् ॥ उपयमनान्कुशानादाय ॥ सू० ॥ दक्षिणपाणिनागृहीत्वासव्येनिधाय ॥ समिधोभ्याधाय ॥ सू० ॥ यत्तिष्ठत्समिधःप्रक्षिप्य ॥ पर्युक्ष्यजुहुयात् ॥ सू० ॥ प्रोक्षण्युदकेनसहपवित्रेणदक्षिणचुलुकेनगृहीतेनअग्निमीशानादिउदगपवर्गंपरिषिच्यजुहुयात् ॥ आघारादीन्संस्रवधारणार्थंपात्रंप्रणीताऽग्न्योर्मध्येनिदध्यात् ॥ एषएवविधिर्यत्रक्वचिद्धोमः ॥

सू० ॥ एषःपरिसमूहनादिपर्युक्षणपर्यन्तोविधिरेवनमन्त्राःक्वचित्‌यत्रक्वचनलौकिके स्मार्तेवाऽग्नौहोमस्तत्रवेदितव्यः ॥ पवित्रेप्रणीतासुनिधाय ॥ कुशाग्रेणब्रह्मणान्वारब्धः ॥ पातितदक्षिणजानुः ॥ समिद्धतमेचाग्नौस्रुवेणाज्यमादायजुहुयात् ॥ तत्राघारादारभ्यद्वादशाहुतिषुतत्तदाहुत्यनन्तरंस्रुवावस्थितहुतशेषस्यप्रोक्षणीपात्रेप्रक्षेपः ॥ अथहोमः ॥ प्रथममाज्याहुतीर्दद्यात् ॥ ओंप्रजापतयेस्वाहा ॥ इदम्प्रजापतये ॥ इतिमनसा ॥ प्राञ्चमूर्ध्वंऋजुंसमन्तममाज्येनअग्नेरुतरप्रदेशेपूर्वाघारमाघारयति ॥ तथैव ॥ ओंइन्द्रायस्वाहा ॥ इदमिन्द्राय ॥ इत्याघारौ ॥ अग्नेर्दक्षिणप्रदेशेउत्तराघारमाघारयति । ओंअग्नयेस्वाहा ॥ इदमग्नये ॥ अग्नेरुत्तरार्द्धपूर्वार्द्धेआग्नेयमाज्यभागंहुत्वा ॥ तथैव ॥ ओंसोमायस्वाहा ॥ इदꣳसोमाय ॥ इत्या

ज्यभोगौ ॥ दक्षिणार्द्धपूर्वार्द्धइतिसौम्यमाज्यभागंहुत्वा ॥ ओंभूःस्वाहा ॥ इदमग्नये ॥
ओंभुवःस्वाहा ॥ इदम्वायवे ॥ ओंस्वःस्वाहा ॥ इदꣳसूर्याय ॥ एतामहाव्याहृतयः ॥
ओंत्वन्नो॑ऽअग्ग्ने॒व्वरु॑णस्यवि॒द्वान्दे॒वस्य॒हेडो॒ऽअव॑यासिसीष्ठाः ॥ यजि॑ष्ठो॒व्वह्नि॑तम॒ः
शोशु॑चानो॒व्विश्वा॒द्वेषा॑ꣳसि॒प्प्रमु॑मुग्ध्य॒स्म्मत्स्वाहा॑ ॥ १ ॥ सं० अ० २१
मं० ३ ॥ इदमग्नीवरुणाभ्याम् ॥ ॐसत्वन्नो॑ऽअग्ग्नेव॒मोभ॑वो॒तीनेदि॑ष्ठोऽअ॒स्याऽ
उ॒ष॒सो॒व्व्युष्टौ ॥ अव॑यक्ष्वनो॒व्वरु॑ण॒ꣳररा॑णो॒व्वी॒हिमृ॑डी॒कꣳसु॒हवो॑नऽएधिस्वाहा २ ॥
सं० अ० २१ मं० ४ ॥ इदमग्नीवरुणाभ्यां ॥ ॐअयाश्चाग्ग्नेस्यनभिशस्तिपाश्च
सत्यमित्वमयाऽअसि ॥ अयानोयज्ञम्वहास्ययानोधेहिभेषजꣳस्वाहा ॥
इदमग्नये ❁ ॥ ❁ ॐयेतेशतम्वरुणंयेसहस्रंयाज्ञियाःपाशाविततामहान्तः ॥

तेभिन्नोंअद्यसवितोत्तविष्णुर्व्विश्वेमुञ्चन्तुमरुतःस्वर्क्काः ॥ ❀ ❀ ❀
स्वाहा ॥ इदम्बरुणायसवित्रोविष्णवेविश्वेभ्योदेवेभ्योमरुभ्द्यःस्वर्केभ्यः ॥ ओंउदुत्तम
म्बंरुणपाशंमस्मदवांधमम्बिमंध्यमछंश्श्रथाय ॥ अथांव्वयमांदित्यव्व्रतेतवानां
गसोऽअदिंतयेस्यामस्वाहा ॥ सं० अ० १२ मं० १२ इदम्बरुणायअदितये ॥ ५ ॥
इतिद्वादशाहुतयः ॥ ओंप्रजापतयेस्वाहा ॥ इदम्प्रजापतये ॥ इतिप्रजापत्यम् इत्यग्नि
स्वरूपम् ॥ ततःअग्निम्पञ्चोपचारेणसंपूज्यशिष्यादिवास्तुहवनङ्कुर्यात् ॥ तद्यथा ॥ ततः
पञ्चकुण्डीनवकुण्डीपक्षेचकुण्डेषुस्वस्वशाखीयपूर्वाङ्गोत्तरहोतारःप्रतिदैवतमष्टोत्तरसहस्रमष्टोत्तरशतमष्टाविंशतिमष्टौवाप्रत्येकंसमित्तिलाज्यैःपञ्चकुण्डीनवकुण्डीपक्षेचकुण्डसंख्ययाविभज्यजुहुयुर्नाममन्त्रैः ॥ ओंभूर्भु० शिखिनेनमःस्वाहा ॥ १ ॥ ओंपर्ज

न्यायनमःस्वाहा ॥ २ ॥ ओंजयायनमःस्वाहा ॥ ३ ॥ ओंमाहेन्द्रायनमःस्वाहा ॥ ४ ॥ ओंआदित्यायनमःस्वाहा ॥ ५ ॥ ओंसत्यायनमःस्वाहा ॥६॥ ओंभृशायनमःस्वाहा ॥ ७ ॥ ओंअन्तरिक्षायनमःस्वाहा ॥ ८ ॥ ओंअग्नयेनमःस्वाहा ॥ ९ ॥ ओंपूष्णेनमःस्वाहा ॥ १० ॥ ओंवितथायनमःस्वाहा ॥११॥ ओंगृहक्षतायनमःस्वाहा ॥ १२ ॥ ओंयमायनमःस्वाहा ॥ १३ ॥ ओंगन्धर्वायनमःस्वाहा ॥ १४ ॥ ओंभृङ्गराजायनमःस्वहा ॥ १५ ॥ ओंमृगायनमःस्वाहा ॥ १६ ॥ ओंपितृभ्योनमःस्वाहा ॥ १७ ॥ ओंदौवारिकायनमःस्वाहा ॥ १८ ॥ ओंसुग्रीवायनमःस्वाहा ॥ १९ ॥ ओंपुष्पदन्तायनमःस्वाहा ॥ २० ॥ ओंवरुणायनमःस्वाहा ॥ २१ ॥ ओंअसुरायनमःस्वाहा ॥ २२ ॥ ओंशेषायनमः

स्वाहा ॥ २३ ॥ ॐपापयक्ष्मणेनमःस्वाहा ॥ २४ ॥ ॐरोगायनमःस्वाहा॥२५॥
ॐनागायनमःस्वाहा ॥ २६ ॥ ॐमुख्यायनमःस्वाहा ॥ २७ ॥ ॐभल्लाटायन
मःस्वाहा ॥ २८ ॥ ओंसोमायनमःस्वाहा ॥ २९ ॥ ओंउरगायनमःस्वाहा ॥३०॥
ओंअदितयेनमःस्वाहा ॥ ३१ ॥ ओंदितयेनमःस्वाहा ॥ ३२ ॥ ओंब्रह्मणेनमः
स्वाहा ॥ ३३ ॥ ओंअर्यम्णेनमःस्वाहा ॥ ३४ ॥ ओंवैवस्वतायनमःस्वाहा॥३५॥
ओंमैत्रायनमःस्वाहा ॥ ३६ ॥ ओंपृथ्वीधरायनमःस्वाहा ॥ ३७ ॥ ओंआपा
यनमःस्वाहा ॥ ३८ ॥ ओंआपवत्सायनमःस्वाहा ॥ ३९ ॥ ओंसवित्रेनमः
स्वाहा ॥ ४० ॥ ओंसावित्रायनमःस्वाहा ॥ ४१ ॥ ओंजयायनमःस्वाहा
॥ ४२ ॥ ओंजयन्तायनमःस्वाहा ॥ ४३ ॥ ओंरुद्रायनमःस्वाहा ॥ ४४ ॥

ओंरुद्रदासायनमःस्वाहा ॥ ४५ ॥ ओंचरक्यैनमःस्वाहा ॥ ४६ ॥ ओंविदार्य्यैनमःस्वाहा ॥ ४७ ॥ ओंपूतनायैनमःस्वाहा ॥ ४८ ॥ ओंपापराक्षस्यैनमःस्वाहा ॥ ४९ ॥ स्कन्दायनमःस्वाहा ॥ ५० ॥ ओंअर्यम्णेनमःस्वाहा ॥ ५१ ॥ ओंजृम्भकायनमःस्वाहा ॥ ५२ ॥ ओंपिलिपिच्छायनमःस्वाहा ॥ ५३ ॥ ओंहेमन्तायनमःस्वाहा ॥ ५४ ॥ ओंत्रिपुरान्तकायनमःस्वाहा ॥ ५५ ॥ ओंअग्निवेतालायनमःस्वाहा ॥ ५६ ॥ ओंअग्निजिह्वायैनमःस्वाहा ॥ ५७ ॥ ओंकालायनमःस्वाहा ॥ ५८ ॥ ओंकरालिनेनमःस्वाहा ॥ ५९ ॥ ओंएकपदेयनमःस्वाहा ॥ ६० ॥ ओंभीमरूपायनमःस्वाहा ॥ ६१ ॥ ओंज्वालामुखानमःस्वाहा ॥ ६२ ॥ ओंगन्धमर्दनायनमःस्वाहा ॥ ६३ ॥ ततःबास्तो

ष्पतेप्रतिजानीहीतिमन्त्रचतुष्टयेनसमित्तिलाज्यैः प्रतिद्रव्यमष्टोत्तरशतपूर्ववद्धुत्वा ॥
ततः पञ्चसंख्यायापञ्चविंशतिसंख्यययावाविल्वैस्तद्बीजैर्वावास्तोष्पतइतिचतसृभिर्वा
स्तोष्पतेध्रुवस्थूणामितिचहुत्वा ॥ अघोरेभ्योथघोरेभ्यइत्याज्येनाष्टोत्तरसहस्रमष्टो
त्तरशतंवावास्तुमर्मसन्धानायजुहुयुः ॥ तत्रमन्त्राः ॥ ओंवास्तोष्पतेप्प्रतिजानीय
ह्यस्मान्त्स्वावेशोअनमीवोभवानः ॥ यत्त्वेमहेप्रतितन्नोजुषस्वशन्नोभवद्विपदेस
श्चतुष्पदेस्वाहा ॥ १ ॥ इदम्वास्तोष्पतये ॥ ओंवास्तोष्पतेप्प्रतरणोनएधिग
यस्फानोगोभिरश्वेभिरिन्दो ॥ अजराशस्तेसख्येस्यामपितेवपुत्रान्प्रतितन्नोजुषस्व
स्वाहा ॥ इदम्वास्तोष्पतये ॥ २ ॥ ओंवास्तोष्पतेशग्मयासंसदातेसक्षीमहिर
रामयागातुमत्यापाहिक्ष्येम ॥ उतयोगेवरन्नोयूयंपातस्वस्तिभिःसदानःस्वाहा ॥

इदम्बा० ॥ ३ ॥ ओंअमीवहावास्तोष्पतेविश्वारूपाण्याविशन् ॥ सखासुशेवएधिनःस्वाहा ॥ इदम्बा० ४ ॥ इतिचतसृभिःसमित्तिलाज्यैर्हुत्वा ॥ ततःओंवास्तोष्पतेप्रतिजा. । १ ॥ ओंवास्तोष्पतेप्रतरणो० । २ ॥ ओंवास्तोष्पतेशग्मया० । ३ ॥ ओंअमीवहावास्तोष्पते० । ४ ॥ ओंवास्तोष्पतेध्रुवस्थूणांसत्रंसौम्यानांद्रप्सोम्भेत्तापुरांशाश्वतीनामिन्द्रोमुनीनांसखास्वाहा ॥ ५ ॥ इतिपञ्चभिर्मन्त्रैःविल्वैस्तद्बीजैर्वाहुत्वा ॥ इतिशिष्यादिवास्तुहवनप्रयोगः ॥ ततःशिखिप्रभृतिपञ्चचत्वारिंशद्देवताभ्यःपायसेनवलिंदत्वा ॥ चम्य ॥ ओंशिखिनेनमःपायसवलिं समर्पयामिएवंसर्वत्र ॥ ततः ॥ ओंअघोरेभ्योथघोरेभ्योघोरघोरतरेभ्यः॥ सवर्भ्यैः सर्वसर्वेभ्योनमस्तेऽअस्तुरुद्ररूपेभ्यःस्वाहा ॥ इतिवास्तुमर्मसन्धानायजुहुयुः॥ततोरक्षोघ्न

पावमानसूक्ताभ्यांत्रिसूत्र्याप्रासादंसंवेष्ट्यपरितोजलदुग्धयोःपृथगविच्छिन्नेधारेदत्वा
॥ पीठेपूजितांहैमींवास्तुप्रतिमांदधिदूर्वासप्तधान्यशैवालगन्धाक्षतपुष्पयुतेअपक्वमृद्भाण्डेसंस्थाप्यतात्पिधायचतुःषष्टिधांविभाजितप्रासादाग्नेयकोणेकोणपदादुत्तरआकाशपदेजानुमात्रङ्गर्त्तङ्कृत्वा ॥ जलेनापूर्यगन्धपुष्पाणिप्रक्षिप्यमृद्भाण्डतत्रनिधायगर्त्तन्तथैवमृदापूरयेत् ॥ मृदआधिक्येपरंशुभम् ॥ इत्थम्वास्तुपूजाङ्कृत्वा ॥ अथनवग्रहस्थापनम् ॥ आरक्तम्भास्करंमध्येवर्त्तुलन्द्वादशाङ्गुलम् ॥ आग्नेय्यांश्वेतमर्द्धेन्दुमर्काद्विगुणमायतं ॥ याम्यामारन्त्रिकोणञ्च रक्तंसूर्याच्चतुर्गुणं ॥ ईशानेधनुषाकारंहरित्सौम्यंषडङ्गुलम् ॥ जीवमष्टाङ्गुलंपीतमुत्तरेपङ्कजाकृतिम् ॥ नवाङ्गुलम्भृगुंपूर्वेचतुःकोणांसितप्रभम् ॥ सप्ताङ्गुलंशनिङ्कृष्णंपश्चिमेमनुजाकृतिम् ॥

१२

नैर्ऋत्येमकराकारंराहुंशूर्पन्नवाङ्गुलम् ॥ वायव्यान्धूमलङ्केतुङ्खड्गाकारंषडङ्गुलम् ॥ शुक्रार्कौप्राङ्मुखौस्थाप्यौगुरुसौम्यावुदङ्मुखौ ॥ प्रत्यङ्मुखौसोमशनीशेषायाम्यमुखाःस्मृताः ॥ ततःग्रहवेदिपद्मपीठेषुयथास्थानमुखीग्रहप्रतिमांस्थापयित्वा ॥ दक्षिणवामतोधिदेवताप्रत्यधिदेवतेतदभिमुख्यौस्थापयेत् ॥ तदभावेपुष्पाक्षतादिष्वावाहयेत् ॥ अथाधिदेवताः ॥ ईश्वरउमास्कन्दःपुरुषोब्रह्मेन्द्रोयमःकालश्चित्रगुप्तइतिअधिदेवताः ॥ अथप्रत्यधिदेवताः॥अग्निरापःपृथिवीविष्णुरिन्द्रइन्द्राणीप्रजापतिःसर्प्पोब्रह्माचक्रमेणग्रहाणांप्रत्यधिदेवताः ॥ रुद्रपार्श्वेस्थितोवह्निःउमापार्श्वेत्वपोन्यसेत् ॥ स्कन्दस्थानेधरांन्यस्यविष्णोर्वैविधिरुच्यते ॥ ब्रह्मस्थानेतथाचैन्द्रइन्द्रस्यैन्द्रीतथैवच ॥ प्रजापतिःस्वयञ्चैवयमएवंपृथक्पृथक्

कालपार्श्वेतुसर्प्पोहिचित्रगुप्तस्यचब्रह्माइति ॥ हुताशनधरेरक्तेइन्द्रैन्द्र्योःपीतमुच्यते ॥ कृष्णोविष्णुश्चसर्प्पश्चश्वेताआपःप्रजापतिः ॥ अथपञ्चलोकपालाः ॥ गणेशश्चाम्बिकावायुराकाशश्चाश्विनौतथा ॥ ग्रहाणामुत्तरेपञ्चलोकपालाःप्रकीर्तिताः ॥ अथदशदिक्पालाः ॥ इन्द्रोऽग्निर्यमोयक्षःपाशीवायुर्धनाधिपः ॥ ईशोब्रह्मा तथानन्तःस्थापिताःपुर्वतःक्रमात् ॥ पीतइन्द्रस्तुकर्त्तव्योरक्तौयक्षहुताशनौ ॥ सितौपाशिकुबेरौचकृष्णमीशंयमंविदुः ॥ ब्रह्माणंश्वेतसङ्काशमनन्तङ्कृष्णमुत्तमम् ॥ इतिअयुतनवग्रहमखस्थापनप्रकारः ॥ अथनक्षत्रस्थापनम् ॥ अश्विन्यादीनितुभानिसप्तप्राच्यांनियोजयेत् ✿ ॥ ✿ दक्षिणस्यान्तुपुष्यादिसप्तऋक्षाणियोजयेत ॥ स्वात्यादिसप्तकञ्चैवप्रतीच्यान्दिशिविन्यसेत् ॥ अभिजित्सप्तकौवेर्य्यां

स्थापयेत्क्रमतोबुधः ॥ विष्कुम्भकादयोयोगाईशानेसप्तविंशकाः ॥ अथराशयः ॥ मेषादित्रीणिपूर्वेतुकर्कादित्रीणिदक्षिणे ॥ पश्चिमेचतुलात्रीणिमकरादीनि चोत्तरे ॥ अथवेदस्थापनं ॥ ईशान्याञ्चैवऋग्वेदआग्नेय्यान्तुयजुस्तथा ॥ नैर्ऋत्येसामवेदस्तुवायव्येऽथर्वणःस्मृतः । ऋग्वेदोगौरवर्णस्तुयजुःश्वेतोविधीयते ॥ सामस्तुरक्तवर्णश्चकृष्णवर्णस्त्वथर्वणः ॥ पूर्वेऽष्टौवसवः ॥ दक्षिणेएकादशरुद्राः ॥ पश्चिमेद्वादशादित्याः ॥ ईशानेद्वादशविश्वेदेवाः ॥ वायव्येऽष्टकुलनागाः ॥ नैर्ऋत्येनवपितरः ॥ उत्तरेऽष्टकुलपर्वताः ॥ बायव्येसप्तसमुद्राः ॥ उत्तरे सप्तर्षयः ॥ याम्येषट्ऋतवः ॥ आग्नेयेदुर्गा ॥ पश्चिमेक्षेत्रपालः ॥ इत्तरे ध्रुवः ॥ याम्येअगस्त्यः ॥ इतिग्रहमण्डलस्थापनम् ॥ अथसूर्यादिनवग्रहाणामा

वाहनंपूजनञ्च ॥ ओंमद्यःहेत्यादि० अमुकगोत्रोऽमुकशर्म्मासपत्नीकःसपरिवारःसकलाभीष्टसिद्ध्यर्थंसप्रासादविष्णुमूर्त्तेस्थिरप्रतिष्ठाकर्मनिर्विघ्नतासिद्ध्यर्थंसूर्यादिनवग्रहमण्डलस्थदेवानामावाहनंपूजनञ्चकरिष्ये ॥ याज्ञवल्क्यः ॥ ऋषिश्छन्दश्चदैवञ्च विनियोगस्तथैवच ॥ वेदितव्याःप्रयत्नेनब्राह्मणैश्चविशेषतः ॥ अनधीत्यतुयः कुर्यात्याजनंस्थापनंजपम् ॥ होममन्तर्जपादीनितस्यचाल्पफलानिहि ॥ ओंरक्तपुष्पाक्षतैः ॥ ओंभगवन्नादित्यग्रहाधिपतेकाश्यपगोत्रकलिङ्गदेशेश्वरजपापुष्पोपामाङ्गद्युतेद्विभुजपद्माभयहस्तसिन्दूरवर्णाम्बरमाल्यानुलेपनज्वलन्माणिक्यखचितसर्वाङ्गाभरणभास्करतेजोनिधेत्रिलोकप्रकाशकत्रिदेवतामयमूर्तेनमस्तेसन्नद्धारुणध्वजपताकोपशोभितेनसप्ताश्वरथवाहनेनमेरुम्प्रदक्षिणीकुर्वन्नाआगच्छरुद्राग्निभ्यांसहपद्मकार्णिका

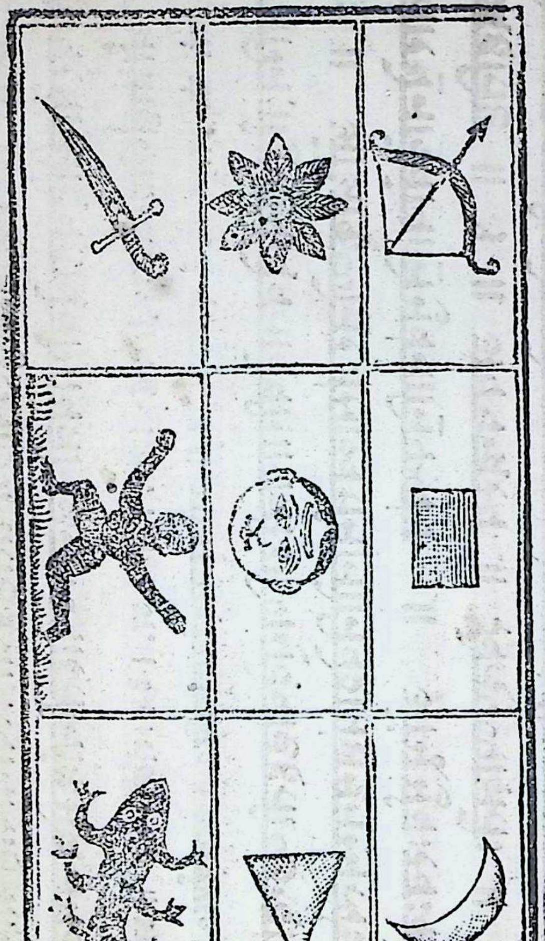

अथनवग्रहमण्लचक्रम्

यांताम्रप्रातिमांप्राङ्मुखींवर्त्तुलपीठेऽधितिष्ठपूजार्थंत्वामावाहयामि ॥ प्रणवस्यपरब्रह्म
ऋषिःपरमात्मादेवतादेवीगायत्रीच्छन्दः व्याहृतीनांक्रमेणजमदग्निभरद्वाजभृगवऋ
ऋक०। ओंआकृष्णेनरजसा० ॥ यजु०। वा.। सं.। अ.। ३३। मंत्र। ४३ ॥ ओंआकृष्णेनरजसावर्त्त० ॥
साम० सं. छं. अ. १ प्र. ३ द. ६ मं. ४ ॥ ओंवरामहां२॥आसि० ॥ अथर्वण० ॥ ओंविषासाहिंसहमामम् ॥
षयःअग्निर्वायुःसूर्योदेवतादेवीगायत्रीउष्णिग्देवीबृहतीच्छन्दांसिसूर्याद्यावाहनेविनि
योगः ॥ ओंआकृष्णेनरजसावर्त्तमानोनिवेशयन्नमृतम्मर्त्यञ्च ॥ हिरण्ययेन
सवितारथेनादेवोयातिभुवनानिपश्यन् ॥ ओंभूर्भुवःस्वःकलिङ्गदेशोद्भवसूर्यइहा
गच्छइहतिष्ठ ॥ १ ॥ अथचन्द्रस्य ॥ श्वेतपुष्पाक्षतैः ॥ ओंभगवन्सोमद्विजा
धिपतेसुधामयशरीरात्रेयगोत्रयामुनदेशेश्वरगोक्षीरधवलाङ्गकान्तोद्विभुजगदावरदाना

ङ्कितशुक्लाम्बरमाल्यानुलेपनसर्वाङ्गमुक्तमौक्तिकाभरणरमणीयसर्वलोकाप्यायकदेवतास्वाद्यमूर्त्तेनमस्तेसन्नद्धपीतध्वजपताकोपशोभितेनदशश्वेताश्वरथवाहनेनमेरुंप्रदक्षिणीकुर्वन्नागच्छउमयाद्भिश्चसहपद्माग्नेयदलमध्येस्फाटिकप्रतिमांप्रत्यङ्मुखींचतुर

ऋक०। ओंआप्यायस्वसमेतुते० ॥ यजु०। वा. सं.। अ.।१०। मंत्र।१८॥ ओंइमन्देवाऽअसपत्न०॥ साम०।अर०। सं. १ द. ३ मं. २॥ ओंसन्तेपयांसिसमु० ॥ अथर्वण० ॥ ओंसकधुमन्नक्षत्राणि ॥

स्त्रपीठेऽधितिष्ठपूजार्थंत्वामावाहयामि ॥ इमन्देवाइत्यस्यवरुणऋषिःयजुःसोमोदेवता सोमावाहनेपूजनेविनियोगः ॥ ओंइ॒मन्देवाऽअसप॒त्नꣳसुवद्ध्वम्मह॒तेक्ष॒त्राय॑म्मह॒तेज्ज्यैष्ठ्यायमह॒तेजानराज्ज्या॒येन्द्रस्येन्द्रि॒याय ॥ इ॒मम॒मुष्यपु॒त्रम॒मुष्यैपु॒त्रम॒स्यैव्वि॒शऽए॒षवो॑मी॒राजा॒सोमो॒स्माकम्ब्राह्मणाना॒ꣳराजा ॥ ओंभूर्भुवःस्वः

यमुनातीरदेशोद्भवआत्रेयसगोत्रसोमइहागच्छेत्यावाह्यइहातिष्ठेतिस्थापयेत् ॥ ओंरक्तपुष्पाक्षतैःभगवन्नङ्गारकाग्न्याकृतेभारद्वाजगोत्रावन्तिदेशेश्वरज्वालापुञ्जोपमाङ्गद्युतेचतुर्भुजशक्तिशूलगदाखड्गधारिन्रक्ताम्बरमाल्यानुलेपनप्रवालाभरणभूषितसर्बाङ्गदुर्द्दरालोकदीप्तेनमस्तेसन्नद्धरक्तध्वजपताकोपशोभितेनरक्तमेषरथवाहनेनमेरुंप्रदक्षिणीकुर्वन्नागगच्छस्कन्दभूमिभ्यांसहपद्मदक्षिणदलमध्येरक्तचन्दनप्रतिमान्दक्षिणाभिमुखीन्त्रिकोणपीठेऽधितिष्ठपूजार्थंत्वामावाहयामि ॥ अग्निर्मूर्द्धेतिविरूपाक्षऋषिः

ऋक० । ओंअग्निर्मूर्द्धादिवःककु० ॥ यजु० वा. सं । अ.। मंत्र। १२ ॥ ओंअग्निर्मूर्द्धादिवःककुत्० ॥ साम० सं. छ. अ. १ प्र. १ द. ३ मं. ७ ॥ ओंआग्निर्मूर्द्धादिवःककुत् ॥ अथर्वण ओंत्वयामन्योसरथमारु० ॥ *

गायत्रीच्छन्दःअङ्गारकोदेवताअङ्गारकस्थापनेपूजनेविनियोगः ॥ ओंअग्निर्मूर्द्धा

दि॒वःक॒कुत्पतिः॑पृथि॒व्याऽअ॒यम् ॥ अ॒पाᳫंरेताᳫंसिजिन्न्वति ॥ ओंभूर्भुवःस्वःअवन्तिदेशोद्भवभारद्वाजगोत्रभौमइहागच्छेत्यावाह्यइहतिष्ठेतिस्थापयेत् ॥ ३ ॥

अथबुधस्य ॥ ओंपीतपुष्पाक्षतैःभगवन्सौम्यसौम्याकृतेसर्वज्ञानमयात्रिगोत्रमगधदेशेश्वरकुङ्कुमवर्णाङ्गद्युतेचतुर्भुजखड्गखेटकगदावरदाङ्कितपीतांबरमाल्यानुलेपनस्रक्ताभरणालङ्कृतसर्वाङ्गविबुधमतेनमस्तेसन्नद्धपीतध्वजापताकोपशोभितेनचतुःसिंहरथवाहनेनमेरुंप्रदक्षिणीकुर्वन्नागच्छविष्णुपुरुषाभ्यांसहपञ्चेशानदलमध्येसुवर्णप्रतिमामुदङ्मुखींबाणाकारपीठेऽधितिष्ठपूजार्थंत्वामावाहयामि ॥ ओंउद्बुध्यस्वेतिपरमेष्ठीऋषिस्त्रिष्टुप्छन्दःबुधोदेवताबुधावाहनेपूजनेविनियोगः ॥ ओंउद्बुध्य

ऋक० । ओंउद्बुध्यध्वंसमनसः ॥ यजु० । वा. । सं. । अ. । १५ । मं. ५४ ॥ ओंउद्बुध्यस्वाग्नेप्रति० ॥साम०॥ सं. छ. अ. १ प्र. १ द. ४ मं. ६ ॥ ओंअग्नेविवस्वदुषस० ॥ अथर्वण० ॥ ओंयद्राजानोविभजन्तः॥ * *

स्वाग्ग्ने॒प्प्रति॑जागृहि॒त्त्वमि॑ष्टापू॒र्त्तेसꣳसृ॑जेथाम॒यञ्च॑ ॥ अ॒स्म्मिन्त्स॒धस्त्थे॒अद्ध्यु त्त॑रस्म्मि॒न्न्विश्श्वे॑दे॒वायज॑मानश्च्चसीदत ॥ ओंभूर्भुवःस्वःमगधदेशोद्भवआत्रेयस गोत्रबुधइहागच्छेत्यावाह्यइहतिष्ठेतिस्थापयेत् ॥ ४ ॥ अथगुरोः ॥ ओंपीतपुष्पा क्षतैः ॥ भगवन्बृहस्पतेसमस्तदेवताचार्याङ्गिरसगोत्रासिन्धुदेशेश्वरतप्तसुवर्णसदृ शाङ्गदीप्तेचतुर्भुजकमण्डल्वक्षसूत्रवरदानाङ्कितपीताम्बरमाल्यानुलेपनपुष्परागमया भरणरमणीयसमस्तविद्याधिपतेनमस्तेसन्नद्धपीतध्वजपताकोपशोभितेनपीताश्वरथ वाहनेनमेरुंप्रदक्षिणीकुर्वन्नागच्छब्रह्मेन्द्राभ्यांसहपद्मोत्तरदलमध्येसुवर्णप्रतिमासुदङ्मु खींदीर्घचतुरस्रपीठेऽधितिष्ठपूजार्थंत्वामावाहयामि ॥ ओंबृहस्पतेइतिमन्त्रस्यगृत्स मदऋषिस्त्रिष्टुप्छन्दःवृहस्पतिर्देवताबृहस्पत्यावाहनेपूजनेबिनियोगः ॥ ओंबृह

ऋक०। ओंबृहस्पतेऽअतियदर्यो० ॥ यजु०। वा.। सं.। अ.। २६। मंत्र ३ ॥ ओंबृहस्पतेऽअतियदर्यो० ॥
साम० छं. दो. उ. सं. प्र. ११ उ. मं. २ ॥ ओंबृहस्पतेपरिदीया० ॥ अथर्वण० ॥ ओंबृहस्पतिर्नःपरिपातुपश्चा० ॥

स्प्पते॒ऽअति॒यद॒र्य्यो॑ऽअर्हा॑द्द्यु॒माद्वि॒भाति॒क्रतु॑म॒ज्जने॑षु ॥ यद्दी॒दय॒च्छव॑सऽऋत प्प्रजात॒तद॒स्म्मासु॒द्द्रवि॑णन्धेहि॒चि॒त्रम् ॥ उ॒प॒या॒मगृ॑हीतोऽसि॒बृह॒स्प्पत॑येत्त्वै॒षते॒यो नि॒र्म्बृह॒स्प्पत॑येत्त्वा ॥ ओंभूर्भुवःस्वःसिन्धुदेशोद्भवआङ्गिरसगोत्रबृहस्पतेइहागच्छेत्वावाह्यइहतिष्ठेतिस्थापयेत् ॥ ५ ॥ अथशुक्रस्य ॥ ओंश्वेतपुष्पाक्षतैः ॥ भगवन्भार्गवसमस्तदैत्यगुरोभार्गवगोत्रभोजकटदेशेश्वररजतोज्ज्वलाङ्गकान्तेचतुर्भुजदण्डकमण्डल्वक्षसूत्रवरदानाङ्कितशुक्लमाल्याम्बराऽनुलेपनवज्राभरणभूषितसर्वाङ्गसमस्तनीतिशास्त्रनिपुणमतेनमस्ते सन्नद्धशुक्लध्वजपताकोपशोभितेनशुक्लाश्वरथ

वाहनसहितेनमेरुंप्रदक्षिणीकुर्वन्नागच्छेन्द्रेन्द्राणीभ्यांसहपद्मपूर्वदलमध्येरजतप्रतिमां प्राङ्मुखींपञ्चकोणपीठेऽधितिष्ठपूजार्थंत्वामावाहयामि ॥ ॐअन्नात्परिस्रुतइतिप्रजापत्याश्विसरस्वतीन्द्राऋषयःअतिजगतीच्छन्दः शुक्रोदेवताशुक्रावाहनेपूजनेवि

ऋक०। ओंशुक्रन्तेऽअन्यद्यजतन्ते० ॥ यजु०। वा.। सं.। अ. १९। मंत्र। ७५ ॥ ओंअन्नात्परिस्रुतोरसम्० ॥
साम० सं. छ. अ. १ प्र. १ द. ८ मं. ३ ॥ ओंशुक्रन्तेअन्यद्यजतन्ते०॥ अथर्वण० ॥ ओंशुक्रोसिभ्राजोसि० ॥

नियोगः ॥ ॐअन्नात्परिस्रुतोरसम्ब्रह्मणाव्यपिबत्क्षत्रम्पयः सोमम्प्रजापतिः ॥ ऋतेनसत्यमिन्द्रियम्विपानंशुक्रमन्धसऽइन्द्रस्येन्द्रियमिदम्पयोमृतम्मधु ❁ ॥ ॐभूर्भुवःस्वः भोजकटदेशोद्भवभार्गवसगोत्रशुक्रइहागच्छेत्यावाह्यइहतिष्ठेतिस्थापयेत् ॥ ६ ॥ अथशनेः ॥ ॐकृष्णपुष्पाक्षतैः ॥ भगवन्शनैश्चरभास्करतन

यकाश्यपगोत्रसुराष्ट्रदेशेश्वरकज्जलनिभाङ्गकान्तेचतुर्भुजचापतूणीकृतत्राणाभयाङ्कितनीलाम्बरमाल्यानुलेपननीलरत्नभूषणालङ्कृत सर्वाङ्गसमस्तभुवनभीषणामर्षमूर्तेनमस्तेसन्नद्धनीलध्वजपताकोपशोभितेनीलगृध्ररथवाहनेनमेरुंप्रदक्षिणीकुर्वन्नागच्छयमप्रजापतिभ्यांसहपश्चिमदलमध्येकालायसप्रतिमांप्रत्यङ्मुखींचापाकारपीठेऽधितिष्ठपूजार्थंत्वामावाहयामि ॥ ॐशन्नोदेवीरितिदध्यङ्ङाथर्वणऋषिःत्रिष्टुप्छन्दःशंनिर्देवताशन्यावाहनेपूजनेविनियोगः ॥ ॐशन्नोदेवीरभिष्टयऽआपोभवन्तुपीतये ॥

ऋक्०। ओंसमाग्निराग्निभिःकरत्० ॥ यजु०।वा।सं·।अ.। ३६।मं·।१२ ॥ ओंशन्नोदेवीरभिष्टय० ॥ साम सं. छ. अ. १ प्र. १ द. ३ मं. १३ ॥ ओंशन्नोदेवीरभिष्टय० ॥ अथर्वण० ॥ ओंसहस्रबाहुःपुरुषः०॥ * *

शय्योरभिस्रवन्तुनः; ॐभूर्भुवःस्वःसौराष्ट्रदेशोद्भवकाश्यपगोत्रशनैश्चरइहागच्छे

त्यांवाग्रहइहातिष्ठेतिस्थापयेत ॥ ७ ॥ अथराहोः ॥ कृष्णपुष्पाक्षतैः ॥
ॐभगवन्राहोरविसोममर्द्दनसिंहिकानन्दनपैठीनसगोत्रवर्वरदेशेश्वरकालमेघसमद्युते
व्याघ्रवदनचतुर्भुजखड्गचर्म्मधरशूलवराङ्कित कृष्णाम्बरमाल्यानुलेपनगोमेदका
भरणभूषितसर्वाङ्गसौर्यनिधेनमस्तेसन्नद्धकृष्णध्वजपताकोपशोभितेनकृष्णसिंहरथवा
हनेनमेरुंप्रदक्षिणीकुर्वन्नागच्छकालसर्प्पाभ्यांसहपन्ननैर्ऋत्यदलमध्येसीसकप्रतिमांद
क्षिणामुखींसूर्य्याकारपीठेऽधितिष्ठपूजार्थंत्वामावाहयामि ॥ ॐकयानश्चित्रइतिवाम
देवऋषिःगायत्रीच्छदःराहुर्देवताराह्वावाहनेपूजनेविनियोगः ॥ ॐकयानश्चित्रऽ

ऋक०। ओंकयानश्चित्रआभुवदूती० ॥ यजु०। सं.। अ.। ३६। मंत्र। ४॥ ओंकयानश्चित्रऽआभुवदूती०॥
साम० सं.छ. अ. १ प्र. १ द. ८ मं. ५ ओंकयानश्चित्रआभुव०॥अथर्वण०॥ओंराहूराजानन्त्सरातिस्वरम्॥

आ॑भुंवदूतीस॒दावृ॑ध॒;सखा॑ंकया॒शाचिंष्ठयाऽवृता ॥ ॐभूर्भुवःस्वःराठिनामपुरोद्भवपैठीनसगोत्रभोराहोइहागच्छेत्यावाह्येहतिष्ठेतिस्थापयेत् ॥ ८ ॥ अथकेतोः ॥ ऊँधूम्रपुष्पाक्षतैःभगवन्केतोकामरूपजैमिनिगोत्रमध्यदेशेश्वरधूम्रवर्णध्वजाकृतेद्विभुजगदावरदानांकितचित्राम्बरमाल्यानुलेपन वैदूर्यमयाभरणभूषितसर्वाङ्गचित्रशक्तेनमस्तेसन्नद्धचित्रध्वजपताकोपशोभितेनचित्रकपोतवाहनेनमेरुंप्रदाक्षिणीकुर्वन्नागच्छचित्रगुप्तब्रह्मभ्यांसहपञ्चवायव्यदलमध्येकाँस्यप्रतिमान्दक्षिणामुखींध्वजाकारपीठेऽधितिष्ठपूजार्थंत्वामावाहयामि ॥ ॐकेतुङ्कृण्वन्नितिमन्त्रस्यमधुच्छृषिःगायत्रीच्छन्दःकेतुर्देवताकेत्वावाहनेपूजनेविनियोगः ॥ ॐके॒तुङ्कृण्वन्नके॒तवे॒पेशोमर्य्याऽअपे॒

ऋक०। ओंकेतुंकृण्वन्नकेतवे० ॥ यजु०। वा.। अ.। २६। मं. ३७ ॥ ओंकेतुंकृण्वन्नकेतवेपे० ॥ साम० छ. दो. उ. सं. प्र. ३ उ.मं २ ॥ ओंकेतुंकृण्वन्दिवस्परि० ॥ अथर्वण० ॥ ओंयस्तेपृथुस्तनयित्नुः० ॥

शसे ॥ समुषद्भिरजायथाः ॥ ॐभूर्भुवःस्वःअन्तर्वेदिसमुद्भवजैमिनसगोत्रकेतो इहागच्छेत्यावाह्यइहतिष्ठेतिस्थापयेत् ॥ १ ॥ अस्ययजमानस्यसकलाभीष्टसिध्यर्थेसूर्यादयोनवग्रहाःअनेनार्चनेनसुप्रीतावरदाभवन्तु ॥ आयुःकर्त्तारः ॥ क्षेमकर्त्तारः ॥ शुभकर्त्तारोभवन्तु ॥ अथग्रहाणामधिदेवताः ॥ शिवश्शिवागुहोविष्णुर्ब्रह्मेन्द्रयमकालकाः ॥ चित्रगुप्तोथभान्वादेर्दक्षिणेचाधिदेवताः ॥ ॐत्रिलोचनोपेतंपञ्चवक्त्रंवृषारूढङ्कपालशूलखड्गखट्वाङ्गधारिणंचन्द्रमौलिंसदाशिवमादित्याधिदेवंरुद्रमावाहयामि ॥ सूर्यस्यदक्षिणपार्श्वेरुद्रंश्वेतम् ॥ ॐत्र्यम्बकमितिवसिष्ठऋषि

रनुष्टुप्छन्दोरुद्रोदेवताईश्वरस्थापनेपूजनेविनियोगः ॥ ॐत्र्यंम्बकय्यजामहेसुग

ऋक०। ओंत्र्यम्बकय्यजामहेसुगन्धि ॥ यजु०। वा. सं.। अ.। ३। मं.। ६० ॥ ओंत्र्यम्बकय्यजामहे० ॥
साम·॥ सं· छ· अ· १ प्र. १ द. ७ मं. ७॥ ओंआवोराजानमध्वर·॥ अथर्वण.॥ ओंधातादधातुनोरयिमीशानः॥

न्धिम्पुष्टिवर्द्धनम् ॥ उर्व्वारुकमिवबन्धनान्मृत्योर्म्मुक्षीयमामृतात् ॥ इत्यर्द्धर्चे
न ॥ ॐभूर्भुवःस्वःसूर्यस्यदक्षिणेरुद्रायनमः ॥ रुद्रमावाहयामि ॥ १ ॥ ॐअ
क्षसूत्रकमलदर्पणकमण्डलुधारिणीन्त्रिदशपूजितांसोमाधिदेवतामुमामावाहयामि ॥
चन्द्रस्यदक्षिणेउमारक्ता ॥ ओंश्रीश्चतेइतिनारायणऋषिस्त्रिष्टुप्छन्दःउमादेवताउ

ऋक०। ओंगौरीर्मिमायसलिलानि० ॥ यजु०। वा.। सं.। अ.। ३१। मंत्र। २२ ॥ ओंश्रीश्चतेलक्ष्मीश्चप
त्न्या० साम० छं. सं. अ. १ प्र. ५ द. ३ मं. १॥ ओंस्वादोरित्थेविषुवत्ता.॥ अथर्वण० ॥ ओंनक्तञ्जातास्योषधे ॥

मास्थापनेपूजनेविनियोगः ॥ ॐश्रीश्चतेलक्ष्मीश्चपत्न्यावहोरात्रेपार्श्वेनक्षत्राणिरूपमश्विनौव्यात्तम् ॥ इष्ष्णान्निषाणामुम्मंऽइषाणसर्व्वंलोकम्मंऽइषाण ॥ ॐभूर्भुवःस्वःसोमस्यदक्षिणपार्श्वेउमायैनमः । उमामावाहयामि ॥ २ ॥ ॐषरामुखंशिखण्डकविभूषणंरक्ताम्बरमयूरवाहनङ्कुक्कुटघण्टापताकाशक्त्युपेतञ्चतुर्भुजमङ्गारकाधिदेवतांस्कन्दमावाहयामि ॥ भौमस्यदक्षिणेस्कन्दंरक्तं ॥ ॐयदक्रन्दइतिभार्गवयमदग्निदीर्घतमाऋषयस्त्रिष्टुप्छन्दः स्कन्दोदेवतास्कन्दस्थापनेपूजनेविनियोगः ॥ ॐयदक्रन्दःप्प्रथमञ्जायमानऽउद्यन्त्समुद्द्रादुतवापुरीषात् ॥

ऋक्० ॥ ॐकुमारश्चित्पितरंवंद्य. ॥ यजु० । वा० । सं० । अ० । २४ । मं० । १२ ॥ ॐयदक्रन्दःप्रथमञ्जायमा. ॥
साम० ॥ छं० अ० १ प्र० ३ द० ४ मं० २ ॥ कदुप्रचेतसो ॥ अथर्वण० ॥ ॐअग्निरिवमन्योत्विषितः ॥ * *

श्येनस्यपक्षाहरिणस्यबाहूऽउपस्तुत्त्यम्महिजातन्तेऽअर्व्वन् ॥ ॐभूर्भुःस्वःभौमस्यदक्षिणपार्श्वेस्कन्दायनमः । स्कन्दमावाहयामि ॥ ३ ॥ ॐकौमोदकीशाङ्खचक्रोपेतञ्चतुर्भुजंसौम्याधिदेवतांविष्णुमावाहयामि ॥ वुधस्यदक्षिणेविष्णुंकृष्णम् ॥ ॐइदम्विष्णुरितिमन्त्रस्यमेधातिथिऋषिर्गायत्रीच्छन्दः विष्णुर्देवताविष्णुस्थापनेपूजनेविनियोगः ॥ ॐइदम्विष्णुर्विचक्रमेत्रेधानिदधेपदम् ॥ समूढमस्यपांसुरेस्वाहा ॥ ॐभूर्भुवःस्वःवुधस्यदक्षिणपार्श्वेविष्णवेनमःविष्णुमावाहयामि ॥ ४ ॥ ॐपद्मासनस्थञ्जटिलञ्चतुर्मुखमक्षमालास्रुवपुस्तककम

ऋक० ॥ सहस्रशीर्षापुरुषःस० ॥ यजु० । वा· सं· । अ. । ५ । मं· १५ ॥ ओंइदम्विष्णुर्विचक्रमे० ॥ साम· छं· क· १ प्र· ३ द. ३ मं· ६ ॥ ओंइदम्विष्णुर्विचक्रमे० ॥ अथर्वण० ॥ ओं प्रतद्विष्णुस्तवते० ॥

* * *

ण्डलुधारिणङ्कृष्णाजिनवाससंपार्श्वस्थितहंसम्बृहस्पत्याधिदेवंब्रह्माणमावाहयामि ॥
गुरोर्दक्षिणेब्रह्माणंरक्तम् ॥ ॐब्रह्मजज्ञानमितिमन्त्रस्यप्रजापतिर्ऋषिस्त्रिष्टुप्छन्दः
ऋक० ॥ ओंब्रह्मणातेब्रह्मयुजायुन· ॥ यजु· । वा· । सं· । अ. । १३ । मं. ३ ॥ ओंब्रह्मजज्ञानम्प्रथमम् ॥
साम० । छं. सं. अ. १ प्र. ४ द. ३ मं.६ ॥ ओंब्रह्मजज्ञानम्प्रथमम् ॥ अथर्वण. । ओंब्रह्मापरंयुज्यताम्. ॥
ब्रह्मादेवताब्रह्मस्थापनेपूजनेविनियोगः ॥ ओंब्रह्मंजज्ञानम्प्रंथमम्पुरस्ताद्विसीमतः
सुरुचोव्वेनऽआंवः ॥ सबुद्ध्न्या४उपमाऽअस्याव्विष्ठाःसतश्च्चयोनिमसंतश्च्चव्विवंः
ओंभूर्भुवःस्वःगुरोर्दक्षिणेब्रह्मणेनमः ॥ ब्रह्माणमावाहयामि ॥ ५ ॥ ओंचतुर्दन्त
गजारूढंवज्राङ्कुशधरंशचीपतिनानाभरणभूषितंभार्गवाधिदेवतांशक्रमावाहयामि ॥
ओंत्रातारमिन्द्रमित्त्यस्यगर्गऋषिस्त्रिष्टुप्छन्दःइन्द्रोदेवताइन्द्रस्थापनेपूजनेविनियो

गः ॥ ओंत्रातारमिन्द्रमवितारमिन्द्रꣳहवेहवेसुहवꣳशूरमिन्द्रम् ॥ ह्वयामि

ऋक्. । ओंइन्द्रंमिद्देवतातये. ॥ यजु. । वा. । सं. । अ. । २० । मं. । ५० ॥ ओंत्रातारमिन्द्रमवितार. ॥
ओंत्रातारमिन्द्रहयेहेवेसु. ॥ अथर्वण. ॥ ओंयेनेन्द्रायसमभरःपयांसि ॥ * * *

शक्रम्पुरुहूतमिन्द्रꣳस्वस्तिनोमघवाधात्विन्द्रः ॥ ओंभूर्भुवःस्वःशुक्रस्यदक्षि
णपार्श्वेइन्द्रायनमः । इन्द्रमावाहयामि ॥ ६ ॥ ओंइषत्पीनन्दण्डहस्तंरक्तदृ
शंपाशधरंकृष्णवर्णंमहिषारूढंसर्वाभरणभूषितंशनैश्चराधिदेवंयममावाहयामि ॥
शनेर्दक्षिणेयमंकृष्णम् ॥ ओंअसियमइत्यस्यभार्गवजमदग्निर्दीर्घतमाऋषयस्त्रि

ऋक्. । ओंयमायसोमंसुनुत. ॥ यजु, । वा, । सं, । अ, । २६ । मं, १४ ॥ ओंअसियमोऽअस्यादि, ॥ साम. ।
छ- सं, अ. १ प्र. ४ द, ३ मं. ८ ॥ ओंनाकेसुपर्णमुपय. ॥ अथर्वण. ॥ ओंयमोमृत्युरघमानः ॥ * * * *

ष्टुप्छन्दःयमोदेवतायमस्थापनेपूजनेविनियोगः ॥ ओंअसियमोऽअस्यादित्यो
ऽअर्व्वन्नसित्रितोगुह्येनव्व्रुतेन ॥ असिसोमेनसमयाव्विपृक्तऽआहुस्तेत्रीणि
दिविबन्धनानि ॥ ओंभूर्भुवःस्वःशनेर्दक्षिणपार्श्वेयमायनमः ॥ यममावाह
यामि ॥ ७ ॥ ओंकरालवदनन्नित्यभीषणंपाशदण्डधरंसर्पवृश्चिककरोमाणंराहोर
धिदेवङ्कालमावाहयामि ॥ राहोर्द्दक्षिणेकालङ्कृष्णवर्णम् ॥ ओंकार्षिरसी
तिमन्त्रस्यप्रजापतिऋषिरनुष्टुप्छन्दःकालोदेवताकालस्थापनेपूजनेविनियोगः ॥

ऋक,। ओंपरम्मृत्योऽअनुपरेहि, ॥ यजु,। वा,। सं,। अ,। ६। मं, २८ ॥ ओंकार्षिरासिसमुद्रस्यत्वा. ॥
साम.। ओंकदाचनस्तरीरसि सो. छं, अ, १ प्र, ४ द, १ मं, ८ अथर्वण. ॥ ओंयमोदनंप्रथमजाऋतस्य ॥

ओंकार्षिरसिसमुद्रस्यत्वाक्षित्याऽउन्नयामि ॥ समापोऽअद्भिरग्गमतसमोषधीभि

रोषधीः ॥ ओंभूर्भुवःस्वःराहोर्दक्षिणपार्श्वेकालायनमः ॥ कालमावाहयामि॥८॥
उदीच्यवेषधरंसौम्यदर्शनंलेखनीपत्रोपतंद्विभुजङ्केत्वधिदेवञ्चित्रगुप्तमावाहयामि ॥
केतोर्दक्षिणेच्चित्रगुप्तञ्चित्रवर्णम् ॥ ओंइन्धानास्त्वेतिमन्त्रस्यवसिष्ठऋषिःअति

ऋक्. । ओंसचित्रचित्रंचितयन्त, ॥ यजु, । वा. । सं, । अ. ॥ ३ मं । १८ ॥ ओंइन्धानास्त्वाशतꣳहि, ॥
साम० छं, अ, १ प्र, १ द, ७ सं, २ ॥ ओंचित्रइच्छिशोत ॥ अथर्वण० ॥ ओंआरोहञ्छुक्रबृहतीरतन्द्रः ॥

जगतीच्छन्दःचित्रगुप्तोदेवताचित्रगुप्तस्थापनेपूजनेविनियोगः ॥ ओंइन्धाना
स्त्वाश॒तꣳहिमाद्यु॒मन्त॒ꣳसमिधीमहि ॥ व्वयंस्वन्तोव्वय॒स्कृत॒ꣳसहस्वन्तः
सह॒स्कृतम् ॥ अग्नेसपत्नदम्भनम॒दब्धासो॒ऽअदाभ्यम् ॥ चित्रावसो
स्व॒स्तितेपा॒रमशीय ॥ ॐभूर्भुवःस्वःकेतोर्दक्षिणेचित्रगुप्तायनमः ॥ चित्रगु

न्तमावाहयामि ॥ ९ ॥ इत्यधिदेवताः ॥ ॐअस्ययजमानस्यसकलाभीष्टसि
ध्यर्थेईश्वराद्यधिदेवताअनेनार्चनेनसुप्रीतावरदाभवन्तु ॥ आयुःअर्त्तारः ॥ शुभ
कर्त्तारः ॥ कल्याणकर्त्तारोभवन्तु ॥ अथप्रत्यधिदेवताः ॥ अग्निरापोधरा
विष्णुःशक्रेन्द्रारायौप्रजापतिः ॥ पन्नगोब्रह्मणोवामेक्रमात्प्रत्यधिदेवताः ॥ १ ॥
ॐपिङ्गभ्रुश्मश्रुकेशांपिङ्गाक्षंत्रिनयनमरुणवर्णाङ्गंछागस्थंसाक्षसूत्रंसप्तार्चिषंशक्तिधरं

ऋक. । ॐअग्निन्दूतम्वृणीमहे. ॥ यजु० । वा० । सं० । अ० । २२ म० । १७ ॥ ॐकग्निन्दूतम्पुरोदधे० ॥ साम० सं० छं० प्र० १ द० १ मं० ३ ॥ ॐअग्निन्दूतम्वृणीमहे० अथर्वण० ॥ ॐप्रतीदिगग्निरधिपतिः ॥ * *

वरदहस्तद्वयमादित्यप्रत्यधिदेवमग्निमावाहयामि ॥ अग्निन्दूतमितिमन्त्रस्यवि
रूपाक्षऋषिर्गायत्रीच्छन्दःअग्निर्देवताअग्न्यावाहनेपूजनेविनियोगः ॥ ॐअग्नि

न्दूतम्पुरोदधेहव्यवाहमुपब्रुवे ॥ देवाँ२॥ऽआसादयादिह ॥ ॐभूर्भुवःस्वःसूर्यस्यवामपार्श्वेरक्तवर्णमग्निमावाहयामि ॥ १ ॥ ॐस्त्रीरूपधारिणीःमुक्ताभरणभूषिताःसोमप्रत्यधिदेवताःअपःआवाहयामि ॥ देवीरापइतिमन्त्रस्यदेवाऋषयः

ऋक्० । ओंअप्सुमेसोमोअ० ॥ यजु० । वा, । सं, । अ, । ६ । मंत्र । २७ ॥ ओंदेवीरापोऽअपान्नपात्० ॥
साम० ॥ ओंअप्स्वग्नेसधिष्ठवसौ० ॥ अथर्वण० ॥ ओंशन्नोदेवीरभिष्टय० ॥ * * * * *

देवीबृहतीच्छन्दःआपोदेवताअपामावाहनेपूजनेविनियोगः ॥ ॐदेवीरापोऽअपान्नपाद्योवऽऊर्मिर्हविष्यऽइन्द्रियावान्मदिन्तमं ॥ तन्देवेभ्योदेवत्रादत्तशुक्रपेभ्योयेषाम्भागस्थस्वाहा ॥ ॐभूर्भुवःस्वःसोमस्यवामपार्श्वेश्वेतवर्णाअपआवाहयामि ॥ २ ॥ ॐशुक्लवर्णान्दिव्याभरणभूषिताश्चतुर्भुजांसाम्यवपुषञ्चराडां

शुसदृशाम्वरांरत्नपात्रसस्यपात्रौषाधिपात्रपद्मोपेतकराञ्चतुर्दिक्नागभूषितापृष्ठगता
मङ्गारकप्रत्याधिदेवतांभूमिमावाहयामि ॥ ॐस्योनापृथिवीतिमन्त्रस्यमेधातिथि

ऋक॰। ओंस्योनापृथिवीनोभव॰ ॥ यजु०। वा०। सं॰। अ॰। ३६। मं॰। १३॥ ओंस्योनापृथिविनोभवा॰॥
साम॰ ॥ स्योनापृथिविनोभव ॥ अथवर्ण॰ ॥ ओंभूमेमातर्निधेहिमा॰ ॥

* * * *

ऋषिर्गायत्रीच्छन्दः पृथिवीदेवताभूम्यावाहनेपूजनेविनियोगः ॥ ॐस्योनापृथिवि
नोभवान्नृक्षरानिवेशनी ॥ यच्छानंशर्म्मसप्रथाः ॥ ॐभूर्भुवःस्वःभौमस्यवाम
पार्श्वेशुक्लवर्णभूम्यैनमःभूमिमावाहयामि ॥ ३ ॥ ॐकौमोदकीशङ्खपद्मचक्रोपे
तञ्चतुर्भुजंसौम्यप्रत्याधिदेवतांविष्णुमावाहयामि ॥ ॐइदम्विष्णुरितिमन्त्रस्यमे

ऋक॰। ओंइदम्बिष्णुर्विचक्रमे० ॥ यजु०। वा०। सं०। अ०। ५। मं०। १५॥ ओंइदम्बिष्णुर्विचक्रमे०॥

साम० छं० सं० अ० १ प्र० ३ द० ३ मं० ६ ।। ओंइदम्बिष्णुर्विचक्रमे० ।। अथर्वण० ।। ओंप्रतद्विष्णुस्तवते० ।।

धातिथिऋषिर्गायत्रीच्छन्दःविष्णुर्देवताविष्ण्वावाहनेपूजनेविनियोगः ।। ॐइ॒द
म्बिष्णु॒र्विचक्रमेत्रे॒धानिदधेप॒दम् ।। समूढमस्यपाꣳसु॒रेस्वहा ।। ॐभूर्भु
वःस्वःबुधस्यवामपार्श्वेकृष्णवर्णविष्णुमावाहयामि ।। ४ ।। ॐचतु॒र्दन्तगजारूढव
ज्रांकुशशक्तिधरंशचीपतिन्नानाभरणभूषितंबृहस्पतिप्रत्यधिदेवतामिन्द्रमावाहयामि ।।
ॐसजोषाइन्द्रेतिमन्त्रस्यविश्वामित्रऋषिस्त्रिष्टुप्छन्दःइन्द्रोदेवताइन्द्रावाहनेपूजने

ऋक०। ओंइन्द्रश्रेष्ठानिद्रविण० ।। यजु० । वा० । सं० । अ० । ७ । मं० । ३७ ।। ओंसजोषाऽइन्द्रसगणो०

साम० छं० सं० अ० १ प्र० ४ द० ५ मं० २ ।। त्रातारमिन्द्रमवितार ।। अथर्वण० ।। ओंइन्द्रत्वावृषभम्० ।।

विनियोगः ।। ॐस॒जोषाऽइन्द्र॒सगणोम॒रुद्भिःसोमम्पिबवृत्र॒हाशूरव्वि॒द्वान् ।।

जहिशत्रूँ३ऽरपमृधोनुदस्वाथाभयङ्कृणुहिव्विश्वतोनः ॥ उपयमगृहीतोसीन्द्रा
यत्त्वामरुत्वतऽएषतेयोनिरिन्द्रायत्त्वामरुत्वते ॥ ॐभूर्भुवःस्वःबृहस्पतिवामपार्श्वे
पीतवर्णेन्द्राय नमःइन्द्रमावाहयामि ॥ ५ ॥ ॐसन्तानमञ्जरीवरदानधराद्विभु
जांशुक्रप्रत्यधिदेवतामिन्द्राणीमावाहयामि ॥ ॐअदित्त्यैरास्नेतिमन्त्रस्यदध्यङ्गा

ऋक०। ओंइन्द्राणीमासुनारीषु०॥यजु०। वा०। सं०। अ०। ३८। मंत्र । ३॥ ओंअदित्यैरास्नासीन्द्राण्या० ४
साम०॥ छन्दो० उ० सं० प्र० २ मं० ६ ॥ ओंइन्द्रअग्नानसोवृ०॥अथर्वण० ओंप्रेतपाणौस्फुरन्तम्० * *

थर्वणऋषिर्यजुश्छन्दइन्द्राणीदेवताइन्द्रारायावाहनेपूजनेविनियोगः ॥ ॐअदि
त्यैरास्नासीन्द्राराया ऽउष्णीषः । पूषासिघर्म्मायदीष्व ॥ ॐभूर्भुवःस्वः शुक्र
स्यवामपार्श्वेपीतवर्णेन्द्राण्यैनमः ॥ इन्द्राणीमावाहयामि ॥ ६ ॥ ॐयज्ञो

पवीतिनंहंसस्थमेकवक्त्रमक्षमालास्रुवपुस्तककमण्डलुसहितञ्चतुर्भुजंशनैश्चरप्रत्यधिदेवंप्रजापतिमावाहयामि ॥ ॐप्रजापतेइतिमन्त्रस्याहिरण्यगर्भऋषिस्त्रिष्टुप्छन्दःप्रजापतिर्देवताप्रजापत्यावाहनेपूजनेविनियोगः ॥ ॐप्रजापतेनत्वदेतान्यन्योऽव्विश्श्वारूपाणिपरिताबभूव ॥ यत्कामास्तेजुहुमस्तन्नोऽअस्त्वयममुष्यपितासावस्यपिताऽव्वयꣳस्यामपतयोरयीणाꣳस्वाहा ॥ रुद्द्रयत्तेक्रिविपरन्नामतस्मिन्हुतमस्यमेष्टमसिस्वाहा ॥ ॐभूर्भुवःस्वःशनेर्वामपार्श्वेश्वेतवर्णप्रजापतयेनमः प्रजापतिमावाहयामि ॥ ७ ॥ ॐअक्षसूत्रधरान्कुण्डलाकारपुच्छयुतानेक

ऋक०। ओंप्रजापतेनत्वदेताम् ॥ यजु०। वा०। सं०। अ०। ११। मं०। २१ ॥ ओंप्रजापतेनत्वदेताम्०॥ साम०॥ ओंपजापतेनत्वदेताम्०॥ अथर्वण०॥ ओंप्रजापतेनत्वदेताम्०॥

* * *

भोगान्स्त्रीभोगान्भीषणाकारान्राहुप्रत्यधिदेवतान्सर्पानावाहयामि । ॐनमोस्तु
सर्प्पेभ्यइतिमन्त्रस्यप्रजापतिर्ऋषिरनुष्टुप्छन्दःसर्प्पोदेवतासर्प्पावाहनेपूजनेविनियो
ऋक०। ओंआयङ्गौःपृश्निरक्रमी०॥ यजु० वा०। सं०। अ०।१३।मं०।६॥ओंनमोस्तुसर्पेभ्योयेकेच०॥
साम० अरणी० सं० अ० १ द० ४ मं० ४ ओंआयंगौःपृश्निरक्र ॥ अथर्वण० ॥ओंसर्पानुसर्पपुनर्वोयन्तु०॥
गः ॥ ॐनमोस्तुसर्प्पेभ्योयेकेचपृथिवीमनु ॥ येऽअन्तरिक्षेयेदिविते
भ्यःसर्प्पेभ्योनमः ॐभूर्भुवःस्वःराहोर्वामपार्श्वेकृष्णवर्णसर्पेभ्योनमःसर्प्पानावाहया
मि ॥ ८ ॥ ॐपद्मासनस्थजटिलञ्चतुर्मुखमक्षमालास्त्रुवपुस्तकमण्डलुधरकृष्णा
जिनवाससंपार्श्वस्थितहंसकेतुप्रत्यधिदेवंब्रह्माणमावाहयामि ॥ ॐब्रह्मजज्ञान
मितिमन्त्रस्यप्रजापतिर्ऋषिस्त्रिष्टुप्छन्दःब्रह्मादेवताब्रह्मावाहनेपूजनेविनियोगः ॥

ॐम्ब्रह्मंजज्ञा॒नम्प्रथ॒मम्पु॒रस्ता॒द्विसीम॒तःसु॒रुचोव्वे॒नऽआवः ❁ ● ❁ ॥
ऋक॰। ओंब्रह्मजज्ञानम्प्रथमम्॰ ॥ यजु॰। वा॰। सं॰। अ॰। १३। मं॰। ३ ॥ ओंब्रह्मजज्ञानम्प्रथमम्॰ ॥
साम॰ छन्दो॰ उ॰ सं॰ प्र॰ १ मं॰ ६ आत्वाब्रह्मयुजाहरी॰ अथर्वण॰ ओंब्रह्मजज्ञानम्प्रथमम्॰ ॥ * *
सबु॒ध्न्या॒ऽउप॒माऽअस्य॒व्विष्ठाःस॒तश्च॒योनि॒मसतश्च॒व्विवः ॥ ॐभूर्भुवःस्वः
केतोर्वामपार्श्वेश्वेतवर्णब्रह्मणेनमःब्रह्माणमावाहयामि ॥ ९ ॥ इतिप्रत्यधिदेवता॥
अस्ययजमानस्याभीष्टसिध्यर्थेअग्न्यादिप्रत्यधिदेवताःसुप्रीतावरदाभवन्तु ॥ आयुः
कर्त्तारः ॥ शुभकर्त्तारः ॥ कल्याणकर्त्तारोभवन्तु ॥ अथपञ्चलोकपालाः ॥
यथा ॥ गणेशश्चाम्बिकावायुराकाशश्चाश्विनौतथा ॥ ग्रहाणामुत्तरेपञ्चलोकपालाःप्रकीर्तिताः ॥ एतेग्रहेभ्यउत्तरतस्थाप्याः ॥ वादक्षिणपश्चिमवायव्योत्तरपूर्वे

यथाक्रमम् ॥ प्रणवव्याहृतिपूर्वकं ॥ त्रिनेत्रङ्गजाननन्नागयज्ञोपवीतिनञ्चन्द्र
धरन्दन्ताक्षमालापरशुमोदकोपेतञ्चतुर्भुजांविनायकमावाहयामि ॥ ॐगणानान्त्वे
तिवसुऋषिर्गायत्रीच्छन्दःगणपतिर्देवतागणपतिस्थापनेपूजनेविनियोगः ॥ ॐग॒

ऋक०। ओंआतूनऽइन्द्रक्षुमन्ताश्चित्रं० ॥ यजु०।वा०।सं०। अ०।२३।मं०।१४। ओंगणानान्त्वागणप०
साम० म० छं० सं० अ० १ प्र० २ द० ७ मं० ३ ॥ ओंआतूनइन्द्रक्षुमन्तश्चित्रं०॥ अथर्वण० ओंनिर्लक्ष्म्यंललाम्यम् ॥

णानांन्त्वाग॒णपंतिछंहवामहेप्प्रि॒याणांन्त्वाप्प्रि॒यपंतिछंहवामहेनि॒धीनन्त्वांनिधि॒पति
छंहवामहेवसोमम ॥ आहमंजानिगर्ब्भ॒धमात्वमंजासिगर्ब्भ॒धम् ॥ ॐभूर्भुवः
स्वःरवेरुत्तरतोगणपतयेनमः । गणपतिमावाहयामि ॥ १ ॥ ततउत्तरतः ॥
ॐशक्तिवाणशूलखङ्गचक्रचन्द्रबिम्बखेटकपालपरशुकण्टकोपेतदशभुजांसिंहारूढांदु

गौरव्यदैत्यासुरहारिणींदुर्गांमावाहयामि ॥ ॐअम्बेअम्बिकेइतिमन्त्रस्यप्रजापति

ऋक० । ओंजातवेदसेसुनवामम० ॥ यजु० । वा. । सं. । अ. । २३ । मं. । १८ ॥ ओंअम्बेऽअम्बिकेम्बालिके० ॥

साम० छा० उ० सं० प्र० ५ मं० ४ अ० ३ ओंमदच्युत्सेतिसादने० ॥ अथर्वण० ओंनक्तञ्जातास्योषधे० ॥

ऋषिरनुष्टुप्छन्दःदुर्गादेवतादुर्गास्थापनेपूजनेविनियोगः ॥ ॐअम्बे॒ऽअम्बि॒क
म्बा॑लिके॒नमा॑नयति॒कश्च॒न ॥ सस॑स्त्यश्व॒कःसुभ॑द्रिकाङ्काम्पीलवा॒सिनीम् ॥
इत्यर्द्धर्चम् ॥ ॐभूर्भुवःस्वःदुर्गायैनमः ॥ दुर्गामावाहयामि ॥ २ ॥
ॐधावद्धरणिपृष्ठगतंध्वजबरदानधारिणंधूम्रबर्णंवायुमावाहयामि ॥ ॐआनोनि
युद्भिरितिमन्त्रस्यबसिष्ठऋषिस्त्रिष्टुप्छन्दःवायुर्देवतावाय्वावाहनेपूजनेविनियोगः ॥
ॐआनो॑नि॒युद्भिः॑श॒तिनी॑भिरध्व॒रꣳस॑ह॒स्रिणी॑भि॒रूप॑याहिय॒ज्ञम् ॥ बायो॑ऽअ॒स्मिन

ऋक० ओंक्रणाशिशुर्म्महो० ॥ यजु० । वा० । सं० । अ० । २७ । मं० २८ ॥ ओंआनोनियुद्भिःशतिनी० ॥ साम० छं० सं० अ० १ प्र० २ द० ६ मं० १०॥ ओंवातआवातुभेषजम्० ॥ अथर्वण० ओंवायोःसवितुर्विदथानि ॥

न्त्सर्वनेमादयस्वयू॒यम्पांतस्स्व॒स्तिभि॒ःसदांनः ॥ ॐभूर्भुवःस्वःवायवेनमःवायुमावाहयामि ॥ ॐनीलोत्पलाभन्नीलांवरधारिणञ्चन्द्राङ्कोपेतान्द्विभुजञ्ध्वेटमाकाशमावाहयामि ॥ ॐऊद्र्ध्वाअस्यसमिधइतिमन्त्रस्यप्र॒जापतिर्ऋषिर्विराट्छन्दःआकाशोदेवताआकाशस्थापनेपूजनेविनियोगः ॥ ॐऊ॒द्र्ध्वाऽअंस्यस॒मिधोंभवन्त्यू॒

ऋक० । ओंआदित्प्रत्नस्यरेतसे० ॥ यजु० । वा० । सं० । अ० । २७ । मं० । ११ ॥ ओंऊर्ध्वाऽअस्यसमिधो० ॥ साम० । छं० । सं० । अ० । १ । प्र० । १ । दशति । ६ । म० । ३ ॥ आऊद्र्ध्वंऊषुणऊतयेति० ॥ अथर्वण० ॥ ओंश्राम्यन्तःपचतोविद्धि० ॥

* * * * * * * * *

ऊर्ध्वाशुक्क्राशोचीꣳष्यग्ने ॥ द्युमत्तमासुप्प्रतीकस्यसूनोः ॥ ॐभूर्भुवः स्वःआकाशायनमः । आकाशमावाहयामि ॥ ४ ॥ ॐप्रत्येकमौषधिपुस्तकोपेतदक्षिणवामहस्तावन्योन्यसंयुक्तदेहावेकस्यदक्षिणपार्श्वेपरस्यवामपार्श्वेरत्नभाण्डवरशुक्लाम्बरधारीनारीयुग्मोपेतौदेवौभिषजावश्विनावावाहयामि ॥ ॐयावाङ्कशेतिमन्त्रस्यमेधाऋषिर्गायत्रीच्छन्दः अश्विनौदेवतेअश्विनोःस्थापनेपूजनेविनियोगः

ऋक०। ओंअश्विनावर्त्तिरस्म० ॥ यजु०। वा०। स०। अ०। ७। मं०। ११ ॥ ओंयावाङ्कशामधुमत्यश्विना ॥ साम० छांदो० उ० सं० प्र० १ मं० ९ ॥ ओंअश्विनावर्त्तिरस्म० ॥ अथर्वण० ओंसश्चेन्नपाथेअश्विना ॥

ॐयावाङ्कशामधुमत्यश्विनासूनृतावती ॥ तयायज्ञम्मिमिक्षतम् ॥ ॐभूर्भुवःस्वःअश्विनाविहागच्छतोमिहतिष्ठताम् ॥ ५ ॥ इतिपञ्चलोकपालवाहनपूज

ने ॥ ॐअस्ययजमानस्याभीष्टसिध्यर्थंगणेशादिपञ्चलोकपालदेवताअर्चनेनसुप्रीतावरदाभवन्तु ॥ ॐआयुःकर्त्तारः ॥ कल्याणकर्त्तारोभवन्तु ॥ अथ इन्द्रादिदशदिकपालावाहनम् ॥ ॐस्वर्णवर्णंसहस्राक्षमैरावतबाहनंबज्रपाणिंशचीप्रियमिन्द्रमावाहयामि ॥ ॐत्रातारमिन्द्रमवितारमिन्द्रꣳहवेहवेसुहवꣳशूरमिन्द्रम् ॥ ह्वयामिशक्रम्पुरुहूतमिन्द्रꣳस्वस्तिनोमघवाधात्विन्द्रः ॥ ॐभूर्भुवःस्वःपूर्वेइन्द्रायनमः ॥ इन्द्रमावाहयामि ॥ १ ॥ आग्नेये ॥ ॐअग्निमरुणवर्णंत्रिनेत्रंसाक्षसूत्रंसप्तार्चिषंशक्तिधरंवरदहस्तद्वययुग्ममावाहयामि ❀ ॥

ऋक०। ओंइन्द्रोविश्वतस्परी० ॥ यजु०। वा०। स०। अ०। २०। मं०। ५ ॥ ओंत्रातारमिन्द्रमवितार०॥
साम०। छन्दो० उ० सं० प्र० २ मं ८ ओंइन्द्रमिद्गाथिनो०॥ अथर्वण० ओंइन्द्रेमंप्रतरङ्कृधि०॥

ऋक०। ओंअग्निमीडेपुरोहितम्० ॥ यजु०। वा०। सं०। अ०। २२। मं०। १७ ॥ ओंअग्निन्दूतम्पुरोदधे० ॥
साम०। छ०। स०। प्र०। १। अ०। १। दश०। ६ मं०। ६ ॥ ओंअयमग्निःसुवीर्यस्येशेहि० ॥
अथर्वण० ॥ ओंयेपुरस्ताज्जुह्वतिजातवेदः ॥

* * * * * * *

ॐअग्निन्दूतम्पुरोदधेहव्यवाहमुपब्रुवे ॥ देवाँ२ ॥ऽ आसादयादिह ॥ २ ॥ ॐभूर्भुवःस्वःअग्नयेनमः । अग्निमावाहयामि ॥ याम्ये ॥ रक्तवर्णदण्डधरंपाशहस्तंमहिषवाहनंस्वाहाप्रियंयममावाहयामि ॥ ॐयमायत्वामखायत्वासूर्यस्यत्वातपं

ऋक०। ओंयमायसोमंसुनुत० ॥ यजु०। वा.। सं.। अ.। ३७। मं.। ११ ॥ ओंयमायत्वामखायत्वा० ॥
साम० छं. सं. अ. १ प्र. ४ द. ३ मं. ८ ॥ ओंनाकेसुपर्णमुपयत्पतन्तम् अथर्वण. ओंयेदक्षिणतःजुह्वति० ॥

से ॥ देवस्त्वांसवितामद्ध्वानक्तुपृथिव्याःसꣳस्पृशस्पाहि ॥ अर्चिरसिशोचिरं

सितपोसि ॥ ३ ॥ ॐभूर्भुवःस्वःयमायनमः ॥ यममावाहयामि ॥ निर्ऋतौ
नीलवर्णंखड्गचर्मधरमूर्ध्वकेशंनर वाहंनकीलकाप्रियंनिर्ऋतिमावाहयामि ॥ ॐअ

ऋक०। ओंमूषूण:परापरो० ॥ यजु०। वा.। सं.। अ.। १२। मं.। ६२ ॥ ओंअसुन्वन्तमयज०॥ साम
छं. सं. अ. १ प्र. ५ द. १ मं. ६ ओंवित्थाहिनिर्ऋतीनाम् ॥ अथर्वण० ओंअभितान्निर्ऋतीर्धनां० ॥

सुन्न्वन्तमयंजमानमिच्छस्स्तेनस्येत्त्यामन्न्विहितस्करस्य ॥ अन्न्यमस्म्मदिं
च्छसातंऽइत्त्यानमोदेविनिर्ऋतेतुभ्यंमस्तु ॥ ४ ॥ ॐभूर्भुवःस्वःनिर्ऋतयेनमः
निर्ऋतिमावाहयामि ॥ पश्चिमेवरुणं ॥ ॐरक्तभूषणंनागपाशधरंमकरवाहनं
पद्मिनीप्रियंसुवर्णवर्णंवरुणमावाहयामि ॥ ॐवरुणस्योत्तम्भनमसिव्वरुणस्यस्क

ऋक०। ओंउदुत्तमम्मुमुग्धिन० ॥ यजु०। वा.। सं.। अ.। ४। म.। ३६ ॥ ओंवरुणस्योत्तम्भनम्० ॥

साम० छन्दो. उ. सं. प्र. २ मं. ७ ओंमित्रंवयँहवामहे । अथर्वण० ॥ ओंयेपश्चाज्जुहतिजातवे० ॥

म्भसर्ज्जनीस्त्थोव्वरुणस्यऽऋतसदंन्यसिव्वरुणस्यऽऋतसदनमसिव्वरुणस्यऽऋतसदनमासीद ॥ ५ ॥ ॐभूर्भुवःस्वःवरुणायनमः । अपाम्पतिंवरुणमावाहयामि ॥ अथवायव्येवायुं ॥ ॐधावद्धरणिपृष्ठगतन्ध्वजवरदानधारिणन्धूम्रवर्णंवायुमावाहयामि ॥ ॐव्वातोवामनोवांगन्धर्व्वाःसप्तविंशतिः ॥ तेऽअग्ग्रेश्श्वमयुञ्जन्त्तेऽअस्मिञ्जवमादधुः ॥ ६ ॥ ॐभूर्भुवःस्वःवायवेनमः । वायुमावाहया

ऋक्० । ओंतववायवृतस्पतेत्त्वष्टु० ॥ यजु० । वा. । सं. । ९ । म. । ७ ॥ ओंवातोवामनोवागन्ध० साम० । छं. सं. अ. १ प्र. २ द. ८ मं. १० ॥ ओंवातआवातुभेषजम् ॥ अथर्वण० ओंयेअन्तरिक्षाज्जुहति जातवेदः ॥

* * * * * * * * * * *

मि ॥ उत्तरे ॥ कुबेरं ॥ ॐस्वर्णवर्णन्निधीश्वरङ्कुन्तपाणिमश्ववाहनञ्छत्रिणी
प्रियङ्कुबेरमावाहयामि ॥ ॐकुविदङ्गयवमन्तोयवञ्चिद्यथादान्त्यनुपूर्वंवियूय ॥
ऋक्० ओंत्वन्नःसोमविश्वतः० ॥ यजु० । वा. । सं. । अ. । १० । मं. । ३२ ॥ ओंकुविदङ्गयवमन्तोयवंचि
साम. छं. सं. अ. । प्र. २ द. १० मं. १ ओंसोमंराजानंवरुणमग्नि० । अथर्वण. ओंयउत्तरतःह्वातिजातवेदः॥
इहेहैषाङ्कृणुहिभोजनानियेबर्हिषोनमउक्तिंयजन्ति ॥ ७ ॥ ॐभूर्भुवःस्वः
कुबेरायनमः । कुबेरमावाहयामि ॥ ईशानेरुद्रम् ॥ शुद्धस्फटिकवर्णंवरदाभयशू
लाक्षसूत्रधरंवृषवाहनङ्गौरीप्रियमीशानमावाहयामि ॥ ॐईशावास्यमिदंसर्वं
ऋक. । ओंकद्रुद्रायप्रचेतसेमीढुष्ट .॥ यजु० । वा. । सं. । अ. । ४० । मं. । १ ॥ ओंईशावास्यमिदंसर्वम् ॥
साम० छं. सं. अ. १ प्र. ३ द. ५ म. १ ओंअभित्वाशूरनोनुमो. ॥ अथर्वण. ओंअभित्वाशूरनोनुमोः ॥

यत्किञ्च॒जग॑त्यां॒जग॑त् ॥ तेन॑त्य॒क्तेन॑भुञ्जीथा॒मागृ॑धः॒कस्य॑स्वि॒द्धन॑म् ॥ ८ ॥
ॐभूर्भुवःस्वःरुद्रायनमःरुद्रमावाहयामि ॥ इन्द्रेशानयोर्मध्येब्रह्माणं ॥ ॐपद्मासन
स्थञ्जटिलञ्चतुर्मुखमक्षमालास्रुवपुस्तककमण्डलुधरङ्कृष्णाजिनवाससंपार्श्वस्थितहं
संब्रह्माणमावाहयामि ❁ ❁ ॥ ❁ ❁ ओंब्रह्म॑जज्ञा॒नम्प्र॑थ॒मम्पु॒रस्ता॒द्विसी॑

ऋक० । ओंब्रह्मणातेब्रह्मयुजा० ॥ यजु० । वा. । सं. । अ. । १३ । मं. । ३ ॥ ओंब्रह्मजज्ञानम्प्रथमम्० ॥
साम० छंदो. उ. सं. प्र. १ मं. ६ आत्वाब्रह्मयुजाहरी० अथर्वण० ओंयेदिशामन्तर्देशेभ्यः ॥

म॒तःसु॒रुचो॑वे॒नआ॑वः ॥ सबु॒ध्न्या॑उप॒माअ॑स्यवि॒ष्ठाःस॒तश्च॒योनि॒मस॑तश्च॒
विवः॑ ॥ ९ ॥ ओंभूर्भुवःस्वःब्रह्मणेनमः । ब्रह्माणमावाहयामि ॥ पश्चिमनि
र्ऋतिमध्येअनन्तम् ॥ अक्षसूत्रधरान्कुण्डलाकारान्पुच्छयुक्तानेकभोगान्स्त्री

भोगान्भीषणाकारान्सर्प्पानावाहयामि ॥ ओंनमोस्तुसर्प्पेब्भ्योयेकेचपृथिवीम्

ऋक्० । ओंआयंगौःपृश्निरक्रमी० ॥ यजु० । वा. । सं. । अ. । १३ । मं. ६ ॥ ओंनमोस्तुसर्प्पेभ्योयेकेच.
साम० अर. सं. अ. १ द. ४ मं. ४ ओंआयंगौःपृश्निरक्र० अथर्वण० ओंअनन्ताम्विततम्पुरुत्रा० ।

नु ॥ येऽअन्तरिक्षेयेदिवितेब्भ्यःसर्प्पेब्भ्योनमः ॥ १८ ॥ ओंभूर्भुवःस्वःअनन्तायनमः । अनन्तमावाहयामि ॥ इतिइन्द्रादिदशदिक्पालावाहनम्पूजनम् ॥ अस्ययजमानस्याभीष्टसिध्यर्थेइन्द्रादिदशदिक्पालदेवताअनेनार्च्चनेनसुप्रीतावरदाभवन्तु ॥ आयुःकर्त्तारः ॥ शुभकर्त्तारः ॥ कल्याणकर्त्तारोभवन्तु ॥ इतिअयुतनवग्रहमखपूजनप्रकारः ॥ अथलक्षनवग्रहमखविधिर्लिख्यते ॥ ततःऋग्वेदादिचतुर्वेदानामावाहनं ॥ ॐअग्निमीडेपुरोहितंयज्ञस्यदेवमृत्विजम् ॥ होतारंरत्नधात

मम् ॥ १ ॥ ॐभूर्भुवःस्वःईशानेऋग्वेदायनमः । ऋग्वेदमावाहयामि ॥
ॐइ॒षेत्वो॒र्ज्जेत्त्वावा॒यवस्स्थदे॒वोवः÷ सवि॒ताप्रार्प्पयतु॒श्रेष्ठतमाय॒कर्म्मण॒ऽआप्प्यायं
द्ध्वमग्घ्न्या॒ऽइन्द्रायभा॒गम्प्रजावतीरनमी॒वाऽअय॒क्ष्मामावस्ते॒नऽईशत॒माघशꣳसो
द्ध्रु॒वाऽअ॒स्मिन्गोपतौस्यातव॒ह्वीर्य्यजमानस्यप॒शून्न्पाहि ॥ २ ॥ सं.अ. १ मं. ॥ १॥
ॐभूर्भुवःस्वःआग्नेयकोणेयजुर्वेदायनमः ❁ ॥ ❁ यजुर्वेदमावाहयामि ॥
ॐअग्नऽआयाहिवीतयेगृणानोहव्यदातये ॥ निहोतासत्सिबर्हिषी ॥ ३ ॥
ॐभूर्भुवःस्वःनैर्ऋत्यकोणेसामवेदायनमः । सामवेदमावाहयामि ॥ ॐशन्नोदे॒वी
र॒भिष्टय॒ऽआपोभवन्तुपी॒तये ॥ शंय्योर॒भिस्रवन्तुनः ॥ ॐभूर्भुवःस्वःवायव्यकोणे
अथर्ववेदायनमः । अथर्ववेदमावाहयामि ॥ ४ ॥ अथआश्विन्याद्यष्टाविंशति

नक्षत्राणामावाहनंपूजनञ्च ॥ तत्रअश्विन्यादिसप्तनक्षत्रदेवताःपूर्वेंपूजनीयाः ॥ ॐ
मद्येहेत्यादि० अस्ययजमानस्यायुःकामार्थंपुष्टिकामार्थंयोगक्षेमार्थंसकलबाधोपशम
नार्थंसप्रासादविष्णुमूर्तौस्थिरप्रतिष्ठाकर्म्माङ्गभूताश्विन्याद्यष्टाविंशतिनक्षत्रदेवताना
मावाहनंपूजनञ्चकरिष्ये ॥ ॐअश्विनातेजसाचक्षुःप्प्राणेनसरस्वतीव्वीर्य्यम् ॥
व्वाचेन्द्रोबलेनेन्द्रायदधुरिन्द्रियम् ॥ १ ॥ सं० । अ० । २० । मं० । ८० ॥
ॐभूर्भु०अश्विनीकुमारदेवतायैअश्विन्यैनमः अश्विनीमावाहयामिस्थापयामिपूज
यामि ॥ ॐयमायत्वामखायत्वासूर्य्यस्यत्वातपसे देवस्त्वासवितामद्ध्वान
क्तुपृथिव्व्याःसᳬस्पृशस्पाहि ॥ अर्च्चिरसिशोचिरसितपोसि ॥ २ ॥ सं । अ ।
३७ । मं० ११ । ॐभू०स्वः यमदेवतायैभरण्यैनमः भरणीमा० ॥ ॐअग्निन्दूतम्पु

रोदंधेहव्व्यवाहमुपब्रुवे ॥ देवाँ २॥ ऽआसादयादिह । ३ । अ० । २२ । मं०
१७ ॥ ॐभू०स्वःअग्निदेवतायैकृत्तिकायैनमःकृत्तिकामा० ॥ ॐब्रह्मजज्ञानम्प्रथ
मम्पुरस्ताद्विसीमतःसुरुचोव्वेनऽआवः॥सबुध्न्याऽउपमाऽअस्यविष्ठाःसतश्चयोनि
मसतश्चव्विवः॥ ४ ॥ ओंभूर्भु० स्वःब्रह्मदेवतायैरोहिण्यैनमः । रोहिणीमा० ॥
ओंसोमोधेनु छं सोमोऽअर्व्वन्तमाशुछंसोमोव्वीरङ्कर्म्मण्यन्ददाति ॥ सादन्न्यंव्विद
त्थ्यंसभेयम्पितृश्रवणंय्योददासदस्मै ॥ ५ ॥ सं. । अ. । ३४ । मं । २१ ।
ॐभू० चन्द्रदेवतायैमृगशिरसेनमः । मृगशिरसामा० ॥ ॐनमस्तेरुद्द्रमन्न्यवऽउ
तोतऽइषवेनमः ॥ बाहुब्भ्यामुततेनमः । ६ ॥ सं. अ. । १६ । मं० १ ॥
ॐभू०शम्भुदेवतायैआर्द्रायैनमः ॥ आर्द्रामा० ॥ ॐअदितिर्द्यौरदितिरन्तरिक्षम

दितिर्म्मातासपितासपुत्रः॥व्विश्वेदेवाऽअदितिःपञ्चजनाऽअदितिर्ज्जातमदितिर्ज्जनि
त्त्वम् ॥ ७ ॥ सं० । अ. । २५ । मं. । २३ । ॐभू० अदितिदेवतायैपुनर्वसुमूर्त्त
येनमः ॥ पुनर्वसुमा० ॥ अथपुष्यादिसप्तनक्षत्राणिदक्षिणेपूज्यानि ॥ ॐव्वाच
स्स्पतयेपवस्ववृष्ष्णोऽअंशुब्भ्याङ्गभस्तिपूतः ॥ देवोदेवेब्भ्यं÷पवस्वयेषाम्भा
गोसि॥८॥सं. । अ. । ७ । मं. । १ ॥ ॐभू०गुरुदेवतायैपुष्यमूर्त्तयेनमः । पुष्यम० ॥
ॐनमोस्तुसर्प्पेब्भ्योयेकेचपृथिवीमनु ॥ येऽअन्तरिक्षेयेदिवितेब्भ्यं÷सर्प्पेब्भ्योनमं÷
॥९॥ॐभू०सर्पदेवतायैश्लेषायैनमःश्लेषामा० सं.अ.१३मं.६॥ॐपितृब्भ्यं÷स्वधायि
ब्भ्यं÷ स्वधानमं÷पितामहेब्भ्यं÷स्वधायिब्भ्यं÷स्वधानमः प्रपितामहेब्भ्यःस्वधा
यिब्भ्यं÷स्वधानमं÷॥अक्षन्पितरोमीमदन्तपितरोतीतृपन्तपितरःपितरःशुन्धध्वम्

१० ॥ सं. । अ. । १९ । मं० । ३६ ॐभू० पितृदेवतायैमघायैन्नमः । मघामा० ॥ ॐभगप्प्रणेतर्भ्भगसत्त्यराधोभगेमान्धियमुदवाददन्नः ॥ भगप्प्रनोजनयगोभिरश्वैर्भ्भगप्प्रन्नृभिर्न्नृवन्तःस्याम ॥ ११ ॥ सं. । अ. । ३४ । मं । ३६ ओंभू० भगदेवतायैपूर्वफल्गुन्यैनमः । पूर्वफल्गुनीमा० ॥ ओंदैव्व्यावद्ध्वर्य्यूऽआगतꣳरथेनसूर्य्यत्वचा ॥ मद्ध्वायज्ञꣳसमञ्जाथे ॥ तम्प्रत्नथायम्वेनाश्चित्रन्देवानाम् ॥ १२ ॥ सं. । अ. । ३३ । मं० । ३३ । ओंभू० सूर्य्यदेवतायैउत्तरफल्गुन्यैनमः ॥ उत्तरफल्गुनीमा० ॥ ओम्बिब्भ्राड्बृहत्पिबतुसोम्म्यम्मद्ध्वायुर्द्दधद्यज्ञपतावविहुतम् ॥ व्वातजूतोयोऽअभिरक्षतित्मनाप्प्रजाःपुपोषपुरुधाव्विराजति ॥ १३ । सं. । अ. । ३३ । मं० । ३० । ओंभू० दिवाकरदेवतायैहस्तमू

तयैनमः ॥ हस्तमावा० ॥ ओंइन्धानास्त्वाशतꣳहिमाद्युमन्तꣳसमिधीमहि ॥
व्वयंस्वन्तोव्वयस्कृतꣳसहस्वन्तꣳसहस्कृतम् ॥ अग्नेसपत्नदम्भनमदब्धा
सोऽअदाभ्यम् ॥ चित्रावसोस्वस्तितेपारमशीय ॥ १४ ॥ सं. । अ. । ३ मं. ।
१८ । ओंभू०स्वःत्वाष्ट्रदेवतायैचित्रायैनमः ॥ चित्रामावा० ॥ अथस्वात्या
दिसप्तनक्षत्राणिपश्चिमदिशिपूज्यानि ॥ ओंव्वातोवामनोवागन्धर्व्वाःसप्तवि
ꣳशतिः । तेऽअग्रेश्वमयुञ्जँस्तेऽअस्मिञ्जवमादधुः ॥ १५ ॥ सं. । अ. । ९
मं. । ७ । ओंभू०वातदेवतायैस्वात्यैनमः ॥ स्वातीमावा० ॥ ओंइन्द्राग्नीऽअपा
दियम्पूर्व्वागात्पद्वतीभ्यः ॥ हित्वीशिरोजिह्वयाव्वावदच्चरत्त्रिꣳशत्पदान्न्य
क्रमीत । १६ ॥ सं. । अ. । ३३ । मं० । ९३ ॥ ओंभू.इन्द्राग्निदेवतायैवि

शाखायैनमः ॥ विशाखामावा० ॥ ओंनमोमित्रस्यवरुणस्यचक्षसेमहोदेवायत
दृतꣳसपर्यत ॥ दूरेदृशेदेवजातायकेतवेदिवस्पुत्रायसूर्य्यायशꣳसत ॥ १७ ॥
सं. । अ. । ४ । मं. । ३९ । ॐभू० मित्रदेवतायैअनुराधायैनमः ॥ अनुराधामा० ॥
ॐत्रातारमिन्द्रमवितारमिन्द्रꣳहवेहवेसुहवꣳशूरमिन्द्रम् ॥ ह्वयामिशक्र
म्पुरुहूतमिन्द्रꣳस्वस्तिनोमघवाधात्विन्द्र÷ ॥ १८ ॥ सं. । अ. ॥ २० । मं । ५ ।
ॐभू.इन्द्रदेवतायैज्येष्ठायैनमः ॥ ज्येष्ठामावा० ॥ ॐमातेवपुत्रम्पृथिवीपु
रीष्यमग्निꣳस्वेयोनावभारुषा ॥ ताम्विश्वैर्देवैरृतुभि÷सम्बिदानःप्रजा
पतिर्विश्वकर्म्माविमुञ्चतु ॥ १९ । सं. । अ. । १२ । मं. । ६१ । ॐभू०यक्षो
देवतायैमूलमूर्त्तयेनमः ॥ मूलमावा० ॥ ॐअपोदेवामधुमतीरगृभ्णन्नूर्ज्जस्व

तीराजस्स्वाश्विनां; ॥ याभिम्मिंत्रावरुणावभ्यषिंचन्याभिरिन्द्रमनयन्न
त्यरातीः; । २० । सं. । अ. । १० । मं. । १ । ॐभू०जलदेवतायैपूर्वाषाढमूर्तयेन
मः ॥ पूर्वाषाढमावा० ॥ ॐविष्णोः;कर्म्माणिपश्यतयतोव्व्रतानिपस्पशे ॥
इन्द्रस्ययुज्ज्यः;सखा ॥ २१ सं. । अ. । ६ । मं. । ४ । ॐभूर्भुवःस्वःविष्णुदेवता
यैउत्तराषाढमूर्त्यैनमः ॥ उत्तराषाढमावा० ॥ अथाऽभिजितादिसप्तनक्षत्राणि
उत्तरेपूजयेत ॥ ॐतत्सवितुर्व्वरेण्यम्भर्गोदेवस्यधीमहि ॥ धियोयोनः÷प्र
चोदयात ॥ २२ । सं. । अ. । ३ । मं. । ३५ । ॐभू०ब्रह्मदेवतायैअभिजितमू
र्त्यैनमः ॥ अभिजितमावा० ॥ ॐविष्णोरराटमसिविष्णोः;श्नप्त्रेस्थोवि
ष्णोः;स्यूरसिविष्णोर्ध्रुवोसि ॥ वैष्णवमसिविष्णवेत्वा ॥ २३ ॥ सं. । अ. ।

५ । मं. । २१ । ॐभू० विष्णुदेवतायैश्रवणमूर्त्यैनमः ॥ श्रवणमावा० ॥ ॐवसोः
पवित्रमसिशतधारम्वसोःपवित्रमसिसहस्रधारम् ॥ देवस्त्वासवितापुनातु॰वसोः
पवित्रेणशतधारेणसुप्वाकामधुक्षः ॥ २४ ॥ सं. । अ. । १ । मं. । ३ । ॐभू०
वसुदेवतायैधनिष्ठायैनमः ॥ धनिष्ठामावा. ॥ ॐइमम्मेवरुणश्रुधीहवमद्याचमृड
य । त्वामवस्युराचके ॥ २५ ॥ सं. । अ. । २१ । मं. । १ । ॐभूर्भुवःस्वःवरुण
देवतायैशतभिषजेनमः । शतभिषजमावा० ॥ ॐप्रवऽइन्द्रायबृहतेमरुतो॰ब्रह्मा
र्चत ॥ वृत्रछहनति॰वृत्रहाशतक्रतुर्व्वज्रेणशतपर्व्वणा ॥ २६ । सं. । अ. ।
३३ । मं. । ९६ । ॐभू० इन्द्रदेवतायैपूर्वभाद्रपदमूर्त्यैनमः ॥ पूर्वभाद्रपदमा० ॥
ॐमानस्तोकेतनयेमानऽआयुषिमानोगोषुमानोऽअश्वेषुरीरिषः ॥ मानो॰वीरान्रुद्र

सामिनोऽव्वधीर्हविष्मन्त;सदामित्त्वांहवामहे । २७ । अ. । १६ । मं. । १६ । ओंभू०अहिर्बुध्न्यदेवतायैउत्तरभाद्रपदामूर्त्यैनमः । उत्तरभाद्रपदामा० ॥ ओंरेवतीरमद्ध्वऽब्बृहस्प्पतेधारयाऽव्वसूनि ॥ ऋतस्यत्त्वादेवहवि;पाशेनप्प्रतिमुञ्चामिधर्षामानुषः । २८ । सं. । अ. । ६ । मं. । ८ । ओंभूर्भुवःस्वःपूषादेवतायैरेवत्यैनमः । रेवतीमावाहयामि ॥ अथमेषादिद्वादशराशीनाम्पूजनम् । मेषादिराशित्रितयंपूर्वेंपूजयेत् ॥ मुखतोयस्यसंयाताअग्निर्वेदाश्चभूसुराः ॥ जगत्स्रष्टेश्चकर्त्तारंमेषमावाहयाम्यहम् । ओंप्रजापतयेचव्वायवेचगोमृगोव्वरुणायारण्योमेषोयमायकृष्णोमनुष्यराजायमर्क्कट÷॥ शार्दूला।यरोहिदृषभायगवयीक्षिप्प्रश्येनायव्वर्त्तिकानीलङ्गोःक्रिम्मि÷समुद्रायशिशुमारोहिमवतेहस्ती ।१॥ सं.।अ.।२४।मं.।३०।ओंभू

भुं.स्वः मेषायनमः । मेषमावा० ॥ प्रैतुब्रह्मणस्पत्याचप्रदेव्येतुसमागता ॥ मखायत्वामखस्यत्वावृषमावाहयाम्यहम् ॥२॥ ओंप्रैतुव्ब्रह्मणस्प्पतिः प्प्रदेव्व्येतुसूनृता ॥ अच्छांव्वीरन्नर्य्यम्पङ्क्तिरांधसन्देवायज्ञन्नयन्तुनः ॥मखायंत्त्वामखस्यंत्त्वाशीर्ष्णे २॥ सं. । अ. । ३७ । मं. । ७ । ओंभू०वृषायनमः ॥ वृषमावा० ॥ कामङ्कामदुघे देवाम्मित्रायवरुणायच ॥ प्रजाभिरोषधीनाञ्चयुग्ममा ।हयाम्यहम् ॥ २ ॥ .ओंकामङ्कामदुघेधुक्ष्वमित्रायव्वरुणायच ॥ इन्द्रायाश्विभ्भ्याम्पूष्णेप्रजाब्भ्यऽओषधीब्भ्यः ॥ ३ ॥ सं. अ. ॥ १२ ॥ मं. ॥ ७२ ॥ ओंभू०मिथुनायनमः ॥ मिथुनमावा० ॥ अथकर्कादित्रीणिदक्षिणेपूजयेत् ॥ सोमायचकुलाङ्गारंक्षीरोदार्णवसंभवम् ॥ यजमनाहितार्थायकर्कमावाहयाम्यहम् ॥ ४ ॥ ओंसोमांयकुलुङ्गऽआर

प्युे जोनकुलःशकातेपौष्णाःक्रोष्टामायोरिन्द्रस्यगोरमृगः ॥ पिद्द्वोन्न्यङ्कुः कक्क
टस्तेनुमत्यैपप्रतिश्रुत्कायैचक्रवाकः । ४ ॥ सं. । अ. । ॥ २४ ॥ मं. ॥ ३२ ॥
ओंभू०कर्कायनमः ॥ कर्कमावाहयामिपू० ॥ अग्नितत्त्वंसिंहपीतंमृगारूढञ्च
धूम्रकम् ॥ पूर्वाञ्चदिशमाश्रित्यासिंहमावाहयाम्यहम् ॥ ओंआत्मन्नुपस्थेनवृकं
स्यलोमसुखेश्मश्रूणिनव्याघ्रलोम ॥ केशान्नशीर्षन्न्यशसेश्रियैशिषांसिꣳहं
स्स्यलोमत्त्विषिरिन्द्रियाणि ॥ ५ ॥ सं. । अ. । १९ । मं. ॥ ९२ ॥ ओंभू०स्वः
सिंहायनमःसिंहमावा० ॥ वायुतत्वंपाण्डुवर्णसोमवंशाविवर्द्धनम् ॥ यमस्यांदिश
माश्रित्यकन्यामावाहयाम्यहम् ॥ ओंकन्न्याऽइवब्वहतुमेतवाऽउंऽअञ्ज्यञ्जानाऽ
अभिचाकशीमि ॥ यत्रसोमःसूयतेयत्रयज्ञोघृतस्यधाराऽअभितत्पवन्ते । ६ ॥

सं. । अ. । १७ । मं. । १७ ॥ ओंभू०स्वःकन्यायैनमः ॥ कन्यामावाहयामि ॥
अथतुलादित्रीणिपश्चिमेपूजयेत् ॥ श्वेतवर्णांमृडालाभांस्निग्धदेहसमाश्रिताम् ॥
वारुणीन्दिशमाश्रित्यतुलामावाहयाम्यहम् ॥ ओंव्वीभत्सायैपौल्क्कसम्ब्वर्णायहि
रण्यकारन्तुलायैव्वाणिजम्पश्चादोषायंग्लाविनम्बिश्वेभ्योभूतेभ्यः सिध्मलम्भू
त्यैजागरणमभूत्यैस्स्वपनमार्त्यैजनवादिनम्व्यृद्ध्याऽअपगल्भꣳसꣳशरायंप्प्रच्छि
दम् ॥ ७ ॥ सं. । अ. । ३० । मं. । । १७ । ओंभू०स्वःतुलायैनमः ॥ तुला
मावा० ॥ सोमस्यदिशमासीनंरुक्षदेहसमाश्रितम् ॥ पिशङ्गवर्णमूर्त्तिन्तमलिमावा
हयाम्यहम् ॥ ओंयेवामीरोचनेदिवोयेवासूर्य्यस्यरश्मिषु ॥ येषामप्सुसदस्कृ
तन्तेभ्यः सर्प्पेभ्योनमः ॥ ८ ॥ सं. । अ. । १३ । मं. । ८ । ओंभू०स्वःवृश्चि

कायनमः ॥ वृश्चिकमावा० ॥ नृपाणांपौरुषंयच्चसुवर्णनगवासितम् ॥ पूर्वान्दिशं
समाश्रित्यधनुरावाहयाम्यहम् ॥ ओंधन्न्वंनागाधन्न्वंनाजिञ्जयेमधन्न्वंनातीव्रा
समदोंजयेम ॥ धनुःशत्रोंरपकामङ्कृणोतिधन्न्वंनासर्व्वा÷प्रदिशोंजयेम ॥ ९ ॥
सं.।अ.।२९।मं.।२९। ओंभू०स्वःधनुषेनमः ॥ धनुरावाहयामिपू० ॥ अथमक
रादित्रीणिउत्तरेपूजयेत् ॥ चित्रवर्णंमृगारूढंभूमिशीताम्बुवासिनम् ॥ यमस्यादि
शमाश्रित्यमृगमावाहयाम्यहम् ॥ ओंपुरुषमृगश्चन्द्रमसोगोधाकालकादार्व्वाघाट
स्तेव्वनस्पतीनाङ्कृकवाकु÷ ॥ सावित्रोहᳪसोव्वातंस्यनाक्क्रोमकरःकुलीपय
स्तेकूपारस्यह्रियैशल्यकः ॥ १० । सं. । अ. । २४ । मं. । ३५ ॥
ओंभू०स्वःमकरायनमः । मकरमावा० ॥ खंडस्करङ्कर्बुरञ्चदिनमध्यसमाश्रितम् ॥

जलेशादिशमाश्रित्यकुम्भमावाहयाम्यहम् ॥ ओंकुम्भोव्वनिष्ठुर्ज्जनिताशचीं
भिर्यस्मिन्नग्ग्रेयोन्न्याङ्गर्भोऽअन्तः ॥ प्लाशिर्व्व्यक्तःशतधारऽउत्सोदुहेन
कुम्भीस्स्वधाम्पितृब्भ्यः ॥ ११ ॥ सं. । अ. । १९ । म. । ८७ । ओंभू०
स्वःकुम्भायनमःकुम्भमावा० ॥ वब्भ्रुवर्णम्वारितत्वंविप्ररूपसमाश्रितम् ॥
सोमस्यादिशमाश्रित्यमीनमावाहयाम्यहम् । ओंसुपर्णःपार्ज्जन्न्यऽआतिर्व्वाहसो
दर्व्विदातेव्वायवेबृहस्प्पतयेव्वाचस्प्पतयेपैङ्गराजोलजऽआन्तारिक्षः ॥ प्लवोम
द्गुर्म्मत्स्यस्तेनदीपतयेद्यावापृथिवीयःकूर्म्मः ॥ १२ ॥ सं. । अ. । २४ ।
मं. । ३४ ॥ ओंभू०स्वःमीनायनमः ॥ मीनमावाहयामिपूजयामि ॥ अथसप्त
विंशतियोगानीशानेपूजयेत् ॥ ओंयोगेयोगेतवस्तरंव्वाजेवाजेहवामहे ॥ सखा

यऽइन्द्रंमूतयें ॥ १ ॥ ओंभू०स्वःविष्कुम्भायनमः ॥ विष्कुम्भमावा० १ । सं. ।
अ. । ११ । मं. । १४ ॥ प्रैतुब्ब्रह्मणस्प्पतिःप्प्रदेव्व्येतुसूनृता ॥ अच्छांव्वीरन्नर्य्यं
म्पङ्क्तिराधसंदेवायज्ञन्नयन्तुनः ॥ २ ॥ सं. । अ. । ३३ । मं. । ८९ । ओंभू०स्वः
प्रीतयेनमः ॥ प्रीतिमावा० ॥ ओंअनोभद्राःक्क्रतवोयन्तुव्विश्वतोदब्धासोऽअप
रीतासऽउद्भिदः ॥ देवानोयथासदमिद्वृधेऽअसन्नप्रायुवोरक्षितारोदिवेदिवे ॥३॥
सं. । अ. । २५ । मं. । १४ । ओंभू०स्वःआयुष्मतेनमः ॥ आयुष्मन्तमावा० ॥
ओंश्रीश्चतेलक्ष्म्मीश्चपत्न्यावहोरात्रेपार्श्वेनक्षत्राणिरूपमश्विनौव्व्यात्तम् ॥ इष्णन्नि
षाणामुम्मंऽइषाणसर्व्वलोकम्मंऽइषाण ।४सं.अ३१मं.२२ओंभू०स्वःसौभाग्यायनमः ।
सौभाग्यमावा० । ओंव्वायव्व्यैर्व्वायव्व्यान्याप्नोतिसतेनद्रोणकलशम् ॥ कुम्भी

ब्भ्यांसम्भृणौसुतेस्त्थालीभिस्त्थालीराप्प्नोति । ५ । सं. । अ. । १९ । मं. । २७ ॥
ओंभू०स्वःशोभनायनमः ॥ शोभनमावा० ॥ ओंअयम्पुरोभुवस्तस्यप्प्राणोभौ
वायनोव्वसन्तः प्प्राणायनोगायत्रीव्वासन्तीगायत्र्यैगायत्रङ्गायत्रादुपा॰ ॰शुरुपाछंशो
स्त्रिवृत्त्रिवृतोरथन्तरम्व्वसिष्ठऽऋषिः÷ प्प्रजापतिगृहीतयात्त्वयाप्प्राणङ्गृह्णामि
प्प्रजाब्भ्यः÷ । ६ । सं. । अ. । १३ । मं. । ५४ । ओंभू०स्वःअतिगण्डायनमः ॥
अतिगण्डमावा० ॥ ओंसुपर्णोसिगरुत्मांस्त्रिवृत्तेशिरोगायत्रञ्चक्षुर्ब्बृहद्रथन्तरे
पक्षौ ॥ स्तोमऽआत्माच्छन्दाछंस्यङ्गानियजूछंषिनाम ॥ सामतेतनूर्व्वामदेव्य
य्यज्ञायज्ञियम्पुच्छन्धिष्ण्याः शफाः ॥ सुपर्णोसिगरुत्मान्दिवङ्गच्छस्व÷पत । ७ ।
सं. । अ. । १२ । म. । ४ । ओंभू०स्वःसुकर्मणेनमः ॥ सुकर्म्माणमावा० ॥ ओंइहरति

रिहरमद्ध्वमिहधृतिरिहस्स्वधृतिः स्वाहा ॥ उपसृजन्धरुणम्मात्रेधरुणोमातरन्ध
यन् ॥ रायस्प्पोषमस्म्मासुदीधरत्स्वाहा ॥ ८ ॥ सं. । अ । ८ । मं. । ५१ ।
ओंभू०स्वः धृतयेनमः ॥ धृतिमावा० ॥ ओंयत्तेगात्रादग्निनापच्च्यमानादभिशू
लन्निहतस्यावधावति ॥ मातद्भूम्म्यामाश्रिषन्मातृणेषुदेवेभ्यस्तदुसद्भ्योरातम
स्तु ॥ ९ ॥ सं. । अ. । २५ । मं. । ३४ ॥ ओंभू०स्वः शूलायनमः ॥ शूलमा
वा० ॥ ओंद्यौरासीत्पूर्व्वचित्तिरश्वऽआसीद्बृहद्वयः ॥ अविरासीत्पिलिप्पिलारा
त्रिरासीत्पिशङ्गिला ॥ १० ॥ सं. । अ. । २३ । मं. । १२ ॥ ओंभू०स्वः गण्डा
यनमः ॥ गण्डमावा० ॥ ओंमूर्द्धानन्दिवोऽअरतिम्पृथिव्व्यावैश्वानरमृतऽआजात
मग्निम् ॥ कविꣳसम्म्राजमतिथिञ्जनानामासन्नापात्रञ्जनयन्तदेवाः ॥ ११ ॥

सं. । अ. । ७ । मं. । २४ । ओंभू०स्वः वृद्धयेनमः ॥ वृद्धिमावा० ॥ ओंध्रुव
क्षितिद्ध्रुवयोनिर्द्ध्रुवासिद्ध्रुवय्योनिमासीदसाधुया ॥ उख्यस्यकेतुम्प्रथमञ्जुषाणा
ऽश्विनाद्ध्वर्य्यूसादयतामिहत्वा ॥ १२ ॥ सं. । अ. । १४ । मं. । १ । ॐभू०
स्वःध्रुवायनमः ॥ ध्रुवमावा० । ॐइन्द्रस्यक्क्रोडोदित्यैपाजस्यन्दिशाञ्जत्रवोदि
त्यैभसज्जीमूतान्हृदयौपशेनान्तरिक्षम्पुरी ततानभऽउदर्य्येणचक्क्रवाकौमतस्न्ना
भ्यान्दिवम्वृक्काभ्याङ्गिरीन्प्लाशिभिरुपलान्प्लीन्ह्नावल्मीकान्क्लोमभिर्ग्लौ
भिर्ग्गुल्म्मान्हिराभिः; स्रवन्तीर्ह्रदान्कुक्षिभ्याᳪंसमुद्द्रमुदरेणवैश्वानरम्भस्म्म
ना ॥ १३ । सं. । अ. । २५ । मं. । ८ । ॐभू०स्वःव्याघातायनमः ॥
व्याघातमावा० ॥ ॐहᳪंसःशुचिषद्वसुरन्तरिक्षसद्धोताव्वेदिषदतिथिर्दुरोण

सत् ॥ नृषद्वरसदृतसद्व्व्योमसदब्ब्जागोजाऽऋतजाऽअद्रिजाऽऋतम्बृहत् ।
१४ । सं. । अ. । १० । मं. । २४ । ॐभू०स्वः हर्षणायनमः ॥ हर्षणमावा० ॥
ॐमहाँ२॥ऽइन्द्रोव्वज्ज्रहस्तः षोडशीशर्म्मयच्छतु । हन्तुपाप्प्मानय्योस्मान्द्वेष्टि ।
उपयामगृहीतोसिमहेन्द्रायत्त्वैषतेयोनिर्म्महेन्द्रायत्त्वा ॥ १५ ॥ सं. । अ. । २६ ।
मं. । १० ॥ ॐभू०स्वः वज्रायनमः ॥ वज्रमावा० ॥ ॐयाऽओषधीः पूर्व्वाजाता
देवेब्भ्यस्त्रियुगम्पुरा । मनैनुबब्भ्रूणामहंशतन्धामानिसप्तच ॥ १६ । सं. । अ. ।
१२ । मं. । ७५ ॥ ॐभू०स्वः सिद्धयेनमः ॥ सिद्धिमावा० ॥ ॐपितृब्भ्यः स्व
धायिब्भ्यः स्वधानमः पितामहेब्भ्यः स्वधायिब्भ्यः स्वधानमः प्रपितामहेब्भ्यः
स्वधायिब्भ्यः स्वधानमः ॥ अक्षन्पितरोमीमदन्तपितरोतीतृपन्तपितरः पितरः

शुन्धंद्ध्वम् ॥ १७ । सं. । अ. । १९ । मं. । ३६ । ॐ भू० स्वः व्यतिपातायन
मः ॥ व्यतिपातमावा० ॥ ॐ अवैष्टादन्दशूकाः प्प्राचीमारोहगायत्रीत्त्वावतुरथ
न्तरꣳसामंत्रिवृत्स्तोमोव्वसन्तऽऋतुर्ब्रह्मद्द्रविणम् ॥ १८ । सं. । अ. । १० ।
मं. । १० । ॐ भू० स्वः वरीयसेनमः । वरीयांसमावा० ॥ ॐ इमम्मेव्वरुणश्श्रुधी
हवंमद्याचंमृडय ॥ त्वामंवस्युराचंके ॥ १९ । सं. । अ. । २१ । मं. १ ॥ ॐ भू०
स्वःपरिघायनमः ॥ परिघमावा० ॥ ॐ यज्जाग्ग्रंतोदूरमुदैतिदैवन्तदुसुप्तस्यतथैवै
ति ॥ दूरङ्गमञ्ज्योतिंषाञ्ज्योतिरेकन्तन्मेमनःशिवसंङ्कल्पमस्तु ॥ २० ।
सं. । अ. । ३४ । मं. । १ । ॐ भू० स्वःशिवायनमः । शिवमावा० ॥ ॐ गणानान्त्वा
गणपंतिꣳहवामहेप्प्रियाणान्त्वाप्प्रियपतिꣳहवामहेनिधीनान्त्वानिधिपतिꣳहवाम

हेव्वसोमम ॥ आहमंजानिगर्भधमात्त्वमंजासिगर्भधम् । २३ । सं । अ. । २१ । मं. । १९ । ॐभू०स्वःसिद्धयेनमः ॥ सिद्धिमावाहयामिपू० ॥ ॐरक्षोहणम्व्वलगहनम्व्वैष्णवीमिदमहन्तम्व्वलगमुत्किरामियम्मेनिष्ट्योयममात्त्योनिचखानेदमहन्तम्व्वलगमुत्किरामियम्मेसमानोयमसंमानोनिचखानेदमहन्तम्व्वलगमुत्किरामियम्मेसबन्धुर्य्यमसंबन्धुर्न्निचखानेदमहन्तम्व्वलगमुत्किरामिषम्मेसजातोयमसंजातोनिचखानोत्कृत्त्याङ्किरामि ॥ २४ । सं. । अ. । ५ । मं । २३ । ॐभू०स्वःसाध्यायनमः ॥ साध्यमावाहयामिपू० ॥ ओंपरितेदूडभोरथोस्म्माँ२ ।ऽअंश्नोतुव्विश्वतः ÷ ॥ येनरक्षसिदाशुषः ÷ ॥ २ ॥ सं. । अ. । ३ । मं. । ३६ । ॐभू०स्वःशुभायनमः ॥ शुभमावा० । पू० ॥ ओंअथैतानष्टौव्विरूपानलभते

तिदीर्ग्घञ्चातिह्रस्वञ्चातिस्थूलञ्चातिकृशञ्चातिशुक्लञ्चातिकृष्णञ्चातिकुल्वञ्चा
तिलोमशञ्च ॥ अशूद्राऽअब्राह्मणास्तेप्प्राजापत्त्या÷मागधः पुंश्चलीकितवः क्ली
वोऽशूद्राऽअब्राह्मणास्तेप्प्राजापत्त्याः ॥ २६ ॥ । सं. । अ. । ३० । मं. । २२ ।
ॐभू०स्वःशुक्रायनमः ॥ शुक्रमावा० । पू० ॥ ॐब्रह्मणस्प्पतेत्वमस्ययन्ता
सूक्तस्यबोधितनयञ्चजिन्व ॥ विश्वन्तद्भद्रंय्यदवन्तिदेवाबृहद्वदेमविदथे
सुवीराः ॥ यऽइमाविश्वाविश्वकर्म्मायोन÷पितान्नपतेन्नस्यनोदेहि ॥ २५ ॥
सं. । अ. । ३४ । मं. । ५८ । ॐभू०स्वःब्रह्मणेनमः । ब्रह्माणमावा०पू० ॥ ॐकु
तस्त्वमिन्द्रमाहिनःसन्न्येकोयासिसत्पतेकिन्तऽइत्था ॥ सम्पृच्छसेसमराणःशुभानै
र्वोचेस्तन्नोहरिवोयत्तेऽअस्मे ॥ महाँ२॥ऽइन्द्रोयऽओजसाकदाचनस्तरीरसि

क॒दाच॒नप्रयुंच्छसि ॥ २६ ॥ सं. । अ. ।॥ ३३ । मं. । २७ । ॐभू०स्वः ऐन्द्रायनमः ॥ ऐन्द्रमावा० । पू० ॥ ॐअनाधृष्टापु॒रस्तांद॒ग्नेराधिपत्त्य॒ऽआयुंर्म्मेदाः पुत्रवंतीदक्षिण॒तऽइन्द्र॒स्याधिपत्त्येप्र॒जाम्मेदाः ॥ सु॒खदांप॒श्चाद्दे॒वस्यंसवि॒तुराधिपत्त्ये॒चक्षुंर्म्मेदा॒ऽआश्रुतिरुत्त॒र॒तोधा॒तुराधिपत्त्येरा॒यस्प्पोषंम्मेदाः ॥ विधृतिरु॒परिष्टाद्बृह॒स्पते॒राधिपत्त्य॒ऽओजोमेदा॒व्विश्वाभ्योमा॒नाष्ट्राभ्यस्प्पाहि॒मनो॒रश्वासि ॥ २७ । सं. । अ. । ३८ । मं. । १२ ॥ ॐभू०वैधृतयेनमः ॥ वैधृतिमावा० । पू० । इतिसप्तविंशतियोगानामावाहनम्पूजनञ्च ॥ ततः ॥ भद्रङ्कर्णेभिरित्यनेनाग्नेय्याङ्कर्णान्पूजयेत् ॥ ॐभ॒द्रङ्कर्णेभिः शृणुयामदेवाभ॒द्रम्पश्येमा॒क्षभिर्य्यजत्राः ॥ स्थि॒रैरङ्गैस्तुष्टु॒वांसस्त॒नूभि॒र्व्यशेमहिदे॒वहि॑त॒म्यदा

युं÷ ॥ १ ॥ सं. । अ. । २५ । मं. । २१ ॥ ॐभूर्भुवःस्वःववादिकरणेभ्योन
मः ॥ करणानावाहयामिपूजयामि ॥ तत्रैवगङ्गादिनदीःपूजयेत् ॥ गङ्गाद्याः
सरितःसर्व्वाःसमुद्राश्चसरांसिच ॥ आयान्तुयजमानस्यदुरितक्षयकारकाः ॥
ॐपञ्चनद्यः÷सरस्वतीमपियन्तिसस्रोतसः ॥ सरस्वतीतुपञ्चधासोदेशेभवत्स
रित् ॥ २ ॥ संहिता । अ. । ३४ । मं. । ११ । ॐभूर्भुवःस्वःगङ्गादिनदीभ्यो
नमः ॥ नदीःआवाहयामिपूजयामि० ॥ इतिलक्षनवग्रहमखपूजनप्रकारः ॥
अथकोटिनवग्रहमखपूजनप्रकारविधिर्लिख्यते ॥ तत्रउत्तरेसप्तऋषीन्पूजये
त् ॥ ॐसप्तऽऋषयःप्रतिहिताःशरीरेसप्तरक्षन्तिसदमप्रमादम् ॥ सप्तापः
स्वपतोलोकमीयुस्तत्रजागृतोऽअस्वप्नजौसत्रसदौचदेवौ ॥ १ ॥ सं. । अ. ।

३४ । मं. । ५५ । ॐभु॰स्वः सप्तऋषिभ्योनमः ॥ सप्तऋषीनावाहयामि पू॰ ॥ अथाष्टवसवः पूर्वे पूजनीयाः ॥ ॐव्वसवस्त्वाकृण्वन्तुगायत्रेणच्छन्दसाङ्गिरस्वद्ध्रुवासिपृथिव्यसिधारयामयिप्प्रजाꣳरायस्प्पोषङ्गौपत्त्यꣳसुवीर्य्यꣳसजातान्न्यजमानायरुद्रास्त्वाकृण्वन्तुत्रैष्टुभेनच्छन्दसाङ्गिरस्वद्ध्रुवास्यन्तरिक्षमसिधारयामयिप्प्रजाꣳरायस्प्पोषङ्गौपत्त्यछंसुवीर्य्यछंसजातान्न्यजमानायादित्यास्त्वाकृण्वन्तुजागतेनच्छन्दसाङ्गिरस्वद्ध्रुवासिद्यौरसिधारयामयिप्प्रजाꣳरायस्प्पोषङ्गौपत्त्यछंसुवीर्य्यꣳसजातान्न्यजमानयाव्विश्वेत्त्वादेवाव्वैश्वानराः कृण्वन्त्वानुष्टुभेनच्छन्दसाङ्गिरस्वद्ध्रुवासिदिशोसिधारयामयिप्प्रजाꣳरास्प्पोषङ्गौपत्त्यꣳसुवीर्य्यछसजातान्न्यजमानाय ॥ १ । सं. । अ. । ११ । मं. । ५८ ॥ ॐभू॰स्वः ध्रुवायनमः ॥

ध्रु॒वमावा० । पू० ॥ ॐव्वस॑वस्त्वाधूपयन्तुगाय॒त्रेम॒च्छन्द॑साङ्गिर॒स्स्वद्रु॒द्रास्त्वा॑धू
पयन्तु॒त्रैष्टु॑भेन॒च्छन्द॑साङ्गिर॒स्स्वदा॑दि॒त्यास्त्वा॑धूपयन्तु॒जाग॑तेन॒च्छन्द॑साङ्गिर॒स्स्वद्वि
श्वे॑वादे॒वाव्वैश्वान॒राधू॑पय॒न्त्वानु॑ष्टुभेन॒च्छन्द॑साङ्गिर॒स्स्वदिन्द्र॑स्त्वाधूपयतु॒व्वरु॑ण
स्त्वाधूपयतु॒व्विष्णु॑स्त्वाधूपयतु ॥ २ ॥ सं. । अ. । ॥ ११ ॥ मं. । ६० ॥ ॐभू०
स्वःअद्ध्वरायनमः ॥ अद्ध्वरमावाहयामिपू० ॥ ॐव्वसं॑व॒स्त्वाच्छृ॑न्दन्तुगा
य॒त्रेण॒च्छन्द॑साङ्गिर॒स्स्वद्रु॒द्रास्त्वाच्छृ॑न्दन्तु॒त्रैष्टु॑भेन॒च्छन्द॑साङ्गिर॒स्स्वदा॑दि॒त्त्या
स्त्वाच्छृ॑न्दन्तु॒जाग॑तेन॒च्छन्द॑साङ्गिर॒स्स्वद्विश्वे॑त्त्वादे॒वाव्वैश्वान॒राऽआच्छृ॑न्द॒न्त्त्वानु॑ष्टु
भेन॒च्छन्द॑साङ्गिर॒स्स्वत । ३ । सं. । अ. । ११ । ६५ । ॐभू०स्वःसोमायन
मः ॥ सोममावा० पू० ॥ ॐवसौं;प॒वित्र॒त्त्रंमासिशत॒धा॑र॒म्ब्वसौं;प॒वित्र॒त्त्रंम

सिसहस्रंधारम् ॥ देवस्त्वांसवितापुनातुब्बसोंःपवित्रेणशतधारेणसुप्वाकामं
धुक्षः ॥ ४ ॥ ॐभू०स्वःआपायनमः ॥ आपमावा० । पू० । सं. । अ. ।
१ । मं. । ३ । ॐब्बसोंःपवित्रमसिद्यौरसिपृथिव्व्यसिमातरिश्वंनोघर्म्मोसिविश्व
इवधाऽअसि ॥ परमेणधाम्म्नादृꣳहस्वमाहवाम्मातेयज्ञपतिहवार्षीत् ॥ ५ ॥
सं. । अ. । १ । मं. । २ । ॐभू०स्वःअनिलायनमः ॥ अनिल
मावा० । पू० ॥ ॐब्बाजेवाजेवतब्वाजिनोनोधनेषुविप्राऽअमृताऽऋतज्ञाः ॥
अस्यमद्ध्वंःपिबतमादयद्ध्वन्तृप्तायातपथिभिर्द्देवयानैः ॥ ❀ ६ ❀ ॥
सं. । अ. । ९ मं. । १८ । ओंभू.स्वःअनलायनमम: ॥ अनलमावा । ओंवातंर
ꣳहाभवव्वाजिन्न्युज्ज्यमानऽइन्द्रस्येवदक्षिणःश्रियैधि ॥ युञ्जन्तुत्त्वामरुतोव्विश्वमे

दसुऽआतेत्त्वष्टापुत्त्सुजुवन्दधातु ॥ ७ ॥ सं. । अ. । ९ मं । ८ । ओंभू.
स्वःप्रत्यूषायनमः ॥ प्रत्यूषमावा. । पू. ॥ ओंव्वाममद्यसवितर्व्वाममुश्वोदि
वेदिवेव्वाममस्म्मब्भ्यंसावीः ॥ व्वामस्यहिक्षयस्यदेवभूरेरयाधियाव्वामभाजः
स्याम ॥ ८ ॥ सं. । अ. ८ । मं. । ६ । ओंभू.स्वःप्रभासायनमः ॥ प्रभा
समावा. ॥ पूजयामि ॥ अस्ययजमानस्याभीष्टसिद्ध्यर्थेअनेनार्च्चनेनवसवोष्टौ
देवताःसुप्रीतावरदाभवन्तु ॥ अथपश्चिमेद्वादशादित्यान्पूजयेत् ॥ ओंआकृ
ष्णेनरजसाव्वर्त्तमानोनिवेशयन्नमृतम्मर्त्त्यञ्च ॥ हिरण्ययेनसवितारथेनादेवोया
तिभुवनानिपश्यन् ॥ १ ॥ सं. । अ. । ३३ । मं. । ४३ । ओंभू.स्वःधात्रेनमः ॥
धातारमावा । पू. ॥ ओंअद्यादेवाऽउदितासूर्य्यस्यनिरंहसःपिपृतानिरवद्यात् ॥

तन्नोमित्रोव्वरुणोमामहन्तामदिति;सिन्धु÷पृथिवीऽउतद्यौ; ॥ २ ॥ सं. अ.
३३ । मं. । ४२ । ओंभूस्वःमित्रायनम ॥ मित्रमावा । पू. ॥ ओंआसन्दीरू
पꣳराजासन्द्यैव्वेद्यैकुम्भीसुराधानी ॥ अन्तरऽउत्तरवेद्यारूपङ्कारोतुरोभिषक् ॥ ३ ॥
सं. । अ. । १९ । मं० १६ ओंभू.स्वःअर्यम्णेनमः । अर्यमणमावा. । पू. ॥ ओंअश्वा
वतीर्गोमतीर्न्नऽउषासोव्वीरवती;सदमुच्छन्तुभद्राः ॥ घृतन्दुहानाव्विश्वत;
प्प्रपीतायूयम्पातस्वस्तिभि;सदान; ॥ ४ ॥ सं. । अ. । ३४ । मं. । ४० ॥
ओंभू०स्वः रुद्रायनमः ॥ रुद्रमावा० । पू० ॥ ओंआविर्म्मर्याऽआवित्तोऽ
अग्निर्गृहपतिराविंत्तऽइन्द्रोव्वृद्धश्रवाऽआवित्तौमित्रावरुणौधृतव्व्रतावाविंत्त; ॥
पूषाव्विश्ववेदाऽआविंत्तेद्यावापृथिवीव्विश्वशम्भुवावाविंत्तादितिरुरुशर्म्मा । ५॥

सं. । अ. । १० । मंत्र । ९ । ॐभू०स्वःवरुणायनमः । वरुणमावा० । पू० ।
ॐअषाढय्युत्सुपृतनासुपप्प्रिंश्छंस्वर्षामप्प्सांव्वृजनंस्यगोपाम् ॥ भरेषुजांसुक्षितिँसुश्रवसञ्जयन्तन्त्वामनुमदेमसोम ॥ ६ ॥ सं. । अ. । ३४ । मं. ।
२० । ॐभू०स्वःसूर्यायनमः ॥ सूर्यमावा० । पू० ॥ ॐअषाढासिसहमानासहस्वारातीःसहस्वपृतनायतः ॥ सहस्रंव्वीर्य्यासिसामांजिन्व ॥ । सं. । अ. ।
१३ । मं. । २६ ॥ ॐभू०स्वःभगायनमः । भगमावा० । पू० ॥ ॐआयुर्म्मेपाहि
प्प्राणम्मेपाह्यपानम्मेपाहिव्व्यानम्मेपाहिचक्षुर्म्मेपाहिश्श्रोत्रम्मेपाहिव्वाचम्मेपिन्व
मनोमेजिन्वात्मानम्मेपाहिज्ज्योतिर्म्मेयच्छ ॥ ८ ॥ सं. । अ. । १४ । मं. ।
१७ ॥ ॐभू०स्वःविवस्वतेनमः ॥ विवस्वन्तमावाहयामि । पू० ॥ ॐआत्कमन्नुप

स्त्थेनब्वृकंस्यलोममुखेश्म्मश्श्रूणिनब्व्याग्घ्रलोम ॥ केशान्नशीर्षन्न्यशसे
श्श्रियैशिखासिंहस्यलोमत्त्विषिरिन्द्रियाणि ॥ ९ । सं. । अ. । १९ । मं. । ९२ ।
ॐभू०स्वःपूषणेनमः ॥ पूषणमावा० । पू० । ॐअन्तस्तेद्यावापृथिवीदधाम्म्यन्तर्दधा
म्म्युर्व्वन्तरिक्षम् ॥ सजूर्द्देवेभिरवरै;परैश्चान्तर्य्यामेमघवन्मादयस्व ॥ १० ।
सं. । अ. । ७ । मं. । ५ । ॐभू०स्वःसवित्रेनमः । सवितारमावा० । पू० । ॐअ
वेष्टादन्दशूका;प्राचीमारोहगायत्रीत्त्वावतुरथन्तरꣳसामंत्रिव्वृत्स्तोमोव्वसन्तऽ
ऋतुर्ब्ब्रह्मद्द्रविणन्दक्षिणाम् ॥ ११ ॥ सं. । अ. । १० । मं. १० ॥ ॐभू०स्वः
त्वष्ट्रेनमः ॥ त्वष्टारमावा० । पू० ॥ ॐअदितिर्द्यौरदितिरन्तरिक्षमदितिर्म्माता
सपितासपुत्रः ॥ व्विश्वेदेवाऽअदिति;पञ्चजनाऽअदितिर्ज्जातमदितिर्ज्जनि

त्वम् ॥ १२ ॥ ॐभू०स्वःविष्णवेनमः ॥ विष्णुमावा० । पू० ॥ सं. । अ. ॥ २५ । मं. । २३ ॥ इतिद्वादशादित्याः ॥ अथचैत्रादिद्वादशमासानामावाहनंपूजनम् ॥ चित्रवर्णसुगन्धाढ्यंदर्शनीयंमनोहरम् ॥ यजमानहितार्थायचैत्रमावाहयाम्यहम् ॥ ॐधन्न्वंनागाधन्न्वंनाजिञ्जयेमधन्न्वंनातीव्राःसमदोजयेम ॥ धनुःशत्रोरपकामङ्कृणोतिधन्न्वंनासर्व्वाःप्रदिशोजयेम ॥ १ ॥ सं. । अ. । २९ । मं. । ३९ । ॐभू०स्वःचैत्रायनमः ॥ चैत्रमावा० । पू० ॥ वैशाखंविमलंकान्तंवैष्णवंविष्णुवल्लभम् ॥ सर्वसौख्यगुणोपेतंमासमावाहयाम्यहम् । २ ॥ अ० इन्द्राग्ग्नाऽआगतᳬसुतङ्गीर्भिर्न्नभोव्वरेरायम् ॥ अस्यपांतान्धियेषिता ॥ उपयामगृहीतोसीन्द्राग्ग्निभ्यांत्वैषतेयोनिरिन्द्राग्ग्निभ्यांत्वा ॥ २ ॥ सं. ।

अ. । ७ । मं. । ३१ । ॐभू०स्वःवैशाखायनमः ॥ वैशाखमावा० । पू० ॥ २ ॥
श्रेष्ठंसर्वगुणैर्युक्तंसमदृष्टितयानृणाम् वरेण्यम्बरदंरम्यंज्येष्ठमावाहयाम्यहम् ॥
ॐत्रातारमिन्द्रमवितारमिन्द्रꣳहवेहवेसुहवꣳशूरमिन्द्रम् ॥ ह्वयामिशक्रम्पुरुहू
तमिन्द्रꣳस्वस्तिनोमघवाधात्विन्द्रः ॥ ३ ॥ सं. । अ. । २० । मं. । ५० ॥ ॐभू.
स्वःज्येष्ठायनमः ॥ ज्येष्ठमावा० । पू० ॥ अपोदेवामधुमतीनियुतंसर्वदाहि
तम् ॥ आषाढंसर्वकामाढ्यंमासमावाहयाम्यहम् ॥ ४ ॥ ॐअपोदेवामधुमतीर
गृभ्णन्नूर्ज्जस्वतीराजस्वृश्चितांना;याभिर्म्मित्रावरुणावभ्यषिञ्चन्याभिरिन्द्रमनय
न्नत्यरातीः ॥ ४ ॥ सं. । अ. । १० । मं. । १ ॥ ॐभू०स्वःआषाढायनमः ॥
आषाढमावा० । पू० ॥ विष्णोरराटमित्युक्तंसर्वकामसुखावहम् ॥ महोत्साहं

महोदारन्नभसमावाहयाम्यहम् ॥ ५ ॥ ॐव्विष्ण्णो॒रराटमसि॒व्विष्ण्णो॒;श्न
प्त्रेस्त्थो॒व्विष्ण्णो॒;स्यूरसि॒व्विष्ण्णोर्द्ध्रुवोसि ॥ व्वै॒ष्ण॒वमसि॒व्विष्णवेत्त्वा ॥ ५ ॥
सं.।अ.।५।मं.। २१ । ॐभू०स्व:श्रावणयनमः ॥ श्रावणमावा०। पू० ॥
भद्रंभद्रकरंशान्तंभव्यमूर्त्तिम्भयापहम् ॥ प्रवरेन्द्रायसंप्रोक्तंमासमावाहयाम्य
हम् ॥ ६ ॥ ॐप्रव॒ऽइन्द्रायवृह॒तेमरु॒तोब्ब्रह्मार्च्चत ॥ वृत्रर्ठहनतिव्वृत्र॒हा
शतक्क्रतु॒र्व्वज्ज्रेणश॒तपर्व्वणा ॥ ६ ॥ सं.।अ.।॥ ३३।मं.।१६।ॐभू०
स्व: भाद्रपदायनमः ॥ भाद्रपदमावा० । पू० ॥ आश्विनंशुभकृद्रूपंसर्वतो
पविषापहम् ॥ मनोहरंमहापुण्यंमासमावाहयाम्यहम् ॥ * * * *
ॐअ॒श्वि॒नातेजसा॒चक्षु॑:प्प्रा॒णेन॒सरस्वतीव्वी॒र्य्यम् ॥ व्वा॒चेन्द्रोबलेनेन्द्रायदधुरि

न्द्रियम् ॥ ७ ॥ सं.।अ.।२०।मं. ८०। ॐभू.स्वःआश्विनायनमः ॥
आश्विनमावा० । पू० ॥ कार्तिकंकृत्तिकाधीशंवन्हिदेवंमहोज्ज्वलम् ॥ सौख्या
धिकंमनोहारिऊर्ज्जमावाहयाम्यहम् ॥ ॐअग्निन्दूतम्पुरोदधेहव्यवाहमुपब्ब्रुवे ॥
देवाँ २ ॥ ऽ आसादयादिह ॥ ८ ॥ सं. । अ. । २२ ॥ मं. । १७ ॥
ॐभूस्वःकार्त्तिकायनमः ॥ कार्तिकमावा. । पू. ॥ मार्गंमृगशिराधीशंचन्द्रका
न्तमणिप्रभम् ॥ शुभदंसर्वजन्तूनांमासमावा.हयाम्यहम् ॥ सोमोधेनुꣳसो
मोऽअर्व्वन्तमाशुꣳसोमोव्वीरङ्कर्म्मण्यन्ददाति ❀ ❀ ❀ ॥ ❀ ❀ सादन्न्यꣳविद
दत्थ्यꣳसभेयम्पितृश्रवणय्योददाशदस्मै ❀ ❀ ❀ ॥ ९ ॥ ❀ ❀ ❀
सं. । अ. । ३४ । मं. । २१ ॥ ॐभू.स्वःमार्गमावा० । पू० ॥ पौषंपुष्यरसोद्भा

संवाचस्पतिसुखावहम् ॥ यजमानहितार्थयपौषमावाहयाम्यहम् ॥ ॐवाचस्पतिंविश्वकर्माणमूतयेमनोजुवम्वाजेऽअद्याहुवेम ॥ सनोविश्वानिहवनानिजोषद्विश्वशम्भूरवसेसाधुकर्म्मा ॥ उपयामगृहीतोसीन्द्रायत्वाविश्वकर्म्मणऽएषतेयोनिरिन्द्रायत्वाविश्वकर्म्मणे ॥ १० ॥ सं० । अ. । ८ । मं. । ४५ ॥ ॐभू०स्वः पौषायनमः ॥ पौषमावा. । पू० ॥ मघाधीशंमहापुण्यंपितृणांसौख्यकारकम् ॥ हर्तारङ्कलिविषाणाञ्चमाघमावाहयाम्यहम् । ॐपितृभ्यःस्वधायिभ्यःस्वधानमः पितामामहेभ्यःस्वधायिभ्यःस्वधानमः प्रपितामहेभ्यःस्वधायिभ्यःस्वधानमः ॥ अक्षन्पितरोमीमदन्तपितरोतीतृपन्तपितरःपितरःशुन्धध्वम् ॥ ११ । सं. । अ. । १९ । मं. ६३ ॥ ॐभू०स्वःमाघायनमः ॥ माघमावाहयामि । पू० ॥

फाल्गुनंफलसंपत्तिदायकंशुभकारकम् ॥ मदनामोद्गजनकंमाससमावाहयाम्यह
म् ॥ ॐभगप्प्रणेतर्ब्भगसत्त्यराधोभगेमान्धियमुदवाददन्न; ॥ भगप्प्रनोंजनय
गोभिरश्वैर्ब्भगप्प्रनृभिंन्नृवन्तं÷स्याम ॥ १२ । सं. । अ. । ३४ । मं. ३६ ॥
ॐभू०स्वःफाल्गुनायनमः ॥ फाल्गुनमावा० । पू० ॥ ॐकृतेनानेनपूजनेनचैत्रा
दिद्वादशमासाःसुप्रीतावरदाभवन्तु ॥ अथईशानेद्वादशविश्वेदेवान्पूजयेत् ॥
ॐब्बिश्श्वेदेवा;श्शृणुतेमछंहवंम्मेयेअन्तरिक्षेयऽउपद्यविष्ट ॥ येऽअग्ग्निजिह्वाऽउत
वायजत्राऽआसद्यास्मिन्म्बर्हिषिमादयद्ध्वम् ॥ १ । सं. । अ. । ३३ । मं. । ५३ ॥
ॐभू०स्वःऋतवेनमः ॥ ऋतुमावा० । पू० ॥ ॐब्बिश्श्वेऽअद्यमरुतोब्बिश्श्व
ऽऊतीब्बिश्श्वेभवन्त्वग्ग्नय;समिद्धा; ब्बिश्श्वेनोदेवाऽअवसागमन्तुब्बिश्श्वमस्तुद्र

विणम्ङ्बाजोऽअस्म्मे ॥ २ । सं. । अ. । ३३ । मं. । ५२ ॥ ॐभू०स्व:दक्षायन
म: ॥ दक्षमावा० । पू० ॥ ॐङ्बिश्श्वेभि;सोम्म्यम्मद्ध्वग्गन्ऽइन्द्रेंणङ्बायुनां ॥
पिबांमित्रस्यधामंभि; ॥ ३ । सं. । अ. । ॥ ३३ ॥ मं. ॥ १० ॥ ॐभू०स्व:
सत्यायनम: ॥ सत्यमावा० । पू० ॥ ॐङ्बिश्श्वांनिदेवसवितद्र्दुरितानिपरांसुव ॥
यद्भद्द्रन्तन्नऽआसुव ॥ ४ ॥ सं. । अ. । ३० । मं. । ३ ॥ ॐभू०स्व:वसवे
नम: ॥ वसुमावा० । पू० ॥ ॐङ्बिभक्क्तारंछ्हवामहेङ्बसोंश्चित्त्रस्यराधस;सविता
रंन्नृचक्षंसम् ॥ ५ ॥ सं. । अ. । ॥ ३० । मं. । ४ ॥ ॐभू०स्व:कामायनम: ॥
काममावा० । पू० ॥ ॐङ्बिश्श्वतंश्चक्षुरुतङ्बिश्श्वतोंमुखोङ्बिश्श्वतोंबाहुरुतङ्बि
श्श्वतंस्प्पात् ॥ सम्ङ्बाहुङ्भ्यान्धमंतिसम्पतंत्त्रैर्द्यावाभूमींजनयंन्देवऽएकं÷

।६॥ सं.।अ.।१७।मं.।१९॥ ॐभूर्भुवःस्वःध्रुवायनमः॥ ध्रुवमावा०।पू०॥
ॐव्बीभत्सायैपौल्कसंव्वर्णायहिरण्यकारन्तुलायैव्वाणिजम्पश्चादोषायग्ग्लाविब
नंव्विश्वेभ्योभूतेभ्यःसिध्मलम्भूत्यैजागरणमभूत्यैस्स्वपनमार्त्यैजनवादिन
म्व्यृद्ध्याऽअपगल्भᳫंसᳫंशरायप्प्रच्छिदम्॥ ७।सं.।अ.॥३०॥ मं.।
१७॥ ॐभू०स्वःलोचनायनमः॥ लोचनमावा०।पू०॥ ॐव्विश्वकर्म्माविम
नाऽआद्विहायाधाताव्विधातापरमोतसन्दृक्॥ तेषामिष्टानिसमिषामदन्तिय
त्रासप्तऽऋषीन्न्परऽएकमाहुः॥ ८॥ सं.।अ.।१७॥ मं.।३६॥ ॐभू०
स्वःपुरूरवसेनमः॥ पुरूरवसमावा०।पू०॥ ॐव्वाचस्पतिंव्विश्वकर्म्माण
मूतयेमनोजुवंव्वाजेऽअद्याहुवेम॥ सनोव्विश्वानिहवनानिजोषाद्विश्वसंम्भू

रवसेसाधुकर्म्मा ॥ ९ । सं. । अ. । १७ । मं. । २६ । ॐभू०स्वःमार्द्दवसवेनमः ॥
मार्द्दवसुमावाहयामि । पू० ॥ ॐव्विश्वकर्म्मन्हविषाव्वर्द्धनेनत्त्रातारमिन्द्रमकृणोर
वद्ध्यम् ॥ तस्मैव्विशःसमनमन्तपूर्व्वीरयमुग्रोव्विहव्व्योयथासत् ॥ १० ।
सं. । अ. । १७ । मं. । २४ । ॐभू०स्वःदिविदेवायनमः ॥ दिविदेवमावा० ।
पू० ॥ ॐव्विश्वकर्म्माह्यजनिष्टदेवआदिद्गन्धर्व्वोऽअभवद्द्वितीयः तृतीयः ॥
पिताजनितौषधीनामपाङ्गर्भंव्यदधात्पुरुत्रा ॥ ११ ॥ सं. । अ. । १७ ।
मं. ३२ ॥ ॐभू०स्वःएकशृङ्गायनमः ॥ एकशृङ्गमावा० । पू० ॥ ॐव्विश्वे
देवासऽआगतशृणुतामऽइमंहवम् ॥ एदम्बर्हिर्न्निषीदत ॥ उपयामगृहीतो
सिव्विश्वेभ्यस्त्वादेवेभ्यऽएषतेयोनिर्व्विश्वेभ्यस्त्वादेवेभ्यः ॥ १२ । सं. ॥

अ.।७।मं॥३४॥ ॐभू०स्वःसुधायैनमः ॥ सुधामावा० ।पू० ॥ अनेनार्च
नेद्वादशविश्वेदेवाःसुप्रीतावरदाभवन्तु ॥ अथाग्नेयकोणेअष्टमातरः ॥ ओंमा॒
ताचंतेपि॒ताच॒तेग्ग्रंम्वृक्षस्यरोहतः; ॥ प्रतिला॒मीतिंतेपि॒ताग॒भेमु॒ष्टिमंतछंसयत्
॥ १ ॥ सं.।अ।२३ ॥ मं.।२४ ॥ ओंभू०स्वःब्राह्म्यैनमः ॥ ब्राह्मीमा
वा० ।पू० ॥ ओंमा॒ताचंतेपि॒ताच॒तेग्ग्रंव्वृ॒क्षस्यक्रीडतः; ॥ व्विवंक्षतऽइवतेमु॒
ख॒म्ब्रह्म॒न्मात्वम्वंदोव॒हु ॥ २।सं.।अ.॥२३ । मं ।२५ ॥ ओंभू०स्वः
माहेश्वर्य्यैनमः ॥ माहेश्वरीमावा०।पू० ॥ ओंमामांहिंछंसीज्जनितायःपृथि॒व्व्या
योवा॒दिवंसत्यधर्म्मा॒व्व्यानट् ॥ यश्चा॒पश्च॒न्द्राःप्रथ॒मोज॒जान॒कस्मैदे॒वाय॒ह॒
विषाव्विधेम । ३ ॥ सं।अ.।१२। मं.।१०२॥ ॐभूस्वःकौमार्य्यैनमः॥कौमारीमावा० ।

१२

पू०॥ॐमावोरिषत्खनितायस्मैचाहङ्खनामिवः; ॥ द्विपाच्चतुष्पादस्माकंसर्वमस्त्व
नातुरम् ॥ ४ ॥ सं।अ.।१२।मं.।९५॥ ॐभू.स्वःवैष्णव्यैनमः ॥
वैष्णवीमावा० । पू० ॥ ॐअत्रपितरोमादयद्ध्वय्यथाभागमावृषायद्ध्वम् ॥
अमीमदन्तपितरोयथाभागमावृषायिषत ॥ ५ ॥ सं.।अ.।२।मं।३१॥
ॐभू.स्वःवाराह्यैनमः ॥ वाराहीमावा० । पू० ॥ ॐमहीद्यौःपृथिवीचनऽइमय्य
ज्ञम्मिमिक्षताम् ॥ पिपृतान्नोभरीमभिः; ॥ ६ ॥ सं.।अ.।८।मं. ३२॥
ॐभू०स्वःमाहेन्द्र्यैनमः ॥ माहेन्द्रीमावा० । पू० ॥ ॐमहित्रीणामवोस्तुद्युक्षम्मि
त्रस्यार्यम्णः ॥ दुराधर्षम्वरुणस्य ॥ ७ ॥ सं.।अ.।३।मं.।३१॥
ॐभू०स्वःचामुण्डायैनमः ॥ चामुण्डामावा० ॥ पू० ॥ ॐमातेवपुत्रम्पृथि

वीपु॒रीष्ष्य॒म॒ग्निꣳस्वेपोनावभारु॒खा ॥ ताम्बिश्वैर्द्दे॒वैऽऋतुभिः÷साम्बिदा॒नः
प्प्र॒जाप॑तिर्ब्बि॒श्वक॑र्म्मा॒व्विमु॑ञ्चतु ॥ सं.। अ.। १२। मं.। ६१ । ॐभू०स्वः
गौर्य्यैनमः ॥ गौरीमावा० । पू० ॥ ॐकृतेनानेनार्चनेनअष्टमातरोदेवताःसुप्री
तावरदाभवन्तु ॥ अथनैर्ऋत्येनवपितरः ॥ ॐपि॒तृभ्य॑÷स्वधा॒यिभ्य॑÷स्वधानम॑÷
पितामहे॒भ्य॑÷स्व॒धायिभ्य॑÷स्व॒धानम॒; प्प्रपितामहेभ्य;स्व॒धायिभ्य॑÷स्व॒धान
म॑÷ ॥ अक्ष॑न्न्पि॒तरोमीमदन्तपि॒तरोतीतृपन्तपि॒तर॒;पित॑र॒; शुन्धद्ध्वम् ॥ १ ॥
सं। अ.। १९। मं०। ३६। ओंभूर्भुवःस्वःकव्यवाहेनमः ॥ कव्यवाहमावा०।
पू० ॥ ओंपि॒तानोसिपि॒तानोबोधि॒नम॑स्तेऽअस्तुमामाहिꣳसी; ॥ त्वष्ट॑मन्तस्त्वा
सपेमपु॒त्रान्प॒शून्नमयिधेहिप्प्र॒जाम॒स्म्मासु॒धेह्यरि॑ष्टा॒हꣳस॒हप॑त्त्याभूयासम् ॥ २ ॥

सं. । अ. ॥ ३७ । मं. । २० । ओंभू०स्वःअनलायनमः ॥ अनलमावा० । पू० ।
ओंपितुन्नुस्तोषम्महोधर्म्माणन्ताविंषीम् ॥ यस्यंत्रितोऽव्योजंसाऽवृत्रम्विपर्ऽवंमर्द्द
यंत् ॥ ३ ॥ सं. । अ. । ३४ । मं. । ७ । ओंभू०स्वःसोमायनमः ॥ सोम
मावा० । पू० ॥ ओंअग्ग्नऽआयूंष्षिपवसऽआसुवोर्ज्जमिषंञ्चनः ॥ आरेऽबाध
स्वदुच्छुनाम् ॥ ४ । सं. । अ. । ३५ । मं. । १६ । ओंभू०स्वःयमायनमः ।
यममावा० । पू० ॥ ओंपुनन्तुमादेवजनाःपुनन्तुमनंसाधियंः ॥ पुनन्तुऽविश्वा
भूतानिजातवेदःपुनीहिमा ॥ ५ । सं. । अ. । १९ । मं. । ३९ । ओंभू०स्वःअर्य
म्णेनमः । अर्यमणमावा० । पू० । ओंपवित्रेणपुनीहिमाशुक्क्रेणदेवदीद्यंत ॥
अग्ग्नेक्क्रत्त्वाक्क्रतूँ १ रनुं । ६ । सं. । अ. । १९ । मं. । ४० । ओंभू०स्वः

अग्निष्वात्तेभ्योनमः ॥ अग्निष्वात्तानावा० । पू० ॥ ओंयत्तेंपवित्रमर्चिष्यग्ने व्वितंतमन्तरा ॥ ब्रह्मतेनंपुनातुमा ॥ ७ । सं. । अ. । १९ । मं. । ४१ । ओंभू०स्वःवर्हिषद्भ्योनमः ॥ वर्हिषदआवा० । पू० । ओंउभाभ्यान्देवसवितः पवित्रेणसवेनच ॥ माम्पुनीहिव्विश्वतः ॥ ९ । सं. । अ. । १९ । मं. ४२ । ओंभू०स्वःआधत्तपितृभ्योनमः ॥ आधत्तपितॄनावाहयामिपूजयामि ॥ ओंकृतेनानेनार्चनेनाधत्तपितरःप्रीयंताम् ॥ अथवायव्येसप्तसमुद्राः ॥ ओंसमुद्रोसिनभस्वानार्द्रदानुःशम्भूर्म्मयोभूरभिमांव्वाहिस्वाहामारुतोसिमरुतांगणःशम्भूर्म्मयोभूरभिमांव्वाहिस्वाहावस्यूरसिदुवस्वाञ्छम्भूर्म्मयोभूरभिमांव्वाहिस्वाहा ॥१॥ सं. । अ. । १८ । मं. । ४५ ॥ ओंभूर्भुवःस्वःलवणोदधयेनमःलवणोदधिमावा० ॥

पू० ॥ ॐसमंद्ध्वरायोखसोनमन्तदधिक्क्राबैंधशुचंयेपुदाय ॥ अर्व्वाचीनम्ब्वं
सुबिदम्भगंन्नोरथंभिवाश्वांब्बाजिनऽआवंहन्तु ॥ २ ॥ सं. । अ. । ३४ । मं. । ३९ ॥
ॐभू०स्वः इक्षुरसोदधयेनमः इक्षुरसोदधिमावा० । पू० ॥ ॐसोमांयहꣳसानालंभते
ब्बायवेंबलाकांऽइन्द्राग्गिनब्भ्याङ्कुञ्चांन्मित्रायंमद्गून्वरुंणायचक्क्रवाकान् ॥ ३ ॥
सं. । अ. । २४ । मं. ॥ २२ ॥ ॐभू०स्वः सुरोदधयेनमः ॥ सुरोदधिमावा० ॥ पू० ॥
ॐसोमांयलबानालंभतेत्त्वष्ट्रेंकौलीकान्न्गोंषादीर्द्देवानाम्पत्नीब्भ्यः कुलीकांदेवजा
मिब्भ्योग्नयेंगृहपंतयेपारुष्णान् ॥ ४ ॥ सं. । अ. । २४ ॥ ॐभू०स्वः
घृतोदधयेनमः ॥ घृतोदधिमावा० । पू० ॥ ॐसोमांयकुलुङ्गऽआंरण्योजोनंकु
लङ्गःशकातेपौष्णाःक्रोष्टामायोरिन्द्रंस्यगौरमृगः ॥ पिद्वोन्न्यङ्कुःकक्कटस्तेनु

मत्स्यैप्रति॒श्रुत्का॑यैचक्रवा॒कः ।५॥ सं.।अ.।२४ । मं.।३२॥ ॐभू०स्वः
दध्युदधयेनमः ॥ दध्युदधिमावा०।पू०॥ ॐसौ॒रीब॒लाका॑शा॒र्ग्गः सृज॒यः श॒याण्ड॑
कस्तेमै॒त्राःसर॑स्वत्यै॒शारिः÷पुरुष॒वाक्श्वा॒विद्भौ॒मीशा॑र्द्दूलोव्वृकः॒प्रदा॑कु॒स्तेम॒न्न्य
वे॒सर॑स्वते॒शुकः÷पुरुष॒वाक् ॥ ६ ॥ सं.।अ.।२४।मं.॥ ३३॥
ॐभूर्भु०स्वःक्षीरोदधयेनमः ॥ क्षीरोदधिमा० । पू० ॥ ॐसु॒पर्णःपार्ज्ज॒न्न्य
आ॒तिर्व्वा॑ह॒सोदर्व्वि॑दा॒तेव्वा॒यवे॒ब्बृह॒स्पत॑येव्वा॒चस्पत॑येपैङ्ग॒राजो॒लजऽआ॑न्तरि॒क्षः॥
प्ल॒वोम॒द्गुर्म्मत्स्य॒स्तेन॑दीपतयेद्यावापृथि॒वीयः÷कू॒र्म्मः ॥७॥ सं.।अ.।२४ मं.।३४।
ॐभू०स्वःसुजीवनायनमःसुजीवनमावाह.।पू०॥ ॐअनेनार्चनेनसप्तसमुद्राःप्रीय
न्ताम्॥ अथाऽष्टकुलपर्वतानुत्तरेपूजयेत्। ओंप्रपर्व्वतस्यव्वृष॒भस्यपृ॒ष्ठान्नाव॑श्चरन्ति

स्स्वासिचं॑ऽइ॒याना॑ः ॥ ताऽआवं॑ब्बृत्र॒न्नधरा॒गुदं॑कृ॒ताऽअहिं॑म्बुद्ध्य नृ॒मनु॒रीयं॑माणाः ॥
व्विष्ष्णो॑र्व्विक्र॒मं॑णमसि॒व्विष्ष्णो॒र्व्विक्रान्त॑मसि॒व्विष्ष्णो॑ःक्क्रा॒न्तमं॑सि ॥ १ ॥
सं. । अ. । १० । मं. ॥ १९ ॥ ओंभू.स्वः सुमेरवेनमः ॥ सुमेरुमावा० । पू० ।
ओंपरिमाग्ग्ने॒दुश्च॑रिताद्बा॒धस्वा॒मासुच॑रितेभज ॥ उदायु॑षास्वा॒युषोदं॑स्थाम्
मृ॒ताँ २ ॥ऽ अनुं ॥ २ ॥ सं. । अ. । ४ । मं. । २८ ॥ ओंभू.स्वःहिमाचलायनमः ।
हिमाचलमावाह० । पू० ॥ ओंप्प्रति॒पन्था॑मपद्महिस्स्वस्ति॒गाम॑ने॒हस॑म् ॥
येन॒व्विश्श्वा॒ःपरि॒द्विषो॑व्वृ॒णक्ति॑व्वि॒न्दते॒व्वसु ❀ ❀ ॥ ३ ॥ ❀ ❀ ॥
सं. । अ. । ४ । मं. । २९ ॥ ओंभू०स्वःश्रीशैलायनमः ॥ श्रीशै
लमावा० । पू० ॥ ओंप॒रि॒वीर॑सि॒परि॑त्त्वा॒दैवी॒र्व्विशो॑व्व्ययता॒म्परी॑मय्य॒जमा॒नछं

रायोंमनुष्ष्याणाम् ॥ दिवःसूनुरंस्येषतेंपृथिव्व्याल्लोक ऽआरण्यस्तेपशुः ॥ ४ ॥
सं । अ. । ६ । मं । ६ । ओंभू०स्वःमन्दराचलायनमः ॥ मन्दराचलमावा० ॥पू०॥
ओंपरिंत्वागिर्व्वणोगिरंऽइमाभवन्तुव्विश्वतः ॥ व्वृद्धायुमनुवृद्धयोजुष्टांभवन्तु
जुष्टयः ॥ ५ ॥ सं. । अ. । ५ ॥ मं. । २९ ॥ ओंभू०स्वःगन्धमादना
यनमः ॥ गन्धमादनमावा० ॥ पू० ॥ ओंपथस्प्पथःपरिंपतिम्वचस्याकामेन
कृतोऽअभ्यानडर्कम् ॥ सनोरासच्छुरुधश्चन्द्राग्ग्नाधियन्धियꣳसीषधातिप्रपूषाद् ॥
सं. । अ. । ३४ । मं. । ४२ ॥ ओंभू०स्वःविपुलायनमः ॥ विपुलमावाहया
मि । पू० ॥ ओंपावकयायश्चितयन्त्याकृपाक्षामन्नुरुचऽउषसोनभानुना । तूर्व्वं
न्नयामन्नेतशस्यनूरणऽआयोघृणेनततृषाणोऽअजरः ॥ ७ ॥ सं. । अ. ।

१७। मं.।१० ॥ ओंभू०स्वःसुपार्श्वायनमः । सुपार्श्वमावा० । पू० ॥ ओंप
वित्रेस्त्थोवैष्णव्व्यौसवितुर्व÷ प्प्रसवऽउत्पुनाम्म्यच्छिद्द्रेणपवित्त्रेणसूर्य्यस्यरश्मि
भि÷ ॥ देवीरापोऽअग्ग्रेगुवोऽअग्ग्रेपुवोग्ग्रऽइममद्ययज्ञन्नयताग्ग्रेयज्ञपतिꣳ
सुधातुय्यज्ञपतिन्देवयुवम् ॥ ८ ॥ सं.।अ.।१ मं.।१२।ओंभू०स्वः
रत्नाचलायनमः ॥ रत्नाचलमावा० । पू० ॥ ओंकृतेनार्च्चनेनाऽष्टकुलपर्वताः
प्रीयन्ताम् ॥ अथेशानेअष्टकुलनागाः ॥ ओंनमोस्तुसर्प्पेब्भ्योयेकेचपृथि
वीमनु ॥ येऽअन्तरिक्षेयेदिवितेब्भ्य÷सर्प्पेब्भ्योनम÷ ॥ १ । सं.।अ.।
१३ । मं । ६ ॥ ओंभू०स्वःअनन्तायनमः ॥ अनन्तमावा० । पू० ॥ ओंयाते
रुद्द्रशिवातनूꣳशिवाविश्श्वाहाभेषजी ॥ शिवारुतस्स्यभेषजीतयानोमृडजीवसे ॥२॥

सं. । अ. । १६ । मं. । ४९ ॥ ओंभू॰स्वःवासुकयेनमः ॥ वासुकिमावाहया॰ ।
पू॰ ॥ ओंपरिते॒धन्न्वनो॑हे॒तिर॒स्म्मान्न्वृ॑णक्तु॒वि॒श्वतः॑ ॥ अथो॒यऽइषु॒धिस्त
वा॒रेऽअ॒स्म्मन्निधे॑हि॒तम् ॥ ३ ॥ सं. । अ. । १६ । मं. । १२ ॥ ओंभू॰
स्वःकर्कोटकायनमः ॥ कर्कोटकमावा॰ । पू॰ ॥ ओंअ॒व॒तत्त्य॒धनु॒ष्ट्व॑ꣳसह
स्स्राक्ष॒शतेषुधे ॥ नि॒शीर्य्य॑श॒ल्ल्याना॒म्मुखा॑शि॒वोनः॑सु॒मना॑भव ॥ ४ ॥
सं. । अ. । १६ । मं. । १३ ॥ ओंभू॰स्वःतक्षकायनमः ॥ तक्षकमावा॰ । पू॰ ॥
ओंनम॑स्त॒ऽआयु॑धा॒यना॑तताय धृ॒ष्णवे॑ ॥ उ॒भाब्भ्या॑मु॒तते॒नमो॑बा॒हुब्भ्या॒न्तव॒ध
न्न्व॑ने ॥ ५ ॥ सं. । अ । १६ मं. । १४ ॥ ओंभू॰स्वःपद्मकायनमः ॥ पद्मकमा
वाहयामि । पू॰ ॥ ओंमानो॑म॒हान्त॑मु॒तमानोअब्भ॒र्कम्मा॒नऽउक्ष॑न्तमु॒तमा॑नऽउक्षि॒तम्

मानोंव्वधी;पितरम्मोतमातरम्मानं÷प्प्रियास्तन्व्वोरुद्ररीरिष; ॥ ६ ॥ सं. अ. १६ । मं. । १५ ॥ ओंभू०स्वःमहापद्मायनमः ॥ महापद्ममावा० । पू० ॥ ओंमानंस्तोकेतनयेमानऽआयुषिमानोगोषुमानोऽअश्वेषुरीरिष; ॥ मानोंव्वीरान्नुद्द्रभामिनोंव्वधीर्हविष्मन्त;सदमित्वांहवामहे ॥ ७ ॥ * * * *

सं. । अ. । १६ ॥ मं. । १६ । ॐभू०स्वःशङ्खायनमः ॥ शङ्खमावाहयामि । पू० ॥ ॐयेवामीरोचनेदिवोयेवासूर्य्यस्यरश्मिषु ॥ येषामप्सुसदंस्कृतन्तेऽभ्यं÷सर्प्पेऽभ्योनमं÷ ॥ ८ । सं. । अ. । १३ । मं. । ८ ॥ ॐभूर्भुवःस्वःकम्वलायनमः ॥ कम्वलमावाहयामिपूजयामि ॥ अनेनार्च्चनेनाऽष्टकुलनागाःप्रीयन्ताम् ॥ अथेशानेमृत्युञ्जयंपूजयेत् ॥ ॐत्र्यम्बकंयजामहेसुगन्धिम्पुष्टिवर्द्धनम् ॥ उर्व्वारु

कमिवबन्धनान्मृत्योर्मुक्षीयमामृतात् ॥ १ । सं. । अ. । ३ । मं. । ६० ॥ इत्यर्चेन । ॐभू०स्वः मृत्युञ्जयायनमः ॥ मृत्युञ्जयमावाहयामि । पू० ॥ वेदानामादिमंशान्तंब्रह्माविष्णुशिवात्मकम् ॥ ॐकारंसर्वयज्ञेषुदेवमावाहयाम्यहम् ॥ ॐकारंबिन्दुसंयुक्तन्नित्यन्ध्यायन्तियोगिनः ॥ कामदंमोक्षदञ्चैवमोङ्कारायनमोनमः ॥ ॐअसङ्ख्यातासहस्राणियेरुद्द्राऽअधिभूम्म्याम् ॥ तेषाꣳसहस्रयोजनेवधन्वानितन्नमासि । १ । सं. । अ. । १६ । मं. । ५४ ॥ ॐभू०स्वः ॐकारायनः ॐङ्कारमावा० । पू० ॥ असंख्यातेतिसम्पूज्योरुद्रोरुद्रघटाम्भसि ॥ विष्णुःपूज्यश्चसूक्तेनवामेदक्षःप्रजापतिः ॥ रुद्रकुम्भाग्रतःपूज्येचामुण्डाजातवेदसे ॥ अथागस्त्यस्य ॥ दक्षिणान्दिशमासीनंपर्वतानाङ्गुरुंपरम् ॥ यजमानहितार्थायाग

स्त्यमावाहयाम्यहम् ॥ ॐध्रुवासिंदूध्रुवोयस्यजंमानोस्मिन्नायतनेप्रजयांपशुभिर्भूयात् ॥ घृतेनंद्यावापृथिवीपूर्य्येथामिन्द्रंस्यच्छदिरंसिविश्वजनस्यच्छाया ॥ १ ॥ सं. । अ. ॥ ५ ॥ मं. । २८ । ॐभू०स्वःध्रुवायनमः ॥ ध्रुवमावा० पूजयामि ॥ अथमङ्गलाद्यष्टयोगिनीनामावाहनंपूजनम् ॥ महावलामहोत्साहामङ्गलाद्याःसुखावहाः ॥ योगिन्योष्टौमहाभागाआगच्छन्तुममाध्वरे ॥ मङ्गलाद्यष्टयोगिनीभ्योनमः ॥ ततोवास्तुपुरुषमावाहयामि ॥ ॐवास्तोष्पतेध्रुवस्थूणांसत्रंसोम्यानांद्रप्सःपुराम्भेत्ताशश्वतीनामिन्द्रोमुनीनांसखा ॥ १ ॥ ॐभूर्भुवःस्वः वास्तुपुरुषायनमः ॥ वास्तुपुरुषमावा० । पू० ॥ अथाऽष्टभैरवपूजनम् ॥ असिताङ्गोरुरुश्चण्डःक्रोधउन्मत्तभैरवः ॥ कपालीभीषणश्चैवसंहारश्चाष्टभैरवाः ॥

तत्रमन्त्राः ॥ ॐन॒हिस्प्पश॒मवि॑दन्न॒न्न्यम॒स्म्माद्वैश्श्वान॒रात्पु॑रऽए॒तार॑म॒ग्ग्नेः ॥
ए॒मे॑नमवृधन्न॒मृता॒ऽअम॑र्त्त्यम्व्वैश्श्वान॒रङ्क्षैत्र॑जित्त्यायदे॒वाः ॥ १ ॥ सं. । अ. ॥
३३ ॥ मं. ॥ ६० ॥ ॐभू०स्वःआसिताङ्गभैर वायनमः ॥ असिताङ्गभैरवमावा० ।
पू० ❁ ॥ ❁ ॐभूताय॑त्त्वा॒नारा॑तये॒स्वराभि॒विख्ख्यै॑षन्दृꣳह॑न्ता॒न्दुर्य्याः पृथि॒व्व्या
मु॒र्व्वन्तरि॑क्ष॒मन्न्वे॑मिपृथि॒व्व्यास्त्वा॒नाभौ॑सादया॒म्म्यदि॑त्त्याऽउ॒पस्त्थेग्ग्ने॑ह॒व्व्यꣳर॑क्ष।२।
सं. । अ. । १ । मं. । ११ । ॐभू० । स्वःरुरुभैरवायनमः ॥ रुरुभैरवमावा० ।
पू० ॥ ॐक्ष॒त्त्रस्य॒योनि॑रसिक्ष॒त्त्रस्य॒नाभि॑रसि ॥ मात्त्वा॑हिꣳसी॒न्मामा॑हिꣳसीः ॥
३ । सं. । अ. । २० । मं. । १ ॥ ॐभू०स्वःचण्डभैर वायनमः ॥ चण्डभैर वमा
वा० । पू० ॥ ॐभायै॑दा॒र्व्वाहा॒रम्प्र॒भाया॑ऽअग्ग्ने॒धम्ब्र॒ध्नस्य॑व्विष्ट॒पाया॑भिषे॒क्क्तार॒

ꣳवर्षिष्ठायनाकायपरिवेष्टारन्देवलोकायपेशितारम्मनुष्यलोकायप्रकरितारꣳस
र्वेभ्योलोकेभ्यऽउपसेक्तारमवऽऋत्यैवधायोपमन्थितारम्मेधायवासः ॥ प
ल्पूलीम्प्रकामायरजयित्रीम् ॥ ४ ॥ सं. । अ. ॥ ३० । मं. । १२ ॥ ॐभूःस्वः
क्रोधभैर वायनमः ॥ क्रोधभैर वमावा० । पू० ॥ ॐएदमगन्मदेवयजनम्पृथि
व्यायत्रदेवासोऽअजुषन्तविश्वे ॥ ऋक्सामाभ्याꣳसन्तरन्तोयजुर्भीराय
स्पोषेणसमिषामदेम ॥ इमाऽआपःशमुमेसन्तुदेवीरोषधेत्रायस्वस्वधितेमैनं
ꣳहिꣳसीः । ५ ॥ सं. । अ. ।४ ॥ मं. । १ ॥ ॐभूःस्वःउन्मत्तभैर वायनमः ॥
उन्मत्तभैर वमावा० । पू० ॥ ॐगृहामाबिभीतमावेपध्वमूर्जम्बिभ्रतऽएमसि ॥
ऊर्जम्बिभ्रद्वःसुमनाःसुमेधागृहानैमिमनसामोदमानः ॥ ६ । सं. । अ. । ३ ।

मं. । ४१ । ॐभू०स्वःकपालभैर वायनमः ॥ कपालभैरवमावा० । पू० ॥ ॐयावा
ङ्कशामधुमत्यश्विंन्नासूनृतांवती ॥ तयांयज्ञम्मिंमिक्षतम् ॥ उपयामगृंहीतो
स्यश्विभ्भ्यांन्त्वैषतेयोनिर्म्माद्ध्वीभ्भ्यान्त्वा ॥ ७ ॥ सं. । अ. । ७ । मं. ।
११ ॥ ॐभू०स्वःभीषणभैर वायनमः ॥ भीषणभैरवमावा० ॥ पू० ॥ ॐअन्त
स्तेद्द्यावापृथिवीदंधाम्म्यन्तर्द्दधाम्म्युर्व्वन्तरिक्षम् ॥ सजूर्द्देवेभिरवरैःपरैश्चान्तर्य्यां
मेमघवन्न्मादयस्व ॥ ८ ॥ सं. । अ. ॥ ७ ॥ मं. । ५ ॥ ॐभू०स्वःसंहारभैर
वायनमः ॥ संहारभैरवमावा० ॥ पू० ॥ कृतेनानेनपूजनेनाऽष्टभैरवाःप्रीयन्ता
म् ॥ ततोग्रहवेद्यामुपरिकार्णिकायुक्तमष्टदलङ्कुर्य्यात् ॥ तन्मध्येकलशं
स्थापयेत् ॥ महीद्यौरितिपूर्वोक्तस्थापनविधिनासुदृढंताम्रमयङ्कलशंसंस्थाप्य ॥

ओंसोम॒छराजानं. । सोमायनमःस्वाहा । इदछंसोमाय ॥ २१४ ॥ ओंअर्य॒
मण॒स्वृह॒स्पतिं. । ओंअर्यम्णेनमःस्वाहा । इदम. ॥ २१५ ॥ इतिवाजहो
मः । अथषोडशमातृहोमः । ओंगौर्य्यैनमःस्वाहा । इदङ्गौर्य्यै ॥ १ ॥
ओंपद्मायैनमःस्वाहा । इदंप० ॥ २ ॥ ओंशच्यैनमःस्वाहा । इदंश. ॥३॥
ओंमेधायैनमःस्वाहा ॥ इदम्मे. ॥ ४ ॥ ओंसावित्र्यैनमःस्वाहा । इदंसा. ॥५॥
ओंविजयायैनमःस्वाहा । इदंवि. ॥ ६ ॥ ओंजयायैनमःस्वाहा । इदञ्ज. ॥ ७॥
ओंदेवसेनायैनमःस्वाहा । इदन्दे. ॥ ८ ॥ ओंस्वधायैनमःस्वाहा । इदंस्व. ॥९॥
ओंस्वाहायैनमःस्वाहा । इदंस्वा. ॥ १० ॥ ओंमातृभ्योनमःस्वाहा । इदंमा. ॥ ११ ॥
ओंलोकमातृभ्योनमःस्व हा । इदंलो. ॥ १२ ॥ ओंहृष्ट्यैनमःस्वाहा । इदंहृ.

मं. । ४१ । ॐभू०स्वःकपालभैर वायनमः ॥ कपालभैरवमावा० । पू० ॥ ॐयावा॒
ङ्कशा॒मधुम॒त्त्यश्विंन्नासूनृतांवती ॥ तयांय॒ज्ञम्मिंमिक्षतम् ॥ उ॒प॒या॒मगृंहीतो
स्य॒श्विवब्भ्यांन्त्वै॒षते॒योनि॒र्म्मांदूर्ध्वींब्भ्यान्त्वा ॥ ७ ॥ सं. । अ. । ७ । मं. ।
११ ॥ ॐभू०स्वःभीषणभैर वायनमः ॥ भीषणभैरवमावा० ॥ पू० ॥ ॐअ॒न्त
स्ते॒द्द्यावापृथि॒वीदंधाम्म्य॒न्तर्द्दधाम्भ्यु॒र्व्वन्तरिंक्षम् ॥ सजूर्द्दे॒वेभि॒रवरैः परैश्चान्तर्य्या॒
मेमंघवन्न्मादयस्व ॥ ८ ॥ सं. । अ. ॥ ७ ॥ मं. । ५ ॥ ॐभू०स्वःसंहारभैर
वायनमः ॥ संहारभैरवमावा० ॥ पू० ॥ कृतेनानेनपूजनेनाऽष्टभैरवाः प्रीयन्ता
म् ॥ ततोग्रहवेद्यामुपरिकार्णिकायुक्तमष्टदलङ्कुर्य्यात् ॥ तन्मध्येकलशं
स्थापयेत् ॥ महीद्यौरितिपूर्वोक्तस्थापनविधिनासुदृढंताम्रमयङ्कलशंसंस्थाप्य ॥

कुलनागहोमः ॥ ओंनमोस्तुस॒र्पेभ्यो॒. ॥ ओंअनन्तायनमःस्वाहा ॥
इदमनन्ताय ॥ १९२ ॥ ओंयातेरुद्रशि॒वात॒नूः ॥ ओंवासुकिनागायनमः
स्वाहा ॥ इदम्वासुकि. ॥ १९३ ॥ ओंपरिते॒धन्व॑नोहे. ॥ ओंकर्कोटकायनमः
स्वाहा ॥ इदङ्कर्कोटकाय ॥ १६४ ॥ ॐअव॒तत्य॒धनु॒. ॥ ओंतक्षकाय
नमःस्वाहा ॥ इदन्तक्षकाय ॥ १९५ ॥ ओंनम॑स्त॒ऽआयु॑. ॥ ओंपद्माय
नमःस्वाहा ॥ इदंपद्माय ॥ १९३ ॥ ओंमानो॑म॒हान्तं. ॥ ओंमहापद्मायनमः
स्वाहा ॥ इदंमहाप. ॥ १९७ ॥ ओंमान॑स्तो॒केतन॑ये. ॥ ओंशङ्खायनमः
स्वाहा ॥ इदंशङ्खाय ॥ १९८ ॥ ओंयेवा॒मीरोचने. ॥ ॐकम्बलायनमः
स्वाहा ॥ इदङ्कंबलाय ॥ १९९ ॥ ॐतत्सत्. कृतेनानेनहवनेनाऽष्टकुल

नागाःप्रीयन्ताम् ॥ यथाबाणेतिपूर्ववत् ॥ अथवास्तुहोमः ॥ ॐवास्तोष्पते
दूध्रुवस्थूणाम् ॥ ॐवास्तोष्पतयेनमःस्वाहा ॥ इदंवास्तोष्पतये ॥ २०० ॥
अथक्षेत्रपालहोमः ॥ ॐन॒हिस्पर्शामवि॒दम् ॥ ॐअसिताङ्गभैरवायनमःस्वा
हा ॥ इदमसितां. ॥ २०१ ॥ ॐभृतायंत्वा. ॥ ओंरुरुभैरवायनमःस्वाहा ॥
इदंरुरुभै. ॥ २०२ ॥ ओंक्ष॒त्रस्य॒योनिः ॥ ओंचण्डभैरवायनमःस्वाहा ॥
इदञ्चण्डभै. ॥ २०३ ॥ ॐभायैर्दार्व्वाहा॒रम्. ॥ ओंक्रोधभैरवायनमःस्वाहा ॥
इदङ्क्रोधभै. ॥ १०४ ॥ ओंएदमंगन्म. ॥ ओंउन्मत्तभैरवायनमःस्वाहा ॥
इदमुन्मत्तभै. ॥ २०५ ॥ ओंगृहामाबिभीत. ओंकपालभैरवायनमःस्वाहा
इदङ्कपालभै. ॥ २०६ ॥ ओंयावङ्कशा. ओंभीषणभैरवायनमःस्वाहा इद

म्भीषणभै. ॥ २०७ ॥ ओंअ्न्तस्तेद्यावा. ॥ ओंसंहारभैरवायनमःस्वाहा । इदंसंहारभै. ॥ २०८ ॥ ओंकृतेनानेनहवनेनाऽष्टभैरवाःप्रीयन्ताम् ॥ यथावाणेतिपूर्ववत् ॥ अथमृत्युञ्जयहोमः ॥ ओंत्र्यम्बकय्यजामहे. ॥ ओंमृत्युञ्जयायनमःस्वाहा ॥ इदंमृत्युञ्ज. ॥ २०९ ॥ ततओङ्कारहोमः ॥ ओङ्कारम्बिन्दुसंयुक्तन्नित्यन्ध्यायन्तियोगिनः ॥ कामदंमोक्षदञ्चैवमोङ्कारायनमोनमः ॥ ओंकारायनमःस्वाहा ॥ इदमोङ्काराय ॥ २१० ॥ अथवाजहोमः ॥ ओंब्बाजंस्ये॒मम्प्रंस॒व॑सु. । ओंवाजायस्वाहा । इदम्वाजा. ॥ २११ ॥ ओंवाजंस्ये॒माम्प्रंस॒वः । ओंवाजस्येमायनमःस्वाहा । इदम्वाजस्येमाय॥ २१२॥ ओंब्बा॒जस्यंनु॒प्प्रस॒व. । ओंवाजस्यायनमःस्वाहा । इदंबाजस्याय ॥ २१३ ॥

ओंसोम॒छराजानं. । सोमायनमःस्वाहा । इदंसोमाय ॥ २१४ ॥ ओंअ॒र्य॒मण॒म्ब्रह॒स्पतिं. । ओंअर्यम्णेनमःस्वाहा । इदम. ॥ २१५ ॥ इतिवाजहोमः । अथषोडशमातृहोमः । ओंगौर्य्यैनमःस्वाहा । इदङ्गौर्य्यै ॥ १ ॥ ओंपद्मायैनमःस्वाहा । इदंप० ॥ २ ॥ ओंशच्यैनमःस्वाहा । इदंश. ॥ ३ ॥ ओंमेधायैनमःस्वाहा ॥ इदम्मे. ॥ ४ ॥ ओंसावित्र्यैनमःस्वाहा । इदंसा. ॥ ५ ॥ ओंविजयायैनमःस्वाहा । इदंवि. ॥ ६ ॥ ओंजयायैनमःस्वाहा । इदञ्ज. ॥ ७ ॥ ओंदेवसेनायैनमःस्वाहा । इदन्दे. ॥ ८ ॥ ओंस्वधायैनमःस्वाहा । इदंस्व. ॥ ९ ॥ ओंस्वाहायैनमःस्वाहा । इदंस्वा. ॥ १० ॥ ओंमातृभ्योनमःस्वाहा । इदंमा. ॥ ११ ॥ ओंलोकमातृभ्योनमःस्व हा । इदंलो. ॥ १२ ॥ ओंहृष्ट्यैनमःस्वाहा । इदंहृ.

ओंसुमेरवेनमःस्वाहा ॥ इदंसुमे. ॥ १८४ ॥ ओंपरिमाग्नेदुश्चरितात् ॥
ओंहिमाचलायनमःस्वाहा ॥ इदंहिमाचलाय ॥ १८५ ॥ ओंप्रातिमन्धाम. ॥
ओंश्रीशैलायनमःस्वाहा ॥ इदंश्रीशै. ॥ १८६ ॥ ओंपरिव्वीरंसि. ॥ ओंमन्द
राचलायनमःस्वाहा. ॥ इदंमन्दराच. ॥ १८७ ॥ ओंपरित्वागिर्वणो. ॥
ओंगन्धमादनायनमःस्वाहा ॥ इदङ्गन्धमा. ॥ १८८ ॥ ओंपथस्स्पथ;परिप
तिम् ॥ ओंविपुलायनमःस्वाहा ॥ इदम्विपुलाय ॥ १८९ ॥ ओंपावकया
यश्चित्त. ॥ ओंसुपार्श्वायनमःस्वाहा ॥ इदंसुपार्श्वा. ॥ १९० ॥ ओंप
वित्रेस्त्थो. ॥ ओंरत्नाचलायनमःस्वाहा ॥ इदंरत्ना. ॥ १९१ ॥ ओंतत्सत्.
कृतेनानेनहवनेनाऽष्टकुलपर्वताःप्रीयन्ताम् ॥ वथावाणेतिपूर्ववत् ॥ अथाऽष्ट

ओंसोम॒ꣳराजानं. । सोमायनमःस्वाहा । इदꣳसोमाय ॥ २१४ ॥ ओंअर्य॒
मण॒म्बृह॒स्पतिं. । ओंअर्यम्णेनमःस्वाहा । इदम. ॥ २१५ ॥ इतिवाजहो
मः । अथषोडशमातृहोमः । ओंगौर्य्यैनमःस्वाहा । इदङ्गौर्य्यै ॥ १ ॥
ओंपद्मायैनमःस्वाहा । इदंप० ॥ २ ॥ ओंशच्यैनमःस्वाहा । इदंश. ॥ ३ ॥
ओंमेधायैनमःस्वाहा ॥ इदम्मे. ॥ ४ ॥ ओंसावित्र्यैनमःस्वाहा । इदंसा. ॥ ५ ॥
ओंविजयायैनमःस्वाहा । इदंवि. ॥ ६ ॥ ओंजयायैनमःस्वाहा । इदञ्ज. ॥ ७ ॥
ओंदेवसेनायैनमःस्वाहा । इदन्दे. ॥ ८ ॥ ओंस्वधायैनमःस्वाहा । इदंस्व. ॥९॥
ओंस्वाहायैनमःस्वाहा । इदंस्वा. ॥ १० ॥ ओंमातृभ्योनमःस्वाहा । इदंमा. ॥ ११ ॥
ओंलोकमातृभ्योनमःस्व हा । इदंलो. ॥ १२ ॥ ओंहृष्ट्यैनमःस्वाहा । इदंहृ.

ॐकौमार्य्यैनमःस्वाहा ॥ इदंकौमा० ॥ १६३ ॥ ॐमावोरिषत्खनि॒० ॥
ॐवैष्णव्यैनमःस्वाहा ॥ इदंवैष्णव्यै ॥ १६४ ॥ ॐअत्रंपितरोमाद० ॥
ॐवाराह्यैनमःस्वाहा ॥ इदम्वाराह्यै ॥ १६५ ॥ ॐम॒हीद्यौः ॥ ॐमाहेन्द्र्यैनमः
स्वाहा ॥ इदंमाहें० ॥ १६६ ॥ ॐमहित्री॒णा० ॥ ॐचामुण्डायैनमः
स्वाहा ॥ इदञ्चामुण्डायै ॥ १६७ ॥ ओंमा॒तेवंपु॒त्रम्पृंथि॒वी ॥ ओंगौर्य्यैनमः
स्वाहा ॥ इदङ्गौर्य्यै ॥ १६८ ॥ इत्यष्टमातृहोमः ॥ ओंतत्सत्कृतेनानेनहव
नेनाऽष्टमातरःप्रीयन्ताम् ॥ अथनवपितृहोमः ॥ ओंपि॒तृभ्य॑ःस्वधा॒यिभ्य॑ः॥
ओंकव्यवाहनमःस्वाहा ॥ इदङ्कव्य० ॥ १६९ ॥ ओंपि॒तानोंसिपि॒तानों० ॥
ओमनलायनमःस्वाहा ❀ ॥ ❀ इदमनला० ❀ ॥ ❀ १७० ॥ ओंपि

तुन्नुस्तोषम्॰ ॥ ओंसोमायनमःस्वाहा ॥ इदंसो॰ ॥ १७१ ॥ ओंअग्न
ऽआयूंछंषि॰ ॥ ओंयमायनमःस्वाहा ॥ इदंयमाय ॥ १७२ ॥ ओंपुन
न्तुमादेवजनाः ॥ ओंअर्यम्णेनमःस्वाहा ॥ इदमर्यम्णे ॥ १७३ ॥
ओंपवित्रेणपुनीहिमा ॥ ओंअग्निष्वात्तेभ्योनमःस्वाहा ॥ इदमग्निष्वात्ते
भ्यः ॥ १७४ ॥ ओंयत्तेपवित्रं॰ ॥ ओंबर्हिषद्भ्योनमःस्वाहा ॥ इदम्बर्हिष
द्भ्यः ॥ १७५ ॥ ओंउभाभ्यांन्देवसवितः ॥ ओंआधत्तपितृभ्योनमः
स्वाहा ॥ इदमाधत्तपितृभ्यः ॥ १७६ ॥ ओंतत्सत्॰ कृतेनानेनहवनेनन
वपितरःप्रीयन्ताम् ॥ यथावाणेतिपूर्ववत् ॥ अथसप्तसमुद्रहोमः ॥ ओंस
मुद्रोसिनभस्वां॰ ॥ ओंलवणाब्धयेनमःस्वाहा ॥ इदंलव॰ ॥ १७७ ॥

ओंसमद्ध्वरायोखसोन० ॥ ओंइक्षुरसोदधयेनमःस्वाहा ॥ इदमिक्षु० ॥ १७८ ॥
ओंसोमायहुछंसाना० ॥ ओंसुरोदधयेनमःस्वाहा ॥ इदंसुरोदधये ॥ १७९ ॥
ओंसोमायलवानालंभते० ॥ ओंघृतोदधयेनमःस्वाहा ॥ इदङ्घृतो० ॥ १८०
ओंसोमायकुलुङ्गः ॥ ओंदध्युदधयेनमःस्वाहा ॥ इदंदध्युद. ॥ १८१ ॥
ओंसौरींबलाकां. ॥ ओंक्षीरोदधयेनमःस्वाहा ॥ इदङ्क्षीरोदधये ॥ १६२ ॥
ओंसुपर्णःपार्ज्जन्य. ॥ ओंसुजीवनोदधयेनमःस्वाहा ॥ इदंसुजीवनो. ॥ १८३ ॥
ओंतत्सत्.कृतेनानेनहवनेनसप्तसमुद्राःप्रीयन्ताम् ॥ अथाऽष्टकुलपर्वतहोमः ॥
ओंमद्येहेत्यादि. सप्रासादविष्णुमूर्त्तेस्थिरप्रतिष्ठायागकर्माङ्गभूताष्टकुलपर्वतानां
प्रीतयेआभिस्तिलतण्डुलाज्याहुतिभिर्वन्हौहवनमहङ्करिष्ये ॥ ओंप्रपर्व्वतस्य. ॥

ओंसुमेरवेनमःस्वाहा ॥ इदंसुमे. ॥ १८४ ॥ ओंपरिमाग्ने॒दुश्चा॑रितात् ॥
ओंहिमाचलायनमःस्वाहा ॥ इदंहिमाचलाय ॥ १८५ ॥ ओंप्रति॒मन्धाम. ॥
ओंश्रीशैलायनमःस्वाहा ॥ इदंश्रीशै. ॥ १८६ ॥ ओंप॒रि॒ब्वीरं॑सि. ॥ ओंमन्द
राचलायनमःस्वाहा. ॥ इदंमन्दराच. ॥ १८७ ॥ ओंपरि॑त्वागि॒र्वणो. ॥
ओंगन्धमादनायनमःस्वाहा ॥ इदङ्गन्धमा. ॥ १८८ ॥ ओंप॒थस्प॑थ॒;परिप
तिम् ॥ ओंविपुलायनमःस्वाहा ॥ इदम्विपुलाय ॥ १८९ ॥ ओंपा॒व॒कया॒
यश्चिच्च॒त. ॥ ओंसुपार्श्वायनमःस्वाहा ॥ इदंसुपार्श्वा. ॥ १९० ॥ ओंप॒
विश्रैस्तथो. ॥ ओंरत्नाचलायनमःस्वाहा ॥ इदंरत्ना. ॥ १९१ ॥ ओंतत्सत्.
कृतेनानेनहवनेनाऽष्टकुलपर्वताःप्रीयन्ताम् ॥ यथाबाणेतिपूर्ववत् ॥ अथाऽष्ट

योगेउक्तम् ॥ तत्रायङ्क्रमः ॥ वन्हिपार्श्वेहोतॄनासनेषूपवेश्य ॥ तत्रमन्त्रः ॥
ॐमेघवर्णःसवितामयहुतादुःखयतेमातर्वंयन्तमग्निरग्निधूर्वरस्वाहा ॥ १ ॥
इतिमन्त्रेणहोतृस्थापनम् ॥ ततःवन्हिप्रज्वालनङ्कृत्वा ॥ मंत्रोयथा ॥
ॐअग्निःपशुरासीतिमन्त्रेणाऽग्निप्रज्वलनम् ॥ हुताशनप्रज्वलनम्तेनहोमाधि
कारस्तथाचवसिष्ठः ॥ योनर्चिषिजुहोत्यग्नौव्यङ्गारिणिचमानवः ॥ मन्दाग्निराम
यावीचदरिद्रश्चैवजायते ॥ १ ॥ तस्मात्समिद्धेहोतव्यन्नासमिद्धेकथञ्चन ॥
आरोग्यमिच्छतायुश्चाप्रियमात्यन्तृकन्तथा । २ ॥ जुहुयुश्चस्रुवेणैवपाणिसूर्पत्वचा
दिभिः ॥ नकुर्यादग्निधमनङ्कुर्यात्तुव्यजनादिना ॥ ३ ॥ मुखेनैवधमेदग्निं
मुखाद्ध्येषोध्यजायत ॥ आलस्येनसधूमेतुजुहुयाद्योहुताशने ॥ ४ ॥ यजमा

नोभवेदन्धःसपुत्रइतिनिश्चितमिति ॥ ततः अग्निंसम्पूज्यस्रुवञ्चसंपूज्य ॥
सूर्यादिनवग्रहाणामाहुतीर्दद्यात् ॥ ततःसमिधांपूजनम् ॥ समिधोयथा ॥
अर्कःपलाशःखदिरअपामार्गोथपिप्पलः ॥ औदुम्बरःशमीदूर्वाकुशश्चसमिधोन
व ॥ १ ॥ अर्कोनाशयतेव्याधिंपालाशीसर्वकामदा ॥ खादिरीचार्थलाभायअपा
मार्गोबहुप्रजः ॥ २ ॥ आश्वत्थीचशुभन्दद्यात् धनन्दद्यादुदुम्बरी ॥ शमीशम
यतेपापन्दूर्वामाङ्गल्यवर्द्धिनी ॥ ३ ॥ कुशेनपितरस्तृप्ताइत्येतत्फलमुच्यते ॥
होतव्यामधुसर्पिर्भ्यान्दध्नाक्षीरेणवायुताः ॥ ४ ॥ होमविशेषोगोभिलीये ॥
नमुक्तकेशोजुहुयान्नापिपातितजानुकः ॥ उत्तानेनैवहस्तेनअङ्गुष्ठाग्रेणपीडितम् ॥ संह
ताङ्गुलिपाणिस्तुवाग्यतोजुहुयाद्धविः ॥ वसिष्ठः ॥ अष्टोत्तरञ्चसाहस्रंशतमष्टाधि

कन्तथा ॥ अष्टाविंशतिरष्टौवाएकैकस्यतुहोमयेत् ॥ अधिदेवतादिहोमेसेङ्ख्यावासिष्ठे ॥ द्वित्राश्चैवाधिदैवत्याःपञ्चानाञ्चैवपञ्चधा ॥ द्वित्राःपञ्चानाङ्गणेशादीनांपञ्चधाप्रत्येकमित्यर्थः ॥ ॐमद्येहेत्यादि० सकलमनोवांछितकामनासिध्यर्थंसप्रासादविष्णुमूर्त्तेस्थिरप्रतिष्ठायागकर्माङ्गतयासूर्यादिनवग्रहमण्डलस्थदेवतानाम्प्रीतयेअर्कादिसमिधाम्पूजनमहङ्करिष्ये ॥ ॐव्वनस्प्पतेव्वीड्वङ्गोहिभूयाऽअस्म्मत्संखाप्प्रतरंणःसुवीरः ॥ गोभिःसन्नद्धोऽअसिव्वीडयंस्स्वास्थातातेजयतुजेत्त्वांनि। १। सं.। अ.।२९। मं.।५२। इतिमन्त्रेणावाहनादिषोडशोपचारेणसम्पूज्य ॥ तस्योपरिवसोर्द्धारांकुर्यात् ॥ ॐव्वसोःपवित्रमसिशतधारंव्वसोःपवित्रंमसिसहस्त्रंधारम् ॥ देवस्त्वांसवितापुनातुव्वसोःपवित्रेणशतधारेणसुप्वा

कामंधुक्ष; ॥ १ । सं. । अ. । १ । मं. । ३ । इतिमन्त्रेण ॥ अनेनार्चनेनवनस्पतिदेवताःप्रीयन्ताम् ॥ इतिसमिधाम्पूजनम् ॥ अथसमिद्धोमः ॥ ॐअद्येहेत्यादि० ॥ अमुकगोत्रोऽमुकयजमानःसपत्नीकःआयुःकामार्थंपुष्टिकामार्थंयोगक्षेमार्थंद्विपदचतुष्पदशान्त्यर्थंसप्रासादविष्णुमूर्त्तौस्थिरप्रतिष्ठायागकर्म्माङ्गभूतसूर्यादिनवग्रहदेवताप्रीतयेअर्कादिसमिद्भिस्तिलतण्डुलाज्याहुतिभिर्वह्नौहवनङ्करिष्ये ॥

ॐआकृष्णेनेतिहिरण्यस्तूपाङ्गिरसऋषिःसूर्योदेवतात्रिष्टुप्छन्दःअष्टसङ्ख्याकाभिरर्कसमिद्भिर्दधिमधुघृताक्ताभिस्तिलतण्डुलाज्ययुक्ताभिःसूर्यप्रीतयेकपिलनामाग्नौहोमेविनियोगः ॥ ॐआकृष्णेनं ॥ १ ॥ ॐसूर्यायनमःस्वाहा ॥ इदंसूर्यायेति सर्वत्र ॥ पालाशसमिधङ्गृहीत्वा ॥ ॐइमन्देवेतिदध्यङ्गाथर्वणऋषिःसोमोदेव

तागायत्रीच्छन्दःअष्टसङ्ख्याकाभिः पालाशीसमिद्भिर्दधिमधुघृताक्ताभिस्तिलतण्डुलाज्ययुक्ताभिश्चन्द्रप्रीतयेहुताशननामाग्नौहोमेविनियोगः ॥ ॐइमन्देवा । २ ॥ ॐचन्द्रमसेनमःस्वाहा ॥ इदं० ॥ खदिरङ्गृहीत्वा ॥ अग्निर्मूर्द्धेतिविरूपाक्षऋषिर्भौमोदेवतागायत्रीच्छन्दःखादिरीसमिद्भिरष्टसङ्ख्याकाभिर्दधिमधुघृताक्ताभिस्सकृताज्याहुत्यातिलतण्डुलाज्ययुक्ताभिर्भौमप्रीतयेब्राह्मणद्वारापिङ्गलनामाग्नौहोमेविनियोगः ॥ ॐअग्निर्म्मूर्द्धादिवः । ३ ॥ ॐभौमायनमःस्वाहा ॥ इदं० ॥ अपामार्गङ्गृहीत्वा ॥ ॐउद्बुध्यस्वेतिपरमेष्ठीऋषिर्बुधोदेवतात्रिष्टुप्छन्दःआपामार्गीसमिद्भिरष्टसङ्ख्याकाभिस्सकृदाज्याहुत्यातिलतण्डुलाज्ययुक्ताभिर्बुधप्रीतयेजठरनामाग्नौहोमेविनियोगः ॥ ॐउद्बुध्यस्वाग्ने ॥ ४ ॥ ॐबुधायनमःस्वाहा ॥ इदं० ॥

पिप्पलङ्गृहीत्वा ॥ ॐवृहस्पतेइत्यङ्गिराऋषिर्बृहस्पतिर्देवतात्रिष्टुप्छन्दःआश्वत्थीसमिद्भिरष्टसङ्ख्याकाभिस्सकृदाज्याहुत्यादधिमधुघृताक्ताभिस्तिलतण्डुलाज्ययुक्ताभिर्गुरुप्रीतयेहुताशननामाग्नौहोमेविनियोगः ॥ ॐवृहंस्पते ॥ ५ ॥ ॐबृहस्पतयेनमःस्वाहा ॥ इदं० ॥ उदुम्बरङ्गृहीत्वा ॥ ॐअन्नात्परिस्रुतइति पराशरऋषिःशुक्रोदेवतात्रिष्टुप्छन्दःऔदुम्बरीसमिद्भिरष्टसङ्ख्याकाभिर्दधिमधुघृताक्ताभिस्सकृदाज्याहुत्यातिलतण्डुलाज्ययुक्ताभिर्महातेजोनामाग्नौहोमेविनियोगः ॥ ॐअन्नात्परिस्रुतं÷ ॥ ६ ॥ ॐशुक्रायनमःस्वाहा ॥ इदं० ॥ शमीङ्गृहीत्वा ॥ ॐशन्नोदेवीतिदध्यङ्गाथर्वणऋषिरापोदेवतागायत्रीच्छन्दःशमीसमिद्भिरष्टसङ्ख्याकाभिर्दधिमधुघृताक्ताभिस्तिलतण्डुलाज्ययुक्ताभिस्सकृदाज्याहुत्याशनिप्री

तयेकन्दकनामाग्नौहोमेविनियोगः ॥ ॐशन्नोदेवीरभिष्टय । ७ ॥ ॐशानैश्वरायनमःस्वाहा ॥ इदं० । दूर्वाङ्गृहीत्वा ॥ ॐकयानश्चित्रइतिप्रजापतिऋषिर्यजुश्छन्दोराहुर्देवतादूर्वासमिद्भिरष्टसङ्ख्याकाभिर्दधिमधुघृताक्ताभिस्तिलतण्डुलाज्ययुक्ताभिस्सकृदाज्याहुत्याराहुप्रीतयेधूम्रकेतुनामाग्नौहोमेविनियोगः ॥ ॐकयान्नः । ८ ॥ ॐराहवेनमःस्वाहा ॥ इदं० ॥ कुशाङ्गृहीत्वा ॥ ॐकेतुङ्कृण्वेतिमधुच्छन्दऋषिःकेतवोदेवतागायत्रीच्छन्दःकौशीसमिद्भिरष्टसङ्ख्याकाभिर्दधिमधुघृताक्ताभिस्सकृदाज्याहुत्यातिलतण्डुलाज्ययुक्ताभिःकेतुप्रीतयेशिखिनामाग्नौहोमेविनियोगः ॥ ॐकेतुङ्कृण्वन् । ९ । ॐकेतवेनमःस्वाहा ॥ इदं०केतवे ॥ जलङ्गृहीत्वा ॥ ॐकृतेनानेनहोमेनसूर्यादिनवग्रहदेव

ताःप्रीयन्ताम् ॥ अथाभिषेकः ॥ यथाबाणप्रहाराणाङ्कवचंभवतिवारणम् । तद्वद्दैवोपघातानांशान्तिर्भवतिवारणम् ॥ शान्तिरस्तुपुष्टिरस्तुवृद्धिरस्तुयच्छ्रेयस्तदस्तु ॥ यत्पापंरोगंदुःखंदारिद्रन्तद्दूरेप्रणश्यतु ॥ द्विपदेभ्यःचतुष्पदेभ्यःशान्तिःश्रीःसुखम्भवतु ॥ इतिपठित्वाभूमौजलंक्षिपेत् ॥ पुनःशिरसि ॥ अथईश्वराद्याधिदेवताहोमः ॥ ॐमद्येहेत्यादि० ॥ आयुःकामार्थंपुष्टिकामार्थंयोगक्षेमार्थंधनपुत्रादिकामनासिध्यर्थंद्विपदचतुष्पदशान्त्यर्थमीश्वराद्याधिदेवताअग्न्यादिप्रत्यधिदेवतागणेशादिपञ्चलोकपालदेवताइन्द्रादिदशदिक्पालदेवतानांप्रीतयेसप्रासादविष्णुमूर्त्तेस्थिरप्रतिष्ठायागकर्मांगतयाएकैकाज्याहुत्याएकैकान्नाहुत्यावन्हौहवनङ्करिष्ये ॥ ॐईशाब्वास्यमिदꣳ ॥ ॐईश्वरायनमःस्वाहा ॥ इदं० ॥

१० ॥ ॐश्रीश्चंते० ॥ ॐलक्ष्म्यैनमःस्वाहा० ॥ इदं० ॥ ११ ॥ ॐयदक्रन्द; ॥ ॐस्कन्दायनमःस्वाहा ॥ इदं० ॥ १२ ॥ ॐविष्णोर्रराटमसि० ॥ ॐविष्णवेनमःस्वाहा० ॥ इदम्वि० ॥ १३ ॥ ॐब्रह्मंजज्ञानम् ॥ ॐब्रह्मणेनमःस्वाहा ॥ इदम्ब्र० ॥ १४ ॥ ॐत्रातारमिन्द्रम्० ॥ ॐइन्द्रायनमःस्वाहा ॥ इदमिं. ॥ १५ ॥ ॐयमायंत्वा० ॥ ॐयमायस्वाहा ॥ इदंय० ॥ १६ ॥ ॐकदाचनस्तरीरंसि० ॥ ॐकालायनमःस्वाहा० ॥ इदंका० ॥ १७ ॥ ॐइन्धानास्त्वा० ॥ ॐचित्रगुप्तायस्वाहा ॥ इदंचि० । १८ ॥ जलमादाय । कृतेनानेनहोमेनईश्वराद्यधिदेवताःप्रीयन्ताम् । यथावाणेतिपूर्ववत ॥ अथाग्न्यादिप्रत्यधिदेवताहोमः ॥ ॐअग्निन्दूतम् ॥ ॐअग्नयेनमःस्वाहा ॥ इदम० ॥ १९ ॥

ॐआपोऽअस्मान्मातरः ॥ ॐअद्भ्योनमःस्वाहा ॥ इदम० ॥ २० ॥ ॐभूरसिभूमिर० ॥ ॐपृथिव्यैनमःस्वाहा ॥ इदंपृ० ॥ २१ ॥ ॐविष्णोः कर्म्माणि ॥ ॐविष्णवेनमःस्वाहा० ॥ इदम्वि० ॥ २२ ॥ ॐमहाँ२॥ऽइन्द्रोवज्रहस्तः० ॥ ॐइन्द्रायनमःस्वाहा ॥ इदमिं० ॥ २३ ॥ ॐइन्द्रन्दैवीर्ब्विशो० ॥ ॐइन्द्राण्यैनमःस्वाहा ॥ इदमिं० ॥ २४ ॥ ओंप्रजापतेनत्वदेताम्० ॥ ओंप्रजापतयेनमःस्वाहाइदम्प्र० ॥ २५ ॥ ओंनमोऽस्तुसर्प्पेभ्यो० ॥ ओंसर्प्पेभ्योनमःस्वाहा ॥ इदंस० ॥ २६ ॥ ओंब्रह्मजज्ञानम्० ॥ ओंब्रह्मणेनमःस्वाहा ॥ इदम्ब्र० ॥ २७ ॥ ओंअनेनहवनेनअग्न्यादिप्रत्यधिदेवताः प्रीयन्ताम् ॥ ओंयथावाणप्रहाराणामितिपठेत् ॥ अथगणेशादिपञ्चलोकपाल

होमः ॥ ओंग॒णानांन्त्वा० । ओंगणपतयेनमःस्वाहा ॥ इदङ्गण० ॥ २८ ॥
ओंअम्बे॒ऽअम्बि॒के० ॥ ओंअम्बायैनमःस्वाहा ॥ इदमं० ॥ २९ ॥ ओंआनो
नि॒युद्भि÷श॒तिनीं० ॥ ओंवायवेनमःस्वाहा ॥ इदम्वा० ॥ ३० ॥ ओंऊ॒र्द्ध्वा
ऽअ॑स्य० ॥ ओंआकाशायनमःस्वाहा० ॥ इदमा० ॥ ३१ ॥ ओंयावा॒ङ्कशा
मधु॑० ॥ ओंअश्विभ्यान्नमःस्वाहा ॥ इदमश्विभ्याम् ॥ ३२ ॥ यथावाणेति
पूर्ववत् ॥ अथइन्द्रादिदशदिक्पालदेवताहोमः ॥ ओंत्रा॒तार॒मिन्द्रम् ॥ ३३ ॥
ओंइन्द्रायनमःस्वाहा ॥ इदमिं० ॥ ओंअ॒ग्निन्दू॒तम् ॥ ओंअग्नयेनमःस्वाहा ॥
इदम० ॥ ३४ ॥ ओंय॒मायत्वाम० ॥ ओंयमायस्वाहा ॥ इदंय० ॥ ३५ ॥
ओंअसुन्वन्त॒मयजमान० ॥ ओंनिर्ऋतयेनमःस्वाहा ॥ इदन्नि० ॥ ३६ ॥

ओंव्वरुणस्योत्तम्भनम्० ॥ ओंवरुणायनमःस्वाहा ॥ इदम्व० ॥ ३७ ॥
ओंव्वातोंवामनोंवा० ॥ ओंवायवेनमःस्वाहा इदम्वा० ॥ ३८ ॥ ओंकुविद
ङ्गयवं० ॥ ओंकुवेरायनमःस्वाहा०॥ इदङ्कुवे० ॥ ३९ ॥ ओंतमीशानम्० ॥
ओंईशानायनमःस्वाहा ॥ इदमीशा० ॥ ४० ॥ ओंनमोस्तुसर्प्पेभ्यो० ॥
ओंअनन्तायनमःस्वाहा ॥ इदमनं० ॥ ४१ ॥ ओंब्रह्मजज्ञानम् ॥ ओंब्रह्मणे
नमःस्वाहा इदम्ब्र० ॥ ४२ ॥ जलमादाय ॥ ओंअद्यतत्सत् ॥ कृतेनानेन
हवनेनइन्द्रादिदशादिक्पालदेवताःप्प्रीयन्ताम् ॥ ओंयथावाणप्रहाराणाङ्कवच
म्भवतिवारणम् ॥ तद्वद्दैवोपघातानांशान्तिर्भवतिवारणम् ॥ शान्तिरस्तुपुष्टि
रस्तुवृद्धिरस्तुयच्छ्रेयस्तदस्तु ॥ इतिशिरसि ॥ यत्पापंरोगन्दुःखन्दारिद्र्यन्त

दूरेप्रणश्यतु ॥ इतिभूमौजलंक्षिपेत् ॥ द्विपदेभ्यश्चतुष्पदेभ्यःशान्तिःश्रीर्भवतु ॥ इतिपुनःशिरसिजलङ्क्षिपेत् ॥ इतिअयुतनवग्रहमखहवनप्रकारः ॥ अथलक्षनवग्रहमखहवनप्रकारमाह ॥ ओंमद्येहेत्यादि० सकलमनोवाञ्छितफलकामनासिद्ध्यर्थंऋग्वेदादिचतुर्वेदप्रीतयेआभिस्तिलतण्डुलाज्याहुतिभिर्वह्नौहवनङ्करिष्ये ॥ ओंअग्निमीडे ॥ ओंऋग्वेदायनमःस्वाहा ॥ इदंऋग्वे० ॥ ४३ ॥ ओंइषेत्वोर्ज्जेत्वा । ओंयजुर्वेदायनमःस्वाहा ॥ इदंयजुर्वेदाय ॥ ४४ ॥ ओंअग्नआयाहि० ॥ ओंसामवेदायनमःस्वाहा ॥ इदंसा० ॥ ४५ ॥ ओंशन्नोदेवी० ओंअथर्ववेदायनमःस्वाहा । इदम० ॥ ४६ ॥ ओंकृतेनानेनहवनेनचत्वारोवेदाःप्रीयन्ताम् ॥ यथावाणप्रहाराणामित्यभिषेकः । अथाऽष्टाविंशति

नक्षत्रदेवताहोमः ॥ ओमद्येहेत्यादि० । पूर्वोक्तगुणविशिष्टायान्तिथौममसक
लपीडाबाधासन्तापोषणत्वदोषनिवृत्तिपूर्वकसप्रासादविष्णुमूर्तेस्थिरप्रतिष्ठाङ्गभूता
श्विन्याद्यष्टाविंशतिनक्षत्राणांमेषादिद्वादशराशीनांविष्कुम्भादिसप्तविंशतियोगानांब
वादिकरणदेवतानाङ्गङ्गादिसरिद्देवतानांप्रीतयेआभिस्तिलतण्डुलाज्याहुतिभिर्वह्नौहव
नङ्करिष्ये ॥ ओंआ॒श्विना॒तेजसा० ॥ ओंअश्विन्यैनमःस्वाहा ॥ इदमश्वि० ॥
४७ ॥ ओंय॒मायत्वा० ॥ ओंभरण्यैनमःस्वाहा । इदंभ० । ४८ ॥ ओंअ॒
ग्निन्दूतम्पुरोद॒धे० ॥ ओंकृत्तिकायैनमःस्वाहा ॥ इदंकृ० । ४९ । ओंब्रह्म
जज्ञा॒नम् ॥ ओंरोहिण्यैनमःस्वाहा । इदंरो० । ५० ॥ ओंसोमोधे॒नुष्ठं
ओंमृगशिरसेनमःस्वाहा ॥ इदंमृ० । ५१ ॥ ओंनमस्ते॒हरसेशो॒चिषे॒० ॥

ओंआर्द्रायैनमःस्वाहा ॥ इदमार्द्रा० । ५२ ॥ ओंअदिति॒र्द्यौः; ॥ ओंपुनर्वस
वेनमःस्वाहा ॥ इदम्पुन० ॥ ५३ ॥ ओंऽबा॒च्चस्पतिंऽब्बि॒श्वक॑० । ओंपुष्यायनमः
स्वाहा ॥ इदंपु० । ५४ ॥ ओंनमोस्तुस॒र्प्पेऽभ्य॒÷॥ ओंश्लेषायैनमःस्वाहा ॥
इदंश्लेषा० ॥ ५५ ॥ ओंपि॒तृभ्भ्यं÷स्वधा॒यिभ्भ्यं÷ ॥ ओंमघायैनमः
स्वाहा ॥ इदंम० ॥ ५६ ॥ ओंभग॒प्रणे॒तर्भगसत्य० ॥ ओंपूर्वफल्गुन्यैनमः
स्वाहा ॥ इदंपूर्वफल्गुन्यै ॥ ५७ ॥ ओंदैऽव्यांहोताराऊ॒र्द्ध्वं० ॥ ओंउत्तरफल्गुन्यै
नमःस्वाहा ॥ ५८ ॥ इदमुत्तराफा०॥ ओंवि॒ऽभ्राड्बृहत्पिबतु ॥ ओंहस्तायनमः
स्वाहा ॥ इदंह० ॥ ५९ ॥ ओंइन्धानास्त्वा० ॥ ओंचित्रायैनमःस्वाहा ॥
इदाञ्चि० ॥ ६० ॥ ओंऽवातोवा॒मनोवा० ॥ ओंस्वात्यैनमःस्वाहा ॥ इदंस्वा० ॥ ६१ ॥

ओंइन्द्राग्नीऽआगंतच्छं ॥ ओंविशाखायैनमःस्वाहा ॥ इदम्बि० ॥ ६२ ॥
ओंनमोमित्रस्यव्वरुणस्य० ॥ ओंअनुराधायैनमःस्वाहा ॥ इदमनु० ॥ ६३ ॥
ओंत्रातारमिन्द्रम् ॥ ओंज्येष्ठायैनमःस्वाहा ॥ इदंज्येष्ठायै ॥ ६४ ॥ ओंमातेव
पुत्रम्० ॥ ओंमूलायनमःस्वाहा ॥ इदंमू० ॥ ६५ ॥ ओंअपोदेवामधुमतीर. ॥
ओंपूर्वाषाढायैनमःस्वाहाइदम्पूर्वा० ॥ ६६ ॥ ओंविष्णो;कर्मांणि० ॥ ओंउत्तरा
षाढायै० ॥ इदमुत्त. ॥ ६७ ॥ ओंब्रह्मंजज्ञानम् ॥ अभिजितेनमःस्वाहा ॥ इदम
भि० ॥ ६८ ॥ ओंव्विष्णोरराटमसि० ॥ ओंश्रवणायनमःस्वाहा ॥ इदंश्रव० ॥ ६९ ॥
व्वसों;पवित्रंमसिशतधांरम् ॥ ओंधनिष्ठायैनमःस्वाहा ॥ इदन्धनि० ॥ ७० ॥
ओंइमम्मेव्वरुण० ॥ ओंशतभिषजेननःस्वाहा ॥ इदंशतभि० ॥ ७१ ॥

ॐप्रवऽइन्द्राय० ॥ ॐपूर्वभाद्रपदाभ्योनमः०स्वाहा । इदंपूर्वभा० ॥ ७२ ॥ ॐमानोमहान्तमुत० ॥ ॐउत्तरभाद्रपदाभ्योनमःस्वाहा ॥ इदमुत्तरभाद्र० ॥ ७३ ॥ ॐरेवतीरमद्ध्वम् ॥ ॐरेवत्यैनमःस्वाहा ॥ इदंरेवत्यै ॥ ७४ ॥ ॐतत्सत्कृतेनानेनहवनेनाश्विन्याद्यष्टाविंशतिनक्षत्रदेवतास्सुप्रीयन्ताम् ॥ यथावाणग्रहाराणामित्यभिषेकः ॥ अथमेषादिद्वादशराशिहोमः ॥ ॐप्रजापतयेचव्वायवेच ॥ ओंमेषायनमःस्वाहा ॥ इदंमेषा० ॥ ७५ ॥ ॐप्रैतुब्रह्मणस्पतिः ॥ ॐवृषायनमःस्वाहा ॥ इदम्वृ० ॥ ७६ ॥ ओंकामंङ्कामदुघे० ॥ ओंमिथुनायनमःस्वाहा ॥ इदंमिथु० ॥ ७७ ॥ ओंसोमायकुलुङ्ग० ॥ ओंकर्कायनमःस्वाहा ॥ इदङ्कर्का० । ७८ ॥ ओंआत्मन्नुपस्थेन० ।

ओंसिंहायनमःस्वाहा ॥ इदा॒स० । ७९ ॥ ओंक॒न्याऽइववह॒तु० ॥ ओंक
न्यायैनमःस्वाहा ॥ इदंकन्यायै ॥ ८० ॥ ओंबी॒भ॒त्सायैपौल्क॒सम् ॥ ओंतुला
यैनमःस्वाहा ॥ इदन्तु॒लायै । ८१ । ओंयेवा॒मीरोचने० ॥ ओंवृश्चिकायनमः
स्वाहा ॥ इदम्वृश्चिकाय ॥ ८२ ॥ ओंधन्व॑ना॒गाधन्व॑ना॒जिम् ॥ ओंधनु
षेनमःस्वाहा । इदन्धनुषे ॥ ८३ ॥ ओंपु॒रु॒ष॒मृ॒गश्चन्द्र० । ओंमकरायनमः
स्वाहा ॥ इदम्मक० ॥ ८४ ॥ ओंकु॒म्भोऽवनि॒ष्ठुर्ज्जनि॒ता० । ओंकुम्भायन
मःस्वाहा ॥ इदंकुम्भा० ॥ ८५ । ओंसु॒प॒र्णःपार्ज्जन्य० । ओंमीनायनमः
स्वाहा । इदम्मी० ॥ ८६ । ओंतत्सत्कृतेनानेनहवनेनमेषादिद्वादशराशयो
देवताःप्रीयन्ताम् ॥ यथावाणेतिपूर्ववत् ॥ अथविष्कुम्भादिसप्तविंशतियो

गहोमः ॥ ओंयेगेयोगेत॒वस्तंरम् ॥ ओंविष्कुम्भायनमःस्वाहा ॥ इदम्वि० ॥ ८७ ॥
ओंप्रैतु॒ब्रह्मण॒स्पतिः ॥ ओंप्रीतयेनमःस्वाहा ॥ इदम्प्री० ॥ ८८ ॥ ओंआ
नोभ॒द्राः ॥ ओंआयुष्मतेनमःस्वाहा ॥ इदमायु० ॥ ८९ ॥ ओंश्रीश्चतेल॒० ॥
ओंसौभाग्यायनमःस्वाहा ॥ इदंसौभा० ॥ ९० ॥ ओंव्या॒य॒ऽव्यैर्वा॒य॒ऽव्या
न्याप्नोति० ॥ शोभनायनमःस्वाहा ॥ इदंशो० ॥ ९१ ॥ ओंअ॒यम्पु
रोभु॒व॒स्तस्यं० ॥ ओंअतिगण्डायनमःस्वाहा ॥ इदमतिगं० ॥ ९२ ॥
ओंसु॒प॒र्णोसिग॒रुत्मान्० ॥ ओंसुकर्मणेनमःस्वाहा ॥ इदंसुकर्मणे ॥ ९३ ॥
ओंइ॒हरति॒रिहंर० ॥ ओंधृतयेनमःस्वाहा ॥ इदंधृतये ॥ ९४ ॥ ओंयत्तेग॒
त्राद॒ग्निनां० ॥ ओंशूलायनमःस्वाहा ॥ इदंशू० ॥ ९५ ॥ ओंघौरांसी

त्पूर्वं० ॥ ओंगण्डायनमःस्वाहा ॥ इदङ्गण्डाय ॥ ९६ ॥ ओंमूर्द्धानन्दि
वः ॥ ओंवृद्धयेनमःस्वाहा ॥ इदंम्वृ० ॥ ९७ ॥ ओंध्रुवाक्षितिर्ध्रुवयोनिः ॥
ओंध्रुवायनमःस्वाहा ॥ इदन्ध्रु० ॥ ९८ ॥ ओंइन्द्रस्यक्क्रोडोदित्यै० ॥
ओंव्याघातायनमःस्वाहा ॥ इदंव्या० ॥ ९९ ॥ ओंहꣳसःशुचिषत् ॥
ओंहर्षणायनमःस्वाहा ॥ इदंहर्ष० ॥ १०० ॥ ओंमहाँ२॥ऽइन्द्रोवज्रं० ॥
ओंवज्रायनमःस्वाहा ॥ इदंवज्राय ॥ १०१ ॥ ओंयाऽओषधीःपूर्वा० ॥
ओंसिद्धयेनमःस्वाहा ॥ इदंसिद्ध० ॥ १०२ ॥ ओंपितृब्भ्यः स्वधायिब्भ्यः
ओंव्यतीपातायनमःस्वाहा ॥ इदंव्यतीपाताय ॥ १०३ ॥ ओंअवेष्टादन्द
शूकाः ॥ ओंवरीयसेनमःस्वाहा ॥ इदम्वरीयसे ॥ १०४ ॥ ओंइमम्मे

व्वरुण० ॥ ओंपरिघायनमःस्वाहा ॥ इदम्परि. ॥ १०५ ॥ ओंयज्जाग्ग्रत; ॥ ओंशिवायनमःस्वाहा ॥ इदंशिवाय. ॥ १०६ ॥ ओंगणानान्त्वा० ॥ ओंसिद्धायनमःस्वाहा ॥ इदंसि० ॥ १०७ ॥ ओंरक्षोहणंम्बलगहनम् ॥ ओंसाध्यायनमःस्वाहा ॥ इदंसा० ॥ १०८ ॥ ओंपरिंतेदूडंभोरथो० ॥ ओंशुभायनमःस्वाहा ॥ इदंशुभा० ॥ १०९ ॥ ओंअथैतानंष्टौ० ॥ ओंशुक्लायनमःस्वाहा ॥ इदंशु० ॥ ११० ॥ ओंब्रह्मंणस्पते० ॥ ओंब्रह्मणेनमःस्वाहा । इदंब्र० ॥ १११ ॥ ओंकुतस्त्वमिन्दंम् ॥ ओंऐन्द्रायनमःस्वाहा । इद ॥ मैन्द्राय ॥ ११२ ॥ ओंअनांधृष्टापुरस्तां ॥ ओंबैधृतयेनमःस्वाहा ॥ इदंवैधृतये ॥ ११३ ॥ ओंतत्सत्कृतेनानेनहवनेनविष्कुम्भादिसप्तविंशतियोगाः

प्रीयन्ताम् ॥ यथावाप्नोतिपूर्ववत् ॥ अथकरणहोमः ॥ ओंभद्रङ्कर्णेभि;० ॥ ओंववादिकरणेभ्योनमःस्वाहा ॥ इदम्ववादिकरणेभ्यः ॥ ११४ ॥ अथगङ्गादितीर्थहोमः ॥ ओंपञ्चनद्य;सरस्वती० ॥ ओंगङ्गादिनदीभ्योनमःस्वाहा ॥ इदङ्गङ्गादिनदीभ्यः ॥ ११५ ॥ अथसप्तर्षिहोमः ॥ ओंसप्तऽऋषय; ॥ ॐसप्तर्षिभ्योनमःस्वाहा ॥ इदंसप्तर्षिभ्यः ॥ इतिलक्षनवग्रहमखहवनप्रयोगः ॥

अथकोटिनवग्रहमखहवनप्रयोगविधिर्लिख्यते॥ओंतत्सत्० ॥ आयुष्कामार्थंपुष्टिकामार्थंयोगक्षेमार्थंद्विपदचतुष्पदशान्त्यर्थंसप्रासादविष्णुमूर्त्तेस्थिरप्रतिष्ठायागकर्माङ्गभूताष्टवसूनांप्रीतयेआभिस्तिलतण्डुलाज्याहुतिभिर्वन्हौहवनंकरिष्ये ॥ ओंव्वसंवस्त्वाकृरावन्तु० ॥ ओंध्रुवायनमःस्वाहा ॥ इदन्ध्रु० ॥ ११७ ॥

ओंव्वस॑व॒स्त्वाधू॑पयन्तु० ॥ ओंअध्वरायनमःस्वाहा ॥ इदमध्व० ॥ ११८ ॥
ओंव्वस॑व॒स्त्वाच्छृ॑रावन्तु० ॥ ओंसोमायनमःस्वाहा ॥ इदंसो० ॥ ११९ ॥
ओंव्वसो॑;प॒वित्र॑मासिश॒तधा॑रम्० ॥ ओंआपायनमःस्वाहा ॥ इदमापाय ॥
ओंव्वसो॑;प॒वित्र॑मसि॒द्यौरा॑सि० ॥ ओंअनिलायनमःस्वाहा ॥ इदमनिलाय ॥१२१॥
ओंव्वाजे॑बाजेवतव्वाजि० ॥ ओंअनलायनमःस्वाहा ॥ इदमनलाय ॥ १२२ ॥
ओंव्वात॑रꣳहाभव० ॥ ओंप्रत्यूषायनमःस्वाहा ॥ इदम्प्र. ॥ १२३ ॥
ओंव्वा॒मम॒द्यसवि॒तव्वा॑म० ॥ ओंप्रभासायनमःस्वाहा ॥ इदम्प्र० ॥ १२४ ॥
ओंकृतेनानेनहवनेनाऽष्टौवसवःप्रीयन्ताम् ॥ यथावाणेलिपू० ॥ ओंतत्सत्०
सप्रासादविष्णुमूर्तेस्थिरप्रतिष्ठायागकर्म्माङ्गभूतद्वादशादित्यप्रीतयेआभिस्तिलतण्डु

लाज्याहुतिभिर्वन्हौहवनङ्करिष्ये ॥ ओंआकृष्णेन॒रजसा० ॥ ओंधात्रेनमःस्वाहा० ॥
इदन्धात्रे ॥ १२५ ॥ ओंअ॒द्यादे॒वा॒ऽउदि॑ता० ॥ ओंमित्रायनमःस्वाहा ॥
इदम्मि० ॥ १२६ ॥ ओंआ॒स॒न्दीरू॒प२७० ॥ ओंअर्यम्णेनमःस्वाहा ॥ इद
मर्यम्णे ॥ १२७ ॥ ओंअश्वावतीर्ग्गो॒मतीः ॥ ओंरुद्रायनमःस्वाहा ॥ इदं
रुद्राय ॥ १२८ ॥ ओंआविर्म्म॒र्य्या० ॥ ओंवरुणायनमःस्वाहा ॥ इदम्बरुणाय
॥ १२९ ॥ ओंअषा॑ढय्यु॒त्सु० ॥ ओंसूर्यायनमःस्वाहा ॥ इदंसूर्याय ॥ १३० ॥
ओंअषा॑ढासि॒सह॑माना० ॥ ओंभगायनमःस्वाहा ॥ इदम्भगाय ॥ १३१ ॥ ओंआ
युर्म्मेपाहिप्रा० ॥ ओंविवस्वतेनमःस्वाहा ॥ इदम्वि० ॥ १३२ ॥ ओंत्रा॒
कृत्मन्नु॒पस्त्थेन० ॥ ओंपूषणेनमःस्वाहा ॥ इदम्पूष्णे ॥ १३३ ॥ ओंअन्तरस्ते

द्यावापृथिवी० । ओंसवित्रेनमःस्वाहा ॥ इदंसवित्रे ॥ १३४ ॥ ओंअवेंष्टादन्दशूकाः ॥ ओंत्वष्ट्रेनमःस्वाहा ॥ इदंत्वष्ट्रे ॥ १३५ ॥ ओंअदितिर्द्यौर० ॥ ओंविष्णवेनमःस्वाहा ॥ इदम्विष्णवे ॥ १३६ ॥ ओंतत्सत्०कृतेनानेनहवनेन द्वादशादित्याःप्रीयन्तां ॥ यथावाणेत्याभिषेकः ॥ अथचैत्रादिमासहोमः ॥ ओंमद्येहेत्यादि० । सप्रासादविष्णुमूर्त्तेस्थिरप्रतिष्ठायागकर्म्माङ्गभूतद्वादशमासानांप्रीतये आभिस्तिलतण्डुलाज्याहुतिभिर्वन्हौहवनमहङ्करिष्ये ॥ ओंधन्न्वंनागाधन्न्वं. ॥ ओंचैत्रायनमःस्वाहा ॥ इदञ्चैत्राय ॥ १३७ ॥ ओंइन्द्राग्नीआगतं२७ ॥ ओंवैशाखायनमःस्वाहा ॥ इदम्वैशाखाय ॥ १३८ ॥ ओंत्रातारमिन्द्रम् ॥ ओंज्येष्ठायनमःस्वाहा ॥ इदंज्ज्ये. ॥ १३९ ॥ ओंअपोदेवामधुमतीर. ॥ ओंआषाढायनमः

स्वाहा ॥ इदमाषा. ॥ १४० ॥ ओंविष्णोरराटम्. ॥ ओंश्रावणायनमःस्वाहा ॥
इदंश्रा. ॥ १४१ ॥ ओंप्रवऽइन्द्राय. ॥ ओंभाद्रपदायनमःस्वाहा ॥ इदम्भाद्र. ॥ १४२॥
ओंअश्विनातेजसाचक्षु÷ ॥ ओंआश्विनायनमःस्वाहा ॥ इदमाश्वि. ॥ १४३ ॥
ओंअग्निन्दूतम् ॥ ओंकार्त्तिकायनमःस्वाहा ॥ इदङ्कार्त्तिकाय ॥ १४४ ॥ ओंसो
मोंधेनु७. ॥ ॐमार्गशीर्षायनमःस्वाहा ॥ इदम्मार्गशी. ॥ १४५ ॥ ओंवाचस्पति
म्विश्व. ॥ॐपौषायनमःस्वाहा॥इदम्पौषा. ॥ १४६ ॥ ॐपितृभ्यं÷स्वधायिभ्यः॥
ॐमाघायनमःस्वाहा ॥ इदंमा. ॥ १४७ ॥ ॐभगप्रणेतर्भग. ॥ ॐफाल्गुनाय
नमःस्वाहा ॥ इदंफाल्गु. १४८ ॥ ॐतत्सत्.कृतेनानेनहवनेनचैत्रादिद्वादशमा
सदेवताःप्रीयन्ताम् ॥ यथावाणेतिपूर्ववत् ॥ अथद्वादशविश्वेदेवहोमः ॥ ॐम

द्येहेत्यादि. सप्रासादविष्णुमूर्तौस्थिरप्रतिष्ठायागकर्माङ्गभूतद्वादशविश्वेदेवप्रीतयेअभिस्तिलतण्डुलाज्याहुतिभिर्वह्नौहवनमहङ्करिष्ये ॥ तत्रमन्त्राः ॥ ॐब्बिश्वेदेवा; शृणुते. ॥ १४९ ॥ ॐक्रतवेनमःस्वाहा ॥ इदंक्रतु. ॥ ॐब्बिश्वेऽअद्यमरुतो. ॥ ॐदक्षायनमःस्वाहा ॥ इदन्दक्षा. ॥ १५० ॥ ॐब्बिश्वेभि;सोम्यम् ॥ ॐसत्यायनमःस्वाहा ॥ इदंसत्याय ॥ १५१ ॥ ॐविश्वानिदेवसवितर्दुरितानि. ॥ ॐवसवेनमःस्वाहा ॥ इदम्वस. ॥ १५२ ॥ ओंब्बिभक्तारंᳮहवामहे. ॥ ओंकामाय नमःस्वाहा ॥ इदङ्कामा. ॥ १५३ ॥ ओंब्बिश्वतश्चक्षु; ॥ ओंध्रुवायनमःस्वाहा ॥ इदन्ध्रुवाय ॥ १५४ ॥ ओंबीभत्सायैपौल्क. ॥ ओंलोचनायनमःस्वाहा ॥ इदं लोचनाय ॥ १५५ ॥ ओंब्बिश्वकर्म्मोब्बिमना. ॥ ✿ ✿ ✿ ✿

ओँपुरूरवसेनमःस्वाहा ॥ इदम्पुरूरवसे ॥ १५६ ॥ * * * *
ॐव्वाचस्पतिंव्विश्व० ॥ ॐमार्द्रवसेनमःस्वाहा ॥ इदंमार्द्र० ॥ १५७ ॥
ॐव्विश्वंम्मन्र्हविषा० ॥ ॐअध्वरायनमःस्वाहा ॥ इदमध्वरा० ॥ १५८ ॥
ॐव्विश्वकर्म्माह्यजनिष्ठ० ॥ ॐएकशृङ्गायनमःस्वाहा ॥ इदमेक० ॥ १५९ ॥
ॐव्विश्वेदेवासऽआगंत० ॥ ॐसुधायनमःस्वाहा ॥ इदंसुधा० ॥ १६० ॥
ॐतत्सत्०कृतेनानेनहवनेनद्वादशविश्वेदेवादेवताःप्रीयन्ताम् ॥ यथावाणेत्यभिषेकः ॥ अथाऽष्टमातृहोमः ॥ तत्रमन्त्राः ॥ ॐमाताचंतेपिताचंतेग्रंम् ॥
ॐब्राह्म्यैनमःस्वाहा ॥ इदम्ब्रा० ॥ १६१ ॥ ॐमाताचंतेपिताचंतेग्रे० ॥
ॐमाहेश्वर्य्यैनमःस्वाहा ॥ इदम्माहे० ॥ १६२ ॥ ॐमामांहिंसी० ॥

दीयसूक्तेनगन्धानुलेपनमाल्याभरणपट्टवस्त्रयज्ञोपवीतधूपदीपनैवेद्ये ताम्बूलपूगफल
दक्षिणादिभिरभ्यर्च्य ॥ सुवर्णमूर्तिकलशोपरिसंस्थाप्यपुष्पाणिगृहीत्वाप्रार्थनाङ्कुर्यात् । सर्वदेवाधिदेवाश्चसर्वसिद्धिप्रदायकाः ॥ भक्त्याकृतामिमाम्पूजाङ्गृह्णन्तुमखकर्मणि ॥ १ ॥ इदंफलंमयादेवाःस्थापितम्भवतांपुरः ॥ तेनमेसफलावाप्तिर्भवेज्जन्मनिजन्मनि ॥ २ ॥ मनोरथंसमस्तंमेपूर्णङ्कुरुसुरेश्वर ॥ भवत्पादांबुजेभक्तिर्भूयात्तुभ्यन्नमोनमः ॥ ३ ॥
इतिनवग्रहमण्डलस्थसर्वदेवपूजाविधिः ॥ ततःहवनङ्कुर्यात ॥ यथा ॥ ततोऋत्विजःसामिच्चर्वाज्यैरष्टोत्तरसहस्राऽष्टोत्तरशताऽष्टाविंशत्यष्टौवान्यतमसङ्ख्ययापञ्च कुण्डीपक्षेविभज्यहुत्वाबलिन्दत्वापूर्णाहुतिञ्जुहुयुः ॥ एतन्मन्त्रादिकंसामान्यप्र

ओँपुरूरवसेनमःस्वाहा ॥ इदम्पुरूरवसे ॥ १५६ ॥ * * * *
ॐव्वाचस्पतिंव्विश्व० ॥ ॐमार्द्रवसेनमःस्वाहा ॥ इदंमार्द्र० ॥ १५७ ॥
ॐव्विश्वम्मनर्हविषा० ॥ ॐअध्वरायनमःस्वाहा ॥ इदमध्वरा० ॥ १५८ ॥
ॐव्विश्वकर्म्माह्यजनिष्ठ० ॥ ॐएकशृङ्गायनमःस्वाहा ॥ इदमेक० ॥ १५९ ॥
ॐव्विश्वेदेवासऽआगत० ॥ ॐसुधायनमःस्वाहा ॥ इदंसुधा० ॥ १६० ॥
ॐतत्सत्०कृतेनानेनहवनेनद्वादशविश्वेदेवादेवताःप्रीयन्ताम् ॥ यथावाणेत्यभिषेकः ॥ अथाऽष्टमातृहोमः ॥ तत्रमन्त्राः ॥ ॐमाताचतेपिताचतेग्रम् ॥
ॐब्राह्म्यैनमःस्वाहा ॥ इदम्ब्रा० ॥ १६१ ॥ ॐमाताचतेपिताचतेग्र० ॥
ॐमाहेश्वर्य्यैनमःस्वाहा ॥ इदम्माहे० ॥ १६२ ॥ ॐमामांहिंसी० ॥

पञ्चरत्नसर्वौषध्यादितत्तन्मन्त्रेणनिःक्षिप्य ॥ ताम्रमयेणपात्रेणपिधायतस्मिन्पात्रेधान्यंपरिपूर्य ॥ मनोजूतिरितिमन्त्रेणप्रतिष्ठाप्य ॥ पाद्यादिकन्दत्वाषोडशोपचारेणवापञ्चोपचारेणसम्पूज्य ॥ ततः ॥ ॐसमुद्रस्यत्वावकयाग्नेइत्यादिपूर्वोक्तैरेकादशवैदिकमन्त्रैर्लक्ष्मीनारायणादिपञ्चस्वर्णमयीनांप्रतिमानामग्न्युत्तारणङ्कुर्यात् ॥ ततः ॥ ॐमद्येहेत्यादि० सप्रासादविष्णुमूर्तौस्थिरप्रतिष्ठाकर्म्माङ्गभूतमग्न्युपघातधनजातदोषनिवारणार्थंलक्ष्मीनारायणादिदेवताप्रतिमाविशुद्ध्यर्थमग्न्युत्तारणमहङ्करिष्ये ॥ ततः

* * *

पञ्चगव्येनमूर्त्तिंस्नापयित्वा ॥ ओंअयम्पुरोभुवइत्यादिपञ्चभिर्मन्त्रैःप्राणप्रतिष्ठाङ्कृत्वा ॥ मन्त्रानाह ॥ ओंअयम्पुरोभुवस्तस्यप्राणोभौवायनोव्वं

सन्तः । प्प्राणायनोगायत्रीव्वासन्तीगायत्र्यैगायत्रङ्गायत्त्रा । दुपांछंशुरुपांछं
शोस्त्रिवृत्त्रिवृतोरथन्तरम्व्वसिंष्ठऽऋषिः प्प्रजापतिगृहीतयात्त्वयाप्प्राणङ्गृह्णामि
प्प्रजाब्भ्यः ॥ १ ॥ सं. । अ. । १३ । मं. । ५४ । ओंअयन्दक्षिणाव्विश्वक
र्म्मातस्यमनोव्वैश्वकर्म्मणङ्ग्रीष्मोमानसस्त्रिष्टुब्ग्ग्रैष्मीत्रिष्टुभः स्वारछं
स्स्वारादन्तर्य्यामोन्तर्य्यामात्पञ्चदशःपञ्चदशाद्बृहद्भरद्वाजऽऋषिः प्प्रजापतिगृ
हीतयात्त्वयामनोगृह्णामिप्प्रजाब्भ्यः ॥ २ ॥ सं. । अ. १३ । मं. । ५५ ॥
ओंअयम्पश्चाद्विश्वव्व्यचास्तस्यचक्षुर्व्वैश्वव्व्यचसंव्वर्ष्षाश्चाक्षुष्योजगतीव्वार्ष्षीज
गत्त्याऽऋक्सममृक्समाच्छुक्रःशुक्रात्सप्तदशःसप्तदशाद्वैरूपञ्जमदग्निऽर्ऋषिः
प्रजापतिगृहीतयात्त्वयाचक्षुर्गृह्णामिप्रजाब्भ्यः । ३ ॥ सं. । अ. १३ । मं. । ५६ ।

ओंइदमुत्तरात्स्वस्तस्यश्रोत्रꣳसौवꣳशरच्छ्रौत्र्यनुष्टुप्प्स्वारद्यनुष्टुभंऐडमैडान्म
न्थीमन्थिनंऽएकविꣳशऽएकविꣳशाद्वैराजम्विश्वामित्रऽऋषिः प्प्रजापतिगृ
हीतयात्त्वयाश्श्रोत्रङ्गृह्णामिप्प्रजाभ्यः ॥ ४ ॥ सं. । अ. । १३ । मं. । ५७ ॥
ओंइयमुपरिमतिस्तस्यैव्वाग्घात्याहेमन्तोव्वाच्च्यः पङ्क्तिर्हैमन्तीपङ्क्त्यैनिधनंव
न्निधनवतऽआग्ग्रयणऽआग्ग्रयणात्त्रिणवत्त्रयस्त्रिꣳशौत्त्रिणवत्त्रयास्त्रिꣳशाभ्याꣳ
शाक्करैवतेव्विश्वकर्म्मऽऋषिः प्प्रजापतिगृहीतयात्त्वयाव्वाचङ्गृह्णामिप्प्रजाभ्यों
लोकन्ताऽइन्द्रम् । ५ ॥ सं. । अ. । १३ । मं. । ५८ । एभिर्मन्त्रैः
प्राणप्रतिष्ठांविधाय ॥ मनोजूतिरितिप्रतिष्ठाप्य ॥ पाद्यादीनिदत्वा ॥ पञ्च
नद्यइतिपञ्चामृतेनसंस्नाप्य ॥ ओंइमम्मेगङ्गेइतिशुद्धजलेनप्रक्षाल्य ॥ ततस्त

दीयसूक्तेनगन्धानुलेपनमाल्याभरणपट्टवस्त्रयज्ञोपवीतधूपदीपनैवेद्ये ताम्बूलपूगफल दक्षिणादिभिरभ्यर्च्य ॥ सुवर्णमूर्तिकलशोपरिसंस्थाप्यपुष्पाणिगृहीत्वाप्रार्थनाङ्कुर्यात् । सर्वदेवाधिदेवाश्चसर्वसिद्धिप्रदायकाः ॥ भक्त्याकृतामिमाम्पूजाङ्गृह्णन्तुमखकर्मणि ॥ १ ॥ इदंफलंमयादेवाःस्थापितम्भवतां पुरः ॥ तेनमेसफलावाप्तिर्भवेज्जन्मनिजन्मनि ॥ २ ॥ मनोरथंसमस्तं मेपूर्णङ्कुरुसुरेश्वर ॥ भवत्पादांबुजेभक्तिर्भूयात्तुभ्यन्नमोनमः ॥ ३ ॥ इतिनवग्रहमण्डलस्थसर्वदेवपूजाविधिः ॥ ततःहवनङ्कुर्यात् ॥ यथा ॥ ततो ऋत्विजःसामिच्चर्वाज्यैरष्टोत्तरसहस्राऽष्टोत्तरशताऽष्टाविंशत्यष्टौवान्यतमसङ्ख्ययाप्रत्यकुण्डीपक्षेविभज्यहुत्वाबलिन्दत्वापूर्णाहुतिञ्जुहुयुः ॥ एतन्मन्त्रादिकंसामान्यप्र

॥ १३ ॥ ओंपुष्ट्यैनमःस्वाहा । इदंपु० ॥ १४ ॥ ओंतुष्ट्यैनमःस्वाहा ।
इदंतु० ॥ १५ ॥ ओंआत्मकुलदेवतायैनमःस्वाहा । इदमात्म० ॥ १६ ॥
ओंकृतेनानेनहवनेनषोडशमातरःप्रीयन्ताम् । अथमङ्गलाद्यऽष्टयोगिनीहोमः ।
ओंमङ्गलायैनमःस्वाहा । इदम्म० ॥ १ ॥ ओंपिङ्गलायैनमःस्वाहा । इदंपिङ्ग० ॥२॥
ओंधान्यायैनमःस्वाहा । इदंधा० ॥३॥ ओंभ्रामर्यैनमःस्वाहा ॥ इदंभ्रा० ॥ ४ ॥
ॐभद्रिकायैनमःस्वाहा ॥ इदंभद्रि. ॥ ५ ॥ ॐउल्कायैनमःस्वाहा ॥ इदमुल्का.॥६
ॐसिद्धायैनमःस्वाहा ॥ इदंसि. ॥ ७ ॥ ॐसङ्कटायैनमःस्वाहा ॥ इदंसं. ॥ ८ ॥
ॐकृतेनानेनहवनेनमङ्गलाद्यष्टयोगिन्यःप्रीयन्ताम् ॥ अथसर्वदेवताहोमः ॥ ॐनक्षत्रेभ्यःस्वाहा
॥ ॐअन्हेस्वाहा ॥ ॐरात्रयेस्वाहा ॥ ॐअहोरात्रेभ्यःस्वाहा ॥

ॐअर्द्धमासेभ्योनमःस्वाहा ॥ ॐमासेभ्योनमःस्वाहा ॥ ॐऋतुभ्योनमःस्वाहा ॥ ॐसम्वत्सरायस्वाहा ॥ ओंद्यावापृथिवीभ्यान्नमःस्वाहा ॥ ओंदिवस्पतयेसूर्यायस्वाहा ॥ ओंरात्रिपतयेचन्द्रायस्वाहा ॥ ओंदेवेभ्यःस्वाहा ॥ ओंवसुभ्यःस्वाहा ॥ ओंरुद्रेभ्यःस्वाहा ॥ ओंआदित्येभ्यःस्वाहा ॥ ओंमरुद्भ्यःस्वाहा ॥ ओंविश्वेभ्यःस्वाहा ॥ ओंमूलेभ्यःस्वाहा ॥ ओंशाखाभ्यःस्वाहा ॥ ओंवनस्पतिभ्यःस्वाहा ॥ ओंपत्रेभ्यःस्वाहा ॥ ओंपुष्पेभ्यःस्वाहा । ओंफलेभ्यःस्वाहा । ओंओषधीभ्यःस्वाहा । ओंस्वर्गेभ्यःस्वाहा । ओंभुवेस्वाहा । ओंपातालेभ्यःस्वाहा । ओंनागेभ्यःस्वाहा । ओंपक्षिभ्यःस्वाहा । ओंकीटेभ्यःस्वाहा । ओंयोगेभ्यःस्वाहा । ओंयोगतरेभ्यःस्वाहा । ओंउपनिषद्भ्यःस्वाहा । ओंवेदब्रह्मणेनमःस्वाहा । ओंस

वेंभ्योदेवेभ्योनमःस्वाहा । ओंतत्सत् ०कृतेनानेनहवनेनसर्वेदेवाःप्रीयन्ताम् । यथावाणेतिपूर्ववदाभिषेकः । ततःमूर्द्धानन्दिवइतिमन्त्रेणपूर्णाहुतिन्दद्यादितिकोटिनवग्रहमखहवनप्रकारः । अथग्रहाणाम्बलिदानम् । ओंसूर्यायनमःगुडौदनंसमर्पयामि । ओंसोमायघृतपायसं० । ओंकुजायमसूरान्नम् । ओंबुधायक्षीरौदनंसमर्प० । ओंबृहस्पतयेदध्योदनंसमर्प० । ॐशुक्रायघृतौदनंसमर्प० । ओंशनैश्चरायअजामांसंसमर्प० । ॐराहवेपायसबलिंसमर्प० । ॐकेतवेचित्रौदनंसमर्प० । अन्येभ्यःपायसबलिंदद्यात् । इतिग्रहदेवताभ्योबलिदानप्रयोगविधिःसमाप्तः ॥ अथएकलिङ्गतोभद्रस्योद्धारमाह । तदुक्तङ्गौरीतिलके । तिर्यगूर्ध्वगतारेखाःकार्याःस्निग्धास्त्रयोदश । कोणेन्दुस्त्रिपदःकार्यःशृङ्खलास्त्रिप

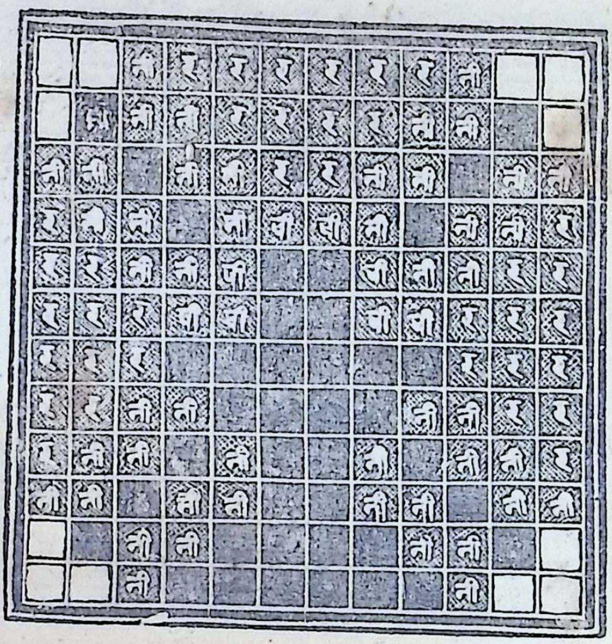

		ती	र	र	र	र	र	र	ती		
	ती	ती	ती	र	र	र	र	ती	ती		
ती	ती		ती	ती	र	र	ती	ती		ती	ती
र	[illegible]	ती		ती	ती	ती	ती		ती	ती	र
र	र	ती	ती	पी			ती	ती	ती	र	र
र	र	र	ती	ती			ती	ती	र	र	र
र	र	र							र	र	र
र	र	ती	ती					ती	ती	र	र
र	ती	ती		ती			ती		ती	ती	र
ती	ती		ती	ती			ती	ती		ती	ती
		ती	ती					ती	ती		
		ती							ती		

दाःस्मृताः ॥ १ ॥ वल्लीतुषट्पदानीलाभद्रंरक्तंप्रकल्पयेत् । पदैर्द्वादशभिः स्पष्टमुत्तरेपूर्वदक्षिणे ॥ २ ॥ पश्चिमायांमहारुद्रमष्टाविंशतिकोष्ठकैः । लिङ्गपार्श्वे तथामूर्ध्निअष्टौकोष्ठाःसुपीतकाः ॥ ३ ॥ लिङ्गमेकन्तथागौर्यस्तिस्रःस्युरत्रमण्डले ॥ पूजयेन्मण्डलञ्चैतत्तस्यगौरीप्रसीदति ॥ ४ ॥ इतिएकलिङ्गस्योद्धारः

अथचतुर्लिङ्गतोभद्रंलैङ्गे । रेखास्त्वष्टादशप्रोक्ताश्चतुर्लिङ्गसमुद्भवे । कोणेन्दुस्त्रिपदःश्वेतास्त्रिपदैःकृष्णश्रृङ्खला ॥ १ ॥ वल्लीसप्तपदानीलाभद्रंरक्तञ्चतुष्पदम् । भद्रपार्श्वेमहारुद्रङ्कृष्णमष्टादशैःपदैः ॥ २ ॥ शिवस्यपार्श्वतोवापीङ्कुर्यात्पञ्चपदांसिताम् । एकपदन्तथापीतम्भद्रवप्योस्तुमध्यतः । शिरसिश्रृङ्खलायाश्चकुर्यात्पीतपदत्रयम् । लिङ्गानांस्कंधतःकोष्ठाविंशतीरक्तवर्णकाः ॥ ४ ॥

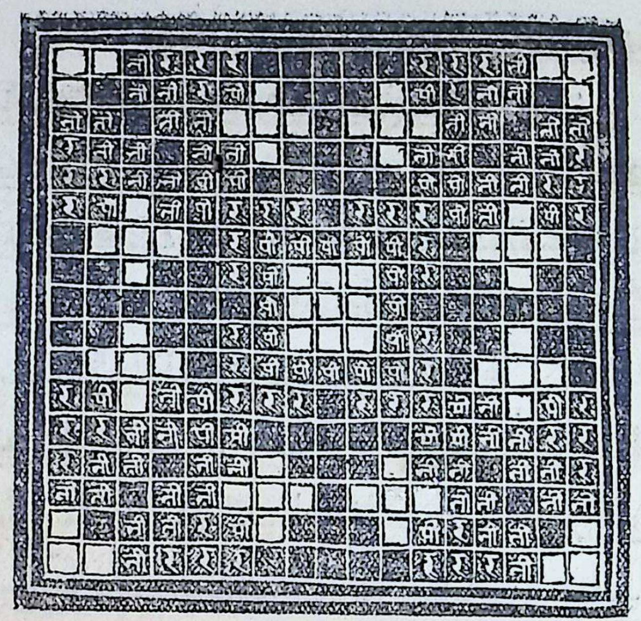

परिधिःपीतवर्णस्तुपदैःषोडशभिःस्मृतः । पदैस्तुनवभिःपश्चाद्रक्तंपद्मंसकर्णिकम् ॥ ५ ॥ इतिचतुर्लिङ्गतोभद्रस्योद्धारः ॥ अथाऽष्टलिङ्गतोभद्रमाग्नेये । चतुर्विंशतिरालेख्यारेखाःप्राग्दक्षिणायताः ॥ कोणेषुशृङ्खलाःपञ्चपदावल्ल्यस्तुपार्श्वतः । पदैर्नवभिरालेख्याश्चतुर्भिर्लघुशृङ्खलाः । लघुवल्ल्यःपदैःषड्भिस्ततोऽष्टादशभिःपदैः ॥ २ ॥ कृत्वालिङ्गानिवाप्यःस्युस्त्रयोदशभिरन्तरा । ततोवीथीद्वयेनैवपीठङ्कुर्याद्विचक्षणः ॥ ३ ॥ तस्यपादाःपञ्चपदैर्द्वारा रायापितथैवच ॥ लिङ्गशृङ्खलयोर्मध्येरक्तम्पञ्चपदान्वितम् ॥ एकाशीतिपदंमध्येपद्मंस्वास्तिकमुच्यते ।४॥ कोणेषुशृङ्खलाःकार्याःपदैस्त्रिभिरतःपरम् । पदैश्चतुर्भिर्दिक्षुस्युर्भद्राण्येषांसमन्ततः ॥ ५ ॥ एकादशपदाबल्योमध्येऽष्टदलमालिखेत् । पद्म

नवपदंह्येवंलिङ्गतोभद्रमुच्यते । ६ ॥ शृङ्खलाःकृष्णवर्णेनवल्लीर्नीलेनपूरयेत् । रक्तेनशृङ्खलालघ्वीर्वल्लीःपीतेनपूरयेत् ॥ ७ ॥ लिङ्गानिकृष्णवर्णानिश्वेतेनाप्यथवापिकाः । पीठंसपादंश्वेतेनपीतेनद्वारपूरणम् । मध्येस्युःशृङ्खलारक्तावल्लीर्नीलेनपूरयेत् । भद्राणिपीतवर्णानिपीतापङ्कजकर्णिका ॥ ९ ॥ दलानिश्वेतवर्णानियद्वाचित्राणिकल्पयेत् । तिस्रोरेखावहिःकार्याःसितरक्तासिताःक्रमात् ॥१०॥ इतिअष्टलिङ्गतोभद्रस्योद्धारः । अथद्वादशलिङ्गतोभद्रस्योद्धारमाह । उक्तञ्च लिङ्गपुराणे । अग्निपुराणेपि । प्रागुदीच्यांगतारेखाःषट्त्रिंशद्विप्रकल्पयेत् । पदानिद्वादशशतंपञ्चविंशतिरेवच ॥ १ ॥ खण्डेन्दुस्त्रिपदःकोणेशृङ्खलाषट्पदैः स्मृता । त्रयोदशपदावल्लीभद्रन्तुनवभिःपदैः ॥ २ ॥ त्रयोदशपदावापीलिङ्ग

मष्टादशैःस्मृतम् । लिङ्गत्रयस्यपङ्क्तौतुशोभाकोष्ठाश्चतुर्दश ॥ ३ ॥ तेषामुपरिपङ्क्तौतुकोष्ठाःसप्तदशैवतु । पूजापङ्क्तिस्तुविज्ञेयापरितःपरिकल्पिता ॥ ४ ॥ पूजापङ्क्त्यन्तरापङ्क्तौकोष्ठाश्चाशीतिसङ्ख्यया । परिधिःसतुविज्ञेयोऽन्तरामण्डलयोर्द्वयोः ॥ ५ ॥ परिध्यन्तरकोष्ठेषुसर्वतोभद्रमालिखेत् । विशेषश्चात्रविज्ञेयःशृङ्खलाषट्पदाभवेत् ॥ ६ ॥ त्रयोदशपदावल्लीभद्रन्तुनवभिःपदैः । पञ्चविंशत्पदावापीपरिधिःषोडशात्मकः । ७ ॥ मध्येनवपदम्पद्मंकर्णिकाकेसरान्वितम् । सत्वंरजस्तमोवर्णःपरितोमण्डलस्यतु ॥ ८ ॥ त्रयःपरिधयःकार्यास्तत्रद्वाराणिकारयेत् । सितेन्दुःशृङ्खलाकृष्णावल्लीनीलाप्रकीर्तिता ॥ ९ ॥ भद्रञ्चैवारुणंज्ञेयंवापीस्याच्छ्वेतवर्णिका । लिङ्गानिकृष्णवर्णानिपार्श्वतोद्वादशैवतु ॥ १० ॥

परिधिःपीतवर्णःस्यात्कमलम्पञ्चवर्णकम् । इतिद्वादशलिङ्गतोभद्रमण्डलोद्धरणम्
अथद्वादशलिङ्गतोभद्रावाहनपूजनप्रयोगविधिर्लिख्यते ❀ । ❀ यदामण्डपमध्ये
सर्वतोभद्रंतदाऽग्नेयकोणेलिङ्गतोभद्रम् ॥ यदाचमध्येलिङ्गतोभद्रंतदावन्हिदेवता
केकोणेसर्वतोभद्रंसंस्थाप्यपूजयेत् । ॐमद्येहेत्यादि॰ सप्रासादविष्णुमूर्त्तेस्थिर
प्रतिष्ठायागकर्म्माङ्गभूतलिङ्गतोभद्रदेवतास्थापनपूजनमहङ्करिष्ये ॥ तत्रतन्म
ध्येकमलोपरिब्रह्माणंस्थापयेत् । ओंएह्येहिसर्वाधिपतेसुरेन्द्रलोकेनसार्द्धम्पितृदे
वताभिः । सर्वस्यधातास्यमितप्रभावोविशत्त्वमन्तःसततंशिवाय ॥ १ ॥ इतिध्यात्वा
ब्रह्मजज्ञानमितिमन्त्रेणब्रह्माणमावाह्यपूजयेत ॥ ब्रह्मजज्ञानमितिमन्त्रस्यवाम
देवऋषिस्त्रिष्टुप्छन्दःब्रह्मादेवताब्रह्मावाहनेपूजनेविनियोगः ॥ ओंब्रह्मंजज्ञा

ऋक॰ । ओंब्रह्मणातेब्रह्मयुजा॰ ॥ यजु॰ । वा. । सं. । अ. । १३ मं. । ३ । ओंब्रह्मजज्ञानम्॰ ॥ साम॰ । छं. सं. अ. १ प्र. ४ द. ३ मं. ६ । ओंब्रह्मजज्ञानम्प्रथमम्पुरस्तात् ॥ अथ॰ । ओंब्रह्मापरंयुज्यतांब्रह्म॰ ॥

नम्प्रथमम्पुरस्ताद्विसीमतःसुरुचोब्बेनऽआवः ॥ समुध्न्याऽउपमाऽअस्यब्बिष्ठाःसतश्चयोनिमसतश्चब्बिवः ॥ १ ॥ ओंभूर्भु॰स्वःब्रह्मणेनमः ॥ ब्रह्माणमावाहयामिपूजयामि ॥ १ ॥ एवमग्रेपिसर्वत्रज्ञेयम् ॥ ब्रह्मपदादुदीचीमारभ्यवायवीपर्यन्तंसोमादयोऽष्टौलोकपालाःस्थापनीयाः ॥ तत्रक्रमः ॥ उत्तरेसोमम् ॥ ओंएह्येहियज्ञेश्वरयज्ञरक्षांविधत्स्वनक्षत्रगणेनसार्द्धम् ॥ सर्वौषधीभिःपितृभिःसहैवगृहाणपूजाम्भगवन्नमस्ते ॥ २ ॥ इतिध्यात्वा ॥ आप्यायस्वेतिमन्त्रस्यगौतमऋषिर्गायत्रीच्छन्दःसोमोदेवतासोमस्थापनेपूजनेविनि

ऋक०। ओंसोमोधेनुंसोमोअर्व.॥ यजु०। वा. सं.। अ.। १२ मं.। ११२ । ओंआप्यायस्वसमेतुते०॥ साम०। छं.। सं.। अ.। १। प्र.।५।द्.।३।मं.।९ ।ओंचन्द्रमाअप्स्वन्तरासुपर्णो०॥ अथ०। ओंसोमोवधूयुरभवदश्वि०॥

* * * * * * * * * *

योगः ॥ ओंआप्प्यायस्व॒समेतुतेव्विश्वत॑ःसोमुव्वृष्ण्यम् ॥ भवावाजस्य सङ्ग॒थे ॥ २ ॥ ओंभूर्भु०सोमायनमःसोममा० ॥ पूज० ॥ २ ॥ ततईशानेईशानं खण्डेन्दौत्रिपदे । ओंएह्येहियज्ञेश्वरनस्त्रिशूलकपालखट्वाङ्गवरेणसार्द्धम् ॥ लोकेन यज्ञेश्वरयज्ञसिद्ध्यैगृहाणपूजांभगवन्नमस्ते ॥ ३ ॥ इतिध्यात्वा ॥ तमीशानमितिमन्त्रस्यगौतमऋषिःजगतीच्छन्दः ईशानोदेवताईशानावाहनेपूजनेविनि

ऋक० । ओंयोरुद्रोऽग्नौयो० ॥ यजु० ॥ वा. सं. अ. २५ मं. १८ ॥ ओंतमीशानञ्जगतस्तस्थु. ॥

साम० ॥ सं.छं.अ.१ प्र.३द.५मं.१ ॥ ओंअभित्वाशूरनोनुमो० ॥ अथ० ॥ ओंईशानान्त्वाभेषजानाम् ॥

योगः ॥ ओंतमीशानञ्जगतस्तस्थुषस्पतिन्धियञ्जिन्वमवसेहूमहेवयम् ॥ पूषानोयथावेदसामसद्वृधेरक्षितापायुरदब्धः स्वस्तये ॥ ३ ॥ ओंभूर्भुवःस्वः ईशानायनमः ॥ ईशानमावाहयामि । पू० ॥ ततःपूर्वेइन्द्रम् ॥ ओंएह्येहिसर्वामरसिद्धसाध्यैरभिष्टुतोवज्रधरामरेश ॥ सम्बीज्यमानोप्सरसाङ्गणेनरक्षाध्वरन्नोभगवन्नमस्ते ॥ इतिध्यात्वा ॥ ४ ॥ त्रातारमितिमन्त्रस्यगौतमऋषिस्त्रिष्टुप्छ

ऋक० । ओंइन्द्रमिद्देवतातये० ॥ यजु० । वा० । सं. । अ. । २० । मं. । ५० । ओंत्रातारमिन्द्रमवितार० ॥ साम० । सं. । छं. । अ. । १ । प्र. । ३ । द. । ५ । मं. । १ ॥ ओंइन्द्रम्वोविश्वतस्परी० ॥ अथ० । ओंइन्द्रेमम्प्रतरंकृधिसजाता० ॥

* * * * * * * * *

न्दःइन्द्रोदेवताइन्द्रावाहनेपूजनेविनियोगः ॥ ओंत्रातारमिन्द्रमवितारमिन्द्रꣳहवेहवेसुहवꣳशूरमिन्द्रम् ॥ ह्वयामिशक्रम्पुरुहूतमिन्द्रꣳस्वस्तिनोमघवाधात्विन्द्रः ॥ ओंभूर्भुवःस्वःइन्द्रायनमः इन्द्रमावाहयामिपू० ॥ ४ ॥ आग्नेये अग्निंसम्पूज्यखण्डेन्दौत्रिपदे ❀ । ❀ ओंएह्येहिसर्वामरहव्यवाहमुनिप्रवीरैरभितोभिगुप्त ॥ तेजोवतालोकगणेनसार्द्धंममाध्वरंरक्षनमोऽस्तुतेग्ने ॥ इतिध्यात्वा । अग्निन्दूतमितिमन्त्रस्यकाण्वोमेधातिथिर्ऋषिर्गायत्रीच्छन्दःअग्निर्देवता

ऋक्० । ओंअग्निमीडेपुरोहितम् ॥ यजु० । वा. । सं. । अ. । २२ । मं. । १७ । ओंअग्निन्दूतम्पुरोदधे० ॥ साम० । सं. । छं. । अ. । १ । प्र. । १ । द. । १ । मं. । ३ । ओंअग्निन्दूतम्वृणीमहेहो० ॥ अथ० । ओंयेपुरस्ताज्जुह्वतिजात ० ॥

* * * * * * * * *

अग्न्यावाहनेपूजनोविनियोगः ॥ ओंअग्निन्दूतम्पुरोदधेहव्यवाहमुपब्रुवे ॥ देवाँ२॥ऽआसादयादिह ॥ ओंभूर्भुवःस्वःअग्नयेनमः ॥ अग्निमावाहयामि पू० ॥ ९ ॥ ततःयाम्येयमम् ॥ ॐएह्येहिवैवस्वतधर्मराजसर्वामरैरर्चितधर्ममूर्ते ॥ शुभाशुभानन्दशुचामधीशशिवायनःपाहिमखन्नमस्ते ॥ इतिध्यात्वा ॥ सुगन्नःपन्थेतिमन्त्रस्यपार्श्वतऋषिस्त्रिष्टुप्छन्दःयमोदेवतायमावाहनेपूजनेविनियोगः ॥ ओंसुगन्नुपन्थाम्प्रदिशन्नऽएहिज्योतिष्मद्धेह्यजरन्नऽआयुः ॥ अपैतुमृत्युरमृतन्नऽआगाद्वैवस्वतोमोऽअभयङ्कृणोतु ❀ ॥ ❀ ओंभूर्भु०स्वः

ऋक्० । ओंयमायसोमंसुनुत० ॥ यजु० । ओंसुगन्नुपन्थाम्० ॥ साम० । सं. । छं. । अ. । १ । प्र. । ४ । द. । ३ । मं. । ८ ॥ ओंनाकेसुपर्णमुतयत्० ॥ अथ० । ओंयेदक्षिणतोजुह्वतिजा०॥

* *

यमायनमः । यममावाहयामिपू० ॥ ६ ॥ नैर्ऋत्येखण्डेन्दुःत्रिपदःश्वेतःतत्र निर्ऋतिमावाहयेत ॥ ओंएह्येहिरक्षोगणनायकत्वंविशालवेतालपिशाचसङ्घैः । ममाध्वरम्पाहिशुभादिनाथलोकेश्वरत्वांप्रणमामिनित्यम् ॥ इतिध्यात्वा ॥

ऋक०। ओंमूषूणःपरापरो०॥यजु०। वा. सं. अ.। १२। मं.। ६२॥ ओंअसुन्वन्तमयजमान०। साम०। छं. सं. अ. १ प्र. ५ दशति ।१ मं ६॥ ओंवित्थाहिनिर्ऋतीनाम्० ॥ अथ०। ओंसनिर्ऋत्याःपाशान्मामो० ॥

असुन्वन्तमितिमन्त्रस्यप्रजापतिर्ऋषिस्त्रिष्टुप्छन्दःनिर्ऋतिर्देवतानिर्ऋतिस्थापनेपूजनेविनियोगः ॥ ओंअसुन्न्वन्तमयंजमानमिच्छस्तेनस्येत्यामन्न्विहितस्क्करस्य ॥ अन्न्यमस्म्मदिच्छसातंऽइत्यानमोदेविनिर्ऋतेतुब्भ्यमस्तु ॥ ॐभूर्भुवःस्वःनिर्ऋतयेनमः ॥ निर्ऋतिमावाहयामिपू० ॥ ७ ॥ प्रतीच्यांवरुणम्पूज्य ॥ एह्येहि

यज्ञेममरक्षणाययादोगणैःसार्धमपामधीश ॥ झषाधिरूढत्वमिहप्रभोमणिरत्नप्रभाभास्वरपाशपाणे॥इतिध्यात्वा । तत्वायामीतिमन्त्रस्यशुनःशेफऋषिर्वरुणो देवतात्रिष्टुप्छन्दःवरुणावाहनेपूजनेविनियोगः ॐतत्त्वायामिब्ब्रह्मणाब्वन्दमानस्त

ऋक०। ओंतत्वायामिब्रह्मणा० यजु०। वा.। सं.। अ.। २१। मं.। २॥ ओंतत्त्वायामिब्रह्मणा० साम० छन्दो.। उ.। सं.। प्र.। ८। मं.। ६। ॥ ओंइमम्मेवरुण०। अथ०। ओंअप्सुतेराजन्वरुणगृहो १ ॥

दशास्तेयजमानोहविर्भिः । अहेडमानोब्वरुणेहबोद्ध्युरुशंसमानऽआयुः प्रमोषीः ॥ ॐभूर्भु०स्वःवरुणायनमः । वरुणमावाह०। पू० ॥ ८ ॥ ततोवायव्येखण्डेन्दुस्त्रिपदःश्वेतःतत्रवायुमावाहयेत् ॥ एह्येहियज्ञेममरक्षणायमृगाधिरूढः सहासिद्धसङ्घैः ॥ प्राणाधिपःकालकवेःसहायगृहाणपूजाम्भगवन्नमस्ते । इति

ध्यात्वा । आनोनियुद्भिरितिमन्त्रस्यवसिष्ठऋषिस्त्रिष्टुप्छन्दःवायुर्देवतावाय्वावाहने

ऋक०। ओंवायोशतंहरीणाम्०॥ यजु०। वा.। सं.। अ.। २७। मं. २८। ओंआनोनियुद्भिःशतिनी० ॥ साम०। छं.। सं.। अ.। १। प्र.। २। द.। ९। मं. १०। ओंवातअवातुभेषजम्० ॥ अथ०। ओंतवव्रते निविशन्तेजना० ॥

* * * * * * * * *

पूजनेविनियोगः ॥ ओंआनोंनियुद्भिःशतिनींभिरद्ध्वरꣳसहस्रिणींभिरुपयाहि यज्ञम् । वायोऽअस्मिन्त्सवनेमादयस्वयूयम्पातस्वस्तिभिःसदानः ❀ । ❀ ॐभूर्भुवःस्वःवायवेनमः ॥ वायुमावाह० । पू० ॥ ९ ॥ वायुसोमयोर्मध्ये नवपदंबन्धुजीवपुष्पोपमम्भद्रन्तत्रवसूनावाहयेत् ❀ ❀ ॥ ❀ ❀ एह्येहि वस्वीशमहानिधीशरत्नाकरःसूर्यसमानतेजाः । धनस्वरूपोममयज्ञियान्तुगृहाण

पूजाम्भगवन्नमस्ते ॥ इतिध्यात्वा ॥ वसोःपवित्रमसीतिमन्त्रस्यवसिष्ठऋषिस्त्रिष्टुप्छन्दःवसवोदेवताःवस्वावाहनेपूजनेविनियोगः ॥ ॐव्वसोःपवित्रंमसिशतधारम्व्वसोःपवित्रंमसिसहस्रंधारम् ॥ देवस्त्वांसवितापुनतुव्वसोःपवित्रेंणशतधारेणसुप्वाकामंधुक्षः ॥ ॐभूर्भु०वसुभ्योनमः। वसूनावाहयामिपू० ॥ १० ॥
तत्रैवनाममन्त्रेण ॥ ओंध्रुवायनमः। ध्रुवमावाहयामिपू० ॥ एवंसर्वत्र ॥ १ ॥
ॐअध्वरायनमः ॥ अध्वरमा०पू० ॥ २ ॥ ओंसोमायनमः। सोममा०। पू० ॥ ३ ॥

ऋक०। ओंज्मयाऽअत्र० ॥ यजु०। वा.। अ.। १। मंत्र। ३। ओंव्बसोःपवित्रमसिशतधारं ॥ साम०। छं.। सं.। अ.। १। प्र.। ४। द.। ८। मं.। ७। ओंअभित्यंमेषंपुरहूतमृग्मि० ॥ अथ०। ओंवसोरिन्द्रम्वसुपतिम्० ॥

* * * * * * * * *

ॐआपायनमः । आपमावा० । पू० । ४ ॥ ॐअनिलायनमः ॥ अनिलमा० । पू० । ५ ॥ ओंअनलायनमः । अनलमा० । पू० । ६ ॥ ओंप्रत्यूषायनमः ॥ प्रत्यूषमा० । पू० ॥ ७ ॥ ओंप्रभासायनमः । प्रभासमा० । पू० ॥ ८ ॥ ततः सोमेशानयोर्मध्येकरवीरपुष्पोपमन्नवपदम्भद्रन्तत्ररुद्रान्संस्थाप्यपूजयेत् । ओंएह्येहि यज्ञेश्वरनास्त्रिशूलकपालखट्वाङ्गवरेणसार्द्धम् । लोकेनयज्ञेश्वरयज्ञासिद्ध्यैगृहाणपूजाम्भगवन्नमस्ते । इतिध्यात्वा । यातेरुद्रेतिमन्त्रस्यपरमेष्ठीऋषिरनुष्टुप्छन्दःरुद्रो

ऋक० । ओंआरुद्रासः० ॥ यजु० । वा० । सं. । अ. । १६ । मंत्र. । ११ ॥ ओंयातेहेतिर्मीढुष्ट० ॥ साम० । छं. । सं. । अ. । १ । प्र. । १ । द. । २ । मं. । ५ । ओंजरावोधतद्विविड्ढिविशेविशे ॥ अथ० । ओंयोरुद्रो अग्नौयोरुद्राओ ॥ * * * * * * * * * *

देवतारुद्रावाहनेपूजनेविनियोगः ॥ ओंयातेहे॒तिम्मीढुम॒हस्तेब॒भूवते॒धनु÷ ॥ तया॒स्मान्वि॒श्वतस्त्व॒मय॒क्ष्मया॒पारिभुज । ॐभूर्भु०रुद्रेभ्योनमः ॥ रुद्रानावाहयामि । पू० ॥ ११ ॥ तत्रैवनाममन्त्रेण ॥ ॐइन्द्रवतेनमः । इन्द्रवन्तमावाहयामिपू० । ॐवीरभद्रायनमः । वीरभद्रमा० । पू० ॥ २ ॥ ॐशम्भवेनमः । शम्भुमा० । पू० ॥ ३ ॥ ॐगिरीशायनमः । गिरीशमा० ॥ पू० ॥ ४ ॥ ॐमहायशशेनमः । महायशशमा०पू० ॥ ५ ॥ ॐअजायनमः । अजमा० । पू० ॥ ६ ॥ ॐपिनाकिनेनमः । पिनाकिनमा० पू० ॥ ७ ॥ ॐअहिर्बुध्न्यायनमः । अहिर्बुध्न्यमा० । पू० । ८ ॥ ॐकपालिनेनमः । कपालिनमा० । पू० ॥ ९ ॥ ॐदिशांपतयेनमः । दिशांपतिमा० । पू० । १० ॥

ॐभर्गायनमः । भर्गमा० । पू० ॥ ११ ॥ ॐभवान्यधीशायनमः । भवान्यधीशमा० । पू० । १२ ॥ ततईशानेन्द्रयोर्मध्येविद्रुमोपमंनवपदंमद्धंतत्रद्वादशादित्यान्संस्थाप्यपूजयेत् । ॐएह्येहिपद्मासनपद्मपाणेसुरक्तसिन्दूरसमानवर्ण । सप्ताश्ववरक्ताम्बरसूर्यशीघ्रंपूजाङ्ग्रहीतुंमखमस्मदीयम् । इतिध्यात्वा ॥

ऋक०। ओंत्यान्नुक्षत्रियाम्० ॥ यजु० । वा. । सं. । अ. । ३३ । मं. । ४३ । ओंआकृष्णेनरजसाऽवर्त्त० ॥ साम० । छं. सं. अ. १ प्र. ३ द. ९ मं ४ ॥ ओंवरामहांऽआसिसूर्यवडादि० अथ० । ओंसूर्यनाचक्षारुक्ष:शता० ॥

आकृष्णेतिमन्त्रस्यदध्यङ्ङाथर्वणऋषिःपुरउष्णिक्छन्दःसूर्योदेवतासूर्यावाहनेपूजनेविनियोगः । ॐआकृष्णेनरजंसाऽवर्त्तमानोनिवेशयंन्नमृतम्मर्त्यञ्च ॥ हिरण्ययेनसवितारथेनादेवोयातिभुवनानिपश्यन् ॥ ओंभूर्भु०सूर्यायनमः ॥ सूर्यमावा

हयामिपू० ॥ १३ ॥ तत्रैवनाममन्त्रैः ॥ ॐअरुणायनमः ॥ अरुणमा० । पू० ॥ १ ॥ ॐसूर्यायनमः ॥ सूर्यमा० ।पू० ॥ २ ॥ ॐवेदाङ्गायनमः ॥ वेदाङ्गमा०पू० ॥ ३ ॥ ॐभानवेनमः ॥ भानुमा० । पू० ॥ ४ ॥ ॐइन्द्रायनमः ॥ इन्द्रमा० । पू० ॥ ५ ॥ ॐर वयेनमः ॥ रविमा० । पू० ॥ ६ ॥ ॐगभस्तयेनमः ॥ गभस्तिमा० । पू० ॥ ७ ॥ ॐअर्यम्णेनमः ॥ अर्यमणमा० । पू० ॥ ८ ॥ ॐस्वर्णरेतसेनमः ॥ स्वर्णरेतसमा० । पू० । ९ ॥ ॐदिवाकरायनमः ॥ दिवाकरमा० । पू० । १० ॥ ॐमित्रायनमः ॥ मित्रमावाहयामिपू० । ११ ॥ ॐविष्णवेनमः । विष्णुमा० । पू० । १२ ॥ नामानितु ॥ अरुणःसूर्यवेदाङ्गो भानुरिन्द्रोरविर्गभस्तिरर्यमास्वर्णरेतादिवाकरमित्रौविष्णुरित्यु

कानिज्ञेयानि ॥ इतिद्वादशादित्येभ्योनमः ॥ ततइन्द्राग्नेययोर्मध्येकेतकीपुष्पोपमं नवपदंभद्रन्तत्राश्विनौसंस्थाप्यपूजयेत् ॥ द्विभुजौदेवभिषजौकर्त्तव्यौदेवसंयुतौ ॥ तयोरोषधयःकार्यादिव्यादक्षिणहस्तयोः ॥ इतिध्यात्वा ॥ यावाङ्कशेतिमन्त्रस्य

ऋक० । ओंआश्विनावर्त्तिः ॥ ० ॥ अजु०वा. सं. अ. ७ मं. ११ । ओंयावाङ्कशामधुमत्य० ॥ साम० । छं. सं. अ. १ प्र. १ द. २ मं. ७ । ओंअश्वन्नत्वावार० ॥ अथ० । ओंआश्विनासारघेणमाम० ॥

मेधातिथिर्ऋषिर्गायत्रीच्छन्दःअश्विनौदेवतेअश्विनोरावाहनेपूजनेविनियोगः ॥ ॐ या॒वा॒ङ्क॒शा॒मधु॑म॒त्यश्विना॑सू॒नृता॑वती ॥ तया॑य॒ज्ञम्मि॑मिक्षतम् ॥ उ॒प॒य॒मगृ॑ही॒तो॑स्य॒श्विभ्या॑न्त्वै॒षते॒योनि॒र्म्माद्ध्वी॑भ्यान्त्वा ॥ ॐभूर्भु०अश्विभ्यांनमः ॥ अश्विनावावाह० । पू० ॥ १४ ॥ अग्नियमयोर्मध्येदिवापुष्पोपमंनवपदंभद्रंतत्रविश्वे

देवाःसपैतृकाःसंस्थाप्यपूज्याः ॥ क्रतुदक्षौसत्यवसूकामश्चध्रुवलोचनौ ॥ पुरूरवोमार्द्रवसौविश्वेदेवास्त्रयोदश ॥ अग्निष्वात्ताःसोमपाश्चवर्हिषदःसुकालिनः ॥ एकशृङ्गःसुधश्चैवद्वितीयस्सोमपास्तथा ॥ विश्वेदेवाआयन्तुनश्चताभ्यांतौचप्रपूजयेत् ॥ एह्येहिसर्वामरसिद्धसाद्ध्यैरभिष्टुतोवज्रधारामरेश ॥ संवीज्यमानोप्सरसाङ्गणेनरक्षाध्वरन्नोभगवन्नमस्ते ॥ इतिध्यात्वा विश्वेदेवाआयन्तुनइतिमन्त्राभ्यांसपैतृकान्विश्वेदेवानावाह्यपूजयेत् ॥ विश्वेदेवासआगतेतिमन्त्रस्यपरमेष्ठीऋषिर्गायत्रीच्छन्दोविश्वेदेवादेवताविश्वेदेवस्थापनेपूजनेविनियोगः ॥

ऋक० ॥ ओंओमासश्चर्षणीधृतः ॥ यजु० ॥ वा. सं. अ. ७ मंत्र ३४ ॥ ओंविश्वेदेवासऽआगत० ॥ साम० ॥ अरणी. सं. अ. १ द. २ मं. ९ ॥ ओंविश्वेदेवाममा० ॥ अथ० ॥ ओंविश्वेदेवासऽआगत० ॥

* *

व्विश्वेदेवासऽआगंतश्शृणुतामऽइमꣳहवम् ॥ एदम्बर्हिर्निषीदत ॥ उपयामगृहीतोसिव्विश्वेभ्यस्त्वादेवेभ्य्यऽएषतेयोनिर्व्विश्वेभ्यस्त्वादेवेभ्यः ॥ तत्रैवआयन्तुनइतिमन्त्रेणपितॄन्पूजयेत् ॥ ॐभूर्भु०सपैतृकान्विश्वान्देवान्आ० ॥ पू० ॥ १५ ॥ यमनिर्ऋतिमध्येकौशुम्भपुष्पोपमंनवपदम्भद्रंतत्रयक्षान्संस्थाप्य पूजयेत् ॥ ॐएह्येहिरक्षोगणनायकस्त्वंविशालवेतालपिशाचसङ्घैः ॥ ममाध्वरं पाहिशिवाधिनाथलङ्केश्वरत्वम्भगवन्नमस्ते ॥ इतिध्यात्वा ॥ अभित्यन्देवमितिमन्त्रस्यवामदेवऋषिःपङ्क्तिश्छन्दःयक्षोदेवतायक्षावाहनेपूजनेविनियोगः ॥ ॐ

ऋक्० ॥ ओंअभित्यन्देवंसवि० ॥यजु० ॥ वा. सं. अ. ४ मं. २५ ॥ ओंअभित्यन्देवꣳसवि० ॥ साम० ॥ छं. सं. अ. १ प्र. ५ द. ८ मं. ८ ॥ ओंअभित्यन्देवꣳसवितार० ॥ अथ० ॥ ओंअज्यस्यपरमेष्ठिज्ञा० ॥

अभित्यन्देवꣳसवितारमोण्यो÷ ॥ कविक्रतुमर्च्चामिसत्त्यसवꣳरत्नधामभिप्रियम्मतिङ्कविम् ॥ ऊर्द्ध्वायस्यामतिर्भाऽअदिद्युतत्सवीमनिहिरण्यपाणिरमिमीतशुक्रतु÷कृपास्व÷ ❀ ॥ ❀ प्रजाभ्यस्त्वाप्रजास्त्वानुप्राणन्तुप्रजास्त्वमनुप्राणिहि ॥ ॐभूर्भुवःस्वःयक्षेभ्योनमः ॥ यक्षानावाहयामिपू० ॥ १६ ॥

निर्ऋतिवरुणयोर्मध्येसिन्दूरवर्णञ्चपद्मंभद्रन्तत्रसर्प्पान्संस्थाप्यपूजयेत् ॥ अक्षसूत्रधराःसर्प्पाःकुण्डिकापुच्छसंयुताः ॥ एकभोगास्त्रिभोगावासर्पाःकार्याश्चभीषणाः ॥ इतिध्यात्वा ॥ आयङ्गौरितिमन्त्रस्यसर्पराजऋषिर्गायत्रीच्छन्दःसर्पादेवताःसर्पावाहनेपूजनेविनियोगः ॥ ओंआयङ्गौःपृश्निरक्रमीदसदन्मातरम्पु

ऋक० ॥ ओंआयंगौःपृश्निरक्रमी० ॥ यजु० ॥ वा. सं. अ. ६ मंत्र ॥ ६ ॥ ओंआयंगौःपृश्निरक्रमी० ॥

साम० ॥ अर. सं. अ. १ द. ४ मं. ४ ओंआयंगौःपृश्निरक्रमी० ॥ अथ ॥ ओंयस्तेसयोवृश्चिकाश्छि० ॥

र० ॥ पितरंञ्चप्प्रयन्त्स्वं÷ ॥ ॐभूर्भु०सर्पेभ्योनमः ॥ सर्पाना० पू० ॥ १६ ॥
ततोवरुणवायव्ययोर्मध्येसिन्दूरवर्णन्नवपदंभद्रन्तत्रगन्धर्वाप्सरसस्थापयेत् ॥ ॐ
आवाहयेहंसुरदेवसेव्याःस्वरूपतेजोमुखपद्मभासः ॥ सर्वामरेशाःपरिपूर्णकामाः
पूजाङ्गृहीतुंममयज्ञभूमौ ॥ इतिध्यत्वा ॥ गन्धर्वस्त्वेतिमन्त्रस्यचतुरासन

ऋक० । ओंअप्सरसाङ्गन्धर्वाणाम् ॥ यजु० वा. सं. अ. २ मंत्र ६ ॥ ओंगन्धर्वस्त्वाविश्वा० ॥ साम०
छंदो उ. सं. प्र. ११ मं. १३ ॥ ऊर्द्ध्वोगन्धर्वो० अथर्व० दिविपृष्ठोयजतसूर्य० ॥ * * *

ऋषिस्त्रिष्टुप्छन्दः गन्धर्वाप्सरसोदेवतागन्धर्वाप्सरसामावाहनेपूजनेविनियोगः ॥
ॐगन्धर्व्वस्त्वाव्विश्वावसुःपरिदधातुव्विश्वस्यारिष्ट्यैयजमानस्यपरिधिरस्याग्नि

रिडऽईडितः ॥ इन्द्रस्यब्बाहुरसिदक्षिणोव्विश्वस्यारिष्ट्यैयजमानस्यपरिधिरस्याग्निरिडऽईडितः ॥ मित्रावरुणौत्त्वोत्तरतःपरिधत्तान्ध्रुवेणधर्म्मणाव्विश्वस्यारिष्ट्यैयजमानस्यपरिधिरस्याग्निरिडऽईडितः ॥ ओंभूर्भु०गन्धर्वाप्सरोभ्यो नमः ❀ ॥ ❀ गन्धर्वाप्सरसआवाहयामि ❀ पू० ❀ ॥ ❀ १७ ❀ ॥

ततोऽष्टवसुसोमयोर्मध्येऽष्टादशपदमषीसदृशंलिङ्गन्तत्रसोमेश्वरंसंस्थाप्यपूजयेत् ॥ एह्येहियज्ञेममसोमनाथसौराष्ट्रदेशस्थितपार्षदैःस्वैः ॥ गौर्याञ्चदेव्यासहयज्ञसिद्ध्यैगृहाणपूजांभगवन्नमस्ते ॥ इतिध्यात्वा ॥ नमःशंभवेतिमेधातिथिऋषिरनुष्टुप्छन्दःशंभुर्देवताशंभुस्थापनेपूजनेविनियोगः ॥ वा. । सं. । अ. । १६ ॥ मं. । ४१ ॥ ओंनमःशम्भवायचमयोभवायचनमःशङ्करायचमयस्करा

यंचनमः शिवायचशिवतरायच ॥ ओंभू० ॥ सोमनाथायनमः सोमनाथमा० पू० ॥ १८ ॥ तस्मात्पूर्वेएकपदान्तरेअष्टादशपदङ्कृष्णतिलोपमंलिङ्गंतत्रमल्लिकार्ज्जुनंस्थापयेत् ॥ एह्येहिदेवश्रीशैलवासिन्देव्याभावान्यासहमल्लिकार्ज्जुन ॥ मदीययज्ञस्यशिवायनूनङ्गृहाणपूजांभगवन्नमस्ते ॥ इतिध्यात्वा ॥ यातेहेतिरितिमन्त्रस्यविश्वामित्रऋषिर्गायत्रीच्छन्दः रुद्रोदेवतारुद्रावाहनेपूजनोविनियोगः ॥ ॐयातेहेतिर्म्मीढुष्टमहस्तेबभूवतेधनुः ॥ तयास्म्मान्विश्वतस्त्वमयक्ष्मयापरिभुज ॥ वा. । सं. । अ. ॥ १६ ॥ मं. । ११ ॥ ओंभू०मल्लिकार्ज्जुनायनमः ॥ मल्लिकार्ज्जुनमावा० पू० ॥ १९ ॥ तदनन्तरंसोमैकादशरुद्रमध्येएकपादान्तरेऽष्टादशपदाविष्णुक्रान्तापुष्पोपमंलिङ्गंतत्रमहाकालंस्थापयेत् ॥ एह्ये

हिगौर्याभगवन्शिवायह्यवन्तिवासिन्महाकालदेव ॥ मदीययज्ञस्यशिवायनूनङ्गृहाणपूजांभगवन्नमस्ते ॥ इतिध्यात्वा ॥ मानोमहान्तमितिमन्त्रस्य करावोमेधातिथिऋषिस्त्रिष्टुप्छन्दः रुद्रोदेवतारुद्रावाहनेपूजनेविनियोगः ॥ ॐमानोमहान्तमुतमानोऽअर्भकम्मानऽउक्षन्तमुतमानऽउक्षितम् ॥ मानोवधीः पितरम्मोतमातरम्मानः प्प्रियास्तन्वोरुद्ररीरिषः ॥ वा.।सं.।अ.। १६ ।मं.। १५ ॥ ॐभू० महाकालायनमः ॥ महाकालमा० ॥ पू० ॥ २० ॥ तदनन्तरं द्वादशादित्यमध्येएकपदान्तरेअष्टादशपदङ्कज्जलसदृशंलिङ्गन्तत्रअमरेशंस्थापयेत् एह्येहिदेवेश्वरविश्वनाथओङ्कारवासिन्भगवन्भवान्या ॥ सर्वैःस्वकीयैरपिपार्षदैश्चगृहाणपूजांभगवन्नमस्ते ॥ इतिध्यात्वा ॥ एषतेरुद्रभागेतिमन्त्रस्य

वसिष्ठऋषिर्जगतीच्छन्दः रुद्रोदेवतारुद्रावाहनेपूजनेविनियोगः ॥ ॐएषतेरुद्र भागःसहस्वस्राम्बिकयातञ्जुषस्स्वस्वाहैषतेरुद्र भागऽआषुस्तेपशुः ॥ वा. । सं. । अ. । ३ । मं. ॥ ५७ ॥ ॐभू० । अमरेश्वरायनमः । अमरेश्वरमा० ॥पू०॥ २१॥तद्दक्षिणभागेऽष्टादशपदमि[illegible]नीलोपमंलिङ्गन्तत्रवैद्यनाथंस्थापयेत् ॥ एह्येहिय ज्ञेममवैद्यनाथसर्वामरैरर्चितपादपद्म ॥ गृहाणपूजांभगवन्शिवायशिवासमेताय नमोस्तुतुभ्यम् ॥ इतिध्यात्वा ॥ नमोस्तुनीलग्रीवायेतिमन्त्रस्यवाम देवऋषिःअतिजगतीच्छन्दःरुद्रोदेवतारुद्रावाहनेपूजनेविनियोगः ॐनमोस्तुनील ग्रीवायसहस्राक्षायमीढुषे ॥ अथोयेऽअस्यसत्वानोहन्तेभ्योकरन्नमः ॥ वा. । सं. । अ० ॥ १६ ॥ मं. । ८ ॥ ॐभू० । वैद्यनाथायनमः ॥ वैद्यनाथमा० ॥पू०॥

२२ ॥ ततइन्द्राशिवनोर्मध्येऽष्टादशपदंमहामरकतसदृशंलिङ्गन्तत्रभीमशङ्करं स्थापयेत् ॥ एह्येहिभीमेश्वरपार्षदैश्चपूजाङ्ग्रहीतुंममयज्ञभूमौ ॥ गौर्याभवान्यासहदेवदेवगृहाणपूजांभगवन्नमस्ते ॥ इतिध्यात्वा ॥ नमोस्तुरुद्रेभ्यः इतिमन्त्रस्यजामदग्निर्ऋषिर्बृहतीच्छन्दःकालाग्निरुद्रादेवतारुदावाहनेपूजनेविनियोगः ॥ ॐनमोस्तुरुद्रेभ्योयेदिवियेषांवर्षमिषवः ॥ तेभ्योदशप्राचीर्दशंदक्षिणादशंप्रतीचीर्दशोदीचीर्दशोर्ध्वाःतेभ्योनमोऽअस्तुतेनोवन्तुतेनोमृडयन्तुतेयन्द्विष्मोयश्चनोद्वेष्टितमेषाञ्जम्भेदध्मः ॥ वा. । सं. । अ. । १६ ॥ सं. ॥ ६४ ॥ ॐभू० ॥ भीमशङ्करायनमः ॥ भीमशङ्करमा० ॥ पू० ॥ ॥ २३ ॥ तदनन्तरमग्नियमयोर्मध्येऽष्टादशपदन्नवीननीरदवत्श्यामंलिङ्गन्तत्ररामेशंस्थाप

येत् ॥ एह्येहिरामेश्वररामनाथरामेणसंस्थापितसेतुमध्ये ॥ मदीययज्ञ
स्यशिवायनूनङ्गृहाणपूजांभगवन्नमस्ते ॥ इतिध्यात्वा ॥ नमःसभाभ्यइ
तिमन्त्रस्यविश्वामित्रऋषिर्बृहतीच्छन्दः रुद्रोदेवतारुद्रावाहनेपूजनेविनियोगः ॥
ॐनम॑÷स॒भाभ्यं॑÷स॒भाप॑तिभ्यश्च वो॒नमो॒नमोऽश्वे॒भ्योऽश्व॑पतिभ्यश्च वो॒नमो॒न
मंऽआव्या॒धिनीभ्यो॒विवि॒ध्यन्तीभ्यश्च वो॒नमो॒नम॒ऽउगंणाभ्यस्तृꣳह॒तीभ्यंश्च
वो॒नमो॒ ॥ वा. । सं. । अ. ॥ १६ ॥ मं. ॥ २४ ॥ ओंभू० । रामेश्वरायनमः ॥
रामेश्वरमा० । पू० ॥ २४ ॥ तत्पश्चिमेऽष्टादशपदंश्यामवर्णंलिङ्गन्तत्रनागेशंस्थाप
येत् ॥ एत्त्वेतुनागेश्वरदारुकावनेस्थितप्रभोमुख्यगणैर्वृतोभवान् ॥ शिवा
यनःपाहिमदीययज्ञङ्गृहाणपूजांभगवन्नमस्ते ॥ इतिध्यात्वा ॥ ॐनमस्त

आयुधायेतिमन्त्रस्यगृत्समदऋषिर्जगतीच्छन्दःरुद्रोदेवतारुद्रावाहनेपूजनेविनियोगः ॥ ॐनमस्तऽआयुधायानाततायधृष्णवे ॥ उभाभ्यामुततेनमोबाहुभ्यान्तवधन्वने ॥ वा. । सं. । अ. ॥ १६ ॥ मं. ॥ १४ ॥ ॐभू० । नागेश्वरायनमः ॥ नागेश्वरमावा० ॥ पू० ॥ २५ ॥ यमनिर्ऋत्योर्मध्येऽष्टादशपदंमहानीलोपमंलिङ्गन्तत्रकेदारनाथंस्थापयेत् ॥ ॐएह्येहिकेदारहिमालयस्थगौर्यासभवान्यासहपार्षदैरपि ॥ मदीययज्ञस्यशिवायनूनंगृहाणपूजांभगवन्नमस्ते ॥ इतिध्यात्वा ॥ ॐइमारुद्रायेतिमन्त्रस्यवामदेवऋषिर्बृहतीच्छन्दःरुद्रोदेवतारुद्रावाहनेपूजनेविनियोगः ॥ ॐइमारुद्रायतवसेकपर्दिनेक्षयद्वीरायप्रभरामहेमतीः ॥ यथाशमसद्द्विपदेचतुष्पदेविश्वम्पुष्टङ्ग्रामेऽअस्मिन्ननातुरम् ॥ वा. । सं. ।

अ.। १६ ॥ मं. ॥ ४८ ॥ ॐभू० ॥ केदारनाथायनमः । केदारनाथमा० ॥ २६ ॥ ततोनिर्ऋतिवरुणयोर्मध्येऽष्टादशपदंश्यामवर्णलिङ्गंतत्रघुश्मेशंस्थापयेत् ॥ एह्येहिघुश्मेश्वरदेवदेवशिवालयेसंस्थितसर्वपूज्य ॥ गौर्याभवान्यासहपार्षदैः स्वैर्गृहाणपूजांभगवन्नमस्ते ॥ इतिध्यात्वा ॥ ओंनमःपार्यायचेतिमन्त्रस्यवासिष्ठऋषिस्त्रिष्टुप्छन्दःरुद्रोदेवतारुद्रावाहनेपूजनेविनियोगः ॥ ॐनम॒;पार्य्या॒यचावा॒र्य्या॒यच॒नमः॑ प्र॒तर॑णायचो॒त्तर॑णायच॒नम॒स्तीर्थ्या॑यच॒कूल्या॑यच॒नम॒;शष्प्या॑यच॒फेन्या॑यच॒ ॥ वा.।सं.। अ. ॥ १६ ॥ मं ४२ ॥ ॐभू० ॥ घुश्मेश्वरायनमः ॥ घुश्मेश्वरमा० ॥ । २७ ॥ तदुत्तरेऽष्टादशपदंकृष्णतिलोपमंलिङ्गंतत्रविश्वेशंस्थापयेत् ॥ ॐएह्येहिविश्वेश्वरविश्वनाथवाराणसीवास

कृतप्रभोभवन् ॥ गौर्याभवान्यासहदेवदेवगृहाणपूजांभगवन्नमस्ते ॥ इति ध्यात्वा ॥ ॐनमःकपर्द्दिनेचेतिमन्त्रस्यबृहत्पराशरऋषिरनुष्टुप्छन्दःरुद्रोदेवता रुद्रावाहनेपूजनेविनियोगः ॥ ॐनमःकपर्द्दिनेचव्युप्तकेशायचनमःसहस्राक्षायचशतधन्वनेचनमोगिरिशायायचशिपिविष्टायचनमोमीढुष्टमायचेषुमतेच ॥ वा. । सं. । अ. ॥ १६ ॥ मं. ॥ २९ ॥ ओंभू० ॥ विश्वेश्वरायनमः ॥ विश्वेश्वरमा० ॥पू०॥ २८ ॥ ततोवरुणवायव्ययोर्मध्येऽष्टादशपदंश्यामवर्णंलिङ्गन्तत्रत्र्यम्बकेश्वरंस्थापयेत् ॥ एह्येहिदेवश्रीत्र्यम्बकेश्वरगौर्याभवान्यासहपार्षदैरपि ॥ मदीययज्ञस्यशिवायनूनङ्गृहाणपूजांभगवन्नमस्ते ॥ इतिध्यात्वा ॥ ॐनमः सेनाभ्यइतिमन्त्रस्यगौतमऋषिःअतिजगतीच्छन्दः रुद्रोदेवतारुद्रावाहनेपूजनोविनि

योगः ॥ ॐनम॒ः सेनाभ्यः सेना॒निभ्यश्च वो॒नमो॒नमो॒र॒थिभ्यो॒ऽअर॒थेभ्यश्च वो॒नमो॒नम॑ः क्ष॒त्तृभ्यः सङ्ग्रहीतृभ्यश्च वो॒नमो॒नमो॒मह॒द्भ्यो॒ऽअर्भ॒केभ्यश्च वो॒नम॑ वा. । सं. । अ. । १६ ॥ मं. ॥ २६ ॥ ॐभू० ॥ त्र्यम्बकेश्वरायनमः ॥ त्र्यम्बकेश्वरमावाहयामिपूजयामि ❀ ॥ ❀ २९ ❀ ॥ ❀ ❀ ❀ ❀

उत्तरवाय्वन्तरालेरुद्रादिगणान्स्थापयेत् ॥ कुमारञ्चतत्रैवस्थापयेत् ॥ भास्वत्कर्पूरगौरङ्गिरिवरतनयाप्राणनाथं महेशन्नानाभोगीन्द्रभूषङ्कलितशशिकलंपञ्चवक्त्रन्त्रिनेत्रम् ॥ शक्तिंशूलङ्कपालंसुललितडमरुंबीजपूरञ्चसर्पान्खट्वाङ्गञ्चारुपद्माभयवरदयुतन्धारयन्तंभजेऽहम् ॥ इतिध्यात्वा ॥ एषतेरुद्रभागइतिमन्त्रस्यरुद्र

ऋक्० ओंआवोराजानमध्व० । यजु० । वा० सं.. अ. ३ मन्त्र ५७ । ओंएषतेरुद्रभागः स. ॥ साम० । छं.

सं. अ. १ प्र. १ द. ७ । मं. ७ ॥ ओंआवोराजानम० ॥ अथ० । ओंनमस्तेरुक्कृष्ण:सहस्रा० ॥

ऋषिस्त्रिष्टुप्छन्दः रुद्रादिगणोदेवतारुद्रादिगणावाहनेपूजनेविनियोगः ॥ ओंएषते रुद्रभागःसहस्वस्राम्बिकयातञ्जुषस्वस्वाहैषतेरुद्रभागऽआखुस्तेपशुः ❀ ❀ ॥

ओंभूर्भु० रुद्रादिगणेभ्योनमः ॥ ❀ ❀ ❀ ❀ ❀

रुद्रादिगणानावाहया० । पू० ॥ ३० ॥ तत्रैवयदक्रन्देतिमन्त्रेणकुमारायनमः ॥ कुमारमावा० । पू० ॥ ३१ ॥ ब्रह्मसोमद्वयोर्मध्येपञ्चविंशतिपदेवाप्यांऋषभं स्थापयेत् ॥ यज्ञोपवीतीसिंहस्थएकवक्त्रश्चतुर्भुजः ॥ अक्षसूत्रङ्करेविभ्रत्कुण्डिकाञ्चप्रजापतिः ॥ इतिध्यात्वा ॥ ऋतवस्थेतिमन्त्रस्यविराट्ऋषिरनु

ऋक् । ओंऋषभोसा० ॥ य० । वा. सं. अ. १७. मं. ३ । ओंऋतवस्थऽऋतावृ० ॥ साम० ॥ छं. सं. अ. १ प्र. २

द. ७ सं. ७ ओंआभित्वावृषभा॰ ॥ अथ ॥ ओंअनड्वान्दाधारपृथिवी ॥

प्छन्दःऋषभोदेवताऋषभावाहनेपूजनेविनियोगः ॥ ओंऋतवंस्स्थऽऋताद्वृधंऽ
ऋतुष्ठास्स्थंऽऋतावृधं÷ घृतश्च्युतोमधुश्च्युतोविराजोनामंकामदुघाऽअक्षीयमा
णाः ॥ ओंभू॰ऋषभायनमः । ऋषभमा॰ । पू॰ ॥ ३२ ॥ तत्रैवशूलंमहा
कालंचनाममंत्रेणार्चयेत् ॥ ब्रह्मेशानयोर्मध्येश्रृंखलायांमहींस्थापयेत् ॥ शुक्ल
वर्णामहीकार्यादिव्याभरणभूषिता ॥ चतुर्भुजासौम्यवपुःप्रचण्डासागराम्बरा ॥

ऋक॰ । ओंस्योनापृथिविनोभवा॰ ॥ य॰ वा. सं. अ. ८. मं. ३२ ॥ ओंमहीद्यौः पृथिवीचन॰ ॥ साम॰ ।
ओंस्योनापृथिविनोभ॰ ॥ अथ॰ । ओंभूमेमातर्निधेहिमा ॥

इतिध्यात्वा ॥ महीद्यौरितिमन्त्रस्यमेधातिथिर्ऋषिर्गायत्रीछन्दःपृथ्वीदेवतापृथि

वीस्थापनेपूजनेविनियोगः ओंमहीद्यौःपृथिवीचंनऽइमँय्यज्ञम्मिमिक्षताम् ❀ ॥ पिपृतान्नोभरीमभिः ॥ ओंभूर्भु०पृथिव्यैनमः ॥ पृथिवीमा०। पू० ॥ ३३ ॥ ब्रह्मेन्द्रमध्येवाप्यान्दुर्गांसंस्थाप्यपूजयेत् ॥ एह्येहिदुर्गेदुरितौघनाशिनिप्रचण्डदैत्यौघतनुप्रहारिणि ॥ शिवेमहेशार्द्धशरीरधारिणिस्थिराभवत्वंममयज्ञकारिणि ॥ इतिध्यात्वा ॥ श्रीश्चतइतिमन्त्रस्यउत्तरनारायणऋषिस्त्रिष्टुप्छन्दःदुर्गादेवता

ऋ०। ओंतामग्निवर्णाम्० ॥ य०। वा. सं. अ. २१ मं० २२ ॥ ओंश्रीश्चतेलक्ष्मीश्चपत्न्या० साम०। ओंश्रीरासिमैरमैति०। अथ०। ओंएकशतंलक्ष्म्यो १ मर्त्य० ॥

दुर्गावाहनेपूजनेविनियोगः ॥ ओंश्रीश्चतेलक्ष्मीश्चपत्न्यावहोरात्रेपार्श्वेनक्षत्राणिरूपमश्विनौव्यात्तम् ॥

❀ ❀ ❀ ❀ ❀

इष्टणन्निषाणामुम्मंऽइषाणसर्व्वंलोकम्मंऽइषाण ॥ ॐभूर्भु॰ लक्ष्म्यैनमः लक्ष्मी
मा॰ । पू॰ ॥ ॥ ३४ ॥ तत्रैवइदंविष्णुरितिमन्त्रेण ॥ भूर्भु॰ विष्णवेनमः ॥
विष्णुमा॰ । पू॰ ॥ ३५ ॥ ब्रह्माग्निमध्येशृङ्खलायांस्वधामावाह्यसम्पूजयेत् ॥
ॐपितॄणामपिदिव्यानांवाग्जिह्वाचत्त्वमेवहि ॥ वाग्धेनुस्त्वद्रूपातांस्वधामावा
हयाम्यहम् ॥ इतिध्यात्वा ॥ उदीरतामितिमन्त्रस्यशङ्कशुकऋषिस्त्रिष्टुप्छ
न्दः स्वधादेवतास्वधास्थापनेपूजनेविनियोगः ॥ ॐउदीरतामवरऽउत्परासऽ

ऋ॰ । ओंउदीरतांसून्रता॰ ॥ यजु॰ वा, सं. अ. १९ मं. ४९ ॥ ओंउदीरतामवरउत्परा॰ ॥ साम॰ छं॰ सं॰ अ. १ प्र. १ द. ९ मं. १० ओंजातःपरेणधर्म॰ ॥ अर्थ॰. । ओंउतप्रहामतिदीवाजय॰ ॥ * * * *

उन्मध्यमाःपितरःसोम्यासः ॥ असुंयऽईयुरवृकाऽऋतज्ञास्तेनोवन्तु

पितरोहवेषु ॥ ॐभूर्भु०स्वधायैनमः ॥ स्वधाआ० । पू० ॥ ३६ ॥ ब्रह्मयमयोर्मध्येवाप्यांमृत्युरोगौपूजयेत् ॥ अत्रध्यानन्नास्ति ॥ परंमृत्योइतिमन्त्रस्य

ऋ० । ओंपरंमृत्योअनु० ॥ यजु० व० सं० अ. ३५ मं. ॥ ७ ॥ ओंपरंमृत्योऽअनुपरेहि० ॥ साम० ओंतेअस्य सन्तुकेतवो अध० । ओंयेनातरन्भूतकृतोतिम० ॥ * * * * * *

शङ्कसुकऋषिस्त्रिष्टुप्छन्दःमृत्युरोगौदेवतेमृत्युरोगावाहनेपूजनेविनियोगः ॥ ॐपरंमृत्योऽअनुपरेहिपन्थाँयस्तेऽअन्यऽइतरोदेवयानात् ॥ चक्षुष्मतेशृण्वतेतेब्रवीमिमानःप्रजाᳪंरीरिषोमोतवीरान् ॥ ॐभूर्भु०मृत्युरोगाभ्यांनमः ॥ मृत्युरोगौआ० ॥पू०॥३७॥ ब्रह्मनिर्ऋतिमध्येशृङ्खलायांगणपतिंसंस्थाप्यपूजयेत् ॥ एह्येहिविघ्नाधिपतेसुरेन्द्रब्रह्मादिदेवैरपिवन्द्यपाद ॥ गजास्यविद्यालयविश्वमूर्तेगृहाण

पूजाम्भगवन्नमस्ते ॥ इतिध्यात्वा ॥ गणानान्त्वेतिमन्त्रस्यगृत्समदऋषिर्जगतीछन्दःगणपतिर्देवतागणपत्यावाहनेपूजनेविनियोगः॥ ॐगणानान्त्वागणपतिꣳहवामहेप्रियाणान्त्वाप्रियपतिꣳहवामहेनिधीनान्त्वानिधिपतिꣳहवामहेव्वसोमम ❀ ॥ आहमजानिगर्ब्भधमात्वमजासिगर्ब्भधम् ॥ ॐभूर्भु०गणपतयेनमः ॥ गणपतिमावा० । पू० ॥ ३८ ॥ ब्रह्मवरुणयोर्मध्येवाप्यांकालंसंस्थाप्यपूजयेत् ॥ ॐकालःकरालवदनोनित्यमप्यतिभीषणः ॥ पाशहस्तोदण्डधरःसर्प्पवृश्चिककरोमवान् ॥ इतिध्यात्वा ॥ ॐशन्नोदेवीरितिमन्त्रस्यआम्बरीषःसिन्धुद्वीपऋषि

ऋ० ।ओंगणानान्त्वागणपतिंह० ॥ य० वा. सं. अ. २३ मं. १९ ॥ ओंगणानान्त्वागणप० ॥ साम० छं. सं० अ. १ प्र. २ द. ८ मं. ३ ॥ ओंआतूनइन्द्रक्षुमन्तम्० ॥ अथ० ॥ ओंगणानान्त्वागणनाथम् ॥

ऋ० । ओंकदाचनस्तरीरसि० ॥ य० वा. सं. अ. ३६ सं. १२ ॥ ओंशन्नोदेवीरभिष्टय० ॥ साम० छं० सं. अ.
१ प्र. ४ द. १ मं. ८ ॥ ओंकदाचनस्तरीरसिनेन्द्र० ॥ अथ० ॥ ओंयेदक्षिणतोजुह्वतिजा० ॥ * * *

गायत्रीछन्दःआपोदेवताकालावाहनेपूजनेविनियोगः ॥ ॐशन्नोदेवीरभिष्टयऽ
आपोभवन्तुपीतये ॥ शंय्योरभिस्रवन्तुनः ॥ ॐभूर्भु० कालायनमः ॥
कालमा० । पू० ॥ ३९ ॥ ब्रह्मवाय्वोर्मध्येशृंखलायांमरुतंस्थापयेत् ॥ ॐएह्ये
हियज्ञेसमभीक्षणायमृगाधिरूढःसहसिद्धसङ्घैः ॥ प्राणाधिपःकालकवेःसहायगृ
हाणपूजांभगवन्नमस्ते ॥ इतिध्यात्वा ॥ आनोनियुद्भिरितिमन्त्रस्यवसिष्ठऋ
षित्रिष्टुप्छन्दःमरुतोदेवतामरुतामावाहनेपूजनेविनियोगः ॥ ॐआनोनियु

ऋ० ॥ ओंमरुतोयस्यहिक्षयेपा० ॥ य० ॥ वा. सं. अ. २७ मं. २८ ॥ ओंआनोनियुद्भिः शतिनी ।. साम० ।

छं. सं. अ. १ प्र. २ द. ९ मं. १० ॥ ओंवातआवातुभेषजंशम्भुम० ॥ अथ० ॥ ओंमरुतःपोत्रात्त्रिष्टुभः० ॥

द्भि÷शतिनीभिरद्ध्वरञ्छंसहस्त्रिणीभिरुपयाहियज्ञम् ॥ ब्बायोऽअस्मिन्त्सवनेमादयस्वयूयम्पातस्वस्तिभि;सदान; ॥ ॐभूर्भुं०मरुद्भ्योनमः ॥ मरुतआवाहयामिपूजयामि ॥ ४० ॥ ततोब्रह्मणःपादमूलेकर्णिकाधःपृथ्वींपूजयेत् ॥ एह्येहिपातालधरामरेशनागाङ्गनाकिन्नरगीयमान ॥ रक्षोरगेन्द्रामरलोकसङ्घैरनन्तरक्षाध्वरमस्मदीयम् ॥ इतिध्यात्वा ॥ स्योनापृथिवीतिमन्त्रस्यमेधातिथिर्ऋषिर्गायत्रीछन्दःभूमिर्देवताभूम्यावाहनेपूजनेविनियोगः ॥ ॐस्योनापृ

ऋक० ।। ओंस्योनापृथिविनोभवा० । य० ॥ वा. सं० अ. ३६ मं. १३ ॥ ओंस्योनापृथिविनोभवा० ॥ साम०॥ ओंस्योनापृथिविनोभवा० ॥ अथ० ॥ ओंनिधिम्बिभ्रतीबहुधागु० ॥ * * * * * * *

थिविनोभवानृक्ष॒रानि॒वेशनी ॥ यच्छा॑नः॒शर्म्म॑स॒प्प्रथाः॑ ॥ ओंभूर्भु०पृथि
व्यैनमःपृथिवीमावा० । पू० ॥ ४१ ॥ तत्रैव ॥ ब्रह्मणःपादमूलेनदीःपूजयेत ॥
एह्येहिगङ्गेदुरितौघनाशिनिझषाधिरूढेम्बुदकुम्भहस्ते ॥ श्रीविष्णुपादाब्जसमुद्भ
वेत्वंपूजाङ्गृहीतुम्विमलेनमस्ते ॥ इतिध्यात्वा ॥ इमम्मेगङ्गेइतिमन्त्रस्य
सिन्धुद्वीपऋषिस्त्रिष्टुप्छन्दःसर्वानद्योदेवताःसर्वनद्यावाहनेपूजनेविनियोगः ॥ ॐ

ऋ० ॥ ओंइमम्मेगंगेयमुनेसरस्व० ॥ य० ॥ वा. सं० अ० ३० मं. ८ ॥ ओंनदीभ्यःपौंजिष्ठम्० ॥
साम०॥ छं. सं० अ. १ प्र० २ द० ५ मं. ६ । ओंउपह्वरेगिरीणांसंगमे० । अथ० । ओंसिन्धुपत्नीःसिंधुराज्ञीः ॥

न॒दीभ्यः॒पौञ्जि॒ष्ठमृ॒क्षीकाभ्यो॒नैषादम्पुरुषव्या॒घ्राय॑दु॒र्म्मदङ्गन्धर्वाप्स॒रोभ्यो॒व्रा
त्यम्प्र॒युग्भ्य॒ऽउन्मत्त॑ꣳसर्पदेवज॒नेभ्योऽप्रतिपद॒मयेभ्यः॒कित॒वमी॒र्य्यताया॒ऽअकि

तत्राम्पिशाचेभ्योबिदलकारींय्यांतुधानेभ्य;कराटकीकारीम् ॥ ॐभूर्भु० नदीभ्योनमः
नदीः आवाहया० । पू० ॥४२॥ तत्रैवब्रह्मणःपादमूलेसप्तसमुद्रानावाह्यपूजयेत ॥ ॐएह्ये
हियादोगणवारिधीनाङ्गणेनमेघाप्सरसांसहैव ॥ विद्याधरेन्द्रामरगीयमानपाहि
त्वमस्मान्भगवन्नमस्ते ॥ इतिध्यात्वा ॥ समुद्रोसीतिमन्त्रस्यप्रजापतिर्ऋषिर्यजु

ऋ० । ओंमापोमौषधीर्हिं०० ॥ यजु० । वा. । सं० अ. । १८ । मं. । ४५ । ओंसमुद्रोसिनभस्वाना० ॥
साम० । छं. सं. अ. १ प्र. २ द. ५ मं. ३ । ओंसमस्यमन्यवो ॥ अथ० । ओंयोअग्रतोरोचनानांसमुद्र० ॥

श्छन्दःसप्तसमुद्रादेवतासप्तसमुद्रावाहनेपूजनेविनियोगः ॥ ॐसमुद्रोसिनभस्वा
नार्द्रदानुःशम्भूर्मयोभूरभिमाव्वाहिस्वाहामारुतोसिमरुताङ्गणः ॥ शम्भूर्मयो
भूरभिमाव्वाहिस्वाहावुस्यूरसिदुवस्वाञ्छम्भूर्मयोभूरभिमाव्वाहिस्वाहा ❁ ॥

ॐभूर्भु॰सप्तसमुद्रेभ्योनमः । सप्तसमुद्रानावाहयामिपूजयामि ॥ ४३ ॥ केषाञ्चिन्मतेतुमध्याग्नेयदक्षिणेशानोत्तरपूर्वपश्चिमनिर्ऋतिवायव्येतियथाक्रमेणादित्यादिग्रहान्संस्थाप्यपूजयेत् ॥ तत्रक्रमः ॥ ततोमध्येऽष्टदलमध्येअग्निन्दूतमितिमन्त्रेण ॥ श्रीसूर्यायनमः ॥ सूर्यमावा॰ ॥ पू॰ ॥ ४४ ॥ ततः आग्नेयेत्रयोदशपदरुद्ररूपायांवल्ल्यामप्स्वग्नेइतिमन्त्रेण ॥ ओंभू॰ ॥ सोमायनमः ॥ सोमम्मा॰ । पू॰ ॥४५॥ ततःदक्षिणेपञ्चविंशत्पदायांवाप्यां । स्योनापृथिवीतिमन्त्रेण ॥ ओंभू॰ ॥ भौमायनमः ॥ भौममा॰ ॥पू॰॥४६॥ ततःईशानेत्रयोदशपदरूपायान्नीलवल्ल्यामिदंविष्णुरितिमंत्रेण । ओंभू॰ बुधायनमः । बुधमा॰ । पू॰ ॥४७॥ ततः । उत्तरेपंचविंशतिपदात्मिकायांवाप्यां ॥ ओंमहाँ२॥ऽइन्द्रइति

मन्त्रेणबृहस्पतयेनमः ॥ बृहस्पतिमावाहयामि । पू० ॥ ४८ ॥ तथापूर्वेपंचविंशतिपदात्मिकायांवाप्याम् ॥ ओंशुक्रज्योतिश्चेतिमन्त्रेणशुक्रायनमः ॥ शुक्रमावा० ॥ पू० ॥ ४९ ॥ ततःपश्चिमेपंचविंशतिपदात्मिकायांवाप्याम् ॥ ओंप्रजापतेइतिमन्त्रेणशनैश्चरायनमः॥शनैश्चरमा०॥ पू० ॥ ५० ॥ ततोनैर्ऋत्ये । त्रयोदशपदात्मिकायान्नीलवल्ल्यामायङ्गौरितिमन्त्रेण । राहवेनमः । राहुमा० । पू० ॥ ५१ ॥ ततोवायव्ये । त्रयोदशपदात्मिकायांनीलवल्ल्यांब्रह्मजज्ञानमितिमन्त्रेणकेतवेनमः । केतुमा० ॥ पू० ॥ ५२ ॥ इतिग्रहान्संपूज्य ॥ अन्यत्सर्वन्नाममन्त्रेणपूजयेत् ॥ तद्यथा ॥ उपरिमेखलायान्नामभिर्मेरुंस्थापयेत् ॥ ओंभूर्भु० । मेरवेनमः ॥ मेरुमा० । पू० ❀ ॥ १ ॥ ❀ परिधिषुमण्ड

लाह्वहिःसत्वरजस्तमोरूपासु ॥ प्रथमपरिधौ ॥ ओंविष्णवेनमः ॥ विष्णुमा० ॥ पू० १ ॥ द्वितीये ॥ ब्रह्मणेनमः ॥ ब्रह्माणमा० ० पू० ॥ २ ॥ तृतीयेरुद्रायनमः ॥ रुद्रमा० । पू० ॥ ३ ॥ ततोमंडलवाह्ये । प्रागादिदिक्षुविदिक्षुचक्रमेणवज्रादीन्पूजयेत् ॥ पूर्वेवज्रायनमः । वज्रमा०। १ । आग्नेय्यां । ओंशक्तयेनमः ॥ शक्तिमा० । पू० ॥ २ ॥ दक्षिणे ॥ ओंदण्डायनमः । दण्डमावा० । पू० ॥ ३ ॥ नैर्ऋत्ये । ओंखड्गायनमः ॥ खड्गमा० । पू० ॥ ४ ॥ पश्चिमे ॥ ओंपाशायनमः । पाशमा० । पू० । ५ ॥ वायव्ये ॥ ओंअङ्कुशायनमः । अङ्कुशमा० । पू० ॥ ६ ॥ उत्तरे ॥ ओंगदायैनमः ॥ गदामा० । पू० ॥ ७ ॥ ईशाने ॥ ओंत्रिशूलायनमः ॥ त्रिशूलमा० । पू० ॥ ८ ॥

नैर्ऋत्यवरुणयोर्मध्ये ॥ ओंपद्मायनमः ॥ पद्मा० । पू० ॥ ९ ॥ ईशानेन्द्रयोर्मध्ये ॥ ओंचक्रायनमः ॥ चक्रमावा० । पू० । १० ॥ इति वज्रादीन्संपूज्य ॥ तदनन्तरंमण्डलाद्बहिरे वपूर्वादिदिक्षुब्राह्म्यादीन्पूजयेत् ॥ पूर्वे ॥ ओंब्राह्म्यैनमः ॥ ब्रा० । मा० । पू० १ ॥ आग्नेय्यां ॥ ओंमाहेश्वर्यैनमः ॥ माहे० । पू० ॥ २ ॥ दक्षिणे ॥ ओंकौमार्य्यैनमः ॥ कौमारीमा० । पू० ॥ ३ ॥ नैर्ऋत्ये ॥ ओंवैष्णव्यैनमः ॥ वैष्ण० । मा० । पू० ॥ ४ ॥ पश्चिमे ॥ ओंवाराह्य्यैनमः । वारा० मा० । पू० ॥ ५ ॥ वायव्ये ॥ ओंइन्द्रारायैनमः ॥ इन्द्रा० । मा० । पू० ॥ ६ ॥ उत्तरे ॥ ओंचामुण्डायैनमः ॥ चामुण्डामा० । पू० ॥ ७ ॥ ईशान्याम् ॥ ओंविनायक्यैनमः ॥ विना० । मा० ।

पू० ॥ ८ ॥ एवंपूर्वादिक्रमेणैवगौतमादीनांपूजनम् ॥ ओंगौतमायनमः ॥ गौ० । मा० । पू० ॥ १ ॥ ओंअत्रयेनमः ॥ अ० । मा० । पू० ॥ २ ॥ ओंभरद्वाजायनमः । भ० । मा० । पू० ॥ ३ ॥ ओंविश्वामित्रायनमः ॥ विश्वा० । मा० । पू० ॥ ४ ॥ ओंकश्यपायनमः ॥ कश्य० । मा० । पू० ॥ ५ ॥ ओंजमदग्नयेनमः ॥ जम० । मा० । पू० ॥ ६ ॥ ओंवसिष्ठायनमः ॥ वसि० । मा० । पू० ॥ ७ ॥ ओंअरुन्धत्यैनमः । अरुं० । मा० । पू० ॥ ८ ॥ इतिनाममंत्रेणषोडशोपचारैः संपूज्य ❀ ॥ ❀ ततोलिङ्गतोभद्रमध्येसर्वतोभद्रकर्णिकायुक्ताष्टदलोपरितांम्रमयं कलशंमहीद्यौरित्यादिमंत्रेणस्थापनाविधिनासुदृढमव्रणंस्थापयेत् ❀ ❀ ॥ पञ्चरत्नपञ्चामृतसर्वौषध्यादिनिःक्षिप्य ❀ ॥ ❀ ताम्रमयेणपात्रेणतत्पिधा

यतोस्मिन्पात्रेसप्तधान्यंपरिपूर्य ॥ तस्योपरिस्वर्णमयींप्रतिमामग्न्युत्तारणपूर्वकं
संस्थाप्य ॥ ओंमनोजूतिरितिमन्त्रेणप्रातिष्ठाप्य ॥ षोडशोपचारैःसंपूज्यनम
स्कुर्यात् ॥ ततोवायव्यादिप्रादेशप्रदक्षिणक्रमेणद्वादशज्योतिर्लिङ्गस्योपरिपुष्पा
ञ्जलिङ्कुर्यात् ॥ पुष्पबिल्वपत्रादिगृहीत्वा ॥ ओंसौराष्ट्रदेशेवसुधावका
शेज्योतिर्मयञ्चन्द्रकलावतंसं ॥ भक्तिप्रियाणाङ्कृपयावतीर्णंतंसोमनाथंशरणंप्रप
द्ये ॥ श्रीसोमनाथायनमः ॥ १ ॥ पुष्पाञ्जलीन्समर्प्पयामि ॥ इतिसर्वत्र ॥
तस्मात्पूर्वेमल्लिकार्ज्जुनं ॥ ओंश्रीशैलशृङ्गेविबुधैकसङ्गेकलाद्रितुङ्गेप्रमुदावसन्तं ॥
तमर्ज्जुनंमल्लिकपूर्वमेकंनमामिसंसारसमुद्रसेतुम् ॥ ❀ ❀ ❀ ❀
श्रीमल्लिकार्ज्जुनायनमः ❀ ॥ २ ॥ ❀ तदनन्तरंमहाकालम् ❀ ॥

ओंअवन्तिकायांविहितावतारंभक्तिप्रियाणाञ्जनयेजनानाम् ॥ अकालमृत्योःपरिरक्षणार्थंवन्देमहाकालमयंसुरेशं ॥ श्रीमहाकालायनमः ॥ ३ ॥ ततःअमरेश्वरम् ॥ ओंकावेरिकानर्मदयोःपवित्रेसमागमेसज्जनतारणाय ॥ सदैवमान्धातृपुरेवसन्तमोंकारमीशंतमहन्नमामि ॥ श्रीअमरेश्वरायनमः ॥ ४ ॥ तद्दक्षिणभागेवैद्यनाथम् ॥ ओंपुरोत्तमेप्रज्वलिकापिधानेसदावसन्तङ्गिरिजासमेतम् ॥ सुरासुराराधितपादपद्मंश्रीवैद्यनाथंसततंस्मरामि ॥ श्रीवैद्यनाथायनमः ॥ ५ ॥ तद्दक्षिणेभीमशङ्करम् ॥ ओंयंडाकिनीशाकिनिकासमाजेनिषेव्यमाणांपिशिताशनैश्च ॥ सदैवभीमादिपदप्रसिद्धन्तंशङ्करम्भक्तिहितन्नमामि ॥ श्रीभीमशङ्करायनमः ॥ ६ ॥ तद्दक्षिणेरामेश्वरम् ॥ सुताम्रपर्णीजलराशियोगेनिबद्धसेतुंप्लवगैर

सङ्ख्यैः श्रीरामचन्द्रेणसमर्पितंतंरामेश्वराख्यंसततंस्मरामि ॥ * * * श्रीरामनाथायनमः ॥ ७ ॥ तत्पश्चिमेनागेशं ॥ ओंआमर्दसङ्गनगरेतिरम्येविभूषिताङ्गंविविधैश्चभोगैः ॥ सुभक्तिमुक्तिप्रदमीशमेकंश्रीनागनाथं शरणम्प्रपद्ये ॥ श्रीनागेश्वरायनमः ॥ ८ ॥ तदनन्तरङ्केदारनाथं ॥ ओंहेमाद्रिपार्श्वेरुचिरप्रदेशेसंपूज्यमानंसततंमुनीन्द्रैः ॥ सुरासुरैर्यक्षमहोरगाद्यैः केदारनाथंसशिवन्नमामि ॥ श्रीकेदारनाथायनमः ॥ ९ ॥ तदनन्तरं घृष्णेशं ॥ ओंकलापुरेरम्यशिवालयेऽस्मिन्समुल्लसन्तन्त्रिजगद्वरेण्यम् ॥ वन्देमहोदारसदास्वभावंसदाशिवाख्यङ्घृष्णेश्वरञ्च ॥ श्रीघृष्णेश्वरायनमः ॥ १० ॥ तदुत्तरेविश्वनाथं ॥ ओंसानन्दमानन्दवनेवसन्तमानन्दकंदंहतपापवृन्दम् ॥

वाराणसीनाथमनाथनाथंश्रीविश्वनाथंसततंस्मरामि ॥ श्रीविश्वनाथायनमः ॥११॥

तदुत्तरेत्र्यम्बकेश्वरम् ॥ ओंसह्याद्रिशृङ्गेविमलेवसन्तङ्गोदावरीतीरपवित्रदेशे ॥ यद्दर्शनात्पातकमाशुनाशंप्रयातितंत्र्यंबकमीशमीडे ॥ श्रीत्र्यम्बकेश्वरानमः ॥१२॥

इतिलिङ्गतोभद्रपूजनप्रकारः ॥

* * * * * *

अथलिङ्गतोभद्रस्थापितदेवताहवनप्रयोगविधिर्लिख्यते ॥ ॐमद्येहेत्यादि० आयुःकामार्थंपुष्टिकामार्थंयोगक्षेमार्थंद्विपदचतुष्पदशान्त्यर्थंसप्रासादविष्णुमूर्त्तेःस्थिरप्रतिष्ठायागकर्म्माङ्गभूतलिङ्गतोभद्रदेवताप्रीत्यर्थमाभिस्तिलतण्डुलाज्याहुतिभिर्वन्हौहवनमहङ्करिष्ये ॥ ततःमध्येऽष्टदलोपरि ॥ ॐब्रह्मणेनमःस्वाहा ॥ इदम्ब्रह्मणे ॥ १ ॥ उत्तरे ॥ ॐसोमायनमःस्वाहा ॥ इदंसो० ॥ २ ॥ ऐशान्यां ॥

ॐईशानायनमःस्वाहा ॥ इदमीशा० ॥ ३ ॥ पूर्वे ॥ ॐइन्द्रायनमःस्वाहा ॥
इदमिन्द्रा० ॥ ४ ॥ आग्नेये ॥ ॐअग्नयेनमःस्वाहा ॥ इदमग्न० ॥ ५ ॥
दक्षिणे ॥ ॐयमायनमःस्वाहा ॥ इदंय० ॥ ६ ॥ नैर्ऋत्ये ॥ ॐनिर्ऋतये
नमःस्वाहा ॥ इदन्निर्ऋ० । ७ ॥ पश्चिमे ॥ ॐवरुणायनमःस्वाहा ॥ इदंव०॥८॥
वायव्ये ॥ ॐवायवेनमःस्वाहा ॥ इदम्वायवे ॥ ९ ॥ वायुसोमयोर्मध्ये ॥ नवपदेभद्रे
ॐवसुभ्योनमःस्वाहा ॥ इदंवसुभ्यः ॥ १० ॥ तत्रैव ॥ ॐध्रुवायनमः
स्वाहा । इदन्ध्रु० ११ ॥ ॐअध्वरायनमःस्वाहा ॥ इदमध्व० ॥ १२ ॥
ॐसोमायनमःस्वाहा ॥ इदंसो० ॥ १३ ॥ ॐअद्भ्योनमःस्वाहा ॥ इदम० ॥
१४ ॥ ॐअनिलायनमःस्वाहा ॥ इदमनि० ॥ १५ ॥ ॐअनलायनमः

स्वाहा ॥ इदमन० ॥ १६ ॥ ॐप्रत्यूषायनमःस्वाहा ॥ इदंप्र० ॥ १७ ॥ ॐप्रभासायनमःस्वाहा ॥ इदंप्रभासाय ॥ १८ ॥ सोमेशानयोर्मध्ये ॥ नवपदेभद्रे ॐरुद्रेभ्योनमःस्वाहा ॥ इदंरुद्रे० ॥ १९ ॥ तत्रैव ॥ ॐइन्द्रवतेनमःस्वाहा ॥ इदमिन्द्रव० ॥ २० ॥ ओंवीरभद्रायनमःस्वाहा ॥ इदंवीर० ॥ २१ ॥ ॐशम्भवेनमःस्वाहा ॥ इदंशंभ० ॥ २२ ॥ ओंगिरीशायनमःस्वाहा ॥ इदङ्गिरी० ॥ २३ ॥ ओंमहायशसेनमःस्वाहा ॥ इदंमहाय० ॥ २४ ॥ ओंअजायनमःस्वाहा ॥ इदम० ॥ २५ ॥ ओंपिनाकिनेनमःस्वाहा ॥ इदंपिनाकिने ॥ २६ ॥ ओंअहिर्वुध्न्यायनमःस्वाहा ॥ इदमहिर्वु० ॥ २७ ॥ ओंकपालिनेनमःस्वाहा ॥ इदङ्कपा० ॥ २८ ॥ ॐदिशांपतयेनमःस्वाहा ॥ इदंदि

शांप० ॥ २९ ॥ ओंभर्गायनमःस्वाहा ॥ इदम्भ० ॥ ३० ॥ ओंभुवनाधीशायनमःस्वाहा ॥ इदम्भुव० ॥ ३१ ॥ ईशानेन्द्रयोर्मध्येन३पदेभद्रे ॥ ओंआदित्येभ्योनमःस्वाहा ॥ इदमादित्येभ्यः ॥ ३२ ॥ तत्रैव ॥ ओंअरुणायनमःस्वाहा ॥ इदमरु० ॥ ३३ ॥ ओंसूर्यायनमःस्वाहा ॥ इदंसूर्या० ॥ ३४ ॥ ओंवेदाङ्गायनमःस्वाहा ॥ इदम्वेदां० ॥ ३५ ॥ ओंभानवेनमःस्वाहा ॥ इदंभा० ॥३६॥ ओंइन्द्रायनमःस्वाहा ॥ इदमिन्द्रा० ॥ ३७ ॥ ओंरवयेनमःस्वाहा ॥ इदंरवये ॥ ३८ ॥ ओंगभस्तयेनमःस्वाहा ॥ इदंगभ० ॥ ३९ ॥ ओंअर्यम्णेनमःस्वाहा ॥ इदमर्य० ॥ ४० ॥ ओंस्वर्णरेतसेनमःस्वाहा ॥ इदंस्वर्णरे० ॥ ४१ ॥ ओंदिवाकरायनमःस्वाहा ॥ इदन्दिवा० ॥ ४२ ॥ ओंमि

त्रायनमःस्वाहा ॥ इदंमित्रा० ॥ ४३ ॥ ओंविष्णवेनमःस्वाहा ॥ इदंविष्णवे ॥ ४४ ॥ इन्द्राग्न्योर्मध्येनवपदेभद्रे ॥ ओंमाश्विभ्यान्नमःस्वाहा ॥ इदमाश्विभ्यां० ॥ ४५ ॥ अग्नियमयोर्मध्येनवपदेभद्रे ॥ ओंविस्वेभ्योदेवेभ्योनमःस्वाहा ॥ इदंविश्वेभ्योदेवेभ्यः ॥ ४६ ॥ तत्रैव ॥ ओंपितृभ्योनमःस्वाहा ॥ इदंपितृभ्यः ॥ ४७ ॥ यमनिर्ऋत्योर्मध्येनवपदेभद्रे ॥ ओंयक्षेभ्योनमःस्वाहा ॥ इदंयक्षेभ्यः ॥ ४८ ॥ निर्ऋतिवरुणयोर्मध्येनवपदेभद्रे ॥ ओंसर्पेभ्योनमःस्वाहा ॥ इदंसर्पेभ्यः ॥ ४९ ॥ वरुणवायव्ययोर्मध्येनवपदेभद्रे ॥ ओंगन्धर्वाप्सरोभ्योनमःस्वाहा ॥ इदङ्गन्धर्वा० ॥ ५० ॥ वसुसोममध्येऽष्टादशपदेलिङ्गे ॥ ओंश्रीसोमनाथायनमःस्वाहा ॥ इदंसोम० ॥

५१ ॥ तत्पूर्वेऽष्टादशपदेलिङ्गे ॥ ओंमल्लिकार्ज्जुनायनमःस्वाहा ॥ इदंमल्लिका॰ ॥
५२ ॥ सोमरुद्रयोर्मध्येऽष्टादशपदेलिङ्गे ॥ ओंमहाकालायनमःस्वाहा ॥ इदंम
हाका॰ ॥ ५३ ॥ द्वादशादित्यैमध्येऽष्टादशपदेलिङ्गे ॥ ओंअमरेश्वरायन
मःस्वाहा ॥ इदममरेश्व॰ ॥ ५४ ॥ तस्माद्दक्षिणभागेऽष्टादशपदेलिङ्गे ॥ ओंवै
द्यनाथायनमःस्वाहा ॥ इदम्वैद्यना॰ ॥ ५५ ॥ इन्द्राश्विनोर्मध्येऽष्टादश
पदेलिङ्गे ॥ ॐभीमशङ्करा यनमःस्वाहा ॥ इदंभीमशङ्क॰ ॥ ५६ ॥ अग्निय
मयोर्मध्येऽष्टादशपदेलिङ्गे ॥ ॐरामेश्वरा यनमःस्वाहा ॥ इदंरामे॰ ॥ ५७ ॥
तत्पश्चिमेऽष्टादशपदेलिङ्गे ॥ ॐनागेश्वरायनमःस्वाहा ॥ इदंनागेश्व॰ ॥ ५८ ॥
यमनिर्ऋतिमध्येऽष्टादशपदेलिङ्गे ॥ ॐकेदारनाथायनमःस्वाहा ॥ इदङ्केदारना॰ ॥

५९ ॥ निर्ऋतिवरुणयोर्मध्येऽष्टादशपदेलिङ्गे ॥ ॐघृष्णेश्वरा यनमःस्वाहा ॥ इदंघृष्णेश्व० ॥ ६० ॥ तदुत्तरेऽष्टादशपदेलिङ्गे ॥ ॐविश्वनाथायनमःस्वाहा ॥ ददम्विश्व० ॥ ६१ ॥ वरुणवायव्ययोर्मध्येअष्टादशपदेलिङ्गे ॥ ॐत्र्यम्बकेश्वरायनमःस्वाहा ॥ इदंत्र्यम्बकेश्व० ॥ ६२ ॥ उत्तर वाप्यँन्तरालेॐरुद्रादिगणेभ्योनमःस्वाहा ॥ इदंरुद्रादिगणेभ्यः ॥६३॥ तत्रैवस्कन्दायनमःस्वाहा॥ इदम०॥६४॥ ब्रह्मेशानयोर्मध्येश्रृङ्खलायाम्ओंभूम्यैनमःस्वाहा ॥ इदम्भू० ॥ ६५ ॥ तत्रैवयक्षेभ्योनमःस्वाहा ॥ इदंयक्षे० ॥ ६६ ॥ ब्रह्मेन्द्रमध्येवाप्यां ॥ ओंदुर्गायैनमःस्वाहा ॥ इदंन्दुर्गा० ॥ ६७ ॥ तत्रैवओंविष्णवेनमःस्वाहा ॥ इदम्विष्णु० ॥ ६८ ॥ ब्रह्माग्निमध्येश्रृङ्खलायां ॥ ओंस्वधायैनमःस्वाहा ॥

इदंस्व० ॥ ६९ ॥ ब्रह्मयमयोर्मध्येवाप्या ॥ ओंमृत्यवेनमःस्वाहा ॥ इदं
मृ० ॥ ७० ॥ तत्रैवरोगायनमःस्वाहा ॥ इदंरोगा० ॥ ७१ ॥ ब्रह्मनिर्ऋति
मध्ये शृङ्खलायां ॥ ओंगणपतयेनमःस्वाहा ॥ इदङ्गण० ॥ ७२ ॥ ब्रह्मवरु
णयोर्मध्येवाप्यां ॥ ओंकालायनमःस्वाहा ॥ इदङ्का० ॥ ७३ ॥ ब्रह्मवायव्य
योर्मध्येशृङ्खलायां ॥ ओंमरुद्भ्योनमःस्वाहा ॥ इदंमरु० ॥ ७४ ॥
ब्रह्मणःपादमूलेकर्णिकाधः ॥ ❀ ❀ ❀ ० ❀ ❀
ॐपृथिव्यैनमःस्वाहा ॥ इदंपृ० ❀ ॥ ७५ ❀ ॥ तत्रैव ॥ ॐनदीभ्यो
नमःस्वाहा ॥ इदन्नदी० ॥ ७६ ॥ तत्रैव ॥ ब्रह्मणःपादमूले ॥ ॐसप्तसमु
द्रेभ्योनमःस्वाहा ॥ इदंसप्तस० ॥ ७७ ॥ ततोमध्येऽष्टदले ॥ ॐसूर्याय

नमःस्वाहाइदंसूर्याय० ॥ ७८ ॥ आग्नेयेत्रयोदशपदवल्ल्यां ॥ ॐचन्द्रा
यनमःस्वाहा ॥ इदंचं० ॥ ७९ ॥ दक्षिणेपञ्चदशपदात्मिकायांवाप्यां ॥ ओंभौ
मायनमःस्वाहा ॥ इदंभौ० ॥ ८० ॥ ऐशान्याम्त्रयोदशपदवल्ल्यां ॥
ओंवुधायनमःस्वाहा ॥ इदम्वुधा० ॥ ८१ ॥ उत्तरेपञ्चदशपदात्मिकायाम्वाप्यां ॥
ओंबृहस्पतयेनमःस्वाहा ॥ इदम्बृ० ॥ ८२ ॥ पूर्वेपञ्चदशपदात्मिकायांवाप्यां ॥
ॐशुक्रायनमःस्वाहा ॥ इदंशुक्राय ॥ ८३ ॥ पश्चिमेपञ्चदशपदात्मिकायाम्
वाप्यां ॥ ॐशनयेनमःस्वाहा ॥ इदंशनये ॥ ८४ ॥ नैर्ऋत्ये
त्रयोदशपदवल्ल्यां ॥ ॐराहवेनमःस्वाहा ॥ इदंराह० ॥ ८५ ॥
वायव्येत्रयोदशपदवल्ल्यां ॥ ॐकेतवेनमःस्वाहा ॥ इदंकेतवे ॥ ८६ ॥

मध्येऽष्टदलेईशानभागेहेमाद्रयेनमःस्वाहा ॥ इदंहेमा० ॥ ८७ ॥ मण्डलाद्बहिः ॥ प्रथमायांसत्वरूपायांवप्रायां ॥ ॐविष्णवेनमःस्वाहा ॥ इदंविष्णवे ॥ ८८ ॥ द्वितीयायांरजोगुणात्मिकायांवप्रायां ॥ ॐब्रह्मणेनमःस्वाहा ॥ इदम्ब्र० ॥ ८९ ॥ तमोरूपायांतृतीयायाम् ॥ ॐरुद्रायनमःस्वाहा ॥ इदंरुद्राय ॥ ९० ॥ तद्बहिःपूर्वादिदिक्षुविदिक्षु ॥ ओंवज्रायनमःस्वाहा ॥ इदंवज्रा० ॥ ९१ ॥ ॐशक्तयेनमःस्वाहा ॥ इदंश० । ९२ ॥ ॐदण्डायनमःस्वाहा ॥ इदंदण्डा० ॥ ९३ ॥ ॐखड्गायनमःस्वाहा ॥ इदंखड्गाय ॥ ९४ ॥ ओंपाशायनमःस्वाहा ॥ इदंपा० ॥ ९५ ॥ ओंअङ्कुशायनमःस्वाहा ॥ इदमङ्कुशाय ॥ ९६ ॥ ओंगदायैनमःस्वाहा ॥ इदङ्ग

दा० ॥ ९७ ॥ ओंत्रिशूलायनमःस्वाहा ॥ इदंत्रिशू० ॥ ९८ ॥ नैर्ऋत्यवरुणयोर्मध्ये ॥ ओंपद्मायनमःस्वाहा ॥ इदंप० ॥ ९९ ॥ ईशानेन्द्रयोर्मध्ये ॥ ओंचक्रायनमःस्वाहा ॥ इदञ्च० ॥ १०० ॥ पुनः पूर्वादिक्रमेण ॥ ओंब्राह्म्यैनमःस्वाहा ॥ इदंब्रा० ॥ १०१ ॥ ओंमाहेश्वर्य्यैनमःस्वाहा ॥ इदंमा० ॥ १०२ ॥ ओंकौमार्य्यैनमःस्वाहा ॥ इदङ्कौ० ॥ १०३ ॥ ओंवैष्णव्यैनमःस्वाहा ॥ इदम्वै० ॥ १०४ ॥ ओंवाराह्यैनमःस्वाहा ॥ इदम्वा० ॥ १०५ ॥ ओंइन्द्राण्यैनमःस्वाहा ॥ इदमिन्द्रा० ॥ १०६ ॥ ओंचामुण्डायैनमःस्वाहा ॥ इदंचामुं० ॥ १०७ ॥ ओंविनायक्यैनमःस्वाहा ॥ इदंविना० ॥ १०८ ॥ एवङ्क्रमेण ॥ ओंगौ

तमायनमःस्वाहा ॥ इदंङ्गौ० ॥ १०९ ॥ ओंअत्रयेनमःस्वाहा ॥ इदमत्रये ॥ ११० ॥ ओंभरद्वाजायनमःस्वाहा ॥ इदम्भर० ॥ १११ ॥ ओंविश्वामित्रायनमःस्वाहा ॥ इदंवि० ॥ ११२ ॥ ओंकश्यपायनमःस्वाहा ॥ इदङ्कश्य० ॥ ११३ ॥ यमदग्नयेनमःस्वाहा ॥ इदंयमदग्नये ॥ ११४ ॥ ओंवसिष्ठायनमःस्वाहा ॥ इदम्व० ॥ ११५ ॥ ओंअरुन्धत्त्यैनमःस्वाहा ॥ इदमरुन्धत्यै ॥ ११६ ॥ ओंतत्सत् कृतेनानेनहवनेनलिङ्गतोभद्रदेवताःप्रीयन्ताम् ॥ यथाबाणेत्यभिषेकः ॥ ततःपूर्णाहुतिंजुहुयात् ॥ ओंमूर्द्धानंन्दि॒वोऽअ॒र॒तिम्पृथि॒व्व्यावैश्वान॒रमृ॒तऽआजा॒तम॒ग्निम् ॥ क॒विꣳस॒म्म्राज॒मतिथिञ्जना॒ना॒मा॒सन्नापात्रंञ्जनयन्तदे॒वाःस्वाहा सं. अ. ७ मं. २४ ॥ इतिमन्त्रेणपूर्णाहुतिः ॥

इतिलिङ्गतोभद्रहवनाविधिःसमाप्तः ॥ अथयज्ञवास्तुचक्रस्योद्धारमाह ॥ तच्चोक्तं मात्स्ये ॥ ततोविप्रावादिभिःप्रोक्तंवास्तुमध्येतुयोबलिः ॥ आहारोवैश्वदेवान्तेनूनन्तवभविष्यति ॥ १ ॥ वास्तुपूजामकुर्वाणस्तवाहारोभविष्यति ॥ वास्तुयज्ञस्समुद्दिष्टस्तदाप्रभृतिशांतये ॥ २ ॥ प्रपञ्चसारे ॥ चतुःषष्टिपदंवास्तुदेवानांपरमंहितम् ॥ एकाशीतिपदम्वास्तुगृहाणान्तुप्रकीर्तितम् ॥ ३ ॥ कृत्वावनिंसमतलाञ्चतुरस्ररूपामष्टाष्टकोष्टकपदाञ्चसकोणसूत्राम् ॥ तस्याश्चतुष्पदसमन्वितमध्यकोष्ठेब्रह्मातुसाधकवरेणसमर्चनीयः ॥ ४ ॥ यागमण्डपनिर्ऋतिभागे हस्तमात्राम्वेदीञ्चकृत्वा ❀ ॥ ❀ तस्यान्तत्स्थापितेसुवर्णादिशलाकयानवरेखाः प्राक्पश्चिमायतान्वदक्षिणोत्तरायताःकृत्वा ॥ मध्यकोष्टचतुष्टयमेकीकृत्य ॥

प्रतिकोणन्त्रिषुत्रिषुपदेषुसूत्रञ्चदद्यात् ॥ तथाचतुर्विंशत्यर्द्धपदानिसंपद्यन्ते ॥
तत्रईशानकोणपदादारभ्यप्रदक्षिणक्रमेणईशादिपञ्चचत्वारिंशद्देवताःस्वस्वपदेषुप्रण
वव्याहृतिभिःतत्तन्मन्त्रेणावाह्यप्रतिष्ठाप्यपूजयेत् ॥ तत्रनामानितु ॥ ईशश्चै
वतुयर्ज्जुन्योजयोमाहेन्द्रएवच ॥ आदित्यश्चैवसत्यश्चभृशश्चैवान्तरिक्षकः ॥
१ ॥ एतेपूर्वेसमाख्यातादक्षिणेकथयाम्यहम् ॥ अग्निःपूषाचवितथोगृहक्ष
तयमौतथा ॥ २ ॥ गन्धर्वोभृङ्गराजश्चमृगश्चैवयथाक्रमम् ॥ दक्षिणेकथि
ताह्येतेवारुणायाङ्कथयाम्यहम् ॥ ३ ॥ पितृदौवारिकाश्चैवसुग्रीवश्चयथाक्रमं ॥
पुष्पदन्तश्चवरुणोअसुरःशोषएवच ॥ ४ ॥ पापयक्ष्माचविख्यातोवारुण्याम्परि
कीर्त्तिताः ॥ उत्तरेचप्रवक्ष्यामिदेवतामुनिसत्तम ॥ ५ ॥ रोगोनागस्तथा

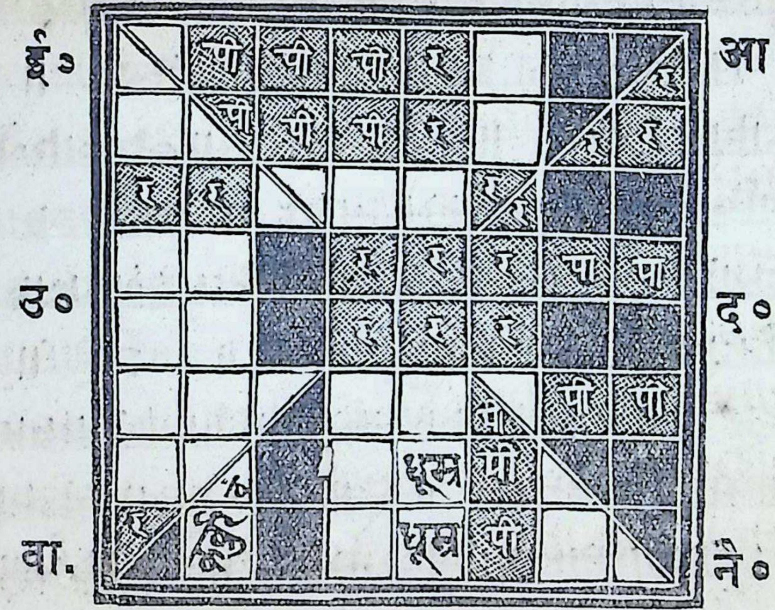
ई॰
आ॰
उ॰
द॰
वा॰
नै॰
पी
र
पा
धूम्र

मुख्योभल्लाटःसोमएवच ॥ उरगस्त्वदितिःप्रोक्तादितिश्चैवनसंशयः ॥ ६ ॥
वाह्यवारुणकेह्येतादेवताःपरिकीर्त्तिताः ॥ मध्येब्रह्मासमाख्यतःसर्वलोकपितामहः
॥ ७ ॥ अर्यमादेवतापूर्वेविवस्वाँश्चैवदक्षिणे ॥ मैत्रस्तुपश्चिमेज्ञेयउत्तरे
पृथिवीधरः ॥ ८ ॥ अपश्चैवापवत्सश्चईशानेप्रपूजयेत् ॥ सविता सावि
त्रआग्नेय्याञ्जयोअयाँश्चनैर्ऋते ॥ ९ ॥ रुद्रश्चरुद्रदासश्चवायव्याम्परिकीर्त्ति
तः ॥ ततःमण्डलवाह्ये ॥ ईशानेचरकीदेवीआग्नेय्यान्तुविदारिका ॥ १० ॥
पूतनानैर्ऋत्येपूज्यावायव्याम्पापराक्षसी ॥ स्कन्दश्चैवार्च्चयेत्पूर्वेदक्षिणेऽर्यमण
न्तथा ॥ ११ ॥ जृम्भकःपश्चिमेपूज्यउत्तरेपिलपिच्छिका ॥ हेमन्तंपूर्वपीठे
तुआग्नेय्यान्त्रिपुरान्तकम् ॥ १२ ॥ दक्षिणेचाग्निवेतालमग्निजिह्वान्तुनैर्ऋते ॥

कालन्तुपश्चिमेभागेवायव्येतुकरालिनम् ॥ १३ ॥ उत्तरेह्येकपादन्तुईशानेभीमरूपिणम् ॥ ज्वालामुखञ्चपातालेआकाशेगन्धमर्दनम् ॥ १४ ॥ एतान्सम्पूज्ययत्नेनक्षेत्रपालमतःपरम् ॥ अथदेशकालादिसङ्कीर्त्य ॥ प्रारिप्सितस्यसप्रासादविष्णुमूर्त्तेस्थिरप्रतिष्ठायागकर्मणःसाङ्गतासिद्ध्यर्थंसकलाभीष्टमनोरथानांपुत्रपौत्रादिसन्ततिस्थिरलक्ष्म्यारोग्यकामःयज्ञवास्तुपूजाङ्करिष्ये ॥ ततःकेषांचिदाचार्याणांमतेतुअस्मिन्यज्ञवास्त्वर्चनेपिमण्डलस्याग्नेयादिकोणेषुलोहशङ्कुचतुष्टयन्निखनीयमनेनमन्त्रेण ॥ ओंविशन्तुभूतलेनागालोकपालाश्चसर्वतः ॥ मण्डपेऽत्रावतिष्ठन्तुआयुर्बलकराःसदा ॥ इतिमन्त्रेणसर्वत्रशङ्कूनारोपणक्रमेणगन्धादिनासमभ्यर्च्यबलिन्दत्वा ॥ मन्त्राः ॥ अग्निभ्योप्यथसर्पेभ्योयेचान्यतान्स

माश्रिताः ॥ तेभ्योवलिम्प्रयच्छामिपुण्यमोदनमुत्तमम् ॥ ततोनैर्ऋत्ये ॥ नैर्ऋत्याधिपतिश्चैवनैर्ऋत्यांयेतुराक्षसाः ॥ वलिन्तेभ्यःप्रयच्छामिसर्वेगृह्णन्तु मन्त्रितम् ॥ ततःवायव्ये ॥ नमोस्तुवायुरक्षोभ्योयेचान्येतत्समाश्रिताः ॥ वलिन्तेभ्यःप्रयच्छामिपुण्यमोदनमुत्तमं ॥ ईशाने ॥ रुद्रेभ्योप्यथसर्पेभ्यांये चान्येतान्समाश्रिताः ॥ तेभ्योवलिम्प्रयच्छामिपुण्यमोदनमुत्तमं ॥ ततः आचम्य ॥ शान्तायशोवतीकान्तिर्विशालाप्राणवाहिनी ॥ सतीचसुमनानन्दा सुभद्रानामभिःक्रमात् ॥ पश्चिमारम्यपूर्वान्ताःएतादेवताउत्तरोत्तरतःपूज्याः ॥ ततः ॥ हिरण्यासुप्रभालक्ष्मीर्विभूतिर्विमलाप्रिया ॥ जयाज्वालाविशोकाचपूज्या हिनवदेवताः ॥ एतादक्षिणारम्भाउदगन्ताःपूर्वापरानवरेखाःसंपूज्य ❀ ❀ ❀ ॥

पायसेनताभ्यःबलिन्दत्वाचामेत् ॥ ततःवास्तुपीठंसंपूजयेत् ॥ सर्वज्ञानक्रिया व्यक्तकमलासनाययोगपीठायनमः ॥ मण्डलोपरिगन्धाक्षतपुष्पाणिप्रक्षिप्य ॥ ततःआवाहनादिमन्त्रैःसप्रणवव्याहृतिभिः ईशानादिदेवतामण्डलमध्येगन्धादिनाभ्यर्चयेत् ॥ ततःईशानार्धपदंशुक्लवर्णमावाह्यपूजयेत् ॥ शिखीकर्पूरधवलस्त्रिने

ऋ० । ओंअभित्वादेवसवितरी० ॥ यजु० । वा० । सं. । अ. । २७ । मं. । १८ । ओंतमीशानञ्जगतस्तस्थु० ॥ साम० । छं. । सं. । अ. । १ । प्र. । ३ । द. । ५ । मं. । १ । ओंअभित्वाशूरनोनुमोबुग्ध० ॥ अथ० । ओंधाताद्धातुनोरयिमीशा ॥

* * * * * * * *

त्रोवृषवाहनः ॥ वरत्रिशूलहस्तश्चवास्तोःशिरसिसंस्थितः ॥ इतिध्यात्वाओं तमीशानञ्जगतस्तस्थुषस्पतिंन्धियञ्जिन्न्वमवसेहूमहेब्बयम् ॥ पूषानोयथावेदसाम

संद्बृधेरक्षितापायुरदब्ध;स्वस्तये ॥ ओंभूर्भुवःस्वःईशानायनमः ॥ ईशमा
वाहयामिपूजयामि ॥ १ ॥ ततःपर्ज्जन्यंपीतवर्णसार्द्धपदमावाहयेत् ॥ आवा
हयामिपर्ज्जन्यंयादसांमुख्यनायकम् ॥ कुम्भीरथसमारूढंपाशहस्तंवरप्रदम् ॥
ज्योतिर्भूताम्बुवातात्मावास्तोर्दक्षेशिस्थितः ॥ इतिध्यात्वा ॥ ओंशन्नोवा
तं÷पवताꣳशन्नस्तपतुसूर्य्य÷शन्न;कनिक्रदद्देव;पर्ज्जन्न्योऽअभिवर्षतु ॥ ॐ

ऋ० । ओंपर्ज्जन्यायप्रगायत० ॥ यजु० । सं. । अ. । ३६ । मं. १० । ओंशन्नोवात÷पवताꣳशं० ॥ साम० ।
छंदो सं. । प्र. । ५ । उ. मं. १३ । ओंपर्ज्जन्यःपितामहिषस्य ॥ अथ० ॥ ओंपर्ज्जन्यस्वधृष्टे० ॥

भूर्भुवःस्वपर्ज्जन्यायनमःपर्ज्जन्यमावा०पू० ॥ २ ॥ ततःजयन्तंद्विपदंपीतवर्णमा
वाहयेत् ॥ जटिलःश्मश्रुलःश्रान्तःकमण्डल्वक्षसूत्रभृत् ॥ जयन्तोऽब्जासनोगौरोवा

स्तोर्द्दक्षश्रवस्थितः ॥ इतिध्यात्वा ॥ ॐयोनं÷पिताजनितायोव्विधाताधामानिवे

ऋ० । ओंगोत्रभिदंगोविदम्० ॥ यजु० । वा. । सं. । अ. । १७ । मं. । २७ । ओंयोनःपिताजनितायोविधा० ॥
साम० । छं. सं. अ. १ प्र. २ द. ७ मं. ४ । ओंइन्द्रायमद्वनेसुतम्० ॥ अथ० । ओंमर्माणितेवर्मणाच्छा ॥

द्भुवनानिव्विश्वा ॥ योदेवानान्नामऽधाएकंऽएवतछंसम्प्रश्नम्भुवनाजन्त्य
न्न्या ॥ ओंभूर्भुवःस्वःजयन्तायनमः । जयन्तमा० पू० ॥ ३ ॥
ततःमाहेन्द्रंद्विपदंपीतवर्णमावाह्यपूजयेत् ॥ इन्द्रऐरावतारूढोपीतोदैत्यविमर्दकः ॥

ऋ० । ओंइन्द्रस्वोविश्वतस्परि० ॥ यजु० । वा. । सं. । अ. । २६ । मं. । १० । ओंमहाँ२॥ऽइन्द्रोव्वज्रहस्तः ॥
साम० । छं. । सं. । अ. । १ । प्र. । ४ । द. । ३ । मं. । २ । योत्तिष्ठइन्द्रसदने० ॥ अथ० । ओंत्वमिन्दः
स्त्वमहेन्द्रस्त्वम् ॥

* * * * * * * * * *

कुलिशाक्षकरौवास्तोरंशस्थलसमाश्रितः ॥ इतिध्यात्वा ॥ ॐमहाँ२॥ऽइन्द्रो ब्वज्रहस्तः षोडशीशर्म्मयच्छतु ॥ हन्तुपाप्मानय्योस्मान्द्वेष्टि ॥ उपयामगृहीतोसिमहेन्द्रायंत्त्वैषतेयोनिर्म्महेन्द्रायंत्वा ॥ ॐभूर्भुवःस्वःमाहेन्द्रायनमः ॥ माहेन्द्रमा० । पू० ॥ ४ ॥ ततःआदित्यंद्विपदंरक्तवर्णंसंम्पूजयेत ॥ सूर्योरक्तो ग्रहाध्यक्षोधृताऽब्जद्विभुजःप्रभुः ॥ सप्ताश्वरथगोभास्वान्वास्तोर्दक्षांशसंस्थितः ॥

ऋ० । ओंत्यानुक्षत्रियांअव० ॥ यजु० । वा. । सं. । अ. । १३ । मं. । ४१ । ओंआदित्यङ्गर्ब्भम्पयसास० ॥ साम० । छं. । सं. । अ. । १ । प्र. । ६ । द. । ७ । मं. । १ । ओंअभिप्रियाणिपवते० ॥ अथ० । ओंमातादित्यानान्दुहिताव० ॥

* * * * * * * * *

ॐआदित्यङ्गर्ब्भम्पयंसासमंङ्धिसहस्रस्यप्रतिमाम्विश्वरूपम् ॥ परिवृङ्धिह

रंसामाभिमंछंस्तथा;शतायुंषङ्कृणुहि चीयमान; ॥ ओंभुर्भुवःस्वःआदित्याय नमः ॥ आदित्यमावा० । पू० ॥ ५ ॥ ततःसत्यंद्विपदंश्वेतवर्णमावाह्यपूजयेत् ॥

ऋ० । ओंसत्येनोत्यभिताभूमिः ॥ यजु० । वा. । सं. । अ. । १८ । मं. । ५ । ओंसत्यञ्चमेश्रद्धाचमे० ॥ साम० । छन्दो. । उ. । सं. । प्र. । ११ । ष. । मं. । ७ । ओंविनइन्द्रमृधोजहिनीचा० ॥ अथ० । ओंसत्यज्ञितंसपथयोपनीम् ॥

* * * * * * * * *

सत्योभूतिहितोधर्मोवरदाभयपाणिकः ॥ प्रसन्नाऽब्जासनोब्जाभोदक्षवाहौचसंस्थितः ॥ इतिध्यात्वा ॥ ॐसत्यञ्चमेश्रद्धाचमेजगच्चमेधनञ्चमेविश्वञ्चमेमहश्चकेक्रीडाचमेमोदश्चमेजातञ्चमेजनि[illegible]यमाणञ्चमेसूक्तञ्चमेसुकृतञ्चमेयज्ञेनकल्पन्ताम् ॥ ॐभूर्भुवःस्वःसत्यायनमः ॥ सत्यमा० । पू० ॥ ६ ॥ ततःभृशं

सार्द्धपदङ्कृष्णवर्णमावाहयेत् ॥ भृशःपुष्पविमानस्थःपुष्पेषिक्षुधनुर्धरःगौरे ॥

ऋ० । अभित्वादेवसवितरी० ॥ यजु० । वा. । [illegible]. । अ. । ३० । मं. । १२ । ओंभार्यैदार्वाहरम्० ॥ साम० । छंदो. उ. सं. प्र. २ मं. १३ । अभिप्रवःसुराधसः ॥ अथ । धातादधातुनोरयि०

* * *

नादरतःकामीवास्तोर्दक्षिणबाहुगः ॥ इतिध्यात्वा ॥ ॐभार्यैदार्वाहा॒रम्प्र॒भायांऽअग्ने॒धम्म्र॒ध्र॒स्स्यंठिव॒ष्टपायाभिषे॒क्तार॒म्बर्षिष्ठाय॒नाकायपरिवे॒ष्टारंन्देवलो॒कायपेशि॒तारम्मनुष्यलो॒कायप्प्रकरि॒तार॒ष्ठंसर्व्वेभ्योलो॒केभ्यंऽउपसे॒क्तार॒मवंऽऋत्यैब॒धायोपम॒न्थि॒तार॒म्मेधायव्वासः । पल्प्पूलीम्प्रकामायरजयि॒त्रीम् ॥ ॐभूर्भुवः स्वःभृशायनमः ॥ भृशमा० । पू० ॥ ७ ॥ ततःअन्तरिक्षमर्द्धंपदङ्कृष्णवर्णंसंपूजयेत् ॥ आवाहयेत्तमाकाशंविष्णोःपदमनन्तकम् ॥ यत्रदेवास्तथाय

क्षाग्रहाःसर्वेप्रतिष्ठिताः ॥ सशब्दंसर्वगम्व्योमप्रवाहौचैवसंस्थितः ॥ ॐहंसं
सःशुचिषद्वसुरन्तरिक्षसद्धोतावेदिषदतिथिर्दुरोणसत् ॥ नृषद्वरसदृतसद्व्योम

ऋ० । ओंअन्तरिक्षमह्याय० ॥ यजु० । वा, सं. अ, ११ मं. २४ ॥ ओंहंसःशुचिषद्वसुरम् ॥ साम० ।
छं. सं. अ. १ प्र. १ द. ६ मं. ३ । ओंऊर्द्ध्वऊषणऊतयेति० ॥ अथ० । ओंअन्तरिक्षेसहवाजिनीवन् ॥

सदब्जागोजाऋतजाअद्रिजाऋतम्बृहत् ॥ ॐभूर्भुवःस्वःअन्तरिक्षायनमः ॥
अन्तरिक्षमा० । पू० ॥ ८ ॥ ततःआग्नेयकोणेप्रवाहौअग्निमर्द्धपदंरक्तवर्णंसम्पूज
येत् ॥ इष्टंशक्तिंस्वस्तिकाभीतिमुच्चैर्दीर्घैर्दन्तैर्धारयन्तञ्जपाभम् ॥ हेमाकल्पंपद्म

ऋ० । ओंअग्निस्तिग्मेनशोचिषा ॥ यजु० । वा. सं. अ. २२ मं० १७ ॥ ओंअग्निन्दूतम्पुरोदधेहव्य० ॥
साम । छं. सं. अ. १ प्र. ५ द. ४ मं. ७ । ओंअग्निंतंमन्येयोवसुर० ॥ अथ० । अग्नेतौलस्यप्रशान्या० ॥

संस्थंत्रिनेत्रन्ध्यायेद्वन्हिंवद्धमौलिञ्जटाभिः ॥ इतिध्यात्वा ॥ ओंअग्निन्दूतम्पुरोदधेहव्व्यवाहमुपव्व्रुवे ॥ देवाँ२॥ऽ आसांदयादिह ॥ ॐभूर्भुवःस्वःअग्नये नमः ॥ अग्निमा० । पू० ॥ ९ ॥ ततःपूषणंसार्द्धपदंरक्तवर्णसम्पूजयेत् ॥ आवाहयामिदेवेशंपद्महस्तम्वरप्रदम् ॥ रक्तवस्त्रपरीधानंबिद्यद्वर्णंमहाबलम् ॥ आगच्छभगवन्पूषन्क्षेत्रेसन्निहितोभव ॥ महास्वनःशोणवर्णोद्विभुजोऽब्जकमण्डलुः ॥ पूषागजासनोशुभ्रमणिवन्धसमाश्रितः ॥ ॐपूषन्तवंम्व्रतेव्वयन्नरिष्येमकदाचन ॥ स्तोतारस्तऽइहस्मसि ॥ ॐभूर्भुवःस्वःपूषन्इहा

ऋ० । ओंपूषण १ न्वजाश्वमु० ॥ यजु० । वा. सं० अ० ३४ मं. ४१ ॥ ओंपूषन्तवव्रतेव्वयन्नरि० ॥ साम० छां सं. उ. प्र. २ मं. १६ । ओंअयंपूषारयिर्भगः । अथ० । ओंपरिपूषापुरस्ताद्धस्तम् ॥

गच्छेहतिष्ठेतिपूजनम् ॥ पूष्णेनमः ॥ १० ॥ आवाहयेत्त्वांवितथंपुराणंद्यावापृथिव्यन्तरचारिणञ्च ॥ बलिञ्चदद्म्वाचणकौदनाख्यङ्गृहाणपूजाम्भगवन्नमस्ते ॥ इतिध्यात्वा ॥ वितथंद्विपदङ्कृष्णवर्णसंपूजयेत् ॥ ओंव्वीतꣳहविःशमितꣳशमिता

ऋ० । ओंविदद्यदीशरमारु० ॥ यजु० वा. सं. अ. १७ मं. ५७ ॥ ओंवीतꣳहविःशमितꣳशमि० ॥ साम । छंदो उ. सं. प्र. ७ मं. १९ ॥ ओंहोदेवोऽअमर्त्त्यः० ॥ अथ० ॥ ओंवी १ मेद्यावापृथि० ॥

यजध्यैतुरीयोयज्ञोयत्रꣳहव्यमेति ॥ ततोव्वाकाऽआशिषोनोजुषन्ताम् ॥ ओंभूर्भुवःस्वःवितथायनमः ॥ वितथमा० । पू० ॥ ११ ॥ ततःगृहक्षतंद्विपदंपीतवर्णंसम्पूजयेत् ॥ आवाहयामित्वान्देवंगृहक्षतसमाख्यकम् । पूजाङ्गृहाणदेवेशनमस्स्वस्तिकरोभव ॥ गृहक्षतःपाटलाङ्गोगदाचर्मवरप्रदः ॥ पञ्चास्यवाहनःकू

ऋ॰। ओंगृभ्णामितसौभगत्त्व॰।यजु॰।वा॰ सं॰। अ. ३ मं.। ४१ ॥ ओंगृहामाविभीतमावेप॰।
साम॰। छं. सं. अ. प्र. ७ मं. ११ ओंअंजतेयंजतेसमंजते ॥ अथ। ओंऊर्ज्जम्बिभ्रद्वसुवनिः ॥

रोवास्तोर्दक्षकटिस्थितः ॥ ओंगृ॒हामा॒बि॑भीत॒मा॒ब्बे॑पद्॒ध्व॒मू॒र्ज्ज॒म्बिभ्रं॑त॒ऽएमं॑सि ॥ ऊर्ज्ज॒म्बिभ्र॑द्वः॒सु॒मनाः॒सुमे॒धागृ॒हानैमि॒मन॑सा॒मोद॑मानः ॥ ओंभूर्भुवःस्वःगृहक्षतायनमःगृहक्षतमा॰॥पू॰।१२।' ततःयमन्द्विपदङ्कृष्णवर्णंसम्पूजयेत्॥आवाहयामिदेवेशन्दक्षिणान्दिशमाश्रितम् ॥ महिषेचसमारूढमञ्जनाद्रिसमप्रभम् ॥ चित्रगुप्तसहायन्तन्दण्डमुद्गरधारिणम् ॥ सप्तर्षिभिस्समायुक्तन्धर्माधर्मप्रवर्त्तकम् ॥ लोकसंयमनार्थायकिङ्करैःपरिवारितम् ॥ आगच्छभगवन्धर्मक्षेत्रेसन्निहितोभव ॥

ऋ॰। ओंवतोवलासियमनैव॰ ॥ यजु॰। वा.। सं.। अ.। ३८। मं.। ९। ओंयमायत्त्वांगिरस्वतेपि॰ ॥

साम० । छं. । सं. । अ. । १ । प्र. । ४ । द. । ३ । मं. । ८ । ओंनाकेसुपर्णमुतयत्० ॥ अथ० । ओंयमायसोमेःपवतेयमाय ॥ * * * * * * * * *

इतिध्यात्वा ॥ ॐयमायत्त्वाङ्गिरस्स्वतेपितृमतेस्वाहा ॥ स्वाहाघर्म्मायस्वहा घर्म्मःपित्रे ॥ ॐभूर्भुवःस्वःयमायनमः ॥ यमस्मावा० । पू० ॥ १३ ॥ ततःगन्धर्वन्द्विपदंपीतवर्णंसंपूजयेत् ॥ आवाहयामिगन्धर्वंषाट्त्रिंशद्रागतत्परम् ॥ वीणाङ्गृहीत्वाहस्तेनतद्वादनरतम्विभुम् ॥ अप्सरोगणसङ्कीर्णंनानागन्धैश्च चर्चितम् ॥ गन्धर्वत्वमिहागच्छपूजेयंप्रतिगृह्यताम् ॥ इतिध्यात्वा ॥

ऋ० । ओंअप्सरसांगन्धर्वाणाम् ॥ य० । वा. । सं. अ. । २ । मं. । ३ । ओंगन्धर्वस्त्वाविश्वावसुः ॥ साम । छंदो. उ. सं. प्र. ११ मं. १३ । ओंउर्ध्वोगन्धर्वो ॥ अथ० । ओंमृडादगन्धर्वोभुवनस्यय० ॥

ॐगन्धर्व्वस्त्वाबिश्वावसुः परिदधातुबिश्श्वस्यारिष्ट्यैयजमानस्यपरिधिरस्स्यग्निरिडऽई डितः इन्द्रस्यबाहुरसिदक्षिणोबिश्श्वस्स्यारिष्ट्यैयजमानस्यपरिधिरस्स्यग्निरिडऽई डितः ॥ मित्रावरुणौत्वोत्तरतःपरिधत्तान्ध्रुवेणधर्म्मणाबिश्श्वस्स्यारिष्ट्यैयजमानस्यपरिधिरस्स्यग्निरिडऽई डितः ॥ ओंभूर्भुवःस्वःगन्धर्वइहागच्छेहतिष्ठेतिपूजनम् ॥ ओंगन्धर्वायनमः ॥ १४ ॥ ततःभृङ्गराजंसासार्द्धपदङ्कृष्णवर्णंसम्पूजयेत् ॥ आवाहयामितंदेवंभृङ्गराजंमहाबलम् ॥ षट्पदैःसेव्यमानञ्चकुसुमामोदसंयुतम् ॥ आगच्छालिकपत्वंहिक्षेत्रेसन्निहितोभव ॥ सुनीलाङ्गोमहाकायःकुङ्कुमारुणबिग्रहः ॥ खड्गखेटधरोवास्तोर्दक्षजङ्घासमाश्रि

ऋ०। ओंसुपर्णस्वस्तेमृ० ॥ यजु०। वा. । सं. । अ. । १३। मंत्र । ४। ओंसुपर्णोसिगरुत्मान्० ॥

साम० । छं. सं. अ. १ प्र. ४ द. ३ मं. ७ । वयःसुपर्णाउपसे० ॥ अथर्वे० । ओंयावतीभृङ्गा० ॥ * *

तः ॥ ॐसुपर्णोसिगरुत्मांस्त्रिवृत्तेशिरोगायत्रञ्चक्षुर्बृहद्रथन्तरेपक्षौ ॥ स्तोमऽआत्मच्छन्दांस्यङ्गानियजूंषिनाम ॥ सामतेतनूर्वामदेव्यंयज्ञायज्ञियम्पुच्छन्धिष्ण्यायांःशफाः ॥ सुपर्णोसिगरुत्मान्दिवंगच्छस्वःपत ॥ ओंभूर्भवःस्वःभृङ्गराजायनमः ॥ भृङ्गराजमावा० । पू० ॥ ॥ १५ ॥ ततःमृगमर्द्धपदङ्कृष्णवर्णंसम्पूजयेत् ॥ मृगमावाहयिष्यामिशशाङ्ककृतचिन्हकम् ॥ कृष्णवर्णचतुष्पादंश्वेतोदरविषाणकम् ॥ आगच्छभगवन्देवक्षेत्रेसन्निहितोभव ॥ मृगःकृष्णोभूषिताङ्गोवरदाभयमुद्रिकः ॥ वरासनश्चारुनेत्रोवास्तोर्दक्षस्फिचिस्थितः ॥ ॐपुरुषमृगश्चन्द्रमसोगोधाकालकादार्वाघाटस्तेवनस्पतीना

ऋ० । ओंमृगोनभीमःकुचरोगि० ॥ यजु० । वा. । सं. । अ. । मं. । ओंपुरुषमृगश्चन्द्रमसो ॥ साम० छंदो. उ. सं. प्र. ६ उ. मं. १९ । ओंकईंवेदसुतेसचा ॥ अथ० । ओंमृगोनभीमःकुचरोगि० ॥ * * * *

ङ्कृकवाकुः ॥ सावित्रोहंसोब्वातंस्यनाक्क्रोमकरः ॥ कुलीपयस्स्तेकूपार स्यह्रियैशल्ल्यकः ॥ ॐभूर्भुवःस्वःमृगायनमः ॥ मृगमावा० । पू० ॥ १६ ॥ अथपश्चिमभागे ॥ ततःपितृगणमर्द्धपदंश्वेतवर्णंसम्पूजयेत् ॥ पितॄनावाहयिष्यामिसोमपाद्यानानुक्रमात् ॥ पिङ्गाक्षान्कपिलजटान्हस्तेकुशकमण्डलून् ॥ दधानान्सितवस्त्राणिसितयज्ञोपवीतिनः ॥ गृह्णीयुःकृसरान्नञ्चपितॄन्सम्पूजया

ऋ० । ओंअहम्पितृन्त्सुविदत्राम् ॥ यजु० । वा. । सं. । अ. । १९ । मंत्र । ३६ । ओंपितृभ्यःस्वधायिभ्यः ॥ साम० । छन्दो. उ. सं. प्र. ६ उ. मं. ७ अ. २ । ओंगर्भोमातुःपि० ॥ अथ० । ओंइदम्पितृभ्योनमोअस्तु० ॥

स्यहम् ॥ कुशपिण्डधराःस्वस्थापितरःश्यामलाःकृशाः ॥ महोदराःसोमलोकवासिनोवास्तुपादगाः ॥ ओंपि॒तृभ्य॑÷स्वधा॒यिभ्य॑÷स्व॒धानम॑÷पिताम॒हेभ्य॑÷स्वधा॒यिभ्य॑÷स्व॒धानम॒;प्रपितामहेभ्यःस्वधा॒यिभ्य॑ःस्व॒धानम॑÷ ॥ अक्ष॑न्पि॒तरोमीमदन्तपि॒तरोतीतृपन्तपितर॒;पित॑र;शुन्धद्ध्वम् ॥ ओंभूर्भुवःस्वःपितृभ्योनमः ॥ पितॄनावाहयामि ॥ पूजयामि ॥ १७ ॥ ततःदौवारिकंसार्द्धपदंश्चैवर्णंसम्पूजयेत् ॥ एह्येहिदौवारिकरक्षणायद्वाराणिसर्वाणिचमन्दिरस्य ॥ पैष्टम्बलिंवासितदन्तकाष्ठङ्गृहाणपूजांभगवन्नमस्ते ॥ दौवारिकोवेत्रमुद्रामहा

ऋ० । ओंद्वेविरूपेचरतःस्वर्थेऽअ. ॥ अजु० । वा. । सं. । अ. । ३३ । मं. । ५ । ओंद्वेविरूपेचरत.स्वर्थे० ॥ साम० । द्वारोदेवीरन्वस्य० ॥ अथ० । ओंतव्रतेनिविशन्तेज० ॥

* * * * *

भूतिविभूषितः ॥ मुक्ताम्भःपादुकारूढोवास्तोर्बामस्फिचिस्थितः ॥ इतिध्यात्वा ॥ ओंद्वेव्विरूपेचरत;स्वर्त्थें अन्न्यान्न्यांव्वत्समुपधापयेते ॥ हरिरन्न्यस्स्याम्भवतिस्वधावाञ्छुक्रोऽअन्न्यस्यान्ददृशेसुवर्च्चाः ॥ ओंभूर्भुवःस्वःदौवारिकायनमः ॥ दौवारिकमा० । पू० ॥ १८ ॥ ततःसुग्रीवन्द्विपदंपीतवर्णं संपूजयेत् ॥ आवाहयेहङ्कपिमध्यमुख्यंसुग्रीवराजम्ममम मण्डलेऽस्मिन् ॥ पाषाणवृक्षौदधतङ्कराभ्याङ्गृहाणपूजांभगवन्नमस्ते ॥ पाद्मासनोहेमवर्णःसुग्रीवोद्ध्वरगात्रभृत् द्विभुजःकामदोवास्तोर्वामजङ्घासमाश्रितः ॥ इतिध्यात्वा ॥

ऋ० । ओंशतम्वोअम्बधामानि ॥ यजु० । मा. सं. अ. १२ मं. ७६ ॥ ओंशतम्वोऽअम्बधामानि० ॥ साम० ॥ छंदो. उ. सं. प्र. ८ मं. १२ ॥ ओंशशमानस्यवाज० ॥ अथ० । ओंअन्तरिक्षेणसहवाजि० ॥ * *

ॐशतम्वोऽअम्बधामानिसहस्रमुतवोरुहः ॥ अधाशतक्रत्वोयूयमिमम्मेऽअगदङ्कृत ॥ ओंभूर्भुवःस्वःसुग्रीबायनमः ॥ सुग्रीवमावाहयामि । पू० ॥ १९ ॥
ततःपुष्पदन्तंद्विपदन्धूम्रवर्णंसंपूजयेत् ॥ आवाहयामिदेवेशंपुष्पदन्तंबिनायकम् ॥
लंबोदरंमहाकायंगजवक्त्रञ्चतुर्भुजम् ॥ सिद्धिवुद्धिसमायुक्तंसर्वविघ्नविनाशनम् ॥ पुष्पदन्तसमागच्छपूजेयंप्रतिगृह्यताम् ॥ पुष्पदन्तोभ्रसङ्काशःखगपक्षिविराजितः ॥ महावलोव्यालहस्तोवास्तोर्वामजानुगः ॥ ॐओषधीःप्रतिमोदध्वम्पुष्पवतीःप्रसूवरीः ॥ अश्वाऽइवसजित्वरीर्वीरुधःपारयिष्णवः ॥

ऋ० । ओंओषधीःप्रतिमोदध्वम्० ॥ यजु० । वा. सं. अ. १२ मं. ७७ । ओंओषधीःप्रतिमोद० ॥ साम० । छं. सं. अ. १ प्र. ६ द. ४ मं. ५ । ओंसोमःपवतेजनितामतीनां० ॥ अथ० । ओंपुष्पवती० ॥

* * *

ओंभूर्भुवःस्वःपुष्पदन्तायनमः ॥ पुष्पदन्तमा० । पू० । २० ॥
ततःवरुणन्द्विपदंश्वेतवर्णंसंपूजयेत् ॥ आवाहयामिदेवेशंवरुणञ्जलनायकम् ॥
कुम्भीरथसमारूढंश्वेताद्रिशिखरोपमं ॥ पाशहस्तंमहाबाहुंयादोगणसमन्वितम् ॥
आगच्छवरुणत्वंहिक्षेत्रेसन्निहितोभव ॥ वरुणोयादसान्नाथोनक्रस्थःपाटलांशुकः ॥ शङ्खपाशधरःशुभ्रोवास्तोर्वामोरुसंस्थितः ॥ इतिध्यात्वा ॥ आइमम्मेंऽवरुणश्रुधीहवमद्याचमृडय ॥ त्वामवस्युराचके ॥ ॐभूर्भुवःस्वःवरुणायनमः ॥ वरुणमा० । पू० ॥ २१ ॥ ततः÷असुरंद्विपदङ्कृष्णवर्णंसं

ऋ०। ओंतत्त्वायामिब्रह्मणा० ॥ यजु० । वा. सं. अ. २१ मं. १ । ओंइमम्मेवरुणश्रुधी० ॥ साम० । अरण्यो० अ. १ द. १ मं. ४ । ओंउदुत्तमंवरुणपाश० ॥ अथ० । ओंधाम्नोधाम्नोराजन्नितो० ॥ * * * *

पूजयेत् ॥ असुरःश्वेतकाभासोकरालास्योङ्गवर्जितः ॥ सिंहारूढोवारुणाक्षोवास्तो वामकटिस्थितः ॥ ॐयेरूपाणिप्रतिमुञ्चमानाऽअसुराःसन्तःस्वधयाचरन्ति ॥ परापुरोनिपुरोयेभरन्त्यग्निष्टांल्लोकात्प्रणुदात्यस्मात् ॥ ॐभूर्भुवः स्वःअसुरायनमः ॥ असुरमा० । पू० ॥ २२ ॥ आवाहयामिदेवेशंपातालतलवासिनम् ॥ सहस्रशिरसंनागंफणामणिविराजितम् ॥ कर्पूरपूरविशदंनागराजंमहाबलम् ॥ परोपकारनिरतमनन्तंविष्णुवाहनम् ॥ आगच्छनागराज त्वंक्षेत्रेसन्निहितोभव ॥ शेषःकृष्णतनुःशूरोवरःशूलेषुचापभृत् ॥ गृध्रूप

ऋ० । ओंयदीघृतेभिराहुतो० ।। यजु० । वा. सं. अ. २ मं. ३० । ओंयेरूपाणिप्रतिमुञ्चमाना० ॥ साम० । अर. । सं. अ. । १ द. ५ मं. २ । ओंविभ्राड्बृहत्सुभृतम्० ॥ अथ० । ओंअपोजालाअसुराभा० ॥

क्षः कृशोदीर्घोंवास्तोर्वैबामपार्श्वगः ॥ इतिध्यात्वा ॥ शेषंसार्द्धपदङ्कर्बुरवर्ण

ऋ० ॥ ओंसर्पःसर्पोअजगरःस० ॥ य० ॥ वा. सं. अ. मं. ८ ॥ येवामीरोचनेदिवोयेवा ॥ साम० ॥ ओंयांसन्धांसन्धत्तांऋषि० । अथ० ॥ ओंयस्तेसर्पोवृश्चिकस्तृष्ट. ॥

* * * * *

संपूजयेत् ॥ ओंयेवामीरोचनेदिवोयेवासूर्यस्यरश्मिषु ॥ येषामप्सुसदस्कृ
तन्तेभ्यःसर्पेभ्योनमः ॥ ओंभूर्भुवःस्वःशेषायनमः ॥ शेषमा० । पू०
॥ २३ ॥ ततःपापयक्ष्माणमर्द्धपदङ्कृष्णवर्णसंपूजयेत् ॥ आवाहयामितंपापन्ना
मायक्ष्मेतिविश्रुतं ॥ निर्मांसंनिर्घृणंशक्तिपाशपाणिंमहाबलं ॥ आगच्छभग

ऋ० । ओंद्रापेअन्धसस्पते० ॥ य० ॥ वा. सं. अ. १६ मं. ४७ ॥ ओंद्रापेऽअन्धसस्पते० ॥ साम० ॥ छ. सं. अ. १ प्र. ६ द. ६ मं. ८ ॥ ओंयजस्त्रियाआपियाअन्तरस्म ॥ अथ० ॥ ओंमुञ्चामित्त्वा० ॥

* * *

क्रूपापपूजामेप्रतिगृह्यताम् ॥ पापयक्ष्माधूम्रवर्णोंगदावरदमुद्रिकः ॥ कपोतवाहनोवाममणिबन्धसमाश्रितः ॥ इतिध्यात्वा ॥ ॐद्रापे॒ऽअन्धसस्पते॒दरि॑द्र॒नील॑लोहित ॥ आ॒साम्प्र॒जाना॑मे॒षाम्प॑शू॒नाम्माभे॒र्म्मा॑रो॒ङ्ग॒मोच॑न॒;किञ्च॒नाम॑मत् ॥ ओंभूर्भुवःस्वःपापयक्ष्मणेनमः ॥ पापयक्ष्माणमा० ॥ पू० ॥ २४ ॥

ततःरोगमर्द्दपदंरक्तवर्णंसम्पूजयेत ॥ आवाहयामितंरोगंवातादित्रिगुणात्मकम् ॥ त्रिपादञ्चशिरोरक्तंनेत्रेभस्मविभूषितम् ॥ लोकानाञ्चसुखन्देहिबलिभिर्घृतमोदकैः ॥ पूजाङ्गृहाणभोरोगक्षेत्रेसन्निहितोभव ॥ रोगःपाशकरोरक्तोवीरात्माव्याधिसङ्ग्रहः ॥ दुष्क[illegible]मर्दनोवास्तोर्वामदोर्दण्डसंस्थितः ॥ इतिध्यात्वा ॥

ऋ० ॥ ओंनाशयित्रावळास० ॥ य० ॥ वा. सं. अ. २० मं. १४ ॥ ओंयद्देवादेवहेडनम्० ॥ साम० ॥ छंदो.

उ. सं. प्र. ११ उ. मं. ७ ॥ विरक्षोविशधोजहि ॥ अथर्व० ॥ तवव्रतेनिविशंतेज ॥ * * * *

ओंयद्देवादेव॒डंन॒न्देवासश्श्चकृ॒मा॒ब्ब॒यम् ॥ अ॒ग्निर्म्मा॒तस्मा॒देनंसो॒ब्बिश्वान्मुञ्च॒
त्वछंहंसः ॥ ॐभूर्भुवःस्वःशेगायनमःशेगमा० । पू० ॥ २५ ॥ ततःनागंसार्द्ध
पदंश्वेतवर्णंसंपूजयेत् ॥ आवाहयामितन्नागन्त्रैलोक्यान्तरचारिणम् ॥ शेषकु
लेसमुद्भूतंलसत्कर्णमहेश्वरम् ॥ आगच्छत्वंहिनागेन्द्रक्षेत्रेसन्निहितोभव ॥
अहिराजोऽञ्जकःशुभ्रःफणामणिविराजितः ॥ अक्षकुण्डधरोवास्तोर्वामबाहौचस

ऋ० ॥ ओंय्यदद्यसूर्यब्रवोनागा० ॥ य० ॥ वा. सं. अ. १३ मं. ७ ॥ ओंयाऽइषवोयातुधाना० ॥ साम० ॥
ओंयेसर्पता० ॥ अथ० ॥ ओंसर्पानुसर्पपुनर्वोयन्तु * * * * * *

स्थितः ॥ इतिध्यात्वा ॥ ॐयाऽइषंवोयातु॒धानानां॒य्येवा॒ब्बन॒स्प्पती॒ं१रनुं ॥

येवांवटेषुशेरतेतेभ्यःसर्पेभ्योनमः ॥ ॐभूर्भुवःनागायनमः ॥ नागमावा० पू० ॥ २६ ॥ ततःमुख्यन्द्विपदंश्वेतवर्णसंपूजयेत् ॥ आवाहयामितंशैवङ्गणानांमुख्यनायकम् ॥ जटाजूटधरंसौम्यंशूलपट्टिशधारिणम् ॥ नमस्तेमुख्यदेवेशक्षेत्रेसन्निहितोभव ॥ ॐमहीमूषुमातरꣳसुव्रतानामृतस्यपत्नीमवसेहुवेम ॥ तुविक्षत्रामजरन्तीमुरूचीꣳसुशर्माणमदितिꣳसुप्रणीतिम् ॥ ॐभूर्भुवःस्वः मुख्यायनमः ॥ मुख्यमावाहयामिपूजयामि ॥ २७ ॥ ततःभल्लाटंद्विपदंश्वेतवर्णसम्पूजयेत् ॥ आवाहयामिदेवेशंभल्लाटंशिवरूपिणम् ॥ भिल्लवेषधरङ्कु

ऋ० ॥ ओंमहीमूषुमातरꣳसु० ॥ य० ॥ वा. अ. २१ मं. ५ ।।। ओंमहीमूषुमातरꣳसु० ॥ साम० ॥ छं. सं. अ. १ प्र. १ सं. ५ मं. ७ ॥ ओंप्रदैवोदासोअ० ॥ अथ० ॥ ओंमुश्चामित्वा० ॥

* * * * * * *

त्वन्धनुर्बाणासिधारिणं ॥ भिल्लमोहनकर्त्तारंवर्हिपुच्छैस्त्वलङ्कृतं ॥ आगच्छ भगवन्देवक्षेत्रेसन्निहितोभव ॥ भल्लाटश्चन्द्रसङ्काशोवरमुद्रागदाधरः ॥ हयपुत्रो वास्तुपुञ्जवामदोर्मूलदेशगः ॥ इतिध्यात्वा ॥ ॐआप्प्यायस्स्व॒समेतुतेब्बि॒श्श्वत÷ सोम॒ब्वृष्ण्यम् ॥ भवा॒ब्बाजंस्यसङ्ग॒थे ॥ ॐभूर्भुवःस्वःभल्लाटायनमः

ऋ० ॥ ओंआप्यायस्वसमे० ॥ य० । वा. सं. अ. १२ मं. ११२ ॥ ओंआप्प्यायस्वसमेतुते ॥ साम० ॥ छं. सं. अ. १ प्र. ५ सं. ५ ॥ इंदुःपविष्टचेतसः० ॥ अथ० । आप्यायस्वसमे० ॥ ❋ ❋ ❋ ❋

भल्लाटमावाहयामिपूजयामि ॥ २८ ॥ ततःसोमंद्विपदंश्वेतवर्णंसंपूजयेत् ॥ आवाहयामिदेवेशंशशाङ्कंरजनीपतिम् ॥ क्षीरोदधिसमुद्भूतंहरमौलिविराजितम् ॥ सुधाकरन्द्विजाधारन्त्रैलोक्यप्रीतिकारकम् ॥ औषध्याप्यायनकरंसोम

ङ्कन्दर्पवर्द्धनम् ॥ आगच्छभगवन्सोमक्षेत्रेसन्निहितोभव ॥ सोमोनरविमानस्थोवरहस्तोगदाधरः ॥ गौरोमहोदरःश्रीमान्वास्तोर्वामांशसंस्थितः ॥ इति ध्यात्वा ॥ ॐसोमोधेनुꣳसोमोऽअर्वन्तमाशुꣳसोमोवीरङ्कर्म्मण्यन्ददाति ॥

ऋ० । ओंआप्यायस्वसदिन्तस० । य० वा. सं. अ. ३४ मं. २१ । ओंसोमोधेनुꣳ सोमोऽअर्वन्त ॥ साम० । छं. अ. १ प्र. ५ द. २ मं. ४ । ओंआयाह्ययमिंदवे. ॥ अथ० । ओंसोमस्यांशोयुधांपते ॥ * * *

सादन्न्यँविदत्थ्यꣳसभेयम्पितृश्रवणंय्योददासदस्मै ॥ ॐभूर्भुवःस्वःसोमायनमः ॥ सोमम० । पू० ॥ २९ ॥ ततःउरगन्द्विपदंरक्तवर्णंसंपूजयेत् । आवाहयेद्द्रुतंनागंफणसप्तकसंयुतम् ॥ आगच्छोरगराजत्वंक्षेत्रेसन्निहितोभव ॥ कुम्भमालाधरोद्वाभ्याञ्चतुर्बाहुःफणामणिः ॥ सर्पोरक्तःश्रमोवास्तोर्वामोरुस्थल

माश्रितः ॥ इतिध्यात्वा ॥। ॐमाहिर्भूर्म्मापृदाकुः उरुꣳहिराजाव्वरुणश्चका

ऋ०। ओंआयंगौःपृश्निरक्र०॥ य०।वा. सं. अ. मं. ॥ ओंमाहिर्भूर्मापृदाकुः॥ साम०। ओंचाक्रन्धात्सन्वत्तां०॥
अथ०। ओंयस्तेसर्पोवृश्चिकस्तृ० ॥

* * * * * * * *

रसूर्यायपन्थामन्न्वेतवाऽउ ॥ अपदेपादाप्प्रतिधातवेकरुतापवक्ताहृदयाविधश्चित् ॥ नमोव्वरुणायाभिष्ठितोव्वरुणस्यपाशः ॥ भूर्भुवःस्वःउरगाय नमः ॥ उरगमा० । पू० ॥ ३० ॥ ततःअदितिंसार्द्धपदांशुक्लवर्णांसंपूजयेत् आवाहयामितान्देवीमदितिंदेवमातरं ॥ द्विभुजांपद्महस्तांच्चसर्वाभरणभूषिताम् ॥ काश्यपस्यप्रियांभार्यांसुरूपांवामलोचनाम् ॥ आगच्छह्यदितेत्वं हिक्षेत्रेसान्निहिताभव ॥ अदितिश्चारुगौराङ्गीवास्तोर्वामस्तुतिस्थिता ॥ ॐअ

❀ ऋ० । ओंभूर्यज्ञउत्तानपादोभु० ॥ य० । वा. सं. अ. २५ मं. २३ । ओंअदितिर्द्यौरदिति० ॥ साम० । छं. सं. अ. १ प्र. ५ द. ७ मं. ६ । ओंइमानुकंभुवना० ॥ अथर्व० । ओंधातारातिःसवितेदम्० ॥ * * *

दितिर्द्यौरदितिरन्तरिक्षमदितिर्म्मातासपितासपुत्रः ॥ ब्बिश्वेदेवाऽअदितिः पञ्चजनाऽअदितिर्ज्जातमदितिर्ज्जनित्वम् ॥ ॐभूर्भुवःस्वःअदितेइहागच्छेह तिष्ठेतिपूजनम् ॥ अदितयेनमः ॥ ३१ ॥ ततःदितिमर्द्धपदांशुक्लवर्णांसंपूजयेत् ॥ दितिमावाहयिष्यामिदैत्यानाञ्चैवमातरम् ॥ शुक्लाङ्गीन्द्विभुजाञ्चैवशूलपट्टिशधारिणीं ॥ समागच्छादितेत्वंहिक्षेत्रेसन्निहिताभव ॥ दितिस्तुश्यामलासालाखड्गखेटकधारिणी ॥ बृषपन्न[illegible]वास्तुपुञ्जवामलोचनसंस्थिता ॥ ओंहिरण्य

ऋ० । ओंभूर्यज्ञउत्तानय० ॥ य० । वा. सं. अ. १० मं. १६ । ओंहिरण्यरूपाऽउषसो० ॥ साम० । छं. सं. अ. १ प्र. ५ द. ७

मं. ६ । ओंइमानुकम्भुवनासी० ॥ अथ० । ओंदितेःपुत्राणामदिते० ॥ * * * *

रूपाऽउषसौब्बिरोकऽउभाविन्द्राऽउदिथः;सूर्य्यश्च ॥ आरोहतम्बरुणमित्रगर्त्तन्ततश्चक्षाथामदितिन्दितिञ्चमित्रोसिब्बरुणोसि ॥ ॐभूर्भुवःस्वःदितयेनमःदितिमावा० ॥ पू० । ॥ ३२ ॥ ततःमध्येब्रह्माणंसंपूज्यरक्तवर्णञ्चतुष्पदन्ध्यायेत् ॥ आवाहयामिदेवेशमूर्ध्वभागेब्यवस्थितम् ॥ हंसयुक्तरथारूढंसूर्यकोटिसमप्रभम् ॥ चतुर्मुखञ्चतुर्बाहुंचतुर्वेदसमन्वितम् ॥ पुस्तकञ्चाक्षसूत्रादिदधानञ्चकमण्डलुं ॥ विश्वकर्माख्यनामानन्देवतागणपूजितम् ॥ आगच्छभगवन्ब्रह्मन्क्षेत्रेसन्निहितोभव ॥ चतुर्मुखोऽरुणोब्रह्माऽक्षमालास्रुवतोयभृत् ॥ लम्बोदरोहंससंस्थोवास्तोर्हृद्याश्रयेस्थितः ❀ ॥ ❀ ॥ ॐआब्रह्म

ऋ० ॥ ओंब्रह्मजज्ञानम् ॥ य० ॥ वा. सं० अ. २२ मं. २२ ॥ ओंआब्रह्मन्ब्राह्मणोब्र० ॥ साम. ॥ छं. सं
अ. १ प्र. ५ द. ६ मं. ३ ॥ ओंब्रह्माणइन्द्रमहयं ॥ अथ ॥ ओंब्रह्मज्येष्ठासंभृतावीर्या ॥

न्ब्राह्म॒णोब्ब्रह्म॑वर्च्च॒सीजा॑यता॒मारा॒ष्ट्रेरा॑ज॒न्न्य॒÷शूर॑ऽइष॒व्व्योतिव्व्या॒धीम॑हार॒थोजा॑यता॒न्दोग्ध्री॑धे॒नुर्व्वोढा॑न॒ड्वाना॒शुःसप्ति॒;पुर॑न्धि॒र्य्योषा॑जि॒ष्णूर॑थे॒ष्ठाःस॒भेयो॒युवास्य यज॑मानस्य॒व्वीरोजा॑यतान्नि॒कामे॑निकामे॑न;प॒र्ज्जन्न्यो॑व्वर्षतु॒फल॑वत्यो॒न॒ऽओष॑धय;पच्च्यन्तां॑य्योगक्षे॒मोनं॑÷कल्प्पताम् ॥ ❀ ❀ ❀ ❀ ❀ ❀ ❀ ❀ ❀ ॐभूर्भुवः स्वःब्रह्मणेनमःब्रह्माणमा० । पू० ॥ ३३ ॥ ततःब्रह्मणःपूर्वेअर्यमणंद्विपदंश्वेतवर्णं संपूजयेत् ॥ अर्य्यमन्कुरुष्मेभद्रंसञ्ज्ञयासहसर्वदा ॥ गृहाणेमांमयादत्तांपूजांदेव नमोस्तुते ॥ अर्य्यमार्जुनवर्णस्तुदीप्तिमान्रथवाहनः ॥ विपद्मसूत्रखट्वाङ्ग

पाणिर्वास्तुकरस्थितः ॥ ॐअर्य्यमणम्बृहस्पतिमिन्द्रन्दानायचोदय ॥ व्वाच

ऋ० । ओंगृभ्णामितसौभगत्व० ॥ यजु० । वा. सं० । अ० ९ मं. २७ ॥ ओंअर्य्यमणम्बृहस्पति० ॥
साम । छं०सं.अ०१प्र० २ द. ७मं. ३ ॥ ओंप्रमित्रायप्रार्य्यम्णे० ॥ अथर्व. । ओंसम्वःसृजत्वर्यमासंपूषा. ॥

म्विष्णुꣳसरंस्वतीꣳसवितारञ्चव्वाजिनꣳस्वाहा ॥ ॐभूर्भुवःस्वःअर्यमन्
इहागच्छेहतिष्ठेतिपूजनम् ॥ अर्य्मणेनमः ॥ ३४ ॥ ततःब्रह्मणोदक्षिणेवि
स्वन्तन्द्विपदंरक्तवर्णमावाहयेत् ॥ आवाहयेसवितृमण्डलमध्यसंस्थंसप्ताश्ववा
हनयुतन्धृतपङ्कजन्त्वां ॥ केयूरकुण्डलविधारकदेहिसौख्यम्पूजांगृहाणसवितर्भग
वन्नस्ते ॥ सविताजनिताविश्वन्द्विवाहुररुणच्छविः ॥ रथगामीपद्मपाणिर्वास्तुक्रो

ऋ० । ओंपरेइवांसम्प्रवतो० ॥ यजु० वा. सं. अ० ८ मं. ५ ओंविवस्वन्नादित्यैषतेसोम० ॥ साम. छंसं. अ.१

डाशरांशगः ॥ ओंव्विव॑स्वन्नादित्यै॒षते॑सोमपी॒थस्तस्मि॑न्मत्स्व ॥ श्रद॑स्मैनरो॒व्वच॑सेदधातन॒यदा॑शी॒र्दादम्प॑ती॒व्वाम॒मश्नु॑तः ॥ पुमा॑न्पु॒त्रोजा॑यतेव्वि॒न्दते॒व्वस्व॑धा॑व्वि॒श्वाहा॑र॒पऽए॑धतेगृ॒हे ॥ ओंभूर्भुवःस्वःविवस्वन्इहागच्छेहतिष्ठेतिपूजनम् । विवस्वतेनमः ॥ ३९ ॥ ततःब्रह्मणःपश्चिमेमैत्रान्द्विपदंश्वेतवर्णङ्कृष्णवर्णंवासंपूजयेत् ॥ मित्रत्वमेह्योहितमोपशान्त्यैरत्नाब्जवज्रध्वजयुक्तहस्तः ॥ श्यामोर्ध्वभागेऽर्धसितश्चरूपोयथासनस्थोभगवन्नमस्ते ॥ हलाब्जध्वजवज्राख्यहस्तोमित्रोहारिस्थितः ॥ ऊर्द्ध्वाऽर्धःश्यामगौरोवामपाण्यङ्गुलिसंस्थितः ॥ ओंमि॒त्रे.न॒ऽएहि॒सुमि॑त्र॒धऽइन्द्र॑स्योरुमाव्विश॒दक्षि॑णमु॒शन्नु॒शन्त॑ꣳस्यो॒नःस्यो॒नम् ॥ स्वान॒

ऋ० । ओंमित्रस्यचर्षणधृतः ॥ य० । वा. सं. अ. । ४ मं० २७ ॥ ओंमित्रोनऽएहिसुमित्रधइन्द्र. ॥ साम. छं सं. अ. १ प्र. ३ द. ३. मं. ७ ॥ ओंआनोमित्रावरुणाघृतैः ॥ अथ० । ओंआयातुमित्रऋतुभिः ॥

ॐआजाङ्घोरेबम्भारेहस्तसुहस्तकृशानवेतेवः सोमक्क्रयणास्तान्नूंक्षद्ध्वम्मावोदभन् ॥ ॐभूर्भुवःस्वःमित्रायनमः ॥ मित्रमा० ॥ पू० ॥ ३६ ॥ ततः ब्रह्मोत्तरेपृथ्वीधरान्हिपदङ्कृष्णवर्णंसंपूजयेत् ॥ सहस्रवदनःश्रीमान्शङ्खचक्राक्षकुम्भभृत् ॥ नीलपृथ्वीधरोवास्तोर्दक्षहस्ताङ्गुलिस्थितः ॥ इतिध्यात्वा ॥

ऋ० । ओंइन्द्रस्येवरातिमाजो० ॥ यजु० । वा. । सं. । अ. । १४ । मं. । ४ । ओंपृथिव्याःपुरीष ॥ साम० । अरणी. सं. अ. १ द. २ मं. ७ । ओंयज्जायथाअपूर्व्य० ॥ अथ० । ओंयेतऽआरण्याः० ॥ *

ॐपृथिव्याःपुरीषमस्यप्सोनामतान्त्वाविश्वेऽअभिगृणन्तुदेवाः ॥ स्तोमपृ

ष्ठाघृतवंतीहसीदप्पुजावंदस्म्मेद्द्रविणायंजस्वाश्विनाद्ध्वर्य्यूसांदयतामिहत्वां ॥
ॐभूर्भुवःस्वःपृथ्वीधरायनमः ॥ पृथ्वीधरमावाहयामिपूजयामि ॥ ३७ ॥
ततःईशानेअपअर्द्धपदाःश्वेतवर्णाःसंपूजयेत् ❀ ॥ ❀ अपआवाहयिष्यामिसर्वं
गावरदाःशिवाः ॥ आपस्त्वायान्तुसततंपवित्रामङ्गलावहाः ॥ समागच्छतयूयंवैकुर्वन्त्यःपावनञ्जगत् ॥ ॐआपोहिष्ठामंयोभुवस्तानंऽऊर्ज्जेदंधातन ॥ महेर
णांयचक्षंसे ॥ ॐभूर्भुवःस्वःअद्भ्योनमः । अपआवा० ॥ पू० ॥ ३८ ॥
ततःआपवत्सार्द्धपदंश्वेतवर्णसंपूजयेत् ॥ आपवत्सत्वमेह्येहिकूर्मस्कन्दवरप्रदः ॥

ऋ० । ओंआपश्चित्पिप्युस्तर्यो० ॥ यजु० । वा० । सं. । अ. । ३६ । मं. । १४ । ओंआपोहिष्ठामयोभुव; ॥
साम० । छंदो. सं. उ. प्र. ११ ख. मं १० । ओंआपोहिष्ठामयोभुवः ॥ अथ० । ओंसावितप्रसवानामधि० ॥

पूजाङ्गृहाणदेवेशकुम्भहस्तनमोस्तुते ॥ आपवत्सोमहातेजाद्विभुजःसिंहवाहनः ॥
वरपाशधरोगौरोवास्तोर्वक्षसिसंस्थितः ॥ इतिध्यात्वा ॥ ॐआपोऽअस्मा

ऋ० । ओंअपोअद्यात्वचारिषम् ॥ यजु० । वा. । सं । अ. । ४ मंत्र ॥ २ ॥ ओंआपोऽअस्मान्मातरः शुन्ध० ।
साम० । छन्दो. उ. सं. प्र. २ मं. २ । ओंपवस्वेन्दोवृषासुतः ॥ अथ । ओंआपोवत्सञ्जनयन्ती० ॥ * *

न्मातरं÷शुन्धयन्तुघृतेनंनोघृतप्प्वःपुनन्तु ॥ ब्विश्श्वᳫंहिरिप्रम्प्रवहन्तिदेवीरुदि
दांब्भ्यःशुचिरापूतऽएमि ॥ दीक्षातपसोस्तनूरसितान्त्वांशिवाᳫंसग्ग्मास्परिद
धेभद्रन्न्वर्णम्पुष्ष्यंन् ॥ ॐभूर्भुवःस्वःआपवत्सायनमः ॥ आपवत्समावा
ह० । पू० ॥ ३९ ॥ ततःआग्नेयेऽर्द्धपदेरक्तवर्णंसवितारंसम्पूजयेत् ॥ आवा
हयेत्सवितृमण्डलमध्यसंस्थंसप्ताश्ववाहनयुतन्धृतपङ्कजन्त्वां ॥ केयूरकुण्डलवि

धारकदेहिसौख्यंपूजांगृहाणसवितर्भगवन्नमस्ते ॥ इतिध्यात्वा ॥ ॐसविताप्प्रथमेहन्नग्निर्द्वितीयेवायुस्तृतीयऽआदित्यश्चतुर्थेचन्द्रमाः;पञ्चमऽऋतुःषष्ठेमरुतः सप्तमेबृहस्पतिरष्टमेमित्रोनवमेवरुणोदशमऽइन्द्रऽएकादशेविश्वेदेवाद्वादशे ॥

ऋ० । ओंसवितापश्चात्तात्० ॥ यजु० । वा. । सं. । अ. । ३९ । मंत्र ६ । ओंसविताप्रथमेहन्नग्निः ॥
साम० । छं. । सं. । अ. । १ । प्र. ६ । द. । ७ । मं. । १ । ओंअभिप्रियाणिपवते० ॥ अथ० । ओंसूर्य्योमा० ॥

ॐभूर्भुवःस्वःसवितरिहागच्छइहतिष्ठेत्यावाह्य ॥ ॐसवित्रेनमः ॥ ४० ॥
ततःसावित्रमर्द्धपदंरक्तवर्णंसंपूजयेत् ॥ सावित्रत्वमिहागच्छसर्वध्वान्तनिवारक ॥
पूजाङ्गृहाणदेवेशमयाशक्त्याप्रकल्पिताम् ॥ ✿ ✿ ✿
इतिध्यात्वा ✿ ॥ ✿ ॐउपयामगृहीतोसिसावित्रोसिचनोधाश्चनोधाऽ

ऋ० । ओंनानार्कासि० ॥ यजु० । वा. । सं. । अ. । ८ । मं. । ७ ॥ ओंउपयामगृहीतोसिसावि ॥ साम० ।
ओंसावित्राङ्गानि ॥ अथ० । ओंसूर्यश्चुषाम० ॥

* * * * * *

अ॑सि॒चनो॒मयि॑धेहि ॥ जि॒न्न्वं॑य॒ज्ञाञ्जि॒न्न्वं॑य॒ज्ञप॑ति॒म्भगा॑यदे॒वाय॑त्त्वासवि॒त्रे ॥
ॐभूर्भुवःस्वःसावित्रइहागच्छेहतिष्ठेत्यावाह्य ॥ ॐसावित्रायनमः ॥ ४१ ॥
ततःनैर्ऋत्यकोणेजयमर्द्धपदंश्वेतंसंपूजयेत् ॥ आवाहयामितन्देवञ्जयंयष्टिधिधा
रकम् ॥ जयत्वंहिसमागच्छक्षेत्रेसन्निहितोभव ॥ इतिध्यात्वा ॥ ॐयाँ२॥ऽ

ऋ० । ओंउदवुदध्यदध्वंसमनसः ॥ यजु० । वा. । सं. । अ. । ८ । मं. । १९ ॥ ओंयाँ२॥ऽआवहउशतो० ॥
साम० । छन्दो. उ. सं. प्र. १ मं. १४ अ. २ । ओंउसद्धत्साऊसती० ॥ अथ० । ओंयाँआवहउशतो० ॥

आव॑हऽउश॒तोदे॑वदे॒वाँस्ता॒न्प्रेर॑य॒स्वेऽअ॑ग्नेस॒धस्त्थे॑ ॥ ज॒क्षि॒वाछंस॑ः पपि॒वाꣳसश्च॒

ब्विश्वेसुंङ्घुर्म्मछंस्स्वुरातिंष्ठतानुस्वाहा ॥ ॐभूर्भुवःस्वःजयायनमः ॥ जयमावा० । पू० ४२ ॥ ततःजयन्तमर्द्धंपदंपीतवर्णंसंपूजयेत् ॥ जयोवज्रधरोदेवोमहोग्रोतुलविक्रमः ॥ पीतवर्णोगजारूढोवास्तोर्मैंदूसमाश्रितः ॥ इतिध्यात्वा ॥ ॐगोत्रभिदंङ्गोविदम्वज्रंबाहुञ्जयंन्तमज्ज्मंप्प्रमृणन्तमोजंसा ॥

११ ऋ० । ओंअस्माकमिन्द्रःसमृते० ॥ अजु० । वा. । सं. । अ. । १७ । मं. । ३८ ॥ ओंगोत्रभिदङ्गोविदम्० ॥ साम० । छांदोग । उ. । सं. । प्र. । १ । मं. । १२ । ओंइन्द्रसुतेषुसोमेषु० ॥ अथ । ओंमर्म्माणितेवर्म्म० ॥

इमछंसंजाताऽअनुवीरयद्ध्वमिन्द्रंछंसखायोअनुसछंरभद्ध्वम् ॥ ॐभूर्भुवःस्वःजयन्तायनमः ॥ जयन्तमावा० । पू० ॥ ४३ ॥ ततःवायव्येराजयक्ष्माणमर्द्धपदन्नीलवर्णमावाहयेत् ॥ वरशक्तिधरोब्रह्मचर्यवान्वर्हिंवाहनः ॥ राजयक्ष्मा

चनीलाङ्गोवास्तोर्मैद्रूसमाश्रितः ॥ १ ॥ आवाहयामितन्देवंयक्ष्माणंराजसञ्ज्ञकं ॥ नानाव्याधिसमाकीर्णंरोगैश्चपरिशोभितम् ॥ वामेनवरदञ्चैवदक्षिणेनाभयप्रदम् ॥ आगच्छयक्ष्मभगवन्पूजेयंप्रतिगृह्यताम् ॥ इतिध्यात्वा ॥ ॐनाशयित्रीबलासस्यार्शसऽउपचितामसि ॥ अथोंशतस्ययक्ष्माणाम्पाकारोरसिनाशनी ॥ ॐभूर्भुवःस्वःराजयक्ष्मन्निहागच्छेहतिष्ठेतिपूजनम् ॥ ॐराजयक्ष्मणेनमः ॥ ४४ ॥ ततःरुद्रदासमर्द्धपदंश्वेतवर्णमावाहयेत ॥ आवाहयामि

ऋ० । ओंमुञ्चामित्वाहविषाजी० ॥ यजु० । वा. । सं. । अ. । १२ । मं. । ६७ । ओंनाशयित्रीबलासस्या० ॥ साम० । छं. । सं. । अ. । १ । प्र. । १ । द. । २ । मं. । ५ । ओंराजाबोधतद्धिविड्ढि० ॥ अथ० । ओंराजयक्ष्मस्त्वद्दनिष्य ॥

* * * * * * * * * *

तंरुद्रंसर्वदाशङ्करंविभुम् ॥ उमाधिष्ठितवामाङ्गंवरदाभयहस्तकम् ॥ जटागङ्गाधरंसौम्यङ्कर्पूराद्रिसमप्रभम् ॥ आगच्छभगवन्रुद्रक्षेत्रेसन्निहितोभव ॥

ऋ० । ओंइमारुद्राय० ॥ यजु० । वा० । ९ं. । अ. । १६ । मंत्र १ । ओंनमस्तेरुद्रमन्न्यव ॥ साम० । छं. । सं. । अ. । १ । प्र. १ । द. । २ । सं. । ५ । ओंराजाबोधतद्विविद्धि० ॥ अथ० । ओंरुद्रजळाशभेषज० ॥ * *

ॐनमस्तेरुद्द्रमन्न्यवऽउतोतऽइषवेनमः ॥ ब्बाहुब्भ्यामुतनेनमः ॥ ॐभूर्भुवःस्वःरुद्रदासायनमः ॥ रुद्रदासमावा० । पू० ॥ ४५ ॥ ततोमण्डलवाह्येईशानादिक्रमेणचतुष्कोणेषुचरक्यादीन्आवाह्यपूजयेत् ॥ तद्यथा ॥ अहमावाहयिष्यामिचरकीन्नामराक्षसीम् ॥ अङ्कुशाण्डमरुंशङ्खङ्कुण्डलञ्चापिविभ्रतीम् ॥ आगच्छचरकित्वंहिपूजेयंप्रतिगृह्यताम् ॥ इतिध्यात्वा ॥ अक्षतपुञ्जोपरिपूज

ऋ० । ओंआवोराजनमध्व० ॥ यजु० । वा. । सं. । अ. । ११ । मंत्र । ५४ ॥ ओंरुद्राः, सꣳसृज्यपृथिवीम्० ॥
साम० । छं. सं. अ. १ प्र. ४ द. ४ मं. ८ । ओंउदुब्रह्माण्यै० ॥ अथ । ओंयोअग्नौरुद्रो० ॥ * * *

येत् ॥ ॐरु॒द्द्राः॒स॒ꣳसृज्ज्यपृथि॒वीम्बृ॒हज्ज्योति॒ꣳसमीधिरे ॥ तेषाम्भा॒नुर
जंस्स्र॒ऽइच्छुक्क्रोदे॒वेषुरोचते ॥ ॐभूर्भुवःस्वःचरकिइहागच्छेहतिष्ठेतिपूजनम् ॥
ॐचरक्यैनमः ॥ ४६ ॥ अथाग्नेय्यांविदारीमावाहयेत् ॥ आवाहयामि
तान्दैत्यांविडालीसदृशाननाम् ॥ विशालनखरोमाढ्यांचापवाणधरांवराम् ॥
विदारित्वमिहागच्छपूजेयंप्रतिगृह्यताम् ॥ ॐअ॒क्ष॒रा॒जायंकित॒वङ्कृतायांदिनव

ऋ० । ऋषभंनासमानाम् ॥ यजु० । वा. । सं. । अ. । ३० । मं. । १८ । ओंअक्षराजायकितवङ्कृताया० ॥
साम० । छं. सं. अ. १ प्र. ४ द. ६ मं. ४ । ओंयदिन्द्रचित्रम्० ॥ अथ० । ओंशीर्षशक्तिशीर्षमयं ॥ *

दर्शन्त्रेतायैकल्पिनन्द्वापरायाधिकल्पिनमास्कन्दायसभास्थाणुम्मृत्यवेगोव्यच्छमन्तकायगोघातङ्क्षुधेयोगाम्बिकृन्तन्तम्भिक्षमाणऽउपतिष्ठतिदुष्कृतायचरकाचार्य्यम्पाप्मनेशैलगम् ॥ ॐभूर्भुवःस्वःविदारिइहागच्छेहतिष्ठतिपूजनम् ॥ ॐविदार्यैनमः ॥ ४७ ॥ ततोनैर्ऋत्यांपूतनामावाह्यपूजयेत् ॥ पूतनेत्वमिहागच्छराक्षसीगणसंयुता ॥ मयानिवेदितांपूजाङ्गृहाणवरदाभव ॥ इतिध्यात्वा ॥ ॐविदद्यदीसरमारुग्णमद्रेर्म्महिपाथःपूर्व्यꣳसध्र्यक्कः ॥ अग्रंन्नयत्सुपद्यक्षराणामच्छारवम्प्रथमाजानतीगात् ॥ ॐभूर्भु० पूतनेइहागच्छेह

ऋ० । ओंविदद्यदीसरमा० ॥ यजु० । वा. सं. ३२ मं. ५६ । ओंविदद्यदीसरमा० ॥ साम० । छं. सं. अ. १ प्र. ४ द० ६ मं० १० । ओंउभेयदिन्द्ररोदसी० ॥ अथ० । ओंसनादग्नेमृणासि० ॥ * *

तिष्ठ ॥ ॐपूतनायैनमः ॥ ४८ ॥ अथवायव्येपापराक्षसीमावाहयेत् ॥ अहमावाहयिष्यामिराक्षसींपापपूर्विकाम् ॥ रक्ताननान्धूम्रवस्त्रांराक्षसीगणसंयुताम् ॥ राक्षसित्वमिहागच्छपूजेयंप्रतिगृह्यताम् ॥ इतिध्यात्वा ॥ ॐपु॒रु॒द॒स्मोव्विषु॑रूप॒ऽइन्दु॑र॒न्तर्म्म॑हि॒मान॑मानञ्ज॒धीरः॑ ॥ एक॑पदीन्द्वि॒पदीन्त्रि॒पदी॒ञ्चतु॑ष्पदीम्

ऋ० । ओंऋषभन्नासमानान/म् ॥ य०। वा. सं. अ. ८ मंत्र ३० । ओंपुरुदस्मोव्विषुरुप० ॥ साम० । छं. सं. अ. १ प्र० ५ द. १० मं. १० । ओंपरिप्रासिष्यदत्क० ॥ अथ० । ओंशीर्षक्तिंशीर्षामयम् ॥ *

ष्टाप॑दी॒म्भुव॒नानु॑प्प्रथन्ता॒ᳪस्वाहा॑ ॥ ॐभूर्भुवःस्वःपापराक्षसिइहागच्छेहतिष्ठेति पूजनम् ॥ ॐपापराक्षस्यैनमः ॥ ४९ ॥ ततःपूर्वादिक्रमेणस्कन्दमर्य्यमणंजृंभकंपिलिंपिच्छञ्चावाहयेत् ॥ तथाहि ॥ पूर्वेस्कन्दम् ॥ आवाहयामिदेवेशंष

रामुखंकृत्तिकासुतम् ॥ रुद्रतेजःसमुत्पन्नन्देवसेनासमन्वितम् ॥ मयूरवाहनं
शक्तिपाणिंवैब्रह्मचारिणं ॥ आगच्छभगवन्स्कन्दक्षेत्रेसन्निहितोभव ॥ ॐअ
स्कन्नमद्यदेवेभ्यऽआज्यꣳसम्भ्रियासमङ्घ्रिणाविष्णोमात्वावक्रमिषम्वसुम

ऋ० । ओंयदक्रन्दःप्रथमम्० ॥ य० । वा. सं. अ. २ मंत्र ८ ॥ ओंअस्कन्नमद्यदेवेभ्य० ॥ साम० । छं. सं. अ.
१ प्र. ३ द. १० मं. ६ । ओंयदाकदाचमी० ॥ अथ० । ओंअग्निरिवमन्वे० ॥ * * * *

तीमग्नेतेच्छायामुपस्थेषम्विष्णोस्थानमसीतऽइन्द्रोवीर्य्यमकृणोदूर्ध्वोऽध्वरऽ
आस्थात् ॥ ॐभूर्भुवःस्वःस्कन्दायनमः । स्कन्दमावा० । पू० ॥ ५० ॥
ततःदक्षिणेऽर्य्यमणम् ॥ आवाहयामिदेवेशमर्य्यमणंपितृनायकम् ॥ महिष
न्दिव्यमारूढंदण्डपाणिंशुभेक्षणम् ॥ कर्म्मणांफलदातारंलोकानांकर्मसाक्षिणम् ॥

एहित्त्वमर्य्यमन्देवत्तेत्रेसन्निहितोभव ॥ इतिध्यात्वा ॥ ॐअग्ग्रेणीरसिस्वा

ऋ०। ओंअर्यमणन्न्यु० ॥ य०। वा. सं. अ. ४ मंत्र २। ओंअग्रेणीरसिस्वावे० ॥ साम० । छं. सं. अ. १ प्र. ३ द. ७ मं. ३ । ओंप्रमित्रायप्रार्यम्णेसं० ॥ अथ. । ओंअर्य्यमणम्० ॥ * * * *

ऽब्रेशऽउन्नेतॄणामेतस्यऽवित्तादधिंत्त्वास्थास्यतिदेवस्त्वांसवितामद्ध्वानक्तुसुपिप्पलाऽभ्यस्त्वौषधीऽभ्यः ॥ द्यामग्ग्रेणास्पृक्षऽआन्तरिक्षम्मद्ध्येनाप्प्राः ॥ पृथिवीमुपरेणादृंहीः ॥ ॐभूर्भुवःस्वःअर्यमन्निहागच्छेहतिष्ठेतिपूजनम् ॥ अर्य्यम्णेनमः ॥ ५१ ॥ ततःपश्चिमेजृंभकमावाहयामि ॥ आवाहयेत्त्वांग्रहरञ्चमुख्यंजृंभायमाणंवरखड्गहस्तम् प्रत्यग्दिशायाञ्चसुरक्षणीयमत्रैववासङ्कुरुजृं

ऋ०। ओंसोमोदक्षन्धर्वाय० ॥ य०। वा. सं. अ. २२ मं. ७। ओंहिङ्कारायस्वाहा० ॥ साम०। छं. सं. अ. १ प्र.

मकत्वम् ❀ ॥ ❀ ओंहिङ्कारायस्वाहाहिङ्कृतायस्वाहाक्रन्दतेस्वाहावक्रन्दायस्वाहाप्रोथतेस्वाहाप्रप्रोथायस्वाहागन्धायस्वाहाघ्रातायस्वाहानिविष्टायस्वाहोपविष्टायस्वाहासन्दितायस्वाहावल्गतेस्वाहासीनायस्वाहाशयानायस्वाहास्वपतेस्वाहाजाग्रतेस्वाहाकूजतेस्वाहाप्रबुद्धायस्वाहाविजृम्भमाणायस्वाहाविचृतायस्वाहासꣳहानायस्वाहोपस्थितायस्वाहायनायस्वाहाप्रायणायस्वाहा ❀ ॥ ओंभूर्भुवःस्वःजृम्भकइहागच्छेहतिष्ठेतिपूजनम् ॥ ओंजृम्भकायनमः ॥ ५२ ॥ ततः उत्तरेपिलिपिच्छमावाहयामि ॥ आवाहयेत्तंपिलिपिच्छकङ्कमयूरपिच्छानिविधारयन्तम् ॥ वामेतुहस्तेधनुरादधानंवाणन्दधानंत्वितरेतुहस्ते ॥ इति

ऋ० । ओंआपश्चित्पिप्युस्तर्यो० ॥ य० । वा. सं. अ. ३३ मंत्र १८ । ओंआपाश्चित्पिप्युस्तर्यो० ॥ साम० । छन्दो. उ. सं. प्र. १ मं. २० । ओंप्रसोमदेववीतये । अथ० । ओंआपश्चित्पिप्युस्त. ॥ * * * *

ध्यात्वा ॥ ॐआपश्चित्पिप्युस्तर्य्योंनगावोनक्षन्नृतञ्जरितारस्तऽइन्द्र ॥ याहि व्वायुर्न्ननियुतोंनोऽअच्छात्वꣳहिंधीभिर्दयसेव्विवाजान् ॥ ॐभूर्भुवःस्वःपिलिपिच्छायनमः ॥ पिलिपिच्छमावा० ॥ पूजयामि ॥ ५३ ॥ ततःपूर्वादिदिक्षुविदिक्षुअष्टासुहेमन्ताद्यावाहनादिपूजनञ्च ॥ ततःपूर्वेहेमन्तमावाहयेत ॥ ॐहेमन्तेनऽऋतुनादेवास्त्रिणवेमरुतस्तुताः ॥ व्बलेनशक्करीःसहोहविरिन्द्रेव्वयोदधुः ॥ ॐभूर्भुवःस्वःहेमन्तइहागच्छेहतिष्ठेतिपूजनम् ॥ ॐहेमन्तायनमः ॥ ५४ ॥ ततःआग्नेय्यान्त्रिपुरान्तकमावाहयेत् ॥ ॐत्र्यम्बकंयजामहेसुगन्धिम्पुष्टिवर्द्ध

नम् ॥ उ॒र्व्वा॒रु॒कमि॑व॒बन्ध॑नान्मृ॒त्योर्म्मु॑क्षीय॒मामृता॑त् ॥ ॐभूर्भुवःस्वःत्रिपुरान्तकइहागच्छेहतिष्ठेतिपूजनम् ॥ इत्यर्द्धर्चेन ॥ ॐत्रिपुरान्तकायनमः ॥ ५५ ॥ दक्षिणेअग्निवेतालंसंपूजयेत् ॥ ॐअ॒ग्निस्ति॒ग्मेन॑शो॒चिषा॒यास॒द्विश्व॒न्न्य॒त्त्रिण॑म् ॥ अ॒ग्निर्न्नो॑ऽवनतेर॒यिम् ॥ ओंभूर्भुवःस्वःअग्निवेतालइहागच्छेहतिष्ठेतिपूजनम् ॥ ओंअग्निवेतालायनमः ॥ ५६ ॥ नैर्ऋत्येअग्निजिह्वांसंपूज्य ॥ ओंअ॒ग्निश्च॑मे घ॒र्म्मश्च॑मे॒र्क्कश्च॑मे॒सूर्य्य॑श्चमेप्रा॒णश्च॑मेश्वमे॒धश्च॑मेपृथि॒वीच॒मेदि॑तिश्चमे॒दिति॑श्चमे॒ द्यौश्च॑मे॒ऽङ्गुल॑यः॒शक्क॑रयो॒दिश॑श्चमेय॒ज्ञेन॑कल्प्पन्ताम् ॥अ.। १८। मं.। २२॥ओंभूर्भुवःस्वःअ॒ग्निजिह्वेइहागच्छेहतिष्ठेतिपूजनम् ॥ ओंअग्निजिह्वायैनमः ॥ ५७ ॥ पश्चिमेकालंसंपूजयेत् ॥ ओंका॒र्ष्षिर॑सिसमु॒द्रस्य॒त्त्वाक्षि॑त्त्या॒ऽउन्न॑यामि ॥ समा

पो॑ऽअ॒द्भिरगमत॒समो॑षधीभि॒रो॑षधीः ॥ सं. । वा. । अ. । ६ । मं. । २८ ॥
ओंभूर्भुवःस्वःकालइहागच्छेहतिष्ठेतिपूजनम् ॥ ओंकालायनमः ॥ ५८ ॥
वायव्येकरालिनंसंपूजयेत् ॥ ओंकया॑नश्चि॒त्रऽआभु॑वदू॒तीस॒दाबृ॑धः॒सखा॑ ॥
कया॒शचि॑ष्ठयाव्बृता ॥ वा. । सं. । अ. । २७ । मं. । ३९ ॥ ओंभूर्भुवःस्वःकरा
लिन्इहागच्छेहतिष्ठेतिपूजनम् ॥ ५९ ॥ ओंकरालिनेनमः ॥ उत्तरेएकपादं
संपूजयेत् ॥ ओंव्वि॒श्वत॑श्चक्षुरु॒तव्वि॒श्वतो॑मुखोव्वि॒श्वतो॑बाहुरु॒तव्वि॒श्वत॑स्प्पात् ॥
सम्ब्बा॒हुब्भ्या॒न्धम॑ति॒सम्पत॑त्रै॒र्द्यावा॒भूमी॑ज॒नय॑न्दे॒वऽएकः॑ ॥ वा. । सं. । अ. । १७ ।
मं. । १९ ॥ ओंभूर्भुवःस्वःएकपात्इहागच्छेहतिष्ठेतिपूजनम् ॥ ओंएकपदे
नमः ॥ ६० ॥ ईशानेभीमरूपसंपूजयेत् ॥ ओंभायैदा॑व्र्बाहा॒रम्प्र॒भाया॑ऽअग्ग्ने॒ध

ꣳबृध्नस्यꣳविष्टपायाभिषक्तारम्ꣳवर्षिष्ठायनाकायपरिवेष्टारन्देवलोकायपेशितारम्मनु
ष्यलोकायप्प्रकरितारꣳसर्वेभ्योलोकेभ्यऽउपसेक्तारमवऽऋत्यैवधायोपम
न्थितारम्मेधायवासःपल्पूलीम्प्रकामायरजयित्रीम् ॥ वा.। सं.। अ.। ३०।
सं.। १२॥ ओंभूर्भुवःस्वःभीमरूपेहागच्छेहतिष्ठेतिपूजनम् ॥ ओंभीमरूपायनमः
॥ ६१ ॥ ततःपश्चिमनिर्ऋतिमध्येपातालेज्वालामुखंसंपूजयेत ॥ ॐअग्निश्च
मामन्युश्चमन्युपतयश्चमन्युकृतेभ्यःपापेभ्योरक्षन्तांयदह्नापापमकार्षम्मनसावा
चाहस्ताभ्याम्पद्भ्यामुदरेणाशिश्नाअहस्तदवलुम्पतुयत्किंचिद्दुरितम्मयिइदमहम
मृतयोनौसत्त्येज्योतिषिजुहोमिस्वाहा ॥ ॐभूर्भुवःस्वःज्वालामुखइहागच्छेह
तिष्ठेतिपूजनम् ॥ ॐज्वालामुखायनमः ॥ ६२ ॥ ततःपूर्वेशानयोर्मध्ये

आकाशेगन्धमर्द्दनंसंपूजयेत् ॥ ॐगन्धर्व्वस्त्वाब्बिश्वावसुःपरिदधातुब्बिश्वस्यारिष्ट्यैयजमानस्यपरिधिरस्यग्ग्निरिडऽईडितः ॥ इन्द्रस्यब्बाहुरसिदक्षिणोब्बिश्वस्यारिष्ट्यैयजमानस्यपरिधिरस्यग्ग्निरिडऽईडितः ॥ मित्रावरुणौत्वोत्तरतः परिधत्तान्ध्रुवेणधर्म्मणाब्बिश्वस्यारिष्ट्यैयजमानस्यपरिधिरस्यग्ग्निरिडईडितः ॥ वा.।सं.।अ.।२ मं०।३। ॐभूर्भुवःस्वःगन्धमर्द्दनइहागच्छेहतिष्ठेतिपूजनम् ॥ ॐगन्धमर्द्दनायनमः ॥ ६३ ॥ ततःमण्डलपूर्वेक्षेत्रपालंसंपूजयेत् ॥ ॐक्षत्रस्ययोनिरसिक्षत्रस्यनाभिरसि ॥ मात्वाहिꣳसीन्मामाहिꣳसीः; वा. सं. अ. ॥ २० ॥ मं. ॥ १ ॥ ॐभूर्भुवःस्वःक्षेत्रपालइहागच्छेहतिष्ठेतिपूजनम् ॥ ॐक्षेत्रपालायनमः ॥ ६४ ॥ ततःवास्तुपुरुषमावाहयेत् ॥ ॐवास्तोइतिम

न्त्रेणवास्तुपुरुषंसंपूज्य ॥ ततःईशप्रभृतिपंचचत्वारिंशद्देवान्प्रत्येकमेकत्रवाकाण्डानुसमयेनपदर्थानुसमये नवाषोडशोपचारैः पञ्चोपचारैर्वाप्रणवादिनमोन्तेनस्वस्वनाममन्त्रेणपूजयेत् ॥ यथा ॥ ॐईशायनमःइदंपाद्यं । एषोर्घः इदमाचमनीयमिदंस्नानामिदंवस्त्रंमिदमलेपनं ॥ एताअक्षताः । एतानिपुष्पाणि । एषधूपः । एषदीपः । एतानिनानाविधानिनैवेद्यानि । इदमाचमनीयम् । इदन्ताम्बूलमिदंपूगीफलम् ॥ एषादक्षिणा ॥ एवंपर्ज्जन्यायनमः ॥ एतत्पुर्वोक्तपाद्यादिभिःसर्वत्रपूजांकृत्वा ॥ तदनन्तरंमण्डलमध्येमण्डूकादिपीठदेवेभ्योनमःइतिपीठदेवानावाह्यसंपूज्य ॥ अनन्तरम्वास्तुमण्डलमध्येसौवर्णंरौप्यमयंतदभावेताम्रमयंनवमव्रणङ्कलशंस्थापयेत् ॥ तस्योदरेजलंपञ्चपल्लवंपञ्च

रत्नफलसर्वौषधिपञ्चगव्यपञ्चामृतसप्तमृदादियथोक्तमन्त्रैर्निःक्षिपेत् ॥ वस्त्रेणावगुण्ठ्यतत्रतीर्थान्यावाहयेत् ॥ गङ्गाद्याःसरितःसर्वाःसमुद्राश्चसरांसिच ॥ आयान्तुयजमानस्यदुरितक्षयकारकाः ॥ ओंइमम्मेवरुणेतिमन्त्रेणवरुणमावाह्य ॥ कलशोपरिवास्तुमूर्त्तिंस्वर्णमयीमग्न्युत्तारणपूर्वकंपञ्चामृतेनस्नापयित्वायक्षकर्द्दमेनानुलिप्यस्थापयेत् ॥ ॐभूर्भुवःस्वःवास्तुपुरुषमावाहयामिषोडशोपचारेणसंपूजयामिभोवास्तुपुरुषस्वागतोभव ॥ सुस्थिरोभव ॥ सुप्रसन्नोभव ॥ वरदोभव ततःप्रार्थयेत् ॥ आगच्छभगवन्वास्तोसर्वदेवैरधिष्ठितः ॥ भगवन्कुरुकल्याणंयज्ञेसन्निहितोभव ॥ ततःअर्घन्दत्वाअनेनमन्त्रेण ॥ अयोनेभगवन्गर्भललाटस्वेदसंभव ॥ गृहाणर्घ्यंमयादत्तंवास्तोःस्वामिन्नमोस्तुते ॥ पुनःप्रार्थयेत् ॥

ॐह्रींनमोभगवन्वास्तुपुरुषमहावलपराक्रमसर्वदेवताश्रितशरीरब्रह्मपुत्रसकलब्रह्माण्डधारिन्भूम्यर्पितमस्तकपुरपत्तनप्रासादगृहवापीकूपादिसन्निवेशसान्निध्यकरविश्वंभरपरमपुरुषस्वरूपचक्रशार्ङ्गधनुःकरवरदाभयहस्तवास्तोनमस्ते ॥ एह्येहि भगवनवास्तोमन्दिरेसर्वसिद्धये ॥ जानुनीकूर्परःसक्तःदिशिवातहुताशयोरिति मन्त्रेणेशानशिरसंनैर्ऋत्यपादमाग्नेयजानुकंवायव्यकूर्परमाकुञ्चितकरंशुभमुत्तानंवास्तुपुरुषंप्रार्थयेत् ॥ नमस्तेवास्तुदेवेशसर्वविघ्नहरोभव ॥ शान्तिङ्कुरुसुखन्दोहिसर्वान्कामान्प्रयच्छमे ॥ इतिप्रार्थ्य ॥ अनेनयथोपचारपूजनेनयज्ञवास्तुमण्डलस्थदेवताःसुप्रीतावरदाभवन्तु ॥ इतियज्ञवास्तुपूजाविधिःसमाप्तः ॥ अथवास्तुहवनविधिर्लिख्यते ॥ उदुम्बरादिसमित्तिलाज्यैःस्वस्वमन्त्रैःकुण्डेस्थ

ण्डिलेवाअष्टाविंशतिमष्टौवाप्रत्येकंनाममन्त्रेणवेदोक्तमन्त्रेणवाहुत्वा ॥ ॐवास्तोष्पतइत्यादिचतुर्भिर्म्मन्त्रैःसदूर्वासमित्तिलाज्यैःहुत्वा ॥ एवम्वास्तोष्पतेध्रुवस्थूणाभित्यनेनमन्त्रेणपञ्चविंशतिवारंविल्वफलैस्तद्वीजैर्वाहुत्वा ॥ स्विष्टकृदादिपूर्णाहुतिन्दत्वावलिंहरेत् ॥ अथवास्तुहवनप्रयोगः ॥ ॐमद्येहेत्यादि० आयुःकामार्थंपुष्टिकामार्थंयोगक्षेमार्थंद्विपदचतुष्पदशान्त्यर्थंसप्रासादाविष्णुमूर्त्तेःस्थिरप्रातिष्ठायागकर्म्माङ्गभूतयज्ञवास्तुदेवताप्रीत्यर्थमौदुम्वरादिसमित्तिलाज्यैः ब्राह्मणद्वारावन्हौहवनङ्करिष्ये ॥ ॐईशानायनमःस्वाहा ॥ इदमीशानाय ॥ एवंसर्वत्र ॥ १ ॥ ॐपर्ज्जन्यायनमःस्वाहा ॥ इदंप० । २ ॥ ॐजयन्तायनमःस्वाहा ॥ इदंजयं० ॥ ३ ॥ ॐमाहेन्द्रायनमःस्वाहा ॥ इदंमाहे० ॥ ४ ॥ ॐआदित्यायनमःस्वाहाइदमा

दि० ॥ ५ ॥ ॐसत्यायनमःस्वाहा ॥ इदंस० ॥ ६ ॥ ॐभृशायनमःस्वाहा ॥ इदंभृ० ॥ ७ ॥ ॐअन्तरिक्षायनमःस्वाहा ॥ इदमं० ॥ ८ ॥ ततःआग्नेये ॥ ओंअग्नयेनमःस्वाहा ॥ इदम० ॥ ९ ॥ ओंपूष्णेनमःस्वाहा ॥ इदंपू० ॥ १० ॥ ओंवितथायनमःस्वाहा ॥ इदंवि० ॥ ११ ॥ ओंगृहक्षतायनमःस्वाहा ॥ इदंगृह० ॥ १२ ॥ ओंयमायनमःस्वाहा ॥ इदंय० ॥ १३ ॥ ओंगन्धर्वायनमःस्वाहा ॥ इदङ्गं० ॥ ॥ १४ ॥ ओंभृङ्गराजायनमःस्वाहा ॥ इदम्भृङ्ग० ॥ १५ ॥ ओंमृगायनमःस्वाहा ॥ इदंमृगा० ॥ १६ ॥ ततःनैर्ऋत्यकोणे पितृगणार्द्धपदे ॥ ओंपितृभ्योनमःस्वाहा ॥ इदंपितृ० ॥ १७ ॥ ओंदौवारिकायनमःस्वाहा ॥ इदंदौ० ॥ १८ ॥ ओंसुग्रीवायनमःस्वाहा ॥ इदंसु० ॥

१९ ॥ ओंपुष्पदन्तायनमःस्वाहा ॥ इदम्पु० ॥ २० ॥ ओंवरुणायनमःस्वाहा ॥ इदंवरु० ॥ २१ ॥ ओंअसुरायनमःस्वाहा ॥ इदमसु० ॥ २२ ॥ ओंशोषायनमःस्वाहा ॥ इदंशो० ॥ २३ ॥ ओंपापायनमःस्वाहा ॥ इदंपा० ॥ २४ ॥ ततः वायव्यकोणेरोगार्द्धपदे ॥ ओंरोगायनमःस्वाहा ॥ इदंरो० ॥ २५ ॥ ओंसर्प्पायनमःस्वाहा ॥ इदंस० ॥ २६ ॥ ओंमुख्यायनमःस्वाहा इदंमुख्याय ॥ २७ ॥ ओंभल्लाटायनमःस्वाहा ॥ इदंभ० ॥ २८ ॥ ओंसोमायनमःस्वाहा ॥ इदꣳसो० ॥ २९ ॥ उरगायनमःस्वाहा ॥ इदंसुर० ॥ ३० ॥ ॐअदितयेनमःस्वाहा ॥ इदंमदितये ॥ ३१ ॥ ॐदितयेनमःस्वाहा ॥ इदंदितये ॥ ३२ ॥ तातोमध्ये ॥ ॐब्रह्मणेनमःस्वाहा ॥ इदंब्र. ॥ ३३ ॥

मध्यात्पूर्वे ॥ ॐअर्य्यम्णेनमःस्वाहा ॥ इदमर्य्यम्णे ॥ ३४ ॥ ब्रह्मणोदक्षिणे ॐवैवस्वतायनमःस्वाहा ॥ इदंवैव० ॥ ३५ ॥ ब्रह्मणःपश्चिमे ॐमित्रायनमःस्वाहा ॥ इदंमि० ॥ ३६ ॥ ब्रह्मणउत्तरे ॥ ॐपृथ्वीधरायनमःस्वाहा ॥ इदंपृथ्वी० ॥ ईशानेऽर्द्धपदे ॥ ॐअद्भ्योनमःस्वाहा ॥ इदम० ॥ ३८ ॥ तत्रैवार्द्धपदे ॥ ॐआपवत्सायनमःस्वाहा ॥ इदमाप० ॥ ३९ ॥ ततःआग्नेये ॥ ॐसवित्रेनमःस्वाहा ॥ इदंस० ॥ ४० ॥ तत्रैवार्द्धपदे ॥ ॐसावित्रायनमःस्वाहा ॥ इदंसा० ॥ ४१ ॥ ततःनैर्ऋत्ये ॥ ॐजयायनमःस्वाहा ॥ इदंजया० ॥ ४२ ॥ तत्रैवार्द्धपदे ॥ ॐजयन्तायनमःस्वाहा ॥ इदंजयं० ॥४३॥ ततःवायव्ये ॐराजयक्ष्मणेनमःस्वाहा ॥ इदंराज० ॥ ४४ ॥ तत्रैवार्द्धपदे ॥ ॐरु

द्रदासायनमःस्वाहा ॥ इदंरुद्र० ॥ ४५ ॥ ततःमण्डलबाह्येईशानादिदिक्षुचक्रमेण ॥
ईशाने ॥ ॐचरक्यैनमःस्वाहा ॥ इदंचर०॥ १ ॥ आग्नेये ॥ ॐबिदार्य्यैनमः ॥
स्वाहा ॥ इदंबिदार्य्यै ॥ २ ॥ नैर्ऋत्ये ॥ ॐपूतनायैनमःस्वाहा ॥ इदंपूत० ॥
॥ ३ ॥ वायव्ये ॥ ॐपापराक्षस्यैनमःस्वाहा ॥ इदंपाप० ॥ ४ ॥ ततःपूर्वादिक्रमे
ण ॥ ॐस्कन्दायनमःस्वाहा॥इदंस्क.५॥दक्षिणे । ॐअर्य्यम्णेनमःस्वाहा ॥इदम.॥
॥ ६ ॥ पश्चिमे ॥ ओंजृंभकायनमःस्वाहा ॥ इदंजृंभ० ॥ ७ ॥ उत्तरे ॥ ओंपिलि
पिच्छायनमःस्वाहा ॥ इदंपि० ॥ ८ ॥ ततः पूर्वादिक्रमेणादिक्षुविदिक्षुच ॥ पूर्वे ॥
ओंहेमन्तायनमःस्वाहा॥ इदंहे.॥१॥आग्नेये॥ओंत्रिपुरान्तकायनमःस्वाहा॥इदं०॥२॥
दक्षिणे ॥ अग्निवेतालायनमःस्वाहा ॥इदमं०॥३॥ नैर्ऋत्ये ॥ ओंअग्निजिह्वायैनमः

स्वाहा॥इदम०॥ ४ ।.पश्चिमे॥ओंमहाकालायनमःस्वाहा॥इदं०॥ ५ ॥वायव्ये॥ ओंकरालिनेनमःस्वाहा॥इदंक० ॥६॥ उत्तरे॥ ओंएकपदेनमःस्वाहा॥इदमे०॥ ७ ॥ईशाने॥ ओंभीमरूपायनमःस्वाहा॥इदंभी०॥८॥पश्चिमनिर्ऋतिमध्येपाताले ॥ ओंज्वालामुखायनमःस्वाहा ॥ इदंज्वा०॥ ९ ॥ पूर्वेशानयोर्मध्येआकाशे॥ओंगन्धमर्दनायनमःस्वाहा॥इदंगं०॥१०॥पुनःपूर्वे॥ओंक्षेत्रपालायनमःस्वाहा॥इदंक्षे०॥११॥मध्ये ॥ ओंवास्तुपुरुषायनमःस्वाहा॥इदंवा०।१२।ओंवास्तोष्पतेप्रतिजानीह्यस्मान्त्स्वावेशोअनमीवोभवानः ॥ यत्त्वेमहेप्प्रतितन्नोजुषस्वशन्नोअस्तुद्विपदेशञ्चतुष्पदेस्वाहा ॥ इदंवास्तोष्पतये ॥ १ ॥ ओंवास्तोष्पतेप्प्रतरणोनऽएधिगयस्फानोगोभिरश्वेभिरिन्दो ॥ अजराशस्तेसख्येस्यामपितेवपुत्रान्प्रतितन्नोजुषस्वस्वाहा ॥ इदंवास्तो

ष्पतये ॥ २ ॥ ओंवास्तोष्पतेशग्मयासंसदातेसक्षीमहिरण्ययागातुमत्या
पाहिक्ष्येम ॥ उतयोगेवरन्नोयूयम्पातस्वस्तिभिःसदानःस्वाहा ॥ इदंवास्तोष्पतये
॥ ३ ॥ ओंअमीवहावास्तोष्पतेविश्वारूपाण्याविशन् ॥ सखासुशेवऽएधिनः
स्वाहा ॥ इदंवास्तोष्पतये ॥ ४ ॥ इतिचतसृभिः ॥ ओंवास्तोष्पतेध्रुवास्थूणां
सत्रंसोम्यानांद्रप्सोभेत्तापुरांशस्वतीनामिन्द्रोमुनीनांसखास्वाहा ॥ इदंवास्तोष्प
तये ॥ इतिचहुत्वा ॥ ५ ॥ ततःपूर्णाहुतिन्दद्यात् ॥ ओंमूर्द्धानन्दिवोऽअरतिम्पृ
थिव्व्याव्वैश्वानरमृतऽआजातमग्निम् ॥ कविꣳसम्राजमतिथिञ्जनानामासन्ना
पात्रञ्जनयन्तदेवाःस्वाहा ❁ ❁ ॥ सं. । अ. ७ मं. २४ ॥
इतिपूर्णाहुतिःततःहोमान्तेवलिंद्यात् ॥ तद्यथा ॥ ओंनमोब्रह्मणेमध्यकोष्टच

तुष्ठयेषुएषपायसबलिर्न्नमः ॥ १ ॥ ततःपूर्वपदद्वयेदक्षिणस्तनेशर्क्करासहितंपायसं
अर्य्यम्णेएषबलिः ॥ २ ॥ ब्रह्मणो.दक्षिणेपदद्वये । रक्तचन्दनसहितपायसंविवस्वते
॥ ३ ॥ ब्रह्मणःपश्चिमेपदद्वयेजठरवामभागे ॥ घृतौदनंमित्राय० ॥ ४ ॥
ततःब्रह्मणउत्तरेपदद्वये । मांससहितंकूष्माण्डंपृथ्वीधराय० ॥ ५ ॥ आग्नेय
कोणेसूत्राद्द्विधाकृतपदोत्तरार्द्धपदे ॥ रक्तपुष्पाणिगुडश्चसवित्रे० ॥ ६ ॥ ततः
पूर्वार्द्धे । मरिचकुशोदकयुक्तान्मोदकान्सावित्राय० ॥ ७ ॥ ततःएवंनैर्ऋत्ये
पूर्वार्द्धपदेवृषणयोः ॥ घृतचन्दनंजयाय० ॥ ८ ॥ तत्पश्चिमार्द्धेपदे ॥
आज्यसहितंहरिद्रौदनंजयन्ताय० ॥ ९ ॥ एवंवायव्यकोणेपूर्वार्द्धे ॥ अपक्व
पक्वञ्चमांसंराजयक्ष्मणे० ॥ १० ॥ उत्तरार्द्धेबिल्वफलानिरुद्राय ॥ ११ ॥

एवमीशानकोणेपदार्द्धोत्तरेक्षीरमद्भ्यः० ॥ १२ ॥ पूर्वार्द्धेमुखेदक्षिणेआ
पवत्सायपा० ॥ १३ ॥ ततोऽन्त्यपङ्क्तिगेईशानपददक्षिणार्द्धेशिरसि ॥
ईशानायपायसं० ॥ १४ ॥ तद्दक्षिणसार्द्धपदेनेत्रे ॥ पर्ज्जन्यायपायस० ॥
१५ ॥ तद्दक्षिणपदद्वयेदक्षिणश्रोत्रेजयन्तायपीतध्वजपैष्टसहितं० ॥ १६ ॥
तद्दक्षिणपदद्वयेदक्षिणांशे ॥ माहेन्द्रायपञ्चरत्नसहितपिष्टं० ॥ १७ ॥ तद्दक्षि
णपदद्वयेदक्षिणवाहौ ॥ आदित्यायधूम्रवर्णंवितानंपिष्टसक्तुसमन्वितरक्तचन्दनयुतं
पायसं० ॥ १८ ॥ तद्दक्षिणपदद्वयेवामवाहौ । सत्यायघृतयुक्तान्गोधूमान्०
॥ १९ ॥ तद्दक्षिणसार्द्धपदेदक्षिणकूर्परे । भृशायपायसं० ॥ २० ॥
तद्दक्षिणपदार्द्धेदक्षिणप्रवाहौअन्तरिक्षायशष्कुली०पायसव० ॥२१॥तत्पश्चिमार्द्धेवाम

प्रवाहेसक्तूनग्नये॰ ॥ २२ ॥ तत्पश्चिमेसार्द्धपदेदक्षिणमणिबन्धेलाजान्पूष्णे॰ ॥ २३ ॥ तत्पश्चिमेपदद्वयेदक्षिणपार्श्वेचणकौदनंवितथाय॰ ॥ २४ ॥ तत्पश्चिमेपदद्वयेदक्षिणकटौ मधुयुक्तमन्नङ्गृहक्षताय॰ ॥ २५ ॥ तत्पश्चिमेपदद्वयेदक्षिणांशे ॥ पिशितौदनंयमाय॰ ॥ २६ ॥ तत्पश्चिमेपदद्वयेदक्षिणजानौ ॥ गन्धयुक्तमोदनङ्गन्धर्वाय॰ ॥ २८ ॥ तत्पश्चिमेसार्द्धपदेदक्षिणजङ्घायां । मेषजिह्वांभृङ्गराजाय॰ ॥ २७ ॥ तत्पश्चिमेनैर्ऋत्यपदार्द्धेदक्षिणस्फिजि ॥ यवान्नंमृगाय॰ ॥ २९ ॥ तदुत्तरार्द्धपदेदक्षिणपादौ ॥ तिलयुक्तमोदनंपितृभ्यः ॥ ३० ॥ तदुत्तरेसार्द्धपदेवामस्फिजि ॥ पैष्टकृष्णवलिंच दौवारिकाय॰ ॥ ३१ ॥ तदुत्तरपदद्वयेवामजङ्घायां । अपूपान्सुग्रीवाय॰ ॥

॥ ३२ ॥ तदुत्तरपदद्वयेवामजानौ ॥ पायसंपुष्पदन्ताय० ॥ ३३ ॥ तदुत्तरपदद्वयेवामोरौ ॥ कुशयुक्तंसुवर्णपद्मंवरुणाय० ॥ ३४ ॥ तदुत्तरपदद्वयेवामकटौ ॥ सुरासवमसुराय० ॥ ३५ ॥ तदुत्तरेसार्द्धपदेवामपार्श्वे ॥ घृतौदनंशेषाय० ॥ ३६ ॥ तदुत्तरेवायव्यार्द्धपदेवाममणिवन्धे ॥ यवान्पापाय० ॥ ३७ ॥ तत्प्रागर्द्धेवामांशे ॥ घृतयुक्तान्मोदकान्रोगाय० ॥ ३८ ॥ तत्प्राक्सार्द्धपदेवामवाहौ ॥ नागकेशरन्नागाय० ॥ ३९ ॥ तत्प्राक्पदद्वयेवामकूर्परे ॥ भक्ष्यभोज्यंमुख्याय० ॥ ४० ॥ तत्प्राक्पदद्वयेवामवाहुमूले ॥ मुद्गौदनंभल्लाटाय ॥ ४१ ॥ तत्प्राक्पदद्वयेवामांशे ॥ मधुयुक्तंपायसंसोमाय० ॥ ४२ ॥ तत्प्राक्पदद्वयेवामोरौ ॥ शालितण्डुलयुतपैष्टमुरगाय० ॥ ४३ ॥

तत्प्राक्सार्द्धपदेवामश्रोत्रे ॥ विलेपिकामदितये० ॥ ४४ ॥ तत्प्रागर्द्धपदेवामनेत्रे । पूलिकांदितये० ॥ ४५ ॥ ततोयथाशक्त्यासर्वेभ्यःकाञ्चनम् ॥ आचार्यायब्रह्मणेचगान्दद्यात् ॥ एवमेवपञ्चचत्वारिंशत्पदेषुईशानादिवाब्रह्मादिदेवताभ्योवलीन्दत्वाचम्य ॥ ततोमण्डलवाह्येईशानादिकोणेषु ॥ मांसौदनङ्घृतसहितञ्चचरक्यैदद्यात् ॥ १ ॥ मांसौदनसहितंहरिद्रौदनंसरुधिरंविडाल्यै० ॥ २ ॥ दध्योदनंमत्स्यखण्डयुतंपूतनायै० ॥ ३ ॥ मत्स्यमांसंसुरासवंपापराक्षस्यै० ॥ ४ ॥ ततःपूर्वादिदिक्चतुष्टयेषु ॥ मासौदनंस्कन्दाय०॥ ५ ॥ तिलोदकसहितानपूपानर्य्यम्णे० ॥ ६ ॥ सरुधिरंमांसञ्जृंभकाय० ॥ ७ ॥ रत्नयुतमन्नंपिलिपिच्छाय० ॥ ८ ॥ ततोपूर्वादिदिक्षुविदिक्षु ॥ भक्ष्यभोज्यैर्हे

मन्तादिभ्योवलिन्दद्यात् ॥ निरुक्तविशेषवल्यसंभवेतुसर्वासामपिवास्तुमण्डल
देवतानामाज्ययुक्तपायसेनवलिन्दद्यात् ॥ तस्याप्यभावेकुशपुष्पघृताक्षतैरपि
सर्वेभ्योवलिन्दद्यादितियज्ञवास्तुवलिदानप्रयोगः ॥ ततःयागमण्डपवायव्यकोणे
योगिनीचक्रस्योद्धारमाह ॥ तदुक्तंतन्त्रराजे ॥ तत्रक्वचिच्छक्तिविषयकेयागे
लिंगतोभद्रस्थानेचतुःषष्टियोगिन्यःपूज्यास्तेषांपूजाप्रकारः ॥ कृत्वासमतलांभूमि
ञ्चतुरस्रांसुशोभनाम् ॥ अष्टाष्टकोष्ठितपदांवेदीङ्कृत्वाततःपरम् ॥ १ ॥
आग्नेयाद्वायुकोणान्तङ्कोणसूत्रविभूषिताम् ॥ सर्वकोष्ठेचतुःषष्टिरर्द्धकोष्ठाभव
न्तिच ॥ २ ॥ तत्रपूज्याःचतुःषष्टियोगिन्यःसुप्रभाननाः ॥ गजाननादिका
स्सर्वाधूपदीपादिभिस्तथेति ॥ तत्रेशानमारभ्यनैर्ऋत्यान्तंप्रत्यावृत्तिक्रमेणपूजये

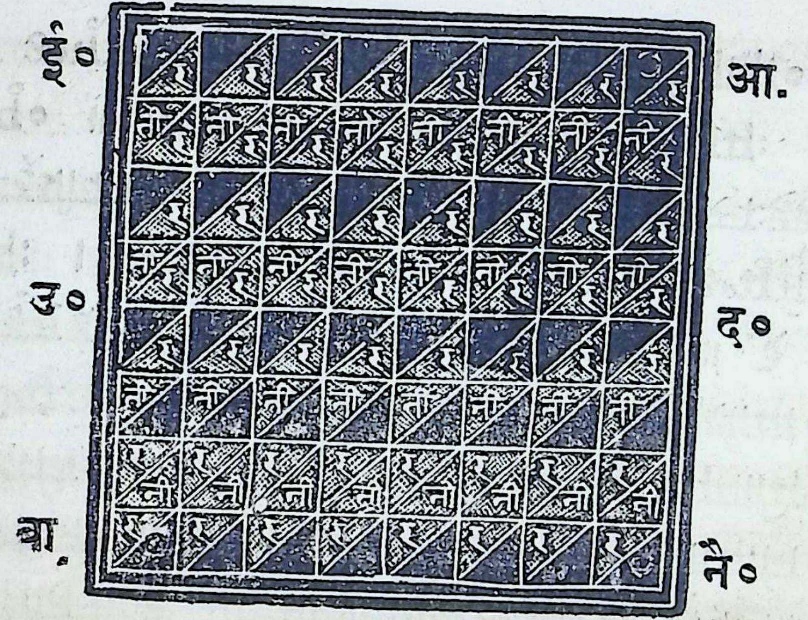
ई०
आ.
उ०
द०
वा.
नै०

त् ॥ ओमद्येहेत्यादि० सप्रासादविष्णुमूर्त्तेःस्थिरप्रतिष्ठायागकर्म्माङ्गभूतगजाननादिचतुःषष्टियोगिनीस्थापनपूजनमहङ्करिष्ये ॥ तत्रनामानि ॥ ॐभूर्भुवः स्वःगङ्गजाननायैनमः ॥ गङ्गजाननामावाहयामिस्थापयामिपूजयामि ॥ १ ॥ एवंसर्वत्र ॐभूर्भुवःस्वःसिंसिंहमुख्यैनमः ॥ सिंहमुखीमा० पू० ॥ २ ॥ ॐभूर्भुवःस्वःगङ्गृध्रास्यायैनमः । गृध्रास्यामा० पू० ॥ ३ ॥ ॐभूर्भुवःस्वः मांमाहेश्वर्य्यैनमः । माहेश्वरीमावा० पू० ॥ ४ ॥ ॐभूर्भुवःस्वःउमुष्ट्रग्रीवायैनमः । उष्ट्रग्रीवामा० पू० ॥ ५ ॥ ॐभूर्भुवःस्वःहंहयग्रीवायैनमः । हयग्रीवामा० पू० ॥ ६ ॥ ॐभूर्भुवःस्वःकाङ्कालरात्र्यैनमः । कालरात्रीमा० पू० ॥ ७ ॥ ॐभूर्भुवःस्वःनिन्निशाचर्य्यैनमःनिशाचरीमावा० पू० ॥ ८ ॥

इतिप्रथमाबृत्तिः ॥ अथद्वितीयाबृत्तिः ॥ ॐभूर्भुवःस्वःकाङ्काल्यैनमः ॥ कालीमा० पू० ॥ ९ ॥ ॐभूर्भुवःस्वःरौंरौद्रचित्कार्य्यैनमःरौद्राचित्कारीमा० पू० ॥ १० ॥ ओंभूर्भुवःस्वःफेंफेत्कार्य्यैनमःफेत्कारीमा०पू० ॥ ११ ॥ ॐभूर्भुवःस्वः भूंभूतगमर्य्यैनमः । भूतगमरीमा० पू० ॥ १२ ॥ ओंभूर्भुवःस्वःवाँवाराह्यैनमः । वाराहीमा० । पू० ॥ १३ ॥ ओंभूर्भुवःस्वःसंसरभास्यायैनमः । सरभास्यामा० पू० ॥ १४ ॥ ओंभूर्भुवःस्वःप्रेंप्रेताक्ष्यैनमः । प्रेताक्षीमा० पू० ॥ १५ ॥ ओंभूर्भुवःस्वःमांमांसभोजनायैनमः ॥ मांसभोजनामा० पू० ॥ १६ ॥ इतिद्वितीयाबृत्तिः ॥ २ ॥ अथतृतीयावृतिः ॥ ओंभूर्भुवःस्वःडाण्डाकिन्यैनमः । डाकिनीमा० पू० ॥ १७ ॥ ओंभूर्भुवःस्वःकङ्कल्याण्यैनमः । कल्याणीमा०

पू० ॥ १८ ॥ ओंभूर्भुवःस्वःशुंशुष्काँग्यैनमः ॥ शुष्काङ्गीमा० पू० ॥ १९ ॥ ओंभूर्भुवःस्वःकङ्कलहप्रियायैनमः ॥ कलहप्रियामा० पू० ॥ २० ॥ ओंभूर्भुवःस्वःउमुलूकिकायैनमः । उलूकिकामा० पू० ॥ २१ ॥ ओंभूर्भुवःस्वःशिंशिबराचार्य्यैनमः । शिवराचारीमा० पू० ॥ २२ ॥ ओंभूर्भुवःस्वःधूंधूम्राक्ष्यैनमः ॥ धूम्राक्षीमावा० पू० ॥ २३ ॥ ओंभूर्भुवःस्वःचिंचित्रनादिन्यैनमः। चित्रनादिनीमा० पू० ॥ २४ ॥ इतितृतीयावृत्तिः ॥ अथचतुर्थ्यावृत्तिः ॥ ओंभूर्भुवःस्वःऊमूर्द्ध्वकेश्यैनमः ॥ ऊर्द्ध्वकेशीमा० पू० ॥ २५ ॥ ओंभूर्भुवःस्वःभंभद्रकेश्यैनमः । भद्रकेशीमा० पू० ॥ २६ ॥ ओंभूर्भुवःस्वःशंशवहस्तायैनमः । शवहस्तामा पू० ॥ २७ ॥ ओंभूर्भुवःस्वःमांमालिन्यैनमः ।

मालिनीमा० पू० ॥ २८ ॥ ओंभूर्भुवःस्वःकङ्कपालहस्तायैनमः । कपालहस्तामा
पू० ॥ २९ ॥ ओंभूर्भुवःस्वःरंरक्ताक्ष्यैनमः ॥ रक्ताक्षीमा० पू० ॥
॥ ३० ॥ ओंभूर्भुवःस्वःश्येश्येंनायैनमः । श्येनामावाहयामिपूजयामि ॥ ३१ ॥
ओंभूर्भुवःस्वःरुंरुधिरपायिन्यैनमः । रुधिरपायिनीमा० ॥ पू० ३२ ॥ इति
चतुर्थ्यावृत्तिः ॥ ४ ॥ अथपञ्चमावृत्तिः ॥ ओंभूर्भुवःस्वःखड्खड्गिन्यैनमः ।
खड्गिनीमा० ॥ ३३ ॥ ओंभूर्भुवःस्वःदींदीर्घलंबोष्ठ्यैनमः । दीर्घम्बोष्ठीमा०
पू० ॥ ३४ ॥ ओंभूर्भुवःस्वःपांपाशहस्तायैनमः । पाशहस्तामा० पू० ॥ ३५ ॥
ओंभूर्भुवःस्वःवंवलाकिन्यैनमः । वलाकिनीमावा० पू० ॥ ३६ ॥ ओंभूर्भुवः
स्वःकाङ्काकतुण्डायैनमः ॥ काकतुण्डामा० पू० ॥ ३७ ॥ पुनः ॥ ओंभूर्भुवःस्वःपुनः

पांपाशहस्तायैनमः । पाशहस्तामा० पू० ॥ ३८ ॥ ओंभूर्भुवःस्वःधून्धूर्ज्जटायैनमः। धूर्ज्जटामा.पू. ॥ ३९ ॥ ओंभूर्भुवःस्वःविंविषभक्षिण्यैनमः । विषभक्षिणीमा.पू. ॥ ४० ॥ इतिपञ्चमावृत्तिः ॥ अथषष्ठ्यावृत्तिः॥ ओंभूर्भुवःस्वःसिंसिशुघ्न्यैनमः । सिशुघ्नीमा.पू. ॥ ४१ ॥ ॐभूर्भुवःस्वःपाम्पापहन्त्र्यैनमः । पापहन्त्रीमा.पू. ॥ ४२ ॥ ॐभूर्भुवःस्वःमंमयूर्य्यैनमःमयूरीमा.पू. ॥ ४३ ॥ ॐभूर्भुवःस्वःविंविकटाननायैनमः । विकटाननामा. पू० ॥ ४४ ॥ ॐभूर्भुवःस्वःभंभयध्वंसिन्यैनमः। भयध्वंसिनीमा. पू. ॥४५॥ ॐभूर्भुवःस्वःप्रेंप्रेतास्यायैनमः। प्रेतास्यामा० पू. ॥ ४६ ॥ ॐभूर्भुवःस्वःप्रेंप्रेतवाहिन्यैनमः । प्रेतवाहिनीमा०पू. ॥ ४७ ॥ ॐभूर्भुवःस्वःकोङ्कोटराक्ष्यैनमः । कोटराक्षीमा.पू. ॥ ४८ ॥ इतिषष्ठ्यावृत्तिः ॥ अथ

सप्तमाबृत्तिः ॥ ॐभूर्भुवःस्वःसंसप्तजिह्वायैनमः ॥ सप्तजिह्वामा.पू. ॥ ४९ ॥ ॐभूर्भुवःस्वःअमष्टचक्रायैनमः । अष्टचक्रामा.पू. ॥ ५० ॥ ॐभूर्भुवःस्वःसंसुरप्रियायैनमः । सुरप्रियामा.पू. ॥ ५१ ॥ ॐभूर्भुवःस्वःव्यांव्यालास्यायैनमः । व्यालास्यामा.पू. ॥ ५२ ॥ ॐभूर्भुवःस्वःधूंधूम्रनिःश्वासायैनमःधूम्रनिःश्वासामा.पू. ॥५३॥ ओंभूर्भुवःस्वःत्रिन्त्रिपुण्यैनमः । त्रिपुरामावा.पू. ॥५४॥ ओंभूर्भुवःस्वः भुंभुवनेश्वर्य्यैनमः । भुवनेश्वरीमा.पू. ॥ ५५ ॥ ओंभुर्भुवःस्वःवृंवृहत्तुण्डायैनमः । वृहत्तुण्डामा.पू. ॥ ५६ ॥ इतिसप्तमाबृत्तिः । ७ ॥ अथाऽष्टमावृत्तिः ॥ ओंभूर्भुवःस्वःदंदण्डहस्तायैनमः ॥ दण्डहस्तामा.पू. ॥ ५७ ॥ ओंभूर्भुवःस्वःप्रंप्रचंडायैनमः । प्रचण्डामा.पू. ॥ ५८ ॥ ओंभूर्भवःस्वःचञ्चण्डाविक्रमा

येनमः । चण्डविक्रमामा.पू. ॥ ५९ ॥ ओंभूर्भुवःस्वःस्थूंस्थूलकेश्यैनमः । स्थूलकेशीमा.पू. ॥ ६० ॥ ओंभूर्भुवःस्वःबृम्बृहत्कुक्ष्यैनमः । वृहत्कुक्षीमा.पू. ॥६१॥ ओंभूर्भुवःस्वःयंयमदूत्यैनमः । यमदूतीमा.पू. ॥ ६२ ॥ ओंभूर्भुवःस्वःकङ्करालिन्यैनमः । करालिनीमा.पू. ॥ ६३ ॥ ओंभूर्भुवःस्वःकुङ्कुब्जिकायैनमःकुब्जिकामावाहयामिपूजयामि ॥ ६४ ॥ इत्यष्टमावृत्तिः ॥ ८ ॥ ओंमनोजूतिरितिप्रतिष्ठाप्य ॥ पाद्यार्घाचमनादिभिः षोडशोपचारेणपंचोपचारेणवासंपूज्य ॥ ततःवेदिमध्येताम्रमयङ्कलशंसंस्थाप्य ॥ कलशोदरेजलंपञ्चपल्लवपञ्चरत्नफलरौप्यसौवर्णसर्वौषधिपञ्चगव्यपञ्चामृतसप्तमृदोयथोक्तमन्त्रेणानिःक्षिप्यवस्त्रेणावगुंठ्यतत्रतीर्थान्यावाहयेत् ॥ ओंगङ्गाद्यासरितःसर्वाःसमुद्राश्चस

रांसिच ॥ आयान्तुयजमानस्यदुरितक्षयकारकाः ॥ ओंइमम्मेवरुणेतिमन्त्रेणवरुणमावाह्यसंपूज्य ॥ कलशोपरिस्वर्णमयींप्रतिमामग्न्युत्तारणपूर्वकंपञ्चामृतेनस्नापयित्वायक्षकर्दमेनानुलिप्यस्थापयेत् ॥ ओंयोगेंयोगेतवस्तरम्बजेंवाजेहवामहे ॥ सखायऽइन्द्रमूतये सं० अ० ११ मं० १४ ॥ इतिमन्त्रेणषोडशोपचारैःसंपूज्य ॥ प्रार्थयेत् ॥ आवाहयाम्यहन्देवियोगिनींपरमेश्वरीं ॥ योगाभ्यासेनसन्तुष्टाम्परान्ध्यानसमन्विताम् ॥ १ ॥ दिव्यकुण्डलसंसर्गाःदिव्यज्वालास्त्रिलोचनाः ॥ मूर्त्तिमतीरमूर्त्ताश्चउग्राश्चैवोग्ररूपिणी ॥ २ ॥ यज्ञङ्कुर्वन्तुनिर्विघ्नंजयंयच्छन्तुमातरः ॥ इतिसंप्रार्थ्यहवनङ्कुर्यात् ॥ ओमद्येहेत्यादि० आयुःकामार्थंपुष्टिकामार्थंयोगक्षेमार्थंद्विपदचतुष्पदशान्त्यर्थंसप्रासादविष्णुमूर्त्तेःस्थिरप्रतिष्ठायाग

कर्माङ्गभूतगजाननादिचतुःषष्टियोगिनीप्रीत्यर्थमेकैकाज्याहुत्याएकैकचर्वाहुत्याब्राह्मण
द्वारावह्नौहवनङ्करिष्ये ॥ ओंगङ्गजाननायैनमःस्वाहा ॥ इदङ्गङ्गजाननाय ॥ एवं
सर्वत्र ॥ १ ॥ ओंसिंसिंहमुख्यैनमःस्वाहा ॥ इदंसिं० ॥ २ ॥ ओंगृङ्गृ
द्धास्यायैनमःस्वाहा ॥ इदङ्गृद्धा० ॥ ३ ॥ ओंमांमाहेश्वर्य्यैनमःस्वाहा ॥
इदंमाहे० ॥ ४ ॥ ॐउंउष्ट्रग्रीवायैनमःस्वाहा ॥ इदमुष्ट्र० ॥ ५ ॥ ॐहं
हयग्रीवायैनमःस्वाहा ॥ इदंहयग्री० ॥ ६ ॥ ॐकाङ्कालरात्र्यैनमःस्वाहा ॥
इदङ्काल० ॥ ७ ॥ ॐनिन्निशाचार्य्यैनमःस्वाहा ॥ इदन्निशा० ॥ ८ ॥
ॐकाङ्काल्यैनमःस्वाहा ॥ इदङ्काल्यै० ॥ ९ ॥ ॐरौंरौद्राचित्कार्य्यैनमः स्वाहा ॥
इदंरौद्राचि० ॥ १० ॥ ओंफेंफेत्कार्य्यैनमःस्वाहा ॥ इदंफेत्का. ॥ ११ ॥

ॐभूँभूतगमर्य्यैनमःस्वाहा॥इदंभूतग० ॥ १२॥ ॐबम्बाराह्यैनमःस्वाहाइदम्बा ०॥१३ ॐसंसरभास्थायैनमःस्वाहा ॥ इदंसर० ॥ १४ ॥ ॐप्रेंप्रेताक्ष्यैनमःस्वाहा ॥ इदंप्रेता० ॥ १५ ॥ ॐमांमांसभोजनायैनमःस्वाहा ॥ इदंमांस० ॥ १६ ॥ ॐडांडाकिन्यैनमःस्वाहा ॥ इदंडाकिन्यै ॥ १७ ॥ ॐकंकल्याण्यैनमःस्वाहा ॥ इदङ्कल्याण्यै ॥ १८ ॥ ॐशुंशुक्लांग्यैनमःस्वाहा ॥ इदंशुक्लांग्यै ॥ १९ ॥ ॐकङ्कलहप्रियायैनमःस्वाहा ॥ इदङ्कल० ॥ २० ॥ ओंउंउलूकिकायैनमःस्वाहा ॥ इदमुलू० ॥ २१ ॥ ॐशिंशिवराचार्य्यैनमःस्वाहा ॥ इदंशिव० ॥ २२ ॥ ॐधून्धूम्राक्ष्यैनमःस्वाहा ॥ इदंधूम्रा० ॥ २३ ॥ ॐचिंचित्रनादिन्यैनमःस्वाहा ॥ इदञ्चित्र० ॥ २४ ॥ ॐऊंऊर्द्ध्वकेश्यैनमःस्वाहा ॥

इदमूर्द्ध्वं० ॥ २५ ॥ ॐभंभद्रकेश्यैनमःस्वाहा ॥ इदंभद्रकेश्यै ॥ २६ ॥
ॐशंशवहस्तायैनमःस्वाहा ॥ इदंशवह० ॥ २७ ॥ ॐमांमालिन्यैनमः
स्वाहा ॥ इदंमालि० ॥ २८ ॥ ॐकंकङ्कपालहस्तायैनमःस्वाहा ॥ इदङ्कपा०
॥ २९ ॥ ओंरंरक्ताक्ष्यैनमःस्वाहा ॥ इदंरक्ता० ॥ ३० ॥ ओंश्यें श्येनायैनमः
स्वाहा ॥ इदंश्ये० ॥ ३१ ॥ ओंरुंरुधिरपायिन्यैनमःस्वाहा ॥ इदंरुधिर०
॥ ३२ ॥ ओंखंखड्गिन्यैनमःस्वाहा ॥ इदंखड्गि० ॥ ३३ ॥ ओंदींदीर्घ
लम्वोष्ठ्यैनमःस्वाहा ॥ इदंदीर्घलंवोष्ठ्यै ॥ ३४ ॥ ओंपांपाशहस्तायैनमः
स्वाहा ॥ इदंपाश० ॥ ३५ ॥ ओंवंवलाकिन्यैनमःस्वाहा ॥ इदंवला० ॥ ३६ ॥
ओंकाङ्काकतुण्डायैनमःस्वाहा ॥ इदङ्का० ॥ ३७ ॥ ओंपुनःपांपाशहस्तायैनमः

स्वाहा ॥ इदंपाश० ॥ ३८ ॥ ओंधूँधूर्जटायैनमःस्वाहा ॥ इदन्धूर्ज० ३९ ॥ ओंविंविषभक्षिण्यैनमःस्वाहा ॥ इदंविष० ॥ ४० ॥ ओंसिंसिशुघ्न्यैमनःस्वाहा ॥ इदंशिशु० ॥ ४१ ॥ ओंपांपापहन्त्र्यैनमःस्वाहा ॥ इदंपाप० ॥ ४२ ॥ ओंमंमयूर्य्यैनमःस्वाहा ॥ इदंमयू० ॥ ४३ ॥ ओंविंविकटाननायैनमःस्वाहा ॥ इदंविकटा० ॥ ४४ ॥ ओंभंभयध्वंसिन्यैनमःस्वाहा ॥ इदंभय० ॥ ४५ ॥ ओंप्रेंप्रेतास्यायैनमःस्वाहा ॥ इदंप्रे० ॥ ४६ ॥ ओंप्रेंप्रेतवाहिन्यैनमःस्वाहा ॥ इदंप्रेत० ॥ ४७ ॥ ओंकोंकोटराक्ष्यैनमःस्वाहा ॥ इदंकोट० ॥ ४८ ॥ ओंसंसप्तजिह्वायैनमःस्वाहा ॥ इदंसप्त० ॥ ४९ ॥ ओंअंअष्टचक्रायैनमःस्वाहा ॥ इदमष्टच० ॥ ५० ॥

ओंसुंसुरप्रियायैनमःस्वाहा ॥ इदंसुर० ॥ ५१ ॥ ओंव्यांव्यालास्यायैनमः
स्वाहा ॥ इदंव्यालास्यायै ॥ ५२ ॥ ओंधूंधूम्रनिश्वासायैनमःस्वाहा ॥
इदंधूम्र ॥ ५३ ॥ ॐत्रिंत्रिपुरायैनमःस्वाहा ॥ इदंत्रिपुरायै ॥ ५४ ॥
ॐभुंभुवनेश्वर्य्यैनमःस्वाहा ॥ इदंभुव. ॥ ५५ ॥ ॐबृंबृहत्तुण्डायैनमः
स्वाहा ॥ इदंबृह. ॥ ५६ ॥ ॐदन्दण्डहस्तायैनमःस्वाहा ॥ इदंदण्ड.
॥ ५७ ॥ ॐओंप्रुंप्रचण्डायैनमःस्वाहाः ॥ इदंप्र. ॥ ५८ ॥ ॐचञ्चण्ड
विक्रमायैनमःस्वाहा ॥ इदञ्चं. ॥ ५९ ॥ ॐस्थूँस्थूलकेश्यैनमःस्वाहा ॥
इदंस्थू. ॥ ६० ॥ ॐबृंवृहत्कुक्ष्यैनमःस्वाहा ॥ इदंवृह. ॥ ६१ ॥ ॐयंयमदू
त्यैनमःस्वाहा ॥ इदंयम. ॥ ६२ ॥ ॐकङ्करालिन्यैनमःस्वाहा ॥

इदङ्करा. ॥ ६३ ॥ ओंकुङ्कुब्जिकायैनमःस्वाहा ॥ इदंकुब्जिकायै ॥ ६४ ॥ ओंतत्सतकृतेनानेनहवनेनगजाननादिचतुःषष्टियोगिनन्यःप्रीयन्ताम् ॥ यथावाणेत्यभिषेकः ॥ ततः ॥ ओंमूर्द्धानन्दिवरीतिमन्त्रेणपूर्णाहुतिन्दत्वा ॥ ततःपायसेनवलिदानम् ॥ सर्ब्बपीठोपरिब्यस्ताःद्वारेवैतोरणेपिच ॥ क्षेत्रंक्षेत्रज्ञसन्देह्याःसर्वदिग्भागसंस्थताः ॥ योगिनीयोगवीजेन्द्राःसर्वायत्रसमागताः ॥ नगरेचाथवाग्रामेअटव्यांसरितस्तटे ॥ वापीकूपेषुवृक्षेषुस्मसानेचचतुष्पथे ॥ नानारूपधरायाश्चवहुरूपधराश्चयाः ॥ ताःसर्वाश्चैवसन्तुष्टाःवलिङ्गृह्णन्तुसर्वदा ॥ शरणागतोस्म्यहंतासांताःसर्वाःमेसुखप्रदाः ॥ वलिनानेनसन्तुष्टाप्रयच्छन्तुममेप्सितम् ॥ सर्वकार्याणिकुर्वन्तुदोषांश्चघ्नन्तुसर्वदा ॥ इतियोगि

नीवलिदानप्रयोगः ॥ अथगुरुःस्नानमण्डपे ॥ ओंनमोनारायणायेत्यभिमन्त्रितेनपंचगव्येनपूर्वोक्तवेदिकात्रयेणसंप्रोक्ष्य ॥ तत्रदक्षिणवेदिकायामास्तृतवालुकायामक्षतैःस्वस्तिकंलिखित्वा ॥ तत्रविश्वकर्मणोवाध्यानं ॥ विश्वर्मातुकर्त्तव्यःश्मश्रुलोमांसलाधरः ॥ संदंशपाणिर्द्विभुजस्तेजोमूर्त्तिःप्रतापवान् ॥ इतिध्यात्वा ॥ सप्तधान्योपरिभद्रपीठन्निधाय ॥ श्रीपर्णोभद्रपीठलक्षम् ॥ हेमाद्र्यादिनिवन्धेउक्तम् ॥ अष्टाविंशाङ्गुलंपीठमुन्नतंस्यात्षडङ्गुलम् ॥ चतुर्विंशश्चविस्तारङ्कुर्यादौदुंवरादिनाइति ॥ ततोवेदिकायाःपश्चाद्वारिपूर्णान्सपल्लवान्षट्कलशान् ॥ मृतपूर्णम् ॥ १ ॥ पल्लववृक्षीयकषायपूर्णम् ॥ २ ॥ गोमूत्रपूर्णम् ॥ ३ ॥ गोमयपूर्णम् ॥४॥ भस्मोदकपूर्णम् ॥ ५ ॥ गन्धोदकपूर्णम् ॥६॥ अपरान्पञ्चकलशान्ग

प्रवम वेदिकला: ॥ १२ ॥ यथा । मृत्. । १ । पल्ल.।वृ. कषा. । २ गोमू. । ३ । गोम. ४ । भस्म।५।गन्धोदक । ६ ॥ अपरान्पंचकलशान्गन्धोद. ॥ ५ ॥ स्थपतिकल. ॥ १ ॥ इतिद्वादश. ॥ १२ ॥ * * *

मध्यवेदिपश्चिमेस्येवं । स्थपतिकलशातिरिक्तएकादश॥ ११ ॥ इतिमध्यवेदिकलशाः

अथोत्तरवेदिकलशाः ॥ अष्टौपूर्वादिक्रमेण ॥ ८ ॥ पंचविंशतिकलशाः मृदादिदश । १० शुद्धज. । १५ । २५ । अथान्येकात्रिंशत्कलशाः ॥ शुद्ध. । २ । पंचामृ. । १ । शु. । ज. । ५ । सुगं. ज. । १ । पंचपल्ल.क. । १ सर्वौप. १ ॥ दशपुष्पादिक्रमात् । १० । द. कदंबादिपल्लवैः । १० । एकत्र । ३१ । चतुर्भिः मङ्गलकलशैः । ४ । एकत्र । ६८ ॥ * * * * * *

प्रथमवेदिकालशाः १२	द्वितीयवेदिकलशाः ११

ई० पू० आ०

गर्भोदक ८। क्षारोदक. १। क्षी. २

उ० स्वादूदक ७

तृतीयवेदिकलशाः
६८

दधि ३ द०

सुरोदक ६ । इक्षुरस ५। घृत ४

वा. प. नै.

न्धोदकेनापूर्योदक्संस्थपङ्क्तिरूपेणासादयेत् ॥ ५ ॥ तत्रान्त्यस्थपतिकलशः ॥ १ ॥ इतिद्वादश ॥ १२ ॥ इतिप्रथमवेदिकलशाः ॥ अथभद्रपीठयुतमध्यवेदिपश्चिमेप्पेवम् ॥ स्थपतिकलशातिरिक्ताएकादश ॥ तत्रायंक्रमः ॥ मृत्पूर्णम् ॥ १ ॥ पल्लवबृक्षीयकषायपूर्णम् ॥ २ ॥ गोमूत्रपूर्णं ॥ ३ ॥ गोमयपूर्णं ॥ ४ ॥ भस्मोदकपूर्णं ॥ ५ ॥ गन्धोदकपूर्णम् ॥ ६ ॥ अपरान्पञ्चकलशान्गन्धोदकैःप्रपूर्य ॥ ५ ॥ उदक्संस्थपङ्क्तिरुपेणासादयेत् ॥ इतिमध्यवेदिकलशाः ॥ स्थपतिकलशातिरिक्ताएकादश ॥ ११ ॥ एकत्र ॥ २३ ॥ अथभद्रपीठयुतोत्तरवेद्यास्तुपरितोऽष्टौकलशान्समुद्रसञ्ज्ञकान्पूर्वादिक्रमेणासादयेत् ॥ क्षारोदकपूर्णं. ॥ १ ॥ क्षीरपू. ॥ २ ॥ दधिपू. ॥ ३ ॥ घृतपू. ॥ ४ ॥ इक्षुरसपू.

॥ ५ ॥ सुरादकपू. ॥ ६ ॥ स्वादूदकपू. ॥ ७ ॥ गर्भोदकपू. ॥ ८ ॥
इत्युत्तरवेदिपूर्वादिक्रमेणस्थापयेत् ॥ हिरण्यगर्भाद्यैरष्टाभिर्मन्त्रैर्विन्यसेत् ॥
मन्त्रोयथा ॥ ओंहिरण्यगब्भःसमवर्त्तताग्ग्रेभूतस्यजातःपतिरेकऽआसीत् ॥
सदाधारपृथिवीन्द्यामुतेमाङ्कस्मैदेवायहविषाव्विधेम ॥ १ ॥ अ. ॥ २५ ॥
वा. । सं. । मं. । १० ॥ ओंयःप्प्राणतोनिमिषतोमहित्वैकऽइद्द्राजाजगतोबभूव ॥
यऽईशेऽअस्यद्विपदश्चतुष्प्पदःकस्मैदेवायहविषाव्विधेम ॥ २ ॥ वा. । सं. । अ. ।
२५ ॥ मं. ॥ ११ ॥ ओंयस्येमेहिमवन्तोमहित्वायस्यसमुद्रꣳरसयासहाहुः ॥
यस्येमाःप्प्रदिशोयस्यबाहूकस्मैदेवायहविषाव्विधेम ॥ ३ ॥ । वा. । सं. । अ. ॥
२५ ॥ मं. । १२ । ओंयऽआत्मदाबलदायस्यव्विश्वऽउपासतेप्प्रशिषंयस्यदेवाः ॥

यस्यच्छायामृतय्यस्यमृत्युःकस्मैदेवायहविषाब्विधेम ॥ ४ ॥ वा. । सं. । अ. ॥
२५ ॥ मं. ॥ १३ ॥ ॐआनोभद्द्राःक्क्रतवोयन्तुव्विश्वतोदब्धासोऽअपरीता
सऽउद्भिदः ॥ देवानोयथासदमिद्वृधेऽअसन्नप्प्रायुवोरक्षितारोदिवेदिवे ॥ ५ ।
वा. । सं. । अ. । २५ । मं. ॥ १४ ॥ ॐदेवानाम्भद्द्रासुमतिऽर्ऋजूयतान्देवानाछं
रातिरभिनोनिवर्त्तताम् ॥ देवानाछंसख्यमुपसेदिमाव्वयन्देवानऽआयुःप्प्रतिर
न्तुजीवसे ॥ ६ ॥ वा. । सं. । अ. । २५ । मं. ॥ १५ ॥ तान्पूर्व्वयानिविदा
हूमहेव्वयम्भगम्मित्त्रमदितिन्दक्षमस्रिधम् ॥ अर्य्यमणम्वरुणछंसोममश्विना
सरस्वतीनःसुभगामयस्करत् ॥ ७ ॥ वा. । सं. । अ. । २५ । मं. ॥ १६ ॥
ॐतन्नोव्वातोमयोभुवातुभेषजन्तन्मातापृथिवीतत्पिताद्यौः ॥ तद्ग्रावाणःसोम

सुतोँमयोभुवस्तदाश्विनाशृणुतान्धिष्ण्यायुवम् ॥ ८ ॥ वा.। सं.। अ.। २५। मं. ॥ १७ ॥ इत्यष्टभिर्मन्त्रैर्विन्यसेत् ॥ ततोन्येचवेद्याःपश्चिमभागेपञ्चविंशतिसङ्ख्याकामृदादिपूर्णकलशाःयथा ॥ अष्टपलसंमितमृत्तिकाकलशः ॥ १ ॥ सप्तपलगोमयोदकपूर्णकलशः ❀ ❀ ❀ ॥२॥ ❀ ❀ ❀ द्वादशपलगोमूत्रकलशः ॥ मुष्ठिसंमितभस्मोदककलशः ॥ ४ ॥ त्रिपलसंमितपंचगव्यकलशः ॥ ५ ॥ षोडशपलसम्मितक्षीरकलशः ॥ ६ ॥ विंशतिपलसम्मितदधिकुम्भः ॥ ७॥ सप्तपलसम्मितघृतकलशः ॥ ८ ॥ त्रिपलमधुकुम्भः ॥ ९ ॥ त्रिपलशर्कराकलशः ॥ इतिदशकलशाः ॥ १० ॥ पंचदशशुद्धजलकलशाः ॥ १५ ॥ इतिपंचविंशतिकलशाः ॥ २५ ॥ अथान्यानैकत्रिंशत्कलशानासादयेत् ॥

तत्रद्वयोःशुद्धजलम् ॥ २ ॥ एकस्मिन्पंचामृतम् ॥ १ ॥ पंचसुशुद्धजलम् ॥ ५॥ एकस्मिन्सुगन्धिजलम् ॥ १ ॥ एकस्मिन्पंचपल्लवकषायः ॥ १ ॥ एकस्मिन्सर्वौषध्यः ॥ १ ॥ दशक्रमात् ॥ पुष्पैः ॥ १ ॥ फलैः ॥ १ ॥ सौवर्णजलेन ॥ १ ॥ गोशृङ्गोदकेन ॥ १ ॥ धान्यैः । १ ॥ सहस्रछिद्रैः ॥ १ ॥ सर्वौषधिभिः ॥ १ ॥ पञ्चपल्लवैः ॥ १ ॥ तीर्थोदकैः ॥ १ ॥ नवरत्नै ॥ १० ॥ इतिदशकलशाः ❀ ॥ ❀ अवशिष्टेषुदशसुकलशेषुक्रमेण ॥ कदंबः । १ ॥ शाल्मली ॥ १ ॥ जम्बूः ॥ १ ॥ अशोकः ॥ १ ॥ प्लक्षः ॥ १ ॥ चूतः ॥ १ ॥ वटः ॥ १ ॥ विल्वः ॥ १ ॥ नागकेसरः ॥ १ ॥ पलाशः ॥ १ ॥ एताञ्छुद्धजलेनापूर्य ❀ ॥ ❀ इत्येकत्रिंशत्कलशाः ॥ ततोऽन्यान्य

पिवस्तूनिस्थापयेत् ॥ सूक्ष्मवस्त्रम् ॥ सुगन्धितैलम् ॥ यवशालिगोधूममसुरिकृ।
विल्वचूर्णमुद्वर्त्तनार्थम् ॥ आमलकचूर्णम् ॥ सुगन्धियक्षकर्दमम् ॥ जटामांसींचासा
दयेत् ॥ ततश्चतुरोमङ्गलकलशानेकंवास्थापयेत् ॥ ४ ॥ कलशसंख्याएकत्र
॥ ९१ ॥ तदन्तेतीर्थोदककलशे ॥ सर्वेसमुद्राःसरितस्तीर्थानिजलदानदाः ॥
आयान्तुयजमानस्यदुरितक्षयकारकाः ॥ इत्यादितीर्थान्यावाहयेत् ॥ ततःकर्म
कुटचि ॥ स्नस्थानतःपूर्वस्यामुत्तरस्यांवादिशिदेवप्रतिमानिर्म्माणस्थानम् ॥
सा चोत्तरदक्षिणयोरष्टाविंशतिहस्तपरिमिता ॥ पूर्वपश्चिमयोरङ्गुलिचतुष्टयो
नाष्टाविंशतिकरप्रमाणाचकारयितव्या ॥ तस्यांपूर्वदिग्द्वारयुतायांचतुःशालायां
शोभमानाजिरायांयजमानोबृहन्नारदीयोक्तरीत्यास्थपातीभिःप्रतिमानिर्माणंगणपति

पूजनपुरःसरङ्कारयेत् ॥ ततःपञ्चसूत्रीनिर्णयः ॥ बृहन्नारदीयेगौतमीतन्त्रेपि ॥ लिङ्गमस्तकविस्तारोलिङ्गोच्छ्रायसमोमतः ॥ परिधिस्तत्त्रिगुणितस्तद्वत्पीठं व्यवस्थितम् ॥ प्रणालिकातथैवस्यात्पंचसूत्रविनिर्णयः ॥ अत्रेदन्तत्वम् ॥ लिङ्गमस्तकविस्तारंलिङ्गोच्चतासमङ्कृत्वा ॥ त्रिगुणसूत्रवेष्टनार्हंलिङ्गस्थौल्यंकृत्वा ॥ तत्समंवृत्तंचतुरस्रंवा ॥ पीठविस्तारमधश्चोदूर्ध्वञ्चकुर्यात् ॥ पीठोच्चतातुलिङ्गोच्चतासमा ॥ द्विगुणपीठमध्येलिङ्गाद्द्विगुणस्थौल्यम् ॥ पीठोच्चतातृतीयांशेनकण्ठङ्कृत्वा ॥ तस्योदूर्ध्वमधश्चसमञ्चवप्रद्वयन्त्रयञ्चकृत्वा ॥ लिङ्गविस्तारषष्ठांशेनपीठोपरिवाह्यमेखलांकृत्वा ॥ तदन्तःसंलग्नंतत्समंखातंकृत्वा ॥ पीठाद्वहिर्लिङ्गसमदीर्घांवामूलेदैर्घ्यंवासमविस्तारामग्रेतदर्द्धविस्तारांतृतीयांशेनमध्येखातां

पीठवत्समेखलांप्रणालिकाङ्कुर्यादिति ॥ अत्रमूलंसिद्धान्तशेखरेशैवागमेज्ञे
यम् ॥ ततःसयजमानाऽचार्योमूर्त्तिस्थपतिभ्यांसहसुमङ्गलघोषणपूर्ववत्कर्मकुटी
ङ्गत्वाभूमावुपलिप्यविधिवदग्निंस्थापयित्वा ॥ देशकालौसङ्कीर्त्यप्रतिमानिर्मा
णेप्राणिवधादिदोषनिरासार्थंघृतेनतिलैर्वाहोमङ्करिष्यइतिसङ्कल्प्य ॥ तत्रा
ग्निंप्रतिष्ठाप्याज्यभागान्तङ्कृत्वा ॥ ततःविष्णुंमूलमन्त्रेणशतद्वयसङ्ख्याका
भिःआज्याहुतिभिःयवातिलतण्डुलाहुतिभिः शेषेणेत्यादिआज्यभागान्तङ्कृत्वा ॥
देवमन्त्रेणाहुतिशतद्वयंहुत्वा ॥ पूर्णाहुतिञ्चकृत्वा ॥ प्रतिमाङ्कुशैःसंमार्ज्य ॥
मधुघृताभ्यंगेनदेवस्यव्रणभङ्गङ्कृत्वासितपुष्पैः संपूज्यपञ्चगव्येनपृथक्पृथक्जला
न्तरितेनस्नापयित्वा ॥ पुनःसंपूज्य ॥ शङ्खनादेनरथादिनादेवंमहामण्डपप्रादक्षि

ण्येनस्नानमण्डपमानयेत् ॥ तत्राचार्योदक्षिणवेद्यां ॥ ओंभ॒द्रङ्कर्णेभिःशृणुयामदेवाभ॒द्रम्पश्येमाक्षभिर्यजत्राः ॥ स्थि॒रैरङ्गैस्तुष्टु॒वाꣳसस्त॒नूभि॒र्व्यसेमहिदेवहि॑तं॒यदायुः ॥ १ ॥ वा. । सं. । अ. ॥ २५ ॥ मं. ॥ २१ ॥ इतिमन्त्रेण प्राङ्मुखन्देवंभद्रासनेनिवेश्य ॥ पूर्वकल्पितषट्कलशेष्वन्त्यंहिरण्यादिसहितंदेवसमीपेनिधायतीर्थान्यावाहयेत् ॥ काशीकुशस्थलीमायावन्त्ययोध्यामधोःपुरी ॥ शालग्रामंसगोकर्णन्नर्मदाचसरस्वती ॥ तीर्थान्येतानिकुम्भेस्मिन्विशन्तुब्रह्मशासनात् ॥ ऊषारूढासरोजाक्षीपद्महस्ताशशिप्रभा ॥ आगच्छतुसरिच्छ्रेष्ठागङ्गापापप्रणाशिनी ॥ नीलोत्पलदलश्यामापद्महस्तांवुजेक्षणा ॥ आयातुयमुनादेवीकूर्मयानस्थितासदा ॥ प्राचीसरस्वतीपुण्यापयोष्णीगौतमीतथा ॥

चर्म्मिलाचन्द्रभागाचसरयूर्गण्डकीतथा । जम्बुकाचशतद्रुश्चकालिकासुप्रभातथा ॥
वितस्ताचविपाशाचनर्म्मदाचपुनःपुनः ॥ गोदावरीमहावर्त्ताशर्करावर्त्तमार्ज्जु
नी ॥ कावेरीकौशिकीचैवतृतीयाचमहानदी ॥ विटङ्काप्रतिकूलाचसोमनन्दा
चविश्रुता ॥ करतोयावेत्रवतीरेणुकावेणुकाचया ॥ आत्रेयगङ्गावैतरणीकाश्मी
रीह्रादिनीचया ॥ पावनीचशवत्रासाकल्मषाशांशिनीतथा ॥ वसिष्ठाचअपा
पाचसिन्धुवत्यरुणीतथा ॥ ताम्राचैवत्रिसन्ध्याचतथामन्दाकिनीपरा ॥ तैल
काशीपराचैवदुन्दुभनिकुलीतथा ॥ तथैवनीलगन्धाचपूर्णचन्द्राशाशिप्रभा ॥
अमरेशंप्रभासञ्चनैमिषंपुष्करन्तथा ॥ अषाढिडिंडिभारतंभारभूतञ्चलाकुलम् ॥
हारिश्चन्द्रंपरङ्गुह्यंगुह्यंमध्यमकेश्वरम् ॥ श्रीपर्वतंसमाख्यातंजलेश्वरमत;

परम् ॥ आम्रातकेश्वरञ्चैवमहाकालन्तथैवच ॥ केदारमुत्तमङ्गुह्यंमहाभैरवमेवच ॥ गयाञ्चैवकुरुक्षेत्रंगुह्यङ्कनखलन्तथा ॥ विमलञ्चन्द्रभासंचमाहेन्द्रंभीममष्टकम् ॥ वस्त्रापदंरुद्रकोटिमविमुक्तंमहालयम् ॥ गोकर्णम्भद्रकर्णञ्चहेमांशंस्थानमष्टमम् ॥ छागलाह्वंद्विरण्डञ्चकर्कोटंमण्डलेस्वरम् ॥ कालञ्जरवनञ्चैवदेवदारुवनन्तथा ॥ शङ्कुकर्णन्तथैवेहस्थलेश्वरमतःपरम् ॥ एतानद्यश्चतीर्थानिगुह्यक्षेत्राणिसर्वशः ॥ तानिसर्वाणिकुम्भेस्मिन्नाविशन्तुब्रह्मशासनात् ॥ इतितीर्थान्यावाह्य ॥ कलशस्यमुखेविष्णुरित्यभिमन्त्रणङ्कृत्वा ॥ देवदानवसम्वादे इतिप्रार्थ्य ॥ गीतवादित्रनिनादैर्देवंस्नपयेत् ॥ ततोयजमानःशिल्पिवर्गंतत्परिचारकांश्चवस्त्रालङ्कारैःसन्तोष्यक्षमध्व

मितितान्प्रतिब्रूयात् ॥ ततोगुरुःवहिर्निर्गत्यसिद्धार्थघृतपायसैः ॥ ॐत्र्यम्बकं य्यजामहेसुगन्धिंपुष्टिवर्द्धनम् ॥ उर्व्वारुकमिवबन्धनान्मृत्योर्म्मुक्षीयमामृतात् ॥ सं. अ. ३ मं. ६० इत्यर्द्धचैन ॥ प्रागादिदिक्षुवलिन्दत्वाचम्यदेवसमीपमागत्य ॥ त्रातारमिन्द्रमित्यादिदशलोकपालमन्त्रैर्मण्डपान्तर्गतदिक्षुविदिक्षुरक्षाङ्कृत्वा ॥ यथा ॥ ॐत्रातारमिन्द्रमितिमन्त्रेणइतिपूर्वेइन्द्रायनमइत्यक्षतान्क्षिपेत् ॥ एवंसर्वत्र ॥ ॐअग्निन्दूतमित्याग्नेये ॥ २ ॥ यमायत्वेतिदक्षिणे ॥ ३ ॥ ॐअसुन्वेतिनिर्ऋतौ ॥ ४ ॥ ॐतत्वायामीतिपश्चिमे ॥ ५ ॥ ॐआनोनियुद्भिरितिवायव्ये ॥ ६ ॥ ॐसोमोधेनुमित्युत्तरे ॥ ७ ॥ ॐतमीशानमितीशाने ॥ ८ ॥ ॐऊर्द्ध्वाअस्येत्यूर्द्ध्वे ॥ ९ ॥ ॐनमोस्तुसर्प्पे

भ्यइत्यघः ॥ १० ॥ इतिरक्षांकृत्वा ॥ देवस्याग्रेचतुरोब्राह्मणानुपवेश्यस्व
स्तिवाचयित्वातेभ्यश्चदक्षिणान्दत्वादेवंस्नपयेत् ॥ ॐअ॒ग्निर्म्मूर्द्धादि॒वः क॒कुत्प
तिः पृ॒थि॒व्याऽअ॒यम् ॥ अ॒पाꣳरेताꣳसिजिन्वति ॥ १ ॥ वा.। सं.। अ.
३। मं.। १२ ॥ यज्ञायज्ञावइतिकषायैः ॥ ॐय॒ज्ञाय॑ज्ञावोऽअ॒ग्नयेगि॒रागिराच॒दक्ष
से ॥ प्रप्रंव॒यम॒मृतञ्जा॒तवेदसम्प्र॒यम्मि॒त्रन्नशꣳसिषम् ॥ २ ॥ वा.।
सं.। अ. ॥ २७ ॥ मं. ॥ ४२। इतिकषायैः ॥ २ ॥ ॐगायत्र्यागोमूत्रेण ॥ ३ ॥
गन्धद्वारामितिगोमयेन ॥ ॐगन्धद्वारान्दुराधर्षान्नित्यपुष्टाङ्करीषिणीम् ॥
ईश्वरींसर्वभूतानान्तामिहोपह्वयेश्रियम् ॥ इतिगोमयेन ॥ ४ ॥ मानस्तो
केइतिभस्मना ॥ ॐमानस्तो॒केतन॑येमान॒ऽआयुषि॒मानो॒गोषु॒मानो॒ऽअश्वेषुरी

रिषः ॥ मानोब्बीरान्रुद्द्रभामिनोब्बधीर्हविष्मन्तःसदमित्त्वाहवामहे ॥ वा.।
सं.। अ ॥ १६ । मं. १६ ॥ इतिभस्मना । ५ ॥ ताꣳसवितुरितिगन्धोदके
न ॥ ॐताꣳसवितुर्ब्बरेण्यस्यचित्रामाहम्बृणेसुमतिम्विश्वजन्न्याम् ॥ याम
स्यकण्वोऽअदुहत्प्रपीनाꣳसहस्रधाराम्पयसामहीङ्गाम् ॥ वा.। सं.। अ.। १७ ॥
मं. ॥ ७४ ॥ इतिगन्धोदकेन ॥ ६ ॥ पञ्चकलशैःपञ्चदेवत्यैःस्नापयेत् ॥ ॐन
मःशम्भवायचमयोभवायचनमःशङ्करायचमयस्करायचनमः ॥ शिवायच
शिवतरायच ॥ वा.। सं.। अ.। १६ ॥ मं. ॥ ४१ ॥ इतिप्रथमेन । १ ॥
ॐहꣳसःशुचिषद्वसुरन्तरिक्षसद्धोताब्बेदिषदतिथिर्द्दुरोणसत् ॥ नृषद्वरसदृतस
द्व्योमसदब्जागोजाऽऋतजाऽअद्रिजाऽऋतम्बृहत् ॥ वा.। सं.। अ. ॥ १० ॥

मं. ॥ २४ ॥ इतिद्वितीयेन ॥ २ ॥ ॐयातेरुद्रशि॒वात॒नूःशि॒वाब्बि॒श्वाहाभेष॒जी ॥ शि॒वारु॒तस्यभेष॒जीतयानोमृडजी॒वसे ॥ वा. । सं. । अ. । १६ । मं. ॥ ४१ ॥ इतितृतीयेन ॥ ३ ॥ ॐब्बिष्णोर॒राटमसि॒ब्बिष्णो॒ःश्नप्त्रेस्थो॒ब्बिष्णो॒ःस्यूरसि॒ब्बिष्णोर्द्ध्रुवोसि ॥ ब्वैष्ण॒वमसि॒ब्बिष्णवेत्वा ॥ वा. । सं. । अ. ॥ ५ ॥ मं. ॥ २१ ॥ इतिचतुर्थेन । ४ । ॐब्रह्मजज्ञानम्प्रथ॒मम्पुरस्ता॒द्विसीम॒तःसु॒रुचोव्वेनऽआवः ॥ सबु॒ध्न्याऽउप॒माऽअस्यब्बि॒ष्ठाःस॒तश्च॒योनि॒मसंतश्च॒ब्बिवः । वा. । सं. । अ. । १३ । मं. । ३ । इतिपंचमेन ॥ ५ ॥ एवंसंस्नाप्य ॥ शतञ्जीवशरदोवर्द्धमानःशतहेमन्ताञ्छतमुवसन्तान् ॥ शतमिन्द्राग्नीसवितावृहस्पतिःशतायुषाहविषेमंपुनर्दुः ॥ ऋक् ॥ इतिमन्त्रेणदूर्वाक्षत

पुष्पैःसंपूज्यवस्त्रेणाच्छाद्य ॥ इतिप्रथमवेदिकलशस्नपनाविधिः ॥ १२ ॥
अथद्वितीयवेद्यांभद्रङ्कर्णेभिरितिमन्त्रेणभद्रासनन्निधाय ॥ स्तीर्णंबर्हिरितिमन्त्रेणप्राग
ग्रान्कुशानास्तीर्य ॥ तत्रप्राङ्मुखन्देवंप्रणवेनस्थापयेत् ॥ मंत्रद्वयंप्रदर्श्यते ॥ ॐभ॒
द्रङ्कर्णेभिःशृणुयामदेवाभ॒द्रम्पश्येमा॒क्षभि॒र्यजत्राः ॥ स्थि॒रैरङ्गैस्तुष्टु॒वाꣳस
स्त॒नूभि॒र्व्यशेमहिदे॒वहि॑त॒य्यदायुः ॥ वा. । सं. । अ. ॥ २५ ॥ मं. ॥ २१ ॥
इतिभद्रासनन्निधाय ॥ ॐस्ती॒र्णम्ब॒र्हिःसु॒ष्टरीमाजुषा॒णोरुपृ॒थुप्प्रथमानम्पृथि॒
व्याम् ॥ दे॒वेभिर्युक्तमदितिःस॒जोषाःस्यो॒नङ्कृण्वा॒नासुवि॒तेदधातु ॥ वा. ।
सं. । अ. ॥ २९ ॥ मं. ॥ ४ ॥ इतिप्रागग्रान्कुशानास्तीर्य ॥ कुंकुमाक्तेनसूत्रेण
लिङ्गमावेष्ट्य ॥ प्रतिमायाःमुखेलिङ्गस्यचनेत्राणिसुवर्णशलाकया ॥ ओंचि॒त्र

न्दे॒वाना॒मुद॑गा॒दनी॑क॒ञ्चक्षु॒र्म्मि॒त्रस्य॒ब्बरु॑णस्या॒ग्नेः; सं. अ. ७ मं. ४२ ॥ इत्यर्धर्चेन कल्पयेत् ॥ ऊर्द्ध्वाधःपृथग्भूतंपक्ष्मपुटद्वयंच ॥ ॐआकृष्णेन॒रज॑सा॒ब्बर्त्त॑मानोनिवे॒शय॑न्न॒मृतं॒म्मर्त्यं॑ञ्च ॥ हि॒र॒ण्ययेन॑सवि॒तारथे॒नादे॒वोया॑ति॒भुव॑नानि॒पश्य॑न् ॥ वा. । सं. । अ. ॥ ३३ ॥ मं. ॥ ४३ ॥ इतिपक्ष्मपुटद्वयङ्कल्पयित्वा ॥ नेत्रमध्ये त्रिभागेनवृत्तांकनीनिकामपिकल्पयेत् ॥ अत्रदेवस्यनयनरचनसमयेमुहूर्त्तमात्रंदेवस्यपुरतोनकोपितिष्ठेत् ॥ सुवर्णंपायसंभक्ष्यभोज्यमादर्शञ्चशीघ्रन्दर्शयेत् ॥ ततःशिल्पीशस्त्रेणरेखामुल्लिखेत् ॥ ततोगुरुःमधुसर्पिर्भ्यामभ्यज्य ॥ इमम्मेगङ्गेइतिमंत्रेणाभ्युक्ष्य ॥ मंत्रोयथा ॥ ॐइमम्मेगङ्गेयमुनेसरस्वतिशुतुद्रुस्तोमंसचतापरुष्ण्या ॥ असिक्क्यामरुद्वृधेवितस्तयार्ज्जीकीयेशृणुह्यासुषोमया ॥ इतिम

न्त्रेणाभ्युक्ष्य ॥ पुनर्मृदाद्येकादशकलशैःस्नापयेत् ॥ प्रतिमावहुत्वेमृदादिकलशोदकंकिञ्चित्किञ्चित्पात्रान्तरेस्थापयित्वातासान्नेत्रेषूल्लिख्यतेनस्नापयेत् ॥ ॐअग्निर्मूर्द्धेतिमंत्रेणमृत्कलशोदकेन ॥ १ ॥ ॐयज्ञायज्ञावइतिमंत्रेणपल्लवबृक्षीयकषायकलशोदकेन ॥ २ ॥ गायत्र्यागोमूत्रकलशोदकेन ॥ ३ ॥ गन्धद्वारामितिमन्त्रेणगोमयकलशोदकेन ॥ ४ ॥ मानस्तोकेइतिमन्त्रेणभस्मकलशोदकेन ॥ ५ ॥ ताछंसवितुर्वरेरायमितिमन्त्रेणगन्धकलशोदकेन ॥ ६ ॥ ततःपञ्चकलशैःपञ्चदैवत्यैःस्नापयेत् ॥ नमःशम्भवेतिप्रथमेन ॥ १ ॥ हछंसःशुचिषदितिद्वितीयेन ॥ २ ॥ यातेरुद्रेतितृतीयेन ॥ ३ ॥ विष्णोरराटेतिचतुर्थेन ॥ ४ ॥ ब्रह्मजज्ञानमितिपंचमेन ॥ ५ ॥ इतिमृदाद्येकादशकलशाः

॥ ११ ॥ एकत्र ॥ २३ ॥ ततोयजमानःसुवर्णशलाकांस्नानवस्त्रादिकंचप्रतिमाकर्त्रेंशिल्पिनेदद्यात् ॥ अथयजमानःसहिरण्याङ्गामाचार्यायदद्यात् ॥ इतिद्वितीयवेदिस्नपनाविधिः ॥ अथगुरुरुत्तरस्यांवेद्यांभद्रासनेभद्रमितिदेवंस्थापयित्वा॥पञ्चदशशुद्धकलशान्तर्गतैककलशेनसमुद्रज्येष्ठाइतिमन्त्रेणसंस्नाप्य ॥ मंत्रोयथा ॥ ॐसमुद्रज्येष्ठाःसलिलस्यमध्यात्पुनानायन्त्यनिविशमानाः ॥ इन्द्रोयावज्रीवृषभोररादताआपोदेवीरिहमामवन्तु ॥ ऋक्इतिसंस्नाप्य ॥ संपूज्य ॥ ॐशतंजीवशरदोवर्द्धमानामितिमन्त्रेणदूर्वाक्षतान्मूर्ध्निदत्वा ॥ प्रार्थयेत् ॥ नमस्तेर्चैसुरेशानोप्रकृतेविश्वकर्मणः ॥ प्रभाविताशेषजगद्धात्रितुभ्यन्नमोनमः ॥ त्वयिसंपूजयामीशान्नारायणमनामयम् ॥ रहिताशेषदोषैस्त्वमृद्धियुक्तासदाभवेति ॥ ततो

देवस्यदक्षिणहस्तेप्रतिमायांवितस्तिमात्रमूर्णासूत्रङ्कनिक्रददितिमन्त्रेणवध्नीयात् ॥ ॐशन्नोव्वातःपवताᳫंशन्नस्तपतुसूर्य्यः ॥ शन्नःकनिक्क्रदद्देवःपर्ज्जन्न्योऽअभिवर्षतु ॥ वा. । सं. । अ. ॥ ३६ ॥ मं. ॥ १० ॥ सर्वसत्वमयंशान्तंपरब्रह्मसनातनम् ॥ त्वामेवालङ्करिष्यामित्वंवन्द्योभवतेनमः ॥ इतिमन्त्रेणवध्नीयात् ॥ ततःपूर्वोक्तपंचदशशुद्धजलकलशान्तर्गतचतुर्भिःकलशैःस्नापयेत् ॥ इदमापःप्रवहतेत्यादिभिः ॥ ॐइदमापःप्प्रवहतावद्यञ्चमलञ्चयत् ॥ यच्चाभिदुद्रोहानृतंय्यच्चशेपेऽअभीरुणम् ॥ आपोमातस्मादेनसःपवमानश्चमुञ्चतु ॥ वा. । सं. । अ. ॥ ६ ॥ मं. ॥ १७ ॥ आपोदेवीरितिद्वितीयेन ॥ २ ॥ ॐआपोदेवीःप्प्रतिगृब्भ्णीतभस्म्मैतत्स्योनेकृणुद्ध्वᳫंसुरभाऽउलोके ॥ तस्म्मैनमन्ताञ्जनयःसुपत्नी

म्मर्तिेवंपुत्रम्भिवंभृताप्प्स्वेनत् ॥ वा.।सं.।अ.॥ १२ ॥ मं. ॥ ३५ ॥ इमम्मेगङ्गेइतितृतीयेन ॥ ३ ॥ ॐइमम्मेगङ्गेयमुनेसरस्वतिशुतुद्रिस्तोमंसचतपरुष्ण्या ॥ असिक्न्यामरुद्वृधेवितस्तयार्ज्जीकीयेशृणुह्यासुषोमया॥ऋ०॥इतितृतीयेन ॥ ३ ॥ तत्त्वायामीतिचतुर्थेन ॥ ४ ॥ ॐतत्त्वायामिब्ब्रह्मणाब्बन्दमानस्तदाशास्तेयजमानोहविर्भि÷ ॥ अहेडमानोब्बरुणेहबोद्ध्युरुशंसमाऽनऽआयु;प्प्रमोषी; ॥ वा.।सं.।अ.॥ २१ ॥ ॥ २ ॥ इतिचतुर्थेन ॥ ४ ॥ अग्निम्मूर्द्धेतिअष्टपलमृत्तिकाकलशेन ॥ १ ॥ मृदादिदशकलशांतर्गताद्यकलशेन ॥ २ ॥ पंचदशशुद्धोदककलशांतर्गतेनषष्ठेनअत्रसर्वत्रशुद्धजलस्नानंसप्तादिक्रमेणज्ञेयम् । ❀ ❀

ॐअग्निर्म्मूर्द्धादिवःककुत्पतिः÷पृथिव्व्याऽअयम् ॥ ❀ ❀ ❀ ❀ ॥

अ॒पाꣳरेताꣳसिजिन्वति ॥ वा. । सं. । अ. । ३ । मं. ॥ १२ ॥ समुद्रज्येष्ठाइति शुद्धोदकेन ॥ २ ॥ ॐसमुद्रज्येष्ठाःसलिलस्यमद्ध्यात्पुनानायन्त्यनिविशमानाः ॥ इन्द्रोयावज्रीवृषभोरराद॒ताआपोदेवीरिहमामवन्तु ॥ ऋ० ॥ ॥इत्युदकेन । २ ॥ गन्धद्वारामितिसप्तपलमितेनगोमयकलशेन ॥ ३ ॥ ॐगन्धद्वारान्दुराधर्षान्नित्यपुष्टाङ्करीषिणीम् ॥ ईश्वरींसर्वभूतानान्तामिहोपह्वयेश्रियम् ॥ इतिगोमयकलशेन ॥ ३ ॥ वरुणस्योत्तम्भनमसीतिशुद्धोदकेन ॥ ॐव्वरुणस्यो॒त्तम्भंनमसि॒व्वरुणस्यस्कम्भ॒सर्ज्जनीस्थो॒व्वरुणस्यऽऋत॒सदंन्न्यासि॒व्वरुणस्यऽऋत॒सदंनमासि॒व्वरुणस्यऽऋत॒सदंन॒मासींद ॥ अ. ॥ ४ ॥ मं. । ३६ । इतिजलेन ॥ ४ ॥ तत्सवितुरितिद्वादशपलमितेनगोमूत्रकलशेन ॥ ॐतत्सवि॒तुर्व्वरे

ण्यम्भर्गोदेवस्यधीमहि ॥ धियोयोनं÷प्रचोदयात् ॥वा.।सं.।अ.।३। मं. ॥ ३५ ॥
इतिगोसूत्रकलशोदकेन ॥५॥ आपोहिष्ठेति शुद्धोदकेन॥ ॐआपोहिष्ठामयोभुवस्तानऽ
ऊर्ज्जेदधातन ॥ महेरणायचक्षसे । वा. । सं. । अ. । ३६ ॥ मं. ॥ ॥ १४ ॥
इतिशुद्धोदकेन ॥ ६ ॥ प्रसद्यभस्मनेतिमुष्टिसंमितभस्मकलशोदकेन ॥ ॐप्र
सद्यभस्मनायोनिमपश्चपृथिवीमग्ने ॥ सछंसृज्यमातृभिष्ट्वञ्ज्योतिष्मान्पुनरा
सदः। वा. । सं. । अ. । १२ । मं. । ३८ ॥ इतिभस्मकलशोदकेन ॥ ७ ॥
योवं÷ःशिवतमइति शुद्धोदकेन ॥ ॐयोवं÷शिवतमोरसस्तस्यभाजयतेहनं÷ ॥
उशतीरिवमातरं÷ ॥ वा. । सं. । अ. । ३६ । मं. । १५ ॥ इतिशुद्धोद० ॥ ८ ॥
पयःपृथिव्यामितित्रिपलसंमितपञ्चगव्यकलशेन ॥ ॐपय÷पृथिव्याम्पयऽ

ओषधीषुपयोदिव्व्युन्तरिक्षेपयोधाः॥पयस्वतीःप्प्रदिशः÷सन्तुमह्यम् ॥ वा. । सं. । अ. ॥ १८ ॥ मं. ॥ ३६ ॥ इतिपञ्चगव्यकलशेन ॥ ९ ॥ देवीरापइतिशुद्धोदकेन ॥ ॐदेवीरापोऽअपान्नपाद्योवऽऊर्म्मिर्हविष्य४ऽइन्द्रियावान्मदिन्तमः ॥ तन्देवेब्भ्योदेवत्रादत्तशुक्रपेब्भ्योयेषांम्भागस्त्थस्वाहा ॥ वा. । सं. । अ. ॥ ६ ॥ मं. ॥ २७ ॥ इतिशुद्धोदकेन ॥ १० ॥ आप्प्यायस्वेतिषोडशपलसंमितक्षीरकुम्भोदकेन ॥ ॐआप्प्यायस्वसमेतुतेव्विश्वतः÷सोमव्वृष्ण्यम् ॥ भवाव्वाजस्यसङ्गथे ॥ वा. । सं. । अ. । १२ । मं. । २ । इतिक्षीरकुम्भेन ॥ ११ ॥ तस्माअरङ्गमितिशुद्धोदकेन ॥ ॐतस्म्माऽअरङ्गमामवोयस्यक्षयायजिन्न्वथ ॥ आपोजनयथाचनः । वा. । सं. । अ. ॥ ३६ ॥ मं. । १६ ॥ इतिशुद्धो० ॥ १२ ॥

दधिक्क्राव्णइतिविंशतिपलसंमितेनदधिकुम्भोदकेन ॥ ॐदधिक्क्राव्णोऽअकारि
षञ्जिष्णोरश्श्वस्यव्वाजिनः ॥ सुरभिनोमुखाकरत्प्रणऽआयूꣳषितारिषत् ॥
वा.।सं.।अ.॥२३॥मं.॥३२॥इतिदधिकुम्भेन ॥ १३ ॥ युञ्जानमित्यु
दकेन ॥ ॐयुञ्जानꣳप्प्रथमम्मनस्तत्त्वायसविताधियः ॥ अग्नेर्ज्ज्योतिर्न्नि
चाय्यपृथिव्व्याऽअध्याभरत् ॥ वा.।सं.।अ.॥ ११ ॥ मं. ॥ १ ॥ इत्युदके
न ॥ १४ ॥ घृतवतीतिसप्तपलसंमितघृतकुम्भेन ॥ ॐघृतवतीभुवनानामभि
श्रियोर्व्वीपृथ्वीमधुदुघेसुपेशसा ॥ द्यावापृथिवीव्वरुणस्यधर्म्मणाव्विष्कभि
तेऽअजरेभूरिरेतसा ।वा.।सं.।अ.॥३४॥मं.॥४५॥इतिघृतकुंभेन ॥ १५ ॥
देवस्यत्वेतिजलेन ॥ ॐदेवस्यत्वासवितुःप्प्रसवेऽश्विनोर्ब्बाहुब्भ्याम्पूष्णोहस्ता

ब्भ्याम् ॥ सरस्स्वत्यैव्वाचोयन्तुर्य्यन्त्रेणाग्ग्नेःसाम्म्राज्ज्येनाभिषिञ्चामि ॥ वा. । सं. । अ. ॥ १८ ॥ मं. ३७ ॥ इतिजलेन ॥ १६ ॥ मधुव्वातेतित्रिपलसंमित मधुकुम्भेन ॥ ॐमधुव्वाताऽऋतायतेमधुक्षरन्तिसिन्धवः ॥ माद्ध्वीर्न्नः सन्त्वोषधीः ॥ वा. । सं. । अ. ॥ १३ ॥ मं. ॥ २७ ॥ इतिमधुकुम्भेन ॥ १७ ॥ आपोअस्मानितिशुद्धजलेन ॥ ॐआपोऽअस्म्मान्मातरः÷शुन्धयन्तुघृतेननो घृतप्प्वः÷पुनन्तु ॥ विश्श्वꣳहिरिप्प्रम्प्रवहन्तिदेवीरुदिदाब्भ्यःशुचिरापूतऽएमि ॥ दीक्षातपसोस्तनूरसितान्त्वाशिवाꣳशग्माम्परिदधेभद्द्रम्वर्ण्णम्पुष्यन् वा. सं. अ. ४ मं. २ इतिशुद्धजलेन ॥ १८ ॥ आयङ्गौरितित्रिपलसंमितशर्करा कुंभेन ॐआयङ्गौःपृश्निरक्रमीदसदन्मातरम्पुरः ॥ पितरञ्चप्प्रयन्त्स्वः÷ ॥

वा.। सं.। अ.॥ ३ ॥ मं.॥ इतिशर्कराकुम्भेन ॥ १९ ॥ आपोहयद्बृहतीरितिशुद्धोदकेन ॥ ओंआपोहयद्बृहतीर्व्विश्वमायन्ग्गर्ब्भंदधाना ❀ ❀ ❀ ❀ जनयन्तीरग्निम् ॥ ततोदेवानाꣳसमवर्त्ततासुरेकः कस्मैदेवायहविषाविधेम । वा.सं.अ.२७मं.॥२५॥ इतिशुद्धजलेनप्रक्षाल्य ॥ एवंरीत्यापञ्चविंशतिकलशाःभवंति ॥ २५ ॥ ततःयज्ञायज्ञावइतिसूक्ष्मवस्त्रेणसंमार्ज्जयेत् ॥ ओंयज्ञायज्ञावोऽअग्नयेगिरागिराचदक्षसे ॥ प्रप्प्रवयममृतञ्जातवेदसम्प्रियम्मित्रन्नशꣳसिषम् ॥ वा. सं. अ. २७ मंत्र ॥ ४२ ॥ इतिवस्त्रेणसंमा०सुगन्धतैलेनाभ्यज्य ॥ द्रुपदादिवेतिमन्त्रेणयवशालिगोधूममसूरविल्वचूर्णेनदेवमुद्वर्त्तयेत् ॥ ॐद्रुपदादिवमुमुचानःस्विन्नःस्नातोमलादिव । पूतम्पवित्रेणेवाज्ज्यमापःशुन्धन्तुमैनसः ॥ वा. सं

अ. २० मं. २० ॥ इतिउद्वर्त्य ॥ यातेरुद्रशिवातनूरघोरापापकाशिनी ॥ तयानस्तन्वाशन्तमयागिरिशन्ताभिचाकशीहि ॥ वा. सं. अ. १६ मं. २ ॥ इत्यामलकचूर्णेन ॥ ततःयक्षकर्दमेनप्रजाभूतेतिमन्त्रेणविलिंपेत् ॥ यक्षकर्दमस्तु ॥ कस्तूरिकायाद्वौभागौद्वौभागौकुङ्कुमस्यच ॥ चन्दनस्यत्रयोभागाःशशिनस्त्वेक एवहीत्युक्तः ॥ ततोजटामांस्यानुलिप्य ॥ मानस्तोकेप्रतद्विष्णुरितिकलशद्वयेन स्नापयित्वाएकत्रिंशत्कलशान्तर्गतेन ❀ ॥ ३१ ॥ ❀ ॐमानस्तोकेतनयेमान आयुषिमानोगोषुमानोऽअश्वेषुरीरिषः ॥ मानोब्वीरान्रुद्रभामिनोब्वधीर्हविष्मन्तः सदमित्त्वाहवामहे ॥ वा. सं. अ. १६ ॥ इतिप्रथमेन ॥ १ ॥ ॐप्रतद्विष्णुस्तवतेब्वीर्य्येणमृगोनभीमःकुचरोगिरिष्ठाः ॥ यस्योरुषुत्रिषुब्विक्रमणेष्वधिक्षियन्ति

भु॑वनानि॒ब्बिश्वा॑ ॥ वा. सं. अ. ५ मं ॥ २० ॥ इतिद्वितीयेन ॥ २ ॐअयाम
सोमममृताअभूमागन्मज्योतिरविदामदेवान् ॥ किन्नूनमस्मात्कृणवदरातिः किम
मूर्तिरमृतमर्त्यस्य ॥ तैत्तिरीये ॥ इतिपञ्चामृतकलशेन ॥ ३ ॥ ततःपञ्च
शुद्धजलकलशैः ।१ ॐअयंराजावरुणोनुमन्यताम् ॥ इतिप्रथमेन ॥ १ । ४॥
ॐघ्रिश्रोयथामाङ्कामीन्यसोयथामह्लायगायसः ॥ तैत्तिरीये ॥ इतिद्वितीयेन २ ॥
॥ ५ ॥ ॐस॒न्ते॒पया॑छंसि॒सम॑ुयन्तु॒ब्बाजा॒;सम्ब्बृष्ण्या॑न्न्यभिमा॒ति॒षाह॑÷ । आ॒प्प्या
॑यमानोऽअ॒मृता॑यसोमदि॒विश्श्रवा॑छंस्युत्त॒मा॑निधिष्ष्वा ॥ वा. सं. अ. १२ मं. ११३
इतितृतीयेन ३ । ६ ॥ ॐआप्प्या॑यस्वमदिन्तम॒सोम॒ब्बिश्वे॑भिर॒छंशुभि॑÷ ॥
भवा॑न;स॒प्प्रस्थ॑तम॒;सखा॑ ब्बृधे वा. सं. अ. १२ मं ११४॥ इतिचतुर्थेन ।४।७॥

ॐअप्स्वग्नेसधिष्ठवसौषधीरनुरुध्यसे ॥ गर्भेसजायसेपुन÷ । वा. सं.
अ. १२ मं. ३६ इतिपञ्चमेन ॥ ५ ॥ ८ ॥ गन्धद्वारामितिगन्धोदकेन ॥
ॐगन्धद्वारान्दुराधर्षान्नित्यपुष्टाङ्करीषिणीम् ॥ ईश्वरींसर्वभूतानान्तामिहोप
ह्वयेश्रियम् ॥ १ ॥ इतिगन्धोदकेन ॥ ९ ॥ यज्ञायज्ञावइतिपंचपल्लवकषाय
कलशोदकेन ॥ २ ॥ ॐयज्ञायज्ञावोऽअग्नयेगिरागिराचदक्षसे ॥ प्रप्रंवयम
मृतञ्जातवेदसम्प्रियम्मित्रन्नशꣳसिषम् ॥ वा.। सं.। अ. ॥ २७ ॥ मं.। ४२।
इतिकषायकलशेन ॥ १० ॥ ततोयाऽओषधीरितिसर्वौषधिकलशोदकेन ॥ ३ ॥
ॐयाऽओषधीः पूर्व्वाजातादेवेभ्यंस्त्रियुगम्पुरा ॥ मनैनुबभ्रूणांमहꣳशतन्धा
मानिसप्तच ॥ वा. । सं. ॥ अ. ॥ १२ ॥ मं. ॥ ७५ ॥ इतिसर्वौषधिकलशो

न ॥ ११ ॥ दशपुष्पादिक्रमात् ॥ ततः ॥ ओषधीःप्रतिमोदध्वमिति पुष्पकलशोदकेन ॥ १ ॥ ॐ ओषधीः प्रतिमोदध्वम्पुष्पवतीः प्रसूवरीः ॥ अश्वाऽइवसजित्वरीर्वीरुधः पारयिष्ण्वः ॥ वा. । सं. । अ. ॥ १२ ॥ मं. ॥ ७७ ॥ इतिपुष्पोदकेन ॥ १२ ॥ याःफलिनीरित्यष्टफलकलशोदकेन ॥ २ ॥ ॐ याः फलिनीर्याऽअफलाऽअपुष्पायाश्चपुष्पिणीः ॥ बृहस्पतिप्रसूतास्तानोमुञ्चन्त्वꣳहसः ॥ वा. । सं. अ. । १२ ॥ मन्त्र ॥ ९९ ॥ इत्यष्टफलकलशोदकेन ॥ १३ ॥ हिरण्यगर्भइतिसुवर्णोदककलशेन ॥ ३ ॥ ॐ हिरण्यगर्भः समवर्त्तताग्रेभूतस्यजातः पतिरेकऽआसीत् ॥ सदाधारपृथिवीन्द्यामुतेमाङ्कस्मैदेवायहविषाविधेम ॥ वा. । सं. । अ. ॥ १३ ॥ मं. ॥ ४ ॥ इतिसुव

ओं अ॒प्स्व॑ग्ने॒सधि॒ष्ठव॒सौष॑धी॒रनु॑रुध्यसे ॥ गर्भे॒सजा॑यसे॒पुनः॑ । वा. सं.
अ. १२ मं. ३६ इतिपञ्चमेन ॥ ५ ॥ ८ ॥ गन्धद्वारामितिगन्धोदकेन ॥
ओं गन्धद्वारान्दुराधर्षान्नित्यपुष्टाङ्करीषिणीम् ॥ ईश्वरींसर्वभूतानान्तामिहोप
ह्वयेश्रियम् ॥ १ ॥ इतिगन्धोदकेन ॥ ९ ॥ यज्ञायज्ञावइतिपंचपल्लवकषाय
कलशोदकेन ॥ २ ॥ ओं य॒ज्ञाय॑ज्ञावोऽअ॒ग्नये॑गि॒रागि॑राच॒दक्ष॑से ॥ प्रप्र॑व॒यम॒
मृतञ्जा॒तवे॑दसम्प्रि॒यम्मि॒त्रन्नशꣳसिषम् ॥ वा. । सं. । अ. ॥ २७ ॥ मं. । ४२ ।
इतिकषायकलशेन ॥ १० ॥ ततोयाऽओषधीरितिसर्वौषधिकलशोदकेन ॥ ३ ॥
ओं याऽओष॑धीः॒पूर्वा॑जा॒ता दे॒वेभ्य॑स्त्रियु॒गम्पु॒रा ॥ मनै॑नुब॒भ्रूणा॑म॒हꣳश॒तन्धा
मा॑निस॒प्त च॑ ॥ वा. । सं. ॥ अ. ॥ १२ ॥ मं. ॥ ७५ ॥ इतिसर्वौषधिकलशो

न ॥ ११ ॥ दशपुष्पादिक्रमात् ॥ ततः ॥ ओषधीःप्रतिमोदध्वमिति पुष्पकलशोदकेन ॥ १ ॥ ॐओषधीःप्रतिमोदध्वम्पुष्पवतीःप्रसूवरीः ॥ अश्वाऽइवसजित्वरीर्व्वीरुधःपारयिष्ण्वः ॥ वा. । सं. । अ. ॥ १२ ॥ मं. ॥ ७७ ॥ इतिपुष्पोदकेन ॥ १२ ॥ याःफलिनीरित्यष्टफलकलशोदकेन ॥ २ ॥ ॐयाःफलिनीर्य्याऽअफलाऽअपुष्पायाश्चपुष्पिणीः ॥ बृहस्पतिप्रसूतास्तानो मुञ्चन्त्वꣳहसः ॥ वा. । सं. अ. । १२ ॥ मन्त्र ॥ ९९ ॥ इत्यष्टफलकलशोदकेन ॥ १३ ॥ हिरण्यगर्भइतिसुवर्णोदककलशेन ॥ ३ ॥ ॐहिरण्यगर्भःसमवर्त्तताग्रेभूतस्यजातःपतिरेकऽआसीत् ॥ सदाधारपृथिवीन्द्यामुतेमाङ्कस्मैदेवायहविषाविधेम ॥ वा. । सं. । अ. ॥ १३ ॥ मं. ॥ ४ ॥ इतिसुव

णोंदकेन ॥ १४ ॥ हविष्मतीरितिगोश्रृङ्गोदकेन ॥ ४ ॥ ॐह॒विष्म॑तीरि॒माऽ
आपो॑ह॒विष्म॒ाँ २ ॥ ऽआविवासति ॥ ह॒विष्मान्दे॒वोऽअध्व॒रोह॒विष्माँ २ ॥ ऽअस्तु॒सू
र्य्यः ॥ वा. । सं. । अ. । ६ ॥ मं. ॥ २३ ॥ इतिगोश्रृङ्गोदकेन ॥ १५ ॥
॥स.प्र.॥ धान्यमसीतिधान्योदकेन ॥ ५ ॥ ॐधा॒न्न्यमसिधिनु॒हिदे॒वान्न्प्रा॒णाय॑त्वोदा॒नाय॑
॥३३३॥ त्वाव्व्या॒नाय॑त्वा ॥ दी॒र्ग्घामनु॒प्प्रसि॑ति॒मायु॑षेधान्दे॒वोवः सवि॒ताहिर॑ण्यपाणि॒ः
प्प्रतिगृभ्णा॒त्वच्छिद्रे॒णपा॒णिना॒चक्षु॑षेत्वाम॒ही॒ना॒म्पयो॑सि ॥ वा. । सं. । ॥३३३॥
अ. । ॥ १ ॥ मं. ॥ २० ॥ इतिधान्योदकेन ॥ १६ ॥ सहस्राक्षेणेतिसहस्र
धाराकलशेन ॥ ६ ॥ ॐसहस्राक्षेणशतशारदेनशतायुषाहर्विषेमम्पुनर्त्तुः ॥
शतंयथेमंशरदोनयातीन्द्रोविश्वस्यदुरितस्यपारम् ॥ इतिसहस्रधाराकलशे

न ॥ १७ ॥ यादिव्याइतिसर्वौषधिजलेन ॥ ७ ॥ ॐयादिव्याऽआपःपायसा सम्बभूवुर्य्याऽअन्तरिक्षाऽउतपार्थिवीर्य्याः ॥ हिरण्यवर्णायज्ञियास्तानऽआपः शिवाःशꣳस्योनाःसुहवाभवन्तु ॥ इतिसर्वौषधिजलेन ॥ १८ ॥ नमोस्तु सर्प्पेभ्यइतिपल्लवोदकेन ॥ ८ ॥ ॐनमोस्तुसर्प्पेभ्योयेकेचपृथिवीमनु ॥ येऽअन्तरिक्षेयेदिवितेभ्यःसर्प्पेभ्योनमः ॥ वा. ।सं. । अ. ॥ १३ ॥मं. ।६॥ इतिपल्लवोदकेन ॥ १९ ॥ अष्टौव्यख्यदितिरत्नोदकेन ॥ ९ ॥ ॐअष्टौव्यख्यत्ककुभःपृथिव्यास्त्रीधन्वयोजनासप्तसिन्धून् ॥ हिरण्याक्षःसवितादेवऽआगाद्दधद्रत्नादाशुषेवार्य्याणि ॥ वा.।सं.। अ. । ३४।मंत्र।२४। इतिरत्नोदकेन ॥ २० ॥ इमम्मेगङ्गेइतितीर्थोदकेन ॥ १० ॥ ॥ २१ ॥ इत्येकत्रिंशत्क

लशान्तर्गतैकविंशतिकलशाःभवंति ॥ एकत्र ॥ ४६ ॥ पुनरष्टाभिःकलशैःपूर्वादिक्रमेणकल्पितैःसमुद्रसञ्ज्ञकैःस्नपयेत् ॥ कयानश्चित्रइतिक्षारोदकेन ॥ ॐकया॑नश्चि॒त्रऽआभु॑वदू॒तीस॒दावृ॑ध॒ःसखा॑ ॥ कया॒शचि॑ष्ठयाऽवृ॒ता ॥ वा. । सं. । ॥ अ. ॥ ३६ ॥ मं. ॥ ४ ॥ इतिक्षारोदकेन ॥ १ । आप्प्यायस्वेतिक्षीरकुम्भेन ॥ ॐआप्प्या॑यस्व॒समे॑तुतेऽवि॒श्श्वत॑ःसोम॒ऽवृष्ण्य॑म् ॥ भवा॒ऽवाज॑स्यसङ्ग॒थे ॥ वा. । सं. । अ. ॥ १२ ॥ मं. ॥ ११२ ॥ इतिक्षीरकुम्भेन ॥ २ ॥ दधिक्राव्णइति दधिकुम्भेन ॥ ॐद॒धि॒क्राव्णो॑अकारिषञ्जि॒ष्णोरश्व॑स्यवा॒जिन॑ः ॥ सु॒र॒भिनो॒मुखा॑कर॒त्प्रण॒ऽआयू॑ꣳषितारिषत् ॥ वा.।सं.।अ.।२३।मं०॥३२॥इतिदधिकुम्भेन ॥३॥ घृतवतीतिघृतकुम्भोदकेन ❀ ॥ ❀ ॐघृ॒तव॑ती॒भुव॑नानामभि॒श्श्रियो॒र्वीपृ॒थ्वीम॑

घुदुघेसुपेशसा ॥ द्यावापृथिवीव्वरुणस्यधर्म्मणाव्विष्कभितेऽअजरेभूरिरेतसा ॥ वा.।अ.।३४।म० ॥ ४५ ॥ इतिघृतकुम्भोदकेन ॥ ४ ॥ पयःपृथिव्यामितीक्षुरसकुम्भोदकेन ॥ ॐपयः पृथिव्याम्पयऽओषधीषुपयोदिव्व्यन्तरिक्षेपयोधाः ॥ पयस्वतीः प्रदिशः सन्तुमह्यम् ॥ वा. सं. अ. ।१८। मं ॥ ३६ ॥ इतीक्षुरसकुम्भोदकेन ॥ ५ ॥ देवंबर्हिरितिसुरोदकेन ॥ ॐदेवम्बर्हिर्व्वारितीनान्देवमिन्द्रमवर्द्धयत् ॥ स्वासस्थमिन्द्रेणासन्नमन्न्यावर्हीᳫंष्यभ्यभूद्वसुवनेव्वसुधेयस्यव्वेतुयजं ॥ वा.।सं.।अ.।२८ ।मं० ॥ २१ ॥ इतिसुरोदकेन ॥ ६ ॥ स्वादिष्ठयेतिस्वादूदककुम्भोदकेन ॥ ॐस्वादिष्ठयामदिष्ठयापवस्वसोमधारया ॥ इन्द्रायपातवेसुतः ॥ वा.।सं.।अ.।२६।मं।२५।इतिस्वादूदकेन ॥ ७ ॥

ॐसरस्वतीयोन्यामितिगम्भोदकेन ॥ ॐसरस्वतीयोन्न्याङ्गर्ब्भमन्तरश्विभ्या
म्पत्नीसुकृतम्विभर्त्ति ॥ अपाꣳरसेनबरुणोनसाम्नेन्द्रꣳश्रियैजनयन्न
प्सुराजा । वा । सं. । अ. । १९ । मं. ॥ ९४ ॥ इतिगर्भोदकेन ॥ ८ ॥
इत्यष्टभिःकलशैःस्नपयेत् ॥ एकत्र ॥ ५४ ॥ ततःएकत्रिंशत्कलशेषु
मध्येयेऽन्तिमादशकदंवादिपल्लवान्वितालोकपालकलशास्तैर्देवंस्नपयेत् ॥ तत्रप्रथमं
त्रातारमितिकदंवपल्लवकुंभोदकेन ॥ ॐत्रातारमिन्द्रमवितारमिन्दꣳहवेहवेसुहवꣳ
शूरमिन्द्रम् ॥ ह्वयामिशक्रम्पुरुहूतमिन्द्रꣳस्वस्तिनोमघवाधात्विन्द्रः । वा. ।
सं । अ. । २० । मं० ॥ ५० ॥ इतिकदंवपल्लवोदकेन ॥ १ ॥ त्वन्नोऽअ
ग्नइतिशाल्मलीपल्लवान्वितकुम्भोदकेन ॥ ओंत्वन्नोऽअग्नेबरुणस्यविद्वान्देवस्यहे

डोऽअवयासिसीष्ठा; ॥ यजिंष्ठोव्वह्नितम;शोशुचानोव्विश्श्वाद्वेषांछंसिप्प्रमुंमुग्ध्य स्मत् वा.। सं .। अ ।२१। मं० ॥ ३ ॥ इतिशाल्मलीपल्लवोदकेन॥ २ ॥ सुगन्नः पन्थामभयङ्कृणोत्वितिजम्बूपल्लवोदककुम्भेन ॥ ओंसुगन्नःपन्थामभयङ्कृणोतुयस्मिन्नक्षत्रेयमयेतिराजा ॥ यस्मिन्नेनमभ्यषिञ्चतुदेवास्तदस्यचित्रछंहविषायजाम ॥ तैत्तिरीये ॥ इतिजम्बूपल्लवोदकेन ॥ ३ ॥ असुन्वन्तमितिअशोकपल्लवान्वितकलशोदकेन ॥ ओंअसुंन्न्वन्तमयंजमानमिच्छस्तेनस्येत्त्यामन्न्विहितस्क्करस्य ॥ अन्न्यमस्म्मदिंच्छसातंऽइत्त्यानमोदेविनिऽर्ऋतेतुभ्यंमस्तु ॥ वा.। सं अ.। १२। मं. ॥ ६२ ॥ इतिअशोकपल्ल० ॥ ४ ॥ तत्त्वायामीतिप्लाक्षपल्लवान्वितकुम्भोदकेन ॥ ओंतत्त्वांयामिब्रह्मणाव्वन्दमानस्तदाशां

स्तयजंमानोहविर्ब्भिं÷ ॥ अहेंडमानोव्वरुणेहवोद्ध्युरुंश,ंसमानआयु;प्प्रमोंषी;
वा. । सं. । अ. । २१ । मं. २ ॥ इतिप्लाक्षपल्ल० ॥ ५ ॥ वायोंयंतेसहस्त्रिण
इतिचूतपल्लवोदककुम्भेन ❁ ❁ ॥ ❁ ❁ ओंव्वायोयेतेंसहस्त्रिणोरथांश
स्तेभिरागंहि ॥ नियुत्त्वान्त्सोमंपीतये ॥ वा. सं. । अ. ॥ २७ ॥ मं. ॥ ३२ ॥
इतिचूतपल्लवोदककुंभेन ॥ ६ ॥ वयथ्छंसोमेतिवटपल्लवकुंभोदकेन ॥ ॐव्व
यथ्छंसोमव्व्रतेतवमनंस्तनूषुब्बिब्भ्रंत; ॥ प्रजावंन्त;सचेमहि ॥ वा. । सं. अ.॥ ३ ॥
मं. ॥ ५६ ॥ इतिवटपल्लवोदकेन ॥ ७ ॥ तमीशानमितिविल्वपल्लवोदककुम्भेन ॥
ॐतमीशांनञ्जगंतस्तस्त्थुषस्प्पतिंन्धियञ्जिन्न्वमवंसेहूमहेव्वयम् ॥ पूषानो
यथाव्वदंसामंसदृबृधेरंक्षितापायुरदंब्ध;स्वस्तयें ॥ वा. । सं. । अ. । २५ । मं । १८ ॥

इतिविल्वपल्लवोदकेन ॥ ८ ॥ नमोस्तुसर्प्पेभ्यइतिनागकेसरपल्लवोदकेन ॥
ॐनमोस्तुसर्प्पेब्भ्योयेकेचपृथिवीमनु ॥ येऽअन्तरिक्षेयेदिवितेब्भ्यःसर्प्पे
ब्भ्योनमः । वा. । सं । अ. । १३ । मं. । ६ । इतिनागकेसरपल्लवोदकेन ॥ ९ ॥
ब्रह्मजज्ञानमितिपलाशपल्लवोदकेन ॥ ॐब्रह्मजज्ञानम्प्रथमम्पुरस्ताद्विसीम
तःसुरुचोव्वेनऽआवः ॥ सबुध्न्याऽउपमाऽअस्यव्विष्ठाःसतश्चयोनिमसतश्च
व्विवः । वा. । सं. । अ. । १३ । मं. । ३ । इतिपलाशपल्लवोदकेन ॥ १० ॥
ततोनानाभेरीशंखतूर्य्यकोलाहलध्वनिभिः पुण्यस्त्रीमङ्गलोद्गीतैर्ब्रह्मघोषगीतैःकनि
क्रदादितिचतुर्भिःकुम्भैःएकेनवाकुम्भेनदेवंस्नपयेत् ॥ कलशसंख्या ॥ प्र० ।
१२ ॥ द्वि० ॥ ११ ॥ तृती० ॥ ६८ ॥ एकत्र ॥ ९१ ॥ ततःसुगंधिनासितव

वस्त्रेणपरिमृज्यविश्वतश्चक्षुरितिसंकलीकृत्य ॥ ॐब्बि॒श्वतंश्चक्षुरु॒तब्बि॒श्वतोंमुखो
ब्बि॒श्वतोब्बाहुरु॒तब्बि॒श्वतंस्प्पात् ॥ सम्बा॒हुब्भ्या॒न्धमंति॒सम्पतंत्रैर्द्यावा॒भूमींज॒
नयंन्दे॒वऽएकं÷ । वा. । सं. । अ. । १७ । मं. । १९ । इतिसङ्कलीकृत्य ॥ एह्येही
त्यनेनावाहयेत् ॥ एह्येहिभगवन्विष्णोलोकानुग्रहकारक ॥ यज्ञभागङ्गृहा
णेमंवासुदेवनमोस्तुते ॥ देवभेदेनमंत्रोहःकर्त्तव्यः ॥ एवन्देवमावाह्य ॥
हिरण्यवर्णेतिपाद्यम् ॥ ॐहिरण्यवर्णांहरिणींसुवर्णरजतस्रजाम् ॥ चन्द्रांहिर
एमयींलक्ष्मीञ्जातवेदोममावह ॥ इतिपा० ॥ हिरण्यवर्णाःशुचयइत्यर्घ्यम् ॥
ॐहिरण्यवर्णाःशुचयःपावकायाःसुजातः ॥ काश्यपोयास्त्विन्द्रःअग्नियागर्भन्द
धिरेविरूपास्तानआपःशछंस्योनाभवन्तु ॥ इत्यर्घ्यम् ॥ विब्भ्राडित्याचमनीयम् ॥

ॐविभ्भ्राड्बृहत्प्पिबतुसोम्म्यम्मध्वायुर्द्दधद्यज्ञपतावविह्रुतम् ॥ व्वातजूतोयोऽअभिरक्षतित्त्मनाप्प्रजाः पुपोषपुरुधाव्विराजति ॥ वा. । सं. । अ. । ३३ । मं. । ३० । इत्याचमनीयम् ॥ त्र्यम्बकमितिचन्दनम्बिलिम्पेत् ॥ ॐत्र्यम्बकंय्यजामहेसुगन्धिम्पुष्टिवर्द्धनम् ॥ उर्व्वारुकमिवबन्धनान्मृत्त्योर्म्मुक्षीयमामृतात् ॥ वा. । सं. । अ. । ३ । मं. । ६० । इतिचन्दनम् ॥ ॐअभिवस्त्रेतिवस्त्रम् ॥ ततोवेदाहमेतमित्त्युपवीतन्निवेदयेत् ॥ ॐवेदाहमेतम्पुरुषम्महान्तमादित्यवर्णन्तमसः परस्तात् ॥ तमेवव्विदित्त्वातिमृत्त्युमेतिनान्न्यः पन्थाव्विद्यतेयनाय । वा. । सं. । अ. । ३१ । मं. । १८ । इत्युपवीतम् ॥ ततोवेदाहमित्त्युत्तरीयवस्त्रम् ॥ इदम्व्विष्णुरितिपुष्पम् ॥ ॐइदम्व्विष्णुर्व्विचक्क्रमेत्रेधानिदधेपद

म् ॥ समूढमस्यपाꣳसुरेस्वाहा ॥ वा. । सं. । अ. । ५ । मंत्र । १५ । इतिपुष्पम् ॥ धूरसीतिधूपम् ॥ ॐधूरसिधूर्व्वधूर्व्वन्तन्धूर्व्वतंय्योस्म्मान्धूर्व्वातन्तिन्धूर्व्वयम्व्वयन्धूर्व्वामः। देवानामसिव्वह्नितमꣳसस्नितमम्पप्प्रितमञ्जुष्टतमन्देवहूतमम् ॥ वा. । सं. । अ. । १ । मं. । ८ । इतिधूपम् ॥ चन्द्रमामनसइतिदीपम् ॥ ॐचन्द्रमामनसोजातश्चक्षोःसूर्य्योऽअजायत ॥ श्रोत्राद्वायुश्चप्राणश्चमुखादग्निरजायत । वा. । सं. । अ. ॥ ३१ ॥ मं. ॥ १२ ॥ इतिदीपम् ॥ अन्नपतेइतिनैवेद्यम् ॥ ॐअन्नपतेन्नस्यनोदेह्यनमीवस्यशुष्मिणः ॥ प्रप्प्रदातारन्तारिषऽऊर्ज्जन्नोधेहिद्विपदेचतुष्पदे वा. सं. अ. ११ मं. ८३ ॥ इतिनैवेद्यम् ॥ यत्पुरुषेणेत्याचमनीयम् ॥ ॐयत्पुरुषेणहविषादेवायज्ञमतन्वत ॥ व्वस

न्तो॑स्यासी॒दाज्ज्यङ्ग्री॒ष्म्मऽइ॒ध्मःश॒रद्ध॒विः । वा.। सं.। अ.॥ ३१ ॥ मं.॥
१४ ॥ इत्याचमनीयम् ॥ यज्ञेनयज्ञमितिपुष्पाञ्जलिम् ॥ ॐय॒ज्ञेन॑य॒ज्ञम॑यं
जन्तदे॒वास्तानि॒धर्म्माणिप्प्रथ॒मान्न्यासन् ॥ तेह॒नाकम्महि॒मानः॑सचन्त॒यत्र॒
पूर्व्वैसा॒द्ध्याःसन्ति॑दे॒वाः वा.। सं.। अ.॥ ३१ ॥ मं.॥ १६ ॥ एवंपुष्पाञ्जलिन्द
त्वासंप्रार्थ्य ॥ स्नानवस्त्रनैवेद्यादिकंशिल्पिनेदद्यात् ॥ इतिदेवस्नपनविधिः॥
अथपुरुषसूक्तेनदेवंस्तुत्वा ॥ ॐसहस्रशीर्षेत्यादिषोडशर्चःपठेत् ॥ इतिस्तुत्वा
उत्तिष्ठोत्तिष्ठगोविन्दत्यजनिद्रांजगत्पते ॥ त्वयिसुप्तेजगत्सुप्तमुत्थितेचोत्थितञ्जगत् ॥ इतितमुत्थाप्यरथमारोप्यमङ्गलघोषेण ॥ कनिक्रददितिसूक्तेनचत्वा
सादप्रादक्षिण्येनानीययागमण्डप पश्चिमद्वारेणाकृष्णेनेतिमंत्रेणप्रवेश्यवेद्याःपश्चिम

भागेप्राङ्मुखमुपवेश्यमधुपर्कङ्कुर्यात् ॥ ततोवेद्याङ्कुशानास्तीर्य ॥ तदुपरिश
य्यामास्तीर्य ॥ ततोवेद्याःपूर्वादिदिक्षुक्रमेण ॥ ॐविष्णवेनमः । विष्णुमावाह
यामि ॥ १ ॥ ॐमधुसूदनायनमः । मधुसूदन मा० । पू० । २ ॥ ॐत्रि
विक्रमायनमः । त्रिविक्रममा० ॥ पू० ॥ ३ ॥ ॐवामनायनमःवामनमा०
पू० ॥ ४ ॥ ततःआग्नेयादिकोणेषु ॥ ॐश्रीधरायनमःश्रीधरमा० । पू० ॥ १ ॥
ॐमधुसूदनायनमः । मधुसूदनमा० । पू० ॥ २ ॥ ॐत्रिविक्रमायनमः ।
त्रिविक्रममा० । पू० ॥ ३ ॥ ॐवामनायनमःवामनमा० । पू० ॥ ४ ॥ ततः
आग्नेयादिकोणेषु ॥ ॐश्रीधरा यनमःश्रीधर मा० ॥ पू० ॥ १ ॥ नैर्ऋ०
ॐहृषीकेशायनमः । हृषीकेश मा० । पू० ॥ २ ॥ वायव्ये ॥ ॐपद्मनाभा

यनमः । पद्मनाभ मा० । पू० ॥ ३ ॥ ईशाने ॥ ॐदामोदरायनमः । दामोदर मा० । पू० ॥ ४ ॥ ततः ॥ ॐनमोनारायणायेतिमन्त्रेणविष्णुंशय्यान्निवेशयेत् ॥ शिवादिप्रतिष्ठायान्तुशर्वादीन्मूर्त्तीशान्स्वस्वनाममंत्रैरेवपूर्वादिदिक्षुक्रमेणपूजयेत् ॥ तद्यथा ॥ शर्वंपशुपतिञ्चोग्रंरुद्रंभवमथेश्वरम् ॥ महादेवञ्चभीमञ्चपूर्वादिक्रमतोन्यसेत् ॥ ॐशर्वायनमः । शर्व मा० । पू० ॥ १ ॥ ॐपशुपतयेनमः । पशुपति मा० ॥ पू० ॥ २ ॥ ॐउग्रायनमः । उग्र मा० । पू० ॥ ३ ॥ ओंरुद्रायनमः रुद्र मा० । पू० ॥ ४ ॥ ॐभवायनमः । भव मा० । पू० ॥ ५ ॥ ओंईश्वरायनमः । ईश्वर मा० । पू० ॥ ६ ॥ ओंमहादेवायनमः । महादेव मा० । पू० ॥ ७ ॥ ओंभीमायनमः । भीममा० । पू. ॥ ८ ॥ ततःनमःशम्भवायेतिमंत्रेणदेवंशय्यान्नि

वेश्य ॥ ओंनमः॑शम्भ॒वाय॑चमयो॒भ॒वाय॑च॒नमः॑शङ्क॒राय॑चमय॒स्क॒राय॑च॒नमः॑
शि॒वाय॑चशि॒वत॑राय च ॥ वा. । सं. । अ. ॥ १६ ॥ मं. ॥ ४१ ॥ इतिनिवेश्य ॥ शय्या
यान्देवंस्थापयेत् ॥ त्रिभिर्वस्त्रैर्देवमाच्छाद्य ॥ देवस्यशिरोदेशभूमौसहिरण्य
न्निद्राकलशमापोदेवीरुपह्वयइतिप्रतिष्ठाप्य ॥ ओंआपोदेवीरुपह्वयेयत्रगावःपिब
न्तिनः ॥ सिन्धुभ्यःकर्त्वंहविः ॥ इतिमन्त्रेणप्रतिष्ठाप्य ॥ आप्यायस्वसमिति
मधुसर्पिर्भ्यान्देवमभ्यज्य ॥ ओंआप्यायस्व॒समे॑तुते॒विश्वतः॑सोम॒वृष्ण्य॑म् ॥
भवा॒वाज॑स्यसङ्ग॒थे ॥ वा. । सं. । अ. । १२ । मं. । ११२ ॥ इतिमधुसर्पिर्भ्याम
भ्यज्य ॥ यातेरुद्रेतितैलसर्षपैरुपलिप्य ॥ ओंयाते॑रुद्रशि॒वात॒नूरघो॒रापा॑पका
शिनी ॥ तया॑नस्त॒न्वा॒शन्त॑मया॒गिरि॑शन्ताभिचा॑कशीहि ॥ वा. । सं. । अ. ।

१६ ॥ मं. ॥ २ ॥ इत्युपलिप्य ॥ गन्धादिनाभ्यर्च्य ॥ वृहस्पतेपरिदीयेति मन्त्रेणसितंपरिसरन्दद्यात् ॥ ओंबृहस्पते॒परिदीया॒रथेनरक्षो॒हामित्राँ२॥ऽअप॒बाधमानः ॥ प्र॒भ॒ञ्जन्त्सेनाःप्प्रमृणोयु॒धाजयन्न॒स्म्माकमेद्ध्यवि॒तारथानाम् ॥ वा. । सं. । अ. ॥ १७ ॥ मं. ॥ ३६ ॥ इतिसितंपरिधानम् ॥ अत्रदेवस्यदक्षिणपाणौ वृहस्पतेपरीतिमन्त्रेणकङ्कणबन्धनमित्यपिकेचिद्वदन्ति ॥ ततोदेवस्यपादनाभिवक्षःशिरःसुविश्वतश्चक्षुरित्यालम्भनम् ॥ ओंव्वि॒श्वतश्चक्षुरु॒तव्वि॒श्वतोमुखोव्वि॒श्वतोव्बाहुरु॒तव्वि॒श्वतस्प्पात् ॥ सम्ब्बा॒हुब्भ्या॒न्धमति॒सम्पतत्रै॒र्द्यावा॒भूमीज॒नयन्दे॒वऽएकः ॥ वा.।सं.।अ.।१७। मं. ॥ १९ ॥ इत्यालम्भनम् ॥ ततस्तद्दक्षिणपार्श्वेछत्रं व्यंजनञ्चामरञ्च ॥ चरणदेशेपादुके ॥ पार्श्वयोःशांतिकुम्भौ ॥ आसनदर्प

णघण्टाभक्ष्यभोज्यजलपात्रादिकञ्चदेवस्यपुरतःस्थापयेत् । ततोभस्मदर्भतिलैर्देवस्यपरितोरक्षार्थंप्राकारत्रयङ्कृत्वामण्डपाद्बहिर्गत्वाप्रतिदिशामिन्द्रादिलोकपालेभ्यो गन्धादिदानपूर्वकंवलिन्दद्यात् ॥ वलिमंत्रस्तु ॥ पूर्वदिग्वासिभ्योदिक्पतिदिग्भूताधिपतिदिग्रुद्रादिग्ज्ञातृदिक्क्षेत्रपालेभ्योनमःइत्येवंप्रतिदिशंवलिदानम् ॥ त्र्यम्वकमितिमन्त्रेणभूतेभ्योवलिदानम् ॥ ओंत्र्यम्वकँय्यजामहेसुगन्धिम्पुष्टिवर्द्धनम् ॥ उर्व्वारुकमिवबन्धनान्मृत्योर्म्मुक्षीयमामृतात् ॥ त्र्यम्वकँय्यजामहेसुगन्धिपंतिबेदनम् ॥ उर्व्वारुकमिवबन्धनादितोमुक्षीयमामुत÷ । वा. । सं. । अ. । ३ । मं. । ६० । एवंपूर्वादिदिक्षुवलिन्दत्वाचम्यहोमङ्कुर्यात् ॥ तद्यथा ॥ ओंपरायविष्ण्वात्मनेनमःस्वाहेतिहोममन्त्रोविष्णुप्रतिष्ठायांज्ञेयः ॥ शिवादिप्रतिष्ठायान्तु

ओंपरायशिवात्मनेस्वाहेतिमन्त्रोहः कर्त्तव्यः ॥ अनेनाष्टोत्तरसहस्रमष्टोत्तरशतमष्टाविंशतिमष्टौवातिलैर्यवैर्वाप्रत्येकंहुत्वाप्रतिमायान्यासान्कुर्यात् ॥ तद्यथा ॥ अपादयोः । उहृदये । मललाटे । इतिप्रणवंन्यसेत ॥ ओंभूःपादयोः । भुवः हृदये । स्वर्ललाटे । इतिव्याहृतीर्न्यसेत् ॥ अतालुके । आमुखे । इदक्षिणनेत्रे । ईवामनेत्रे । उदक्षिणश्रोत्रे । ऊवामश्रोत्रे । ऋदक्षिणगण्डे ॥ ॠवामगण्डे । ऌदक्षिणनासापुटे । ❀ ❀ ❀ ❀ ❀ ॡवामनासापुटे । एऊर्द्ध्वदशनेषु । ऐअधोदशनेषु । ओऊर्ध्वोष्ठे । औअधरोष्ठे । अंललाटे । अःजिह्वायां । यत्वचि । रचक्षुषोः । लनासिकायां । वदशनेषु । शश्रोत्रयोः । षउदरे । सकटिदेशे । हहृदये । क्षःनाभ्याम् । ललिङ्गे । पफवभ

मदक्षिणवाहौ । तथदधनवामवाहौ । ट ठ ड ढ ण दक्षिणजङ्घायां । चछजझञवामजङ्घायां । क ख ग घ ङ सर्वाङ्गुलीषुइतिमातृकान्यासः ॥ रविचन्द्राभ्यान्नमोनेत्रयोः । भौमायनमःहृदये । वुधायनमःस्कन्धे । बृहस्पतयेनमःजिह्वायां । शुक्रायनमःलिङ्गे । शनैश्चरायनमःललाटे । राहवेनमःपादयोः । केतवेनमः । केशेषु । रोहिणीभ्योनमःहृदये । मृगशिरसेनमःशिरसि । आर्द्रायैनमःकेशेषु । पुनर्वसवेनमः ललाटे । पुष्यायनमःमुखे । आश्लेषाभ्योनमःनासायां । मघाभ्योनमःदन्तेषु । पूर्वाफल्गुनीभ्योनमःदक्षिणश्रवणे ❀ ❀ ❀ ❀ ❀ ❀ । ❀ ❀ ❀ ❀ ❀ उत्तराफल्गुनीभ्योनमःवामश्रवणे । हस्तायनमःहस्तयोः । चित्रायैनमःदक्षिणेभुजे । स्वात्यैनमःवामेभुजे । विशाखायैनमःहृदि । अनुराधाभ्योनमःस्तनयोः । ज्येष्ठा

भ्योनमःदक्षिणकुक्षौ । मूलायनमःबामकुक्षौ । पुर्वाषाढाभ्योनमःकटिपार्श्वयोः । उत्तराषाढाओनमःलिङ्गे । श्रवणधनिष्ठाभ्योनमःवृषणे । शतभिषग्भ्योनमःनेत्रे । पुर्वाभाद्रपदाभ्योनमःदक्षिणोरौ। उत्तराजभाद्रपदाभ्योनमःवामोरौ ।रेवतीभ्योनमः दक्षिणजङ्घायाम् ॥ अश्विनीभ्योनमः वामजङ्घायाम्॥ भरणीभ्योनमःदक्षिणपादे ॥ कृत्तिकाभ्योनमःवामपादे॥ध्रुवायनमःनाभ्यां ॥ सप्तर्षिभ्योनमःकण्ठे ॥ मातृमण्डलायनमःकटिदेशे ॥विष्णुपदेभ्योनमःपादयोः ॥ नागवीथ्यैनमःअङ्गवथ्यैनम;बनमालायां ॥ ताराभ्योनमःरोमकूपेषु ॥ अगस्त्यायनमःकौस्तुभे ॥ इतिग्रहादिन्यासः ॥ चैत्रायनमःशिरसि ॥ बैशाखायनमःमुखे ॥ ज्येष्ठायनमःहृदये ॥ आषाढायनमः श्रावणामनमःस्तनयोः * ॥ * भाद्रपदायनमःउदरे ॥

अश्विनायनमःकट्याम् ॥ कार्त्तिकायनमःदक्षिणोरौ ॥ मार्गशीर्षायनमःवामोरौ ॥ पौषायनमोदक्षिणजङ्घायां ॥ माघायनमःवामजङ्घायाम् ॥ फाल्गुनायनमः ॥ पादयोः ॥ सम्बत्सरायनमः परिवत्सरायनमः इडावत्सरायनमः अनुवत्सरायनमइतिदक्षिणोर्ध्वात् ॥ प्रादक्षिण्येनचतुर्षुवाहुषु ॥ पर्वभ्योनमः सन्धिषु ॥ ऋतुभ्योनमःलिङ्गे ॥ अहोरात्रेभ्योनमःअस्थिषु ॥ क्षणायनमःलवायनमःकलायैनमः काष्ठायैनमःरोमेषु ॥ कृतायनमःमुखे ॥ त्रेतायैनमः हृदये ॥ द्वापरायनमोनितंबे ॥ कलयेनमःपादयोः ॥ मन्वन्तरेभ्योनमोवाह्वोः ॥ परायनमः परार्धायनमः जङ्घयोः ॥ महाकल्पायनमःशरीरे ॥ उदगयनायनमः दाक्षणायनायनमःपादयोः ॥ विषुवतेनमःसर्वाङ्गुलीषु ॥ इतिकालन्यासः ॥

ब्राह्मणायनमःमुखे। क्षत्रियायनमःबाह्वोः । वैश्यायनमःऊर्वोः । शूद्रायनमःपादयोः। सङ्करजेभ्योनमःपादाग्रे । अनुलोमजेभ्योनमःसर्वाङ्गसन्धिषु । गोभ्योनमःमुखे। अजाभ्योनमः अविकाभ्योनमःहस्तयोः। ग्राम्यपशुभ्योनमःकट्याम् । आरण्यपशुभ्योनमःऊर्वोः । इतिवर्णन्यासः। मेघेभ्योनमःकेशेषु । अभ्रेभ्योनमःरोमेषु। नदीभ्योनमःसर्वगात्रेषु। समुद्रेभ्योनमःकुक्षिदेशे । इतितोयन्यासः । ऋग्वेदायनमःशिरसि । यजुर्वेदायनमःदक्षिणभुजे । सामवेदायनमः वामभुजे । सर्वोपनिषद्भ्योनमःहृदये । इतिहासपुराणेभ्योनमःजङ्घयोः । अथर्वाङ्गिरसेभ्योनमःनाभौ । कल्पसूत्रेभ्योनमःपादयोः । व्याकरणायनमःवक्त्रे । तर्केभ्योनमःकण्ठे। मीमांसायैनमःनिरुक्तायनमःहृदय । छन्दःशास्त्रेभ्योनमःज्योतिःशास्त्रे

भ्योनमः नेत्रयोः गीतशास्त्रेभ्योनमः भूतशास्त्रेभ्योनमः श्रोत्रयोः । आयुर्वेदायनमः दक्षिणभुजे । धनुर्वेदायनमः वामभुजे । योगशास्त्रेभ्योनमः हृदये । नीतिशास्त्रेभ्यो नमः पादयोः । वश्यतन्त्रायनमः ओष्ठयोः । इतिबिद्यान्यासः । दिवेनमः मूर्द्ध्नि । सूर्यलोकायनमः चन्द्रलोकायनमः नेत्रयोः । अनिललोकायनमः घ्राणे । व्योम्ने नमः नाभ्याम् । समुद्रेभ्योनमः वस्तिदेशे । पृथिव्यैनमः पादयोः । इतिवैराजन्यासः हिरण्यगर्भायनमः शिरसि । कृष्णायनमः केशेषु । रुद्रायनमः ललाटे । यमायनमः भृकुट्याम् । अश्विभ्यान्नमः कर्णयोः । वैश्वानरायनमः मुखे । मरुद्भ्योनमः घ्राणे । वसुभ्योनमः कण्ठे । रुद्रेभ्योनमः दन्तेषु । सरस्वत्यैनमः जिह्वायाम् । इन्द्रायनमः दक्षिणभुजे । वलयेनमः वामभुजे । प्रह्लादायनमः दक्षिणस्तने । विश्वकर्मणे

नमःवामस्तने । नारदायनमःदक्षिणकुक्षौ । अनन्तादिभ्योनमःवामकुक्षौ । वरुणायनमःहस्तयोः । मित्रायनमःपादयोः । विश्वेभ्योदेवेभ्योनःऊरुमध्ये । पितृभ्योनमःजानुमध्ये । यज्ञेभ्योनमःजङ्घयोः । राक्षसेभ्योनमःगुल्फयोः ।पिशाचेभ्योनमःपादयोः । असुरेभ्योनमःपादाङ्गुलीषु । विद्याधरेभ्योनमःपार्ष्ण्योः । ग्रहेभ्योनमःपादतलयोः । गुह्यकेभ्योनमःगुदे । पूतनादिभ्योनमःनखेषु । गन्धर्वेभ्योनमःओष्ठयोः ॥ कार्त्तिकेयायनमःगणेशायनमःकटिपार्श्वयोः ॥ इतिदेवयोनिन्यासः ॥ मत्स्यायनमःमूर्द्धिन ॥ कूर्मायनमःपादयोः ॥ नृसिंहायनमःललाटे ॥ बाराहायनमःजङ्घयोः ॥ वामनायनमःमुखे ॥ परशुरामायनमःहृदये ॥ रामायनमःबाहुषु ॥ कृष्णायनमः नाभ्याम् ॥ बौद्धायनमः

वुद्धौ ॥ कल्किनेनमः जानुनि ॥ केशवायनमःशिरसि ॥ नारायणायनमःमुखे ॥
माधवायनमःग्रीवायां ॥ गोविन्दायनमःबाह्वो ॥ विष्णवेनमःहृदये ॥ मधुसुदनाय
नमःपृष्ठे ॥ त्रिविक्रमायनमःकट्यां ॥ बामनायनमःजठरे ॥ श्रीधरायनमः
हृषीकेशायनमःजङ्घयोः ॥ पद्मनाभायनमःगुल्फयो ॥ दामोदरायनमःपादयोः ॥
इतिमूर्त्तिन्यासः ❀ ॥ ❀ अश्वमेधायनमःमूर्द्धिन ❀ ॥ ❀ नरमेधायनमःल
लाटे ॥ राजसूयायनमःमुखे ॥ गोसवायनमःकण्ठे ॥ द्वादशाहायनमःहृदि ॥ अही
नेभ्योनमःनाभौ ॥ सर्वंजितेभ्योनमःदक्षिणकट्यां ॥ सर्वंमेधायनमःवामकट्यां ॥
अग्निष्टोमायनमःलिङ्गे ॥ अतिरात्रायनमःवृषणयोः ॥ आप्तोर्यामायनमःऊर्वोः ॥
षोडशिनेनमःजानोः ॥ उक्थायनमःदक्षिणजङ्घायाम् ॥ वाजपेयायनमःवाम

जंङ्घायाम् ॥ अत्यग्निष्टोमायनमःदक्षिणवाहौ॥चतुर्मास्यायनमःवामवाहौ ॥ सौत्रामण्यैनमःहस्तेषु ॥ पशिवष्टिभ्योनमःअङ्गुलीषु ॥ दर्शायनमःपौर्णमासायनमःनेत्रयोः ॥ सर्वेष्टिभ्योनमःरोमकूपेषु ॥ स्वाहाकारायनमःवषट्कारायनमःस्तनयोः ॥ पञ्चमहायज्ञेभ्योनमःपादाङ्गुलीषु ॥ आहवनीयायनमःमुखे ॥ दक्षिणाग्नयेनमःहृदये ॥ गार्हपत्यायनमःनाभौ ॥ वेद्यैनमःउदरे ॥ प्रवर्ग्यायनमःभूषणेषु ॥ सवनेभ्योनमःपादयोः ॥ इध्मेभ्योनमःवाहुषु ॥ दर्भेभ्योनमःकेशेषु ॥ इतिक्रतुन्यासः ॥ अथमूलमन्त्रन्यासः ॥ आयुधन्यासः ॥ अङ्गन्यासः ॥ इतिसाधारणाःसर्वत्र ॥ वैष्णवमधिकृत्यतूच्यन्ते ॥ धर्मायनमःमूर्ध्नि ॥ ज्ञानायनमःहृदि ॥ वैराग्यायनमःगुह्ये ॥ ऐश्वर्यायनमःपादयोः ॥ इतिगुणन्यासः ॥

खड्गायनमःशिरसि ॥ शार्ङ्गायनमःमस्तके ॥ मुसलायनमः दक्षिणभुजे ॥ हलायनमःवामभुजे ॥ चक्रायनमः नाभ्याम् ॥ जठरेपृष्ठेच ॥ शङ्खायनमःलिङ्गे वृषणेच ॥ गदायैनमःजङ्घयोर्जानुनोश्च ॥ पद्मायनमःगुल्फयोःपादयोश्च ॥ वज्रायनमः ॥ शक्तयेनमः ॥ दण्डायनमः ॥ खड्गायनमः ॥ पाशायनमः ॥ ध्वजायनमः ॥ अङ्कुशायनमः ॥ त्रिशूलायनमः ॥ चक्रायनमः ॥ पद्मायनमः ॥ इतिशिवे ॥ इत्यायुधन्यासः ॥ लक्ष्म्यैनमोललाटे ॥ सरस्वत्यैनमःमुखे ॥ रत्यैनमःगुह्ये ॥ प्रीत्यैनमःकण्ठे ॥ कीर्त्यैनमःदिक्षु ॥ शान्त्यैनमःहृदि ॥ तुष्टेयेनमःजठरे ॥ पुष्ट्यैनमःसर्वत्र ॥ इतिशक्तिन्यासः ॥ मूलमन्त्रस्य ॥ ॐनमःहृदये शिरसि ॥ भगवतेनमःशिखायां ॥ वासुदेवायनमःकवचायहुंसर्वत्र ॥ वौषट्ने

त्राभ्यांफट्करतलकरपृष्ठाभ्याम् ॥ अस्त्रायफट्दक्षिणवामस्तनयोः ॥ श्रीवत्सायनमःउरसि ॥ कौस्तुभायनमःकण्ठेवनमालायाम् ॥ इत्यङ्गन्यासः ॥ ॐपादयोः ॥ नजानुनोः ॥ मोगुह्ये ॥ भनाभ्यां ॥ गहृदये ॥ वकण्ठे ॥ तेमुखे वानेत्रयोः ॥ सुभाले ॥ देमूर्ध्नि ॥ वादक्षिणपार्श्वे ॥ यउत्तरपार्श्वे ॥ इतिद्वादशाक्षरन्यासः ॥ प्रतिमायाञ्जीवन्यासः । तत्रतेजोभावयित्वाबुद्धीन्द्रियकर्मेन्द्रियमनः प्राणपञ्चकाहङ्कारतन्मात्रादिकंसर्वंसंयोज्यपुरुषभावं भावयित्वासर्वसाक्षिणंचभावयित्वातत्र तत्वत्रयंन्यसेत् । तद्यथा ॥ आत्मतत्वायनमः आत्मतत्वाधिपतयेब्रह्मणेनमः पादयोः ॥ विद्यातत्वायनमःविद्यातत्वाधिपतयेविष्णवेनमःहृदये ॥ शिवतत्वायनमःशिवतत्वाधिपतयेरुद्रायनमःशिरसीति । अथगायत्रीन्यासः । सूर्यस्य । तपा

दाङ्गुष्ठयोः । त्सगुल्फयोः । विंजङ्घयोः । तुजानुनोः । वंऊर्वोः । रेगुह्ये । णिवृषण योः । यङ्कटिदेशे । ❀ ❀ ❀ ❀ ❀ ❀ ❀ ❀ ❀ ❀

मनाभौ ॥ गोंजठरे ॥ देस्तनयोः ॥ वहृदये ॥ स्यकण्ठे ॥ धिबदने ॥ मता लुदेशे ॥ हिनासिकाग्रे ॥ विचक्षुषोः ॥ योभ्रूमध्ये ॥ योललाटे ॥ नः पूर्व दिशि ॥ प्रदक्षिणदिशि ॥ चोपश्चिमदिशि ॥ दउत्तरदिशि ॥ यामूर्ध्नि ॥ तत्सर्वत्र तत्सवितुर्हृदये ॥ वरेण्यंशिरसि ॥ भर्गोदेवस्यशिखायां ॥ धीमहिकवचे ॥ धियोयोनःनेत्रयोः ॥ प्रचोदयात्अस्त्रे ॥ इतिगायत्रीन्यासः ॥ ओ३म्अग्निमीळे पुरोहितंयज्ञस्यदेवमृत्विजम् होतारंरत्नधातमम् ॥ इतिपादयोः ॥ ओ३म्इषेत्वोर्ज्जे त्वाँव्वायवस्त्थदेवोवं÷सविताप्प्रार्प्पयतुश्श्रेष्ठतमायकर्म्मणऽआप्प्यायद्ध्वमग्घ्न्या

ऽइन्द्राय भागम्प्रजावतीरनमीवाऽअयक्ष्मामामावस्तेनऽईशतमाघशंछंसोद्ध्रुवाऽअस्मिन्गोपतौस्यातवह्वीर्य्यजमानस्यपशून्पाहि ॥ वा. । सं. । अ. । १ । मं. । १ ॥ इतिगुल्फयोः ॥ ॐअग्नऽआयाहिवीतयेगृणानोहव्यदातये ॥ निहोतासत्सिवर्हिषि ॥ इतिजङ्घयोः ॥ ॐशन्नोदेवीरभिष्टयऽआपोभवन्तुपीतये । शँय्योरभिस्स्रवन्तुनः ॥ इतिजान्वोः ॥ ॐबृहद्रथन्तरेऊर्वोः ॥ ॐस्वस्तिनः० । जठरे । दीर्घायुत्वेतिहृदये ॥ ॐदीर्घायुत्त्वायबलायꣳवर्च्चसे ॥ सुप्रजास्त्वायसहसाऽअथोजीवशरदःशतम् ॥ इतिहृदये ॥ ॐश्रीश्चतेतिकण्ठे ॥ ॐत्रातारमितिवक्त्रे ॥ ॐत्र्यम्बकँय्यजामहइतिस्तनयोःनेत्रयोश्च ॥ ॐमूर्द्धानन्दिवइतिशिरसि ॥ अथद्वादशाक्षरेणनारायणस्यमूर्त्तिन्यासः ॥ ॐकेशवायनमः

शिरसि ॥ ॐनंनारायणायनमःमुखे ॥ ॐमोंमाधवायनमोग्रीवायां ॥ ॐमंगोविन्दाय नमःकण्ठे ॥ गंविष्णवेनमःपृष्ठे ॥ वंमधुसूदनायनमःकुक्षौ ॥ तेंत्रिविक्रमाय नमःकट्यां ॥ वांवामनायनमःजङ्घयोः ॥ सुंश्रीधरायनमःवामगुल्फे ॥ देंहृषीकेशायनमःदक्षिणगुल्फे ॥ वांपद्मनाभायनमःवामपादे ॥ यंदामोदरायनमःदक्षिणेपादे ॥ हुंहृदयायनमःहृदये ॥ विष्णवेनमःशिरसि ॥ ब्रह्मणेनमःशिखायां ॥ ध्रुवायनमःकवचे ॥ चक्रिणेनमःअस्त्रायफट्हस्तयोः ॥ नमःशंभवायनमः गायत्रीन्दक्षिणनेत्रे ॥ विजयायनमःसावित्रींवामनेत्रे ॥ चक्रिणेचक्ररूपाय नमःपिङ्गलाक्षन्दिक्षु ॥ इत्यष्टाङ्गविष्णुमन्त्रन्यासः ॥ ॐसहस्रशीर्षेतिपादयोः ॥ ॐपुरुषऽएवेङ्गतिजङ्घयोः ॥ एतावानितिजानुनोः ॥ त्रिपादूर्ध्वमित्यूर्वोः ॥ तस्मा

द्विराडितिवृषणे ॥ तस्माद्यज्ञेतिकट्यां ॥ तस्माद्यज्ञादितिनाभ्यां ॥ तस्मादश्वाइतिहृदये ॥ तंयज्ञमितिस्तनयोः ॥ यत्पुरुषमितिवाह्वोः ॥ ब्राह्मणोस्येतिगले ॥ चन्द्रमामनसइतिमुखे ॥ नाभ्याऽआसीतिनासायां ॥ यत्पुरुषेणेतिचक्षुषोः ॥ सप्तास्येतिकर्णयोः ॥ यज्ञेनयज्ञमितिशिरसि ॥ इतिपुरुषसूक्तन्यासः ॥ अद्भ्यःसंभृत० इतिहृदये ॥ वेदाहमितिशिरसि ॥ प्रजापतिरितिशिखायाम् ॥ योदेवेभ्यइतिकवचे ॥ रुचम्ब्राह्मयमितिनेत्रयोः ॥ श्रीश्चतइतिअस्त्रे ॥ इत्युत्तरनारायणन्यासः ॥ शिवस्यचेत्कलान्यासः ॥ अथशिवस्यपञ्चब्रह्मन्यासः ॥ तद्यथा ॥ अङ्गुष्ठयोरीशानं ॥ तर्जन्योस्तत्पुरुषं ॥ मध्यमयोरघोरं ॥ अनामिकयोर्वामदेवम् ॥ कनिष्ठयोःसद्योजातम् ॥ ततःकनिष्ठयोःहृदये ॥ अना

मिकयोःशिरसि ॥ मध्यमयोःशिखायां ॥ तर्जन्योःकवचेअङ्गुष्ठयोरस्त्रोविन्यस्य ॥ परेणतेजसासंयोज्य ॥ कवचेनावगुण्ठ्यसर्वकर्मसुनियोजयेत् ॥ आचमनम् । अनेनविधिनादेवस्यकरन्यासम्विधायलिङ्गमुद्राम्वध्वा ॥ ॐईशानःसर्वविद्यानामीश्वरःसर्वभूतानांब्रह्माधिपतिर्ब्रह्मणोधिपतिर्ब्रह्माशिवोमेअस्तुसदाशिवोमितिईशानमुष्टिंवध्वा ॥ अङ्गुल्यग्रेरुद्रमुद्रयामूर्द्ध्नि ॥ ॐतत्पुरुषायविद्महेमहादेवायधीमहि ॥ तन्नोरुद्रःप्रचोदयात् ॥ इति ॥ एवंतर्जन्यङ्गुष्ठयोगात्तत्पुरुषं० । मुखे ॥ ॐअघोरेभ्योथघोरेभ्योघोरघोरतरेभ्यः ॥ सर्वेभ्यःसर्वसर्वेभ्योनमस्तेअस्तुरुद्ररूपेभ्यः ॥ इतिमध्यमाङ्गुष्ठयोगेनहृदि । अघोरं ॥ ओंवामदेवायनमोज्येष्ठायनमःश्रेष्ठायनमोरुद्रायनमःकालायनमः कलविकरणायनमोवलबि

करणायनभोवलायनमोवलप्रमथनायनमःसर्वभूतदमनायनमोमनोन्मनायनमः ॥ इत्यङ्गुष्ठानामिकायोगेनगुह्ये ॥ ओंसद्योजातंप्रपद्यामिसद्योजातायवैनमोनमः ॥ भवेभवेनातिभवेभवस्वमांभवोद्भवायनमः । इतिकनिष्ठाङ्गुष्ठयोगेनपादादारभ्यमस्तकान्तंयावन्मूर्त्तिव्यापकत्वेनब्रह्मन्यसेत् ॥ ततःईशानःसर्वविद्यानामितिशशिनसुपरिमूर्ध्नि । ईश्वरःसर्वभूतानामितिकल्पितचन्द्रोदयदलंमूर्ध्निपूर्वे ॥ ब्रह्माधिपतिर्ब्रह्मणोधिपतिर्ब्रह्मणेनमइति । इष्टांदक्षिणमूर्ध्नि ॥ शिवोमेअस्तुनमइति मरीचिमुत्तरमूर्ध्नि ॥ सदाशिवोम्नमइतिज्वालिनींपश्चिममूर्ध्नि ॥ एवमीशानस्यकलापंचकम् । ततःतत्पुरुषायविद्महेनमइतिपूर्ववक्त्रेशान्ति । महादेवायधीमहीतिदक्षिणवक्त्रेविद्यां ॥ तन्नोरुद्रइत्युत्तरवक्त्रेप्रतिष्ठां ॥ प्रचोदयादि

तिपश्चिमवक्त्रेधृतिमितितत्पुरुषकलाचतुष्टयन्यासः । अघोरेभ्योनमइतितमांहृदये । अथघोरेभ्योनमइतिरजांमूर्ध्नि । घोरइतिजरायैनमःस्कन्धयोः । घोरतरेभ्यइतिनिद्रायैनमोनाभौ । सर्वेभ्यःइतिसर्वव्याधयेनमःकुक्षौ । सर्वशर्वेभ्यः इतिमृत्यवेनमःपृष्ठे ॥ नमस्तेअस्तुइतिक्षुधायैनमःवक्षसि ॥ रुद्ररूपेभ्यस्तृषायै नमःउरसि ॥ इत्यष्टावघोरकलाः ॥ वामदेवायनमइतिरजाङ्गुह्ये ॥ ज्येष्ठाय नमइतिरक्षांसिलिङ्गे ॥ श्रेष्ठायनमइतिरतिन्दक्षिणोरौ ॥ रुद्रायनमइतिकल्पांवामोरौ ॥ कालायनमइतिकामांदक्षिणजानौ ॥ कलविकरणायनमइतिसंजीविन्यैनमःवामजानौ ॥ वलविकरणायनमइतिक्रियायैनमःदक्षिणजङ्घायां ॥ वलायनमइतिवृद्ध्यैनमःवामजङ्घायां॥वलच्छायायैनमःदक्षिणस्फिचि ॥ प्रमथनायनमः

धात्रींवामस्फिचि ॥ सर्वभूतदमनायनमइतिभ्रामणीङ्कट्यांमनोनमइतिपोषिणींदक्षिणपार्श्वे ॥ उन्मनायनमइतिज्वरांवामपार्श्वे ॥ इतित्रयोदशकलाः॥सद्योजातंप्रपद्यामिनमइतिसिद्धिंदक्षिणपादे ॥ सद्योजातायवैनमोनमइतिऋद्धिंवामपादे ॥ भवेनमइतिकीर्त्तिन्दक्षिणपाणौ ॥ अभवेनमइतिलक्ष्मींवामपाणौ ॥ नातिभवेनमइतिमेधान्नासायाम् ॥ भवस्वमान्नमइतिकान्तिंशिरसि ॥ भवनमइतिस्वधान्दक्षिणवाहौ ॥ उद्भवायनमइतिप्रभांवामवाहौ ॥ इतिसद्योजातकलाष्टकम् ॥ ततस्तमाद्याःसर्वाःअत्रविशांत्वितिकलान्तरन्यासभावनाङ्कृत्वा ॥ मुद्राश्चप्रदर्श्यविद्यादेवंहंसंसंपाद्यहंसहंसोतिहृदयादिन्यासङ्कुर्य्यात् ॥ यथा ॥ हंसांहृदयायनमः ॥ हंसींशिरसेस्वाहा ॥ हंसूंशिखायैवषट् ॥ हंसैंकवचायहुम् ॥ हंसौं

नेत्रत्रयायवौषट् ॥ हंसः अस्त्रायफट् ॥ ॐ हंसहंसेतियोब्रूयाद्धंसोनामसदाशिवः ॥ एवंन्यासविधिङ्कृत्वाततःसंपुटमारभेदितिबौधायनोक्तविधिः ॥ अथनृसिंह ॥ नृसिंहउग्ररूपज्वलज्वलप्रज्वलप्रज्वलस्वाहा ॥ नारसिंहीयदास्थाप्यात्वधिवास्य निशागमे ॥ कृत्रिमंवाथसाक्षाद्वापशुन्दत्वाबलिंहरेत् ॥ एवंन्यासङ्कृत्वा ॥ निद्राकलशेनिद्रामावाहयेत् ॥ यथा ॥ परमेष्ठिनंनमस्कृत्यनिद्रामावाहयाम्यहम् ॥ मोहिनींसर्वभूतानांमनोविभ्रमकारिणीं ॥ विरूपाक्षेशिवेशान्तेआगच्छत्वन्तुमोहिनि ॥ वासुदेवहितेकृष्णेकृष्णाम्वराविभूषिते ॥ आगच्छसहसाजस्रं सुप्तसंसारमोहिनि ॥ सुषुप्स्वसंहरेदेविकुमार्येकान्तमानसे ॥ श्रमनिःश्वासवाह्यञ्चआगच्छभुवनेश्वरि ॥ तमःसत्वरजोपेतेआगच्छत्वरिवारिणि ॥ मनो

वुद्धिरहङ्कारःसंहारस्त्वंसरस्वति ॥ शब्दस्पर्शश्चरूपञ्चरसोगन्धश्चपञ्चमः ॥
आगच्छगृह्णसंक्षिप्यमोहपाशनिवन्धिनि ॥ भवस्योत्पत्तिहेतुस्त्वंयावदाभूत
संप्लवम् ॥ भुवःकल्पान्तसन्ध्यायांवससित्वञ्चराचरे ॥ भोगिशय्याप्रसुप्त
स्यवासुदेवस्यशासने ॥ त्वंप्रतिष्ठासिवैदेविमुनियोनिसमुत्थिते ॥ पितृदेव
मनुष्याणांसयक्षोरगरक्षसाम् ॥ पशुपक्षिमृगाणाञ्चयोगमायाविवर्धिनि ॥
वससिसर्वसत्त्वेषुमातेवहितकारिणि ॥ एहिसावित्रिमूर्तेत्वञ्चक्षुर्भ्यांस्थानगोच
रे ॥ विशनासापुटेदेविकण्ठेचोत्कण्ठिताविश ॥ प्रतिभावयमांसर्वंमातृवद्देवि
सुन्दरि ॥ इदमर्घ्यंमयादत्तंपूजेयम्प्रतिगृह्यताम् ॥ उपप्रागात्परमंयदितिम
न्त्रेणतस्याःपूजाविधिःस्मृतः ॥ ॐउप॒प्रागा॑त्पर॒मंय्यत्स॒धस्थ॒मर्व्वाँ॒२८॥अ

च्छांपितरम्मातरंञ्च ॥ अद्याद्देवाञ्जुष्टंतमोहिगम्याऽअथाशांस्तेदाशुषेव्वार्य्याणि ॥ वा. । सं. । अ. । २९ । मं. । २४ ॥ इतिमन्त्रेणनिद्राकलशेनिद्रांपूजयित्वा ॥ लोकपालमातृक्षेत्रपालभूतेभ्योवलिन्दत्वा ॥ संस्थाप्यदेवंशय्यातःप्राच्यांसर्वतोभद्रेपूजयेत् ॥ विष्णुश्चेद्द्वादशारेचक्रेमध्येऽष्टदलेपद्मेमूलमन्त्रेणदेवन्निवेशयेत ॥ ॐहुंहृदयायनमःइतिकर्णिकायांहृदयंपूजयेत् ॥ ॐविष्णवेनमइतिशिरःपूर्वपत्रे पू० ॥ ॐब्रह्मण्यायनमइतिशिखांदक्षिणपत्रे पू० ॥ ॐध्रुवायनमःइतिकवचंपश्चिमेपत्रे पू० ॥ ॐचक्रिणेनमःफट्अस्त्रमुत्तरपत्रे पू० ॥ ॐशम्भवायनमइतिगायत्रीमाग्नेयदले पू० ॥ ॐविजयायनमःसावित्रीमीशानदले पू० ॥ ॐज्योतीरूपायनमोनैर्ऋत्यदले पू० ॥ ॐचक्रिरूपायनमःपिङ्गलास्त्रंवायव्यदले

पू० ॥ इतिगर्भावरणम् ॥ आशासुपूर्वादिक्रमेणकेशवनारायणमाधवगोविन्दविष्णुमधुसूदनत्रिविक्रमवामनश्रीधर हृषीकेशपद्मनाभदामोदराइतिद्वादशमूर्तीः पूजयेत् ॥ इतिद्वितीयावरणम् ॥ ततःप्रागादितः ॥ खड्गायनमः ॥ गदायैनमः ॥ चक्रायनमः ॥ शङ्खायनमः ॥ पद्मायनमः ॥ हलायनमः मुसलायनमः ॥ शार्ङ्गायनमइत्यपिपूजयेत् ॥ इतितृतीयावरणम् ॥ अथमूर्तीशाः ॥ पृथिवीमूर्त्तयेनमःपृथिवीमूर्त्यधिपतयेशर्वायनमः ॥ अग्निमूर्त्तयेनमःअग्निमूर्त्यधिपतयेपशुपतयेनमः ॥ यजमानमूर्तयेनमःयजमानमूर्त्यधिपतयेउग्रायनमः ॥ अर्कमूर्तयेनमः ॥ अर्कमूर्त्यधिपतयेरुद्रायनमः ॥ जलमूर्तयेनमःजलमूर्त्यधिपतयेभवायनमः ॥ वायुमूर्त्तयेनमःवायुमूर्त्यधिपतयेईशानायनमः ॥ इन्दु

मूर्त्तयेनमःइन्दुमूर्त्यधिपतयेमहादेवायनमः ॥ खमूर्तयेनमःखमूर्त्यधिपतयेभीमायनमःइत्यष्टौमूर्तीस्तदाधिपांश्चार्चयेत् ॥ वैष्णवेपञ्चैवमूर्त्तयः तदापूर्वे ॥ पृथिवीमूर्तयेनमःपृथिवीमूर्त्त्यधिपतयेवासुदेवायनमः ॥ दक्षिणे ॥ जलमूर्तयेनमःजलमूर्त्यधिपतयेसङ्कर्षणायनमः ॥ पश्चिमे ॥ अग्निमूर्त्तयेनमःअग्निमूर्त्यधिपतयेप्रद्युम्नायनमः ॥ उत्तरे ॥ वायुमूर्तयेनमःवायुमूर्त्यधिपतयेअनिरुद्धायनमः ॥ मध्ये ॥ खमूर्तयेनमःखमूर्त्यधिपतयेनारायणायनमः ॥ इति ॥ शैवेपञ्चमूर्तिपक्षे ॥ ब्रह्माविष्णुरुद्रेश्वरसदाशिवाःपञ्चमूर्तिपाः ॥ इन्द्रादयस्तुसर्वत्रपूजनीयाः ॥ ततःआचार्यःक्रमेणपालाशोदुम्बराश्वत्थापामार्गशमीसामिधाम्प्रत्येकंद्वादशसहस्रंषट्त्रीण्यष्टसहस्रमष्टशतंवाहिरण्यगर्भेतिकुण्डसमीपेसंस्थाप्यशांति

कपौष्टिकैर्मन्त्रैर्यथाविभागंसात्विक्जुहुयात् ॥ प्रतिकुण्डमेकैकऋत्विक्मूर्त्तिमूर्त्तिपास्तत्तन्मन्त्रेणपूज्याः ॥ अथशान्तिकमन्त्राः ॥ ॐशन्नोव्वातःपवताꣳशन्नस्तपतुसूर्य्यः ॥ शन्नःकनिक्रदद्देवःपर्ज्जन्न्योऽअभिवर्षतु ॥ स्वाहा ॥ वा.। सं.। अ. ॥ ३६ ॥ मं. ॥ १० ॥ ॐशन्नऽइन्द्राग्नीभवतामवोभिःशन्नऽइन्द्रावरुणारातहव्या ॥ शन्नऽइन्द्रापूषणाव्वाजसातौशमिन्द्रासोमासुवितायशँय्योः ॥ स्वाहा ॥ वा.। सं.। अ.। ३६ । मं.। ११ ॥ ॐशन्नोदेवी० । वा.। सं.। अ.। ३६ । मं.। १२ । स्वाहा० ॥ इतिशान्तिकमन्त्राःअथपौष्टिकाः ॥ ॐपुष्टिर्नरण्वाक्षितिर्नपृथ्वीगिरिर्नभुज्मक्षोदोनशम्भुस्वाहा ॥ १ ॥ ॐगयस्फानोअमीवहावसुवित्पुष्टिवर्द्धनः ॥ सुमित्रःसोमनोभवस्वाहा ॥ २ ॥ तौत्ति

रीये ॥ ॐत्र्यम्बकँय्यजामहे० । स्वाहा ॥ ३ ॥ इतिपौष्टिकाः ॥ ततोमूर्त्तिपाः ॥ पूर्वकुण्डेपालाशसमिधामष्टसहस्रमष्टशतम्वाघृतेनतिलैर्वाअग्निमीळेइतिमन्त्रेणजुहुयुः ॥ दक्षिणकुण्डे ॥ उदुंबरसमिधांपूर्वोक्तसंख्ययाइषेत्वेतिमन्त्रेणजुहुयुः ॥ २ ॥ ततःपश्चिमकुण्डेअश्वत्थसमिधोग्नआयाहीतिमन्त्रेणजुहुयुः ॥ एवमुत्तरे ॥ अपामार्गसमिधंशन्नोदेवीरितिमन्त्रेणजुहुयुः ॥ ततःआचार्यकुण्डेपूर्वोक्तसङ्ख्ययाप्रधानमन्त्रेणशमीसमिधोहुत्वा ॥ यदाऽष्टौकुण्डानितदावौषडित्याग्नेये ॥ दशप्रणवान्तसकृद्गायत्रींनैर्ऋत्ये ॥ जातवेदसेतिमन्त्रेणवायव्ये ॥ ॐनमोब्रह्मणइतीशानकुण्डे ॥ ॐमूर्द्धानन्दिवइतिपूर्णाहुतिञ्जुहुयुः ॥ आहुतिसंपातान्शान्तिकलशेकुण्डसमीपस्थेपातयेयुः ॥ ततोमू

र्तिमूर्तिपलोकपालेभ्यःसमिद्भिर्घृतेनतिलैर्वाऽष्टसहस्रमष्टशतंवाजुहुयुः ॥ पूर्तकमलाकरेपूर्वाद्यष्टकुण्डेषुक्रमेणखदिरपलाशो दुम्बरप्लाक्षवटापामार्गाश्वत्थशमीसमिधोजुहुयुः ॥ तेषांमंत्रास्तु ॥ ॐस्योनापृथिवीतिमं०स्वाहा ॥ इतिपृथिवीमूर्तेः ॥ ॐअघोरेभ्योथघोरेभ्यो० ॥ स्वाहा ॥ इतिमूर्तिपतेःशर्वस्य ॥ २ ॥ ॐइन्द्रायेन्दोमरुत्वतेपवस्वमधुमत्तमः ॥ ऋतस्ययोनिमासदम् ॥ स्वाहाइतीन्द्रस्य ॥ ३ ॥ ॐअग्निन्दूतम्० ॥ स्वाहाइत्यग्निमूर्तेः ॥ ४ ॥ ॐयःपशूनामधिपतिःरुद्रश्चन्तिचरोवृषा ॥ पशूनस्माकंमाहिꣳसीःएतदस्तुहुतन्तवस्वाहाइत्यग्निमूर्त्तिपतेःपशुपतेः ॥ ५ ॥ ॐअग्नआयाहिवीतये० ॥ स्वाहाइत्यग्नेः ॥ ६ ॥ ॐअसिहिवीरसेन्योसिभूरिपराददिः ॥ असिदभ्रस्यचिद्वृधोयजमानायशिक्षसिसुच

तेभू रितेवसु ॥ स्वाहाइतियजमानमूर्त्तेः ❀ ॥ ७ ॥ ॐतमिन्द्रंयोहवीमिमघवानमुग्रँसत्रादधानमप्रतिष्कुतँश्चवाँसिभूरि ॥ मँहिष्ठोगीर्भिराचयज्ञियोबवर्त्तराये नोविश्वासुयथाकृणोतुवज्रीस्वाहा॥ सा.सं.छं.अ.१प्र.५द.८मं.४ स्वाहाइतियजमानमूर्त्तिपतेरुग्रस्य ॥ ८ ॥ ॐयमायसोमंसुनुतायमायजुहुताहविः ॥ यमंहियज्ञोगच्छत्यग्निदूतोअरङ्कृतः ॥ स्वाहा इतियमस्य ॥ ९ ॥ ॐउदुत्यञ्जातवेदसन्देवम्वहन्तिकेतवः ॥ दृशेविश्वायसूर्य्यम्॥स्वाहा ॥ वा.। सं।अ.। ॥ ३३ ॥ मं. ॥३१॥ इतिसूर्यमूर्तेः ॥ १० ॥ ॐआवोराजानमध्वरस्यरुद्रंहोतारंसत्ययजंरोदस्योः ॥ अग्निपुरातनयित्नोरचित्ताद्धिरण्यरूपमवसेकृणुध्वम्स्वाहा सा.। छं.। सं.। अ.। १। प्र.। १। द.। ७। मं.। ७॥ ॥ इतिसूर्यमूर्तिपतेःरुद्रस्य ॥ ११॥ ॐअ

सुन्वन्तमयजमान० ॥ स्वाहा ॥ इतिनिर्ऋतेः ॥ १२ ॥ ॐआपोहिष्ठामयोभुवः० स्वाहाइतिजलमूर्त्तेः ॥ १३ ॥ ॐविभूषन्नग्नउभयाअनुव्रातादूतोदेवानामूरजसीसमीयसे ॥ यतेधीतिसुमतिमावृणीमहेधस्मानस्त्रिवरूथःशिवोभवस्वाहा ॥ इतिजलमूर्तिपतेर्भवस्य ॥ १४ ॥ ॐइमम्मेवरुणेति० ॥ स्वाहाइतिवरुणस्य ॥ १५ ॥ ॐवाताअवातुभेषजंशम्भुमयोभुनोहृदे ॥ प्रणआयूछंषितारिषत् ॥ स्वाहा ॥ साम. ॥ इतिवायुमूर्त्तेः ॥ १६ ॥ ॐतमीशानमिति० ॥ स्वाहा । इतिवायुमूर्त्तिपतेरीशानस्य ॥ १७ ॥ ॐआनोनियुद्भिः० ॥ स्वाहाइतिवायोः ॥ १८ ॥ ॐवयछंसोमव्रतेइतिस्वाहा ॥ इतिसोममूर्त्तेः ॥ १९ ॥ ॐइन्द्रन्तंशुंभपुरुहन्मन्नवसेयस्यद्विताविधर्त्तरि ॥ हस्तायव

ऋःप्रतिधायिदर्शतोमहोदिवेनसूर्यःस्वाहा ॥ साम० ॥ इतिसोममूर्तिपतेर्महादेवस्य ॥ २० ॥ ॐअभि त्यन्देवछंसवितारंमोण्यो÷ ॥ कविक्रतुमर्च्चामिसत्यसवछंरत्नधामभिप्रियम्मतिङ्कविम् ॥ ऊर्द्ध्वायस्यामतिर्भाऽअदिद्युतत्सवीमनिहिरण्यपाणिरमिमीतसुक्रतु÷कृपास्व÷ ॥ प्प्रजाभ्यस्त्वाप्प्रजास्त्वानुप्प्राणन्तुप्प्रजास्त्वमनुप्प्राणिहिस्वाहा ॥ वा. । सं. । अ. । ४ । मं. । २५ । इतिकुबेरस्य ॥ २१ ॥ ॐआदित्प्रत्नस्यरेतसोज्योतिःपश्यन्तिवासरम् ॥ परोयदिध्यतेदिवि । स्वाहा ॥ सा. । छं. । सं. । अ. । १ । प्र. । २ । द. । २ । मं. । १० । इतिखमूर्तेः ॥ २२ ॥ ॐमृगोनभीमःकुचरोगिरिष्ठाःपरावतऽआजगन्थापरस्याः ॥ सृकछंसछंशायंपविमिन्द्रतिग्ग्मंविशत्रूँ१ताढिविमृधोनुदस्व ॥

स्वाहा ॥ वा. । सं. । अ. । १८ । मं. । ७१ । इतिखमूर्तिपतेर्भीमस्य ॥ २३ ॥ ॐअभित्वादेवसवितरीशानंवार्याणाम् ॥ सदावन्भागमीमहे ॥ स्वाहा ॥ साम ॥ इतीशानस्य ॥ २४ ॥ ततोष्टसहस्राऽष्टशताष्टाविंशत्यष्टान्यतमशङ्ख्पयामहाव्याहृतिभिस्तिलयवव्रीहिचर्वाज्यैःक्रमेणप्रत्येकंजुहुयुः ॥ तेषांव्याहृतिमंत्रास्तु पूर्वकमलाकरे ॥ ॐभूरग्नयेचपृथिव्यैचमहतेचस्वाहा ॥ १ ॥ ॐभुवोवायवे चान्तरिक्षायचमहतेचस्वाहा ॥ २ ॥ ॐसुवरादित्यायदिवेचमहतेचस्वाहा ॥३॥ ॐभूर्भुवःसुवश्चन्द्रमसेचनक्षत्रेभ्यश्चदिग्भ्यश्चमहतेचस्वाहा ॥ ४ ॥ इतिमहाव्याहृतिहोमः ॥ ततोगुरुःस्थाप्यदेवतालिङ्गकेनमंत्रेणघृतेनतिलैर्वाऽष्टसहस्रमष्टशतंवाहुत्वा ॥ पूर्णाहुतिन्दत्वा ॥ देवस्यदक्षिणकर्णेहोमन्निवेद्य ॥ पूर्वं

कुण्डेघृताहुत्यष्टकंमूलमंत्रेणहुत्वादेवपादौस्पृशेत् ॥ १ ॥ मूलमन्त्रेणपूर्वोक्त
सङ्ख्ययायांयाम्यकुण्डेहस्तेनदाधिहुत्वादेवनाभिंस्पृशेत् ॥ २ ॥ वारुण कुण्डेक्षीरं
हुत्वाहृदयंस्पृशेत् ॥ सौम्यकुण्डेमध्वाहुतीर्हुत्वामूर्द्धानंस्पृशेत् ॥ ४ ॥ पुनः
वारुणकुण्डेमिश्रङ्घृतादिचतुष्टयंहुत्वा ॥ तेनैवपूर्णाहुतिंहुत्वादेवसर्वाङ्गंस्पृशेत ॥५॥
ततःकूर्मशिलाब्रह्मशिलापिण्डकावाहनादिपरिवारदेवांश्चवैदिकैर्नाममन्त्रैर्वासंपूज्य
मुख्यप्रतिमायावामपामाधिवासयेत् ॥ तान्मधुघृतेनाभ्यज्यप्रक्षाल्यसंपूज्य ॥
वस्त्रेणाच्छाद्य । प्रधानप्रतिमायांपिण्डकायांस्वस्वमन्त्राणांन्यासङ्कुर्यात् ॥
तत्रविष्णुश्चेत्स्थाप्यस्तदा ॥ ॐघंढंपंभंफंलक्ष्यैनमः एतानिपंचाक्षराणिहृ
च्छिरःशिखाकवचनेत्रसंज्ञकानि ॥ हुंफडंतोवावचनसमुदायः ॥ इतिपिण्डका

॥ यथा ॥
यांपञ्चाङ्गानिन्यस्य ॥ तत्त्वत्रयमूर्तिमूर्तिपाश्चपूर्ववद्विन्यसेत् ॥ विद्यातत्वायनमः
आत्मतत्वायनमःआत्मतत्वाधिपतयेब्रह्मणेनमःपादयोः ॥ शिवतत्वायनमःशिवतत्वाधिपतये रुद्राय
विद्यातत्वाधिपतयेविष्णवेनमोहृदये ॥ शिवतत्वायनमःशिवतत्वाधिपतये रुद्राय
नमःशिरसि ॥ इतितत्वत्रयंन्यसेत् ॥ अथमूर्तिमूर्तिपाः ॥ पूर्वादिक्रमेण ॥
पृथिवीमूर्त्तयेनमःपृथिवीमूर्त्यधिपतयेशर्वायनमः ॥ १ ॥ अग्निमूर्तयेनमःअग्निमू
र्त्यधिपतयेपशुपतयेनमः ॥ २ ॥ यजमानमूर्तयेनमःयजमानमूर्त्यधिपतयेउग्रा
यनमः ॥ ३ ॥ अर्कमूर्तयेनमःअर्कमूर्त्यधिपतयेरुद्रायनमः ॥ ४ ॥ जलमू
र्तयेनमःजलमूर्त्यधिपतयेभवायनमः ॥ ५ ॥ वायुमूर्तयेनमःवायुमूर्त्यधिपतयेई
नशायनमः ॥ ६ ॥ दुमूर्त्तयनमःइन्दुमूर्त्यधिपतयेमहादेवायनमः ॥ ७ ॥

खमूर्तयेनमःखमूर्त्यधिपतयेभीमायनमः ॥ ८ ॥ इत्यष्टौमूर्तिमूर्तिपान्विन्यस्य ॥
ततःॐह्रींश्रींह्रांक्षःपरब्रह्मणेसर्वाधारायनमः ॥ ॐह्रींश्रींह्रांदिव्यतेजोधारिण्यैसुभ
गायैनमः ॥ इतिमंत्राभ्यामधिवासयेत् ॥ इत्याधिवासनम् ॥ अथप्रासादो
पिचेन्नूतनस्तस्याप्यधिवासनम् ॥ तत्रप्रासादाग्रेएकाशीतिपदंमण्डलमक्ष
तैःकृत्वा ॥ तेषुसप्तधान्यपुञ्जान्कृत्वाजलपूर्णानेकाशीतिकुम्भानाहत्य ॥ तत्रनव
नवकानांमध्येमध्यमंमध्यमङ्कोष्ठंज्ञात्वातेषुनवकुम्भान्मध्यपूर्वादिक्रमेणविन्यस्य ॥
ततःमध्यकुम्भे ॥ शम्युदुम्वराश्वत्थचंपकाशोकपलाशप्लक्षन्यग्रोधकदंवाम्र
विल्वार्ज्जुनवृक्षसंभवंपल्लवद्वादशकंसोमायवनस्पत्यंतर्गतायनमइतिनिःक्षिपेत् ॥
इतिमध्यकुम्भे ॥ अथपूर्वकुम्भे ॥ पद्माकरोचनादुर्वाङ्कुरदर्भपिञ्जूलश्वेत

ई०	गं.	गन्धोदकेन	गं.	गं.	गंधोदकेन	गं.	गं.	गंधोदकेम	गं.		आ०
	गंधो.	सप्तमृत्तिका ईशानकुंभे ७	गंधो.	गंधो.	पद्मकरोचनादि दश १० कंपूर्वे	गंधो.	गंधो.	यवादिसप्तक मग्नेये ७	गंधो.		
	गं.	गंधोदकेन	गं.	गं.	गंधोदकेन	गं.	गं.	गंधोदकेन	गं.		
	गं.	गंधोदकेन	गं.	गं.	गंधोदकेन	गं.	गं.	गंधादेकेन	गं.		
उ०	गंधो.	शंखपुष्पीत्यादि मूलाष्टकं सौम्ये८	गंधो.	गंधो.	पल्लवद्वादशकं मध्ये १२	गंधो.	गंधो.	सहदेवीत्याद्यष्ट कंयाम्ये	गंधो.	नवकचक्रम्	द०
	गं.	गंधोदकेन	गं.	गं.	गंधोदकेन	गं.	गं.	गंधोदकेन	गं.		
	गं.	गंधोदकेन	गं.	गं.	गंधोदकेन	गं.	गं.	गंधोदकेम	गं.		
	गंधो.	शम्युदुम्बरादि पंचकंवायव्ये ५	गंधो.	गंधो.	पञ्चगव्यं वारुणे ६	गंधो.	गंधो.	कदलीफलाद्यष्टकं नैर्ऋत्ये ८	गंधो.		
वा०	गं.	गंधोदकेन	गं.	गं.	गंधोदकेन	गं.	गं.	गंधोदकेन	गं.		नै०

पीतसर्षपासितरक्तचन्दनजातीकुसुमकुन्दनंद्यावर्त्तानीतिदशकंपूर्वे ॥ अथाग्नेये ॥
यवव्रीहितिलसुवर्णरजतसमुद्रगामिनदीकूलमृतिकाभूम्यसंस्पृष्टगोमयानीतिसप्तक
माग्नेये ॥ अथयाम्यकुम्भे ॥ सहदेवीविष्णुक्रान्ताभृङ्गराजमहौषधीशमीशता
वरीगुडूचीश्यामाकामित्यष्टकंयाम्ये ॥ अथनैर्ऋत्ये ॥ कदलीपूगीफलनारिके
लबिल्वनारङ्गमातुलुङ्गबदर्याआमलकमितिफलाष्टकन्नैर्ऋत्ये ॥ ततःमन्त्रसाधि
तंपञ्चगव्यंवारुणे ॥ अथवायव्यस्थकुम्भे ॥ शम्युदुम्बराश्वत्थन्यग्रोधपला
शकषायपञ्चकंवायव्ये ॥ अथसौम्यस्थकुम्भे ॥ शङ्खपुष्पीसहदेवीवलाशता
वरीकुमारीगुडूचीवचाव्याघ्रीतिमूलाष्टकंसौम्ये ॥ वल्मीकादिसप्तमृत्तिकाईशा
नकुम्भेनिधाय ॥ ॐहिरण्यवर्णांहरिणींसुवर्णरजतःस्रजाम् ॥ चन्द्रांहिरण्मयींल

क्ष्मीञ्जतवेदोममावह ॥ इतिमन्त्रेणमध्यकुम्भान्नभिमन्त्र्य ॥ हिरण्यवर्णाःशुचयइतिमंत्रेणवाशेषान्गन्धोदकपूरितान्मध्यमादिकलशानांसमन्तात्पूर्वादिक्रमेष्टाष्टौविन्यस्यमूलमन्त्रेणाभिमन्त्र्यसूत्रेणावेष्ट्यान्तर्वहिरधस्तादूर्ध्वञ्चप्रासादंपञ्चगव्येनसंप्रोक्ष्य ॥ मूर्द्धानन्दिवइतिवल्मीकमृदाविलिप्य ॥ ॐसमुद्रज्येष्ठाःसलिलस्यमध्यात्पुनानानायंत्यनिविशमानाः ॥ इन्द्रोयावज्रीबृषभोररादत्ताआपोदेवीरिहमामवन्तु ॥ इतीशानदिक्स्थेनमृत्तिकाकुम्भेनस्नापयेत् ॥ १ ॥ ॐयज्ञायज्ञावइतिमन्त्रेणवायव्यकषायकुम्भेन ॥ २ ॥ ॐपयःपृथिव्यामितिमन्त्रेणवारुणेनपंचगव्यकुम्भेन ॥ ३ ॥ ॐयाःफलिनीरितिमन्त्रेणनैर्ऋत्यफलकुम्भेन ॥ ४ ॥ ॐहꣳसःशुचिषदितिमन्त्रेणसौम्यस्थमूलकुम्भेन ॥ ५ ॥

ॐविष्णोरराटमसीतिमन्त्रेणपूर्वकुम्भेन ॥ ६ ॥ ॐसोमꣳराजानमितिमन्त्रेणवह्निस्थकुम्भेन ॥ ७ ॥

❀ ❀ ❀ ❀ ❀

ॐविश्वतश्चक्षुरितिमन्त्रेणयाम्यकुम्भेन ॥ ८ ॥ ॐनमोस्तुसर्प्पेभ्यइतिमन्त्रेणमध्यकुम्भेन ॥ ९ ॥ ॐइदमापःप्रवहतावद्यञ्चमलञ्चयत् ॥ यच्चाभिदुद्रोहानृतंयच्चशेपेऽअभीरुणम् ॥ आपोमातस्म्मादेनसःपवमानश्चमुञ्चतु ॥ वा. । सं. । अ. । ६ । मं. । १७ ॥ इतिमन्त्रेणअष्टभिः कलशैःपूर्वादिक्रमेणप्रासादंसशिखरं स्नापयेत ॥ एकाशीतिकुम्भासम्भवेतुगन्धोदकेनपूरितेनैककलशेन ॥ ॐदैव्याय कर्म्मणेशुन्धध्वन्देवयज्ज्यायैयद्वोशुद्धाःपराजघ्नुरिदम्वस्तच्छुन्धामि ॥ वा. । सं. । अ. । १ । मं. १३ ॥ इत्यर्घमन्त्रेणसम्प्रोक्ष्यसूत्रेणावेष्ट्यस्नापयित्वा ॥ देवरु

पंप्रासादङ्क्षितायित्वापताकादिनाशोभयित्वा । गन्धादि
स्तोहेवंसञ्चिन्त्यमन्त्रेणप्रासादमधिवासयेत् ॥ तद्य
भयाचिन्त्यसर्वरत्नोज्वलाकृतेयावच्चन्द्रश्चसूर्यश्चतावदत्रास्थि
पिंडिकावाहनपरिवारदेवतानान्तत्तन्मन्त्रैः प्रत्येकमष्टाविंश
त्वा ॥ मूलमन्त्रेणचर्वष्टोत्तरशतंहुत्वा ॥ चतस्रोगा
तत्क्षीरेणविष्णुगायत्र्याचरुंश्रपयित्वादेवायनिवेद्य ॥
सुदेवायधीमहि ॥ तन्नोविष्णुःप्रचोदयादितिमन्त्रेण
न्भोजयित्वा ॥ विष्णुर्मेप्रीयतामितिवदेत् ॥
रात्रौजागरणङ्कुर्य्यात् ॥ इतिप्रासादाऽधिवासनम्

थभद्रासनोप
थपत्यादीन्प
इमंशिलेष्ट
तम्प्रासादन्त
। इतिकुशाय
अथाऽचलप्रति
इतिदैवतमष्टश
ॐस्योनापृथिवी
रिभ्यइतिमं० ।

निष्ठानाप्रतिमानांसप्तरात्रंपंचरात्रं त्रिरात्रमेकरात्रंसद्योनिमितिमन्त्रे
तिपद्धतिकाराः ॥ अत्रश्लोकाः ॥ अनेकदिना ❀
होमानष्टौसहस्राणिविदधीरन्पृथक्पृथक् ॥ तस्मिंःशतिमन्त्रेण
तम् ॥ प्राग्वत्पूर्णाहुतिंहुत्वासकृज्जपन्तिद्वारपाः ॥ भिद्रुद्रोहा
त्सरशतंशतं ॥ दैशिकोमूर्तिपैःकुर्याद्यावत्कार्यंसमाप्यते । सं. ।
वलिंमंत्रैर्दद्याद्यथोदितैः ॥ आचार्यायदक्षिणादेयास्विग्भ्यःसशिखरं
जनंचतथान्येभ्योदेयंवित्तानुसारतः ॥ विनाधिवासनंयंदेव्या
इति ॥ ततोगुरुर्बहिर्निर्गत्यप्रासादाभिमुखोभूत्वातंदेवरू ॥ वा. ।
पादौपादशिलास्तस्यजङ्घापादोर्ध्वमुच्यते ॥ गर्भश॥ देवरू

खला ॥ स्तम्भाश्चवाहवोज्ञेयाघंटाजिह्वाप्रकीर्तिता थभद्रासनोप
योह्यपानोजलनिर्गमः ॥ ब्रह्मस्थानंयदेतच्चतन्नाभि पत्यादीन्प
स्कंपिंडिकाज्ञेयाप्रतिमापुरुषःस्मृतः ॥ पादचारस्त्वहङ्कारे इमंशिलेष्ट
तदूर्ध्वंप्रकृतिस्तस्यप्रतिमात्मास्मृतोबुधैः ॥ तलकुम्भाम्प्रासादन्त
तम् ॥ शुकनासाभवेन्नासागवाक्षःकर्णउच्यते ॥ कपो। इतिकुशाय
मलसारिका ॥ कलशस्तुशिरोज्ञेयंमज्जादिप्रदसंहित थाऽचलप्रति
न्यातप्रलेपोमांससमुच्यते ॥ अस्थीनिचशिलास्तस तिदैवतमष्टश
चक्षुषीशिखरास्तस्यध्वजाःकेशाःप्रकीर्तिताः ॥ ए स्योनापृथिवी
सुधीः ॥ प्रासादंपूजयेत्पश्चाद्गन्धध्वजादिभिःशुभैः भ्यइतिमं० ।

रिकल्पयेत् ॥ प्रासादमेवमभ्यर्च्चवाहनञ्चाग्रमण्ड
स्तोष्पतइतिमन्त्रेणाष्टोत्तशतंहुत्वा ॥ पूर्णाहुत्यन्तंस
वलिन्दत्वा ॥ देवसमीपमागत्य ॥ यथासंभवंभू
यचात्मानन्निवेद्यप्रणमेत् ॥ यत्रतुस्वयम्भूर्देवःप्रागे
श्चनूतनःतत्रापितदुत्तरेमण्डपङ्कृत्वा ॥ पूर्वेद्युःपुण्
तिष्ठोक्तमण्डपस्था[illegible]नंऋत्विग्वरणादिकङ्कुर्यात ॥
ङ्कृत्वा ॥ वास्तुदेवतापूजनाग्निप्रतिष्ठाग्रहपूजाज्यभा
स्तुपीठदेवतावास्तुदेवताहोममेकाशीतिकलशस्थापनञ्च
यित्वा ॥ यजमानमभिषिच्य ॥ प्रासादमुत्सृजेदित

ानीमितिमन्त्रे
❀
मइतिमन्त्रेण
ग्नांभिदुद्रोहा
श्रा. । सं. ।
ंसाशिखरं
ॐदेवब्या
॥ वा. ।
॥ देवरू

१२

मण्डपादुत्तरतः पूर्वंकल्पितशान्तिकलशादिजलैस्तण्डुरेस्थभद्रासनोप
िष्टंसपरिवारंयजमानमभिषिञ्चयुः ॥ ततःआचार्यःास्थपत्यादीन्प
रितोष्य ॥ प्रासादोत्सर्गंकुर्यात् ॥ तत्रमासपक्ष ॥ इमंशिलेष्ट
कादार्वादिनिर्मितंवलभीजगतीप्रकारपरिखागोपुरपरिवापंयुतम्प्रासादन्त
त्तद्देवतालोकावाप्तिकामःकुलद्वयानुग्रहायाऽमुकदेवताःजे ॥ इतिकुशाय
वजलानिभूमौक्षिप्त्वादेवमत्वाब्राह्मणान्भोजयेदितिप्र ॥ अथाऽचलप्रति
ष्ठायाःकर्मततःप्रातराचार्योमूलमन्त्रेणमूर्तिमूर्तिपातिल ॥ प्रतिदैवतमष्टश
तमष्टाविंशतिंवापूर्णाहुत्यन्तंस्वकुण्डहुत्वा ॥ तेॐस्योनापृथिवी
तिमन्त्रेण०स्वाहा ॥ इदंपृथिवीमूर्तेः ॥ ारेभ्यइतिमं० ।

स्वाहाइदंमूर्तिपतेःशर्वस्य ॥ २ ॥ ॐइन्द्रायेन्दोम
इदमिन्द्राय ॥ ऋक् ॥ ३ ॥ ॐअग्निन्दूतमितिग्रमण्ड
मूर्तेः ॥ ४ ॥ ॐयःपशूनामितिमंत्रेण । स्वाहयन्तंस
पतेः ॥ ५ ॥ ऋक्० ॥ ॐअग्नआयाहीतिमं० संभवंभू
साम० ॥ ६ ॥ ॐअसिहिवीरइतिमं० । स्वाहा ॥ःप्रागेव
ऋक् ॥ ॐतमिन्द्रंयोहविरितिमं० । स्वाहा ॥ इदंयजुःपुण
ॐयमायसोमंसुनुतेतिमं० । स्वाहा ॥ इदंयमाय० ॥ ॥
स्वाहा ॥ इदंसूर्यमूर्तेः ॥ १० ॥ ॐआवोराज्यभा
सूर्यमूर्तिपतेरुद्रस्य ॥ ११ ॥ ॐअसुन्वन्तमितिमं० नञ्च
तेदित

ानमितिमन्त्रे

❀

इतिमन्त्रेण
र्शाभिद्रुद्रोहा
ां. । सं. ।
तं संशिखरं
ॐदेवव्या
॥ वा. ।
॥ देवरु

तये ॥ १२ ॥ ॐआपोहिष्ठेतिमंत्रेण० । स्वाहा ॥
ॐविभूषन्नग्नेइतिमन्त्रेणस्वाहा ॥ इदंजलमूर्तिपते
म्भेब्बरुणोतिमन्त्रेणस्वाहा ॥ इदंवरुणस्य ॥ १५ ॥
तिमंत्रेणस्वाहा ॥ इदंवायुमूर्त्तेः ॥ १६ ॥ साम
णस्वाहा ॥ इदंवायुमूर्तिपतेरीशानस्य ॥ १७ ॥
स्वाहा ॥ इदंवायोः ॥ १८ ॥ ॐव्वयछं
इदंसोममूर्तेः ॥ १९ ॥ ॐइन्द्रंतंशुम्भेतिमन्त्रेण
हादेवस्य ॥ २० ॥ ॐअभित्यन्देवमितिमन्त्रेण
ॐअदित्पृत्नस्येतिमन्त्रेणस्वाहा ॥ इदंखमूर्तेः ॥

रिस्थभद्रासनोप
आस्थपत्यादीन्प
॥ इमंशिलेष्ट
पंयुतम्प्रासादन्त
जे । इतिकुशाय
अथाऽचलप्रति
प्रतिदैवतमष्टश
ॐस्योनापृथिवी
रेभ्यइतिमं० ।

तिमन्त्रेणस्वाहा ॥ इदंस्वमूर्तिपतेर्भौमस्य ॥
तिमन्त्रेणस्वाहा ॥ इदमीशानस्य ॥ २४ ॥
हुतिञ्जुहुयुः ॥ ततोऽधिवासितांकूर्मशिलांब्रह्मा
रमिन्द्रमितिमन्त्रेणगृहीत्वा ॥ विघ्नाभावार्थंपुष्
येनवामन्त्रेणप्रासादमभ्युक्ष्य ॥ ततः ॥
ऽर्जन्न्योऽवृष्टिमाँ२॥ऽइव॥स्तोमैर्व्वत्सस्यंवावृधे ॥ उ
षत्तेयोनिर्म्महेन्द्रायत्वा । अ. । ७ । मं. । ४० । इतिमन्त्र
यफट्इत्यस्त्रपूतजलेनपुनःप्रोक्ष्य ॥ प्रासादस्यद्वार
शानीमुत्तरामाश्रित्य ॥ स्नानादिसंस्कृताङ्कूर्मशिलांप्रण

ग्रमण्ड
यिन्तंसर्दै
संभवंभू
वःप्रागे
र्यैन्नुःपुण्
॥
राज्यभा
नञ्च
जेदि

नमितिमन्त्रे
❀
ऽइतिमन्त्रेण
र्गाभिदुद्रोहा
शो. । सं. ।
सशिखरं
ऽदैव्या
॥ वा. ।
॥ देवरू

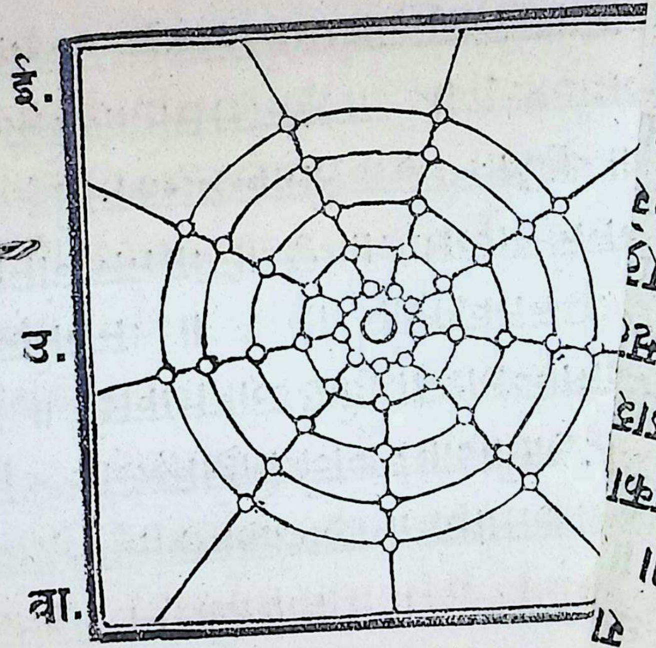

रिस्थभद्रासनोप
ास्थपत्यादीन्प
॥ इमंशिलेष्ट
पंयुतम्प्रासादन्त
जे ॥ इतिकुशाय
अथाऽचलप्रति
प्रतिदैवतमष्टश
ॐस्योनापृथिवी
ारेभ्यइतिमं० ।

तिमन्त्रेणस्वाहा ॥ इदंखमूर्तिपतेर्भीमस्य ॥ २ ानमितिमन्त्रे
तिमन्त्रेणस्वाहा ॥ इदमीशानस्य ॥ २४ ॥ ाग्रमण्ड
हुतिञ्जुहुयुः ॥ ततोऽधिवासितांकूर्मशिलांब्रह्मा यन्तंस इातिमन्त्रेण
रमिन्द्रमितिमन्त्रेणगृहीत्वा ॥ विघ्नाभावार्थंपुष्प संभवंभू घांभिद्रुद्रोहा
येनवामन्त्रेणप्रासादमभ्युक्ष्य ॥ ततः ॥ वःप्रागे ा. । सं. ।
र्जन्न्योवृष्टिमाँ२॥ऽइंव॥स्तोमैर्व्वत्सस्यवावृधे ॥ उ ुःपुण्ड ंसशिखरं
षतेयोनिर्म्महेन्द्रायत्वा । अ. । ७ । मं. । ४० । इतिमन्त्र ॥ ंदैव्यां
यफट्इत्यस्त्रपूतजलेनपुनःप्रोक्ष्य ॥ प्रासादस्यद्वार राज्यभा ॥ वा. ।
शानीमुत्तरामाश्रित्य ॥ स्नानादिसंस्कृताङ्कूर्मशिलांप्रण नञ्चव
जेदित ॥ देवरू

१२

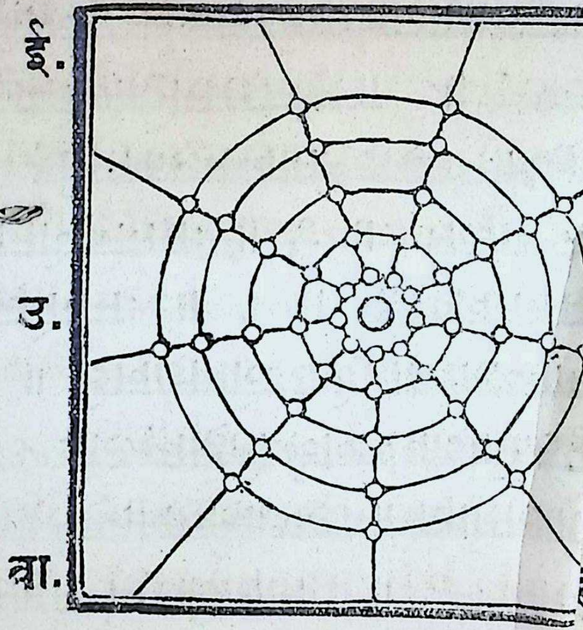

तिपावकम् ॥
मोस्तुतेतिनैर्ऋ
योत्तम्भनेतिवरु
॥ ईशानपूर्व
क्तानिपृथक् ॥
ततःस्थाप्यमाने
हुत्वाप्रतिष्ठाहोमङ्
मेयोभवस्वाहा ॥
हा ॥ ॐशिवाय

तच्छ्वभ्रेसौवर्णङ्कूर्मंद्वारसंमुखन्निधाय ॥ तदुपरि ४ ॥ ाग्रमण्ड ज्ञानमितिमन्त्रे

हस्तयुतांपंचचत्वारिशद्धस्तयुतांवाब्रह्मशिलामधिवासितां ल्लांब्रह्मा॥ियन्तंस

पिनिःस्थिरेअचलेध्रुवेॐश्रींलंस्वाहेतिमंत्रेणयथाशक्तिसंपू वार्थंपुष्पसंभवंभू इतिमन्त्रेण

स्त्वमेवासनधारिका ॥ शिवाज्ञयात्वयादेविस्थातव्यमिह ॥ वःप्राग ह्यांभिदुद्रोहा

त् ॥ ततोवर्णाध्वनेनमः ॥ १ ॥ पादाध्वनेनमः ध्ये ॥ उर्वैद्युःपुण्ड ा. । सं. ।

नमः ॥ ३ ॥ भुवनाध्वनेनमः ॥ ४ ॥ तत्वाध्वनेन इतिमन्त्रे ॥ त ंसशिखरं

ध्वनेनमः ॥ ६ ॥ इतिसकलमध्वानंतदारूढंध्यायेत् ॥ द्रस्यद्वार ाज्यभा ॐदेव्यां

नङ्कृत्वा ॥ मूलमंत्रेणाष्टोत्तरशतंहुत्वा ॥ षट्त्रिं शिलांप्रण नञ्च ॥ वा. ।

ब्रह्मशिलागर्तेषुप्रादक्षिण्येनसहेमाहस्तेनरत्नन्यासङ्कुर्यात् जेदिति ॥ देवरू

शिलोपरिभागेसश्वभ्रांपिण्डकांपूर्वपश्चिमाननेप्रासादेसौम्यक्तेपावकम् ॥
य ॥ देवपत्नीलिङ्गकेनमन्त्रेणपिण्डकामभिमन्त्रयेत् मोस्तुतेतिनैर्ऋं
नायाम् ॥ ॐश्रीश्चतेइतिमन्त्रेण० ॥ रुद्रद्रस्यगौरीर्मियोत्तम्भनेतिवरु
उषस्तच्चित्रमाभरास्मभ्यंवाजिनीवति ॥ येनते ॥ ईशानपूर्व
वा.। सं.। अ.। ३४। मं.। ३३। इतिसूर्यस्य ॥ तत क्तानिपृथक् ॥
आत्मतत्वाधिपतयेक्रियाशक्त्यैनमः ॥ १ ॥ विद्यातत्त ततःस्थाप्यमाने
येज्ञानशक्त्यैनमः ॥ शिवतत्वायनमः शिवतत्वावाप्रतिष्ठाहोमङ्
इतितत्वन्यासः ॥ प्रतितत्वंपूर्वोक्तमूर्तिमूर्तिपतिलोकयोभवस्वाहा ॥
पिण्डिकायामाधारशक्त्यैनमइतिविन्यस्य ॥ अनन्ता ॥ ॐशिवाय

॥ श

क्तिभ्योनमइत्युक्त्वाभ्यर्च्य ॥ सर्वदेवमयीशानेत्रैलो ३ ॥ ाग्रमण्ड ानमितिमन्त्रे
प्रतिष्ठापयाम्यत्रमन्दिरेविश्वानिर्मिते ॥ यावच्चन्द्रश्च ांब्रह्मा:यिन्तंसर्वं
*
तावत्वन्देवदेवेशिमन्दिरेस्मिन्स्थिराभव ॥ पुत्रा ार्थंपुष्पसंभवंभू यइतिमन्त्रेण
रामृताम् ॥ अभयंसर्वभूतेभ्यःकर्तुर्नित्यंविधेहिभोः ॥ वःप्रागे ांभिदुद्रोहा
कानांक्षेममेवच ॥ सुभिक्षंसर्वलोकानाङ्कुरुदेविनमो ध ॥ उर्वेञ्चुःपुण्य ा. । सं. ।
प्रणवंश्ववक्त्रे वाह्येषोडशास्वरान् तेषांपरितोव्यञ्जनानिविन् इतिमन्त्रे ॥ तं सशिखरं
निन्यसेत् ॥ यथा ॥ वाह्यपरिधौ ॥ यवव्रीहिनि स्यद्वाराज्यभा ॐदेव्यां
वारशालिसिद्धार्थकान् ॥ १ ॥ ततःवज्रमौक्तिकवैदूर्य शालांप्रणनञ्चव ॥ वा. ।
कांतेन्द्रनीलपद्मरागान् ॥ मनःशिलाहरितालाञ्जनश्य जेदित ॥ देवरू

रोचनागैरिकपारदान् ॥ ३ ॥ सुवर्णरौप्यताम्रायसत्र
लोहानि ॥४॥ श्वेतरक्तचन्दनागुर्वर्ज्जुनोशीरवैष्णवीसहदे
वीजानामभावेयवान् ॥ रत्नानामभावेवज्रम् ॥ धातून
भावेसुवर्णम् ❀ ॥ ❀ ओषधीनामभावेसहदेवीन्य
स्तानांरत्नानांदिक्पालमन्त्रैरालम्भनंपूर्वादिक्रमेणकुर्यात्
तिमन्त्रेण० पूर्वैइन्द्रम् ॥ १ ॥ ॐअग्निन्दूतमितिमं
ॐयमायत्वेतिमं० दक्षिणेयमम् ॥ ३ ॥ ॐअसुन्
तिं ॥ ४ ॥ ॐतत्वायामीतिमं० पश्चिमेवरुणम्
सहस्रिणइतिमं०वायव्येवायुं ॥ ६ ॥ ॐसोमोधेनु

तेपावकम् ॥
मोस्तुतेतिनैर्ऋ
योत्तम्भनेतिवरु
॥ ईशानपूर्व
क्तानिपृथक् ॥
ततःस्थाप्यमाने
त्वाप्रतिष्ठाहोमङ्
मयोभवस्वाहा ॥
॥ ॐशिवाय

ॐतमीशानमितिमं॰ ईशानेरुद्रम् ॥ ८ ॥ एवंन्यो ॥ शानमितिमन्त्रे
र्मवाहनानिसौवर्णानिद्वारोन्मुखानि ॥ पारद ३ ॥ ाग्रमण्ड
गुग्गुलरसेनरत्नादिकांस्थिरीकृत्य ॥ मधुपायसेनश्वभ्र कांब्रह्मा:ियन्तंस ॐ ❀
द्य ॥ हुंइतिकवचेनावगुराठ्य ॥ ओंअस्त्रायफट्इ ार्थंपुष्पसंभवंभू यइतिमन्त्रेण
गृहावैप्रतिष्ठेतिमन्त्रेणप्रासादमभिषिच्य ॥ इंद्रा ॥ व:प्रागे द्यांभिदुद्रोहा
एवंपिण्डिकांप्रतिष्ठाप्यप्रासादाद्बहि:समन्तात् प्रादक्षिण्ये ध ॥ उर्वैनु:पुण्ड ॥ । सं. ।
दर्भपिञ्जुलै:संमार्ज्य ॥ पूर्वाद्यष्टदिक्षुवालुकयाऽष्टौर इतिमन्त्रे ॥ ॐसशिखरं
स्तिद्वयसंमितानिकृत्वा ॥ तत्तत्स्थण्डिलानामीशाना स्यद्वारा ाज्यभा ॐदेव्या
पूर्णान्पुष्पफलपञ्चपल्लवादियुतान् सूत्रवेष्टितान्संस्थाप्य शालांप्रण नञ्च ॥ वा. ।
जेदिते ॥ देवरु

ञ्चभूसंस्कारान्संपाद्याग्निंप्रणीयप्रतिस्थण्डिलंपलाशसमि
वामूलमंत्रेणाज्येनच ओंनारायणायविद्महेवासुदेवाय
प्रचोदयात् ॥ इतिमंत्रेणाष्टोत्तरशतमष्टाविंशतिमष्टौवाहु
कुम्भेभ्यःपात्रेतोयमुद्धृत्यमूलमंत्रेणशतकृत्वोभिमंत्र्य
सर्वतीर्थमयमिदञ्जलमितिध्यायन्देवमूर्ध्निअभिषिञ्चेत
मन्त्रेणदेवस्यदिग्बन्धनङ्कृत्वा ॥ मूर्तिपैःसहदेवं
हाभागदेवदेवजगत्पते ॥ मेघश्यामगदापाणेप्रबुद्ध
रानन्तवासुदेवनमोस्तुते ॥ इतिप्रार्थ्य ॥ जद
द्धार्थकपुष्पाणिशङ्खेकृत्वा शङ्खमुद्रयादेवायार्घ्यंदत्त्वा

तेपावकम् ॥
मोस्तुतेतिनैर्ऋ
योत्तम्भनेतिवरु
॥ ईशानपूर्व
क्तानिपृथक् ॥
ततःस्थाप्यमाने
त्वाप्रतिष्ठाहोमङ्
मयोभवस्वाहा ॥
॥ ॐशिवाय

॥ २

देवयन्तंस्त्वेमहे ॥ उपप्रयन्तुमरुतः सुदानव ४ ॥ ग्रमण्ड ज्ञानमितिमन्त्रे

वा. । सं. अ. । ३४ ॥ मं. । ५६ । इतिमंत्रेणदेवमुखं ब्रह्मा यन्तंस

✻

पुरतोगुरुः पृष्ठतोयजमानः पार्श्वतोमूर्तिपाः एवंपरिभ्राम्य र्थंपुष्पसंभवंभू यइतिमन्त्रेण

मुखंलिङ्गंकृत्वार्घ्यन्दत्वा प्रासादंप्रवेशयेदिति ॥ त ॥ वः प्रागे र्घाभिदुद्रोहा

वे।यदेवः ॥ शम्भौमध्यगतेहरीनहरभूदेव्योहरौशङ्क ध ॥ उर्वेत्युःपुण र्या. । सं. ।

शाजाम्बिकास्थापिताः ॥ देव्यांविष्णुहरैकदन्तर इतिमन्त्र ॥ त इंसाशिखरं

शङ्करभागतोतिसुखदा व्यस्तास्तुतेहानिदाः ॥ शङ्क स्यद्वारराज्यभा अंदेवव्या

प्रदक्षिणमित्यर्थः ॥ अत्रादिकस्वरूपमुक्तं ॥ पारि शिलांप्रणम्नञ्चवे ॥ वा. ।

देवस्यमुखमारभ्यदिशंप्राचींप्रकल्पयेत् ॥ तद जेदिति ॥ देवरू

स्थितिः ॥ तत्रक्रमः पाद्मे ॥ रविर्विनायकश्चण्डीईतिपावकम् ॥
अनुक्रमेणपूज्यन्तेव्युत्क्रमेणमहद्भयम् ॥ तथाचज्ञानमोस्तुतेतिनैर्ऋ
शङ्करोमध्येईशानेश्रीपतिंन्यसेत् ॥ आग्नेय्यांचतथ्योत्तम्भनेतिवरु
म् ॥ वायव्याञ्चसदापूज्याभवानीभक्तवत्सला ॥ ॥ ईशानपूर्व
न्दईशान्यांशङ्करंयजेत् ॥ आग्नेय्याङ्गणनाथञ्चनैर्ऋक्तानिपृथक् ॥
व्यामम्बिकांचैवयजेन्मन्त्रसमाहितः ॥ २ ॥ सहस्रांशु ततःस्थाप्यमाने
तिम् ॥ आग्नेय्यामेकदन्तञ्चनैर्ऋत्यामच्युतन्तथा त्वाप्रतिष्ठाहोमङ्
देवींभोगमोक्षैकभूमिकाम् ॥ ॥ ३ ॥ भवानीतुयदमयोभवस्वाहा ॥
आग्नेय्यांपार्वतीनाथंनैर्ऋत्याङ्गणपन्तथा ॥ वायहा ॥ ॐशिवाय

॥ २

❀ पञ्चदेवतास्थापनचक्रम् ॥ ४ ॥ ग्रमण्ड नमितिमन्त्रे

❀

ई०	पूर्व.	आ.	ई.	पूर्व	आ.	ई.	पूर्व०	आ.	ई.
उ०	हरि सूर्य शिव देवी गणे.	द.	उ०	शिव गणे. विष्णु देवी सूर्य	द.	उ०	शिव गणं. सूर्य. देवी बिष्णु	द.	उ०
वा०	पश्चि०	नै०	वा०	पश्चि.	नै.	वा०	पश्चि०	नै०	वा०

ंब्रह्मा:यिन्तंस

इतिमन्त्रेण

ार्थंपुष्पसंभवंभू

ाभिदुद्रोहा

॥ व:प्रागे

या. । सं. ।

ध ॥ उर्ध्वंचु:पुण्

सशिखरं

इतिमन्त्रे ॥

ॐदेव्या

कम् ॥ ४ ॥ यदागणपतिर्मध्येईशानेश्रीहरिंन्यसेत स्यद्वाराज्यभा

॥ वा. ।

वनैर्ऋत्यामर्कमेवच ॥ भवानींचैववायव्यांस्थापयेतत्र शालांप्रणनञ्च

दिपञ्चदेवतापञ्चाङ्गस्थापनक्रमः ॥ ततःसयजमान जेदित ॥ देवरू

स्थापयेत् ॥ तद्यथा ॥ सुमुहूर्तेसुस्थिरेलग्नेशुभग्रहैर्नीतिपावकम् ॥
श्वभ्रन्यासद्रव्यसहितंसौवर्णपद्मंपिण्डिकायाःश्वभ्रेनिधाय मोस्तुतेतिनैर्ऋं
यावच्चन्द्रादिवाकरौ ॥ तावत्त्वमनयाशक्त्यायुक्तोत्रैवस्थिर्योत्तम्भनेतिवरु
ॐध्रुवाद्यौर्ध्रुवापृथिवीध्रुवासःपर्वताइमे ॥ ध्रुवंविश्वमि ॥ ईशानपूर्व
यम् ॥ इतिमंत्रंपठित्वा ॥ यवंयवाईवोत्तराश्रितोक्तानिपृथक् ॥
काश्वभ्रेनिधाय ॥ स्थिरोभवशाश्वतोभवेत्युक्त्वा ततःस्थाप्यमाने
कासीसकादिभिर्दृढंपूरयित्वापुनर्नचालयेत् ॥ इतिहुत्वाप्रतिष्ठाहोमङ्
देवंमूर्ध्निहृदयेवास्पृष्ट्वाप्राणप्रतिष्ठाङ्कुर्यात ॥ मेयोभवस्वाहा ॥
प्राणपतिष्ठाङ्कुर्वीततस्यांदेवस्यवाहरेरितिकालिकापुराहा ॥ ॐशिवाय

मन्त्रस्यब्रह्माविष्णुरुद्राऋषयःऋग्यजुःसामानिछन्दांसित्रि ॥ ज्ञानमितिमन्त्रे
आँवीजंह्रींशक्तिःक्रोंकीलकंप्राणप्रतिष्ठायांविनियोगः ॥ ॥ मण्ड
ंब्रह्मा न्तंस
❀
हृदयनाभिगुह्यपादेषुविन्यस्यब्रह्माविष्णुरुद्रऋषिभ्योनम र्थंपुष्टंभवंभू इतिमन्त्रेण
छन्दोभ्योनमोमुखे ॥ प्राणख्यदेवतायैनमोहृदिआंवीजायन ॥ :प्राग भिद्रुद्रोहा
गुह्येक्रोंकीलकायनमःपादयोः ॐकंखंगंघंङं अंपृथिव्य ा. । सं. ।
हृदयायनमः॥१॥ॐचंछंजंझंञंइंशब्दस्पर्शरूपरसगन्धात्म ॥ उप्युःपुण् ंसशिखरं
ॐटंठंडंढंणं ॐश्रोत्रत्वक्चक्षुर्जिह्वाघ्राणात्मनेॐशिखायै तिमन्त्र॥ ॐदैव्या
थंदंधंनं एं वाक्पाणिपादपायूपस्थात्मने ऐं कवचायहुम् स्यद्वार ज्यभा ॥ वा. ।
वंभंमं ओंवचनादानविहरणोत्सर्गानन्दात्मनेऔंनेत्रत्रयाय ालांप्रण ञ्च तेदित ॥ देवरू

१२

रंलंवंशंषंसंहंलंक्षंमनोवुद्ध्यहङ्कारचित्तात्मनेअःअज्ञायप्रतिपावकम् ॥
चन्यासङ्कृत्वादेवंस्पृष्ट्वाजपेत् ॥ ओंआँह्रींक्रोंयँरंमोस्तुतेतिनैर्ऋ
हप्राणाः ॥ पुनःआँह्रींक्रोंइत्यादिदेवस्यजीवइहस्थितः स्योत्तम्भनेतिवरु
स्यसर्वेन्द्रियाणि ॥ ओंआँह्रींक्रोंइत्यादिदेवस्यवाङ्मन ॥ ईशानपूर्व
इहागत्यस्वस्तयेसुखेनसुचिरन्तिष्ठन्तुस्वाहा ॥ ोक्तानिपृथक् ॥
त्वा ॥ तद्या ॥ ओंध्रुवाद्यौरध्रुवापृथिवीध्रुवासःपर्व ततःस्थाप्यमाने
ञ्जगद्ध्रुवोराजाविशामयम् ॥ ध्रुवन्तेराजावरुहुत्वाप्रतिष्ठाहोमङ्
न्तइन्द्रश्चाग्निश्चराष्ट्रन्धारयतन्ध्रुवम् ॥ ध्रुवन्ध्रुमेयोभवस्वाहा ॥
अथोत० ॥ इन्द्रःकेवलीर्विशोबलिहृतस्करत् हा ॥ ओंशिवाय

ततोर्चाहृद्यङ्गुष्ठन्दत्वाजपेत् ॥ अस्यैप्राणाःप्र मेत्रि ॥ स ॥ समण्ड ज्ञानमितिमन्त्रे

अस्यैदेवत्वमर्चायैस्वाहेतियजुरीरयेत् ॥ प्र ॥ ॐ ❀

त्वा ॥ ॐविश्वतश्चक्षुरुतविश्वतोमुखोविश्वव स ब्रह्मन्तिंसर्वं ऽइतिमन्त्रेण

सम्बहुभ्यान्धमतिसम्पतत्रैर्द्यावाभूमीजनयन्देवऽए यन् र्थंपुष्टंभवंभू द्यांभिदुद्रोहा

१७। सं. । १९ ॥ इत्युक्त्वादेवमूर्ध्निहस्तन्निधायप ॥ ःप्रागेव वा. । सं. ।

मानिजपित्वाप्रातिष्ठिकान्मन्त्राँश्चजपेत् ॥ तत्रवि ्ये ॥ उद्युःपुण्ड ंसशिखरं

ङ्शङ्खचक्रगदाधरं ॥ संस्थापयामिदेवेशंदेवोभूत्वा तम तिमन्त्रे ॥ ॐदैव्या

त्र्यक्षञ्चदशवाहुञ्चचन्द्रार्धकृतशेखरम् ॥ गणेशंबृ यै स्यद्वार ज्यभा ॥ वा. ।

स्थनम् ॥ अथब्रह्मणः ॥ ऋषिभिःसंस्तुतन्देवञ्चतुर्वक्र त्र लांप्रण ञ्च ॥ देवरू

य ेदित

महाप्राज्ञंस्थापयाम्यम्बुजोद्भवम् ॥ सूर्यस्य ॥ सह्वातिपावकम् ॥ सेवितम् ॥ पद्महस्तम्महावाहुंस्थापयामिदिवाकरन्नमोस्तुतेतिनैर्ऋशान्जपेत् ॥ तद्यथा ॥ विष्णोःपुरुषसूक्तं ॥ स्योत्तम्भनेतिवरु ब्राह्मम् ॥ रवेःसौरं ॥ अन्येषान्तत्तत्प्रकाशकान् ॥ ईशानपूर्व रोभुवरित्यादिकमन्त्रैः प्राणप्रतिष्ठांकृत्वा पञ्चामृतोक्तानिपृथक् ॥ पूजयित्वा ततःप्रणवव्याहृतिशिरःसहिताङ्गायत्रींप्राण ततःस्थाप्यमाने ॐभूर्भुवःस्वःतत्सवितुर्व्वरेण्यम्भर्गोदेवस्यधीमहि हुत्वाप्रतिष्ठाहोमङ् आपोज्योतीरसोमृतंब्रह्मभूर्भुवःसुवरोम् ॥ ततःप्रामेयोभवस्वाहा ॥ वै० तत्त० ॥ १ ॥ ॐयत्तेदिवं० तत्त० ॥ २ हा ॥ ॐशिवाय

ओंयत्तेचतस्र० तत्त० ॥ ४ ॥ ओंयत्तेसमुद्र०तेप्रि
तत्त० ॥ ६ ॥ ओंयत्तेआपो० तत्त० ॥ ७ ॥
ओंयत्तेसर्व० तत्त० ॥ ९ ॥ ओंयत्तेविश्वतत्त०॥ १० सम
ओंयत्तेभूतं० तत्त० ॥ १२ ॥ इतिप्राणसूक्तमन्त्रयन
ङ्कुर्यात् ॥ नमस्तेत्यक्तसाङ्गायसन्तोषपरमात्मने ०र्
तेजोभिशालिने ॥ गुणातिक्रान्तवेगायपुरुषायमहात्म
णायविष्णोसन्निहितोभव ॥ भगवन्देवदेवेशत्वंपितायै
प्तामिदंसर्वंजगत्स्थावरजङ्गमं ॥ त्वमिन्द्रःपावकश्चैव
णोमारुतःसोमईशानःप्रभुरव्ययः ॥ येनरूपेणभगव्य

॥ २
॥ समण्ड
ांब्रह्मान्तिंसर्वं
ार्थंपुष्टंभवंभू
॥ ःप्रागेव
॥ उद्युःपुण्ड
तिमन्त्र॥
स्यद्वार ज्यभा
ालांप्रण ञ्च
तेदित

ज्ञानमितिमन्त्रे
✿
मइतिमन्त्रेण
वाभिद्रुद्रोहा
वा. । सं. ।
तंसशिखरं
ओंदेव्या
॥ वा. ।
॥ देवरू

तेनरूपेणदेवेशअर्चायांसन्निधौभव ॥ सर्वमन्त्रादिसंयु
अत्रार्चायांमहादेवभवसन्निहितःसदा ॥ सूर्याचन्द्र
नी ॥ तावत्वयात्रदेवेशस्थातव्यंस्वेच्छयाप्रभो ॥
परिवारदेवताः ॥ शिवस्य ॥ नन्दिमहाकालवृषभ
विष्णुब्रह्मजयन्तेन्द्राग्नियमनिर्ऋति वरुणवायुसोमेश
द्याधरादय ॥ इतिरुद्रस्य ॥ ब्रह्मणोविष्ण्वादयःपरि
यः ॥ एवंचण्डीविनायकादीनामपिपरिवारदेवताक
प्रतिष्ठाप्य ॥ मण्डपमागत्य ॥ कुण्डेष्वङ्गहोमः
यायनमःस्वाहा । इतिमन्त्रेणाज्याहुतिविंशतिकं

तिपावकम् ॥
मोस्तुतेतिनैर्ऋ
योत्तम्भनेतिवरु
॥ ईशानपूर्व
क्तानिपृथक् ॥
ततःस्थाप्यमाने
त्वाप्रतिष्ठाहोमङ्
मयोभवस्वाहा ॥
हा ॥ ॐशिवाय

ॐशिरसेस्वाहाइतिशिरोमन्त्रेण ॥ २ ॥ पश्चिमे
मंत्रेण ॥ ३ ॥ उत्तरे ॥ ओंकवचायहुंस्वाहाइति॥
ॐनेत्रत्रयायवौषट्स्वाहा ॥ इतिमंत्रेण ॥ पुनःपूर्वतुम
इतिमंत्रेणजुहुयात् ॥ ततः ॥ ॐसर्वायुधेभ्यःस्वाहा
प्रासादमागत्य ॥ देवंप्रार्थयेत् ॥ ॐलोकानुग्रह
सान्निध्यंहिमयादेवप्रत्यहंपरिवर्त्तय ॥ १ ॥
यजमानःसमृध्यताम् ॥ सम्पादयसतांराष्ट्रंसर्वोपद्र
लांसुखमक्षय्यमश्नुताम् ॥ २ ॥ इतिसंप्रार्थ्यविधिना
ततोबहिरिन्द्रादीन्तत्तन्नाममन्त्रैःस्थापयेत् ॥ तद्यथा

ज्ञानमितिमन्त्रे
❀
इतिमन्त्रेण
ग्राभिदुद्रोहा
वा. । सं. ।
हंसशिखरं
ॐदेवव्या
॥ वा. ।
॥ देवरू

इन्द्रं० ॥ १ ॥ आग्नेये ॥ अग्नयेनमःअग्निं० ॥
यमं. ॥ नैर्ऋत्ये ॥ निर्ऋतयेनमः निर्ऋतिं ॥ ४ ॥ प
॥ ५ ॥ वायव्येवायवेनमःवायुं० ॥ ६ ॥ उत्तरेसोमा
नेईशानायनमः ईशानं० ॥ इतिइंद्रादीन्संपूज्य ॥ त
विष्णोःचण्डंस्थापयामि ॥ १ ॥ वामेप्रचण्डंस्था
णेजयायनमः ॥ वामेविजयायनमः ॥ अथशिवर
णेशादीन् ॥ सूर्यश्चेत् ॥ दण्डपिङ्गलमाठरारुणादी
येत् ॥ मात्स्ये ॥ यस्यासिंहारथेयुक्ताव्याघ्राभूतास्तथो
देवस्कन्दस्तथावृषः ॥ प्रियागणामातरश्चसोमोदि

तेपावकम् ॥
मोस्तुतेतिनैर्ऋ
योत्तम्भनेतिवरु
॥ ईशानपूर्व
क्तानिपृथक् ॥
ततःस्थाप्यमाने
वाप्रतिष्ठाहोमङ्
मयोभवस्वाहा ॥
हा ॥ ॐशिवाय

सगन्धर्वायेचदिव्यानभश्चराः ॥ तमहंत्र्यक्षमीशानं॥
ह्यामिसगणंसपत्नीकंवृषध्वजम् ॥ आगच्छभगवन्
तोभवपूजांमेगृहाणत्वन्नमोनमः ॥ ॐस्वागतमनुस्वाग्यन
मायसगणायसपरिवारायप्रतिगृह्णातुभगवान्मंत्रपूतमि
तंब्रह्मणाभिहितंनमोनमःस्वाहेति ॥ आगच्छभग
साधारणाः ॥ एवंसम्पूज्यदधिदुग्धघृतमधुशर्कराख्यैः यै
स्नापयेत् ॥ मंत्रो यथा ॥ ॐअप्यायस्वेतिक्षीरेण ॥ १ ॥
॥ २ ॥ ॐघृतङ्घृतमितिघृतेन ॥ ३ ॥ ॐमधुवातेतिम
रितिशर्करया ॥ ५ ॥ इतिस्नापयेत् ॥ अथचतुष्क

ज्ञानमितिमन्त्रे
❀
इतिमन्त्रेण
भिदुद्धोहा
। सं. ।
सशिखरं
ॐदैव्या
॥ वा. ।
॥ देवरू

ॐयज्जाग्रतो० ॥ १ ॥ ॐततोविराड्० ॥ २ ॥ ॐतिपावकम् ॥
ॐअभित्वाशूरनो० ॥ ४ ॥ ॐपुरुषऽएवेदꣳ० ॥ ५मोस्तुतेतिनैर्ऋ
ॐयेनेदम्भूतम्० ॥ ७ ॥ ॐनत्वावाँ२॥अन्न्यो० !योत्तम्भनेतिवरु
जपेत् ॥ प्रति र्यायंषजलेन ॥ देवस्यपादौना ॥ ईशानपूर्व
ततोऽङ्गमन्त्रैःप्रार्थयीत ॥ ॐभगवन्देवदेवेशधर्मका क्तानिपृथक् ॥
श्वरैरुद्रैर्गणेशैर्लोकपालकैः ॥ १ ॥ देवदानव ततःस्थाप्यमाने
अस्मिन्लिङ्गेमहादेवसर्वदावसवैप्रभो ॥ २ ॥ पुं स्वाप्रतिष्ठाहोमङ्
वैप्रभो ॥ परावरेणभावेनस्थातव्यंसर्वदात्वया ॥ मेयोभवस्वाहा ॥
र्वदुःखहरःसदा ॥ सर्वदायजमानस्यइच्छासंपद्दा ॥ ॐशिवाय

सर्वधर्मायसन्तोषविजितात्मने ॥ ज्ञानविज्ञानतृप्ता॥
नमस्तेशुद्धदेहायपुरुषायमहात्मने ॥ स्थापका
सदा ॥ ६ ॥ ग्रामदेशनृपाणाञ्चशान्तिर्भवतुसर्व
क्तानांभक्तवत्सल ॥ ७ ॥ सर्वेषाञ्जगन्नाथइच्छा
वनिपर्यन्तांलिङ्गेऽस्मिन्परमेश्वर ॥ ८ ॥ स्थातव्यमुम
यावच्चन्द्रश्चसूर्यश्चयावत्तिष्ठतिमेदिनी ॥ ९ ॥ त
च्छयाविभो ॥ इतिशिवस्य ॥ ततःपुरुषसूक्तेन
ङ्कृत्वा ॥ पुराणमन्त्रैरन्यैर्वास्तुत्वानमेत् ॥ पुन
ज्ञानतोवापियावद्विधिरनुष्ठितः ॥ सप्तसर्वस्त्वत्प्रसादेनसम

ज्ञानमितिमन्त्रे
✿
इतिमन्त्रेण
चाभिदुद्रोहा
ग. । सं. ।
सशिखरं
ओंदेवव्या
॥ वा. ।
॥ देवरू

शिवस्यापि ॥ ज्ञानतोऽज्ञानतोवापिभगवन्यत्कृतंमया
स्तुत्वत्प्रसादादधोक्षजेति ॥ अथकर्तृनामयुतन्देवस
व्यवहारार्थं ॥ तद्यथा ॥ विष्णोरमुकस्वामी ॥
शिवस्याऽमुकेश्वरः ॥ सूर्यस्यअमुकादित्यः ॥ दे
तेरमुकविनायक ॥ इत्यादिनामविदध्यात् ॥ अथ
तत्रस्थाप्यमानदेवार्चालिङ्गंवायांयांदिशमुपाश्रयेत्तत्तद्दि
व्ययाशमीपलाशान्यतरसमिद्धोमंतिलहोमंवाकृत्वापूर्ण
मन्त्रास्तु ॥ ॐत्रातारमिन्द्रमित्यादयःप्रसिद्धाः
क्रमतोगजोमेषोमहिषोजःशुक्तिर्मुक्ताफलन्तथा ॥

तिपावकम् ॥
मोस्तुतेतिनैर्ऋ
योत्तम्भनेतिवरु
॥ ईशानपूर्व
क्तानिपृथक् ॥
ततःस्थाप्यमाने
त्वाप्रतिष्ठाहोमङ्
मयोभवस्वाहा ॥
हा ॥ ॐशिवाय

स.प्र.
॥३७८॥

विधानतः ॥ १ ॥ तदभावेसुवर्णप्रातिकृतयः ॥
न्ते ॥ मण्डपंमंडपद्रव्यंआचार्यायनिवेदयेदिति
यज्ञयूपार्हणप्रयोगःतदुक्तंदीपिकायां ॥ यथावर्णंत
तथायूपान्प्रवक्ष्यामिवर्णानांहितकाम्यया ॥ पा
क्षत्रियस्यच ॥ वैल्योवैश्यस्ययूपःस्याच्छूद्रस्यौदुंवर
विप्रस्यह्याकङ्कठ्यक्षत्रियस्यच ॥ उरःप्रमाणोवैश्यस्र
मण्डपेशानदिग्भागेयूपन्तत्रप्रकल्पयेत् ॥ यूपस्यच
येत् ॥ ब्रह्मस्थानञ्चतन्मध्येअष्टौभागाःप्रकीर्त्तिताः
मंराजानमेकया ॥ धनदंधनभागेतुईशान्वास्येतिशङ्क

॥ प्रमण्ड
ब्रह्मा न्तंस
र्थंपुष्टंभवंभू
॥ ःप्रागे
॥ उद्युःपुण
तिमन्त्र ॥
स्यद्वार ज्यभा
लांप्रण ञ्चव

जानमितिमन्त्रे

✱

इतिमन्त्रेण
ह्याभिदुद्रोहा
ा. । सं. ।
सशिखरं
ॐदेव्या
॥ वा. ।
नेदितं ॥ देवरू

शे.
॥३८०॥

दिमन्त्रैःस्वैःस्वैर्ग्रहांस्तथा ॥ त्रातारमिन्द्रमित्येन्द्र तिपावकम् ॥
अग्निंपृथुरित्यादिनाधर्मराजंप्रपूजयेत् ॥ तद्विष्णोरिति मोस्तुतेतिनैर्ऋ
तम् ॥ सप्तर्षयस्त्वमित्यादिमंत्रेणसप्तर्षींस्तथा । स्योत्तम्भनेतिवरु
णन्तुप्रकल्पयेत् ॥ आनोनियुद्भिर्मंत्रेणवायव्यांवा ॥ ईशानपूर्व
योर्मध्येअनन्तंपूजयेत्ततः ॥ एतानिद्वाविंशतिस्थ प्रोक्तानिपृथक् ॥
ततःषोडशोपचारैःसंपूज्यप्रार्थयेत् ॥ इतियज्ञयूपार्हे ततःस्थाप्यमाने
देवेशब्दोत्थानेश्वभ्रान्तेस्फुटितेवाशांत्यर्थंमूलमंत्रेणा हुत्वाप्रतिष्ठाहोमङ्
कुर्यात् ॥ ॐशिवायस्थिरोभवस्वाहा ॥ उ प्रमेयोभवस्वाहा ॥
ॐशिवायानादिबोधोभवस्वाहा ॥ ॐशिवायनि हा ॥ ॐशिवाय

स.प्र.
॥३७७॥

सर्वगोभवस्वाहा ॥ ॐशिवायाविनाशोभवस्वाह ॥
भवस्वाहेति ॥ अथसर्वशान्त्यर्थं अघोरमंत्रेणा
सर्वप्रायश्चित्तंपूर्णाहुतिंचहुत्वाईशानेबलिन्दत्वाचम्य
भ्योथघोरेभ्यइतिमंत्रेण० ॥ १०८ ॥ स्वाहा ॥ ॐत्व
१० ॐसत्वन्नोऽअग्नेति० स्वाहा ॥ २ ॥ ॐअयाश्च
ॐयेतेशतमिति० स्वाहा ॥ ४ ॥ ॐउदुत्तमामिति०
जापतयेस्वाहा ॥ इदंप्रजा० ॥ ॐअग्नयेस्विष्टकृतेस्
ततोऽनुत्विग्भिःस्वस्वकुण्डेसर्वैःपूर्णाहुतिहोमङ्कुर्युः ॥
पुष्पफलसमन्वितनारिकेलंसम्पूज्य नमस्कृत्यजुहुयात् ॥

॥
समण्ड ज्ञानमितिमन्त्रे
॥
❀ शो.
ब्रह्मा न्तिंसर्वं
र्थंपुष्टिंभवंभू इतिमन्त्रेण
भिदुद्रोहा
॥ ःप्रागे
। सं. । १२
॥ उत्युःपुण्
संशिखरं
तिमन्त्र॥
ज्यभा ॐदेवत्या
स्यद्वार
॥ वा. । ॥३६०॥
लांप्रण च्च
नेदित ॥ देवरू

रतिम्पृथिव्व्याव्वैश्वानरमृतऽआजातमग्निम् ॥ कवि
नामासन्नापात्रञ्जनयन्तदेवाः ॥ स्वाहा ॥ सं. अ. ७ सं.
ॐसमुद्रादूर्म्मिर्म्मधुमाँ२॥ऽउदारदुपाᳫंशुनासममृतत्वमा
ह्यँयदस्तिजिह्वादेवानाममृतस्यनाभिः ॥ १ ॥ व
सं. । ८९ । व्वयन्नामप्प्रब्रवामाघृतस्यास्मिन्न्यज्ञ
ब्ब्रह्माशृणवच्छस्यमानञ्चतुःशृङ्गोवमीद्गौरऽएतत्
सं. । ९० ॥ चत्वारिशृङ्गात्रयोऽअस्यपादाद्वेशीर्षे
धाबद्धोव्वृषभोरोरवीतिमहोदेवोमर्त्याँ२॥ऽआविवेश।
हितम्पणिभिर्गुह्यमानङ्गविदेवासोघृतमन्वविन्दन् ।

तिपावकम् ॥
मोस्तुतेतिनैर्ऋ
स्योत्तम्भनेतिवरु
॥ ईशानपूर्व
प्रोक्तानिपृथक् ॥
ततःस्थाप्यमाने
हुत्वाप्रतिष्ठाहोमङ्
प्रमेयोभवस्वाहा ॥
हा ॥ ॐशिवाय

व्वेनादेकꣳस्स्वधयानिष्टतक्षुः ॥ ४ ॥ सं. । अ. । ॥
हृद्यात्समुद्राच्छतव्व्रजारिपुणानावचक्षे ॥ घृतस्यध
व्वेतसोमध्यंऽआसाम् ॥ ५ ॥ सं. । अ. १७ मं. । ९३ ।
ऽअन्तर्हृदामनसापूयमानाः ॥ एतेऽअर्षन्त्यूर्म्मयोघृतस्य
६ ॥ सं. । अ. । १७ ॥ मं. ९४ ॥ सिन्धोरिवप्राध्वनेशूघ
न्तियह्वाः ॥ घृतस्यधाराऽअरुषोनव्वाजीकाष्ठाभिन्दन्नूर्म्मि
सं. । अ. । १७ । मं. । ९५ । अभिप्रवन्तसमनेवयोषाः
सोऽअग्निम् ॥ घृतस्यधाराःसमिधोनसन्तताजुषाणोहर्य
सं. । अ. । १७ । मं. ९६ ॥ कन्न्याऽइवव्वहतुमेतवाऽउ

॥ ॥
॥ समण्ड
ब्रह्मान्तिंसर्
र्थंपुष्टंभवंभू
॥ ःप्रागे
॥ उद्युःपुण्
तिमन्त्रे ॥
स्यद्वारज्यभा
लांप्रणञ्चव
ेदिते

ज्ञानमितिमन्त्रे
✿
इतिमन्त्रेण
द्यांभिदुद्रोहा
वा. । सं. ।
इंसशिखरं
अंदैव्या
॥ वा. ।
॥ देवरू

शीमि ॥ यत्रसोमं÷सूयतेयत्रंयज्ञोघृतस्यधाराऽअभितत्पंवन्ते
१७। मं.। ९७॥ अभ्यृर्षतसुष्टुतिङ्गव्यंमाजिमस्मासुं
इमँय्यज्ञन्नंयतदेवतानोघृतस्यधारामधुमत्पवन्ते ॥ १० ॥
९८ धामंन्तेव्विश्वम्भुवनमधिश्रितमन्तःसमुद्रेहृद्यन्तरायुं
समिथेयऽआभृतस्तमंश्याममधुंमन्तन्तऽऊर्म्मिम् ॥ ११
मं.। ९९। अंचित्तिञ्जुहोमिमनंसाघृतेनयथांदेवाऽइहा
धं÷ ॥ पत्येव्विश्वंस्यभूमंनोजुहोमिव्विश्वकंर्म्मणेव्विश्
सं.। अ.। १७ मं. ७८ सप्ततेंऽअग्नेसमिधं÷सप्त
धामंप्प्रियाणि ॥ सप्तहोत्रां;सप्तधात्त्वांयजन्

तिपावकम् ॥
मोस्तुतेतिनैर्ऋ
त्योत्तम्भनेतिवरु
॥ ईशानपूर्व
त्रोक्तानिपृथक् ॥
ततःस्थाप्यमाने
हुत्वाप्रतिष्ठाहोमङ्
प्रमेयोभवस्वाहा ॥
हा ॥ ॐशिवाय

स्वाहा ॥ १४ ॥ सं. । अ. १७ मं. ७९ शुक्क्रज्ज्यो ॥ ॐशिवायाक्क्लृप्तो
स.प्र. ज्ज्योतिश्च्चज्ज्योतिष्म्माँश्च्च ॥ शुक्क्रश्च्चंऽऋुतपाश्शतंस्विष्टकृदन्तंहुत्वा ॥ शे.
३७९॥ सं. । अ. । १७ । मं. । ८० ❀ ॥ ❀ ईदृङ्चान्न्यादृङ तद्यथा ॥ ॐअघोरे
मितश्च्चसम्मितश्च्चसभरा; ॥ १६ ॥ सं. । अ. १७ नेति १ ॥ स्वाहा ॥१॥
सत्त्यश्च्चंध्रुवश्च्चंधरुणंश्च्च ॥ धर्त्ताचंव्विधर्त्ताचंविधारय: ति० स्वाहा ॥ ३ ॥
१७ । मं. । ८२ ॥ ऋतजिच्चसत्त्याजिच्चसेनाजिच्चसुषे हा ५ ॥ ॐप्र
त्रश्च्चदूरेऽअमित्रश्च्चगण: ॥ १८ ॥ सं. । अ. । ॥ इदमग्न० ॥
दृक्षांसऽएतादृक्षांसऽऊषुणं÷सदृक्षांस;प्प्रातिसदृक्षासऽएतंन र्णाहुतिः ततः घृत ॥३७७॥
म्मितासोनोऽअद्यसभरसोमरुतोयज्ञेऽअस्म्मिन् ॥ १९ ॥ ॐमूर्द्धानंन्दिवोऽअं

मं. ॥ ८४ ॥ स्वतवाँश्चप्रघासीचसान्तपनश्चगृहमेधीचअग्निम्भ्राजमतिथिञ्जना
चोज्जेषि ॥ २० ॥ सं. । अ. १७ । मं. । ८५ ॥ ह्रौ अथवसोर्द्धारामन्त्राः ॥
व्वसव;समिन्धताम्पुनर्ब्रह्माणोव्वसुनीथयज्ञैः ॥ घृतेननट् ॥ घृतस्यनामगु
सत्याःसन्तुयजमानस्यकामाः ॥ २१ ॥ सं. । अ.।. । सं. । अ. । १७ ।
व्वसोः पवित्रमसिशतधारंव्वसोःपवित्रमसिसहस्त्रधारम् ऽधारयामानमोभिः ॥ उप
पुनातुव्वसोःपवित्रेणशतधारेणसुप्वाकामधुक्षः ॥ २३॥ २ ॥ सं. । अ. । १७ ।
सं. । अ. । १ ॥ मं. ॥ ३ ॥ इतिवसोर्द्धारामंत्रसुप्तहस्तांशोऽअस्य ॥ त्रि
दिदशादिक्पालेभ्यःपूर्वादिक्रमेणस्वस्वलिङ्गाङ्कितमन्त्रैर्बलिं।३॥सं.।अ.।१७।मं.।६१। त्रिधां
चतुर्मुखंदीपम्प्रज्वाल्यबलिपर्यन्तक्षेत्रपालपूजांविधाय । इन्द्रऽएकछंसूर्यऽएकञ्जजान

स्वाहा ॥ १४ ॥ सं. । अ. १७ मं. ७९ शुक्क्रज्ज्यो ॥ ॐशिवायाक्क्लृप्तो
ज्ज्योतिश्चज्ज्योतिष्माँश्च ॥ शुक्क्रश्चंऽऋतपाश्शातंस्विष्टकृदन्तंहुत्वा ॥
सं. । अ. । १७ । मं. । ८० ❀ ॥ ❀ ईदृङ्चांन्न्यादृङ् तद्यथा ॥ ॐअघोरे
मितश्चसम्मितश्चसभंराः ॥ १६ ॥ सं. । अ. १७ नेति१ ॥ स्वाहा ॥१॥
सत्त्यश्चंध्रुवश्चंधरुणश्च ॥ धर्त्ताचंविधर्त्ताचंविधारयः ति० स्वाहा ॥ ३ ॥
१७ । मं. । ८२ ॥ ऋतजिच्चंसत्त्यजिच्चंसेनजिच्चंसुषे हा ॥ ५ ॥ ॐप्र
त्रश्चदूरेऽअमित्रश्चगणः ॥ १८ ॥ सं. । अ. । ॥ इदमग्न० ॥
दृक्षांसऽएतादृक्षांसऽऊषुणं÷सदृक्षांसःप्रतिसदृक्षासऽएतन र्णाहुतिः ततःघृत
म्मितासोनोऽअद्यसभंरसोमरुतोयज्ञेऽअस्मिन् ॥ १९ ॥ ॐमूर्द्धानन्दिवोऽअ

मं. ॥ ८४ ॥ स्वतवाँश्चप्रघासीचसान्तपनश्चगृहमेधीचग्निम्भ्राजमतिथिञ्जनां
चोज्जेषि ॥ २० ॥ सं. । अ. १७ । मं. । ८५ ॥ त्रै अथवसोर्द्धारामन्त्राः ॥
व्वसंव;समिन्धतामपुनर्ब्रह्माणोव्वसुनीथयज्ञैः ॥ घृतेनन्नट् ॥ घृतस्यनामगु
सत्याःसन्तुयजमानस्यकामाः ॥ २१ ॥ सं. । अ.ा. । सं. । अ. । १७ ।
व्वसोः पवित्रमसिशतधारव्वसोः पवित्रमसिसहस्त्रधारम् धारयामानमोभिः ॥ उप
पुनातुव्वसोःपवित्रेणशतधारेणसुप्वाकामधुक्षः ॥ २३॥ २ ॥ सं. । अ. । १७ ।
सं. । अ. । १ ॥ मं. ॥ ३ ॥ इतिवसोर्द्धारामंत्रसप्तहस्तांशोऽअस्य ॥ त्रि
दिदशादिक्पालेभ्यःपूर्वादिक्रमेणस्वस्वलिङ्गाङ्कितमन्त्रैर्बलिं ॥३॥सं.।अ.।१७।मं.।६१। त्रिधां
चतुर्मुखंदीपम्प्रज्वाल्यबलिपर्यन्तक्षेत्रपालपूजांबिधायान । इन्द्रऽएकछंसूर्य्यऽएकञ्जजान

प्रज्ञांविद्यांपुष्टिंश्रियम्बलम् ॥ तेजआयुष्यमारोग्यंदेहिमेहव्यवाहन ॥ इत्यग्निं
प्रार्थयेत् ॥ ततः ॥ ॐसुमित्रियानऽआपऽओषंधयः सन्त्वितिपवित्राभ्यां
प्रणीताजलेनयजमानशिरःसम्मृज्य ॥ पवित्रेअग्नौप्रक्षिप्य ॥ ॐदुर्म्मित्रियास्त
स्मैसन्तुयोस्म्मान्द्वेष्टियञ्चवयन्द्विष्म्मः सं.।अ.।३६।मं.॥२३॥ इतिई
शान्यांप्रणीतांन्युब्जीकुर्यात् ॥ ततःपरिस्तरणक्रमेणबर्हिस्तथाप्याज्येनाभिघा
र्यहस्तेनैवजुहुयात् ॥ ॐदेवांगातुविदोगातुम्वित्त्वागातुमित ॥ मनंसस्प
तऽइमन्देवयज्ञछंस्वाहव्वातेधाःस्वाहा ॥ सं.।अ.।३६।मं.।२१॥ इतिब
र्हिर्होमः॥ ततस्त्र्यायुषकरणम् ॥ ॐत्र्यायुषञ्जमदग्नेरितिललाटे ॥ कश्यपं
स्यत्र्यायुषमितिग्रीवायाम् ॥ यद्देवेषुत्र्यायुषमितिदक्षिणबाहुमूले ॥ तन्नोऽअ

स्तुत्र्यायुषमिति । हृदि ॥ इतित्र्यायुषङ्कृत्वासंस्रवप्राशनम् ॥ आचम्य ॥ पूर्णपात्रंब्रह्मणेदद्यात् ॥ अद्यकृतैतदमुकदेवप्रतिष्ठाकर्मपरिपूर्णतासिद्ध्यर्थमिदंतण्डुलपूर्णपात्रंप्रजापतिदैवत ममुकगोत्रायामुकशर्मणेब्राह्मणायब्रह्मणेतुभ्यमहंसंप्रददे ॥ ॐस्वस्तीतिब्राह्मणोवदेत् ॥

❀ ❀

ततोब्रह्मग्रन्थिविमोकः ॥ अथशोभनासनेयजमानं पत्नीपुत्रादियुक्तमुपवेश्यशान्तिकलशोदकंसुवर्णपात्रेसमादायकुशदूर्वाम्रपल्लवैर्वेदमन्त्रैःपौराणिकैश्चाभिषिञ्चेत्

❀ ❀ ❀ ❀

॥ तथाहि ॥ ॐआपोहिष्ठा ॥ १ ॥ ॐयोवःशिवतमो ॥ २ ॥ ॐतस्माऽअरङ्गमामवो. ॥ ३ ॥ ॐत्रातारमिन्द्रम् ॥ ४ ॥ ॐवरुणस्योत्तम्भनम् ॥ ५ ॥ ॐभगप्रणेतर्भग० ॥ ६ ॥ ॐइदमापःप्रबहता ॥ ७ ॥ ॐपुनन्तुमादेवज

नाः ॥ ८ ॥ ॐआप्प्यायस्वसमे० ॥ ९ । ॐपयःपृथिव्याम् ॥ १० ॥
ॐदेवस्यंत्वासवितुःप्प्रंसवेश्विनोर्ब्बाहुब्भ्याम्पूष्णोहस्ताब्भ्याम् ॥ सरस्वत्यैब्बा
चोयन्तुर्य्यन्त्रियैदधामिबृहस्पतेष्ट्वासाम्म्राज्ज्येनाभिषिञ्चाम्यसौ सं.। अ.। ११
मं.। ३० ॥ ॐदेवस्यंत्वासवितुःप्प्रंसवेश्विनोर्ब्बाहुब्भ्याम्पूष्णोहस्ताब्भ्याम् ॥
सरस्वत्यैब्बाचोयन्तुर्य्यन्त्रेणाग्नेःसाम्म्राज्ज्येनाभिषिञ्चामि ॥ १२ अ.। १८।
मं । ३७ ॥ ॐदेवस्यंत्वासवितुःप्प्रंसवेश्विनोर्ब्बाहुब्भ्याम्पूष्णोहस्ताब्भ्याम् ॥
अश्विनोर्ब्भैषज्ज्येनतेजसेब्ब्रह्मवर्च्चसायाभिषिञ्चामिसरस्वत्यैभैषज्ज्येनव्वीर्य्याया
न्नाद्यायाभिषिञ्चामीन्द्रस्येन्द्रियेणब्बलायश्श्रियैयशसेभिषिञ्चामि ॥ १३ ॥ अ.।
२०। म.। ३ ॥ ब्राह्म० ॥ पालाशम्भवतितेनब्राह्मणोभिषिञ्चतिब्रह्मवैपलाशो

ब्रह्मणैवैनमेतदभिषिञ्चति ॥ १४ ॥ ॐसर्वेषाम्वाऽएषवेदानांछंरसोयत्सामसर्वे
षामेवैनमेतद्वेदानाछंरसेनाभिषिञ्चति ॥ १५ ॥ ॐयद्देवकल्पाञ्जुहोतिप्प्राणावै
कल्पाऽअमृतमुवैप्राणाऽअमृतेनैवैनमेतदभिषिञ्चति ॥ १६ ॥ ॐदीर्घायुत्वायव
लायवर्चसेसुप्रजास्त्वायसहसाऽअथोजीवशरदःशतम् ॥ १७ ॥ ॐद्यौःशा
न्तिः ॥ १८ ॥ समुद्रज्ज्येष्ठाः । १९ ॥ ॐपवमानसुवर्जन्नित्यनुवाकेनचा
भिषिञ्चेयुः ॥ अथपौराणिकमन्त्राः ॥ सुरास्त्वामभिषिञ्चन्तुब्रह्मविष्णुमहेश्वराः ॥
वासुदेवोजगन्नाथस्तथासङ्कर्षणोविभुः ॥ १ ॥ प्रद्युम्नश्चानिरुद्धश्चभवन्तुविज
यायते ॥ आखण्डलोग्निर्भगवान्यमोवैनिर्ऋतिस्तथा ॥ २ ॥ वरुणःपवनश्चै
वधनाध्यक्षस्तथाशिवः ॥ ब्रह्मणासहिताःसर्वेदिक्पालाःपान्तुत्वांसदा ॥ ३ ॥

कीर्त्तिर्लक्ष्मीर्धृतिर्मेधापुष्टिःश्रद्धाक्रियामतिः ॥ बुद्धिर्लज्जावपुःशान्तिस्तुष्टिःकान्ति
श्चमातरः ॥ ४ ॥ एतास्त्वामभिषिञ्चन्तुदेवपत्न्यःसमागताः ॥ आदित्यश्चन्द्रमा
भौमोबुधजीवसितार्कजाः ॥ ५ ॥ ग्रहास्त्वामभिषिन्तुराहुःकेतुश्चतर्पिताः ॥
देवदानवगन्धर्वायक्षराक्षसपन्नगाः । ६ । ऋषयोमनवोगावोदेवमातरएवच ॥ देव
पत्न्योद्रुमानागादैत्याश्चाप्सरसाङ्गणाः ॥ अस्त्राणिसर्वशस्त्राणिराजानोवाहनानिच
॥ ७ ॥ औषधानिचरत्नानिकालस्यावयवाश्चये ॥ ८ ॥ सरितःसागराःशैला
स्तीर्थानिजलदानदाः ॥ ८ ॥ एतेत्वामभिषिञ्चन्तुसर्वकामार्थसिद्धये ॥ ९ ॥
आदित्यावसवोरुद्राविश्वेदेवामरुद्गणाः॥अभिषिञ्चंतुत्वांसर्वेधर्मकामार्थसिद्धये॥१०॥
इत्यभिषेकः । अथाचार्यपूजनम् ॥ तत्रयजमानःआचार्यमासनेउपवेश्यसत्कृत्य

ग्रामङ्गोसहस्रार्द्धंतदर्द्धंवावृषभैकादशकंपञ्चकं सालङ्कृतंवाइवन्दासीदासंव्यजनचामरछत्रवितानयानासनवस्त्राणि यथाशक्तिसन्निधायगन्धपुष्पमालादिभिःसम्पूज्यकुङ्कुमचन्दनैरनुलिप्यदक्षिणहस्तेसौवर्णाङ्गुलीयकं विन्यस्यहारकङ्कणकेयूरकुण्डलादिभिर्भूषयेत् ॥ देशकालौसङ्कीर्त्य ।देवप्रतिष्ठासिद्ध्यर्थमिमाङ्गांसदक्षिणान्तुभ्यमहमाचार्यायसम्प्रददे ॥ ब्रह्मार्पणमस्तुनममेत्युक्त्वा ॥ तद्धस्ते गोपुच्छादितिलयवकुशसहितञ्जलंक्षिपेत् ॥ प्रार्थयेच्च ॥ भगवन्सर्वधर्मज्ञ शिवधर्मपरायण ॥ सर्वशास्त्रार्थतत्त्वज्ञशिवशास्त्रविशारद ॥ १ ॥ अनादिजन्मसन्तानेह्यप्रमेयेभवार्णवे ॥ अद्यमेह्युत्तमञ्जन्मअद्यमेसफलन्धनम् ॥ २ ॥ अद्यमेजननोच्छित्तिरद्यमेपरमम्पदम् ॥ मोचितोहंत्वयानाथउच्छेद्याद्भवबन्धनात्॥

॥ ३ ॥ ईशत्रातस्त्वयाह्यस्मादप्रमेयाद्भवार्णवात् ॥ मुक्तोहंमर्त्यसंसारात्प्रपन्नोहन्तवान्तिकम् ॥ ४ ॥ ज्ञानतोज्ञानतोंवापियन्न्यूनंयत्कृतंमया ॥ तत्सर्वंपूर्णमेवास्तुत्वत्प्रसादात्क्षमस्वमे ॥ इत्याचार्यप्रार्थना ॥ एवंब्रह्मणेऋत्विग्भ्यश्च दक्षिणान्दद्यात् ॥ गुरुरपि ॥ समस्तजगदुत्पत्तिस्थितिसंहारकारकः ॥ शिवःशिवाय तेनित्त्यंसर्वदासर्वकामदः ॥ ❀ १ ❀ ॥ द्रव्यहीनन्तुयत्किञ्चिद्विधिहीनन्तुयद्भवेत् ॥ तत्सर्वंपूर्णमेवास्तुप्रसादात्कारणस्यतु ॥ २ ॥ स्थापकमूर्तिपानांचवर्णिना शिल्पिनांतथा ॥ सराष्ट्रपार्थिवानाञ्चशान्तिर्भवतुसर्वदा ॥ ३ ॥ भृत्यपुत्रकलत्रैश्चस्वमित्रबलबाहनैः ॥ कारणस्यप्रसादेनसर्वलोकेश्वरोभवेत्युक्त्वादेवन्नत्वा ॥ यजमानायाशिषन्दद्यात् ॥ ओंदी॒र्घायुस्त॒ऽओषधेखनि॒तायस्मैचत्वा॒खनाम्म्यह॒म्॥

अथोत्वन्दीर्घायुर्भूत्वाशतवल्शाव्विरोहतात् ॥ १ ॥ वा. । सं. । अ. । १२ । मं. ॥ १०० ॥ ओंपुनस्त्वादित्यारुद्राव्वसवःसमिन्धतांम्पुनर्ब्ब्रह्माणोव्वसुनीथयज्ञैः ॥ घृतेनत्वन्तन्न्वम्ब्बर्द्धयस्वसत्याःसन्तुयजमानस्यकामाः ॥ २ ॥ वा. । सं. । अ. १२ । मं. ४४ । ४५ ॥ ओंश्रीर्वर्चस्वमायुष्यमारोग्यमाविधात्पवमानम्महीयते ॥ धान्यन्धनम्पशुम्बहुपुत्रलाभंशतसम्बत्सरन्दीर्घमायुः ॥ ३ ॥ मन्त्रार्थाःसफलाः सन्तुपूर्णाःसन्तुमनोरथाः ॥ शत्रूणांबुद्धिनाशोस्तुमित्राणामुदयस्तव ॥ ४ ॥ इत्याशीर्वादः ॥ अथाधिवासनम् ॥ अधिवासनन्तुसद्योवाबहुकालसाध्यम्बा तत्रसद्यःपक्षेवक्ष्यमाणमधुकुङ्कुमादिसर्वद्रव्यैस्तद्दिनएवदेवंलेपयेत् ॥ अन्त्येतु प्रथमेहनिकुङ्कुमेनदेवंलेपयित्वापूजयेत् ॥ द्वितीयेदिनेहारिद्रासिद्धार्थकचूर्णेन ॥

एवंतृतीयेदिनेपिष्टसितचन्दनयवचूर्णेन ॥ चतुर्थेमनःशिलाप्रियङ्गुचूर्णेन ॥
पञ्चमेकृष्णाञ्जनतिलचूर्णेन ॥ षष्ठेरक्तचन्दनपद्मकेसरचूर्णेन ॥ सप्तमेगोरोच
नानागकेसरचूर्णेन ॥ सर्वलेपद्रव्येषुकपिलाघृतमिश्रणंज्ञेयम् ॥ प्रतिमायांलेप
त्रयन्दिनत्रयेक्रमेणकृत्वा ॥ शेषलेपाँश्चतुर्थदिनेयुगपत्कृत्वात्रिसन्ध्यंबलिदानञ्च
निर्वर्त्यप्रतिकुण्डेहवनंसंपादयेत् ॥ शान्तिहोमञ्चऋत्विजःकुर्युरित्यनेकदिननि
र्वर्त्येऽधिवासनंज्ञेयम् ॥ शिवस्यतुयदाप्रतिष्ठोत्तरकालंसप्तसुदिनेषुमधुकुङ्कुमा
दिलेपाःक्रियन्ते ॥ तदाऽष्टमदिनेस्नपनार्चनादिर्महानुत्सवोविधेयः ॥ ततःपुत्रव
तीभिर्वृद्धसुवासिनीभिर्नीराजनंकार्यम् ॥ ओंअनाधृष्टापुरस्तादग्नेरितिमन्त्रेण० ॥
इतिनीराजनम् ॥ ततःप्रदक्षिणा ॥ ओंस॒प्तास्या॑सन्परि॒धय॒स्त्रिःस॒प्तस॒मिधः॑

कृताः ॥ देवायद्यज्ञन्तन्वानाऽअबध्नन्पुरुषम्पशुम् ॥ १ ॥ सं. । अ. । ३१ । मं. ॥ १५ ॥ यानिकानिचपापानिजन्मान्तरकृतानिच ॥ तानिसर्वाणिनश्यन्तिप्रदक्षिणपदेपदे ॥ इतिप्रदक्षिणा ॥ ततोमण्डपमागत्य ॥ ईशानभागेउपविश्य ॥ भूयसींदद्यात् ॥ ॐअद्याहेत्यादि० अमुकगोत्रोमुकशर्म्मासपत्नीकःसप्रासादविष्णुमूर्तेस्थिरप्रतिष्ठायागकर्मपरिपूर्णतासिद्ध्यर्थं नानानामगोत्रेभ्योब्राह्मणेभ्योयथाशक्तिभूयसींदक्षिणान्दातुमहमुत्सृजे ॥ इतिभूयसींदद्यात् ॥ ब्राह्मणानपिभोजयेत् ॥ ओमद्येहेत्यादि० अमुकगोत्रोमुकशर्मासपत्नीकःसप्रासादविष्णुमूर्तेस्थिरप्रतिष्ठायागकर्मपरिपूर्णतासिद्ध्यर्थं यथाशक्तिब्राह्मणान्यथाकालेनयथोपपन्नेनान्नेनभोजयिष्ये ॥ अथप्रार्थना ॥ ॐयस्यस्मृत्याचनामोक्त्यातपोयज्ञक्रिया

दिषु ॥ न्यूनंसम्पूर्णतांयातिसद्योवन्देतमच्युतम् ॥ १ ॥ प्रमादात्कुर्वताङ्कर्मप्रच्यवेताध्वरेषुयत् ॥ स्मरणादेवतद्विष्णोःसम्पूर्णस्यादितिश्रुतिः ॥ २ ॥ चतुर्भिश्चचतुर्भिश्चद्वाभ्यांपञ्चभिरेवच ॥ हूयतेचपुनर्द्वाभ्यान्तस्मैयज्ञात्मनेनमः ॥ ३ ॥ इत्युक्त्वा ॥ त्रिर्विष्णुंस्मरेत ॥ विसर्जनन्तुचतुर्थीकर्मानन्तरङ्कर्त्तव्यम् ॥ एवं प्रतिष्ठाविधिंकृत्वाआत्मानंकृतार्थंमन्येत् ॥ इतिश्रीबठुवाग्राम निवासिनाकान्यकुब्जमणिरामद्वितीयाख्यसीतारामशर्मणासंगृहीतसर्वदेवप्रतिष्ठेन्दुशेखरेदेवस्थापनप्रकारःसमाप्तः अथचतुर्थीकर्म ॥ तच्चतुर्थदिनेद्वितीयेवाकुर्यात् ॥ तत्रप्राग्वतएवाचार्योमूर्तिमूर्तिपयजमानद्वारपालादिभिःसहमण्डपपश्चिमद्वारेणप्रविश्य ॥ तत्र महास्नानसम्भारादिकमुपकल्प्य ॥ वेद्याःप्रादक्षिण्येनगत्वा ॥ तत्रयजमानउप

विश्यसङ्कल्पङ्कुर्यात् ॥ ओमद्येहेत्यादि०अमुकलिङ्गप्रतिष्ठाङ्गतयाचतुर्थीकर्मकारिष्ये ॥ इतिसङ्कल्प्य ॥ तत्रकुण्डेस्थापितदैवत्यञ्चरुंश्रपयित्वा ॥ गणपतिस्मरणपूर्वकंपञ्चब्रह्मभिरङ्गसहितैःसहस्राहुतिहोमङ्कुर्यात् ॥ ब्रह्ममन्त्रायथा ॥ ओंईशानःसर्वविद्या[illegible]मीश्वरः सर्वभूतानांब्रह्माधिपतिर्ब्रह्मणोधिपतिर्ब्रह्माशिवोमेअस्तुसदाशिवोम् ॥स्वाहा॥ इदमीशानाय ॥१॥ ओंतत्पुरुषायविद्महेमहादेवायधीमहि ॥ तन्नोरुद्रःप्रचोदयात् ॥ स्वाहा ॥ इदंरुद्राय ॥ २ ॥ ओंअघोरेभ्योथघोरेभ्योघोरघोरतरेभ्यः ॥ सर्वेभ्यःसर्वसर्वेभ्योनमस्तेऽअस्तुरुद्ररूपेभ्यः ॥ स्वाहा ॥ इदमघोराय ॥ ३ ॥ ओंवामदेवायनमोज्येष्ठायनमःश्रेष्ठायनमोरुद्रायनमःकालायनमःकलविकरणायनमोवलविकरणायनमोवलायनमोवलप्रमथनायनमःसर्वभूत

दिषु ॥ न्यूनंसम्पूर्णतांयातिसद्योवन्देतमच्युतम् ॥ १ ॥ प्रमादात्कुर्वताङ्कर्मप्रच्यवेताध्वरेषुयत् ॥ स्मरणादेवतद्विष्णोःसम्पूर्णस्यादितिश्रुतिः ॥ २ ॥ चतुर्भिश्चचतुर्भिश्चद्वाभ्यांपञ्चभिरेवच ॥ हूयतेचपुनर्द्वाभ्यान्तस्मैयज्ञात्मनेनमः ॥ ३ ॥ इत्युक्त्वा ॥ त्रिर्विष्णुंस्मरेत ॥ विसर्जनन्तुचतुर्थीकर्मानन्तरङ्कर्त्तव्यम् ॥ एवं प्रतिष्ठाविधिंकृत्वाआत्मानंकृतार्थंमन्येत् ॥ इतिश्रीबठुवाग्रामनिवासिनाकान्यकुब्जमणिरामद्वितीयाख्यसीतारामशर्मणासंगृहीतसर्वदेवप्रतिष्ठेन्दुशेखरेदेवस्थापनप्रकारःसमाप्तः अथचतुर्थीकर्म ॥ तच्चतुर्थदिनेद्वितीयेवाकुर्यात् ॥ तत्रप्राग्वृतएवाचार्योमूर्तिमूर्तिपयजमानद्वारपालादिभिःसहमण्डपपश्चिमद्वारेणप्रविश्य ॥ तत्र महास्नानसम्भारादिकमुपकल्प्य ॥ वेद्याःप्रादक्षिण्येनगत्वा ॥ तत्रयजमानउप

विश्यसङ्कल्पङ्कुर्यात् ॥ ओमद्येहेत्यादि ० अमुकलिङ्गप्रतिष्ठाङ्गतयाचतुर्थीकर्मकारिष्ये ॥ इतिसङ्कल्प्य ॥ तत्रकुण्डेस्थापितदैवत्यञ्चरुंश्रपयित्वा ॥ गणपतिस्मरणपूर्वकंपञ्चब्रह्मभिरङ्गसहितैःसहस्राहुतिहोमङ्कुर्यात् ॥ ब्रह्ममन्त्रायथा ॥ ओं ईशानःसर्वविद्यानामीश्वरः सर्वभूतानांब्रह्माधिपतिर्ब्रह्मणोधिपतिर्ब्रह्माशिवोमेअस्तु सदाशिवोम् ॥स्वाहा॥ इदमीशानाय ॥१॥ ओंतत्पुरुषायविद्महेमहादेवायधीमहि ॥ तन्नोरुद्रःप्रचोदयात् ॥ स्वाहा ॥ इदंरुद्राय ॥ २ ॥ ओंअघोरेभ्योथ घोरेभ्योघोरघोरतरेभ्यः ॥ सर्वेभ्यःसर्वसर्वेभ्योनमस्तेऽअस्तुरुद्ररूपेभ्यः ॥ स्वाहा ॥ इदमघोराय ॥ ३ ॥ ओंवामदेवायनमोज्येष्ठायनमःश्रेष्ठायनमोरुद्रायनमःकालायनमःकलविकरणायनमोवलविकरणायनमोवलायनमोवलप्रमथनायनमःसर्वभूत

दमनायनमोमनोन्मनायनमः । स्वाहा ॥ इदंवामदेवाय ॥ ४ ॥ ओंसद्योजातंप्रपद्यामिसद्योजातायवैनमोनमः भवेभवेनातिभवेभवस्वमांभवोद्भवायनमः ॥ स्वाहा ॥ इदंसद्योजाताय ॥ ५ इतिहुत्वा ॥ अङ्गमन्त्राअपि ॥ ओंअद्भ्यः सम्भृतः ॥ स्वाहा ॥ १ ॥ ओंवेदाहमेतम्० ॥ स्वाहा ॥ २ ॥ ओंप्रजापतिश्चरतिगर्भे० ॥ स्वाहा ॥ ३ ॥ ओंयोदेवेभ्यः ॥ स्वाहा ॥ ४ ॥ ओंरुचम्ब्राह्मन्० ॥ स्वाहा ॥ ५ ॥ इत्यङ्गमन्त्राः ॥ ततःऋुत्विजोघृतेनातिलैर्वांशतंशतंस्वस्वकुण्डेषुहुत्वा ॥ ओंगौरीर्मिमायेतिमन्त्रेण०स्वाहेतीदंगौर्य्यै ॥ १ ॥ इतिशिवस्यचतुर्थीकर्म ॥॥ एवमन्यदेवविषयेपि ॥ पूर्ववत्स्थापितदेवत्यञ्चरुंश्रपयित्वास्वमन्त्रैःपत्नीमन्त्रैश्चसहस्रहोमङ्कुर्यात् ॥ तद्यथा ॥ विष्णुप्रतिष्ठायां

ओंइदम्विष्णुर्विचक्रमे० ॥ स्वाहा ॥ इदंवि० ॥ १ ॥ ओंविष्णोरराटम्० ।
स्वाहा ॥ २ ॥ इदंवि० ॥ ओंनारायणायविद्महेवासुदेवायधीमहि ॥ तन्नोवि
ष्णुःप्रचोदयात् ॥ स्वाहा ॥ इदंविष्णवे ॥ ३ ॥ अङ्गमन्त्राःपूर्वोक्ताः ॥
पत्नीमन्त्रस्तु ॥ ओंश्रीश्चतेलक्ष्मीश्चेति० ॥ स्वाहा ॥ इदंलक्ष्म्यै ॥ सूर्य
प्रतिष्ठायान्तु ॥ ओंआकृष्णेनेति । स्वाहा ॥ इदंसूर्याय ॥ पत्नीमन्त्रस्तु ॥
उष॒स्ताश्चि॒त्रमाभ॒राऽस्मऽभ्यम्ऽवाजिनीवति ॥ येनं॒तोकञ्च॒तनंयञ्च॒धामहे ॥
स्वाहा ॥ इदंप्रभायै ॥ इति ॥ गणेशप्रतिष्ठायाम् ॥ ओंनमोगणेभ्यः । स्वा
हा ॥ इदंगणपतये ॥ १ ॥ ओंगणानान्त्वा० । स्वाहा ॥ इदंग. ॥ २ ॥
ततःगणेशगायत्र्यादिभिः ॥ ओंतत्पुरुषायविद्महेवक्रतुण्डायधीमहि ॥ तन्नोदन्ती

प्रचोदयादिति ॥ ३ ॥ अङ्गमन्त्राःसर्वेषांपूर्वोक्ताएव ॥ ततः ॥ ओंमूर्द्धानन्दिवइतिमंत्रेणपूर्णाहुतिञ्जुहुयुः ॥ गुरुश्चशीतलतोयेनमूर्तिंसिक्त्वानिर्म्माल्यमपसार्यपुनःपूजयित्वा ॥ एकाशीतिघटान्पूर्ववत्संस्थाप्यस्नापयेदिति ॥ यद्वा ॥ पुराणान्तरोक्तप्रकारेणपूजयेत् ॥ तत्रदध्यक्षतकुशाग्रक्षीरदूर्वामधुयवसिद्धार्थकपुष्पफलतोयान्वितमर्घ्यपात्रमासाद्य ॥ कलशाऽष्टसहस्रमष्टशतमष्टौचतुरोवाकलशान्सौवर्णान्राजतान्ताम्रमयान्रीतिकमयान्मृन्मयान्वाउपकल्प्यतेषु ओंशन्नोदेवी० ॥ ओंआपोहिष्ठेतिमन्त्रैरुद्धृतन्तीर्थजलंप्रक्षिप्य मृद्गोमयक्षीरदधिमधुघृतशर्करौषधिपुष्पफलकुशरत्नगन्धपञ्चगव्यादिकम्प्रक्षिप्य॥ ततः ॥ ओंसमुद्रम्बहप्रहिणोमिस्वांय्योनिमभिगच्छत ॥ अरिष्टास्माकम्वीरामापरासेचिमत्त्ययेतिमन्त्रे

णदेवायार्घ्यंसमर्प्यस्नापयेत् ॥ तद्यथा ॥ ओंपञ्चनद्यइतिपञ्चगव्येन ॥ १ ॥ ॐदधिक्राव्णइतिदध्ना ॥ २ ॥ ॐआप्यायस्वेतिक्षीरेण० ॥ ३ ॥ तेजोसीतिघृतेन० ॥ ४ ॥ ॐमधुवातेतिमधुना० ॥ ५ ॥ देवस्यत्वेतिपुष्पोदकेन ॥ ६ ॥ ॐपरिवाजपतिरितिरत्नोदकेन ॥ ७ ॥ ॐदेवस्यत्वेतिकुशोदकेन० ॥८॥ ॐअग्नऽआयाहीतिफलोदकेन ॥ ९ ॥ ॐताछंसवितुर्वरेण्यमितिगन्धोदकेन ॥ १० ॥ ॐओषधीःप्रतिमोदध्वमितिसहदेवीव्याघ्रीवलातिवलाशङ्खपुष्पीवचासिंहीसुवर्चलोदकेन ॥ ११ ॥ ॐसमुद्रज्येष्ठाइतिपूर्वकल्पितशीतजलेन ॥ १२ ॥ ॐवसोःपवित्रमितिसहस्रधाराकुम्भेन ॥ १३ ॥ ततःतूष्णींस्नपनम् ॥ ॐअन्धस्थान्धोवो० ॥ इतिपञ्चवर्णसूत्रेणनीराज्यवलिंहरेत् ॥

ॐमुञ्चन्तु॑माशपथ्यादितिकौतुकंविमुञ्चेत् ॥ मुञ्चन्तु॑माशपथ्या॒दथो॑ऽवरु॒ण्या॒दु॒त ॥ अथो॑यम॒स्य॒पड्वीशा॒त्सर्व॑स्माद्देवकिल्वि॒षात् ॥ १ ॥ सं. अ. १२ मं. ॥ ९० ॥ इतिकौतुकम्विमुच्य ॥ सुगन्धवस्त्रेणपंचनद्यइतिमंत्रेणदेवंपरिमार्ज्यात् ॥ २ ॥ ततोमन्दाकिन्यास्तुयद्वारिसर्वपापहरंशुभम् ॥ तदिदङ्कल्पितन्देवसम्यगाचम्यतान्त्वया ॥ इत्याचमनीयन्निवेदयेत् ॥ १ ॥ देवसूक्तसमायुक्तेसर्वयज्ञसमन्विते ॥ सर्वषर्णप्रदेदेववाससीप्रतिगृह्यताम् ॥ इतिवस्त्रयुग्मन्निवेदयेत् ॥ २ ॥ शरीरन्तेनजानामिचेष्टान्नैवचनैवच ॥ मयानिवेदितंभक्त्याचन्दनंप्रतिगृह्यताम् ॥ इतिकुङ्कुमकर्पूरयुक्तचन्दनम् ॥ ३ ॥ मणिमुक्ताप्रवालाद्यैःस्वर्णपुष्पैर्मयाकृता ॥ पूजातुदेवदेवेशप्रसादाद्भवतस्तव ॥ इतिपुष्पम् ॥ ४ ॥ वनस्पति

रसोद्भूतोगन्धाढ्योगन्धउत्तमः ॥ आघ्रेयःसर्वदेवानांधूपोयंप्रतिगृह्यताम् ॥ इति धूपम् ॥ ५ ॥ त्वंचन्द्रस्त्वंरविर्विष्णुस्त्वंरत्नानिहुताशनः ॥ त्वमेवसर्वज्योतींषिदीपोयंप्रतिगृह्यतामित्यशीतिचत्वारिंशद्भिर्वादीपैरारार्त्तिकं ॥ ६ ॥ अन्नञ्चतुर्विधंस्वादुरसैःषड्भिःसमन्वितम् ॥ भक्ष्यभोज्यसमायुक्तंनैवेद्यंप्रतिगृह्यतामितिनैवेद्यं ॥ ७ ॥ मन्त्रहीनंक्रियाहीनंभक्तिहीनञ्जनार्दन ॥ यत्पूजितंमयादेवपरिपूर्णन्तदस्तुमे ॥ इति ॥ ततःपुनरष्टोत्तरसहस्रंसूलमन्त्रेणहुत्वाज्ञानान्दशांशेन पूर्णाहुत्यन्तङ्कृत्वा ॥ स्वस्तिवाचनङ्कारयित्वा ॥ इन्द्रादिभ्योवलिन्दत्वाऽऽचम्यशेषंसमापयेदिति ॥ इतिचतुर्थीकर्मविधिः ॥ ततःशिवप्रतिष्ठायांचण्डपूजा ॥ चतुर्थीकर्मदिनेदिनांतरेवाप्रासादाद्बहिर्गर्भगृहार्धसूत्रांतरालेईशान्याञ्चण्डंस्थापयेत् ॥ तद्य

था ॥ आचम्यप्राणानायम्य ॥ देशकालौसंकीर्त्य० ॥ ॐमुकलिङ्गप्रतिष्ठाकर्माङ्गतयाचण्डप्रतिष्ठाङ्करिष्ये ॥ इतिसङ्कल्प्य ॥ पीठादौचण्डमूर्तिसंस्थाप्यतीर्थोदकेन संस्नाप्यपूजयेत् ॥ तत्रध्यानम् ॥ रुद्राग्नेःप्रभवञ्चण्डंकज्जलाभंभयानकम् शूलदण्डधररौद्रञ्चतुर्वक्त्रञ्चतुर्भुजम् ❀ ॥ ❀ मुखोद्गीर्णमहाज्वालंरक्तद्वादशलोचनम् ॥ जटामुकुटखण्डेन्दुमण्डितंफणिकङ्कणम् ॥ व्यालयज्ञोपवीतञ्च साक्षसूत्रकमण्डलम् ॥ श्वेतपद्मासनासीनंभक्तिप्रह्वार्तिनाशनमिति ॥ इत्येवन्ध्यात्वा ॥ ॐचण्डासनायनमः ॥ १ ॥ ॐचण्डमूर्त्तयेनमः ॥ २ ॥ ॐधुनिचण्डेश्वरायहुंफट्स्वाहेतिमन्त्रेणावाह्यन्यासङ्कुर्यात् ॥ ॐचण्डहृदयायहुंफट्नमः ॥ ॐचण्डशिरसेहुंफट्नमः ॥ ॐचण्डशिखायैहुंफट्नमः ॥ ॐचण्डकवचायहुं

फट्नमः ॥ ओंचण्डास्त्रायहुंफट्करयोरस्त्रं ॥ ॐचंसद्योजातायहुंफट्नमः ॥ ॐचिंवामदेवायहुंफट्नमः ॐचुंअघोरायहुंफट्नमः॥ ॐचेंतत्पुरुषायहुंफट्नमः ॥ ॐचौंईशानायहुंफट्नमः इतिन्यासान्कृत्वाषोडशोपचारैःसंपूज्यविज्ञापयेत्॥यावत्तिष्ठतिलोकेस्मिन्देवदेवोमहेश्वरः ॥ तावत्कालन्त्वयादेवस्थातव्यंशिवसन्निधाविति ॥ ततोदिग्वलिन्दत्वाभूतानिविज्ञापयेत् ॥ यावत्कालंमहादेवोलिङ्गमाश्रित्यतिष्ठति ॥ तावत्कालन्तुरक्षार्थंयूयंतिष्ठतसर्वदेति ॥ ततोगुरुःकर्मशेषंसंपाद्य ॥ भद्रासनेयजमानमुपवेश्याभिषिञ्चेत् ॥ तत्रदेवस्यत्वेति. ॥ शन्नोदेवीरभिष्टये० ॥ एवं अथर्वणसाम्नामपि ॥ सुरास्त्वामभिषिञ्चन्त्वित्यादयश्चपौराणिकमन्त्राः ॥ ततोयजमानोमहाजलाशयेअवभृथस्नानङ्कृत्वा ॥ मण्डपमागत्यगुर्वादीन्

संपूज्य ॥ हिरण्यादिदक्षिणान्दत्वा ॥ सोपस्कराङ्गाञ्चदद्यात् ॥ गुरुश्चसमस्तजगदुत्पत्तिस्थित्यनुग्रहकारकः ॥ शिवःसानुचरःसाङ्गःसर्वदासर्वकामदः ॥ इतिमन्त्रेणाशिषोदद्यात् ॥ यथाशक्तिब्राह्मणभोजनम् ॥ क्वचिच्चण्डोनास्तीतित्रिविक्रमः ॥ बाणलिङ्गेचलोहेचसिद्धलिङ्गेस्वयम्भुवि ॥ प्रतिमासुचसर्वासुनचण्डोधिकृतोभवेदिति ॥ सिद्धान्तशेखरेपि ॥ धराहिरण्यगोरत्नताम्ररौप्यांशुकादिकान् ॥ विहायशेषनिर्माल्यंचण्डेशायनिवेदयेत् ॥ १ ॥ अन्यदन्नादिपानीयंताम्बूलंगन्धपुष्पकं ॥ दद्याच्चण्डायनिर्माल्यंशिवभुक्तन्तुसर्वशः ॥ २ ॥ आचार्यशिवचण्डानामाज्ञाभङ्गेतुलक्षकम् ॥ धनस्यभक्षणेतथापादोनंलक्षमीरितम् ॥ ३ ॥ निर्णयसिन्धौ ॥ लिङ्गेस्वायंभुवेबाणेरत्नजेरसनिर्मिते ॥

सिद्धप्रतिष्ठितेचैवनचण्डाधिकृतिर्भवेत् ॥ ४ ॥ यत्रचण्डाधिकारोस्तितद्भोक्तव्यन्नमानवैः ॥ चण्डाधिकारोनोयत्रभोक्तव्यन्तत्रभक्तितः ॥ इतिचण्डपूजा ॥ अथचलप्रतिष्ठावौधायनाद्युक्ता ॥ तत्रशुचौदेशेमण्डपंतदन्तःप्रतीच्यामुदीच्याम् ईशान्याम्वाकुण्डङ्कुर्यात् ॥ मण्डपाकरणपक्षेकुण्डस्थानेस्थण्डिलङ्कुर्यात् ॥ तदुत्तरतःस्नानवेदीस्नानोपकरणानि ॥ नैर्ऋत्येवास्तुमण्डलंमध्येवेद्यांसर्वतोभद्रादिमण्डलंविष्णुप्रतिष्ठायांसर्वतोभद्रंशिवप्रतिष्ठायांलिङ्गतोभद्रं ॥ तदुत्तरतः स्वस्तिकोपरिशय्यास्थानञ्चकृत्वा ॥ पूर्वदिनेप्रतिष्ठादिनेवा ॥ देशकालौस्मृत्वा० दाहादिदोषदुष्टायामस्यांमूर्त्तौदेवकलासान्निध्यार्थमायुः श्रीसर्वफलायुष्मत्सुपुत्रावाप्तिसुखकामईश्वरप्रीतिकामोवापरिवारदेवतोपेतामुकमूर्त्तेश्चलप्रतिष्ठाङ्करिष्ये ॥

इतिसङ्कल्प्य ॥ तदङ्गत्वेनगणपतिपूजनंपुण्याहवाचनंमातृकापूजनंनान्दीश्राद्धंचकृत्वागुरुमष्टौचतुरोवाऋत्विजश्चवृत्वापूजयेत् ॥ ततोगुरुर्मण्डपकरणपक्षेमण्डपप्रतिष्ठामग्निस्थापनंवास्तुपूजनञ्चकृत्वा ऽत्रग्रहस्थापनंकेचिदिच्छन्तीतितत्स्थापनंकृत्वादैवत्यन्नैवारञ्चरुंश्रपयित्वाऽऽज्यभागान्तेपलाशोदुम्बराश्वत्थापामार्गसमिधांप्रत्येकमष्टसहस्रमष्टशतमष्टाविंशतिमष्टौवाप्रतिदैवतंलोकपालमन्त्रैर्व्याहृतिभिर्वाजुहुयात् ॥ तावत्संख्याकमाज्यहोमंकृत्वास्थाप्यदेवताकमन्त्रेणसमित्तिलाज्यानांप्रतिद्रव्यन्दशदशाहुतीः स्विष्टकृतञ्चहुत्वाऽष्टसहस्रमष्टशतम्वास्थाप्यदेवतामन्त्रञ्जपेत् ॥ अथयजमानोगुरवेवरन्दद्यात् ॥ ततोगुरुर्देवंपञ्चगव्यैःपञ्चामृतैश्चपृथक्पृथक्तत्तन्मन्त्रैःस्नपयेत् ॥ ॐशन्नोदेवीतिसंस्रवकलशेनसंस्नाप्य ॥

श्रीखण्डाद्यैरनुलिप्य ॥ उष्णोदकेनप्रक्षाल्य ॥ पुनश्चतुर्भिःकलशैःसमुद्रज्येष्ठाइत्याद्यभिषेकमन्त्रैरभिषिच्य ॥ भद्रपीठेदेवंनिवेश्य ॥ तत्रपरितोष्टौकलशान्तोयपूर्णान्पूर्वादिक्रमेणसंस्थाप्यसप्तमृदःपल्लवान्कुशान्शान्त्युदकंप्रस्रवणोदकंयवान्पुष्पाणिफलानिचक्रमेणनिक्षिप्यस्थापनक्रमेणकुम्भैःस्नापयेत् ॥ तत्रमन्त्राः ॥ ॐआपोहिष्ठेतितिसृभिः ॥ ३ ॥ ॐहिरण्यबर्णाःशुचयइतिचतसृभिः ॥ ४ ॥ पवमानःसुवर्चनइत्यनुवाकश्चेति ॥ मन्त्रायथा ॥ ॐपवमानःसुवर्जनःपवित्रेण विचर्षणिः ॥ यःपोतासपुनातुमा ॥ पुनन्तुमादेवजनाःपुनन्तुमनवोधिया ॥ पुनन्तुविश्वाऽआपवःजातवेदःपवित्रबत ॥ पवित्रेणपुनीहिमाशुक्रेणदेवदीद्यत् ॥ अग्नेक्रत्वाक्रतूँरनु ॥ यत्तेपवित्रमर्चिष्यग्नेविततमन्तरा ॥ ब्रह्मतेनपुनी

महे ॥ उभाभ्यान्देवसवितःपवित्रेणसवनेच ॥ इदम्ब्रह्मपुनीमहे ॥ वैश्वदे
वीपुनतींदेव्यागात् ॥ यस्यैवह्वीस्तनुवोवीतपृष्ठा ॥ तयामदन्तःसधमादेषु
वयँस्यामपतयोरयीणाम् ॥ वैश्वानरोरश्मिभिर्मापुनातु ॥ वातऽप्राणेनेषिरो
मयोभूः ॥ द्यावापृथिवीपयसापयोभिः ॥ ऋतावरीयज्ञियेमापुनीताम् ॥ वृहद्भिः
सवितस्तृभिःवर्षिष्ठैर्देवमन्मभिः ॥ अग्नेदक्षैःपुनीहिमा ॥ येनदेवाअपुनात
येनपोदिव्यङ्कशः ॥ तेनदिव्येनब्रह्मणाइदम्ब्रह्मपुनीमहे ॥ यःपावमानीर
ध्येतिऋषिभिःसम्भृतँरसंसर्वँसपूतमश्नाति ॥ स्वदितम्मातरिस्वना ॥
पावमानीर्योअध्येतिऋषिभिःसम्भृतँरसम् ॥ तस्मैसरस्वतींदुहेक्षीरँसर्पिम
धूदकम् ॥ ० ॥ पावमानीस्वस्त्ययनीसुदुघाहिपयस्वतीः ॥ ऋषिभिःसम्भृ

थेरसःब्राह्मणेष्वमृतꣳहितम् ॥ पावमानीर्दिशन्तुनःइमाँल्लोकमथोअमुम् ॥ कामान्समर्द्धयन्तुनः ॥ देवीर्देवैःसमाभृताः ॥ पावमानीस्वस्त्ययनीःस्वदुघाहिघृतश्चुतः ॥ ऋषिभिःसम्भृतोरसःब्राह्मणेष्वमृतꣳहितम् ॥ येनदेवाःपवित्रेणआत्मानंपुनतेसदा ॥ तेनसहस्रधारेणपावमान्यःपुनन्तुमा ॥ प्राजापत्यंपवित्रंशतोद्यामꣳहिरण्मयम् ॥ तेनब्रह्मविदोवयम्पूतंब्रह्मपुनीमहे ॥ इन्द्रःसुनीतीसहमापुनातुसोमःस्वस्त्यावरुणःसमीच्यायमोराजाप्रमृणाभिःपुनातुमाजातवेदाभोर्जयंत्यापुनातु ॥ इतिसाम ॥ वातंप्राणेन ॥ १ ॥ शिरोमेश्रीरितिसुवर्जनअनुवाकश्चेति ॥ ततोवाससीपरिधाप्यउपवीतंदत्वा ॥ गन्धपुष्पधूपदीपैःसम्पूज्य ॥ पैष्टैरष्टभिर्दीपैर्नीराज्यहिरण्यगर्भइत्यष्टभिःमन्त्रैः ॥ मन्त्राः

यथा ॥ ॐहिरणगर्भः ॥ १ ॥ ॐयःप्राणतो० ॥ २ ॥ ॐयऽआत्मदाबलदा० ॥ ३ ॥ ॐयस्येमेहिमवंतो ॥ ४ ॥ ॐयङ्क्रन्दसीऽअवसा० ॥ ५ ॥ ॐयेनद्यौरुग्रा० ॥ ६ ॥ ॐआपोहयद्बृहतीर्विश्वमायन्० ॥ ७ ॥ ॐयश्चिदापोमहिना० ॥ ८ ॥ इत्यष्टभिर्मन्त्रैर्नीराज्य ॥ ततःहिरण्यशलाकांगृहीत्वा ॥ ॐचित्रन्देवानामित्यर्द्धर्चेनदेवनेत्रेउन्मील्य ॥ ॐअञ्जन्तित्वामध्वरेदेवयन्तोवनस्पतेमधुनादैव्येनायन्दूर्ध्वस्तिष्ठाद्द्रविणेहधत्ताद्यद्वाक्षयोमातुरस्थाऽउपस्थे ॥ १ ॥ इतिमन्त्रेणाङ्क्त्वापुनर्मधुघृतशर्कराभिर्देवस्यत्वेत्यञ्जयेत् ॥ मन्त्रान्तेअनज्मीतिवाक्यशेषः ॥ ❁ ❁ ❁ ❁ ❁ ❁ ततोभक्ष्यभोज्यादर्शादीन्दर्शयेत् ॥ तदाऽग्रेकोपिनतिष्ठेत् ॥ ततोदर्भेष्वासीनोदर्भा

न्धारयमाणः ॥ पुरुषसूक्तेनस्तुत्वा ॥ वंशपात्रेपंचवर्णान्वितमन्नंप्रक्षिप्य ॥ देवंनीराज्य ॥ ॐनमोभूतादिपतयेदीप्तशूलधरायोमापतयेसर्वविद्याधिपतयेरुद्रायनमःशिवमगार्हितंकर्मास्तुस्वाहेतिवलिन्दत्वाचामेत् ॥ ततोब्रह्माद्याःसर्वतोभद्रमण्डलदेवताआवाह्यगन्धादिनासंपूज्यस्थाप्यदेवन्तल्लिङ्गमन्त्रैरावाह्यकर्णिकायांप्रतिष्ठाप्यगन्धाद्यैःसंपूज्यकुण्डेमण्डलेदेवतानाम्नाममन्त्रैर्दशदशातिलाहुतीर्हुत्वा॥ सर्वतोभद्रमण्डलदेवतोत्तरतःस्वस्तिकोपरिशय्यायान्देवमारोप्य ॥ पुरुषसूक्तोत्तरनारायणाभ्यांब्राह्मणैःसहोपतिष्ठेत् ॥ ततोदेवेपुरुषात्मनेनमः ॥ प्राणात्मनेनमः ॥ इतिशरीरेऽव्यापकंन्यसेत् ॥ प्रकृतितत्वायनमः ॥ वुद्धितत्त्वायनमः ॥ अहङ्कारतत्वायनमः ॥ मनस्तत्त्वायनमः ॥ हत्तत्त्वायनमः ॥

ॐशब्दतत्वायेतिशिरशि ॥ स्पर्शतत्त्वायेतित्वचि ॥ रूपतत्वायेतिहृदि ॥ रसतत्वायेतिबस्तौ ॥ गन्धतत्वायपादयोः ॥ श्रोत्रतत्वायकर्णयोः ॥ त्वक्तत्वायसर्वशरीरे ॥ चक्षुस्तत्वायचक्षुषोः ॥ जिह्वातत्वायजिह्वायां ॥ घ्राणतत्वायघ्राणे ॥ वाक्तत्वायवाचि ॥ पाणितत्वायपाणयोः ॥ पादतत्वायपादयोः ॥ पायुतत्वायपायौ ॥ उपस्थतत्वायोपस्थे ॥ पृथ्वीतत्वायपादयोः ॥ अप्तत्वायवस्तौ ॥ तेजस्तत्वायहृदि ॥ वायुतत्वायघ्राणे ॥ आकाशतत्वायशिरसि ॥ रजस्तत्वायतमस्तत्वायसत्त्वतत्वायदेहतत्वायइतिदेहे ॥ ततःपुरुषसूक्तन्यासङ्कृत्वासम्पूज्याधिवासयेत् ॥ ततोमण्डलशय्ययोर्मध्येनगन्तव्यंमण्डलदेवतानामुपहारानिवेदनम् ॥ तत्रसर्वान्नंब्रह्मणे ॥ घृतान्नंसोदकमिन्द्राय ॥

आज्यान्नमग्नये ॥ माषान्नंयमाय ॥ कृष्णव्रीह्यन्नंसघृतंनिर्ऋतये ॥ नवनीतोदनंवरुणाय ॥ यवोदनंवायवे ॥ प्रैयङ्गवंसोमाय ॥ गवेदुहमीशानाय। पायसंसर्वेभ्यःनिवेदयेत् ॥ ततःशय्याप्रदेशेनैवारंचरुंस्थापयित्वातेनदिग्बलिन्दत्वानिशान्नयेदित्यधिवासनम् ॥ प्रातःपुरोदयात्देवमुत्थाप्यमूलमन्त्रेणोपस्थायघृतेनचरुंश्रपयित्वाभिघार्यमूलमन्त्रेणाष्टोत्तरसहस्रमष्टशतम्वाहुत्वाघृतेनचरुशेषेणचजुहुयात् ॥ ॐअग्नयेस्वाहा ॥ ॐसोमायस्वाहा ॥ ॐधन्वन्तरयेस्वाहा ॥ ॐकुह्वैस्वाहा ॥ ॐअनुमत्यैस्वाहा ॥ ॐप्रजापतयेस्वाहा ॥ ॐपरमेष्ठिनेस्वाहा ॥ ॐब्रह्मणेस्वाहा ॥ ॐअग्नयेस्वाहा ॥ ॐसोमायस्वाहा ॥ ॐअग्नयेन्नादायस्वाहा ॥ ॐअग्नयेन्नपतयेस्वाहा ॥ ओंप्रजापतयेस्वाहा ॥ ॐवि

श्वेभ्योदेवेभ्यःस्वाहा ॥ ॐसर्वेभ्योदेवेभ्यःस्वाहा ॥ ॐसर्वेभ्योभूतेभ्यःस्वाहा ॥ ॐभूःस्वाहा ॥ ॐभुवःस्वाहा ॥ ॐस्वःस्वाहा ॥ ॐअग्नयेस्विष्टकृतेस्वाहा ॥ इतिजुहुयात् ॥ ततोयजमानोगुरवेवरन्दद्यात् ॥ ततउदितेसूर्येगुरुर्वेद्यामेवदेवमभिमुखङ्कृत्वा ॥ रत्नपुष्पमूलफलौषध्यादिकदर्शयित्वा ॥ ताम्रपात्रेशान्तिजलमादायमूलमन्त्रेणशतवारमभिमन्त्र्यदेवशिरसितेनैवमन्त्रेणासिच्य ❀ ❀ ॥ उतिष्ठब्रह्मणस्पतइत्युत्थाप्य ॥ विश्वतश्चक्षुरित्युपस्थायदेवस्यपुरस्तात्जपेत ॥ ॐब्रह्मविष्णुरुद्रेभ्योनमः ॥ दिक्पालेभ्योनमः ॥ वसुभ्योनमः ॥ रुद्रेभ्योनमः आदित्येभ्योनमः ॥ अश्विभ्यान्नमः ॥ मरुद्भ्योनमः ॥ कुवेरायनमः ॥ गङ्गादिमहानदीभ्योनमः ॥ अग्नीषोमाभ्यान्नमः ॥ इन्द्राग्निभ्यान्नमः ॥ द्यावा

पृथिवीभ्यान्नमः ॥ धन्वन्तरयेनमः ॥ सर्वेशायनमः ॥ विश्वेभ्योदेवेभ्योनमः ॥ ब्रह्मणेनमः ॥ इतिजपित्वा ॥ प्राणप्रतिष्ठाङ्कुर्यात् ॥ देवस्यपुरतोयजमानमभिषिच्य० ॥ देवमन्त्रंजपित्वा० ॥ ध्रुवसूक्तेनप्रधानदेवमन्त्रेणपुरुषसूक्तेनगायत्र्याव्याहृतिभिर्देवंप्रतिष्ठाप्य ॥ प्रतिमायांनिजवाहनायुधपरिवारादिकन्ध्यात्वा पुनःपूजयित्वामुद्रांप्रदर्श्यमूलमंत्रमष्टोत्तरशतञ्जपित्वास्तुत्वानत्वाचम्यस्विष्टकृदाद्युत्तराङ्गानिसमापयेत् ॥ ततोयजमानोदक्षिणान्दद्याद्विप्रांश्चभोजयेत् यथाशक्तीति चलार्चाप्रतिष्ठा ॥ अथजीर्णोद्धारविधिः ॥ अग्निपुराणे ॥ जीर्णादीनाञ्च लिङ्गानामुद्धारविधिमाचरेत् ॥ लक्ष्मोज्झितञ्चभग्नञ्चस्थूलंवज्रहतन्तथा ॥ संपुटंस्फुटितंव्यङ्गंलिङ्गमित्येवमादिकम् ॥ इत्यादिदुष्टलिङ्गानांत्याज्यापिण्डीतथा

वृषः ॥ लक्ष्मोज्झितंवाणादिभ्रमेणतद्विधिनास्थापितंसत्तल्लक्षणरहितं ॥ भग्न
मनेकशकलीभूतंस्थूलपिण्डिकाननुरूपं ॥ वज्रहतंविद्युद्धतं ॥ संपुटंन्युब्जं ॥
स्फुटितमेकदेशेभग्नं ॥ व्यङ्गंपिण्डिकाप्रणाल्यादिरहितं ॥ अविद्धपदेनचांडाल
स्पृष्टादीनांग्रहणम् ॥ पिंडीवृषयोर्दुष्टत्वेतयोरेवत्यागोनालिङ्गस्य ॥ चालितञ्च
लितंनिम्नमत्यर्थंविषमस्थितम् ॥ दिङ्मूढंपातितंलिङ्गंमध्यस्थंपतितन्तथा ॥
एवंविधञ्चसंस्थाप्यन्निर्व्रणञ्चभवेद्यदि ॥ नादेयेनप्रवाहेणतदपाक्रियतेयदि ॥
ततोन्यत्रापिसंस्थाप्यंविधिदृष्टेनकर्मणेति ॥ निम्नंसामन्तभूभागान्निम्नायांभुव्यव
स्थितम् ॥ विषमस्थितंयत्रपूजादिकर्तुंन्नशक्यतेतस्मिन्देशेव्यवस्थितम् ॥
दिङ्मूढंविशेषविध्यभावेपिउदगातिरिक्तादिक्प्राणालीकम् ॥ पातितगर्त्तादौ ॥

मध्यस्थंसंपूर्णपिण्डकाश्वभ्रेन्तर्गतंप्रासादमध्यभागंस्थितंइत्यपिकेचित् ॥ एवंविधमित्यनेनलक्ष्मोज्झितभग्नस्फुटितविद्युद्धतातिरिक्तानांग्रहणम् ॥ तेनजघन्योनिर्व्रणशब्दोपिलक्ष्मोज्झिताद्यतिरिक्तानामेवोपलक्षकः । पीठाच्चचालितंलिङ्गन्निर्दोषन्तुभवेद्यदि ॥ ततोवैस्थापयेत्तत्रजपेल्लक्षमघोरकम् ॥ त्यजेत्संदूषितंलिगंश्वपचाद्यैश्चसेवितम् ॥ लिङ्गान्तरंप्रतिष्ठाप्यविशुद्धिमधिगच्छतीति ॥ सिद्धान्तशेखरोक्तेः ❀ ❀ ॥ तत्रैव ❀ ❀ ॥ लिङ्गादीनाञ्चजीर्णानांप्रोच्यतेविधिरुच्छ्रितौ ॥ सर्वारिष्टविनाशार्थंसर्वप्राणिहितार्थकः ॥ लिङ्गस्यपिण्डकायाश्चप्रतिनामुखलिङ्गयोः ॥ सर्वेषांपरिवाराणांहर्म्यप्राकारयोस्तथा ॥ उद्धारश्चावृतिः प्रोक्ताथोद्धारेहेतुरुच्यते ॥ आवृतिःपुनःसंस्कारः ॥ स्फुटितेखण्डितेभग्नेदग्धे

वाशनिनाग्निना ॥ उन्मत्तैःशत्रुभिश्चौरैःकरिणास्त्रोतसाहृते ॥ लिङ्गेपीठादिकेवापिविशीर्णेकालपर्ययात् ॥ देहञ्जीर्णन्तथादेहीत्यक्त्वान्यदुपगच्छति ॥ लिङ्गादीन्यतिजीर्णानितथामुञ्चन्तिदेवताः ॥ खण्डितञ्चूर्णितंलिङ्गंप्रेताद्याआश्रयन्तिच ॥ लिङ्गाद्यंसत्वशून्यत्त्वात्तथाचब्रह्मराक्षसाः ॥ कर्त्तुर्नृपाणांराष्ट्रस्य तद्ग्रामस्यविशेषतः ॥ पीडाङ्कुर्वन्तितेह्युग्रांदुर्भिक्षंमरणादिकम् ॥ तस्मात्सर्वप्रयत्नेनकुर्यादुद्धरणक्रियाम् ॥ स्वायम्भुवेचदैवेचवाणलिङ्गेतथैवच ॥ ऋषिभिश्चासुरैर्दैवैस्तत्त्वविद्भिःप्रतिष्ठिते ॥ लिङ्गेजीर्णादिदुष्टेपिनोद्धारन्तत्रकारयेत् ॥ इदमपिस्वयंभुवादिव्यक्तिविषयम् ॥ नतुदैवात्तद्व्यक्तिनाशेनतत्स्थानस्थापितेदानींतनतादृशव्यक्तिविषयम् ॥ स्वायम्भुवादिलिङ्गानांजीर्णपीठंपरित्यजेत् ॥ उक्तै

जीर्णादिभिर्दुष्टंमानुषन्तुपरित्यजेत् ॥ दिङ्मूढम्पतितंस्थानान्मध्यस्थंस्रोतसाहृतम् ॥
चौराद्यैश्चालितंलिङ्गंस्थापयेन्निर्व्रणंपुनः ॥ लोहाढ्यंच्छिन्नभिन्नाङ्गंसन्धायस्थापये
त्पुनः।सुवर्णाद्यष्टलोहनिर्मितंलिङ्गंदैवाद्भग्नंसत्तदेवसज्जङ्कृत्वापुनःस्थापयेदित्यर्थः॥
बाहुपादशिरोहीनाङ्कर्णनासास्यहीनकाम् ॥ तादृशींपरिवाराणांप्रतिमांपरिवर्जयेत् ॥
यद्द्रव्यन्तत्प्रमाणंचलिङ्गंवाप्रतिमापिवा ॥ तादृक्केनैवमानेनतद्द्रव्येणप्रक
ल्पयेत् ॥ कारयेन्नान्यमानेननान्यद्रव्येणतत्पुनः ॥ नान्याकारञ्चनान्यत्र
स्थापयेत्तद्गुरूत्तमः ॥ स्रोतसापहृतेलिङ्गेप्रासादेवातदन्यतः ॥ तत्समीपग
तद्देशेस्थापयेद्बाधवर्ज्जिते ॥ प्रासादेपतितेहर्म्येगोपुरेमण्डपादिके ॥ तदा
कारञ्चतद्द्रव्यैस्तन्मानन्तत्रकारयेत् ॥ कर्मयोग्याशिलाग्राह्यादृढकाश्चतथावि

धाः ॥ हीनद्रव्यकृतंहर्म्यंश्रेष्ठैर्द्रव्यैःसमाचरेत् ॥ हीनंवाप्यधिकंमानमाकारंवानकारयेत् ॥ एवमुक्तेनमार्गेणदोषैरुक्तैर्विचार्यच ॥ लिङ्गपीठादिकञ्जीर्णन्तदुद्धारन्तथाचरेत् ॥ तिथिनक्षत्रवारादितदर्थन्नविचारयेत् ॥ जीर्णञ्चोद्धारयेद्विद्वानजीर्णन्नैवचालयेत् ॥ जीर्णस्यधारणेदोषअजीर्णचलनेतथा ॥ तस्मान्नधारयेज्जीर्णमजीर्णंरक्षयेद्बुधः ॥ सुस्थितन्दुःस्थितंवापिशिवलिङ्गन्नचालयेत् ॥ शतेनस्थापनङ्कुर्यात्सहस्रेणतुचालनम् ॥ अस्यश्लोकस्यवाक्यार्थोवर्ण्यतेऽथयथागमम् ॥ नित्यम्पूजादिभिर्युक्तंजीर्णाद्यमपिसुस्थितम् ॥ हीनंपूजादिभिर्लिङ्गमजीर्णमपिदुःस्थितम् ॥ देवतास्थापितंलिङ्गंमोहान्निम्नत्वमागतम् ॥ तल्लिङ्गन्दुःस्थितंवापितन्त्रज्ञैरितिनिश्चितम् ॥ सहस्राधिकहोमेनतस्यचालनमी

रितम् । स्थापनंशतहोमेनतस्यलिङ्गस्यचोदितम् ॥ एवंवहुविधैस्तन्त्रैर्दोषाश्च बहुधोदिताः ॥ परीक्ष्यवहुधाताँश्चजीर्णोलिङ्गंसमुद्धरेत् ॥ हयशीर्षागमेपि ॥ जीर्णोद्धारविधिङ्कृत्स्नंसंक्षेपात्प्रब्रवीमिते ॥ चालितोत्पाटिताभूमिःकेनचित्पापकर्मणा ॥ चाण्डालव्रात्यसंस्पर्शदूषितावह्निनाचया ॥ स्वयमापतिताजीर्णानदीवेगादिपातिता ॥ अपुण्यजलसंस्पृष्टाविप्रक्षतजदूषिता ॥ पतिताद्यर्चिताश्लेष्मविरामूत्रादिविदूषिता ॥ सव्रणालक्षणोपेतासंस्कार्यादैशिकेनतु ॥ भूमिर्लिङ्गमीश्वरप्रतिमाच ॥ चाराडालवतीतत्स्पृष्टा ॥ असंस्पर्शोनिषिद्धस्पर्शः ॥ जीर्णाकालबाहुल्येनक्षारादिसंबन्धेनैवविशीर्णा ॥ सव्रणाएकदेशेभग्ना ॥ दैशिकउपासकः ॥ पूर्वोक्तेनविधानेनवैदिकेनसुरोत्तम ॥ अचलान्दूषितामेवंस्थापयेद्विधि

नोद्धृताम् ॥ पूर्वोक्तेनचलार्चाप्रकारेण ॥ एवंविधिनोद्धृतापीत्यन्वयः ॥ वक्ष्यमाणप्रकारेणोद्धृतामित्यर्थः ॥ पूर्वपीठंपरित्यज्ययदन्यदपितद्गतम् ॥ ततोयथोक्तविधिनाप्रासादेसन्निवेशयेत् ॥ दुष्टंपूर्वासनंपरित्यज्यान्यस्मिँस्तत्प्रासादगतआसनेयथोक्तेनचलार्चास्थापनप्रकारेणपुनःस्थापयेदित्यर्थः ॥ अतिजीर्णान्तथाव्यङ्गान्दारबींशैलजामपि ॥ परित्यज्यन्यसेदन्यांपूर्वोक्तविधिनागुरुः ॥ संहारविधिनातत्रमन्त्रान्संहृत्यदैशिकः ॥ सहस्रन्नारसिंहेनहुत्वातामुद्धरेद्गुरुः ॥ संहारविधिनाप्रातिलोम्येन ॥ मन्त्रान्कलाःसंहृत्योद्धृत्य । नारसिंहेननृसिंहमन्त्रेण॥ होमद्रव्यमाज्यमन्यानादेशात् ॥ बृषंसंयोजयित्वातुमन्त्रेणोद्वाह्यदेशिकः ॥ दर्वींचदाहयेद्वह्नौशैलजांप्रक्षिपेज्जले ॥ धातुजांरत्नजांवापिप्रक्षिपेन्मकरालये ॥ ❀

अगाधेचान्यतोयेचक्षिपेन्नद्यांमहाजले ॥ वृषंवृषौवारज्ज्वासंयोज्यमन्त्रेणपाशुपतेनोद्वाहयेदिति ॥ त्रिविक्रमः ॥ यानमारोप्यजीर्णांचाछाद्यवस्त्रादिनागुरुः ॥ शङ्खदुन्दुभिनिर्घोषैर्गीतवादित्रनिस्वनैः ॥ नीत्वागाधञ्जलंरम्यंभागीरथ्यामथार्णवे ॥ विष्वक्सेनायवीर्येणप्रक्षिपेत्तान्ततोगुरुः ॥ यानमारोप्येत्यादिपूर्वोक्तेन एवप्रतिपादनम् ॥ इतिकर्त्तव्यताकृत्यर्थं ॥ विष्वक्सेनोद्देशेनवीर्येणवीजेनगुरुर्भागीरथ्यादिजलेतांप्रतिमांक्षिपेदित्यर्थः ॥ रत्नानिक्षिप्तान्यादायस्वयन्दद्यात्तुदाक्षिणाम् ॥ धेनवोदशवापञ्चस्वर्णवस्त्राद्यलङ्कृताः ॥ जीर्णोद्धारेप्रदातव्यागुरवेविष्णुतुष्टये ॥ लिङ्गगर्त्तक्षिप्तानिरत्नान्यादायस्वयंयजमानोदशधेनूःपञ्चवाहेमवस्त्राद्यलङ्कृतागुरवेदक्षिणान्दद्यादित्यर्थः ॥ भोजनीयाविष्णुभक्त्यादेयमन्नमवा

रितम् ॥ त्रिरात्रमुत्सवःकार्यःपञ्चसप्तह्यथापिवा ॥ वलिश्चविधिनोदयोयथोक्त
नसुरोत्तम ॥ यथोक्तेनचलार्चाप्रतिष्ठोक्तप्रकारेण ॥ ततोनिवेदयेदन्यांप्रतिमांल
क्षणान्विताम् ॥ निवेदयेत्स्थापयेत् ॥ तत्क्षणादेवराजेन्द्रतस्यदोषस्यशान्त
ये ॥ सम्पत्तिर्वाविपत्तिर्वानोपेक्षान्तत्रकारयेत् ॥ अपास्यपिण्डिकांपूर्वामन्यान्त
त्रनिवेशयेत् ॥ यद्द्रव्यायत्प्रमाणाचयामूर्तिश्चोद्धृताहरेः ॥ तद्द्रव्यातत्प्र
माणाचसामूर्तिस्तत्रकीर्त्तिता ॥ यत्प्रमाणंयदाकारंयन्मयंबिम्बमुद्धरेत् ॥ तत्प्र
माणन्तदाकारंतन्मानन्तत्रविन्यसेत ॥ विहायपिण्डिकाम्पूर्वांतद्दिनेचापरांन्यसेत् ॥
द्वितीयेवातृतीयेवादिवसेस्थापयेद्धरिम् ॥ अतऊर्ध्वम्भवेद्दोषोविधिनापिनिवे
शिते ॥ अनेनैवविधानेनलेख्यादींस्तुविवर्जयेत् ॥ लेख्यादीन्कुड्यलिखिताःप्र

तिष्ठापिताःप्रतिमाः ॥ अन्यद्विकल्पयेत्तत्रतत्प्रमाणन्तदाकृतिम् ॥ एषसङ्क्षेपतः
प्रोक्तोजीर्णोद्धारविधिस्तव ॥ सर्वेषामेवदेवानामेषसाधारणःस्मृतः ॥ योजीर्ण
विधिनाविंबंसंस्कुर्यान्मानवोभुवि ॥ फलंदशगुणन्तस्यमूलान्नास्त्यत्रसंशयः॥
वापीकूपतडागानांसुरधाम्नांसदानघ ॥ प्रतिमानांसभानाञ्चसंस्कर्त्तायोनरो
भुवि ॥ पुण्यंशतगुणन्तस्यभवेन्मूलान्नसंशयः ॥ संशयोत्रनकर्त्तव्योजीर्ण
संस्कारकर्मणि ॥ मूलाद्दशगुणंप्रोक्तंपुण्यंकूपेप्रतिष्ठितम् ॥ प्रतिष्ठितामितिभा
वेक्षः ॥ प्रतिमायांशतगुणंकूपादेःपरिकीर्तितम् ॥ प्रतिमादौदशगुणंजीर्णसंस्कार
णाद्भवेत् ॥ कूपप्रतिमयोर्दशगुणशतगुणयोरल्पत्वमहत्वापेक्षयाऽव्यवस्था ॥
अग्निपुराणे ॥ सुस्थितन्दुःस्थितंवापिशिवलिङ्गन्नचालयेत् ॥ शतेनस्थाप

नङ्कुर्यात्सहस्रेणतुचालनम् ॥ पूजादिभिश्चसंयुक्तंजीर्णाद्यमपिसुस्थितम् ॥ पूजयारहितंयत्तददुष्टमपिदुःस्थितम् ॥ अयञ्चचालननिषेधोविधिव्यतिरेकेणशतसहस्रंसङ्ख्येऽनुक्तसङ्ख्येयत्वाद्धोगते ॥ गौश्वाश्वश्चेत्यत्रैव ॥ बहूपकारित्वाद्यःसहस्रंशताश्वमित्यादौबाहुल्येनदर्शनाच्चेतिन्यायविदः ॥ सिद्धान्तशेखरेतु ॥ होमगतेयंसङ्ख्येत्युक्तंयदापितत्रैव ॥ असुरैर्मुनिभिर्देवैस्तत्त्वविद्भिः प्रतिष्ठितम् ॥ जीर्णंवाप्यथवाभग्नंविधिनापिनचालयेदिति ॥ तदसुरादिप्रतिष्ठापितत्तद्व्यक्तिविषयम् ॥ नतुदैवात्तद्व्यक्तिनाशेनतत्स्थानस्थापितेदानींतनतादृशव्यक्तिविषयम् ॥ जीर्णोद्धारप्रकारोप्यत्रैव ॥ याम्येमण्डपमीशेवाप्रत्यग्द्वारैकतोरणम् ॥ विधायद्वारपूजादिस्थंडिलेसंप्रपूजनम् ॥ द्वारपूजादिशिवकुम्भपू

जान्तमितित्रिविक्रमः ॥ मन्त्रान्त्सन्तर्प्यसंपूज्यवासुदेवाँश्चपूर्ववत् ॥ दिग्व
लिञ्चवहिर्दत्वासमाचम्यस्वयङ्गुरुः ॥ ब्राह्मणान्भोजयित्वातुशम्भुंविज्ञापये
त्ततः ॥ दुष्टलिङ्गमिदंशम्भोशान्तिरुद्धरणेस्यचेत् ॥ रुचिस्तवास्तेविधिनाअधि
तिष्ठचमांशिव ॥ एवंविज्ञाप्यदेवेशंशान्तिहोमंसमाचरेत् ॥ मध्वाज्यक्षीरदूर्वा
भिर्मूलेनाष्टाधिकंशतम् ॥ ततोलिङ्गञ्चसंस्थाप्यपूजयेत्स्थण्डिलेतथा ॥ लिङ्गं

लिङ्गाधिष्ठितदेवतांस्थण्डिलेसंस्थाप्येत्यर्थः ॥ ॐव्यापकेश्वरायेतिनाम्नानेनशिवा
र्चनम् ॥ ॐव्यापकेश्वरहृदयायनमः ॥ ॐव्यापकेश्वरशिरसेनमः ॥ ॐव्याप
केश्वरशिखायैनमः ॥ इत्यादूह्यम् ॥ इत्यङ्गमन्त्राः ॥ ततस्तत्राश्रितंमन्त्रंवा
रयेदस्त्रवन्धनः ॥ सत्वःकोपीहयःकश्चिल्लिङ्गमाश्रित्यतिष्ठति ॥ लिङ्गंत्यक्त्वाशि

वाञ्छाभिर्यत्रेष्टन्तत्रगच्छतु ॥ विद्याविद्येश्वरैःशम्भुःशम्भुरत्रभविष्यति ॥ सहस्रं
प्रतिभागञ्चततःपाशुपताणुना ॥ हुत्वाशांत्यम्बुनाप्रोक्ष्यकुशैस्पृष्ट्वाजपेत्ततः ॥
ब्रह्मशिलापिण्डीलिङ्गात्मकदेवताभागत्रयसँस्कारार्थं पाशुपतास्त्रेणकृत्वाशान्तिकल
शोदकेनदेवंसंप्रोक्ष्यकुशैश्चस्पृष्ट्वाहोमसङ्ख्यापाशुपतमन्त्रञ्जपेत् ॥ दत्वा
र्घ्यञ्चविलोमेनतत्वतत्वाधिपांस्ततः॥मूर्तिमूर्तीश्वरान्लिङ्गेपिण्डकासंस्थितान्गुरुः॥
विसृज्यस्वर्णपाशेनवृषस्कन्धस्तयातथा ॥ रज्ज्वावद्ध्वातयानीत्वाशैवमन्त्रंगृण
न्शनैः ॥ तज्जलेनिःक्षिपेन्मन्त्रीपुष्ट्यर्थञ्जुहुयाच्छतम् ॥ तृप्तयेदिक्पतीनाञ्च
वास्तुशुद्ध्यैशतंशतं ॥ रक्षांविधायतद्धाम्निमहापाशुपतास्त्रतः ॥ लिङ्गमन्य
सतस्तत्रस्थापयेद्विधिवद्गुरुः ॥ विलोमेनपराङ्मुखसञ्ज्ञकम् ॥ तत्वतत्वाधिप

मूर्तिमूर्तीश्वरावक्ष्यन्ते ॥ सिद्धान्तशेखरे ॥ जीर्णोद्धारविधिंवक्ष्येसमासात्तत्रचोदि
तम् ॥ ईशान्यान्दक्षिणेवापिमण्डपंपश्चिमामुखं ॥ कुर्वीतपूर्ववत्सर्वमेकास्याञ्चै
कतोरणम् ॥ पूर्ववत्सर्वंस्तम्भादिद्वारपालार्चनङ्कुर्यात्स्थण्डिलेग्नौशिवार्चनम् ॥
१२ द्वारपालार्चनंमण्डपप्रातिष्ठाप्रकारेण ॥ मन्त्राणान्तर्पणंकुर्याद्वास्तुदेवार्चनन्तथा ॥
मन्त्राणान्देवस्थापितकलानां ॥ अन्तर्वहिर्वलिन्दद्याच्छिवभक्ताँश्चभोजयेत् ॥
शिवभक्तान्पञ्चेतित्रिविक्रमः ॥ द्विजान्कर्मकरादींश्चततोविज्ञापयेच्छिवम् ॥
दोषैर्लिङ्गमिदन्दुष्टंशान्तिरस्त्वस्यचोद्धृतौ ॥ तस्मादेनंविधानेनअधितिष्ठमहेश्वर ॥
भवत्वितिवचस्तेनप्रोक्तंसद्भावयेद्गुरुः ॥ ❀ ❀ ❀ ❀ ❀ ❀ ❀
तेनशिवेनप्रोक्तंशान्तिर्भवत्वितिवचोगुरुर्न्नादयेत् ॥ विज्ञाप्यैवंशिवंभक्त्याशान्ति

होमंसमाचरेत् ॥ मधुनाज्येनदुग्धेनदूर्वाभिर्मूलमन्त्रतः ॥ शतमष्टाधिकंमन्त्रं
प्रत्येकञ्जुहुयात्ततः ॥ मन्त्रंमूलमन्त्रमुच्चार्येत्यर्थः ॥ त्रिभिश्चमधुरैःसार्द्धसमि
धोघोरमन्त्रतः ॥ शान्त्यर्थंवर्तुलेकुण्डेसहस्रंजुहुयाद्गुरुः ॥ अथवास्त्रेणजुहुया
द्धाहुतीभिश्चपूर्णया ॥ बध्नीयात्कङ्कणंहैमंलिङ्गस्योत्तानकेकरे ॥ लिङ्गस्योत्तान
ङ्करम्भावयित्वातत्रहैमङ्कङ्कणंबध्नीयादित्यर्थः ॥ लिङ्गंसंस्नाप्यसंपूज्यपूर्वोक्तवि
धिनाततः ॥ साङ्गंसंपूजयेद्भक्त्यास्थण्डिलेऽव्यापकेश्वरम् ॥ लिङ्गाश्रितानिभूता
निताडयेदस्त्रमन्त्रतः ॥ यानिकानिचभूतानितिष्ठन्त्याश्रित्यलिङ्गकं ॥ त्यक्त्वा
शिवाज्ञयातानिब्रजन्तुस्थानमीप्सितं ॥ विद्याविद्येश्वरैर्युक्तःशिवोलिङ्गेभविष्य
ति ॥ इतिदत्वाशिवस्याज्ञांततोभागत्रयेगुरुः ॥ हुत्वाहुत्वास्त्रमन्त्रेणतथापाशु

पतालयः ॥ प्रतिभागंसहस्रञ्चासिञ्चेच्छांतिघटोदकैः ॥ ब्रह्मशिलापिण्डीलिंगात्मकदेवभागत्रयंसंस्कर्तुंत्रिसहस्रमन्त्रेणहुत्वातेनैवप्रतिभागंकलशसहस्रेणाभिषिञ्चेदित्यर्थः ॥ मूलमध्याग्रकैर्दर्भैःस्पृष्ट्वाचजपमाचरेत् ॥ ब्रह्मशिलांमूलेनपिण्डीमध्येनलिङ्गाग्रेणदर्भैःस्पृष्ट्वेत्यर्थः ॥ प्राग्वत्पाशुपतास्त्रञ्चजपेहोमस्यसङ्ख्यया ॥ सद्योजातादिवक्त्रेषुदद्यादर्घ्यंपराङ्मुखम् ॥ दुष्टलिङ्गप्रतिपत्तिमाह ॥ सौम्यभूमौपरित्याज्यंदारुजंचाग्निनादहेत् ॥ सौधंसुधानिर्मितंलिंगं ॥ लोहजन्तेनकार्यंस्याच्छैलजंचाप्सुनिक्षिपेत् ॥ सुवर्णाद्यष्टलोहनिर्मितंभग्नञ्चेत्तेनैवसुवर्णादिनातत्कार्यमित्यर्थः ॥ तत्वतत्वेश्वरान्लिङ्गान्मूर्तिमूर्तीश्वरानपि ॥ तासामेवतत्रैवसंस्कारसंभवात् ॥ स्थलान्तरनयनाविधानाभावाच्च ॥ एते

नस्वस्थानादचलितस्याविकृतस्यचविद्युद्धतदग्धादेरप्येवमेवव्यवस्था ॥ स्थाना
च्चलितस्यतुपुनस्तत्रैवप्रतिष्ठा ॥ स्थानान्तरविधानाभावाच्चलितस्याविकृतस्यच
त्यागस्तादृशस्यान्यस्यप्रतिष्ठाच ॥ स्थूलेपूर्वपिण्डीब्रह्मशिलायाअप्युद्धारः ॥
प्रतिपत्तिर्विधिनापिण्डिकान्तरादिनिवेशश्च ॥ व्यङ्गेतुपूर्वपिण्डिकादीनांभग्नत्वे
एवमेव ॥ पिण्डिकाद्यभागेतुपिण्डिकाद्यंतरस्थापनमात्रमित्यादिदुष्टलिङ्गनामि
त्यग्निपुराणवाक्याल्लिङ्गेपीठादिकेवापीतिसिद्धान्तशेखरवाक्यात् ॥ पूर्वपीठंप
रित्यज्येतिहयशीर्षवाक्याच्च ॥ सुवर्णादिनिर्मितभङ्गादौतुतेनैवसुवर्णादिनातादृ
शन्तावत्परिमाणञ्चलिङ्गादिकृत्वा ॥ तत्रैवपुनःस्थाप्यं ॥ यदितेनसुवर्णादि
नातादृशङ्कर्तुंशक्यतेतदासमुद्रेक्षिपेत् ॥ रत्नजातुसमुद्रएवक्षेप्तव्या ॥ रत्न

जायदिदग्धापिस्वकान्तिन्नजहातितदासैवस्थाप्योतीत्रिविक्रमः ॥ लोहाद्यैश्छिन्नभिन्नाङ्गमितिसिद्धान्तशेखरवाक्यात् ॥ धातुजारत्नजावापीतिहयशीर्षवाक्यात् ॥ इतिजीर्णोद्धारविधिः ॥ अथास्यप्रयोगः ॥ यजमानःउत्थायदक्षिणस्यामीशान्यांवा ॥ जातीयद्रव्यनिर्मितंतन्मानन्तदाकारंलिङ्गन्तादृशींप्रतिमांचस्थापयेत् ॥ अतिजीर्णामितिपूर्वोक्ताद्धयशीर्षवाक्यात् ॥ पीठाच्चाचालितंलिङ्गमिति ॥ त्यजेत्सदोषितंलिंगमिति ॥ बाहुपादशिरोहीनामिति ॥ यद्द्रव्यंयत्प्रमाणञ्चेति सिद्धान्तशेखरोक्तेः ॥ तस्मादेववाक्यनिचयात्प्रतिपत्तिप्रयोजकेदोषाभावाच्च न्युब्जानिम्नाविषयस्थदिङ्मूढानाञ्चवैधचालनन्तेषामेवपुनःस्थापनञ्च ॥ भग्नचूर्णितयोस्तदवयवानांप्रतिपादनपूर्वकंनूतनानांस्थापनम् ॥ अनेकशकलत्वेनचूर्णितत्वे

नचोद्धारपुनःस्थापनविध्योरप्रवृत्तेः ❀ ॥ ❀ चालितचलितपातितपतित
मध्यास्थानांतरितानांतुनोद्धारोनचत्यागः ॥ किन्तुतेषामेवपुनःस्थापनम् ॥
उद्धृतस्योद्धारासंभवान्निर्दुष्टत्वेनप्रतिपत्तिविध्यप्रवृत्तेश्च ॥ एतेनैवनदीवेगापह
तोन्मत्तशत्रुचोरहस्त्याद्यपहृतानांलाभेतान्येवपुनःस्थाप्यानि ॥ तेषामलाभेतुता
दृशान्यन्यानिस्थाप्यानिनिषिद्धस्पर्शदूषितानिषिद्धजलस्पृष्टविप्रक्षतजदूषितपतिता
द्यर्चितश्लेष्माविरामूत्रादिदूषितानांस्वस्थानस्थितानामेवपुनः संस्कारोनोद्धरणंनापि
प्रतिपत्तिः ॥ अतिजीर्णामितिपीठाच्चचालितामितित्यजेत्सदोषितांलिङ्गमितिपूर्वोक्ता
द्वाक्यनिचयात् ॥ लिङ्गस्थान्विसृजेन्मन्त्रीपीठब्रह्मशिलागतान् ॥ वृषस्था
न्विसृजेत्तद्वदङ्गमूर्तिस्थितानपि ॥ ततःसुवर्णपाशेनरज्ज्वागोचर्मजातया ॥

वृषस्कन्धस्थयावद्ध्वालिंगंपीठञ्चचर्मणा ॥ शिवमस्त्विर्तितद्बाह्येसजनोप्याहरेद्गुरुः ॥ उद्धारार्थञ्चलिङ्गस्यतौवृषौप्रेरयेत्ततः ॥ वहिर्नीत्वाततोलिंगंपीठं ब्रह्मशिलावृषम् ॥ रथादिकंसमारोप्यसमुद्रेनिक्षिपेत्ततः ॥ स्थूललिङ्गोद्धृतौ वद्ध्वागजंवाप्रेषयेद्गुरुः ॥ सौधंभूमौपरित्यज्यदारुजंचानलेदहेत् ॥ सर्वम्भाःनिक्षिपेत्तोयेलिंगंवाप्रतिमादिकम् ॥ ततःपाशुपतास्त्रेणशान्त्यर्थंजुहुयाच्छतम् ॥ लोकपालाणुभिस्तद्वदस्तुशांत्यैशतंशतम् ॥ प्रतिदैवतंशतञ्जुहुयादित्यर्थः ॥ रक्षाङ्कुर्याच्चतद्धर्म्येमहापाशुपताणुना ॥ तन्मानन्तत्समयंलिंगंतत्र संस्थापयेत्पुनः ॥ प्रतिष्ठोक्तेनमार्गेणसर्वकर्मसमाचरेत् ॥ हर्म्यस्यपरिवाराणांप्राकारादेःसमुद्धृतौ ॥ सर्वेषामपिजीर्णानामेषएवविधिःस्मृतः ॥ कर्त्तात्रदाक्षिणा

न्दद्याद्गुर्वादिभ्योयथोदितान् ॥ तत्पुरायस्थापनेप्रोक्तंतत्फलमेतदुद्धृतौ ॥ अथ
मन्त्रानिर्गलितोर्थः ॥ लक्ष्मोज्झितःस्फुटिताविशीर्णश्वपचसेवितानांलिंगानांतादृ
शीनांबाहुपादाशिरःकर्णनासास्यहीनानांप्रतिमानांचविध्युक्तप्रकारेणचालनञ्जलादौ
प्रतिपादनञ्चकृत्वानूतनप्रकारेणतस्मिन्नेवस्थानेपूर्वपश्चिमद्वारैकतोरणम् ॥ * *
मण्डपंतन्मध्येभागेवेदिंपूर्वेभागेवर्तुलञ्चतुरस्रंवाकुण्डंस्थण्डिलम्बापश्चिमेवास्तुपी
ठमुत्तरेवालुकायास्थण्डिलञ्चकृत्वाकालादिस्मृत्वामौलफलाच्छतगुणफलकामोल्पप्र
तिमायान्तुदशगुणफलकामोवाजीर्णादिदोषदुष्टस्यलिंगस्यप्रतिमायावाउद्धारमुच्छ्र
यणंवाकरिष्यइतिसङ्कल्पयेत् ॥ पिण्डिकावृषगरुडप्रासादकलशेषुतुईश्वरप्रीति
कामइतिविशेषः ॥ सर्वत्रेश्वरप्रीतिकामोवा ॥ ततोगणपतिपूजास्वस्तिपुण्याह

वाचनमातृकापूजननान्दीश्राद्धानिनूतनप्रतिष्ठावत्कृत्वातद्वदेवब्रह्माचार्यसदस्यान्द्वात्रिंशत्षोडशाष्टौचतुरोवाऋत्विजोद्वारपालाँश्चाष्टौचतुरोवावृत्वावस्त्रालङ्कारमधुपर्कादिभिस्तान्पूजयेत् ॥ अथाचार्योमण्डपपूजादिशिवकुम्भपूजान्तङ्कृत्वा ॥ वास्तुमण्डलेमहावेद्याञ्चदेवतास्थापनङ्कृत्वा ॥ पीठादौप्रणवेनाशनन्दत्वा ॥ ॐव्यापकेश्वरएह्येहिनमः ॥ ॐव्यापकेश्वरहृदयायनमः ॥ ॐव्यापकेश्वरशिरसेस्वाहा ॥ ॐव्यापकेश्वरशिखायैवषट् ॥ ॐव्यापकेश्वरकवचायहुं ॥ ॐव्यापकेश्वरनेत्रत्रयायवौषट् ॥ ॐव्यापकेश्वरअस्त्रायफट् ॥ ॐमितिमन्त्रैःशिवमर्चयेत् ॥ देवतान्तरोद्धारेमूलमन्त्रेणार्चयेत ॥ ततोऽग्निंसंस्थाप्यालिङ्गचालनार्थंमूलमन्त्रेणतिलाहुतिसहस्रंहुत्वामण्डलदेवताहोमपूर्णाहुतिञ्चकृत्वा ॥ जीर्ण

भग्नमिदन्देवसर्वदोषावहन्नृणाम् ॥ अस्योद्धारेकृतेशान्तिःशास्त्रेऽस्मिन्कथिता
त्वया ॥ १ ॥ जीर्णोद्धारविधानञ्चनृपराष्ट्रहितावहम् ॥ तदत्राधिष्ठितान्देव
प्रोद्धरामितवाज्ञयेति ॥ देवस्यजीर्णदोषंश्रावयित्वा ॥ शिल्पियुतःसाङ्गंशिवं
विसृज्य ॥ यजमानस्यसौवर्णकङ्कणम्बध्वा ॥ सौवर्णखनित्रेणोद्धृत्यरथ
मारोप्यतरुच्छ्रयेपर्यन्तदेशेवृक्षमूलेअगाधनद्यांह्रदेवावामदेवेनाक्षिपेत् ॥ प्रतिमा
न्तुप्रणवेनक्षिपेत् ॥ दारुजञ्चेत्तदुत्तरेदहेत् ॥ रत्नजंलिङ्गंयदिनिजकांतिम
देवभवतितदातदेवपूर्ववत्स्थापयेत् ॥ सुवर्णादिमयन्तदेवसाग्रहंकृत्वास्थापयेत् ॥
प्रासादेत्वयम्बिशेषः ॥ प्रासादमन्त्रान्खड्गेछूरिकायाम्वासंयोज्यनूतनप्रासादसि
द्धिपर्यन्तंखड्गादिकमर्चयित्वा ॥ प्रासादेसिद्धेखड्गादिमन्त्रान्यथास्थानंप्र

तिष्ठाकालेन्यस्ययजमानमभिषिञ्चेत् ॥ ततोलिङ्गंप्रतिमाम्वातत्रैवविधिवत्संस्थाप्य ॥ ध्रुवाद्यौरित्यादिमन्त्रान्पठित्वास्थिरीकृत्यवहुसम्पूज्यप्रार्थयेत् ॥ ज्ञानतोज्ञानतोवापियथोक्तेनकृतंयदि ॥ तत्सर्वंपूर्णमेवास्तुत्वत्प्रसादान्महेश्वर ॥ कर्त्तूराज्ञःप्रजानाञ्चशांतिर्भवतुसर्वदा ॥ अस्माकंशिल्पनाञ्चैवसुप्रीतोभवसर्वदेति ॥ इतिजीर्णोद्धारप्रयोगः ॥ अथवाप्यादिविधिर्लिख्यते ॥ तदुक्तंआश्वलायनीयगृह्यपरिशिष्टे ॥ प्रागुदक्प्रवणेशुचौदेशेब्राह्मणैःसहगत्वापुण्याहवाचनादिवास्तुपूजान्तङ्कृत्वा ॥ आचार्याद्यृत्विग्वरणकुण्डमण्डपाद्युक्तप्रकारेणकृत्वा ॥ यजमानसंमितंक्षीरिवृक्षंपूर्वमण्डपप्राग्भावेवस्थाप्य ॥ वेदिमध्ये पद्मगर्भषोडशारंपरितश्चतुरस्रमण्डलोपेतङ्कृत्वा ॥ आचार्यःपद्ममध्येसपत्नीकः

ब्रह्मविष्ण्वीशानाम्बिनायकस्यचसौवर्णरूपाणिताल्लिंङ्गमन्त्रेणसमन्तात्तेषुस्वर्णजलचराणिस्थापयित्वावरुणमन्त्रेणार्चयित्वा ❀ ॥ ❀ तद्बहिर्लोकपालादीन्सम्पूज्य मण्डपप्रतिकोणंकलशचतुष्टयन्नद्युदकमङ्गलद्रव्यवस्त्राद्यलङ्कृतंस्थापयित्वेमम्मेगङ्गेइतिगंगादिनदीमावाह्याभ्यर्च्य ॥ वारुणञ्चरुङ्कृत्वा ॥ समुद्रज्येष्ठाइतिचतसृभिःप्रत्यृचंगायत्र्यावाज्याहुतीर्हुत्वा ॥ तत्त्वायामीतिपञ्चभिस्त्वन्नोअग्नेवरुणस्येतिद्वाभ्यामिमम्मेवरुणेतिचैकयाचर्वाहुतीःस्विष्टकृतंहुत्वा ॥ ब्रह्मप्रीत्यर्थं वरुणमन्त्रैःसमिदाज्यंहुत्वा ॥ शान्तिकलशैर्यजमानञ्चाभिषिञ्चेयुः ॥ सतुतेभ्योगवांसहस्रंशतंपञ्चाशतंकृत्स्नेतुसवत्साङ्गामलङ्कृतांसूर्यमन्त्रेणपाययित्वा ॥ तडागनैरृतादारभ्येशानान्तांहिङ्कृणवन्ती त्युत्तरयाआपोअस्मानितिस्वयंतत्पुच्छ

ङ्गृहीत्वोत्तरेत् ॥ छन्दोगायताङ्गगान्दत्वा ॥ तत्कलशस्थस्वर्णजलचरान्तज्जलेनिक्षिप्य ॥ पुष्पाञ्जलिन्दत्वादेवपितृमनुष्यादयःप्रीयंतामितिदद्यात् ॥ पूर्ववदाचतुर्थाहमुत्सवादिवसन्तग्रीष्मवर्षाशरद्धेमन्तशिशिरेषुतज्जलंस्थितमश्वमेधराजसूयाग्निष्टोमोक्थ्यवाजपेयत्रिरात्रफलमित्याश्वलायनप्रयोगः ॥ अथवारुणमण्डलचक्रस्योद्धारमाह ॥ तदुक्तन्दानखण्डे ॥ तत्रगुरुर्वेद्यांमध्येत्रिहस्तव्यासञ्चतुरस्रंप्रसाध्य ॥ प्रागपरदक्षिणोत्तरनवनवरेखाभिश्चतुःषष्टिकोष्टङ्कुर्यात् ॥ तत्रकोष्ठानिप्रत्येकन्नवाङ्कुलानिसम्पद्यन्ते ॥ ततोवहिरन्त्यपँक्तिषुचतुर्दिक्षुमध्यकोष्ठानिचत्वारिचत्वारिमार्जयित्वा ॥ तदुपरिपँक्तिषुपार्श्वयोस्त्रयंत्रयंत्यत्काप्रतिदिशंमध्यकोष्ठद्वयमार्जयेत् ॥ तेनचतुर्दिक्षुषट्कोष्ठानि

दिक्षुचत्वारिद्वाराणिसिद्ध्यन्ति ॥ ततोमध्यस्थितषोडशकोष्ठानिमार्जयेत ॥ ततोवाह्येएकैकङ्कोणकोष्ठंविहायकोणकोष्ठद्वारपीठान्तरालवर्त्तिन्यावशिष्टानिपञ्चपञ्च कोष्ठानिमार्जयेत् ॥ तथाचमध्यचतुरस्रपीठस्यपादाःसिध्यन्ति ॥ तेतामध्या च्चत्वारिवृत्तानिकुर्यात् ॥ तत्राद्येचत्वारिअङ्गुलानिव्यासः ॥ द्वितीयेवृत्तेऽष्टौ अङ्गुलानि ॥ तृतीयेचतुर्विंशतिः ॥ चतुर्थेषड्विंशतिरिति ॥ तच्चतुरङ्गुल वृत्तंकर्णिकारूपंपीतेनरजसापूरयित्वा ॥ कर्णिकावधिरेखांसितेनरजसानिर्माय ॥ तद्वहिरष्टाङ्गुलात्मकेवृत्तेपीतरक्तसितरजोभिःसम्पादितमूलमध्याग्राणिषोडशकेसराणिसंपाद्य ॥ तत्केसरावधिरेखांसितेनैवरजसांगुलोन्नतांसंपाद्य ॥ चतुर्विंशाङ्गुलात्मकेवहिर्वृत्तेसितरजसाअष्टदिक्ष्वष्टौपत्राणिरक्ताग्राणिकुर्यात् ॥ ततोदला

न्तरेरेखांसितेनरजसाविधायदलान्तराणिकृष्णेनरजसापूरयित्वा ॥ तद्बहिरेकाङ्गुलांतरांवहिर्वृत्तरेखांसितेनैवरजसासंपाद्य ॥ तद्बहिर्वृत्तान्तःपरितोष्टदलाग्राणितत्सन्धिचिह्नैःषोडशधाविभज्यप्रतिभागंयवाकारान्षोडशारान्श्यामपीतारुणश्वेतरजोभिःकल्पयित्वा ॥ तदंतराणियथायोगंरजोभिःपूरयित्वा ॥ तद्बहिःसितपीतारुणश्यामहरिताःपञ्चरेखालिखेत् ॥ तद्बहिःपीठक्षेत्रंचतुरस्रंयथाशोभंरजोभिरलङ्कृत्यपीठावधिरेखांसितेनरजसाचतुरस्रांरचयेत् ॥ द्वारक्षेत्राणिपूर्वादितःपीतश्यामश्वेतहरितरजोभिःपूरयेत् ॥ आग्नेयादिकोष्ठचतुष्टयंलोहितहरितस्यामधवलैःपूरयेत् ॥ आग्नेयादिपीठपादचतुष्टयंपञ्चकोष्ठात्मकंतुक्रमात् ॥ सितरक्तपीतकृष्णरजोभिःपूरयेत् ॥ ततःसितेनरजसाङ्गुलोन्नतेनवहिश्चतुर

स्रेरेखाङ्कुर्यात् ॥ इतिपितामहचरणाः ॥ मदनादयश्चठक्कुरमतेनचतुर्हस्तश्चतुरस्रं ॥ तत्रप्रत्येकंद्वादशाङ्गुलानिकोष्ठानिबृत्तानितुपञ्च ॥ तत्राद्येवृत्तेचत्वार्यङ्गुलानिव्यासः ॥ द्वितीयेऽष्टौ ॥ तृतीयेविंशतिः ॥ चतुर्थेचतुर्विंशतिः पञ्चमेचतुरस्रेवहिस्तत्रेऽष्टत्रिंशदिति ॥ पञ्चकोष्ठात्मकपीठपादचतुष्टयं ॥ आग्नेयादिक्रमेणरक्तहरितश्यामसितैःपूरणीयम् ॥ कोष्ठकोणचतुष्टयंतुप्रत्येकांत्रिभिस्त्रिभिर्वर्णैरितिविशेयः ॥ इतिवारुणमण्डलचक्रोद्धारः ॥ इदमेववारुणमण्डलचक्रम् ॥ अथास्यप्रयोगः ॥ ततःपूर्वोक्तप्रकारेणमण्डपंविधाय ॥ कृतनित्यक्रियोयजमानोगणपतिपूजनपुण्याहवाचनमातृकापूजननान्दीश्राद्धमाचार्यादिवरणंचकृत्वासंकल्पंकुर्यात् ॥ ॐमद्येहेत्यादि० ॥ अमुकगोत्रोमुकयज

मानोमुकशर्म्मासपत्नीकःममइहजन्मनिजन्मजन्मान्तरेबाकृतकायिकवाचिकमानासिकसांसर्गिकपातकोपपातकादिसर्वेषांपापानान्निवृत्तिपूर्वकंरुद्रालयगमनानन्तरवहुकल्पकालावधिकद्युलोकभोगकामनयापरार्द्धकालावच्छिन्नमहस्तपःप्रभृतिलोकाङ्गनासहिततल्लोकगतभोगोत्तरबैष्णवपदप्राप्तिकामोऽमुकजलाशयोत्सर्गकर्माहङ्करिष्य ॥ ॥ इति ॥ तदङ्गत्वेनगणपतिपूजनं पुण्याहवाचनं मातृकापूजनंनान्दीश्राद्धमाचार्यादिवरणञ्चकरिष्य ॥ इतिसङ्कल्प्य ॥ मातृकास्थापनवसोर्द्धारापूजावृद्धिश्राद्धगुर्वर्त्विग्वरणानिपूर्वोक्तप्रयोगरीत्याकुर्यात् ॥ ततोमंडपप्रवेशादिग्रक्षणपञ्चगव्यप्रोक्षणमण्डपवास्तुपूजनाग्निस्थापनोत्तरंमध्येवेदिलिखितपूर्वोक्तवारुणमध्यस्थेपञ्चग्रहान्पूजयेत् ॥ एततसर्वपूर्वोक्तप्रकारेणज्ञेयम् ॥ ततोवारुणम

ण्डलपूजाप्रयोगविधिमाह ॥ अथाचार्यःषद्ममध्येसपत्नीकःब्रह्मविष्ण्वीशानां विनायकस्यचसौवर्णरूपाणिताल्लिङ्गमन्त्रेणसमन्तात्तेषुपूजयेत् ॥ तद्यथा ॥ ॐआब्रह्मन्नितिमन्त्रस्यप्रजापतिर्ऋषिर्ब्रह्मादेवताब्रह्मस्थापनेपूजनेविनियोगः ॥ ॐआब्रह्मन्नितिमन्त्रेण ॥ ॐब्रह्मणेनमःब्रह्माणमावाहयामि ॥ १ ॥ ॐइदम्विष्णुरितिमन्त्रेण ॥ ॐविष्णवेनमःविष्णुमावाहयामि ॥ २ ॥ ॐनमस्तेरुद्रमन्यवइतिमन्त्रेण ॥ ॐरुद्रायनमःरुद्रमावाहयामि ॥ ३ ॥ ॐगणानान्त्वेतिमन्त्रेण ॐगणपतयेनमःगणपतिमावाहयामि ॥ इतिमध्येकर्णिकायां पूजयेत् ॥ ततपूर्वादितःईशानपर्यन्तानिन्द्रादिलोकपालान्स्वस्वमन्त्रेणसंस्थाप्यपूजयेत् ॥ तद्यथा ॥ पूर्वस्यान्दिशिदेवेन्द्रंत्रातारमितिमन्त्रेणपूजयेत् ॥

ॐत्रातारमितिमन्त्रस्यगर्गऋषिस्त्रिष्टुप्छन्दः इन्द्रोदेवताइन्द्रस्थापनेपूजनोविनियोगः ॥ ॐत्रातारमिन्द्रम् ॥ ॐइन्द्रायनमःइन्द्रमावाहयामिपू० ॥ १ ॥ ततःआग्नेये ॥ त्वन्नोअग्नेइतिपूजयेत् ॥ ॐत्वन्नोअग्नेइतिमन्त्रस्यहिरण्यस्तूपऋषिस्त्रिष्टुप्छन्दोऽग्निर्देवताऽग्निस्थापनेपूजनेविनियोगः ॥ ॐत्वन्नोऽअग्ने० ॥ ॐअग्नयेनमःअग्निमावाहयामिपू० ॥ २ ॥ याम्यांयमायत्वेतिधर्मराजंप्रपूजयेत् ॥ ॐयमायत्वेतिप्रजापतिर्ऋषिर्यमोदेवतायमस्थापनेपूजनोविनियोगः ॥ ॐयमायत्वा० ॥ ॐयमायनमःयममावाहयामिपू० ॥ ३ ॥ असुन्न्वेतिमन्त्रेणनैर्ऋत्येनिर्ऋतिंपूज्य ॥ ॐअसुन्न्वतमितिमन्त्रस्यप्रजापतिऋषिस्त्रिष्टुप्छन्दःनिर्ऋतिर्देवतानिर्ऋतिस्थापनेपूजनोविनियोगः ॥ ॐअसुन्न्वन्त० ॥

ॐनिर्ऋतयेनमःनिर्ऋतिमावाहयामिपू० ॥ ४ ॥ प्रतीच्यान्दिशितत्वायामीतिवरुणंपूजयेत ॥ ॐतत्वायामीतिमन्त्रस्यशुनस्सेफऋषिस्त्रिष्टुप्छन्दःवरुणोदेवतावरुणस्थापनेपूजनेविनियोगः ॥ ॐतत्वायामिब्रह्मणा० ॥ ॐवरुणायनमःवरुणमावाहयामिपू० ॥ ५ ॥ आनोनियुद्भिमन्त्रेणवायव्यांवायुमाचरेत् ॥ आनोनियुद्भिरितिमन्त्रस्यप्रजापतिर्ऋषिस्त्रिष्टुप्छन्दो वायुर्देवतावायुस्थापनेपूजनेविनियोगः ॥ ॐआनोनियुद्भिः० ॥ ॐवायवेनमःवायुमावाहयामिपू० ॥ ६ ॥ ततःउत्तरेवयछंसोमेतिसोमंपूजयेत् ॥ वयछंसोमेतिवसुऋषिर्गायत्रीच्छन्दःसोमोदेवतासोमस्थापनेपूजनेविनियोगः ॥ ॐवयछंसोमव्रते० ॥ ॐसोमायमनःसोममावाहयामिपू० ॥ ७ ॥ तमीशानमितीशान्यांरुद्रस्य ॥ ॐतमीशान

मितिमन्त्रस्यगौतमऋषिस्त्रिष्टुप्छन्दोरुद्रोदेवतारुद्रस्थापनेपूजनेविनियोगः ॥ ॐ
तमीशानम् ० ॥ ॐरुद्रायनमःरुद्रमावाहयामिपू० ॥ इतिलोकपालान्संपूज्य ॥
ततःवायुसोमद्वयोर्मध्येपीतवर्णानष्टवसून्पूजयेत ॥ ॐवसुभ्यस्त्वेतिमन्त्रस्यवसु
ऋषिर्गायत्रीच्छन्दोवसवोदेवतावसुस्थापनेपूजनेविनियोगः ॥ ॐवसुभ्यस्त्वा०॥
ॐमष्टवसुभ्योनमःअष्टवसूनावाहयामिपू० ❀ ❀ ❀ ❀ ❀ ॥ १ ॥
सोमेशानयोर्मध्येनमःशम्भवायेतिमन्त्रेणकृष्णवर्णमेकादशरुद्रान्पूजयेत् ❀ ❀ ॥
ॐनमःशम्भवायेतिमन्त्रस्यपरमेष्ठीऋषिर्गायत्रीच्छन्दः रुद्रोदेवतोरुद्रस्थापनेपूजने
विनियोगः ❀ ❀ ॥ ❀ ❀ ॐनमःशम्भवायच० ❀ ❀ ॥ ❀ ❀ ॐमेकादश
रुद्रेभ्योनमःरुद्रानावाहयामिपू० ॥ २ ॥ ततइन्द्रेशानयोर्मध्येकृष्णवर्णद्वादशा

दित्यंचित्रन्देवानामितिपूजयेत् ॥ ॐचित्रन्देवानामितिमन्त्रस्यकौत्सऋषिस्त्रिष्टुप्छन्दःसूर्योदेवतासूर्यस्थापनेपूजनेविनियोगः ॥ ॐचित्रन्देवानाम्० ॥ ॐद्वादशादित्येभ्योनमःद्वादशादित्यमावाहयामिपू० ॥ ३ ॥ इन्द्राग्नेययोर्मध्येशुक्लवर्णंविश्वेदेवासऽआगततिविश्वान्देवान्पूजयेत् ॥ ॐविश्वेदेवासऽआगतेतिमन्त्रस्यपरमेष्ठीऋषिर्गायत्रीच्छन्दःविश्वेदेवादेवताविश्वेदेवस्थापनेपूजनेविनियोगः ॥ ॐविश्वेदेवासऽआगत० ॥ ॐविश्वेभ्योदेवेभ्योनमःविश्वान्देवानावाहयामिपूजयामि ॥ ४ ॥ अग्नियमयोर्मध्येश्वेतवर्णंसप्तऋषयःप्रतिहितेतिमन्त्रेणसप्तर्षीन्पूजयेत ॥ ॐसप्तऋषयइतिमन्त्रस्यगौतमऋषिर्जगतीच्छन्दःसप्तर्षयोदेवतासप्तर्षिस्थापनेपूजनेविनियोगः ॥ १ ॥ ॐसप्तऽऋषयःप्रतिहिताः० ॥

ॐसप्तर्षिभ्योनमःसप्तर्षीन्आवाहयामिपू० ॥ ५ ॥ यमनिर्ऋतिमध्येरक्तवर्णंयो वःशिवतमोरसइतिमन्त्रेणमातॄःसंपूज्य ॥ ॐयोवःशिवतमोरसइतिमन्त्रस्यप्रजापतिर्ऋषिर्गायत्रीच्छन्दःमातरोदेवतामातृस्थापनेपूजनेविनियोगः ॥ ॐयोवःशिवतमो ॥ ॐमातृभ्योनमःमातॄरावाहयामिपू० ॥ ६ ॥ निर्ऋतिवरुणयोर्मध्येरक्तवर्णमाकृष्णेनेतिमन्त्रेणसूर्यादिग्रहान्संपूज्य ॥ ॐप्रणवस्यपरब्रह्मऋषिःपरमात्मादेवतादेवीगायत्रीच्छन्दःव्याहृतीनाङ्क्रमेणयमदग्निभरद्वाजभृगवऋषयःअग्निवायुसूर्यादेवतादेवीगायत्रीदेवीउष्णिक्देवीबृहतीच्छन्दांसिसूर्याद्यावाहनेपूजनेविनियोगः॥ ॐआकृष्णेनरजसा० ॥ ॐमादित्यादिग्रहेभ्योनमःग्रहानावाहयामिपू० ॥ ७ ॥ वायुवरुणयोर्मध्येपीतवर्णमिमम्मेवरुणेतिमन्त्रेणसप्तसागरान्संपूज्य ॥ ॐइमम्मे

वरुणेतिमन्त्रस्यप्रजापतिर्ऋषिर्गायत्रीच्छन्दःवरुणोदेवतासप्तसागराणामावाहनेपूजनेविनियोगः ॥ ॐइमम्मेवरुण० ॥ ॐसप्तसागरेभ्योनमःसप्तसागरानावाहयामिपू० ॥ ८ ॥ ततोमध्येब्रह्मणःपादमूलेतुस्योनापृथिवीतिमन्त्रेणपृथिव्यांसंपूज्य ॥ ॐस्योनापृथिवीतिमन्त्रस्यमेधातिथिर्ऋषिर्गायत्रीच्छन्दःपृथिवीदेवतापृथिवीस्थापनेपूजनेविनियोगः ॥ ॐस्योनापृथिविनोभवा० ॥ ॐपृथिव्यैनमःपृथिवीमावाहयामिपू० ॥ ९ ॥ ततोवहिःकर्णिकाधःअष्टदलोपरिपूर्वादिक्रमेणगणपतिकमलाम्बिकांभूतग्रामञ्चस्वस्वमन्त्रेणसम्पूज्य ॥ तद्यथा ॥ ॐगणानान्त्वेतिमन्त्रस्यप्रजापतिर्ऋषिरनुष्टुप्छन्दोगणपतिर्देवतागणपतिस्थापनेपूजनेविनियोगः ॥ ॐगणानान्त्वा० ॥ पूर्वपत्रेॐगणपतयेनमःगणपतिमावा

हयामिपू० ॥ १० ॥ ततोदक्षिणपत्रेकमलां ॥ ॐश्रीश्चतेतिमन्त्रस्यउत्तरनारायणऋषिर्लक्ष्मीर्देवतालक्ष्मीस्थापनेपूजनेविनियोगः ॥ ॐश्रीश्चते० ॥ ॐकमलायनमःकमलामावाहयामिपू० ॥ ११ ॥ पश्चिमपत्रेऽम्बिकाम् ॥ ॐअम्बेऽअम्बिकेइतिमन्त्रस्यप्रजापतिऋषिरनुष्टुप्छन्दोलक्ष्मीर्देवतालक्ष्मीस्थापनेपूजनेविनियोगः ॥ ॐअम्बेऽअम्बिकेम्बालिके ॥ इत्यर्द्धर्चेन ॥ ॐमअम्बिकायैनमःअम्बिकामावाहयामिपू० ॥ १२ ॥ उत्तरपत्रे भूतग्रामञ्चपू० ॥ ॐभूतायत्वाइतिमन्त्रस्यपराशरऋषिर्विराट्छन्दोवायुर्देवताभूतस्थापनेपूजनेविनियोगः॥ ॐभूतायत्वानारा० ॥ ॐभूतेभ्योनमःभूतानावाहयामिपू० ॥ १३ ॥ ततः पीठेचतुरस्रेपूर्वादिक्रमेणवज्रादीन्नाममन्त्रेणपूजयेत ॥ तद्यथा ॥ पूर्वे। ओंवज्राय

नमःवज्रमा॰ ॥१॥ आग्नये ॥ ओँशक्ततयेनमःशक्तिमा॰ ॥२॥ दक्षिणे ॥ ओँदण्डाय
नमःदण्डमा॰ ॥ ३ ॥ नैर्ऋत्ये ॥ ओँखड्गायनमःखड्गमा॰ ॥ ४ ॥ पाश्च
मैं ॥ ओँपाशायनमःपाँशमा ॥ ५ ॥ वायव्ये ॥ ओँअङ्कुशायनमःअङ्कुश
मा॰ ॥ ६ ॥ उत्तरे ॥ ओँगदायैनमःअदामा॰ ॥ ७ ॥ ईशाने ॥ ओँत्रिशूलायनमः
त्रिशूलमा॰ ॥ इतिनाममन्त्रेणपूजयेत् ॥ ततोमण्डलमध्येताम्रकलशोप
रिहेमपात्रींसंस्थाप्य ॥ तस्योपरिझषादीनामिमम्मेवरुणेतिमन्त्रेणस्थापयेत् ॥ सौव
र्णकूर्ममकरराजतमत्स्यडुंडभताम्रकुलीरमण्डूकलोहशिशुमारयुतांस्थापयेत् ❀ ॥
तत्राऽरामेतिआम्रादिफलानिसुवर्णादिधातुमयानिफलानिवनस्पतेवीड्वङ्गइतिमन्त्रेण
षोडशोपचारैःसंपूज्याधिवासयेत् ॥ इतिषोडशारचक्रपूजाविधिः ॥ ततःप्रातिकु

ण्डसमीपेईशान्याङ्कलशस्थापनंकृत्वा ॥ ॐनमस्तेविश्वगुप्ततायनमस्तेहिप्रचतसे ॥ सान्निध्यङ्कुरुमेदेवसमुद्रादिहशान्तये ॥ इतिवरुणन्न्यस्यषोडशोपचारैःपूजयेत् ॥ कूपप्रतिष्ठायान्त्वत्रकूपस्यादिक्षुविदिक्ष्वष्टधान्योपरिसितवस्त्रयुक्तच्छन्नानुक्तलक्षणान्कलशान्स्थापयेत् ॥ ततआचार्यर्त्विजश्चस्वेस्वेकुण्डेस्थण्डिलेवायथाविध्यग्निसंस्कारङ्कुर्यात ॥ तन्मध्येयवचरुंश्रपयेत् ॥ ततोवह्निंसमाधायश्रपयेद्यवमयञ्चरुम् ॥ क्षीरेणकपिलायास्तुतद्विष्णोरितिदोशिकः ॥ प्रणवेनाभिघार्यैवदर्व्यासङ्घाटयेत्ततः ॥ साधयित्वावतार्याथतद्विष्णोरितिहोमयेत् ॥ व्याहृत्याचैवगायत्र्याताद्विप्रायेतिहोमयेत् ॥ विश्वतश्चक्षुरित्युक्त्वावेदाद्यैर्होमयेत्ततः ॥ वेदादिमन्त्रचतुष्टयेन ॥ ततःकुण्डदक्षिण

तोयजमानउपाविश्यजलमादाय ॥ ॐआस्मन्कमाग इदंहविः सूर्यादिग्रहेभ्यईश्वराद्यधिदेवताभ्योग्न्यादिप्रत्यधिदेवताभ्योगणेशादिपञ्चलोकपालेभ्यइन्द्रादिदशदिक्पालेभ्योब्रह्मादिविश्वकर्मान्तेभ्योवरुणाग्निवायुसूर्यप्रजापतिस्विष्टकृदादिपूर्वोत्तराङ्गदेवताभ्योनममेतित्यजेत् ॥ इतिप्रतिकुण्डंद्रव्यत्यागङ्कुर्यात् ॥ वहुभिर्होतृभिर्होमेक्रियमाणेप्रत्याहुतित्यागस्यैकेनकर्त्तुमशक्तेः ॥ ततःपरिस्तरणादिसमिद्धोमान्तङ्कर्मसमाप्याज्यभागान्ते ग्रहादिविश्वकर्मान्तानांप्रत्येकमष्टाविंशतिसमिदाज्याहुतीर्जुहुयात् ॥ तद्यथा ॥ ॐतद्विष्णोःपरम्पदमितिस्वाहा ॥ १ ॥ ॐभूःस्वाहा ॥ १ ॥ इदमग्नयेइदन्नमम ॥ २ ॥ ॐभुवःस्वाहा ॥ इदम्वायवेइदन्नमम ॥ ३ ॥ ॐस्वःस्वाहा ॥ इदंसूर्यायेदन्नमम ॥ ४ ॥ ॐत

त्सवितुर्वरेण्यम्० ॥ ॐगायत्र्यैनमःस्वाहा ॥ इदङ्गायत्र्यैइदन्नममः ॥ ५ ॥ ॐतद्विप्रासोविपन्यवो० ॥ ॐविष्णवेस्वाहा ॥ इदंविष्णवेइदन्नमम ॥ ६ ॥ ॐविश्वतश्चक्षुरुत ॥ ॐविश्वेभ्योदेवेभ्योनमःस्वाहा ॥ इदंविश्वेभ्योदेवेभ्यो इदन्नमम ॥ ७ ॥ ॐअग्निमीडेपुरोहितम्० ॥ ॐऋग्वेदायस्वाहा ॥ इदं० ॥ ॐइषेत्वोर्जेत्वा० ॥ ॐयजुर्वेदायस्वाहा ॥ इदंयजुर्वेदायेदन्नमम ॥ ९ ॥ ॐअग्नआयाहिवीतये० ॥ ॐसामवेदायनमस्वाहा ॥ इदंसामवेदायेदन्नमम ॥ १० ॥ ओंशन्नोदेवी० ॥ ओमथर्ववेदायस्वाहा ॥ इदमथर्ववेदायेदन्नमम ॥ ११ ॥ तथातत्रैव ॥ ओंअग्नयेस्वाहा ॥ इदमग्नयेइदन्नमम ॥ १२ ॥ ओंसूर्य्यायस्वाहा ॥ इदंसूर्यायेदन्नमम ॥ १३ ॥ ओंप्र

जापतयेस्वाहा ॥ इदंप्रजापतयइदन्नमम ॥ १४ ॥ ओमन्तरिक्षायस्वाहा ॥ इदमन्तरिक्षायेदन्नमम ॥ १५ ॥ ओंदिवेस्वाहा ॥ इदन्दिवेइदन्नमम ॥ १६ ॥ ओंब्रह्मणेस्वाहा ॥ इदम्ब्रह्मणेइदन्नमम ॥ १७ ॥ ओंपृथिव्यैस्वाहा ॥ इदम्पृथिव्यैइदन्नमम ॥ १८ ॥ ओंमहाराजायस्वाहा ॥ इदंमहाराजायेदन्नमम ॥ १९ ॥ ओंसोमराजायस्वाहा ॥ इदंसोमराजायेदन्नमम ॥ २० ॥ ओंसमुद्रेभ्यःस्वाहा ॥ इदंसमुद्रेभ्यइदन्नमम । २१ ॥ एवङ्कृत्वाचरोर्भागान्दद्याद्दशदिशाम्बलिम् ॥ तेनैवचरुशेषेणेत्यर्थः ॥ तथा ॥ पुरुषसूक्तेन मन्त्रेणाद्यन्तहोमयेत् ॥ तद्यथा ॥ ओंसहस्रशीर्षापुरुषः० ॥ ओंविष्णवे नमःस्वाहा ॥ इदंविष्णवेइदन्नममेतिसर्वत्रस्वाहान्तेत्यागङ्कुर्यात् ॥ १ ॥

ओंपुरुषऽएवे० ॥ आविष्णवेस्वाहा ॥ इदंवि० ॥ २ ॥ ओंएतावानस्य० ॥ ओंविष्णवेस्वाहा ॥ इदंवि० ॥ ३ ॥ ओंत्रिपादूर्ध्व० ॥ ओंविष्णवेस्वाहा ॥ इदंवि० ॥ ४ ॥ ओंततोविराडजा० ॥ ओंविष्णवेस्वाहा ॥ इदंवि० ॥ ५ ॥ ओंतस्माद्यज्ञात्सर्वहुतः० ॥ ओंविष्णवेस्वाहा ॥ इदंवि० ॥ ६ ॥ ओंतस्माद्यज्ञात्सर्वहुतऽऋचः० ॥ ओंविष्णवेस्वाहा ॥ इदंवि० ॥ ७ ॥ ओंतस्मादश्वा० ॥ ओंविष्णवेस्वाहा ॥ इदंवि० ॥ ८ ॥ ओंतंयज्ञम्बर्हिषि० ॥ ओंविष्णवेस्वाहा ॥ इदंविष्णवेइदन्नमम ॥ ९ ॥ ओंयत्पुरुषम्व्यदधुः० ॥ ओंविष्णवेस्वाहा ॥ इदम्बि० ॥१०॥ ॐब्राह्मणोस्यमुखमा० ॥ ओंविष्णवेस्वाहा ॥ इदम्बिष्णवेइदंन० ॥ ११ ॥ ॐचन्द्रमामनसो० ॥ ॐविष्णवेस्वाहा ॥ इदम्बि० ॥ १२ ॥

ॐनाभ्याऽआसी० ॥ ॐविष्णवेस्वाहा ॥ इदम्वि० ॥ १३ ॥ ॐयत्पुरुषेणहविषा० ॥ ॐविष्णवेस्वाहा ॥ इदम्वि० ॥ १४ ॥ ॐसप्तास्यासन्० ॥ ॐविष्णवेस्वाहा ॥ इदंवि० ॥ १५ ॥ ॐयज्ञेनयज्ञम० ॥ ॐविष्णवेस्वाहा ॥ इदम्विष्णवेइदन्नमम ॥ १६ ॥ इतिपुरुषसूक्तषोडशर्ग्भिर्जुहुयात् ॥ अथतिलहोमः ॥ ॐइहरतीतिमन्त्रेणस्वाहा ॥ इदमिहरतीदंनमम ॥ १ ॥ ॐआब्रह्मन्ब्राह्मणो० ॥ ॐब्रह्मणेस्वाहा ॥ इदंब्रह्मणेइदन्नमम ॥ २ ॥ ओंविष्णोरराटमसि० ॥ ओंविष्णवेस्वाहा ॥ इदंविष्णवे० ॥ ३ ॥ ओंत्र्यम्बकंय्यजामहे० ॥ ओंरुद्रायस्वाहा ❀ ❀ ॥ ❀ ❀ इदंरुद्रायेदन्नमम ४ ॥ ॐदेवान्वयाधिभ्यः० ॥ ॥ ॐदेवेभ्यःस्वाहा ॥ इदन्देवेभ्यइदन्नमम ॥ ५ ॥ ॐसमुद्रादूर्मिर्मधु० ॥ ॐ

समुद्रेभ्योनमःस्वाहा ॥ इदंसमुद्रेभ्यइदन्नमम ॥ ६ ॥ ॐइमम्मेवरुण० ॥ ॐवरुणायनमःस्वाहा ॥ इदम्वरुणायेदन्नमम ॥ ७ ॥ इतितिलहोमः ॥ ततोग्रहेभ्योदिक्पालेभ्यःस्वस्वमन्त्रैर्जुहुयात् ॥ ततः ॥ ॐप्रपर्वतस्यवृषभस्य० ॥ ॐपर्वतेभ्यःस्वाहा ॥ इदंपर्वतेभ्यइदन्नमम ॥ ८ ॥ इतिसमिदाज्याहुतयः ॥ अथप्रधानदेवताहोमः ॥ तत्रवारुणमन्त्रैर्द्वादशभिर्नववाभिवृत्याष्टोत्तरशतमाज्याहुतीस्तावतीरेवौदुम्बरसमिदाहुतीश्चजुहुयात् ॥ तत्रमन्त्राः ॥ ॐइमम्मेवरुणेति शुनःशेपऋषिर्गायत्रीच्छन्दोवरुणोदेवतावरुणप्रीतये आज्यहोमेउदुम्बरसमिद्धोमेच विनियोगः ॥ ॐइमम्मेवरुण० ॥ ॐवरुणायस्वाहा ॥ इदम्वरु० ॥ १ ॥ तत्वायामीतिशुनःशेपऋषिस्त्रिष्टुप्छन्दोवरुणोदेवतावरुणप्रीतयेआज्यहोमेउदुंबरस

मिद्धोमेचविनियोगः ॥ ओंतत्वायामि० ॥ ओंवरुणायस्वाहा ॥ इदंवरु० ॥ २ ॥ ओंत्वन्नोऽअग्नेइतिवामदेवऋषिस्त्रिष्टुप्छन्दः अग्नीवरुणौदेवतेवरुणप्रीतयेआज्यहोमेउदुम्बरसमिद्धोमेचविनियोगः ॥ ओंत्वन्नोऽअग्नेवरुणस्य० ॥ ओंवरुणायस्वाहा ॥ इदंवरुणा० ॥ ३ ॥ ओंसत्वन्नोऽअग्नइतिवामदेवऋषिस्त्रिष्टुप्छन्दःअग्नीवरुणौदेवतेवरुणप्रीतयेआज्यहोमेउदुम्बरसमिद्धोमेचविनियोगः ॥ ओंसत्वन्नोऽअग्ने० ॥ ओंवरुणायस्वाहा ॥ इदंवरु० ॥ ४ ॥ ओंअयाश्चाग्नइति प्रजापतिर्ऋषिःपंक्तिछन्दोऽग्निर्देवतावरुणप्रीतयेआज्यहोमेसमिद्धोमेचविनियोगः ॥ ओंअयाश्चाग्नेस्य० ॥ ओंवरुणायस्वाहा ॥ इदंव० ॥ ५ ॥ ओंयेतेशतमिति वामदेवऋषिस्त्रिष्टुप्छन्दः वरुणोदेवतावरुणप्रीतयेआज्यसमिद्धोमेचविनियोगः ॥

ओंयेतेशतम्बरुणम्० ॥ ओंबरुणायस्वाहा ॥ इदम्बरु० ॥ ६ ॥ ओंअदित्यास्त्वगसीतिप्रजापतिऋृषिस्त्रिष्टुप्छन्दः वरुणःसविताविष्णुर्विश्वेमरुतःस्वर्क्कादेवताःवरुणप्रीतयेआज्यसमिद्धोमेचविनियोगः ॥ ओंअदित्यास्त्वगस्यदित्यै०॥ ओंवरुणायस्वाहा ॥ इदम्बरु० ॥ ७ ॥ ओंवनेषुवीतिप्रजापतिऋृषिस्त्रिष्टुप्छन्दोवरुणोदेवतावरुणप्रीतयेआज्यहोमेउदुम्बरसमिद्धोमेचविनियोगः ॥ ओंवनेषुव्यन्तरिक्षन्ततान० ॥ ओंवरुणायस्वाहा ॥ इदम्बरु० ॥ ८ ॥ ओंउदुत्तममितिशुनःशेपऋृषिस्त्रिष्टुप्छन्दोवरुणोदेवतावरुणप्रीतयेआज्यहोमेउदुम्बरसमिद्धोमेचविनियोगः ॥ ओंउदुत्तमम्०बरुणपाश० ओंवरुणायस्वाहा ॥ इदम्बरु० ॥ ९ ॥ ओं०वरुणस्योत्तम्भनमसीतिमन्त्रस्यतपनऋृषिःअतिजगतीच्छन्दःवरुणोदेवतावरु

णप्रीतयेआज्यहोमेउदुम्बरसमिद्धोमेचविनियोगः ॥ ओंव्वरुणस्योत्तम्भनम्० ॥
ओंव्वरुणायस्वाहा॥इदम्वरु०॥१०॥निषसादेतिशुनःशेपऋषिर्गायत्रीच्छन्दोव्वरुणो
देवतावरुणप्रीतयेआज्यहोमेउदुम्बरसमिद्धोमेचविनियोगः ॥ निषसादधृतव्रतोव्व
रुण०॥ओंव्वरुणायस्वाहा॥इदंम्वरु० ॥११॥ ओंघृतवतीतिमन्त्रस्यभरद्वाजभृगवऋ
षयःजगतीच्छन्दोवरुणोदेवतावरुणप्रीतयेआज्यहोमेउदुम्बरसमिद्धोमेचविनियोगः॥
ओंघृतवतीभुवनाना० ॥ ओंव्वरुणायस्वाहा ॥ इदम्व्वरुणायेदन्नमम ॥१२॥
हस्तेनजलमादायअनेनहवनेनवरुणःप्रीयताम् ॥ एतेषांद्वादशमन्त्राणान्नववारा
वृत्याष्टोत्तरसंख्यासम्पत्तिः ॥ ततःपूर्वोक्तप्रमाणेनयूपस्थापनम् ॥ तद्यथा ॥
जलाशयोत्तरेईशानेवापूर्वोच्चतातृतीयांशंगम्भीरंगर्त्तंखातयित्वा ॥ ओंत्वाङ्गन्धर्वाऽअ

खनान्नितिमन्त्रेणखनेत् ॥ यूपंहरिद्रातैलाभ्यामभ्यक्तंतीर्थोदकस्नापितंतास्मिन्गोरसर्षपगोरचनगुग्गुलुदर्भनिम्बपत्रगर्भांपोटलिकाम्बध्वा ॥ ओंयुवासुवासाःपरीतिमन्त्रेणवाससावेष्टितंयूपङ्कृत्वा ॥ ओंयूपव्रस्काऽउपयेतिमन्त्रेणयूपमालभ्य ॥ ॐउच्छ्रयस्वव्वनस्पतऽउद्ध्वोंमापाह्यंहसइत्युच्छ्रयणं ॥ गर्त्तमध्येगन्धादीन्प्रक्षिप्प ॥ यूपमुदकेनसंप्रोक्ष्य ॥ ॐनिवेशनःसङ्गमनोव्वसूनामितिमन्त्रेणनिवेशयेत् ॥ ॐयज्ञायज्ञावइतिमन्त्रेणमूलेजलेनाभिषिच्य ॥ अष्टौलोकपालान्ब्रह्मविष्णुशिवान्यूपेपूजयेत् ॥ तेभ्योवलिन्दत्वाचम्य ॥ कृताञ्जलिपुटोभूत्वावरुणन्ध्यात्वोदङ्मुखःपठेत् ॥ देहिमेनुग्रहंयूपप्रसीदपरमेश्वर ॥ मूलच्छेदेनयत्पापंभूमिघातेनपातकम् ॥ १ ॥ अदुष्टयूपघातोत्थंतस्यपापंव्यपोहतु ॥ यद्वा

ल्येयच्चकौमारेयत्पापन्धर्म्मकंकृतम् ॥ तत्सर्वममदेवेशयूपःपापंव्यपोहतु ॥
यन्निशायान्तथाप्रातर्मध्याह्नापराह्णयोः ॥ सन्ध्ययोश्चकृतंपापंकर्मणामन
सागिरा ॥ सर्वन्तंममदेवेशयूपःपापंव्यपोहतु ॥ येनकेननिमित्तेनकर्त्तांपाप
न्तुकारयेत् ॥ तस्यपापस्यलिप्ताङ्गस्तेनैवास्पृश्यउच्यतेइतिप्रार्थ्यं ॥ ततो
याऽओषधीरितिमन्त्रेणपुष्पमाल्यंवध्वा ॥ यूपंप्रदक्षिणीकृत्यगाढमालिंग्यपुत्र
पौत्रादियुतोनमस्कुर्यात् ॥ केचिदालिंग्यस्नात्वान्यानिवासांसिधारयेदितिवद
न्ति ॥ इतियज्ञयूपपूजाविधिः ॥ ततोज्योतिर्विदुक्तेशुभलग्नेकनकशृङ्गादिभू
षिताङ्गाङ्गन्धादिनाप्रपूज्य ॥ गाङ्कण्ठाभरणभूषिताम् ॥ हैमशृङ्गींरौप्यखुरीं
सवत्सांतरुणींशुभां ॥ कांस्यदोहनसंयुक्तांताम्रपृष्ठसमन्वितां ॥ कपिलांपूज

येद्देवींसर्वपापप्रणाशिनीम् ॥ प्राङ्मुखींतामवस्थाप्यसवत्साङ्गाङ्गपूजिताम् ॥ पुच्छदेशेतुदातव्यंस्नातोवद्धशिखीभवेत् ॥ ततःगोपूजनङ्कुर्यात ॥ अत्रगन्धाक्षतपुष्पाणिदत्वागोपूजनञ्चविधाय ॥ शिरसिब्रह्मणेनमः ॥ ललाटेगरुडध्वजायनमः ॥ मुखेरुद्रायनमः ॥ कर्णयोरश्विभ्यान्नमः ॥ चक्षुषिभास्करायनमः ॥ दन्तेषुपार्वत्यैनमः ॥ जिह्वायांसरस्वत्यैनमः ॥ गोमयेसर्वतीर्थेभ्योनमः ॥ गोमूत्रेगङ्गायैनमः ॥ रोमकूपेषुऋषिभ्योनमः ॥ पृष्ठेवैवस्वतायनमः ॥ वामपार्श्वेप्रजापतयेनमः ॥ दक्षिणपार्श्वेतेजस्विनेनमः ॥ खुरमध्येगन्धर्वायनमः ॥ खुराग्रेपन्नगायनमः ॥ खुरदक्षिणभागेअमरगणायनमः ॥ गोमयेलक्ष्म्यैनमः ॥ हुङ्कारेचतुर्वेदेभ्योनमः ॥ अङ्गेषुसर्वदेवताभ्योनमः ॥ हुंभारवशब्देप्रजापतये

नमः ॥ स्तनेषुसागरेभ्योनमः ॥ इतिसंपूज्य ॥ धूपदीपनैवेद्यंयवगुडामिश्रितमन्नंवस्त्रंघण्टाचामरञ्चार्पयित्वा ॥ पुष्पाञ्जलिंदद्यात् ॥ ब्राह्मणैःशान्तिपाठेपरैश्चमङ्गलगीतवाद्यध्वनौक्रियमाणे ॥ ॐइरावतीधेनुमतीहिभूतꣳसूयवसिनीमनवेदशस्या ॥ व्यस्कभ्नारोदसीविष्णवेतेदाधर्थपृथिवीमभितोमयूखैःस्वाहा ॥ सं. अ. ५ मं. १६ इतिमन्त्रेणजलेगामीशानाभिमुखीमवतारयेत् ॥ तरन्तींगामनुमन्त्रयेत ॥ अनेनमन्त्रेण ॥ ॐइदंसलिलंपवित्रङ्कुरुष्वशुद्धाःपूताऽअमृताःसन्तुनित्यंमान्तारयन्तिसर्वतीर्थाभिषेकंलोकाल्लोकान्तरन्तेतीर्यतेचइति ॥ वापीकूपोत्सर्गेतुत्रिरुपरिभ्रामयेत् ॥ ततोगुरुणान्वारब्धस्तत्पुच्छेलग्नोजलेगच्छन्नेवमन्त्रद्वयंपठेत् ॥ तच्च ॥ ॐसमुद्रादूर्म्मिर्मधुमाँ२॥ऽउदारदुपाꣳशु

ना॒सम॑मृ॒त॒त्वमा॑नट् ॥ घृ॒तस्य॒नाम॒गुह्यँ॒यद॒स्ति॑जि॒ह्वादे॒वाना॑म॒मृत॑स्य॒नाभिं÷ ॥ १ ॥ सं. अ. १७ मं. ८९ अंयेवा॒मीरो॑च॒नेदि॒वायेवा॒सूर्य्य॑स्यर॒श्मिषु ॥ येषा॑म॒प्सुसदं॑स्कृतन्तेऽभ्यं÷स॒र्पेऽभ्यो॒नमं÷ ॥ २ ॥ सं. अ. १३ मं. ८ इतिमन्त्रद्वयंपठेत् ॥ ततईशान्यांपरपारंगत्वा ॥ जानुदघ्नेजलेउदङ्मुखोगोपुच्छेगुरुणान्वितोयजमानःसकुशैर्यवतिलैःस्वशाखोक्तरीत्यादेवर्षिपितॄणांतर्पणङ्कुर्यात् ॥ सव्येनतत्रप्राङ्मुखोदेवान्० ॥ निषितीउदङ्मुखोऋषीन्० ॥ अपसव्येनदक्षिणाभिमुखःपितॄँस्तर्पयेत्॥ अथपौराणीयतर्पणंउत्सर्गपद्धतौ ॥ पितापितामहश्चैवतथैवप्रपितामहः ॥ स्वस्वपत्नीसमेताश्चप्रीयन्तांजलतर्पणात् ॥ १ ॥ अजातदन्तायेकेचिद्येचगर्भेऽप्यवस्थिताः ॥ तेषामुद्धरणार्थायतडागोदकतर्पणम् ॥ २ ॥ पितृव्यकाश्चयेस्माकं

भ्रातरश्चसहोदराः ॥ गुरवोमातुलाःपुत्राआचार्यसखिवान्धवाः ॥ ३ ॥ तेषांपुत्राश्चपत्न्यश्चश्वशुरायेसपुत्रकाः ॥ एतेषांक्रीडनार्थायतडागोदकतर्पणम् ॥ ४ ॥ वन्धुवर्गाश्चयेकेचित्गोत्रनामविवर्जिताः ॥ स्वगोत्रापरगोत्रावातेभ्यश्चेदन्तिलोदकम् ॥ ५ ॥ उद्बन्धेनमृतायेचसिंहव्याघ्रहताश्चये ॥ दंष्ट्रिभिःशृङ्गिभिश्चैवतेभ्यश्चैवतिलोदकम् ॥ ६ ॥ असुरादेवपत्न्यश्चमातरश्चण्डिकातथा ॥ दिक्पालालोकपालाश्चग्रहदेवाधिदेवताः ॥ ७ ॥ तेषामुद्धरणार्थायतडागोदकतर्पणम् ॥ अग्निदग्धाश्चयेकेचिन्नाग्निदग्धास्तथापरे ॥ ८ ॥ विद्युच्चोरहतायेचतेभ्योर्पादन्तिलोदकं ॥ रौरबेचान्धतामिश्रेकुम्भीपाकेचयेगताः ॥ ९ ॥ अनेकयातनासंस्थाःप्रेतलोकेषुयेगताः ॥ पच्यंतेसंयमन्यांयेनीतायेयमकिङ्क

रैः ॥ १० ॥ असिपत्रवनेघोरेतेभ्योपीदन्तिलोदकं ॥ विश्वेदेवास्तथासाध्या
आदित्याश्चमरुद्गणाः ॥ ११ ॥ क्षेत्रपीठोपपीठानिनद्यश्चैवससागराः ॥ पाता
लेनागपत्न्यश्चनगाश्चैवसपर्वताः ॥ १२ ॥ पिशाचागुह्यकाःप्रेतागणगन्धर्वरा
क्षसाः ॥ पृथिव्यापश्चतेजश्चवायुराकाशमेवच ॥ १३ ॥ तेसर्वेतृप्तिमाया
न्तुतडागोदकतर्पणात् ॥ १३ ॥ आब्रह्मणोयेपितृवंशजातामातुस्तथावंशभवाम
दीयाः ॥ वंशद्वयेस्मिन्ममदासभूताभृत्यास्तथैवाश्रितसेवकाश्च ॥ १४ ॥
मित्राणिसख्यःपशवश्चवृक्षादृष्टाश्चस्पृष्टाश्चकृतोपकाराः ॥ जन्मान्तरेयेममसङ्ग
ताश्चतेभ्यस्तडागोदकमेतदस्तु ॥ १५ ॥ अतीतकुलकोटीनांसप्तद्वीपनिवासि
नां ॥ आब्रह्मभुवनाल्लोकमिदमस्तुतिलोदकम् ॥ १६ ॥ वापीकूपयोस्तुतडाग

पदस्थानेतत्पदप्रक्षेपः ॥ततस्तर्पणान्तेयजमानःपुच्छलग्नएव ॥ आपोऽअस्मानिति
पठन्नीशान्यामुत्तीर्य ॥ ॐआपोऽअस्मान्मातरः÷शुन्धयन्तुघृतेननोघृतप्व÷
पुनन्तु ॥ व्विश्वꣳहिरिप्रम्प्रवहन्तिदेवीरुदिदाभ्यः॒शुचिरापूतऽएमि । इत्यर्द्धर्चेन
सं. अ. ४ मं. २ ओंसूर्यवसाद्भगवतीहिभूयाअथोवयंभगवन्तःस्याम अद्धितृणम
घ्न्येविश्वदानींपिबशुद्धमुदकमाचरन्तीत्यनेनजलान्निष्कास्य ईशान्यांदिशिउत्थाप
येत् ॥ यदिहिकुर्यात्तदा ॥ हिङ्कृण्वतीवसुमतीवसूनांवत्समिच्छन्तीमनसाभ्या
गात ॥ दुहामश्विभ्यांपयोअघ्न्येयंसावर्द्धतांमहतेसौभगायेत्यनुमन्त्रयेत् ॥ ततः
पुच्छन्त्यक्त्वाधौतेवाससीपरिधायद्विराचम्य ॥ दूर्वाचन्दनादिभिस्तांगांसम्पूजये
त् ॥ ततःगोप्रार्थना ॥ यालक्ष्मीःसर्वभूतानांयाचदेवेष्ववस्थिता ॥ धेनुरूपे

णसादेवीममपापम्व्यपोहतु ॥ १ ॥ गावोमेचाग्रतःसन्तुगावोमेसन्तुपृष्ठतः ॥ गावोमेहृदयेसन्तुगवांमध्येवसाम्यहम् ॥ २ ॥ एवम्प्रार्थ्य ॥ गोपुच्छेगोदानाङ्तर्पणङ्कुर्यात् ॥ ततःकुशतिलजलान्यादाय ॥ प्राङ्मुखःसव्येनदेवांस्तर्पयेत् ॥ उदङ्मुखोयज्ञोपवीतंकण्ठलम्बितङ्कृत्वा ॥ ऋषयःसनकाद्याश्चभूर्भुवःस्वर्निवासिनः ॥ तेसर्वेतृप्तिमायान्तुगोपुच्छोदकतर्पणात् ॥ अपसव्येनदक्षिणाभिमुखः यमादिचतुर्दशयमपितृपितामहप्रपितामहस्तद्व प्रपितामहत पत्न्यादिपितृव्यादिभगिन्यादिश्वशुरगुर्वन्तांस्तर्पयेत् ॥ तत्रसर्वेषान्नामानिगृहीत्वागोपुच्छोदकेनतृप्यतामितिसर्वत्र ॥ तत्रदेवेभ्यएकमेकमञ्जलिम् ॥ द्वौद्वौतुकसनकादिभ्यः ॥ पितृभ्यस्त्रीन्स्त्रीन्स्त्रीणामेकैकमञ्जलिम् ॥ एवंपूर्ववत्तर्पणङ्कृत्वा ॥ सव्यमाचम्यगां

प्रदक्षिणीकृत्य ॥ ततःकुशयवतिलान्यादाय ॥ सुवर्णशृङ्गींरौप्यखुरींताम्रपृष्ठीं संपाद्य ॥ कांस्यपात्रदोहनपात्रेअधःसंस्थाप्य ॥ पृष्ठदेशेकौसुंभवस्त्रयुग्मेनाच्छाद्य ॥ घृतसुवर्णयुक्तेकाँस्यपात्रेगोपुच्छन्निःक्षिप्य ॥ घृताक्तङ्कृत्वादातासपत्नीकःप्राङ्मुखःउपविश्य ॥ उदङ्मुखायोपविष्टायद्विजायप्रत्यङ्मुखायास्थितायाःपुच्छंब्राह्मणायदद्यात् ॥ सङ्कल्पङ्कुर्यात् ॥ ओमद्येहेत्यादि॰ममसर्वपापक्षयपूर्वकरुद्रालयगमनानन्तरवहुकल्पकालावधिकद्युलोकभोगानुभवपूर्वकंश्रीपरमेश्वरप्रीतिकामोवाहमाज्ञांरुद्रदैवतांसवत्सांसुवर्ण शृङ्गींरौप्यखुरींताम्रपृष्ठींकाँस्यपात्रद्वययुतांयुवतीममुकगोत्रायामुकशर्मणेब्राह्मणायतुभ्यमहंसंप्रददे ॥ नममेतिविप्रकरेदद्यादितिदातावदेत् ॥ ततोदानप्रतिष्ठापिदेया ॥ द्विजोपिकोदादितिपठेत् ॥

द्यौस्त्वाददात्वितिच ॥ एतान्मन्त्रान्पठेत् ॥ विश्वस्याघप्रणाशिन्यायज्ञसाधनभूतया॥विश्वरूपधरोदेवःप्रीयतामनयागवा ॥ १ ॥ गवामङ्गेषुतिष्ठन्तिभुवनानि चतुर्दश ॥ यस्मात्तस्माच्छिवंमेस्यादिहलोकेपरत्रच ॥ २ ॥ गावोमे चाग्रतःसन्तुगावोमेसन्तुपृष्ठतः ॥ गावोमेसर्वतःसन्तुगवांमध्येवसाम्यहम् ॥ ३ ॥ ततइरावतीधेनुमतीतिपठित्वा ॥ १ ॥ ततःदेवस्यत्वेतिपठित्वा ॥ २ ॥ दाताप्रतिगृह्णातुभवान्इतिवदेत् ॥ प्रतिगृह्णामिप्रत्युक्त्वा॥धेनोत्वाम्प्रतिगृह्णामि कुटुम्बार्थेविशेषतः ॥ स्वस्तिर्भवतुमेनित्यंरुद्रमातर्नमोस्तुते ॥ ततःगांप्रदक्षिणीकृत्य ॥ नमोगोभ्यइतिनत्वा ॥ ब्राह्मणञ्चविसृज्य ॥ इयंगौसामगानाञ्चदद्यात् ॥ ततोवादित्रघोषेजायमानेहरिद्राकुङ्कुमादिरञ्जितेनात्रिवृतमङ्गल

सूत्रेणजलाशयंवेष्टयेत् ॥ ततोयजमानोनूतनश्वेतोष्णीषंशिरसिवद्ध्वाजला
न्तिकउपविशेत ॥ ततःआचार्य्योवेदितःपूर्वोक्तांकूर्ममकरादियुतांहेममुक्तारजत
लाजावर्त्तप्रवालरूपपञ्चरत्नमहानदीजलयुतांदध्यक्षतादिभूषितांउत्तराभिमुखैश्चतु
र्भिर्होतृभिर्धृतसुवर्णपात्रीमादायस्वयंपूर्वमुखोजलेस्थित्वा ॥ कूर्ममकरौस्वर्णौअगाधे
जलेपूर्वाग्नेयदिशोःपश्चिमाभिमुखौक्षिपेत् ॥ मत्स्यडुण्डुभौराजतावुदङ्मुखौदक्षिण
पश्चिमयोर्दिशोःक्षिपेत् ॥ कुलीरमण्डूकौताम्रमयौपूर्वाभिमुखौवायव्यदिशिक्षिपेत् ॥
प्राङ्मुखआयसंशिशुमारमुत्तरदक्षिणाभिमुखंवारुणमन्त्रेणप्रक्षिपेत ॥ ततःशन्नो
देवीत्यनेनआपोहिष्ठेत्यृचेनचोदङ्मुखस्तांपात्रींन्युब्जीकुर्यात् ॥ पात्रीस्थपदार्थान्
जलेप्रक्षिप्यद्विराचामेत् ॥ ततःमण्डपमागत्य ॥ सर्वेआचार्यादयोवासांसि

परिधाय ॥ ततोयजमानःस्वोष्णीषमाचार्यायप्रयच्छति ॥ उष्णीषवन्धनपक्षेततोयजमानोजलाशयान्तिकेप्राङ्मुखउपविश्यमङ्गलवाद्यादिघोषेजायमानेजलाशयोत्सर्गङ्कुर्यात् ॥ रूपनारायणादयस्तुकूर्म्मादिप्रक्षेपकालेउत्सर्गस्ततःपात्रन्युब्जीकरणमित्याहुःउत्सर्गेवाक्यन्तुकुशयवजलान्यादायदेशकालसङ्कीर्त्तनान्ते ॥ ममसमस्तपापक्षयपूर्वकरुद्रालयगमनानन्तरवहुकल्पकालावधिकरुद्रलोकभोगानुभवपूर्वकपरार्द्धद्वयकालावच्छिन्नमहस्तपःप्रभृतिलोकगमनादितल्लोकभोगोत्तरकालसद्योगवलंप्राप्यवैष्णवपदप्राप्तिकामोहमिमन्तडागादिजलाशयंवरुणदेवताकंस्नानपानावगाहनाद्यर्थंसर्वेभ्योभूतेभ्यउत्सृजेइत्युक्त्वाजलाशयन्निरीक्ष्यजलंभूमौक्षिपेत् ॥ मन्त्रद्वयंजपेत् ॥ सर्वभूतेभ्यउत्सृष्टंमयैतज्जलमूर्जितम् ॥ रमन्तांसर्वभूतानि

स्नानपानावगाहनैः ॥ १ ॥ सामान्यंसर्वभूतेभ्योमयादत्तमिमञ्जलम् ॥ रमन्तां सर्वभूतानिस्नानपानावगाहनैः ॥ २ ॥ सोपानात्पतितोवाश्वाज्जलेचैवानिमज्जनात् ॥ मरणेवास्थिभङ्गेचकर्त्तादोषैर्नलिप्यते ॥ १ ॥ ततोमण्डपमागत्यप्रागादिष्विन्द्रादिभ्यःपूर्ववत्माषभक्तवलिंदद्यात् ॥ अथाचारप्राप्तंनागयष्ट्यारोपणं ॥ तत्रगुरुरष्टसुचूतपत्रेष्वनन्तवासुकितक्षककर्कोटकपद्मसङ्खमहापद्मकुलिकानांनामानि प्रत्येकंलिखित्वा ॥ प्राक्स्थापितसजलकलशेप्राक्षिप्यालोड्यतत्रवरुणंपूजयित्वा एकंचूतपत्रमाकृष्यतत्पत्रलिखितनामानंनागंतीर्थजलाप्लुतायांयज्ञियवृक्षोद्भवायां जलाशयाल्पत्वाद्यनुसारतोद्वादशपञ्चदशविंशत्यन्यतमारत्निमितायांयष्ट्यां ॥ अमुकनागइहागच्छइहतिष्ठेत्यावाह्यस्थापयित्वा ॥ अनेननागेनास्यजलाशयस्यरक्षा

कार्या ॥ इतिजनेभ्यःश्रावयित्वा ॥ तन्नागंयष्टौअमुकनागायनमइतिनाममन्त्रेणयथाशक्तिपूजयेत् ॥ ततोयष्टिसम्वन्धिवर्त्तुलमस्तकोपरिस्थूलेलोहमयंचक्रमारोपयन्ति ॥ ततोजलमध्येप्रागेवयष्ट्यर्थकृतखातसमीपेअर्चितांयष्टिन्नयेत् ॥ ततः खातेदधिमध्वक्षतकुशतीर्थजलपञ्चरत्नानिप्रक्षिप्य ॥ ध्रुवाद्यौरितिमन्त्रेणयष्टिं समारोपयेत् ॥ इदंयष्ट्यारोपणंकूपवाप्योर्नकार्यमितिरूपनारायणीये ॥ इतिनागयष्टिरोपणम् ॥ ततोयजमानोगङ्गादितीर्थजलंजलाशयेप्रक्षिप्य ॥ प्राङ्मुखउपविश्यपठेत् ॥ कुरुक्षेत्रंगयागङ्गाप्रभासःपुष्कराणिच ॥ एतानिपञ्चतीर्थानितडागेनिवसन्तुमे ॥ १ ॥ वितस्ताकौशिकीसिंधुःसरयूचसरस्वती ॥ एतानिपञ्चतीर्थानितडागेनिवसन्तुमे ॥ २ ॥ दशार्णामुरलासिन्धुरथावर्तादृषद्वती ॥ एतानि

पञ्चतीर्थानितडागेनिवसन्तुमे ॥ ३ ॥ यमुनानर्मदारेवाचन्द्रभागाचवेदिका ॥
एतानिपञ्चतीर्थानितडागेनिवसन्तुमे ॥ ४ ॥ गोमतीवाञ्जतीशोणागण्डकीसाग
रस्तथा ॥ एतानिपञ्चतीर्थानितडागेनिवसन्तुमे ॥ ५ ॥ इतिपठित्वाजलंस्पृ
ष्ट्वा ॥ ततःप्रपद्येवरुणमूर्जितञ्चाम्भसामिव ❀ ॥ ❀ याचितन्देहिमेपुण्यं
सर्वपापापनुत्तये ॥ १ ॥ सान्निध्यंमन्त्रतोयेतुतदेवमदनुग्रहात् ॥ रुद्रान्प्रपद्ये
वरुणंसर्वानप्सुखदस्त्वहम् ॥ २ ॥ शमयंत्वप्सुमेपापंरक्षेतुस्तेतुमांसदा ॥ आपः
पुण्याःपवित्राश्चप्राणिनाम्प्राणदास्तथा ॥ ३ ॥ शमयंत्वप्सुमेपापंतस्माद्रक्षन्तु
सर्वदा ॥ इतिनमस्कृत्य ॥ ततोजलमध्येजलमातृणांपूजनम् ॥ ॐह्रियैनमः
ह्रियमावाहयामि ॥ १ ॥ ॐश्रियैनमःश्रियमा० ॥ २ ॥ ॐशच्यैनमःशची

मा० ॥ ३ ॥ ॐमेधायैनमःमेधामा० ॥ ४ ॥ ॐविश्वायैनमःविश्वामा० ॥ ५ ॥ ॐलक्ष्म्यैनमःलक्ष्मीमावाहयामिपूजयामि ॥ ६ ॥ इतिजलमातॄर्जलेगन्धादिना प्रपुजयेत् ॥ तत्रमूलंमृग्यम् ॥ ततोगीतवाद्यादिघोषेजायमाने ॥ आपोहिष्ठेत्यृचंजपन्नविच्छिन्नदुग्धधारयाजलाशयंत्रिःप्रदक्षिणीकुर्यात् ॥ तत्रएकंब्राह्मणंयथेष्टदुग्धम्पाययेत ॥ ततोयजमानःमण्डपंप्रविश्यस्थापितदेवताःपञ्चोपचारैःसंपुज्यशय्यादानञ्चकुर्यात् ॥ सोपस्करांशय्यांगुरवेसङ्कल्पपूर्वकञ्चदद्यात् ॥ अन्यान्यपिपात्राणिभोजनयोग्यानिअन्यान्यपिदातुमुपकल्पितवस्तूनिदद्यात् ॥ ततोदेशकालसङ्कीर्त्तनान्तेममदशसहस्रवर्षावधिस्वर्गवाससिद्धिद्वाराश्रीलक्ष्मीनारायणप्रीत्यर्थंशय्यादानङ्करिष्यइतिसङ्कल्प्य ॥ ततःशय्याशिरःप्रदेशेघृतपूर्णकुम्भन्निधाय ॥

पार्श्वतःसप्तधान्यानिनिधाय ॥ शय्योपरिनारिकेलादिफलानिनिधाय ॥ ॐमद्ये
हेत्यादि०ममसमस्तपापक्षयार्थे मांशय्यांसारदारुमयींसतूलिकोत्तरच्छादनप्रच्छन्नां
लक्ष्मीनारायणप्रतिमायुतांसुगन्धोपधानघृतकुम्भसप्तधान्यताम्बूलैलालवङ्गकर्पूरकु
ङ्कुमागरुचन्दनदीपकोपानच्छत्रचामरवितानासनभोजनभाजनजलपात्रादियुतामा
ङ्गिरसदैवताममुकगोत्रायामुकशर्मणेब्राह्मणायतुभ्यमहंसंप्रददेइतिविप्रकरेदद्यात् ॥
प्रतिग्रहीतास्वस्तात्युक्त्वा ॥ देवस्यत्वेतिप्रतिगृह्णीयात् ॥ दाताकृतस्यशय्या
दानस्यपरिपूर्णतासिद्ध्यर्थमिमांसुवर्णमयींदक्षिणाममुकगोत्रायामुकशर्मणेब्राह्मणाय
तुभ्यमहंसंप्रददे॥नममेतिदातावदेत् ॥ ततःप्रार्थना ॥ यस्मादशून्यशयनेकेशवस्य
शिवस्यच ॥ शय्याममाप्यशून्यास्यात्तथाजन्मनिजन्मनि ॥ ततस्तङ्करेधृत्वाशय्या

यामुपवेशयेत् ॥ परिपूर्णतांवाचयित्वा ॥ ततोगुरुर्ऋत्विग्भिःसहस्वेस्वेकुण्डेवारुणप्रभृतिविस्वकर्म्मान्तंहोमङ्कुर्यात ॥ तदंतेउत्तराङ्गन्निर्वर्त्यस्वेस्वेकुण्डेसर्वेहोतारःस्विष्टकृद्धोमंव्याहृतिहोमंपञ्चवारुणप्रजापतिहोमञ्च कृत्वावलिदानंकुर्यात् ॥ ततःपूर्णाहुतिङ्कुर्युः ॥ दरिद्रोयजमानएकाग्निविधानेनगुरुणैवसर्वङ्कर्मकारयेदितिमदनादयः ॥ ततःसंस्रवप्रासनंपवित्रभ्यांमार्जनम् ॥ अग्नौपवित्रप्रतिपत्तिःप्रणीतान्युञ्जीकरणंव्रह्मणेपूर्णपात्रदानङ्कुर्यात् ॥ ततोऽग्निपूजात्र्यायुषादिकरणम् ॥ ततोग्निविसर्जनं ॥ ततोगुर्वृत्विग्भ्योहिरण्यन्दद्यात् ॥ यजमानस्याभिषेकः ॥ अयन्दिनद्वयपक्षः ॥ चतुर्थदिनपक्षेचतुर्थदिनेचतुर्थीकर्मकुर्यात् ॥ तद्यथा ॥ अद्येहेत्यादि०अमुकजलाशयोत्सर्गाङ्गभूतञ्चतुर्थीकर्मकर्तुमाचार्यवरणं

पञ्चभूसंस्कारानग्निस्थापनब्रह्मवरणादिआघारावाज्यभागान्तंभूराद्यानवाहुतीर्हुत्वा॥ ततइमम्मेवरुणेतिमन्त्रेणतोयमभिमन्त्र्यतेनजलेनाग्निमभ्युक्ष्य ॥ गायत्र्यापञ्चदशाहुतीर्जुहुयात् ॥ ततोऽव्याहृतिभिर्व्यस्ताभिराहुतित्रयंहुत्वा ॥ अग्नयेस्विष्टकृतेस्वाहेतिजुहुयात ॥ तदन्तेवरुणस्नपनमुक्तम् ॥ आदौदध्यक्षतकुशाग्रक्षीरदूर्वामधुश्वेतसर्षपफलसहितंताम्रादिपात्रेणाष्टाङ्गमर्घ्यंन्दत्वा ❀ ॥ ❀ ततोगजदन्तोद्धृतसप्तमृत्तिकामग्न्यागारमृदोनवकुम्भेषुक्षिप्त्वा ॥ शन्नोदेवीरापोहिष्ठेतिसृभिर्मन्त्रैर्जलमापूर्य ॥ एभिर्मन्त्रैर्वरुणंस्नापयेत् ॥ एवंस्नानंविधाय ॥ ततः पञ्चगव्यस्नानङ्कुर्यात् ॥ सावित्र्यापलमेकंगोमूत्रम् ॥ गन्धद्वारेतिअङ्गुष्ठार्द्धमितङ्गोमयम् ॥ २ ॥ आप्यायस्वेतिपलत्रयंक्षीरं ॥ ३ ॥ दधिक्राव्णो

तिद्विपलन्दधि ॥ ४ ॥ तेजोसीत्येकपलंघृतम् ॥ ५ ॥ देवस्यत्वेत्येकपलंकुशोदकम् ॥ ६ ॥ गृहीत्वैकीकृत्यतेनापोहिष्ठेतिमन्त्रेणतडागाधिवासिनम्वरुणं स्नापयेत् ॥ ततः पृथक्पृथक्पञ्चामृतादिनास्नापयित्वा ॥ तद्यथा ॥ ओंपयःपृथिव्यामितिक्षीरेण ॥ १ ॥ दधिक्राव्णइतिदध्ना ॥ २ ॥ ओंघृतवतीभुवनानामितिघृतम् ॥ ओंमधुवातेतिमधुना ॥ ४ ॥ ओंआयङ्गौरितिशर्करया ॥ ५ ॥ ओंसरस्वत्यैभैषज्येनेतिपुष्पोदकेन ॥ ६ ॥ ओंअष्टौव्यख्यत्ककुभइतिरत्नोदकेन ॥ ओंदेवस्यत्वेतिकुशोदकेन ॥ ८ ॥ ओंहिरण्यगर्भेतिसुवर्णोदकेन ॥ ९ ॥ ओंयाःफलिनीरितिफलोदकेन ॥ १० ॥ सावित्र्यागन्धतोयेनस्नपयेत ॥ ११ ॥ ततोघटानांसहस्रेणपञ्चशतेनाष्टोत्तरशतेनवाषोडशेनचतुष्टयेनवायथाशक्तिस्नपयेत् ॥

शक्त्यनुसारंसुवर्णराजतताम्रकांस्यपैत्तलमृण्मयैःकलशैःस्नपयेत् ॥ तेषुकलशेषुसहदेवीवचाव्याघ्रीवलाऽतिवलाशङ्खपुष्पीसिंहीसुवर्चाइत्यष्टमहौषधीयुक्तकलशेन स्नपयेत् ॥ ततोयवगोधूमनीवारतिलश्यामाकशालिप्रियङ्गुव्रीहिवीजाष्टकयुतकलशेनवारुणेनमन्त्रेणस्नापयेत् ॥ ततोगोमयेनमृदावाकृतैःस्वस्तिकंपद्मंवालिखित्वापञ्चवर्णौदनैःपञ्चवर्णरजोभिर्वापूरयेत् ॥ तस्योपरिकृष्णभक्तवलिंदत्वा ॥ गङ्गाजलेनाचम्य ॥ वेदसूक्तसमायुक्तेयज्ञवाससमन्विते ॥ सर्ववर्णप्रदेदेववाससीतेविनिर्मितेइतिवस्त्रयुग्मन्दत्वा ॥ ततःसमभागकर्पूरकुङ्कुमान्वितंचन्दनंलेपयित्वा ॥ शरीरन्तेनजानामिचेष्टाञ्चैववचनैवच ॥ मयानिवेदितंभक्त्याचन्दनंप्रतिगृह्यतामितिचन्दनम् ॥ तूष्णीमक्षतान्पुष्पमालाञ्चदत्वा ॥ वनस्पतीतिधू

पमाघ्राय ॥ त्वंसूर्यचन्द्रज्योतींषिविद्युद्दग्निस्तथैवच ॥ त्वमेवसर्वंज्योतींषिदीपोयंप्रतिगृह्यतामितिचत्वारिंशद्दीपान्दत्वा ॥ प्रदक्षिणीकृत्य ॥ यथाशक्त्यलङ्करणम्भूषयेत् ॥ अत्रप्रमाणम्मृग्यम् ॥ ततःइमम्मेवरुणेतिमन्त्रेणसर्वैऋत्विजोयजमानोन्वारब्धापूर्णाहुतिन्दत्वाग्निम्प्रपूज्य ॥ त्र्यायुषम्भस्मनाकुर्यात् ॥ गुर्वृत्विग्भ्योहिरण्यन्दद्यात् ॥ ततःआचार्यायाश्वंवर्षपर्यन्तमन्नन्दद्यात् ॥ ततःसऋत्विगाचार्यौवैदिकैःसुरास्त्वामित्यादिपौराणिकैश्चपूर्वोक्तमन्त्रैःकलशोदकेनसकुटुम्बंयजमानमाभिषिच्य ॥ तिलकंविधाय ॥ पुनःग्रहादीनांपूजनम् ॥ यान्तुदेवगणाःसर्वेइतिग्रहादीनाम्विसर्जनम् ॥ दीनानाथेभ्योभूयसीन्दद्यात् ॥ यज्ञोपकरणानियज्ञपात्राणिऋत्विग्भ्योविभज्य ॥ मण्डपंमण्डपोपकरणानिहेमपात्री

ञ्चगुरवेदत्वा ॥ ततोब्राह्मणसहस्रमष्टोत्तरपशतंपञ्चशतंविंशतिंवाशक्त्यनुरूपंभोजयित्वा ॥ ॐयस्यस्मृत्या० ॥ प्रमादात्कुर्वताङ्कर्मेत्युक्त्वाप्रणमेदितिजलाशयोत्सर्गप्रयोगः ॥ अथवाप्यादिशुद्धिः ॥ उत्सर्गमयूखे ॥ वापीकूपतडागादिष्वल्पतोयेषुश्वमार्जारखरवानरसूकरादिमृतकाद्युपघातेसर्वोदकोद्धरणेनशुद्धिः ॥ वहुजलेषुकुम्भशतमुद्धृत्यपञ्चगव्यप्रोक्षणम् ॥ क्षुद्रप्राणिपातेषष्टिकुम्भोद्धारेपञ्चगव्यप्रक्षेपः ॥ अत्यल्पोपघातेसूर्यचन्द्ररश्मिसम्बन्धाद्वायुस्पर्शाच्चशुद्धिः ॥ तथाअतिगम्भीरवापीकूपतडागनद्यादिषुचाण्डालाद्यशुचिस्पर्शेयत्रैवस्थलेस्पर्शस्तदेवस्थलंपरिवर्ज्याऽन्यत्रशुद्धिः ॥ वापीकूपतडागेषुमानुषेमृतेप्रक्षिप्तेसर्वजलोद्धारात्घटशतजलोद्धरणपूर्वकपञ्चगव्यप्रक्षेपाद्वाशुद्धिः ॥ वापीकूपतडागजलेमनुष्य

१२

मरणेजलस्याहोरात्रमाशौचं ॥ ततःप्रागुक्ताशुद्धिः ॥ एवंमूत्रपुरीषचर्मरुधिरादिधातुप्रक्षेपेत्रिंशत्कुम्भजलोद्धारपूर्वकगोमूत्रादिप्रक्षेपादिकंमार्जनम् ॥ इतिवाप्यादिशुद्धिः ॥ अथारामेष्वप्येवंविशेषस्तु ॥ ॐस्वस्तिवाचननान्दीश्राद्धवेदिकुण्डमण्डपऋत्विगाचार्यवरणादिपूर्ववत्कृत्वोक्तलक्षणस्य पद्मगर्भमध्यदलस्यवाहिर्देशेषुब्रह्मादीन्लोकपालानभ्यर्च्य॥वस्त्रादीन्मङ्गलस्नानंवस्त्रगन्धादिनासम्पूज्य॥तेषुस्वर्णरूप्यफलानिवध्वा॥फलितेनेत्रेस्वर्णशलाकाञ्जनेनांक्त्वा ॥ सुवर्णसूच्याकर्णवेधङ्कृत्वाग्निप्रतिष्ठाप्य ॥ सोमोधेनुमितिऋचासौम्यञ्चर्वाहुतिंहुत्वास्विष्टकृदादिकृत्वा ॥ तथैवसमिदाज्यतिलानष्टशतंतदर्धसङ्ख्यंवाहुत्वा ॥ कर्मशेषंसमाप्यशान्तिकलशैर्यजमानञ्चाभिषिञ्चेयुः ॥ सवस्त्रहिरण्यादिदक्षिणान्दद्यादप्यलाभेतुदक्षिणाङ्गामल

कृतामाराममध्यादुदङ्मुखीमुत्सृज्याचार्यायदद्याच्छेषञ्चतुर्थाहंफलन्तुसर्वकामावा सिरितिपूर्त्तानि ॥ इत्याश्वलायनीयपरिशिष्टोक्ताआरामप्रतिष्ठाविधिःसमासः ॥

अथसामान्यतोहनुमत्प्रतिमास्थापनविधिर्लिख्यते ॥ शुचौदेशेमण्डपस्थण्डिलादकावधाय ॥ सुमुहूर्तेनित्यकार्यंसमाप्यशिल्पस्थानाद्देवंतत्रानीयासनेनिधायाचान्तःप्राणानायम्य ॥ अद्येहेत्यादिदेशकालसङ्कीर्त्तनान्तेममदीर्घायुर्लक्ष्मीसर्वकामसमृद्ध्यर्थमस्यांमूर्त्तौदेवकलासान्निध्यार्थंहनुमत्प्रतिमाप्रतिष्ठाङ्करिष्यइति ॥ तदङ्गत्वेनगणपतिपूजनंस्वस्तिपुण्याहवाचनग्रहस्थापनमाचार्यादिवरणञ्चकरिष्येइतिसङ्कल्प्य ॥ ततःपूर्वोक्तप्रतिष्ठाप्रकारेणगणपतिपूजांविधायपुण्याहवाचनंनवग्रहस्थापनंपूजनमाचार्यादिवरणञ्चकृत्वा ॥ स्वस्वकुण्डेस्थण्डिलेवापञ्चभूसं

स्कारान्कुर्यात् ॥ तत्राऽग्निंप्रतिष्ठाप्यपरिस्तरणादिकर्मसमाप्याऽऽघारावाज्यभागौहुत्वाग्रहेभ्यस्तिलहोमञ्चकृत्वाप्रधानदेवहोमङ्कुर्यात् ॥ तद्यथा ॥ ॐनमोभगवतेरामच[illegible]स्वाहा ॥ इदंविष्णवे॰ ॥ ॐहनुमतेस्वाहा ॥ इदंहनुमते॰ ॥ इत्येताभ्यामष्टोत्तरसहस्रमष्टोत्तरशतम्वाचरुणाहुत्वा ॥ ततःसहस्रशीर्षेतिपुरुषसूक्तेनतिलाहुतीस्तैरेवजुहुयात् ॥ अत्रैवहवनविशेषःसारस्वततन्त्रे ॥ ॐइदंविष्णुर्विचक्रमे॰ ॥ स्वाहा ॥ इदंविष्णवेइदन्नममेतिसर्वत्रत्यागङ्कुर्यात् ॥ ॐविष्णोरराटमसि॰ ॥ २ ॥ स्वाहा ॥ इदम्विष्णवे॰ ॥ २ ॥ ॐइरावतीधेनुमतीहि॰ ॥ स्वाहा ॥ इदंविष्णवे॰ ॥ ३ ॥ ॐतद्विप्रासोविपन्यवो॰ ॥ स्वाहा ॥ इदम्विष्णवे ॥ ४ ॥ ॐदिवोवाविष्णऽउतवा॰ ॥ स्वाहा ॥ इदंविष्णवेतिपूर्वोक्त

सङ्ख्ययाजुहोति ॥ ५ ॥ ॐअग्नयेस्विष्टकृतेस्वाहा ॥ इदमग्नयेस्विष्टकृते इति स्विष्टकृतंव्याहृतिहोमंपञ्चवारुणप्रजापतिहोमञ्चकृत्वादिक्पालेभ्योवलीन्दत्वाततोदेवंनत्वा ॥ स्वागतन्देवदेवेशविश्वरूपनमोस्तुते ॥ इतिप्रार्थ्य ॥ ॐउत्तिष्ठब्रह्मणस्पत० ॥ इतिमन्त्रेणसर्त्विगाचार्योदेवमुत्थाप्यरथमारोप्यमहामण्डपं प्रदक्षिणीकृत्यपूर्वोक्तस्नानमण्डपेयाज्ञियकाष्ठपीठेनिधाय ॥ पञ्चगव्यैःपञ्चामृतैश्चपृथक्पृथक्तत्तन्मन्त्रैःसंस्नापयेत् ॥ ततःआपोहिष्ठेत्यृचेनशन्नोदेवीइतिशुद्धोदकेनसंस्नाप्य तैलमधुघृताभ्यङ्गन्देवस्यव्रणभङ्गङ्कृत्वा ॥ ॐद्रुपदादिवेतिमन्त्रेणोद्वर्त्तनमुष्णोदकेनक्षालनङ्कृत्वा ॥ पुनर्द्वादशाभिःकलशैर्वारुणमन्त्रैराभिषिच्य ॥ वारुणमन्त्राःपूर्वोक्ताः ॥ ततःॐयाऽओषधीरितिसर्वौषधिजलेन ॥ ॐआपोहिष्ठेति

तिसृभिःपावमानसूक्तेनचगङ्गाजलेनसंस्नाप्य ॥ वाससीपरिधाप्योपवीतंदत्वागन्धपुष्पधूपदीपैःसंपूज्यनीराजनङ्कृत्वा ॥ सुवर्णादिपात्रेमधुघृतङ्गृहीत्वासुवर्णशलाकया ॥ चित्रन्देवानामित्यर्द्धर्चेन ॥ ॐनमोभगवतेहनुमतेनमः ॥ इतिदक्षिणवामनेत्रेमन्त्रावृत्त्यालिखेत् ॥ ततअञ्जनेनाञ्जयित्वाभक्ष्यभोज्यादर्शादिदर्शयेत् ॥ तदाऽग्रेकोपिनतिष्ठेत ॥ ततःपुरुषसूक्तेनस्तुत्वा ॥ ॐनमोभगवतेरुद्रायेतिचतुष्पथेबलिंदद्यात् ॥ ततोदेवमुत्थाप्य रथादौवेपवरयमण्डपंप्रदक्षिणीकृत्यपश्चिमद्वारेणप्रविशेत ॥ ततःशय्यायामन्नधायन्यासङ्कुर्यात् ॥ ॐसहस्रशीर्षा० ॥ १ ॥ ॐपुरुषएवे० ॥ २ ॥ इतिकरयोः ॥ ॐएतावानस्य ० ॥ ३ ॥ ॐत्रिपादूर्ध्व० ॥ इतिजान्वोः ॥ ॐततोविराड० ॥ ॐतस्माद्यज्ञात्सर्वहु

तः ॥ ६ ॥ इतिकक्ष्योः ॥ ३ ॥ ॐतस्माद्यज्ञात्० ॥ ७ ॥ इतिनाभौ ॥ ४ ॥
ॐतस्मादश्वाइतिहृदि ॥ ८ ॥ ॐतंयज्ञम्० इतिकण्ठे ॥ ९ ॥ ॐयत्पुरुष
म्व्यद्य० ॥ १० ॥ ॐब्राह्मणोस्य० ॥ इतिबाह्वोः ॥ ११ ॥ ॐचन्द्रमाम
नस० ॥ १२ ॥ ॐनाभ्याऽआसीत्० ॥ १३ ॥ इतिनासयोः ॥ ॐयत्पुरु
षेण० ॥ १४ ॥ ॐसप्तास्यासन्० ॥ इतिअक्ष्णोः ॥ १५ ॥ ॐयज्ञेनयज्ञ० ॥ १६ ॥
इतिशिरसि ॥ इतिन्यासङ्कृत्वा ॥ ॐनमोभगवतेवासुदेवायइतिसहस्रशतवा
रंवादशवारंवाजलमभिमन्त्र्यदेवशिरसिअभिषिच्य ॥ ॐउत्तिष्ठब्रह्मणस्पतेइत्यु
त्थाप्य ॥ सुमुहूर्तेमुख्यमन्दिरेपुरुषसूक्तेनगायत्र्याध्रुवसूक्तेनवाअर्चांप्रतिष्ठाप्य
प्राणप्रतिष्ठाङ्कुर्यात ॥ तद्यथा ॥ ॐअस्यश्रीप्राणप्रतिष्ठामन्त्रस्यब्रह्मविष्णुरुद्रा

ऋषयःऋग्यजुःसामानिछन्दांसि क्रियामयवपुःप्राणाख्यादेवताआंबीजंक्रौंशक्तिः प्राणप्रतिष्ठायांविनियोगः ॥ ॐब्रह्मविष्णुरुद्रऋषिभ्योनमःशिरसि ॥ ॐऋग्यजुः सामछन्दो[illegible]नमःमुखे ॥ ॐप्राणाख्यदेवतायैनमोहृदि ॥ ॐआम्बीजायनमोगुह्ये ॥ ॐक्रौंशक्त्यैनमःपादयोः ॥ ॐकंखंगंघंङंअंपृथिव्यप्तेजोवाय्वाकाशात्मनेआंहृदयायनमः ॐचंछंजंझंञंइंशब्दस्पर्शरूपरसगन्धात्मनेईंशिरसेस्वाहा ॥ ॐटंठंडंढंणंउंश्रोत्रत्वक्चक्षुर्जिह्वाघ्राणात्मनेऊँशिखायैवषट् ॥ ॐतंथंदंधंनंएंवाक्पाणिपादपायूपस्थात्मनेऐंकवचायहुं ॥ ॐपंफंबंभंमंॐवचनादानविहरणोत्सर्गानन्दात्मनेऔंनेत्रत्रयायवौषट् ॥ ॐयंरंलंवंशंषंसंहंक्षंअंमनोबुद्ध्यहङ्कारचित्तात्मनेअःअस्त्रायफट् ॥ एवमात्मनिदेवेचकृत्वादेवंस्पृष्ट्वाजपेत् ॥ ॐआंह्रीं

क्रौंयंरंलंवंशंषंसंहंसःदेवस्यप्राणाइहप्राणः ॥ ॐआंह्रींक्रौंयंरंलंवंशंषंसंहंसःदेवस्य
जीवइहस्थितः ॥ ॐआंह्रींक्रौंयंरंलंवंशंषंसंहंसःदेवस्यसर्वेन्द्रियाणिइहस्थितानि ॥
ॐआंह्रींक्रौंयंरंलंवंशंषंसंहंसःदेवस्यवाङ्मनश्चक्षुः श्रोत्रघ्राणप्राणाइहागत्यस्वस्तये
सुखेनसुचिरंतिष्ठन्तुस्वाहा ❀ ❀ ❀ ❀ ❀ ॥ ❀ ❀ ❀ ❀ ❀ ❀ ततः
प्रतिमायाःहृद्यङ्गुष्ठन्दत्वाजपेत् ॥ ॐअस्यैप्राणाःप्रतिष्ठन्तुअस्यैप्राणाश्चर
न्तुच ॥ अस्यैदेवत्वमर्चायैमामहेतिचकश्चन ॥ १ ॥ ततोदेवस्यकर्णेगाय
त्रीञ्जप्त्वापुरुषसूक्तेनस्तुत्वापादनाभिशिरांसिस्पृष्ट्वा।प्रार्थयेत् ॥ स्वागतन्देवदे
वेशमद्भाग्यात्त्वमिहागतः ॥ प्राकृतंत्वमदृष्ट्वामांबालवत्परिपालय ॥ १ ॥
धर्मार्थकामसिद्ध्यर्थंहरिश्रेष्ठास्थिरोभव ॥ सान्निध्यन्तुमहावीरस्वार्चायांपरिकल्प

य ॥ २ ॥ यावच्चन्द्रावनीसूर्यास्तिष्ठन्तिप्रतिघातिनः ॥ तावत्त्वयात्रदेवेशस्थेयंभक्त्यानुकंपया ॥ ३ ॥ इतिप्रार्थ्यषोडशोपचारैःसंपूज्यसिन्दूरादिनासुशोभितङ्कृत्वानारिकेलंसमर्प्यरक्तपताकांध्वजञ्चोच्छ्रयेत् ॥ ततःपूर्णाहुतिंहुत्वाकर्मशेषंसमाप्यदेवान्विसृज्य ॥ आचार्यादिभ्योदक्षिणान्दद्यात् ॥ ततोब्राह्मणभोजनम् ॥ अन्यत्सर्वम्पूर्ववत् ॥ इतिश्रीहनुमत्प्रतिमास्थापनप्रयोगःसमाप्तः ॥ अथाग्न्यानयनप्रकारः ॥ तत्रादावाहरणपक्षःपारस्करसूत्रेहरिहरभाष्ये ॥ यजमानःपत्न्यासहाहतेवाससीपरिधाय ॥ अग्न्याधानदेशेस्थण्डिलमुपलिप्यपञ्चभूसंस्कारान्कृत्वातंदेशंवस्त्रेणपिधायब्रह्मणासहसमृदंस्थालीमादायब्राह्मणःपरिवृतोवेदघोषमङ्गलगीतवाद्यादिभिर्जनितोत्साहोवैश्यस्यवहुपशोर्गृहात् ॥ वहुयाजिनोब्राह्म

णस्यगृहाद्ब्रह्मपाकाद्ब्राह्मणमहानसाद्वास्थाल्यामग्निंगृहीत्वातथैवगृहमागत्यपरि
समूहनादिपञ्चभूसंस्कारसंस्कृतेस्थण्डिलेप्राङ्मुखउपविश्यआत्माभिमुखमग्निन्निद
ध्यात् ॥ इत्याहरणपक्षः ॥ आरणेयपक्षेतु ॥ यजमानःपुण्येहनि ॥ अश्वत्थो
यःशमीगर्भःप्रशस्तोर्वीसमुद्भवः ॥ तस्ययाप्राङ्मुखीशाखाउदीचीचोर्ध्वगापि
वा ॥ अरणिस्तन्मयीज्ञेयातन्मध्येचोत्तरारणिः ॥ सारवद्दारवंचात्रमोविली
चप्रशस्यते ॥ संसक्तमूलोयःशम्यासशमीगर्भउच्यते ॥ अभावेत्वशमीगर्भादा
हरेदविलंबितः ॥ चतुर्विंशत्यङ्गुलादीर्घाविस्तारेणषडङ्गुला ॥ चतुरङ्गुल
मुत्सेधाअरणिर्याज्ञिकैःस्मृता ॥ मूलादष्टाङ्गुलंत्यक्त्वाअग्राच्चद्वादशाङ्गुलं ॥
अन्तरन्देवयोनिःस्यात्तत्रमथ्योहुताशनः ॥ तत्रयोजायतेवह्निःसकल्याणकृदुच्य

ते ॥ गोवालैःशणसंमिश्रैस्त्रिवृद्वृतमनंशुकम् ॥ व्यामप्रमाणंनेत्रंस्यात्तेनम
थ्यो हुताशनः ॥ इत्युक्तलक्षणमरण्यादिकंसंपाद्यउक्तकालेस्नानादिपूर्वकंसङ्कल्पा
दिमातृपूजाभ्युदयिकश्राद्धब्रह्मवरणाहतवासःपरिधानादिकृत्वाशालायांयजमानउप
विशतितस्यदक्षिणाङ्गेपत्नी ॥ अथब्रह्माअरणिमादाय अधरारणिंपत्न्यैउत्तरारणिं
यजमानायदद्यात् ॥ तलोग्न्याधानदेशेशङ्कुंद्वादशाङ्गुलंखादिरञ्चतुरङ्गुल
मस्तकंनिखाय ॥ तत्ररज्जुपाशंक्षिप्त्वासार्द्धत्रयोदशाङ्गुलरज्ज्वन्तंशंक्वंतरालेसंवे
ष्ट्यप्रदक्षिणपरिभ्रामणेनपरिलिख्य ॥ तत्रपरिसमूहनादिपंचसंस्कारान्कृत्वा ॥
आच्छाद्यमन्थनमारभेत ॥ तद्यथा ॥ प्राग्ग्रीवमुत्तरलोमकृष्णाजिनमास्तीर्यतत्रो
दगग्रामधरारणिंनिधायतत्पूर्वतउत्तरारणिञ्च अधरारण्यां उक्तलक्षणमन्थनप्रदेशे

प्रमन्थमूलान्निधाय ॥ चात्राग्रेचौबिलीमुदग्प्राञ्चनेत्रेणतांत्रिर्वेष्टयित्वागाढंधृत्वाप
श्चिमाभिमुखोपविश्यपत्न्यामन्थयेत् ॥ यावदग्नेरुत्पत्तिःपत्न्यामन्थनासाम
र्थ्येअन्येब्राह्मणाःशुचयोमन्थयन्ति ॥ एवंयजमानासामर्थ्येअन्योयन्त्रंधारयति ॥
ततोजातमग्निंमृन्मयेपात्रेशुष्कगोमयपिंडचूर्णोपरिनिहितमूलेसपुरीषंप्रक्षिप्य ॥
सन्धुक्ष्यप्रज्वाल्य ॥ पूर्वसंस्कृतेदेशेआदध्यात् ॥ तत्रब्रह्मोपवेशनादिदेवता
भिधानपर्युक्षणान्तङ्कृत्वापूर्ववद्धोमङ्कुर्यात् ॥ इत्यारण्यपक्षः ॥ अथषोड
शोपचारपूजनमन्त्राः ॥ ॐसहस्रशीर्षेत्यावाहनम् ॥ १ ॥ ॐपुरुषऽएवेत्या
सनम् ॥ २ ॥ ॐएतावानस्येतिपाद्यम् ॥ ३ ॥ ॐत्रिपादूर्ध्वमित्यर्घ्यम् ॥ ४ ॥
ॐततोविराडित्याचमनीयम् ॥ ५ ॥ ॐतस्माद्यज्ञादितिस्नानीयम् ॥ ६ ॥ ॐत

तस्माद्यज्ञात्सर्वहुतःइतिवस्त्रम् ॥ ७ ॥ ॐतस्मादश्वेतियज्ञोपवीतम् ॥ ८ ॥ ॐतंय्यज्ञमितिगन्धम् ॥ ९ ॥ ॐयत्पुरुषमितिपुष्पम् ॥ १० ॥ ॐब्राह्मणोस्येतिधूपम् ॥ ११ ॥ ॐचन्द्रमामनसरतिदीपम् ॥ १२ ॥ ॐनाभ्याऽआसीदितिनैवेद्यम् ॥ १३ ॥ ॐयत्पुरुषेणेतिनमस्कारः ॥ १४ ॥ ॐसप्तास्यासन्नितिप्रदक्षिणा ॥ १५ ॥ ॐयज्ञेनयज्ञमितिपुष्पाञ्जलिम् ॥ १६ ॥ इतिषोडशोपचारपूजा ॥ अथशूद्राणांदेवस्थापनेविचारःकल्पतरौदेवीपुराणे ॥ वर्णाश्रमविभेदेनदेवाःस्थाप्यासुनान्यथा ॥ ब्रह्मातुब्राह्मणैःस्थाप्योगायत्रीसहितः प्रभुः ॥ १ ॥ चतुर्वर्णैस्तथाविष्णुःप्रतिष्ठाप्यःसुखार्थिभिः ॥ भैरवोपिचतुर्वर्णैरन्त्यजानान्तथामतः ॥ २ ॥ मातरःसर्वलोकैस्तुस्थाप्याःपूज्याःसुरोत्तमाः ॥

लिङ्गंङ्गृहन्यतिर्वापिसंस्थाप्यतुयजेत्सदा ॥ ३ ॥ त्रिस्थलीसेतौतु ॥ स्त्रीणाम
नुपनीतानांशूद्राणाञ्चनरेश्वर ॥ स्थापनेनाधिकारोस्तिविष्णोर्वाशङ्करस्यच ॥ १ ॥
वृहन्नारदीयेस्कान्देच ॥ यःशूद्रसंस्कृतंलिङ्गंविष्णुंवापिनमेन्नरः ॥ इहचास्यन्तदुः
खानिपश्यत्यामुष्मिकेकिमु ॥ १ ॥ शूद्रोवानुपनीतोवास्त्रियोवापतितोपिवा ॥
केशववाशिवंवापिस्पृष्ट्वानरकमश्नुते ॥ २ ॥ चतुर्वर्णैरितिपूर्ववचनाद्विष्ण्वादि
प्रतिष्ठायांशूद्रस्यविकल्पइतितुयुक्तं ॥ अतएवस्पर्शनेनाधिकारोस्तीत्यन्यत्रपा
ठः ॥ व्यासजातूकर्णौ ॥ अधिकारीभवेच्छूद्रःपूर्तेधर्मेनवैदिके ॥ इति ॥
पूर्तंमाहतुःअत्रिजातूकर्णौ ॥ वापीकूपतडागादिदेवतायतनानिच ॥ अन्नप्रदा
नमारामःपूर्तइत्यभिधीयते ॥ स्मृतिसङ्ग्रहे ॥ नाममन्त्रेणशूद्रस्यकुर्य्यांद्वो

मादिकंबुध ॥ इति ॥ अमन्त्रस्यतुशूद्रस्यविप्रोमन्त्रेणगृह्यतइतिवाराहोक्तेः ॥ पाराशरः ॥ दक्षिणार्थन्तुयोविप्रःशूद्रस्यजुहुयाद्धविः ॥ ब्राह्मणस्तुभवेच्छूद्रः शूद्रस्तुब्राह्मणोभवेत् ॥ इति ॥ अत्रमाधवाचार्यः ॥ योविप्रःशूद्रदक्षिणामादायतदीयहविः ॥ शान्तिपुष्ट्यादिसिद्धयेवैदिकैर्मन्त्रैर्जुहोतितत्रविप्रस्यैवदोषः ॥ शूद्रस्तुहोमफलंलभेतैवेतिव्याचचक्षेएतच्चास्माभिःसनातनधर्मप्रकाशे सविस्तरमुक्तम् ॥ तेनसर्वत्रशूद्राणांवैदिकोविधिर्निषिद्धःअमन्त्रकोनाम्नाकार्यः ॥ अत्रविशेषविचारस्तुकमलाकरैरुक्तः ॥ अथशूद्रस्यदेवपूजायांविशेषः ॥ तच्च सर्वस्वे ॥ यस्तुपूजयतेलिङ्गंदेवादिंमांजगत्पतिम् ॥ ब्राह्मणःक्षत्रियोवैश्यःशूद्रो वामत्परायणः ॥ तस्यप्रीतःप्रदास्यामिशुभांल्लोकाननुत्तमान् ॥ लैंगे ॥ अथ

रुद्रोमहादेवोमण्डलस्थउवाचह ॥ पूज्योहंब्राह्मणानाञ्चक्षत्रियाणांविशेषतः ॥
वैश्यानाञ्चैवशूद्राणांशुश्रूष्यःपूजकस्यच ॥ स्त्रीणाञ्चैवाधिकारोस्तिपूजादिषुनसं
शयः ॥ सूतसंहितायां ॥ नमोन्तेनशिवेनैवस्त्रीणांपूजाविधीयते ॥ विरक्तानाञ्च
शूद्राणामेवंपूजाप्रकीर्तिता ॥ अन्येषामपिसर्वेषांनराणांमुनिपुङ्गवाः ॥ पूजादेवा
लयंदृष्ट्वाप्रणामस्तस्यकीर्तितः ॥ एवंपूजाकृतायेनसफलंतस्यजीवितं ॥ नार
दीये ॥ यदाप्रतिष्ठितंलिङ्गंमन्त्रविद्भिर्यथाविधि ॥ तदाप्रभृतिशूद्रश्चयोषिद्वापिन
संस्पृशेत् ॥ नूतनलिङ्गार्चाशालग्रामादौतुस्पर्शरहितापूजाशूद्राद्यैःकार्या ॥ तदुक्तं
स्कान्दे ॥ स्त्रीणामनुपनीतानांशूद्राणांचनरेश्वर ॥ स्पर्शनेनाधिकारोस्तिवि
ष्णोर्वाशङ्करस्यच ॥ इति ॥ वाराहेपि ॥ शालग्रामंनस्पृशेत्तुहीनवर्णोवसुन्धरे ॥

स्त्रीशूद्रकरसंस्पर्शोयत्रस्पर्शाधिकोमतः ॥ १ ॥ मोहाद्यःसंस्पृशेच्छूद्रोयोषिद्वापि कदाचन ॥ सपतेन्नरकेघोरेयावदाभूतसंप्लवं ॥ २ ॥ यदिभक्तिर्भवेत्तस्य स्त्रीणांवापिवसुन्धरे ॥ दूरादेवास्पृशन्पूजांकारयेत्सुसमाहितः ॥ ३ ॥ विशेषस्तुनिर्णयसिंधौज्ञेयः ॥ इतिशूद्राणांस्थापनेविचारः ॥ द्विजकुलकमलविकसनहेतुभूतसहस्रभानुभानुकान्यकुब्जब्राह्मणावसथिककुलसम्भूतदेवीदत्तशर्मसूनुवेदवेदाङ्गकर्मकाण्डादिसद्विद्याविज्ञशिवदीनसूनुनाश्रीकेदारनाथराज्यसंवन्धिवठुवाग्रामवास्तव्यमणिरामेतिप्रसिद्धसीतारामशर्मणासङ्गृहीतःसर्वदेवप्रतिष्ठेन्दुशेखरोरामवाणाङ्केन्दु १९५३ मितवैक्रमाब्दीयभाद्रपदकृष्णकृष्णजन्मातिथाविन्दुवासरेसमाप्तिमगमत् ॥ समर्पितश्चायंश्रीकृष्णचरणारविंदयोः ॥ शुभम् ॥ ❀ ❀ ❀

सन्
१९०८ ईशवीये
लखनऊ नगरे
बद्रीनाथ वर्मणा स्वकीय श्रीराजराजेश्वरीनामधेये यन्त्रालये मुम्बयीस्थ
निर्णयसागरीय मुद्राक्षरेण मुद्रयित्वा
प्रकाशितः

विज्ञापन।

—:o:—

प्रकट हो कि हमारे "श्रीराजराजेश्वरी प्रेस" में नागरी, उर्दू, और अंगरेजी का हरतरह का काम बहुत सफाई और किफायत से बम्बई टाइपमें छापा जाता है जिन महाशयों को छपवाना हो कृपा करके पत्र भेजें। हमारे यहां हरप्रकार की पुस्तकें छपी तय्यार रहती हैं व्योपारियों को माल बहुत किफायत से दिया जाता है।

—मैनेजर श्रीराजराजेश्वरी प्रेस चौक लखनऊ.

(२८)

॥ इति र्वदेवप्रतिष्ठेन्दुशेखरः समाप्तः ॥